पत्रो के प्रकाश मे
कन्हैयालाल सेठिया

सम्पादिका

राधा भालोटिया एम ए

प्रबन्ध सम्पादक

सन्हैयालाल ओझा
जुगल किशोर जैथलिया
सुबोध कुमार अग्रवाल
गायत्री काकरिया

प्रकाशकीय

मूधय मनीपी, निस्पृह लाक मेवक, मारस्वत पुरप श्री कन्हैयालालजी सेठिया का राष्ट्र और ममाज की निष्काम सेवा म जा महत्वपूण योगदान रहा है उम मन्दभ म यह पत्र मकलन 'पत्रा के प्रकाश म कन्हैयालाल सेठिया एक जीवन्त दम्तावेज है।

प्राय आधी गताब्दी के इम इतिवत्त का इम ग्रन्थ म प्रकाशित करते हुये भालाटिया फाउन्डेशन' अपने का गौरवान्वित अनुभव करता है।

आशा है इन पत्रा का पढ कर सृजन धमिया का अपेक्षित प्रेरणा और दिशा बाध प्राप्त हागा।

जगदीश प्रसाद भालाटिया

कलकत्ता
११ मितम्बर, १६८६

श्री कन्हैयालाल सेठिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रारंभिक जीवन,

मनीषा, कर्म, प्रतिभा एवं संवेदनशीलता की त्रिवेणी के साकार प्रतीक, करोड़ों राजस्थानियों की धड़कनों के प्रतिनिधि गान 'धरती धोरां री' एवं अमर लोक गान 'पातल और पीथल' के यशस्वी रचयिता, मनीषी कर्मवीर एवं राष्ट्रसेवक श्री कन्हैयालाल सेठिया का जन्म आश्विन कृ० प्रतिपदा विक्रम संवत् १९७६ तदनुसार ११ सितम्बर १९१९ ई० को राजस्थान के सुजानगढ़ शहर में एक सुप्रसिद्ध व्यवसायी परिवार में हुआ। माता मनोहरी देवी निष्ठा एवं सेवा की प्रतिमूर्ति थीं तो पिता छगनमलजी एक कुशल व्यवसायी एवं शिक्षा प्रेमी सज्जन थे। अतः सहृदयता एवं साहित्य-सेवा के गुण आपको विरासत में मिले। आपकी प्रारंभिक शिक्षा सुजानगढ़ में तथा बाद की बी० काम तक की शिक्षा कलकत्ता नगर में हुई। स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ने के कारण आपका अध्ययन समय विशेष के लिये स्थगित हो गया था। भारत स्वतंत्र होने के बाद आपने पुनः अध्ययन शुरू किया और राजस्थान विश्वविद्यालय से स्नातक हुये। उच्च शिक्षा की इस अवधि में ही श्री सेठिया ने दर्शन, राजनीति एवं साहित्य का गंभीर अध्ययन किया एवं उसे सही अर्थ में अपने जीवन में उतारा। इसी के फलस्वरूप आप आज जहाँ हिन्दी एवं राजस्थानी के शीर्ष गीतकार एवं चिन्तक कवियों की प्रथम पंक्ति में आसीन हैं, वहाँ लोक कल्याण के विविध कार्यों के प्रणेता एवं कार्यकर्ताओं के प्रेरक भी हैं। व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने मिलकर मानो सोने में सुगंध भर दी है।

राजनैतिक चेतना,

सन् १९३१ ई० में बारह वर्ष की उम्र में ही आप कलकत्ता चले आये एवं अपने अध्ययन का एक सत्र पूरा कर छुट्टियों में वापस अपने जन्मस्थान सुजानगढ़ गए। वैसे तो पूरा राजस्थान ही उस समय रियासती शासन के अन्तर्गत था जहाँ जागीरदारों की निरंकुशता चलती थी पर बीकानेर रियासत जिसके अन्तर्गत सुजानगढ़ शहर आता था, राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के दमन के लिये बड़ी कुख्यात थी। इस बात को जानते हुए भी श्री सेठिया कलकत्ता से जाते समय अपने साथ एक तिरंगा झंडा अपने सन्दूक में छिपाकर ले गए। स्टेशन पर ही उस काल की

व्यवस्थानुसार जकात की वसूली हेतु थानेदार द्वारा सामान की जाच पडताल की गई पर झडा धोता जाडे के भीतर छिपा हुआ था अत नजर म नहा आया। दूसरे ही दिन श्री सेठिया ने अपनी वय के ८ १० बच्चा का इकटठा कर अपने निवास स्थान से अपनी घुडसाल तक झडे क साथ जुलूस निकाला। ऐसा करना उस समय वडे से वडा जुम था पर यह सरकारी दृष्टि म नहा आया और इनपर कोई कायवाही नहीं हुई पर आसपास के लोग इनकी प्रकृति, प्रवत्ति से परिचित हो गए। धीरे धीरे इन्हाने खददर पहनना, चरखा चलाना एव तकली कानना भी प्रारभ कर दिया एव अपने सम्पक म आने वाला मे राष्ट्रीय चेतना प्रदीप्त करने म जुट गए। १९३४ ई० म गाधाजी से प्रयम साक्षात्कार होने पर हरिजन फड' के लिये अपनी बचत के चार आने उनके हाथ पर रख दिए। हरिजन सेवा एव उत्थान के कार्यों म शुरू से ही इनका विशेष रुचि थी। १९३६ ई की रामगढ काग्रेस म भी आप सम्मिलित हुए।

स्वात-य सेनानी,

करुणा एव कोमल भावनाआ की सुरभि लिए आपकी प्रयम काव्य पुस्तक वनफूल' १९४१ ई० म प्रकाशित हुई। देश क विक्षुब्ध वातावरण ने शीघ्र हा इनकी कलम का रुख क्रान्ति की आर मोड दिया एव सामन्ती उत्पाडन के विरुद्ध सशक्त स्वर की बुलन्दा लिए विद्राहानल की चिनगारिया बिखेरती 'अग्निवीणा १९४२ ई० म जनता के सामने आई। इन कविताआ म युवा शक्ति को 'करो या मरा का उदबोधन तो था ही साथ ही गुम्फित थी ब्रिटिश साम्राज्यवाद एव रियासता सामन्तवाद का गहरी चुनौती। तत्कालीन बाकानेर राज्य के सामन्ता तत्वा ने आप पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया जो देश की स्वाधीनता के बाद ही निरस्त हुआ।

'भारत छोडा आन्दोलन के समय आप कराची म थे। सिन्ध क प्रमुख राष्ट्रीय नेता स्व० जयराम दास दौलतराम तथा डा० चौईथराम गिडवानी के नेतत्व म निकले जुलूस म तथा कराची के खलीकुज्जमा हाल म हुई जनसभा म आप सम्मिलित हुए। आपने स्वातत्र्य सग्राम के इस महत्वपूण अतिम चरण म सक्रिय योगदान दिया।

१९४२ का वप राजनतिक चेतना के ज्वार भाटे का वप था। इसी वप सुजानगढ म बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता स्व० रामगोपाल मोहता बीकानेर ने की एव जनेन्द्रजी तथा चतुरसेन

गास्त्री जसे दिग्गज महारथियो ने भाग लिया। इस कायक्रम के मुख्य मच पर स्थानीय राजकीय अधिकारिया के विरोध क बावजूद भी आपने महात्मा गाधी का चित्र लगाया।

१९४३ ई० म आप स्व० जयप्रकाग नारायण एव राममनोहर लोहिया के सम्पक म आये। उन्ही दिना आपने अपनी गद्दी मे कतिपय बगाली क्रान्तिकारियो को प्रश्रय दिया, जा सेना मे ब्रिटिश विरोधी साहित्य वितरण किया करते थे। १९५६ म जयप्रकाग नारायण जब सुजानगढ मे सर्वोदय कायकर्त्ताओ के शिविर म पधारे थे तब वे गोकुल भाई भट्ट के साथ श्री सेठिया के निवास स्थान पर उनसे मिलने गये। १९४५ ई० म प्रजापरिषद बीकानेर के प्रमुख सेनानी के रूप म सामन्तवाद एव जागीरी प्रथा के विरुद्ध जमकर सघष किया एव आपकी कविता 'कुण जमीन रो धणी' गाव-गाव म लोकप्रिय हुई। १५ अगस्त, १९४७ ई० को भारत के स्वाधीन होने पर भी दशी रियासता की स्थिति कुछ भिन थी। वहा के सरकारी अधिकारिया ने उक्त दिन राष्ट्रीय झडे के साथ-साथ बीकानेर राज्य का झडा भा फहराना चाहा, जिसका आपने डटकर विरोध किया और कायक्रम म केवल राष्ट्रीय झडा तिरगा ही फहराया गया। १९४८ म केन्द्र द्वारा जागीरदारी प्रथा के सदभ म भेजे गये कमीशन के समक्ष बीकानेर म स्वय उपस्थित होकर जागीरदारी प्रथा को उन्मूलित करने के लिये अपने विचार व्यक्त किये।

<u>राजस्थान और सेठियाजी,</u>

१९५२ के प्रथम आम चुनाव म आप सामन्ता के गढ सुजानगढ क्षेत्र से राजस्थान विधान सभा के लिये काग्रेस की ओर से उम्मीदवार चयनित हुये जबकि आप काग्रेस के साधारण सदस्य तक नहा थे। राज्य सरकार ने आपको अनेक सरकारी पदा तथा चूरू जिले के कारागारा के गरसरकारी निरीक्षक, राज्य परिवहन समिति के सदस्य राजस्थान के उच्च न्यायालय के जूरी के रूप म मनोनीत किया।

प्रान्ता के नवनिर्माण के समय राजस्थान के साथ न्याय नही हुआ। भाषा, संस्कृति की दृष्टि से मालवा, हरियाणा और गुजरात के ईडर पालनपुर क्षेत्र राजस्थान के अभिन्न अग हैं इसलिये इनका विलय राजस्थान के साथ ही उचित था, इस सम्बन्ध म श्री सेठिया का सतत प्रयत्न इसी दिशा मे रहा और आज भी वे इसके लिये सघषरत हैं।

१९४८ म जब देशी रियासतो का एकीकरण होकर राजस्थान बना तो आबू को गुजरात प्रान्त म मिला दिया गया जबकि इतिहास एव लोकसस्कृति की दृष्टि से यह राजस्थान का ही अभिन्न अग होना चाहिए था। श्री सेठिया ने इसके लिये किंचित भी सकोच न करते हुए पुरजोर आवाज उठाई। १९५३ म भारत के गृह मत्री डा० कैलाशनाथ काटजू को भी आबू के विलय के सम्बन्ध म प्रतिवेदन दिया एव अतत उनके प्रयत्नो से आबू राजस्थान का ही अग बना। आबू के पुनर्विलय के समारोह म राजस्थान के शीर्ष नेता स्व० माणिक्यलालजी वर्मा ने श्री सेठिया के अभिनन्दन का सुझाव दिया परन्तु सेठिया ने इस पुनर्विलय को ही अपना अभिनन्दन माना।

श्री सेठिया ने जिन कठिन परिस्थितियो म स्वराज्य के लिये सघर्ष किया एव यातनाए सही इसके लिये जनता ने तो इन्हे अपूर्व सम्मान एव स्नेह दिया ही सरकार ने भी इन्हें स्वतन्त्रता सेनानी का मान्यता पत्र प्रदान किया।

जब देश पर चीन का आक्रमण हुआ तो कवि का युग चेतना पुन 'आज हिमालय बोला' ग्रन्थ के रूप म सामने आई। इसकी समस्त कवितायें राष्ट्रीय सकट के समय कर्त्तव्य पुकार को प्रतिध्वनि करती प्रतीत होती हैं। आज भी सेठिया उसी रूप म सजग हैं देश की समस्याओ के प्रति। पजाब की वर्तमान समस्या के समाधान एव रावी व्यास के जल के हिस्से के सदर्भ म भी आप आज उसी गम्भीरता म अपना योगदान करते है।

समस्त राजस्थान की उन्नति राजस्थानी भाषा का विकास एव मान्यता तथा राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रो के कार्यकर्ताओ के बीच सम्पर्क सेतु निर्माण करने हेतु ही आपने प्रेरणा देकर राजस्थान परिषद का गठन कराया। यह सस्था आपके निर्देशन म राजस्थानियो के लिये एक प्रभावी मिलनमच का कार्य कर रही है।

राजस्थान की नहर जल समग्र मरु भाग को उपलब्ध हो सके इसके लिये श्री सेठिया ने राजस्थान सरकार से निरन्तर पत्र व्यवहार किया एव व्यक्तिगत रूप से सम्बधित मत्रियो से भी मिलकर इसकी क्रियान्विति पर जोर दिया। आपने १९५९ म मरुभाग की पेयजल की समस्या के समाधान के लिये राजस्थान सरकार को एक विस्तृत रिपोर्ट भी दी जो छपी हुई है। गगा के प्रवाहित होने वाले अधिशेष बाढ जल को राजस्थान के सूखे क्षेत्रो म सिंचाई के लिये उपलब्ध

कराने की एक योजना श्री सेठिया ने १९७२ ई० में ही भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भेजी थी एवं उसके लिये निरन्तर पत्राचार करते रहे। परिणामस्वरूप केन्द्रीय सरकार ने १२ मई, १९८३ ई० को इस हेतु एक विशेषज्ञ समिति गठित कर दी है। आपके ही सुझावों के आधार पर राष्ट्रीय जल ग्रिड का गठन भी निर्णायक स्तर पर है। आप ही के प्रयत्न से राजस्थान नहर के अन्तर्गत सातवीं योजना में स्वीकृत चूरू साहवा लिफ्ट कैनाल से सुजानगढ़ नागौर तक पेयजल दिये जाने का निर्णय किया गया तथा नर्मदा परियोजना का भी काम चालू हुआ है। आप १९५८/८६ में राजस्थान जल बोर्ड की कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रहे।

राजस्थान में वन संवर्धन हेतु आप सरकार एवं जनता दोनों से बराबर सम्पर्क साधे रहते हैं। व्यापक वृक्षारोपण एवं वन्य जीवों की सुरक्षा के बारे में आपने राजस्थान के मुख्यमन्त्री एवं पर्यटन मन्त्री को पत्र लिखकर महत्वपूर्ण सुझाव दिये जिसके प्रत्युत्तर में पर्यटन विभाग ने सुझावों को क्रियान्वित करने का आश्वासन दिया है।

वन श्री विहीन अरावली के उपत्यकाओं को देखकर आपका कवि हृदय व्यथा से भर गया। अपनी राजस्थानी भाषा की कृति 'मायड रो हेलो' में 'नग घडग अरावली' शीर्षक से जो मार्मिक कविता लिखी—वह राजस्थान के अनेक पत्रों में प्रकाशित हुई और उसकी शासन पर भी अनुकूल प्रतिक्रिया हुई।

यह संतोष की बात है कि अरावली की घाटियों में पुनः वृक्षारोपण का कार्यक्रम केन्द्र द्वारा पर्वतीय विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत ले लिया गया है एवं अब वहां लाखों वृक्ष रोपे जा चुके हैं जिससे पर्यावरण को बचाने में काफी मदद मिली है।

आप राजस्थान में चन्दन के वन एवं अन्य वृक्षारोपण के लिये राज्य सरकार को अनेक बार सुझाव देते रहे हैं। श्री सेठिया के इस वन-संवर्धन प्रयास के परिणामस्वरूप जयपुर, कोटा आदि क्षेत्रों में व्यक्तिगत कृषि फार्मों में हजारों चन्दन के वृक्ष लगाये जा चुके हैं। गंगानगर में जलाक्रान्ति की विकट समस्या का समाधान युकिलिप्टस वृक्षों के आरोपण से ही संभव हुआ।

आबू की घाटियों तथा कोटा क्षेत्र में चाय की खेती की संभावना के सम्बन्ध में भी आपने राजस्थान सरकार को सुझाव दिये। संभावना सम्बन्धी आवश्यक

जीव-जन्तुओं के लिये राजस्थान के मुख्यमंत्री ने श्रीमठिया को आश्वासन भी दिया। देश के प्रमुख चाय उद्योगपतियों ने निःशुल्क सर्वे की अपनी सहमति भी व्यक्त की पर राजस्थान सरकार द्वारा आवश्यक सूचनाएं प्राप्त नहीं होने के कारण इस दिशा में प्रगति नहीं हुई।

राजस्थान में स्थित अभयारण्यों की अव्यवस्था और उनमें निरन्तर शिकार होते हुए वन्य जीवों की ओर भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का ध्यान आकर्षित किया साथ ही साथ राजस्थान के राजनेताओं से इस सम्बन्ध में व्यक्तिगत रूप से बातचीत तथा पत्राचार किया। आबू के क्षेत्र में नये अभयारण्य की स्थापना का सुझाव भी दिया।

आपकी प्रेरणा से ही राजस्थान परिषद ने सूखे एवं अकाल पर माधव गोष्ठियां की एवं सहयोग के लिये लोगों को प्रेरित भी किया है। वन सम्पदा के अन्धाधुंध नष्ट किये जाने से पर्यावरण के असन्तुलन की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित कर सावधान किया। आपके सुझाव पर ही बीकानेर एवं नागौर क्षेत्र में सरकार द्वारा पट्रोल का सर्वे कराया गया जिसमें बीकानेर में [illegible] के पट्रोल की सम्भावनायें परिलक्षित हुईं। समय समय पर आप सरकार का ध्यान राजस्थान की सुचारु यातायात व्यवस्था की ओर आकर्षित करते रहे हैं। चाहे रेल, फोन बिजली, किसी भी दिशा को आपने गौण नहीं किया अपितु प्रत्येक आवश्यक सुविधा को सरकार द्वारा मान्यता दिलाने के लिये दृढ़ संकल्प रहे।

कलकत्ता में बैठे-बैठे ही आप राजस्थान के हितों एवं राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति सजग जागरूक प्रहरी की भूमिका निभाते हैं एवं राष्ट्र के उच्चतम व्यक्ति से लेकर जनता जनार्दन तक को अपने चिन्तन से अवगत कराते रहते हैं। आपकी प्रेरणा से कलकत्ता में राष्ट्रीय एकता [illegible] गठन हुआ एवं इसकी दिल्ली शाखा का श्रीमती गांधी द्वारा उद्घाटन [illegible] श्री मठियाजी इस

एक एक शब्द इतना जीवंत है कि उसमें प्राण छलकते दिखाई देते हैं। इसीलिए इनका स्तर काव्य मंच के धरातल तक उठ गया है। 'अनाम', 'निग्रन्थ' 'मम' 'प्रणाम', 'स्वगत' एवं 'देह विदेह' इस दृष्टि से वर्तमान युग की अप्रतिम रचनाएं हैं। संत विनोबा के विचार पत्र 'मैत्री' में आपकी चिन्तन प्रधान रचनाएं छपती रही हैं। आचार्य रजनीश ने अपनी पुस्तकों में श्री सेठियाजी की रचनाओं के अनेक उदाहरण दिये हैं। रामायण के सुप्रसिद्ध वाचक मुरारी बापू सेठियाजी की रचना 'धरती धोरा री' पर विमुग्ध हैं और उसे सस्वर गाते हैं।

अब तक आपके हिन्दी में सात, राजस्थानी में बारह एवं उर्दू में एक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। आपके कुछ हिन्दी ग्रन्थों का अंग्रेजी, बंगला एवं मराठी भाषा में भी अनुवाद हुआ है।

आपकी राजस्थानी पुस्तक "लीलटांस" जोधपुर के एम० ए० पाठ्यक्रम के लिये स्वीकृत है। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व पर लिखे गये शोध ग्रन्थों पर जोधपुर विश्वविद्यालय तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से लेखकों ने पी एच डी की उपाधि प्राप्त की है।

१९६२ ई० में भारत चीन युद्ध के समय श्री सेठिया की सामयिक कृति "चीन को ललकार" की कई सौ प्रतियां श्रीमती गांधी ने स्वयं पत्र लिखकर मंगवाईं जिन्हें सीमा पर जूझ रहे भारतीय वीर जवानों में वितरित किया गया।

राजस्थानी साहित्य और राजस्थानी भाषा के लिये आपका योगदान विस्मरणीय रहेगा। १९६८ ई० में ही राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता हेतु आपने संविधान परिषद के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसादजी को पत्र लिखकर मांग की थी—तबसे अनवरत आप राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता दिलवाने के लिये कृतसंकल्प हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी से भी आपने इस सम्बन्ध में बातचीत की थी एवं उनसे आश्वासन भी लिया था पर दुर्भाग्य से इन्दिराजी का असमय स्वर्गारोहण हो जाने से बातचीत वहीं की वहीं रह गई। वर्तमान प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी से भी आपने साक्षात् किया एवं राजस्थानी भाषा को मान्यता देने का अनुरोध किया। राजस्थानी को साहित्यिक मान्यता दिलाने का श्रेय भी आपके अथक प्रयत्नों को ही है। आपने अपनी उच्चस्तर की कृतियों से राजस्थानी भाषा की क्षमता को व्यक्त किया एवं राजस्थानियों में एक नवीन चेतना उद्बुद्ध की। भूतपूर्व बीकानेर राज्य के पंचम शताब्दी समारोह में आपको राजस्थानी भाषा के प्रति की गई महत्वपूर्ण सेवाओं के लिये विशेष

रूप से अभिनन्दित किया गया। राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री शिवचरण माथुर ने आपको मानपत्र भेंट दिया।

भारत के गौरवशाली अतीत एवं उसकी उच्च सांस्कृतिक परम्पराओं से श्री सेठिया अनुप्राणित हैं। उनका विश्वास है कि इसी से भारत एवं समस्त विश्व का कल्याण होगा। आपका समूचा साहित्य अध्यात्म के उच्च धरातल पर अधिष्ठित है। इसी कारण वह सत्य शिव एवं सुन्दर का प्रतीक है। कालजयी है।

हिन्दी एवं राजस्थानी दोनों में श्री सेठिया ने साधिकार रचना की है। कुछ लोग भ्रम से राजस्थानी के पक्ष लेने को हिन्दी का विरोध समझ लेते हैं पर यह सर्वथा भूल है। श्री सेठिया का कहना है कि जैसे भारत की बोलियों के विकास से हिन्दी को बल मिला है वैसे राजस्थानी के मान्य होकर विकसित होने पर इसकी अपार शब्द सामर्थ्य का लाभ हिन्दी को तो मिलेगा ही अन्य भारतीय भाषाओं को भी मिलेगा। हिन्दी को वे कितना प्यार करते हैं इसका प्रमाण तो यही है कि उन्होंने राजस्थानी से अधिक हिन्दी में ही रचना की है। पर राजस्थानी के साथ किये जाने वाले सौतेले एवं अन्यायपूर्ण व्यवहार को बदलने के लिये वे कृतसंकल्प हैं इसमें अनुचित कुछ भी नहीं। वे कहते हैं कि कोई भी समाज अपनी भाषा से कट जाता है तो वह अस्तित्व शून्य हो जाता है स्वाभिमान भी हो जाता है। मीरां की मधुर भाषा की अवहेलना की कीमत हम एवं हमारी पीढ़ी को चुकानी ही पड़ेगी।

<u>सम्मान एवं पुरस्कार,</u>

१९७६ में आपकी राजस्थानी काव्यकृति 'लीलटांस' को साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने उस वर्ष की राजस्थानी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कृति के नाते पुरस्कृत किया। १९८१ ई० में आपको राजस्थानी में उत्कृष्ट रचनाओं के हेतु लोक संस्कृति शोध संस्थान चूरू द्वारा प्रवर्तित 'डा तसीतोरी स्मृति स्वर्णपदक' प्रदान किया गया १९८२ ई० में आपको उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिये विवेक संस्थान कलकत्ता की ओर से पुरस्कृत किया गया और १२ मई १९८८ को आपकी कृति 'निर्ग्रन्थ' पर भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार समर्पित किया गया। नई दिल्ली में आयोजित इस भव्य समारोह के अध्यक्ष माननीय बलराम जाखड़ ने अपने सुचिन्तित भाषण में कहा कि यह मेरा

अहोभाग्य है कि म एक महामानव का सम्मान कर रहा हूँ। श्री सठिया ने समारोह को सम्बोधित करते हुये कहा कि "प्रगतिशीलता के दमन का मात्र मुखौटा बनाकर इस शब्द की अथवत्ता का केवल जन्त्व तक ही सीमित कर जो कुछ साहित्य के नाम पर रचा जा रहा है वह काल की कसौटी पर खरा नहीं उतरेगा। सृजनधर्मी रचनाकार वही है जो भेद म अभेद की आर, अधकार स आलोक की आर बढने की क्षमता और गति समाज को द। इसी सत्य को अनुभूत और अभिव्यक्त करने का प्रयास मैं अपनी कृतियो के माध्यम से करता रहा हूँ ' । वस्तुत श्री सेठिया के साहित्य के अध्येताओ के लिये यह बात कुजी का काय करती है। इस बात का मम जानने से ही उनके साहित्य की गहराई तक हम पहुच सकते ह।

१९८४ ई० म राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर की आर स राजस्थान क मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर ने अकादमी की सर्वोच्च उपाधि 'साहित्य मनीषी' स आपको अलकृत किया। इस अवसर अकादमी के मुखपत्र 'मधुमती' ने 'कवि कन्हैयालाल सेठिया और उनकी काव्य यात्रा' के शीर्षक से एक महत्वपूर्ण विशेषाक भी प्रकाशित किया। उपरोक्त वर्ष म ही महाराणा फाउन्डेशन उदयपुर द्वारा सस्कृति एव साहित्य के क्षेत्र म विशिष्ट सेवाओ के लिये आपको 'महाराणा कुम्भा पुरस्कार' प्रदान किया गया। १९८८ ई० म आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के 'हीरक जयन्ती' अधिवेशन कलकत्ता की अध्यक्षता का गुरुतर दायित्व निवाह किया। १९८७ ई० म आपकी राजस्थानी कृति 'सबद' पर राजस्थानी अकादमी का सर्वोच्च सूयमल्ल मिश्रण शिखर पुरस्कार' प्रदान किया गया एव आप द्वारा रचित राजस्थान के सास्कृतिक एकीकरण के अमरगीत 'धरती धोरा री' पर आधारित डाक्यूमेन्ट्री वृत्त चित्र पर भारत सरकार द्वारा फिल्मोत्सव म सर्वोच्च पुरस्कार 'स्वर्ण कमल' प्रदान किया गया। सन् १९८९ ई० म भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता की ओर स आपकी राजस्थानी कृति 'सतवाणी' को टाटिया पुरस्कार प्रदान किया गया तथा राजस्थानी वेलफेयर एसोसियेशन बम्बई की आर स राजस्थानी साहित्य के लिए 'नाहर सम्मान पुरस्कार' प्रदान किया गया।

सास्कृतिक चेतना पुरुष,

१९७६ ई० म हल्दीघाटी चतु शती समारोह दश भर म मनाया गया। श्री सठियाजी को राजस्थान सरकार ने हल्दीघाटी समारोह की समिति के वरिष्ठ

सदस्य के रूप म मनोनीत किया। दश भर म आयोजित अनेक समारोहो की आपने अपनी उपस्थिति से गरिमा बढाई। आप पुण्यस्थली हल्दीघाटी के समुचित विकास हेतु केन्द्रीय सरकार एव राज्य सरकार को निरन्तर प्रेरित करते रहे हैं। इसी सन्दभ म मवाड काम्प्लेक्स की योजना राजस्थान सरकार ने केन्द्र सरकार का भिजवाई। देश के शीषस्थ राजनेताओ, साहित्यकारो एव समाज सेवियो को हल्दीघाटी की गरिमा गाथा स्मृति हेतु इसकी पावन मिट्टी का मजूषायें आपने भेंट की।

चित्रकूट विश्व रामायण मेला के लिये आप बराबर प्रयत्नशील रहे हैं एव उसकी परामश समिति के आप सम्माननीय सदस्य हैं। इस सदभ म आपने भारत के सभी क्षेत्रो के विशिष्ट व्यक्तियो से सम्पक साधा, परन्तु १९७६ म राजनतिक आपातकालीन स्थितियो के कारण यह मेला उस भव्य रूप म तो आयोजित न हो सका, परन्तु रामायण मेले के रूप म चित्रकूट म जो आयोजन हुआ उसम भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री मोरारजी दसाई तथा अनेक मूधन्य राजनेता उपस्थित हुए।

श्री सेठिया के प्रयत्न से ही राजस्थानी भाषा साहित्य सस्कृति अकादमी की स्थापना १९८३ ई० मे हुई। आपने ही पश्चिमी सास्कृतिक परिषद के असगत गठन का प्रतिकार कर उसका पुनगठन कराया एव उसका मुख्यालय उदयपुर म स्थापित कराया। आपके ही निरतर प्रयास से राजस्थानी भाषा की रचनाओ को राजस्थान सरकार ने प्राथमिक एव माध्यमिक श्रेणी के पाठयक्रमो म सम्मिलित किया। मालवी भाषा के सरक्षण हेतु भी आप प्रयत्नरत हैं।

आपने राजस्थान म यत्र-तत्र बिखरी प्राचीन अमूल्य कलाकृतियो के उपयुक्त सरक्षण के लिये राजस्थान सरकार के पयटन विभाग का ध्यान आकर्षित किया। आपके सदप्रयास से ही पश्चिम बगाल म पुरुलिया क्षेत्र के ग्राम पाकबाडा म अरक्षित एव बिखरी हुई अमूल्य जन मूर्तियो को सरक्षित करने के लिये राज्य सरकार ने वचन दिया है।

सामाजिक चेतना,

देश और समाज के आप सजग प्रहरी हैं। जहा भी त्रुटि नजर आती है, योग्य व्यक्तियो से सम्पक स्थापित कर उसे ठीक कराने का प्रयत्न करते रहते हैं।

सामाजिक क्षेत्र मे श्री सेठिया मदिरा के जीर्णोद्धार की प्रेरणा के सतत स्रोत हैं। आप नव निमाण की अपेक्षा विद्यमान मदिरा की सुरक्षा को अधिक वल देते हैं तथा समय-समय पर योग्य पात्रा को इसकी प्रेरणा देते रहते है।

आपने सन १९५५ ई० मे राजस्थान मे अपने क्षेत्र म सती प्रथा का पुनर्जीवित करने के सामन्ती षडयन्त्र को विफल करने के लिये केन्द्रीय सरकार को कठोर कदम उठाने के लिये प्रेरित किया और अपराधिया को दण्डित कराने म सफल हुए। अग्रोहा का हरियाणा की राजधाना बनाने के लिये आपके सुझाव को हरियाणा उप-मुख्यमत्री श्री बनारसीदास गुप्ता ने विशेष महत्वपूण माना।

विभिन्न साहित्यिक एव सास्कृतिक सम्मेलनो म आपकी उपस्थिति प्रेरणा स्रोत वनती है। आप रूढिया पर कट्टर प्रहार करने मे तनिक भी सकोच नहीं करते एव विभिन्न मतवादा के ऊपर उठकर भारत की महान समन्वयवादी एव त्यागपूण सस्कृति के पक्षधर हैं उसकी जीवित प्रतिमूर्ति भी। कलकत्ता की अनेक साहित्यिक सामाजिक सस्थाओ के आप प्रेरक हैं।

गत वष के सूखे एव अकाल के समय न केवल आपने 'अघोरी काल' नामक काव्य पुस्तिका लिखकर लोगा एव सत्ताधीशा की मानसिकता का झकझोरा वल्कि प्रत्यक्ष सहायता काय के लिये भी अनेक लोगा को प्रवृत्त करके पशुधन एव मानवा की रक्षा म योगदान किया। आपने अस्वस्थ रहते हुये भी अकाल पीडित क्षेत्रा का दौरा किया।

शिक्षा के क्षेत्र मे सेठियाजी,

शिक्षा का प्रचार प्रसार श्री सेठिया के जीवन का महता महत्वपूण अग रहा है। आपने राजस्थान के विभिन्न नगर उपनगरा के अनेक विद्यालय एव विश्वविद्यालया का स्थापना की प्रेरणा एव सहयाग दिया। आपने गावा म भी शिक्षा का प्रचार प्रसार किया। जागीरदारा के विरोध के बावजूद आपने तहसील डीडवाना के ग्राम लाडसर मे १९४१ ई० म विद्यालय की स्थापना की। आपने बीकानेर, कोटा तथा अजमेर म विश्वविद्यालया की स्थापना के लिये सतत प्रयास किया। प्रसन्नता की बात है कि सातवी योजना म इन विश्व विद्यालया का स्थापना का प्रावधान स्वीकार कर लिया गया है।

अध्यापका की उचित माग का समथन कर उन्हें न्याय दिलाया एव समग्र बीकानेर सभाग मे शिक्षण सस्थाओ के निमाण म सक्रिय योगदान किया।

राजस्थान एव राजस्थानी समाज के ही नही सभी राष्ट्रीय समस्याओ के मूल विन्दु पर आपका ध्यान केंद्रित रहता है एव जनता तथा सरकार म सम्बन्धित भागाको आप निरतर योग्य सुझाव देते रहते है।

हरिजन सेवा और उत्थान,

हरिजनो के प्रति समाज के व्यवहार स आपका मुलायम मन सदा आघात पाता था। बचपन स ही आप इस अन्याय को दूर करने हेतु कृतसंकल्प हो गए एव आपने भगी मुक्ति आन्दोलन प्रारम्भ किया। अपने नगर सुजानगढ म आपने प्रथम हरिजन विद्यालय १९४० म प्रारम्भ कराया एव १९४७ म एक और विद्यालय प्रारभ कराया। महतरो की बस्ती म आपके प्रयत्न स सस्कार केन्द्र, सिलाई केन्द्र काष्ठकला प्रशिक्षण केन्द्र प्रारम्भ किए गये एव आपके प्रयत्न से हरिजनो के छोटे मोटे अनेक उद्योग प्रारम्भ किए जिनसे सम्पन्नता एव शिक्षा बढी। अनेक हरिजनो ने अपना पतक पेशा त्याग कर अन्य सम्मानित पेशो म प्रवेश प्राप्त कर लिया। आज सुजानगढ क्षेत्र के अनेक हरिजन परिवारो के नवयुवक एव नवयुवतिया स्नातक इजीनियर ग्राम सेवक सहकारी समिति बैंक, विद्यालय महाविद्यालयो तथा राजकीय सेवाओ म उच्च पदासीन है। शिक्षा के इस प्रारंभिक प्रयास म श्री सेठिया ने हरिजन छात्रो को अपने आवास पर शिक्षा की व्यवस्था की एव वर्षो तक इसे निभाया। आपने राज्य सरकार स पत्राचार कर सुजानगढ के हरिजनो को पक्के घर निर्माण करने के लिये आवश्यक आर्थिक योगदान दिलवाया। साधारण हरिजनो को अतिरिक्त आय हो सके इसके लिये आपने १९४७ म हरिजन बैंड बाजा की पार्टी का गठन कराया। उससे हरिजनो को सामाजिक उत्सवो म घुलने मिलने का अवसर मिला।

आपने चूरू जिला जल बोर्ड के अपने मत्रीकाल म पूरे चूरू जिले म हरिजनो को सार्वजनिक कुओ पर जल भरने का अधिकार दिलवाया। इसके लिये आपको लम्बा सघर्ष करना पडा एव रूढिवादियो का कोपभाजन भी होना पडा। आप चूरू जिला हरिजन सेवक सघ के अध्यक्ष एव प्रदेश समिति की कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे। आपने कोटा म आयोजित हरिजन सेवको के सेमिनार की अध्यक्षता भी की। १९५५ ई० म जब वियोगी हरि सुजानगढ आये तो आपके प्रयत्नो स हरिजनो की अवस्था म आए परिवर्तन को देखकर गद गद हो गए। उन्होंने कहा कि ऐसा परिवर्तन भारत भर म कम ही स्थानो पर देखने म आया है। आपने चमार रगर सामी गाडिया लुहार एव अन्य अनुसूचित

जातिया के उत्थान एव अधिकारो के लिये भी लम्बे समय तक सघर्ष किया। आपके प्रयत्न से अनेक परिवारो ने शराब त्यागी—मासाहार भी त्यागा एव सुसस्कारित बने। हरिजन महिलाओ मे भी शिक्षण एव सस्कार के लिये आपने कई केन्द्र खोले। गाडिया लुहारो के पुनर्वास के लिये भूमि आवटित कराई। यह आपके ही सुप्रयास का फल है कि हरिजनो मे भी स्नातक तथा स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त महिलाए हैं।

लोक सेवा,

लोक सेवा का कार्य करने वाली देश भर मे फैली अनेक सुप्रसिद्ध सस्थाओ के साथ सेठियाजी सरक्षक या सस्थापक के रूप में जुडे हुए हैं यथा—हनुमान प्रसाद पोद्दार कैसर हॉस्पिटल, गोरखपुर, महावीर इन्टरनेशनल कलकत्ता, राजस्थान परिषद कलकत्ता, नगर श्री सुजानगढ प्रभृति। आपकी प्रेरणा से सस्थापित सस्थाओ की सूची बहुत लम्बी है। ऐसी सस्थाओ म छात्रावास, अस्पताल, स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सालय, पुस्तकालय, विद्यालय, महिला महाविद्यालय, हरिजन उत्थान समितिया, सस्कार केन्द्र, बाल केन्द्र, एकता समितिया एव अनेक साहित्यिक सस्थायें हैं। वृद्धो को पेंशन दिलाने, श्मशान भूमि के आवश्यक एव योग्य सुधार एव ग्रामोत्थान हेतु कार्य करने की प्रेरणा भी आपके कारण अनेक कार्यकर्त्ताओ को मिली एव वे अपने-अपने क्षेत्र म जुटे हुए हैं। १९५५ मे सुवाणा तथा १९५७ मे जैसलमेर म हुए सर्वोदय सम्मेलनो म आप उपस्थित हुए एव सर्वोदय समाज की सुजानगढ मे स्थापना की। १९४७ म आपने शरणार्थी सहायता समिति का गठन किया एव इस सस्था के माध्यम से पीडित मानवता की सेवा की।

श्री सेठियाजी स्वय तो बाल्यकाल म ही लोकसेवा का कठोर व्रत निभा रहे हो हैं, अपने सम्पर्क मे आने वालो को भी सदव इसकी प्रेरणा देते रहते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र म काम करने वाले कार्यकर्त्ताओ की वे अपने परिवार की भाति ही चिन्ता करते रहते हैं एव उनके दुख-सुख सभी मे सहभागी होते हैं। आजके वातावरण मे ऐसा व्यक्तित्व दुर्लभ है। श्री सेठियाजी की ही प्रेरणा से अनेक समाज सेवियो के अभिनन्दन ग्रन्थ एव स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ, अनेक साहित्यकार पुरस्कृत हुए एव कलाकार सम्मानित हुए। साहित्यकारो के कष्टो के समाधान हेतु आप सदव व्यक्तिगत रुचि लेकर कार्य करते रहते हैं।

जीवन दर्शन

आपके साहित्य में भारतीय जीवन दर्शन का जो गहन तत्व जिस सहजता से प्रस्फुटित हुआ है, आधुनिक युग में उसका जोड़ मिलना कठिन है। श्री सेठिया ने अपनी कलम से गागर में सागर एवं बिंदु में सिंधु समा दिया है। लगता है कि अनुभूतियों की गहनता ने ही शब्दों को विरल कर दिया है। आपकी कतिपय कवितायें तो मात्र दो पंक्तियों में ही हैं। फिर भी वे जीवन के गहनतम सत्यों की अभिव्यक्ति का सामर्थ्य लिये हुए हैं। हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकारों ने आपके लेखन की भूरि भूरि प्रशंसा की है। पंत जी के शब्दों में— आपकी कविता को पढ़कर स्वतः ही लगता है कि कविता इस युग में मरी नहीं और भी गहन गंभीर होकर जीवन के निकट आ गई है।'

समाहार,

श्री सेठियाजी सभी व्यस्तताओं एवं असुविधाओं के बीच भी अपनी लेखनी से समाज को अमृत पान कराते ही रहते हैं हमारी कामना है कि वे दीर्घायु हों एवं स्वस्थ रहें।

भारत वर्ष के सभी क्षेत्र के शीर्षनेताओं से श्री सेठियाजी का बराबर सम्पर्क और विचारों का आदान प्रदान रहा है चाहे वे राजनैतिक क्षेत्र के हों साहित्यिक सांस्कृतिक-धार्मिक क्षेत्र के हों या सामाजिक क्षेत्र के हों। सेठिया जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रति उनके मन में कैसी उदात्त भावना है यह इस संग्रह में प्रस्तुत कतिपय पत्रों से स्पष्ट होगी।

११ सितम्बर १९८९

राधा भालोटिया
जुगलकिशोर जैथलिया

अनुक्रमणिका

जीवन दशन,

आपके साहित्य म भारतीय जीवन दशन का जो गहन तत्व जिस सहजता से प्रस्फुटित हुआ है, आधुनिक युग मे उसका जाड मिलना कठिन है। श्री सेठिया ने अपनी कलम मे गागर मे सागर एव बिन्दु म सिन्धु समा दिया है। लगता है कि अनुभूतिया की गहनता ने ही शब्दा को विरल कर दिया है। आपकी कतिपय कवितायें ता मात्र दो पक्तियो म ही है। फिर भी वे जीवन के गहनतम सत्या की अभिव्यक्ति का सामथ्य लिये हुए है। हिन्दी के मूधन्य साहित्यकारा ने आपके लेखन की भूरि भूरि प्रशसा की है। पत जी के शब्दो म—*आपकी कविता का* पढकर स्वत हा लगता है कि कविता इस युग म मरी नही, और भी गहन गभीर हाकर जीवन के निकट आ गई है।"

समाहार,

श्री सेठियाजा सभी व्यस्तताआ एव असुविधाआ के बीच भी अपना लखनी से समाज को अमृत पान कराते ही रहते हैं हमारी कामना है कि वे दीर्घायु हा एव स्वस्थ रहें।

भारत वप क सभी क्षेत्र के शीपनेताआ से श्री सेठियाजी का बराबर सम्पक और विचारो का आदान प्रदान रहा है चाहे वे राजनतिक क्षेत्र के हा साहित्यिक सास्कृतिक धामिक क्षेत्र के हा या सामाजिक क्षेत्र के हा। सठिया जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रति उनके मन म कैसी उदात्त भावना है यह इस सग्रह म प्रस्तुत कतिपय पत्रा से स्पष्ट हागी।

११ सितम्बर १६८६

राधा मालोदिया
जुगलकिशोर जैथलिया

अनुक्रमणिका

महात्मा गांधी

(श्री सठिया की अस्वस्थता के समय प्राप्त पूज्य बापू का पत्र)

भाई कनैयालाल,

तुम्हारा कल्याण हो पूर्णतया शांत रहो राम स्मरण करो।

कन्हैयालाल सेठिया

राजनीति-खण्ड

अंग्रेजी राज्य की छत्र छाया मे राजपूताना के सामन्ती शासको ने निरीह प्रजा का जो उत्पीडन और शोषण किया वह आज इतिहास की कहानी बन गई। सेठियाजी के अपने क्षेत्र मे सामन्ती शासन और उससे जुडी जागीरदारी प्रथा के उन्मूलनार्थ किये गये संघर्ष की एक झलक।

सन १९४२ मे प्रकाशित 'अग्नि वीणा' के लिए राजद्रोह का मुकद्दमा चला और राजस्थानी का वह गीत 'कुण जमीन रो धणी' असंख्य किसानों का कंठहार बन गया।

गोकुल भाई भट्ट
राजनेता, सर्वोदयी

नई दिल्ली,
ता २२।११।४६

प्रिय भाई,

आपका पत्र मिला। सिरोही के बारे म भी मुझे जा कुछ कहना था वह मने कहा था। कौन चाहेगा कि सिरोही के टुकडे हो ?

आपका
गोकुल भाई भट्ट

(आबू के गुजरात म विलय किये जाने के प्रतिवाद मे दिये गये पत्र का उत्तर।)

तार 'कांग्रेस' फोन 388 व 835

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी
जयपुर

सख्या–5929 दिनाक 195

श्री कन्हैयालालजी सेठिया,

आपको विदित ही होगा कि आगामी 5 6 नवम्बर को आबूम प्रदेश कांग्रेस की बठक हो रही है। आबू क राजस्थान म विलय के शीघ्र बाद यह बठक हो रही है। अत आपको भी इस शुभ अवसर पर अवश्य 5 नवम्बर को प्रात आबू पहुँचना चाहिए।

मुझे "सौगध है साथी यह याद है और अब दूसरी कृति भी मिल जाएगी न ?

आपका
गोकुल भाई

जयनारायण व्यास
राजनेता

31 फिरोजशाह रोड
नई दिल्ली २४ ८ ४९

प्रिय सेठियाजी

सप्रेम जयहिन्द। २१ ८ ४८ का पत्र मिला। ड्राफ्ट जयपुर पहुँच ही गया होगा।

३१ तारीख को गोगामंडी पहुच रहा हू। ३० को दुपहर की गाडी से रतनगढ की तरफ से पास होऊँगा। ३० को चूरू और उसी रात गोगामंडी के लिये रवाना हो जाऊँगा।

३० को हो सके तो मिल लें।

आपका
जयनारायण व्यास

नई दिल्ली
१३/८/५०

प्रिय सेठियाजी

सप्रेम जयहिन्द। पत्र मिला। मैंने AICC वालो से बातचीत की है। जो लोग साधारण सदस्य भी नही हैं उन्हें सदस्य या कर्मठ सदस्य नहा समझा जा सकता। अगर इसपर भी चुनाव कराते हैं तो हम Portest करके लडना चाहिये और चुनाव के बाद तुरत ही प्रान्तीय ट्रिब्यूनल के सामने अपील कर दनी चाहिये। बाकी समाचार आपका जुबानी मालूम हो ही जावेंगे।

आपका
जयनारायण व्यास

जयनारायण व्यास
राजनेता

बुचर हाउस
भगवानदास रोड जयपुर
ता० १४ ३ ५२

प्रिय सेठियाजी

सप्रेम जयहिन्द। आपका कृपा पत्र मिला। म १७-३ ५२ का रात की गाडी स कलकत्ते क लिये रवाना होने वाला हूँ। ज्यादा स ज्यादा १८ का रात का रवाना हो सकता हूँ या तो उसके पहिले या कलकत्ते मे आने क बाद म २७ २८ तारीख को यदि गणपतिराज जी यहा पधार जावें तो उपयुक्त होगा। लाडनू म टेलीफोन होगा। मेरा टेलीफोन नं० २६२ है। वे या आप इस नम्बर से बात करें।

शेष कुशल

आपका
जयनारायण व्यास

जयनारायण व्यास
राजनेता

ता० ३०/१२/६०

प्रिय कन्हैयालालजी

४/१/६१ को प्रात काल की गाडी स मैं रतनगढ पहुँच रहा हूं। वहाँ म ६।२५ की ही गाडी से सरदार शहर चला जाऊँगा। १ २ दिन का उस क्षेत्र म रहने का कार्यक्रम होगा। अत यह उचित समझा कि आपको भी सूचना द दूँ। श्री गणेशदासजी महाराज और अन्य मित्रो को भी सूचना दे दें।

सरदारशहर मे ठक्कर बापा सेवासदन के आमन्त्रण पर जा रहा हूँ।

आपका
जयनारायण व्यास

यहाँ से १ को रवाना हो कर दिल्ली पहुँचूँगा। वहा से रतनगढ के लिये रवाना हो जाऊँगा।

जयनारायण

रघुवरदयाल गोइल
अध्यक्ष, प्रजापरिषद
बीकानेर

बीकानेर
ता० २१ ६ ४६

भाई श्री मठियाजी जयहिन्द पत्र मिला। मै आपके और अवश्य आता और समय मिलने ही अवश्य आऊगा भी लेकिन अभी कुछ दिन और नही कारण क्या बताऊँ ? इतना व्यस्त रहता हू कि कुछ कर नही चलता। आज आवश्यक काय से जयलसर जा रहा हू। ५ ६ दिनम लौटूँगा फिर आने का सोचूगा। इधर सरकार ने कई मित्रो को अकारण पकड कर एक विशेष झझट खडा कर दिया है वस भी सरकार परिषद पर न जाने क्या कुपित सी है लेकिन यह कोई चिता या निराशा का विषय नही है इससे तो और उत्साह और तत्परता मिलती है। गाधी जयन्ति का कायक्रम एक दो दिनम आपको मिल जायगा ऐसी आशा है। रचनात्मक कायक्रम तो असल नीव ही है जिस पर कि सही ढग के समाज का निमाण होता है। विस्तार म बात मिलने पर करुगा शेष ठीक। उत्तर देने की कृपा करें। सब स जयहिन्द कह।

आपका
रघुवरदयाल गोइल

(प्रजा परिषद द्वारा रचनात्मक काय करने के सम्बन्ध म दिये गये पत्र का उत्तर।)

रघुवरदयाल गोइल
अध्यक्ष, प्रजापरिषद
बीकानेर राज्य

बीकानेर
ता० २१/८/४७

श्री सेठियाजी,

मैं कल एक पत्र आप की सेवा में भेज चुका हूँ आज फिर एक आवश्यक काम से भेज रहा हूँ। मैं कल जेल में श्री लालचंदजी नथमलजी फूलचन्दजी से मिला था, तीनों स्वस्थ तथा प्रसन्न है, उनके घर कहलवा दें कि किसी प्रकार की चिंता न करें। और यह भी, अगर उनके घरवाले जेल के पते पर उन्हें कोई पत्र लिखें तो जवाबी पोस्टकार्ड लिखें, ताकि वे उसका जवाब दे सकें। बाकी हाल श्री ला० ईश्वरदयालजी वकील आज की गाडी से चल कर कल सुजानगढ पहुँच रहे हैं उनसे मिल कर पूछ लें, उन्हें सब समझा दिया है। शेष ठीक—इन तीनों की तारीख पेशी २५ ८ है, रिश्तेदारों से कह दें जो भी मिलना चाहें कचहरी पर आजाय सबसे मिलना हो सकेगा।

शेष ठीक, उत्तर देंगे—

आपका
रघुवरदयाल गोइल

रघुवरदयाल गोइल
अध्यक्ष प्रजापरिषद,
बीकानेर राज्य

बीकानेर ५/१०/४७

श्री सेठियाजी,

जयहिन्द, पत्र २४/८ का मिला। मुझे कोई खारियावाले नहीं मिले। कम कानूनी सहायता श्री ला० ईश्वरदयालजी इनकी कर ही रहे है। श्री लालचंदजी, नथमलजी मिले ही होंगे। उनसे सब जानकारी हुई होगी शेष ठीक, उत्तर दें, वहा के समाचार लिखें

आपका
रघुवरदयाल गोइल

(ग्राम खारिया तहसील सुजानगढ में चलने वाले जागिरदार—किसान संघर्ष के सन्दर्भ में दिये गये पत्र का उत्तर)।

चौ० हरदत्तसिंह
भू पू उपमुख्यमंत्री
बीकानेर राज्य

बा रा प्रजा परिषद
केन्द्रीय कार्यालय
ता ३१ १२ ४७

भाई कन्हैयालालजी

जयहिंद!

चौधरी जालूराम को हमने सारी बातें समझा दी है। आप इलाके के किसी भी राष्ट्रीय विचारों के आदमी को या बुड्ढा चौधरी सादसर को या और किसी को जो कामयाब हो सके अभी से चुनाव के लिए तयार कर लें और दौड धूप शुरू करवा दें व नामजदगी तारीख के दिन ता ७ २ ४८ उसका परचा नामजदगी दाखल करादे। साथ म चार पाच और वोटा से ताईद व तस्दीक भी करा दे और पूरी तयारी के साथ इन लोगो म काम कराव। मगर ध्यान रखें कि परिषद अभी चुनाव लडने का फसला नहीं कर पाई है। हो सकता है परिषद को जल्द ही सत्याग्रह करना पडे इस लिए आप उधर भी तयारी कीजियगा। ताकि आपको आइन्दा हालात की इत्तला दी जा सके। प्रस्ताव के पर्चे भेजे जा रहे हैं–पब्लिक म वितरित करें व समझा दें।

ता १२ १ ४८ से पहिले पहिल जिनके वोट नहीं बनें है उनकी दरखास्तें दिलवा कर पहले वोट बनवाइयेगा।

हरदत्तसिंह
भूतपूर्व उप मुख्यमंत्री
बीकानेर राज्य

(बीकानर के महाराजा द्वारा राज्य म चुनाव कराने के सन्दभ म प्राप्त पत्र।)

रघुवरदयाल गोइल
अध्यक्ष, प्रजा परिषद
बीकानेर राज्य

बीकानेर
ता २ १ ४८

श्रीयुत सेठियाजी,

तार तथा पत्र मिले, आप की सहानुभूति के लिए धन्यवाद। स्वास्थ्य अब ठीक है। श्री घनश्यामजी अभी नही मिले हैं।

विधान और चुनाव के बारे म परिषद् के रुख की जानकारी आपका समाचार पत्रा से हो ही गई होगी। परिषद का यह विधान मजूर नही है। कल कायसमिति की बैठक है, दखें, क्या हाता है। वाकआत इतनी तेजी स बदल रहे हैं कि जल्दी म कोई कुछ नही कर सकता, अभी परिषद की ओर स महाराजा से सारे मामलात पर बातचीत करने की भी कोशिश है। आशा है इतने से सब आशय समझ गए होगे। कृपा पत्र दें।

आपका
रघुवरदयाल गोइल

चौ० हरदत्तसिंह
भू पू उपमुख्यमन्त्री
बीकानेर राज्य

बी रा प्रजा परिषद
केन्द्रीय कार्यालय
ता ३१ १२ ४७

भाई कन्हैयालालजी

जयहिन्द !

चौधरी जालूराम को हमने सारी बातें समझा दी है। आप इलाके के किसी भी राष्ट्रीय विचारों के आदमी को या बुड्ढा चौधरी सादगर को या और किसी को जो कामयाब हो सके अभी से चुनाव के लिए तैयार कर लें और दौड़ धूप शुरू करवा दें व नामजदगी तारीख के दिन ता ७ २ ४८ उनका परचा नामजदगी दाखल करादें। साथ में चार पांच और वोटों में ताईद व तस्दीक भी करा दें और पूरी तैयारी के साथ इन लोगों से काम करावें। मगर ध्यान रखें कि परिषद अभी चुनाव लड़ने का फैसला नहीं कर पाई है। हो सकता है परिषद को जल्दी ही सत्याग्रह करना पड़, इस लिए आप उधर भी तैयारी कीजियेगा। ताकि आपको आइन्दा हालात की इत्तला दी जा सके। प्रस्ताव के पर्चे भेज जा रहे हैं—पब्लिक में वितरित करें व समझा दें।

ता १२ १ ४८ से पहिले पहिले जिनके वोट नहीं बने हैं उनकी दरख्वास्तें दिलवा कर पहले वोट बनवाइयेगा।

हरदत्तसिंह
भूतपूर्व उप मुख्यमन्त्री
बीकानेर राज्य

(बीकानेर के महाराजा द्वारा राज्य में चुनाव कराने के सन्दर्भ में प्राप्त पत्र।)

रघुवरदयाल गोइल
अध्यक्ष, प्रजा परिषद
बीकानेर राज्य

बीकानेर
ता २ १ ४८

श्रीयुत मठियाजी,

तार तथा पत्र मिले आप की सहानुभूति के लिए धन्यवाद। स्वास्थ्य अब ठीक है। श्री घनश्यामजी अभी नहीं मिले हैं।

विधान और चुनाव के बारे म परिषद के रुख की जानकारी आपको समाचार पत्रों से हो ही गई होगी। परिषद को यह विधान मजूर नहीं है। कल कार्यसमिति की बैठक है, देखें, क्या होता है। वाकआत इतनी तेजी स बदल रहे हैं कि जल्दी मे कोई कुछ नहीं कर सकता, अभी परिषद की ओर से महाराजा स मारे मामलात पर बातचीत करने की भी कोशिश है। आशा है इतने से सब आशय समझ गए होंगे। कृपा पत्र दें।

आपका
रघुवरदयाल गोइल

रघुवरदयाल गोइल
अध्यक्ष, प्रजा परिषद
बीकानेर राज्य

निवास समिति–गाधानगर
जयपुर ता २८ ११ ४८

श्री सठियाजी

पत्र १८ ११ का समय पर मिल गया था उत्तर म कुछ विलम्ब हुआ आशा है क्षमा करगे। मैं २६/११ का चल कर कल यहाँ पहुँच गया हूँ और अब अधिवेशन तक यही रहने की साच रहा हूँ।

जा भावना आपने अपने पत्र म प्रदर्शित की है उसकी मैं कद्र करता हू यद्यपि उसम दी गई कई दलीला म मैं सहमत नहा हू। बीकानेर म मत्री मडल बनने का ता अभा काई प्रश्न ही नहा है हाँ प्रान्त का मत्रीमण्डल सभवत निकट भविष्य म बने उस समय यदि मेरे उस मत्री मडल म लिए जाने का प्रश्न आया ता म उस समय निणय करने स पहिल आपका पत्र निकाल कर पढ लूगा आपका पत्र मने सम्हाल कर रख लिया है।

शेष ठीक–

आपका–
रघुवरदयाल गोइल

रघुवरदयाल गोइल
मत्री
राजस्थान राज्य

४८, सिविल लाइन्स,
जयपुर, राजपुताना
अप्रल ३०, १९४८

श्रीयुत सठियाजी

तार आपका मिला। राजस्थान प्रान्त नया ही बना ह और अभी तक शासन का मशीन ठीक प्रकार की नही बन पाई है यद्यपि बन रही ह और बडी तेजी म बन रही है। लकिन फिर भी कुछ समय तो लगेगा, ऐसा लगता है।

आपने जो सुझाव रखे ह उसके लिये धन्यवाद। उचित समय पर उन पर विचार अवश्य होगा। ऐसा मरा खयाल है।

आशा है आप प्रसन्न होगे।

आपका
रघुवरदयाल गाइल

(राजस्थान म जागिरदारी प्रथा का उन्मूलित करन के सम्बन्ध म दिये गये सुझाव का प्रत्युत्तर।)

रघुवरदयाल गोइल
स्वतन्त्रता सेनानी

बीकानेर
ता ११/११

श्रीयुत सेठियाजी

सादर नमस्कार आपका ३० १० का पत्र मुझे समय पर मिल गया था। दिवाली के काम म लगे रहने के कारण, अब तक उत्तर न दे सका, आशा है क्षमा करेंगे। प्रिय श्री वेदीजी के देहावसान पर दुख हुआ उन्हें यकायक क्या हो गया? वसे दिखने म तो काफी स्वस्थ दिखते थे। पिछले सन ५७/५८ स और उसके तीन साल पहले स, वे मुझ स काफी अप्रसन्न थे। कारण भी कुछ पता नही। पहिले तो जब कभी बीकानेर आते थे यहा ठहरते-खाते थे बडा प्रेम रखते थे। फिर यह यकायक उन की कृपा बद हो गई। इन दिनो सपक म न होने के कारण मुझे ज्ञात नहा है कि उनके क्या क्या चलता था? बस मेरी जानकारी जहा तक है वे एक खादी सस्था चला रहे थे। पता नही उसम अवतनिक थे या कुछ लते थे राजस्थान बोड के सदस्य थे। पिछले चुनावो म उसम पहिले मुख्यमत्री तक उनकी पहुँच था। आर्थिक सबल की सहायता की क्या रूपरेखा है? आपकी क्या कल्पना है? उनके परिवार म कितने सदस्य हैं? कौन कौन कमाते हैं? सहायता एक मुश्त होगा या मासिक इन सब पर कुछ प्रकाश उचित समझें तो डालने की कृपा कर या फिर इधर कोई आता जाता हो तो वह इस बारे म मुझस मिलले मैं सारी स्थिति समझ लू। आशा है आप प्रसन्न होगे।

आपका
रघुवरदयाल गोइल

चौ० कुम्भाराम आर्य
राजनेता

३१, फिरोजशाह रोड
नई दिल्ली
ता २०/१२/१९४८

मान्य कन्हैयालालजी

जयहिन्द! आपकी इच्छानुसार श्री व्यासजी ने आना स्वीकार कर लिया है। वे एक तारीख को पधारेंगे। आप सब व्यवस्था करने के जिम्मेवार होंगे शहर की ओर से स्वागत आदि का प्रबन्ध आपका ही रहेगा–

प्रान्तीय सभा के खर्च के लिए भी आप को ध्यान रखना होगा उसके वास्ते आप एक हजार रुपये तक का प्रबन्ध करवा दें तो ठीक और सन्तोषजनक रहेगा–

आपके भरोसे मैंने श्री व्यासजी को आश्वासन तो थोड़ा दे दिया है यह आप को ध्यान रहे।

आपका अपना
कुम्भाराम आर्य

कुम्भाराम आर्य
राजनेता

बीकानेर
ता० ७ ३ ५१

मान्य सेठिया जी,

जयहिन्द !

गाँवो म से घूमते घुमाते कल बीकानेर आया—आपका पत्र मिला—आ नही सका ! समाचार न मिलने के कारण। आपने बाट देखी अत निराशा। खैर ?

आपसे मिलना है। आपकी ओर आना है। आप मेरे को बच्चे का समाचार लौटती डाक स दें। आपक पत्र आने पर मैं आपकी ओर आने का निश्चय करूँगा–

श्री चन्दनमलजी को भी बुला लिया जाएगा—मेरे को कल महाजन जाना है। प्रौढ शिक्षण लग रहा है। ८ से लग रहा है। दो माह चलेगा। दो सौ आदमियो का प्रबंध किया है।

राजस्थान का झगडा बहुत लम्बा चला है। अब अधिक चलता नही लगता !

सब को जय हिन्द !

आपका अपना
कुम्भाराम आय

कुम्भाराम आर्य
राजनेता

जयपुर
ता0 २०-१२ ५५

प्रिय सेठिया जी,

जय हिन्द !

आपका पत्र मिला, समाचार सब जाने श्री साढाणीजी को बात करने के लिए आज बुलाया पर बात नहीं हो सकी—कल 11 बजे फिर आयेंगे—बात करूँगा आप मेरे स बात किये बिना कोई निर्णय नहीं लेंगे—

आपका अपना
कुम्भाराम आर्य

(चूरू जिला वाटर बोर्ड के मंत्री पद से इस्तीफा देने के सम्बन्ध में लिखे गये पत्र का उत्तर।)

कुम्भाराम आर्य
राजनेता

जयपुर
ता0 १३-३ ५७

प्रिय सेठियाजी,

आपका तार मिला माता पिता सदैव किसी के नहीं रहते यही सन्तोष के लिए एक मात्र सहारा है।

आपसे मिलना है, बहुत समय निकल गया। समय निकाल कर जयपुर आने की सोचें।

चुनाव आपके यहाँ हो गए, परिणाम भी सुन लिए। जो हो गया हो गया।

आगे के लिए तरमीम क्या हो इस पर अभी से विचार करना अच्छा रहेगा। अतः आप एक बार आने का समय शीघ्र निकालें।

सब मित्रों को जय हिन्द !

आपका अपना
कुम्भाराम आर्य

सत्यदेव विद्यालंकार
पत्रकार

४० ए हनुमान रोड
नई दिल्ली
ता० २५ ८ ५०

प्रिय भाई मठियाजी

सस्नेह वन्दे। आपको चिरकाल से कोई पत्र न लिख सका। कुछ ऐसे ही झंझटों में रहा।

लोकनायक श्री जयनारायणजी व्यास की शानदार विजय पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें और उसकी प्रतिक्रिया के कारण शास्त्रीजी को जो झुकना पड़ा है, उसके लिये डबल बधाई स्वीकार हो। शास्त्रीजी के वक्तव्य की नव परीक्षा वाला लेख तो आपने पढ़ा ही होगा। उस पर मुझे अपना मत नहीं लिखा। क्या?

श्री कृष्णाष्टमी पर निकलने वाले अमर भारत के विशेषांक के लिये अपनी कोई रचना शीघ्र ही भेजें। रचना जरा जल्दी ही भेज दंगे।

अपने मासिक के लिये आप क्या तयारी कर रहे हैं? क्या न आप और मैं किसी उपयुक्त समय पर जयपुर में दूगडजी से मिलें? लिखिये आपको कब सुविधा होगी? दिवाली से अपना मासिक शुरू होना ही चाहिये। उसमें अब देरी नहीं होनी चाहिये।

मेरे योग्य सेवा!

आपका भाई
सत्यदेव विद्यालंकार

सत्यदेव विद्यालंकार
पत्रकार

४० ए हनुमान रोड
नई दिल्ली
ता० १४ १२ ५०

प्रिय भाई सेठियाजी,

सस्नेह वन्दे। आपका स्नेहपूर्ण पत्र ग्वालियर से लौट कर कल ही देखा। झांसी से लौट कर मैं बीमार पड़ गया था। बीमारी मे उठा तो ३ दिसम्बर को ग्वालियर चला गया था। श्री तख्तमलजी जैन के ५ ६ पत्र आ गये थे। वहा से कल लौटा हूँ।

राजस्थान की स्थिति फिर बिगड़ रही है। दलबन्दी का नया दौर शुरू है। सरदार की बीमारी के कारण ढील पड़ गई और मामला बीच मे ही लटक गया। इसमें भी भला इतना ही है कि शास्त्रीजी अपने असली रूप में प्रगट हो रहे हैं।

बीकानेर में प्रान्तीय काग्रेस की बैठक के लिये मै १५ दिसम्बर को यहा से चल कर १६ की सवेरे बीकानेर पहुँच रहा हूँ। सम्भव हुआ, तो दो चार जगह और भी जाऊँगा।

आपको रेल पासल से ५० प्रतियां आचार्य श्री के भाषणों के संग्रह की भेजी हैं। १५ प्रतियां अतिरिक्त बगैर कमीशन के भेजी गई है। कुल ६७ प्रतियां हैं। पासल रेल से भेजा गया है। रसीद पत्र के साथ में है।

आपकी दूगड़ से चर्चा न हो सकी। जब हो जाय तभी सही। मैं भी इधर गंभीर चिंतन में हूँ। कोई न कोई रास्ता तो मुझे निकालना ही है। आचार्य श्री तुलसी महाराज जिन लोगों से घिरे है, उनका व्यूह भेद करना असम्भव तो नहीं—परन्तु कठिन अवश्य है और काफी कठिन है। इनके ही कारण आचार्यजी के सन्देश का प्रसार होना भी इतना सुगम नहीं है। यह भी एक दुर्भाग्य ही है।

इधर बीकानेर में मिलना होता है कि नहीं?
स्नेह के साथ—

आपका भाई
सत्यदेव विद्यालंकार

सत्यदेव विद्यालकार
पत्रकार

४० ए, हनुमान रोड
नई दिल्ली
ता० २५ ८ ५०

प्रिय भाई सेठियाजी

सस्नेह वन्दे। आपको चिरकाल से कोई पत्र न लिख सका। कुछ ऐसे ही झझटो म रहा।

लोकनायक श्री जयनारायणजी व्यास की शानदार विजय पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें और उसकी प्रतिक्रिया के कारण शास्त्रीजी को जो सुनना पडा है, उसके लिये डबल बधाई स्वीकार हो। शास्त्रीजी के वक्तव्य की नाव परीक्षा वाला लेख तो आपने पढा ही होगा। उस पर मुझे अपना मत नही लिखा। क्या ?

श्री कृष्णाष्टमी पर निकलने वाले अमर भारत के विशेषाक के लिये अपनी कोई रचना शीघ्र ही भजें। रचना जरा जल्दी ही भेज देंगे।

अपने मासिक के लिये आप क्या तयारी कर रहे हैं ? क्यो न आप और म किसी उपयुक्त समय पर जयपुर म दूगडजी से मिलें ? लिखिये आपको कब सुविधा होगी ? दिवाली स अपना मासिक शुरू होना ही चाहिये। उसम अब देरी नही होनी चाहिये।

मेरे योग्य सेवा !

आपका भाई
सत्यदेव विद्यालकार

जयपुर का कोई हाल आपने नही लिखा। आप बीकानेर पधारेंगे या नही आपके पत्र स कुछ मालूम नही हुआ।

बीदासर के नानचद की शिकायत सुजानगढ तहसील के चुनावा के बाबत प्रातीय काग्रेस मे पहुँची है और प्रात ने जिला को जाच के लिए लिखा है सा आपके ध्यान म रहे। उनकी खास शिकायत यह है कि निश्चित तारीख की उनको सूचना नहा दी गई। एक तारीख की सूचना देकर उससे पहले ही चुनाव कर लिए गए।

उम्मद है आप मजे म हागे।

आपका अपना
चन्दनमल बद

चन्दनमल वैद
अध्यक्ष चूरू जिला कांग्रेस कमेटी

सरदार शहर
ता० १२/१२/५०

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका कृपापत्र आज मिला। मुझे बधाई देकर तो आप अपने आप ही को बधाई दे रहे है क्योंकि आपने जैसा चाहा व इच्छा की वैसा ही हुआ है। फिर भी मेरी तरह से धन्यवाद स्वीकार करे अगर बधाई का भागी न होते हुए भी मैं धन्यवाद दे सकता होऊं तो।

सुजानगढ के साथियो की गैरहाजिरी हमे बहुत खटकी। आसाराम व हनुमानमलजी को तो कम से कम सात दिन पहले मैंने व्यक्तिगत रूप से भी कह दिया था। इसके बावजूद भी केवल सात मे से दो ही पधारे। सुजानगढ की तरफ से कार्यकारिणी के सदस्य लिए जाने का हक केवल जिला कांग्रेस कमेटी की प्रतिनिधि सभा को ही है और उसके लिए जिला कमेटी की बैठक बुलानी होगी। जबतक बैठक नही होती सुजानगढ के साथियो को मैं विशेष रूप से निमन्त्रित करता रहूँगा।

स्वामीजी कार्यकारिणी के सदस्य PCC के सदस्य होने के नाते नही हो सकते। यह छूट केवल जिला कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि होने तक ही सीमित है। मेरी राय मे स्वामीजी को भी कार्यकारिणी मे लिया जाना चाहिए और अन्य दो जिनको भी आप चाहे। फिर जैसा आप कहेंगे उसी अनुसार जिला कमेटी से करवाने की कोशिश की जावेगी।

हीरालाल ने कार्यकारिणी मे जाने की बहुत कोशिश की। कोशिश तो उसने जिला मन्त्री बनने की भी की और स्वामी कर्मानन्दजी मा० दीपचन्दजी आदि को उसने कम से कम कार्यकारिणी के लिए राजी भी कर लिया था। लेकिन मैंने उसका सुजानगढ का उसका रवैया देखते हुए कार्यकारिणी मे न लेना ही उचित समझा।

जिला चुनाव न्यायालय के सदस्य शायद पदाधिकारी नही हो सकते इस वास्ते आपके सुझाये हुए नाम मौजू नही पडते। मै ता १६ १७ को श्री कुम्भारामजी से बीकानेर मे इस बारे मे बात कर लूँगा।

भाई कन्हैयालालजी,

सादर जय हिन्द! विशेष समाचार भाई चन्दनमलजी ने लिख ही दिए हैं। कल गधयाजी भी कह रहे थे कि सुजानगढ वालो का कोई समाचार नही आ रहा है। Phone के द्वारा हम आज आपका contact करने वाले थे। २० मार्च के बाद मिलने म विशेष लाभ नही है। पर अन्य उपाय ही क्या है।

आज यहा Military के प्राय ३० आदमी आए हैं। यह Patrolling troup है जो शायद निकट भविष्य म सुजानगढ भी आ पहुच। यहाँ पर ऐसा समाचार है कि पडिहार की डकती के कुछ सदिग्ध डाकू माल सहित फाजिलका म पकडे गए है। सभव है, कुछ वाछित परिणाम निकल सके।

विशेष समाचारो से सूचित करते रहें

आपका अपना
मूलचद सेठिया

राजपूताना प्रान्तीय काग्रेस कमेटी जयपुर — ता २५ ६ ५१
न ४१७२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

आपका १८ ६ ५१ का पत्र श्री वर्माजी को मिला। जिला के निर्माण के सम्बन्ध म अभी विचार नही हुआ है। जब यह समाचार सामने आयेगा तो आपके स्मरण पत्र का भी ध्यान रक्खा जायेगा।

विनीत
भोलानाथ
प्रधान मन्त्री

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सा सेठिया एण्ड कम्पनी
59, फोरवेस स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई 1

चन्दनमल वैद
अध्यक्ष, चूरू जिला कांग्रेस कमेटी

सरदारशहर
ता १४ ३ ५१

प्रिय श्री सठियाजी

जयहिन्द ! आपका कृपा पत्र मिला समाचार जाने । छापर बिग्गासर तथा चाडवास के बारे म आपने कोई सूचना नही दी ।

चूरू जिले के महाजनो का जो डेपुटेशन जगह जगह मिलने वाला है उसके लिए सरदारशहर म श्री गधेयाजी श्री सेठसाहब श्री मूलचन्दजी सठिया तथा श्री इन्द्रचन्दजी चौरडिया का नाम रतनगढ की सभा द्वारा त हुआ था । जरूरत के मुताबिक इनम स ही दो या तीन या एक को लिया जा सकता है ।

म ता अलग रूप म चूरू जिला कांग्रेस कमेटी की तरफ स जो कुछ कोशिश बन रहा है कर ही रहा हू । रतनगढ म जो चने गए ह उनका जाना ही मेरी समझ म उपयुक्त रहेगा फिर म तो आप जसा आज्ञा करगे उसका पालन करूगा ।

मुझे याद है जब पिछली बार रतनगढ स मने आपसे फोन पर बातचात की थी तब आप ने एक स्मृति पत्र का जिक्र किया था और शायद उस बार म आपने यह भी संकेत किया था कि जिला केन्द्र चूरू की जगह सुजानगढ रखा जावे ऐसी माग चूरू जिला के महाजनो के डेपुटेशन द्वारा इस स्मृति पत्र द्वारा की जायेगी ।

सरदारशहर के साथी इसके पक्ष म नहा है । रतनगढ राजगढ चूरू याने सुजानगढ को छोडकर बाकी सभी इसका विरोध करेंगे । इस वास्ते आप इस पर अगर ऐसा कोई प्रस्ताव हो तो फिर गौर कर ।

बस तो जसा म ऊपर निवेदन कर चुका हू डेपुटेशन म मेरा शामिल होना जरूरी नही है । लेकिन अगर आपकी आज्ञा के मुताबिक मेरा जाना जरूरी हो तो मैं एक extra की हैसियत स चला चलूगा ।

आप इस बार म जो प्रयत्न कर रहे है वे स्तुत्य है । आशा है सबके सम्मिलित प्रयास स हम काफी ल पडगे ।

योग्य सेवा स सूचित करें ।—

आपका अपना
चन्दनमल वैद

भाई कन्हैयालालजी,

मादर जय हिन्द! विशेष समाचार भाई चन्दनमलजी ने लिख ही दिए है। कल गधयाजी भी कह रहे थे कि सुजानगढ वालो का कोई समाचार नही आ रहा है। Phone के द्वारा हम आज आपका contact करने वाले थे। २० माच के वाद मिलने म विशेप लाभ नही है। पर अन्य उपाय ही क्या है।

आज यहा Military के प्राय ३० आदमी आए है। यह Patrolling troup है जो शायद निकट भविष्य म सुजानगढ भी आ पहुच। यहा पर ऐसा समाचार है कि पडिहार की डकती के कुछ सदिग्ध डाकू माल सहित फाजिलका म पकडे गए हैं। सभव है कुछ वाछित परिणाम निकल सके।

विशेष समाचारो से सूचित करते रह

आपका अपना
मूलचद सेठिया

राजपूताना प्रान्तीय काग्रेस कमेटी जयपुर　　　　ता २५ ६ ५१
न ४१७२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका १८ ६ ५१ का पत्र श्री वर्माजी को मिला। जिले के निर्माण के सम्बन्ध म अभी विचार नही हुआ है। जब यह समाचार सामने आयेगा तो आपके स्मरण पत्र का भी ध्यान रक्खा जायेगा।

विनीत,
भोलानाथ
प्रधान मन्त्री

श्री कन्हैयालालजी सठिया
सी सठिया एन्ड कम्पनी
59 फोरवेस स्ट्रीट, फाट बम्बई 1

चन्दनमल वैद
अध्यक्ष, चूरू जिला कांग्रेस कमेटी

सरदारशहर
ता १४ ३ ५१

प्रिय श्री सेठियाजी

जयहिन्द ! आपका कृपा पत्र मिला समाचार जाने। छापर बिदासर तथा चाडवास के बारे में आपने कोई सूचना नहीं दी।

चूरू जिले के महाजनों का जो डेपुटेशन जगह जगह मिलने वाला है उसके लिए सरदारशहर से श्री गधैयाजी, श्री सेठसाहब श्री मूलचन्दजी सेठिया तथा श्री इन्द्रचन्दजी चौरडिया का नाम रतनगढ़ की सभा द्वारा तै हुआ था। जरूरत के मुताबिक इनमें से दो या तीन या एक को लिया जा सकता है।

मैं तो अलग रूप में चूरू जिला कांग्रेस कमेटी की तरफ से जो कुछ कोशिश बन रही है कर ही रहा हूं। रतनगढ़ में जो चुने गए हैं उनका जाना ही मेरी समझ में उपयुक्त रहेगा फिर मैं तो आप जैसा आज्ञा करेंगे उसको पालन करूंगा।

मुझे याद है जब पिछली बार रतनगढ़ से मैंने आपसे फोन पर बातचीत की थी तब आपने एक स्मृति पत्र का जिक्र किया था और शायद उस बार में आपने यह भी संकेत किया था कि जिला केन्द्र चूरू की जगह सुजानगढ़ रखा जावे ऐसी मांग चूरू जिला के महाजनों के डेपुटेशन द्वारा इस स्मृति पत्र द्वारा की जायेगी।

सरदारशहर के साथी इसके पक्ष में नहीं है। रतनगढ़ राजगढ़ चूरू याने सुजानगढ़ को छोडकर बाकी सभी इसका विरोध करेंगे। इस वास्ते आप इस पर अगर ऐसा कोई प्रस्ताव हो तो फिर गौर करें।

वैसे तो जैसा मैं ऊपर निवेदन कर चुका हूं डेपुटेशन में मेरा शामिल होना जरूरी नहीं है। लेकिन अगर आपकी आज्ञा के मुताबिक मेरा जाना जरूरी हो तो मैं एक extra की हैसियत में चला चलूंगा।

आप इस बार में जो प्रयत्न कर रहे हैं वे स्तुत्य है। आशा है सबके सम्मिलित प्रयास से हम काफी लड़ पडेंगे।

योग्य सेवा से सूचित करें।—

आपका अपना
चन्दनमल वैद

भाभी साहबा अब मजे में होंगी। अगर मुझे वे जानती हों तो मेरा जयहिन्द उन तक जरूर प्रेषित करें। बच्चों को मेरी तरफ से प्यार करें। आप राजस्थान कब तक लौट रहे हैं। आम चुनाव के लिए अभी तक कोई तिथि निश्चित नहीं हुई। राजस्थान में तो आम चुनाव जनवरी–फरवरी मास में ही होना चाहिए।

मेराज अभीतक कालिम्पाग ही है।

मेरे योग्य सेवा में सूचित करें।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

चन्दनमल वैद
एम ए एल एल बी, एडवाकेट
अध्यक्ष चूरू जिला काग्रेस कमटी
तथा
सदस्य राजपूताना प्रातीय काग्रेस कमटी

सरदारशहर
(राजस्थान)
ता १४ ७ ५१

प्रिय साथी

सादर जय हिन्द। आपका कृपा पत्र आज मिला। इसके पहले एक कृपा पत्र आपका तारीख १ ६ ५१ का मुझे कालिम्पाग में मिला था जिसमे आपने बम्बई जाने का जिक्र किया था।

उस पत्रकी भावनाओं ने मुझ पर बहुत असर डाला और उस पत्र की कुछ बातो का निराकरण करने के लिए मैं आपको तुरन्त लिखना चाहता था लेकिन मेरे पास आपका पता न होने से मजबूर था। जून के आखिरी दिनो में मैं कालिम्पाग से राजस्थान आया और अभी ४ ५ दिन पहले नानीरामजी से आपका पता मालूम हुआ और आज सरदारशहर पहुचने पर आपका पत्र और पता दोनो ही मिल गए।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि मैं आपके प्रेम व कृपा का पात्र बना हूँ और आपको विश्वास दिलाता हूँ कि कभी ऐसा काम न करूगा जो आपके प्रेम व कृपा को अशोभनीय हो। इसके लिए चाहे कितना ही त्याग क्यो न करना पड़े।

राजनैतिक वातावरण यह है कि दूसरे ने अपनी चूडी फूटी देख कर हमारी चूडी भी फोड दी है।

चौधरी साहब को Home Portfolio मिल गया है और उसके बाद मैं उन से मिलकर अपने जिले की अव्यवस्था के बारे में बात भी कर आया हूँ। वे तुरन्त इसका ध्यान दे रहे हैं तथा इसको सुधारने के लिए कटिबद्ध हैं। यह लौह पुरुष की परीक्षा है।

श्री मोहनलालजी जनसे कल बात करूँगा।

यह सब समस्याएं परेशान कर रही हैं और ऐसे वक्त आप जैसे गाईड की जिले की नया पार लगाने के लिए अत्यन्त आवश्यकता है। अत कृपा करके एक बार जरूर दर्शन देवें।

पत्रोत्तर रतनगढ के पते से देवें और ज्यादा अच्छा यह हो कि पत्र विद्यार्थी भवन, रतनगढ के पते से देवें।

बच्चों को मेरी तरफ से प्यार करें। आशा है आप सपरिवार सानन्द होंगे तथा भाभी साहिबा अब तक स्वास्थ्य लाभ कर चुकी होंगी।

मेरा पत्र अगर आपके आनन्द में खलल डालने वाला सिद्ध हो तो कृपया क्षमा प्रदान करें।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

चन्दनमल बैद एम ए, एल एल बी
एडवोकेट
अध्यक्ष चूरू जिला कांग्रेस कमेटी
तथा
सदस्य राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी

सरदारशहर
(राजस्थान)
ता १७/८/५१

प्रियवर श्री कन्हैयालालजी

आपका कृपा पत्र कल यहाँ आने पर मिला समाचारों से अवगत हुआ। श्री मोहनलालजी को आपका पत्र दे दूँगा। श्री मोहनलालजी तो सन्यासी हो गए हैं। १५ अगस्त को उन्होंने प्रतिज्ञा ली है कि जब तक उन का यह विश्वास नहीं हो जायेगा कि वे देश व समाज की पूरी सेवा कर रहे हैं तब तक जूता व टोपी नहीं पहिनेंगे बाल नहीं बनवायेंगे तथा आगामी १५ अगस्त तक पानी और दूसरे दो और द्रव्य ही खायेंगे।

मेरा रतनगढ़ से दिया हुआ पत्र आपको मिल गया होगा। इन बातों पर आपसे जरूरी मशविरा करना है –

(१) चूरू जिले की ५ सीटों पर किन किन को खड़ा करना—सुजानगढ़ की सीट पर से क्या आप खड़े होने की तकलीफ कर सकेंगे ?

(२) चुनाव के लिए धन की समस्या। अगर केवल कार्यकर्त्ताओं को ही सीट दी जाए जो कि वांछनीय है तो फिर धन चुनाव लड़ने के लिए कहाँ से आयेगा। सीटें बेचने पर तो धन की कमी नहीं रहेगी लेकिन फिर उस धन को लेकर ही क्या करेंगे ? अगर केवल कार्यकर्त्ताओं को ही खड़ा किया जावे तो सारे चूरू जिले के लिए १००,००० से लेकर ६०००० तक रुपया चाहिए। इसका क्या इन्तजाम किया जावे। चुनाव केवल 4½ महीने दूर है। ऐसी हालत में धनकी आवश्यकता तुरन्त है। आपकी राय में क्या बम्बई से कुछ उम्मीद की जा सकती है ?

यह सब समस्याए परेशान कर रही है और ऐसे वक्त आप जसे गाईड का जिले की नया पार लगाने के लिए अत्यंत आवश्यकता है। अत कृपा करके एक बार जरूर दर्शन देवें।

पत्रोत्तर रतनगढ के पते से देवें और ज्यादा अच्छा यह हो कि पत्र विद्यार्थी भवन रतनगढ के पते से देवें।

बच्चो को मेरी तरफ से प्यार करें। आशा है आप सपरिवार सानन्द होगे तथा भाभी साहबा अब तक स्वास्थ्य लाभ कर चुकी होगी।

मेरा पत्र अगर आपके आनन्द मे खलल डालने वाला सिद्ध हो तो कृपया क्षमा प्रदान करें।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

चन्दनमल वैद
अध्यक्ष
चूरु जिला कांग्रेस कमेटी

रतनगढ
ता २८/८/५१

प्रियवर श्री कन्हैयालालजा सठिया

सादर जयहिन्द। आपका दो पत्र मिले। आपके पत्र मिलते हो मैंने चौधरीजी स फोन पर बातचीत की। उनका कहना है कि अगर आप 30 तारीख को जयपुर न पधार सकते हो तो २ या ३ सितम्बर को जरूर पधार जाएँ और उनस और मुझस मिलने की कृपा करें। इन तारीखा पर PCC की मीटिंग हो रही है। अगर इन तारीखा म पहले पधार सक तो और भी अच्छा। आपके आदेशानुसार सारे कार्यों की चेष्टा म करने की कोशिश करूंगा।

पूरा विश्वास है आप जयपुर म निर्धारित तारीखा पर अथवा उनसे पहले मिलने की जरूर कृपा करगे-

बच्चा को मरी तरफ स प्यार करें। आशा है आप पूण रूपेण स्वस्थ होगे।

आपका अपना
चन्दनमल वद

पुनश्च मैं आज जयपुर जा रहा हू।

अध्यक्ष –	–जय हिन्द–	तार का पता 'कांग्रेस'
श्री चन्दनमलजी बगड	चूरू जिला कांग्रेस कमेटी	पत्र सं०
संयुक्त मन्त्री –	कार्यालय–रतनगढ	दिनांक १/६/५१
जयदेवप्रसाद इन्दौरिया		
दौलतराम सारण		

प्रियवर श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका बधाई का तार मिला। मैं बधाई का पात्र नहीं हूँ। सरदारशहर में इन्टर कालेज खोले जाने के बाबत मैंने कोई चेष्टा नहीं की थी। सुजानगढ और सरदारशहर दोनों कालेज के लिए चेष्टा कर रहे थे और इस वास्ते मुझे इस झगडे में चुप रहना ही हितकर जँचा। लेकिन बावजूद इसके मुझे अपयश मिला। सरदारशहर वालों की यह शिकायत थी कि सुजानगढ में मैं माथुर साहब को सुजानगढ में इन्टर कालेज खोलने तथा सरदारशहर में इन्टर कालेज न खोलने के लिए परामर्श दे चुका था। लेकिन आप जानते हैं कि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया था। उधर सुजानगढ वालों की यह शिकायत है कि मैंने अपने चूरू जिला कांग्रेस के अध्यक्ष पद का दुरुपयोग कर के सरदारशहर में कालेज खुलवा लिया। मैं जानता हूँ कि ऐसा संशय आपके दिमाग में तो नहीं है लेकिन फिरभी कुछ सुजानगढ निवासियों का ऐसा भ्रम है। आपही पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने इस कार्य के लिए मुझे यश दिया है। यश और अपयश दोनों ही अकारण मिले हैं, जोकि सार्वजनिक जीवन में कोई अनहोनी बात नहीं है। जब सरदारशहर में इन्टर कालेज आर्टस में खोले जाने का हुक्म हो चुका तब मैंने कुछ चेष्टाएँ आर्टस के साथ साथ साईंस भी खोलने की की थी क्योंकि मैं साईंस को आर्टस से ज्यादा महत्व देता हूँ। और इस चेष्टा का यह नतीजा हुआ कि आर्टस् तो नहीं खुला और साईंस खुल गया। इसके बाद फिर कुछ सरदारशहर निवासी नाराज हो गए और मैंने साईन्स के साथ साथ आर्टस को भी जारी रखने के लिए कुछ प्रयास किए लेकिन माननीय मन्त्री महोदय इससे

सहमत नहीं हुए और अब मरदारशहर म केवल साईंस के साथ इन्टर कालेज है। अब जो भी यश या अपयश आप देना चाहें उसके लिए मैं तयार हू।

सुजानगढ नगरपालिका क चुनाव आज समाप्त हो जायेंगे। कल और परसा मैं सुजानगढ ही था। आपकी गर हाजिरी बुरी तरह से महसूस की जा रही थी। बहुमत काग्रेस का आ जायेगा।

कुछ जरूरी मामला म आपसे सलाह लेनी है। चुनाव कुल ४ ४।। महीने दूर हैं ऐसा हालत म आपका तुरन्त सुजानगढ चले आना चाहिए। माननीय चौधरी साहब बराबर आपके लिए पूछते रहते हैं और कहते है कि उनका तुरन्त बुला लो। लेकिन म यह सोच कर कि आप भाभी साहब का इलाज करवान के लिए गए है मौन रहा। लेकिन इन्तजार की हद है आप अब सुजानगढ पधार कर अपना काय सम्भालने की कृपा करें। आपके बिना सुजानगढ की हालत खराब है।

बच्चा को मेरी तरफ से प्यार करें तथा पत्रोत्तर रतनगढ के पते से दने की कृपा करें।

आपका अपना
चन्दनमल बद

चन्दनमल **बैद** एम ए, एल एल बी
एडवोकेट
अध्यक्ष चूरू जिला काग्रेस कमेटी
तथा
सदस्य, राजपूताना प्रातीय काग्रेस कमेटी

सरदारशहर
(राजस्थान)
ता १७ ६ ५१

प्रियवर श्री कन्हैयालालजी सेठिया

सादर जयहिन्द। आशा है आप सानन्द बम्बई पहुँच गए होगे। मैं आज यहाँ पर पहुचा हूँ।

जयपुर म फिर आप स मिलना न हो सका। कृपा करके निम्न बाता पर ध्यान देवें --

(१) सुजानगढ की सीट स हर हालत म आपको और केवल आपको ही खडा होना होगा। इसम किसी तरह की बहानेबाजी नही चलेगी। यह अन्तिम बात है। चाहे इसका प्रार्थना समझें या आदेश समझें यह आपकी मर्जी है। इस बारे म अब कोई बात नही चलनी चाहिए।

(२) श्री सोहनलालजी दूगड से आप जरूर जरूर मिल लेवें। ससद की सीट ७५% अपने को ही मिलेगी।

(३) श्री दीपकर का आपने तार तथा पत्र दे दिया होगा, अगर न दिया हो तो अब अविलम्ब देने की कृपा करें।

(४) आप जल्दी से जल्दी सुजानगढ पधारने की कृपा करें।

आशा है आप सपरिवार आनन्द और स्वस्थ होगे।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

चन्दनमल बैद
अध्यक्ष
चूरू जिला कांग्रेस कमेटी

सरदारशहर
ता १६-७-५२

प्रियवर श्री कन्हैयालालजी

आपके दो कृपा पत्र मिले। सारी बातें करने के लिए मिलना जरूरी था इस वास्ते पत्र देने में आलस्य कर गया। क्षमा करेंगे। २० तारीख को चूरू में जिला कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक हो रही है। सुना है आप विशेष निमंत्रित है। अगर आप वहां पधारेंगे तो सारी बात हो सकेगी। अन्यथा एक दो दिन के लिए सरदारशहर पधारें। आचार्य श्री के दर्शनों के साथ साथ बातें हो जायेंगी। जरूर कृपा करें।

कृपा भाव बनाए रखें।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

गणेशदास विरक्त
लोकसेवक

भाई सेठियाजी,

बहुत दिन हुए आप को मैं पत्र लिखने के विचार म था किन्तु अब हिम्मत करके आपका पत्र लिखने बैठा हूँ। क्या आप मेरे पत्र पर कुछ भी गौर कर फरमावेंगे अगर ऐसा आप करेंगे ता मैं आपका बहुत आभार समझूंगा।

इस पत्र का तार से भी ज्यादे महत्व दे कर एक बार आप सुजानगढ ता १० ६ ५१ से पहले पहले आ जावें क्या कि धारा सभा के नोमिनेशन की अवधी इसी तारीखा म समाप्त हा जायेगी। अत आप आने म एक भी मिनट की दरी न करें। पहले तो हम जब भी आप से प्रायना करते थे उसी वक्त आप प्रगट होते थे अब आपका देरी क्या हो रही है। अगर आप इस बार नही आयेंगे ता जितनी आपने यहा कायवाही की है वो सब समाप्त हो जायगी और जनता पर भयकर विपत्ति आने वाली है।

मुझे तो आप पर भरोसा है कि अब आप अवश्य पधार जावेंगे। दो दिन रह कर वापिस लौट जाइयेगा किन्तु एक बार आप अवश्य आयें। धारा सभा म हम सब आपको ही भेजेंगे और आपको हमारी यह प्रायना स्वीकार करनी हागी, एक भक्त के नाते आपको हमारी प्रायना स्वीकार करनी पडेगी

आपका अपना
स्वामी गणेशदास विरक्त
७ ६ ५१

रामेश्वर टाटिया
भू पू सासद

दिल्ली
ता १३ २ ५६

भाई श्री कन्हैयालालजी सेती रामेश्वर के रामराम बचना और इया अमतसर स्यू अबार आया हा---

वर्माजी और हरिदेवजा जोशी साथ म है म तथा हरिदेवजी दायू काल कलकत्ते जा रया हा। वर्माजी ने आबू वारा कविता सुणाई जणा काल्या कि आबू के function पर कन्हैयालालजी को भी मानपत्र दना चाहिए क्या कि इहाने उस समय ये कविताए लिख कर बडा काम किया है और सुखाडियाजी से स्कूल की बात हो गयी है आप २० २१ ता० तक जयपुर म उनसे मिलले काम हो जायगा ऐसा लगता है। बदजी मिल ता रामराम कह दीज्यो। जल बोर्ड का काम ठीक चलता होगा ?

आपका
रामेश्वर टाटिया

रामेश्वर टांटिया
भू पू सामद

जयपुर
ता ५ ६ ५६

भाई सेठियाजी

कन अचानक आपका तार मिला। खेद हुआ सारी बातें तो आपस म बैठ के ही हो सकेगी परन्तु इस तरह स इतनी जल्दी इतने बडे काम म इस्तीफा देना उचित मा नहीं जँचता। अगले महिने मे मिटिंग होगी तब तय करके जो कुछ होगा करेंगे। साढानीजा से भी मने बात की है, परन्तु सारी बातें ता अपने फिर कभी बठ कर फुरसत मे करगे। और कुम्भारामजी मे बात हुई थी। अगले चुनाव के बार म सुजानगढ से उनका निश्चित मत आप के लिए है—यद्यपि नाम आना जरूरी था परन्तु उसके लिए भी व्यवस्था हो जाएगी। चौधरी साहब ईश्वर सिंह से बात कर के उनके द्वारा ही आप का नाम दिलायेंगे। मरी भी यही राय है कि अपने को इस क्षेत्र से खडा होना है। कुम्भारामजी से एक रकम सारी बात हो गई है। भागीलालजी, पाड्या जो अपने क्षेत्र के सयोजक ह वे भी बहुत ही सुलझे दिमाग के और अपने मित्र हैं। आप चुनाव के लिए मन कर चल और हो सके तो एकबार चौधरी साहब से मिल लें।

आपका,
रामेश्वर टांटिया

त्रिजलाल बियाणी फोन ७६६६ ७ फिरोजशाह रोड
सदस्य नयी दिल्ली
भारतीय ससद
३१ माच ५०

भाई कन्हैयालालजी

सविनय वन्द। इन दिना म आपका पत्र नही आया। मैंने भी पत्र नही दिया। समय समय पर एक दूसरे को पत्र देते रहें तो अच्छा हो ताकि सपक बना रहे। आपका स्मरण तो अनेकबार आ ही जाता है। सरदारशहर म हुई आपकी प्रथम मुलाकात को म भूल नही सकता।

आशा है आपके सब काम व्यवस्थित चल रहे होगे।

म ता 2 को यहा से रवाना हो कर अकोला जा रहा हू। प्रसन्न रहें। पत्र द।

आपका नम्र
ब्रिजलाल बियाणा

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ

ब्रिजलाल बियाणी
सदस्य
भारतीय ससद

तार बियाणी
फोन ५५

राजस्थान भवन
अकोला (बरार)
२९ अप्रल ५०

भाई सठियाजी,

सविनय वन्द। आपका ता २६ का कपा पत्र मिला। मरा युग इस पुस्तिका का इधर उधर अवलोकन मने किया है। चीज अच्छी है, परतु कुछ विस्तृत विचार अधिक अवलोकन करने पर लिखूँगा।

राजस्थान का भ्रमण अभी तो स्थगित है पर ता 13 का दहली म राजस्थानी जन सवक सघ के निर्माण के लिए कुछ मित्रा की एक बठक होरही है। आपको भी निमत्रण मिला होगा। म आपको खास निमत्रण देरहा हू। आप इस बठक के लिए दहली अवश्य पधारें।

आशा है, आप प्रसन्न होगे। और सब ठीक है।

आपका नम्र
ब्रिजलाल बियाणी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया,
रतन निवास
सुजानगढ

पूर्णचन्द्र जैन
भूदान कार्यकर्त्ता

किशोर निवास, जयपुर
दिनाक ११ १२ ५५

प्रिय श्री सेठियाजी,

आपका ६/१२ का पत्र मिला। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। कमजोरी तो है ही, जल्दी ही सब कुछ ठीक होगा ऐसी आशा है।

श्री जयप्रकाश बाबू का २३ जनवरी से ३० जनवरी का कार्यक्रम इधर का बना है। चूरू, नागौर और बीकानेर जिले का उनका दौरा रहेगा। श्री वेदाजी कल यहा थे। जो कार्यक्रम सोचा है वह वे नोट कर ले गये है। मैं तारीख ५ को उधर आऊँगा और ३ ४ दिन उधर के क्षेत्र मे दूगा।

श्री जयप्रकाश बाबू का कार्यक्रम अब तय हो चुका है। उनके इस निकट के और जैसा कि पूज्य विनोबाजी का आवाहन है आगे भी कम से कम मन ५७ तक के कार्यक्रम का आप बधुओ को सयोजन करना है। आशा है आप लोग सब उत्साहपूर्वक जुट जायेंगे। सब परिचित बधुओ को वदे।

आपका
पूर्णचन्द्र जैन
राजस्थान भूदान यज्ञ समिति
किशोर निवास जयपुर

पूर्णचन्द्र जैन
सर्वोदयी कार्यकर्त्ता

किशोर निवास, जयपुर
दिनांक १ दिसम्बर, १९५५

प्रिय श्री सेठियाजी,

उधर सरदारशहर के शिविर से लौटने के २१ दिन बाद ही मैं अचानक बीमार पड गया। मियादी बुखार से अभी तारीख २२,२३ को छुट्टी मिली है। स्वाभाविक रूप से १५-१७ दिन के निरंतर ज्वर ने बेहद कमजोरी ला दी है। अब कम स्वास्थ्य सुधर रहा है।

श्रद्धेय श्री जयप्रकाशजी का सुजानगढ मे उस समय जल्दी मे और अचानक कार्यक्रम रहा। सुबह को असामयिक समय मे भी मिटिंग सामान्य तौर पर ठीक हो गई और क्लब मे भी विचार विनिमय का मौका मिल गया। इस सब सफल आयोजन के लिये आप सब बंधुओ को धन्यवाद। मैं उधर से लौटते ही पत्र लिखना चाहता था, लेकिन बीमार पड जाने के कारण लिख ही नही सका।

इस बीच भी जयप्रकाशजी का जल्दी ही कार्यक्रम बन रहा था इसकी जानकारी आपको हुई होगी। अब तो वह जनवरी के आखिरी सप्ताह के लिये स्थगित हो गया है। एक तरह से अपने को काम के लिये अधिक समय मिल गया है। श्रद्धेय श्री जयप्रकाशजी की इस बार की यात्रा और आगे के निमंत्रण की स्वीकृति से चूरू जिले पर जिम्मेवारी आई है। भूदान विचार और उसके द्वारा चाही गई नई क्रांति के काम को आगे बढाने मे अपनी शक्ति लगनी चाहिये। श्री जयप्रकाश बाबू या ऐसे विशिष्ट व्यक्तियो का आना जाना तो अल्पकालिक और यदा कदा ही हो सकता है, लेकिन उनसे जो उत्साह, प्रेरणा और विचार-स्पष्टता तथा नई दृष्टि मिले, उसके आधार पर आगे कार्य का संयोजन करने का भार आप बंधुओ को संभालना चाहिये। अबकी बार वे आयें तो उस रूप मे अपने काम का परिमाण और परिणाम Response उनके सामने आना चाहिये। चूरू जिले मे या बाहर भी आप लोग समय शक्ति दे सकते हो तो बहुत ही अच्छा है। लेकिन सुजानगढ मे तो आप लोगो को मिलकर समय शक्ति लगानी ही चाहिये। हो सके तो मै दिसम्बर के आखिरी सप्ताह या

जनवरी के प्रथम सप्ताह म उधर आने का प्रयत्न करूँगा। श्री वेदीजी ता आप से मिलते रहते ही हैं। जिले का, तहसील का या कस्बे का जितना काम बन सके उसका बढाइये और अधिक से अधिक व्यक्तिया का जितना कुछ समय शक्ति का उपयोग इस काम म जब जब हो सके वह कराइये, तब काय व्यापक होगा और विचार भी चारा ओर फलेगा।

आशा है आप सानद है।

आपका,
पूणचन्द्र जन

तार —लखा जोखा टेलीफान —6813 7048

लेखा जोखा

(स्व० जयनारायण व्यास स्मति अक)

क्रमाक जयपुर
३ ३ ६४

प्रिय भाई सठियाजी

श्रद्धेय व्यासजी पर लिखी हुई कविताए इस व्यास स्मृति अक म प्रकाशन के लिए दे कर कृताथ करें।

श्री व्यासजी के सम्बन्ध म अपने सस्मरण भी लिख सकेंगे ता इस स्मति की खटकती कमी पूरी हागी।

अवकाश निकाल कर अवश्य लिख और मरा अनुरोध स्वीकार कर क मुझे कृताथ हाने का अवसर दें।

सादर

सदा तुम्हारा अपना
सुमनेश जोशी

राजस्थान कार्यालय
आयोजन प्रकाशन
वसत हाटेल, चौडा रास्ता जयपुर

बंशीधर पुरोहित
सम्पादक–ज्वाला

जयपुर
दिनांक २२ २ ६५

आदरणीय सेठिया जी,

आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि हम आगामी १४ मार्च १९६५ को स्वर्गीय लोकनायक जयनारायण व्यास की मृत्यु की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर 'जयनारायण व्यास स्मृति अंक' प्रकाशित कर रहे हैं।

आप व्यासजी के संघर्ष काल के निकटतम सहयोगी रहे हैं, इसलिए इस सम्बन्ध में आपके संस्मरण या लेख अधिक रोचक प्रेरक व ज्ञान वर्धक होंगे जो कि उनके कार्यों का सामाजिक, ऐतिहासिक मूल्यांकन प्रस्तुत करेंगे और नये राजस्थान के निर्माण में उनकी ऐतिहासिक भूमिका पर नया प्रकाश डाल सकेंगे।

हमारे विचार से यह विशेषांक आपकी रचना के बिना अधूरा ही रहेगा। अतः आप से प्रार्थना है कि थोड़ा समय निकाल कर स्मृति अंक के लिए अभी तक प्रकाशित विशेषांकों में भेजी गई रचना के अतिरिक्त नई मूल्यवान रचना भेजने की कृपा करें। अग्रिम धन्यवाद के साथ।

सहयोगाभिलाषी
बंशीधर पुरोहित
सम्पादक

श्री कन्हैयालाल जी सेठिया
सुजानगढ़। राजस्थान

अध्यक्ष गगाशरण सिंह
डी लिट (आगरा)
सचिव के आजनेय शर्मा
कोषाध्यक्ष गो प नेन

फोन न २७७८०८
अखिल भारतीय हिंदी सस्था सघ
७५ जवाहरलाल नेहरू मार्ग
नई दिल्ली १
दिनांक ६ ८ १९७४

प्रिय सठियाजी,

म अप्रल क मध्य म दक्षिण चला गया था। वहा स अभी लौटा। आपका ६ मई का पत्र मुझे लौटने पर मिला। इस कारण उत्तर म विलम्ब हुआ।

सारी परिस्थिति स म भी बहुत परेशान और चिन्तित हू। लेकिन मुझे लगता है कि तत्काल कुछ विशेष नही किया जा सकता। अनुकूल परिस्थिति पैदा करनी पडेगी। इस बार की दुघटना के चलते मेरे घुटने और कमर म जो तकलीफ है वह शायद अब जिन्दगी भर भुगतनी पडेगी। दिल्ली और बम्बई म डाक्टर विशेष राहत नही दे सक। शायद एलोपथी म विशेष गुजाइश नही। केरल क आयुर्वेदिक इलाज म शायद कुछ लाभ हो। एक बार पहले मुझे उसस बहुत लाभ हुआ था। राष्ट्रपति गिरि उसी क बल पर चल रह है। वह उपचार समय और व्ययसाध्य है। यदि दोनो उपलब्ध कर सका तो चेष्टा करूगा।

आपका
गगाशरण सिंह

श्री कन्हैयालाल सठिया
सठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मगो लेन कलकत्ता

(श्रीमती इन्दिरा गाधी एव श्री जयप्रकाश नारायण क पारस्परिक विवाद क सन्दभ म लिखे गये पत्र का प्रत्युत्तर।)

इन्दिरा गाधी
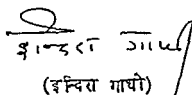
प्रधान मन्त्री भवन,
नइ दिल्ली ११
दिनाक ३०/११/१९६२

प्रिय महादय,

आप की पुस्तिकाये चीन का ललकार और रक्त दा' मिली, धन्यवाद। आप अपनी पुस्तका की तीन सौ प्रतिया भेज सकते ह।

भवदीया,

'हरीश

इन्दिरा गाधी
(इन्दिरा गाधी)
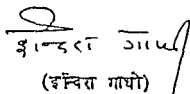
इन्दिरा गाधी

१२ विलिंगडन क्रिसन्ट
नई दिल्ली
१७ अगस्त १९७७

प्रिय सेठिया,

आपका २९/७/७७ का पत्र मिला। सदभावनाआ क लिए धन्यवाद।

भवदीया,

इन्दिरा गाधी
(इन्दिरा गाधी)

(स्व इन्दिराजा क चुनाव म हार जाने के बाद श्री सेठियाजी ने उन्हे लिखा था कि आप राजनीति से ऊपर उठकर बापू के ग्राम स्वराज्य के स्वप्न का पूरा करें। उस पत्र का प्रत्युत्तर।)

हरिदेव जोशी
भू पू मुख्यमंत्री
राजस्थान

चुगी चौकी
अजमेर रोड
जयपुर-372006
टेली 73250
१८ फरवरी १९८८

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका कृपा पत्र समय पर मिल गया था किन्तु मैं पिछले दिनों निरन्तर प्रवास पर रहा इसलिये समय पर उत्तर नहीं दे सका। कृपया इसके लिये क्षमा करेंगे।

आपने अपनी भावनाओं से मुझे विश्वास में लेने का प्रयत्न किया है उसके लिये मैं हृदय से आभारी हूँ। मुझे यह सोच कर हार्दिक सन्तोष होता है कि दूर बैठे हुए आप जैसे विचारक मुझे अपने विश्वास में लेने का प्रयत्न करते हैं।

आपने अपने पत्र में जो कुछ भी लिखा है मैं उससे शत प्रतिशत सहमत हूँ। जो स्थितियाँ आज देश और प्रदेश में बन गई हैं उनके प्रति कभी कभी मन में बड़ी घुटन होती है। चारों तरफ मार्ग अवरुद्ध हो ऐसा लगता है। आप रचनात्मक मूल्यों को पुन प्रतिष्ठित करने की बात कहते हैं परन्तु कई लोग इन बातों को सुन कर मजाक उड़ाते हैं और जो कोई ऐसी बात कहता है उसे अयुगीन कहते हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।
सधन्यवाद,

भवदीय
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल जी सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग क
३ मैंगो लेन कलकत्ता ७०० ००१

हरिदेव जोशी

Chief Minister of Rajasthan
Jaipur

क्रमांक 762/निस/मु म/85
२४ अगस्त, १९८५

प्रिय श्री कन्हैयालाल जी

आपके पत्र दिनांक २६ ७ ८५ प्राप्त हुए।

पंजाब समस्या के समाधानहेतु आपके द्वारा किये गये प्रयास एव राजस्थान के हितो के प्रति जागरूकता के लिए हार्दिक धन्यवाद।

शुभकामनाओ सहित

सदभावी
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया,
सेठिया ट्रेडिंग क
३, मगो लेन, कलकत्ता ७०० ००१

बनारसी दास गुप्त

उप मुख्य मन्त्री,
हरियाणा चण्डीगढ़
दिनांक ३०/६/८७

प्रिय श्री सेठियाजी

पत्र आप का दिनांक २०/६/८७ का प्राप्त हुआ। मुझे खेद है कि मैं अपने कलकत्ता प्रवास के समय आप के दर्शन करने में असमर्थ रहा। यदि मुझे पता होता कि आप अस्वस्थ हैं तो आपके घर आकर भी मैं आपसे मिलता। आप जैसे स्वतन्त्रता सेनानियों से मिलकर मुझे सदैव प्रसन्नता का अनुभव होता है।

आपने अग्रोहा को हरियाणा की राजधानी बनाने का बड़ा ही अच्छा सुझाव लिख भेजा है। यह बात हमारे तथा हरियाणा के अन्य राजनीतिज्ञों के पहले ही विचाराधीन है। जब कभी ऐसा अवसर आएगा तो इस बात को ध्यान में रखा जाएगा।

भगवान आपको शीघ्र स्वस्थ बनाए ऐसी मेरी प्रार्थना है।

आपका,
बनारसी दास गुप्त

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी,
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

सामान्य प्रशासन ।। ग्रुप 2 ।। विभाग

क्रमांक प 61178 1 सा0 प्र0/2/85 जयपुर दिनांक 9/12/86

प्रमाणपत्र

श्री कन्हैयालाल सेठिया पुत्र स्वर्गीय श्री छगनमल सेठिया निवासी रतन निवास, सुजानगढ, जिला चूरू द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन के दौरान सही गयी यातनाओं को दृष्टिगत रखते हुये उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी की मान्यता प्रदान की जाती है।

जे0 पी0 सिंह
विशिष्ट शासन सचिव

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है –

1 जिलाधीश, चूरू।
2 श्री कन्हैयालाल सेठिया, सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी, ३ मैंगो लेन कलकत्ता ७०० ००१
3 रक्षित पत्रावली।

सहायक शासन सचिव

श्री सेठिया द्वारा लिखे गये कुछ महत्वपूर्ण पत्र

कन्हैयालाल सेठिया

सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी,
३, मगो लेन, कलकत्ता १
१६ मार्च, १६७४

आदरणीय,

गुजरात विधान सभा को जिन अभूतपूर्व परिस्थितियों में भंग किया गया है उससे क्या भारत के संविधान के सम्मुख प्रश्न चिह्न नहीं लग गया है? दलीय आधार पर कराये जाने वाले चुनावों में बहुमत प्राप्त कर लेना क्या अर्थहीन नहीं हो गया है? जिस लोकतान्त्रिक प्रणाली के आधार पर गत छब्बीस वर्षों से देश का राजनैतिक ढाँचा खड़ा था उसकी अब जब नींव हो लड़खड़ा गई है, तो उस ढाँचे की इसी स्थिति में बनाये रखना क्या निरंतर राजनैतिक अस्थिरता का कारण नहीं बन जायेगा? बदली हुई स्थितियों में और गंभीर आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में क्या देश के संविधान में व्यापक संशोधन की अथवा नये संविधान की संरचना आवश्यक नहीं हो गई है? अगर संविधान को संशोधित किया जाय तो क्या अन्य आवश्यक संशोधनों के अतिरिक्त स्विस संविधान की वह विशेष धारा जिसके द्वारा जनता को किसी भी चुने हुए प्रतिनिधि को वापिस बुलाने का अधिकार है संविधान में सम्मिलित की जानी चाहिए? भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र में क्या इस धारा को क्रियान्वित किया जा सकना संभव है? अगर नहीं तो क्या जनता की न्यायोचित आकांक्षाओं की सम्पूर्ति के लिए नए संविधान की संरचना ही दूसरा विकल्प है? अगर नया संविधान बने तो उसका आधार और स्वरूप क्या हो? लोकतान्त्रिक और अधिनायकवादी देशों के संविधानों का सम्मिश्रण या भारत की सांस्कृतिक चेतना और कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था की पृष्ठभूमि पर आधारित यथार्थवादी दस्तावेज क्या यह उचित नहीं होगा कि नए संविधान की रूप रेखा एक निर्दलीय या सर्वदलीय समिति बनाए जिसका गठन राष्ट्रपति, शासक दल और विरोधी दलों के परामर्श कर प्रत्येक दल के अथवा उस दल द्वारा सुझाये गये एक ही व्यक्ति को समिति की सदस्यता के लिए मनोनीत करें। प्रस्तावित समिति द्वारा प्रस्तुत किए गए संविधान की अंतिम स्वीकृति जनमत द्वारा ली जाय।

देश के विशिष्ट नागरिक के नाते इन ज्वलन्त प्रश्नों पर आपका सुचिन्तित चिन्तन अपेक्षित है।

विनीत,
कन्हैयालाल सेठिया

(प्रमुख राजनेताओं तथा सांसदों को भेजे गये परिपत्र की प्रतिलिपि।)

INLAND TELEGRAM

EXPRESS

Honbe le Sri Rajiv Gandhi
Prime Minister of India
New Delhi

Kindly Include in your Proposed Ministry atleast two Cabinet Rank Ministers from Rajasthan to accelerate alround Progress of this Backward Border State

Kanhaiyalal Sethia
3 Mangoe Lane
Calcutta 700001

Not to be telegraphed

Sri K L Sethia
3 Mango Lane
Calcutta 700001

29 12 84

(१६ अक्तूबर १९८४ को स्व इंदिरा गांधी के साथ हुये साक्षात्कार के सन्दर्भ में प्रधानमंत्री राजीव गांधी को दिये गये तार की प्रतिलिपि।)

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक-२० १ ८५

प्रिय नवल किशोरजी,

आपको आ भा काग्रेस कमेटी (इ) का महासचिव नियुक्त किया गया एव कार्यकारिणी का सदस्य मनोनीत किया गया इसके लिये हार्दिक बधाई।

राजस्थान म काग्रेस को पुन सक्रिय किया जाना आवश्यक है। जिला काग्रेस समितियाँ प्राय निर्जीव हैं और केवल चुनाव के समय ही थोडी सक्रिय होती हैं। जिला कमेटिया के पदाधिकारिया को न तो अपने क्षेत्र विशेष की समस्याओ मे दिलचस्पी है, न उनका कोई लोक सम्पर्क ही है। जब मत्रिया का दौरा होता है तो उस समय ये तथाकथित पदाधिकारी जरूर मच पर उपस्थित रह कर जनसाधारण को अपने निरथक अस्तित्व से प्रभावित करने की प्रतिस्पर्धा परस्पर करते रहते हैं।

अभी राजस्थान म जो भयानक दुर्भिक्ष पडा है, उसम जिला कमेटिया का जो दायित्व होना चाहिये उसके प्रति कोई भी सक्रियता या सवेदना का भाव नही है जिला समितिया का पुनगठन करते समय उनम उन व्यक्तिया का ही लिया जाना चाहिये जो रचनात्मक कामा म जुडे हुये हैं और जिनकी सार्वजनिक छवि साफ सुथरी है।

आज तो प्राय समितिया म वे ही व्यक्ति हैं जिन्होने स्वतत्रता सग्राम म काग्रेस का डट कर विरोध किया था और सामन्तशाही के दलाल मात्र थे। चू कि इन व्यक्तिया म पसा बटोरने की क्षमता है अत नगरा और कस्बो की काग्रेस समितिया म इनका ही बोल बाला है और सत्ता से जुडे रहने के कारण इनका आतक भी।

श्री राजीव गाधी का काग्रेस का अवाछित तत्वा स मुक्त करने का जा प्रशसनीय प्रयास है वह तभी सफल होगा जबकि तहसील स्तर स प्रान्ताय स्तर तक निममता पूवक शुद्धिकरण किया जाय।

मरा हिदा साहित्य सम्मलन प्रयाग के हीरक जयन्ती महात्मव पर दिया गया अध्यक्षीय भाषण आप को भिजवाया था मिला हागा नववष की शुभ कामना का पत्र भी मिला हागा। प्राप्ति की सूचना दें।

आप स्वस्थ हागे। पत्र दें।
याग्य सेवा--

आपका
कन्हैयालाल सठिया

श्री नवल किशारजी शर्मा
महासचिव अ भा काग्रेस कमटी (इ)
नई दिल्ली

प्रतिलिपि श्री अशोक गहलोत
अध्यक्ष राजस्थान प्रदश काग्रेस कमटी
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति, साहित्य मनीषी

दूरभाष-४७०५१५
सेठिया टेडिंग क
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक २२-११ ८५

प्रिय श्री राजीवजी,

स्टेटसमैन के २० नवम्बर ८५ के अक म प्रकाशित श्री एम के सिन्हा के लेख 'National Integration की कतरन इस पत्र के साथ सलग्न कर आप की जानकारी के लिये भेज रहा हूँ।

राष्ट्रीय एकता के सदर्भ म यह लेख तथ्यपरक है तथा इसम दिये गये सुझाव मननीय हैं।

इस लेख म उल्लेख है कि इन्दिरा ज्योति के मार्ग से पजाब को अलग रखा गया, अगर यह सत्य है तो यह राष्ट्रीय एकता दिवस की मूल भावना के प्रतिकूल हुआ है।

राष्ट्रीय एकता दिवस को किसी भी व्यक्ति विशेष या दल विशेष से सम्बधित नहीं कर उसे एक स्वतत्र दिवस के रूप म मनाया जाना राष्ट्रीय एकता की भावना क अधिक अनुकूल होगा।

प्रस्तावित दिवस पर महात्मा गाधी, सरदार पटेल लाल बहादुर शास्त्री, इन्दिरा गाधी सत लोगवाल तथा उन सब अनाम शहीदो को श्रद्धाजलि दी जानी चाहिये, जिन्होने देश की अखडता व एकता के लिये असाधारण काम किये या अपने प्राणो की आहुति दी।

आशा है आप राष्ट्र की समग्रता को दृष्टि म रखते हुये मेरे इस सुझाव पर गभीरता पूर्वक विचार करने की कृपा करेंगे।

इस सम्बन्ध म आपके विचार से अवगत करें।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा म
श्री राजीव गाधी
प्रधान मत्री, भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया टडिग क
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक २४ ७ ८६

प्रिय श्री राजीवजी

अरुणाचल प्रदन म चीनी सनिका की घुस पठ और अभी तक वहा से नही हटने के समाचार स सारा देश सशक्ति औ॰ विक्षुब्ध है।

इस स दभ म दिये गये सरकारी वक्तव्या से जन मन आश्वस्त नही हुआ है और यह आम चर्चा है कि पुन १९६२ की भूल को दुहराया जा रहा है। चीन का मतव्य स्पष्ट है अब सरकार को किसी भी भुलावे म नही रहना चाहिये।

कूटनीतिक स्तर पर तो प्रभावशाली ढग से इस मुद्दे को उठाया ही जाना चाहिये तथा साथ ही साथ सामरिक दृष्टि स भी जो अक्षमताए हैं उहें बिना विलम्ब दूर किया जाना चाहिये।

भारत की सावभौम-अखडता के लिये तिब्बत की स्वतन्त्रता का सवाल अतिम रूप स जुडा हुआ है। दलाई लामा की निष्कासित सरकार का उपयुक्त समय पर मायता देना इस दिशा मे एक सही कदम होगा।

आगामी २० अगस्त आप का ज म दिन है यह शुभ अवसर दश के लिये नये जागरण और आत्म विश्वास का दिन बने यह मेरी हार्दिक कामना है।

जय हिद !

आपका
क हैयालाल सेठिया

श्री राजीव गाधी
प्रधान मन्त्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क
३, मैंगो लेन
कलकत्ता-७०० ००१
दिनाक २० ७ ८७

प्रिय श्री राजीवजी,

भारत के राष्ट्रपति के रूप म काग्रेस प्रत्याशी की विजय हुई इस के लिये बधाई।

हरियाणा मे लाकदल की विजय राजस्थान एव मध्य भारत की काग्रेसी सरकारा के लिये एव सामयिक चेतावनी है। इन राज्या म विकास के कामा को अपेक्षित गति देना जरूरी है।

राजस्थान म इन्दिरा गाधी नहर के विस्तार की जा याजना राजस्थान सरकार ने केन्द्र की स्वीकृति के लिये दी थी, उस म की गई काट-छाट को वापिस ले लेना चाहिये और पूरी याजना को स्वीकार कर आवश्यक आर्थिक योगदान दे कर याजना को गति से पूरा कराया जाना चाहिये।

गगा के बाढ के अतिरिक्त जल का राजस्थान की मरुभूमि का देने का निणय यथा शीघ्र लिया जाना चाहिये।

नर्मदा योजना को क्रियान्वित किया जाना चाहिये।
राजस्थानी भाषा को सविधान म सम्मिलित किया जाना चाहिये।

मध्य भारत मे आदिवासिया से सम्बन्धित विकास के काम एव उनकी समस्याआ का समाधान गति स किया जाना चाहिये।

पुराने मध्य भारत (इन्दौर ग्वालियर) क्षेत्र का तथा राजस्थान का बडी रेल लाइन से देश के अन्य मार्गों से यथा शीघ्र जोडा जाना चाहिये। यातायात के समुचित साधना के अभाव म इन खनिज-बहुल राज्या का अपेक्षित विकास अवरुद्ध है।

आशा है आप मेरे विनम्र सुझावों पर विचार करेंगे और सुझावों की क्रियान्विति के लिये आवश्यक निर्देश देंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजीव गांधी
प्रधान मन्त्री, भारत
नई दिल्ली

साहित्य खण्ड
(हिन्दी)

कविमनीषी सेठियाजी की काव्ययात्रा का समुचित मूल्यांकन अभी होना शेष है किन्तु उनकी काव्यात्मक प्रतिभा और सहज अभिव्यक्ति की स्वीकृति हिन्दी के जिन शीर्षस्थ कवियों—साहित्यकारों द्वारा हो चुकी है, उसकी एक संक्षिप्त झलक यहां प्रस्तुत है।

श्री सेठिया 'साहित्य-मनीषी' और 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधियों के अतिरिक्त केन्द्रीय साहित्य अकादमी और भारतीय ज्ञानपीठ के मूर्तिदेवी पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके हैं।

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

६, ए स्ट्रेची रोड
प्रयाग
दिनांक २१ ३ ८६

प्रिय सठियाजी,

पत्र के लिए धन्यवाद।

कविताओं के लिए जो उद्गार आपने प्रकट किए है उनके लिए आभारी हूँ।

प्रयाग आने पर दर्शन दें।

आज कल आना ठीक नही। हिन्दु मुस्लिम दंगे हो रहे है—गर्मी भी खूब पड़ रहा है।

मेरी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं–'बंगाल का काल' और नई भूमिका के साथ खयाम। रुचि हो तो उन्हें देखें।

आशा है आप प्रसन्न हैं।

शेष कुशल

भवदीय
[हस्ताक्षर]

डॉ हरिवंश राय बच्चन,
एम ए पी एच डी (कैंटब)

विदेश मंत्रालय
नई दिल्ली ११
दिनांक १ १० ६२

सम्मान्य बंधु

पत्र और रचना दो की प्रति के लिए आभारी हूं।

मैंने पुस्तक पढ़ा। रचना जोशीली है। उसपर लिखकर— **उसे पढ़ कर दूसरों का दे दें** मने पुस्तक किसी और के हाथ म द दो है म चाहता हू उसे दिल्ली भर पढे।

हम देश म **सत्य चेतना** जगाना है। भारत को सजग प्रहरी बन कर हा अब बढना है।

काव्य का माचा भी मजबूत रहे। हम सबल कदमा की जरूरत है।

मुझे विश्वास है आपके योगदान से कलम का मोर्चा मजबूत रहेगा। राजस्थानी म भी काफी लिखें।

चीन एस बर्बर शत्रु का मुकाबला करने को लम्बी तयारी चाहिए।

मानस बस आधार है–उस पर बहुत कुछ स्थूल उठाना है जय हिन्द!

(हस्ताक्षर)

डॉ हरिवंश राय बच्चन
एम ए, पी एच डी (कैंटब)

१३, विलिंगडन क्रिसेंट
नई दिल्ली ११
दिनांक २१-११ ६२

भाई

जय हिन्द
पुस्तक के लिए ध
दख कर प्रसन्नता हुई। पढ कर जोश आगया।
कलम के मोर्चे पर हम दढ रहना है।

एक प्रति—डिफेन्स कौंसिल—राष्ट्रपतिभवन, नइ दिल्ली को भेज। एक श्रीमती इंदिरा गाधी क पास एक निर्देशक आकाशवाणी केन्द्र नई दिल्ली को जयपुर रेडियो को भेज ही चुके होगे?

रडियो वाला को लिख दें कि किसी औपचारिक अनुमति के बगैर इसको जब चाह प्रसारित करे—ऐसा सकेत पुस्तक पर कर देना था। या आवश्यकता पडने पर आप से लिखापढी करेंगे।

सरकारी प्रचार मा यमा के अतिरिक्त जनता के व्यक्तिगत साधना का भी उपयोग हो। पढे लिखे लोग अनपढा म बैठकर ऐसी रचनाओ को सुनाएँ और देश के हौसले को ऊँचा रखे।

आज भारत सबस यह प्रत्याशा करता है कि जो भी जो कर सकता है कर—लक्ष्य केवल एक है, चीनी अजगर को भारत की सीमा स पार भगाना चाहिए।

मैंने पुस्तक पर लिख दिया है उसको पढ कर दूसरा का दे दो। किताब कही रुके नही। जय हिन्द!

डॉ हरिवश राय बच्चन दिनाक ३० १ ७४
कवि

सम्मान्य बधु

आपकी दोना पुस्तको के लिए हृदय से आभारी हू।

दोनो को मनोयोग पूर्वक पढ गया— मर्म मे जीवनानुभवो का निचोड ही आगया है। पढते पढते मुझको प्रेरणा मिली एक दुपक्ति लिखी—विशेष क्या कहूँ

जिन्दगी के दिन थोडे
अब किसी से क्या नाता जोडे।

कैसी है ?

विशेष प्रभावित हुआ आपके Reflection in a mirror अनुवाद 1st class हुआ है। पढने के पश्चात मौलिक कृति फिर पढने की कामना हुई।

आशा है आप स्वस्थ प्रसन्न है।
बम्बई आने पर दर्शन दें ।
शुभ कामनाए सादर

[signature]

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

दिनांक ७ ३-७४

सम्मान्य बंधु

पत्र के लिए धन्यवाद।
प्रतिबिम्ब' के नए संस्करण के लिए अग्रिम धन्यवाद।

फिर से उसे पढ़कर प्रसन्नता होगी।

अजिताभजी ने त्रपु एंटरप्राइज के नाम से Tin Box बनाने का कारखाना खोला है—

जुलाई में आप बम्बई आएँ तो निश्चय मिलें।

मैं आजकल लिखने के नाम पर केवल पत्र लिखता हूँ और पढ़ने के नाम पर पत्र पत्रिकाएँ—

आपने जिस मंजिल का संकेत किया है, वह दूर ही है उसे कौन कह सकता है वह नजदीक भी हो सकता है। गीत मंजिल की दूरी निकटता पर निर्भर नहीं होता है। गीत पैदा होता है कुछ दूसरे ही कारणों से—खैर कविता से तो मैं विदा ले चुका गद्य से लेना बाकी है।

आत्म चित्रण के दो खण्ड लिखना चाहता हूँ। देखें कब उसके लिए सुयोग पाता हूँ। अभी तो जीवन भी नई रुचियों में खिंच गया है।

और जीवन को कलम घिसने से अधिक रोचक पाता हूँ।

जया को मार्च में बच्चा होने वाला है और मैं दादा बन जाऊँगा।

शेष सामान्य
शुभ कामनाएं

आपका

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

amitabh bachchan
20 Presidency Society
North South Road 7
Juhu Parle Scheme Bombay 400 056

दिनाक २६ २ ७६

सम्मा य वधु

पत्र के लिए ध

कविता तो बहुत मार्मिक है।

अमिताभ क पुत्र का नाम अभिषेक मैंने रखा है—आपका आशीर्वाद चाहिए।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मेरा भी स्वास्थ्य बहुत अच्छा नही पर चिंता का बात नही।

हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ—सो जाही विधि राख राम ताही विधि रहिए।

शुभ कामनाए

सप्रेम

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

प्रतीक्षा
१४, उत्तर दक्षिण रास्ता न १०
बम्बई ५६
दिनांक २६-७ ७६

सम्माय बधु

ताजमहल की प्रति क लिए धयवाद।
कति ने मुझे आश्चय म डाल दिया।

म आपसे उदू नायरी की ऐसी मधी रचना का प्रत्याशा कर ही नही मक्ता था।

आपकी रचनाआ से कभी ऐसा आभास नहा मिला था कि आपका उदू पर इतना अधिकार है। क्या यह नई उपलब्धि है?

रचना नाजुक और नफीम है। बधाई बारबार।
अभी भी म यह विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ कि यह आपकी ही रचना है।

एक बार ता पूरी पढ गया, पर यह तो बार-बार और मजा ले लेकर पढने की चाज है।

यह ता नया ही रग आपने दिखाया 'नमा हर रग म जलती है सहर हाने तक--गालिव।'

आशा है, आप स्वस्थ सानन्द हैं। यहा के समाचार सामाय।

परिवार मे वद्धि हुई है—अमिताभ के घर 'अभिषेक आए, अजिताभ के घर नम्रता' आई।

शुभ कामनाएँ

सादर

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

अमिताभ बच्चन
प्रतीक्षा
१४ उत्तर दक्षिण रास्ता दसवा
बम्बई ४०० ०८६
दिनाक २५ १० ७६

सम्मान्य वध

पत्र के लिए धयवाद ।
सदभावना क लिए आभारी हू ।

निग्रथ समय स मिल गया था पढा भी था मैंन फिर पढन क विचार स पत्रात्तर आपका नही दिया था । अब दुबारा भा देख गया हू ।

आप अपनी हर कति मे मुझे चकित कर त है ।
कितनी बहुमुखी है आपकी प्रतिभा ! उसम अखुवाया दशन नही प्रतिभा मिला दशन है ।

जावन दष्टि और अभियक्ति की परिपक्वता का उदाहरण---
मरी राय है अब आप काई बडी क ति द जिसका अखिल भारताय मानद से सम्मान हो । महाकाव्य या खण्डका य ।

महाभारत म काई कथा ल और उस युगीन सदभ दें एसी जिमम युग अपनी शका का समाधान पाए ।

शप सामा य ।
अगले सप्ताह कुछ दिना के लिए दि ली जा रहा हूँ ।
शुभ कामनाए

आपका

[signature]

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

२३ विलिंगडन क्रिसेंट,
नई दिल्ली-११
फान ३७-२८२३
दिनाक ११-११ ७६

सम्मान्य बधु,

कपा पत्र के लिए ध ।
सद्भावना के लिए आभारी हूँ।

महाकाय अथवा प्रबध काव्य के सम्बन्ध म आपके विचार का स्वागत—

उसमे अलग सोचने की भी गुजाइश है यह ता आप मानेंगे। खैर—,

विदेश मैं कहाँ जा रहा हूँ ?

सुपुत्र के विवाह के अवसर पर वर-कन्या पक्ष के समस्त सदस्या का हार्दिक बधाई।

वर-वधु का ववाहिक जीवन रस मगलमय हो प्रभु से यही मरी प्राथना।

और आप शतजीवी हाकर पौत्र पौत्रिया का बाल सुख दखें। आना शायद ही सभव हो सके। क्षमा करेंगे।

समपण का विचार आपकी सहृदयता उदारता है।

वास्तव म हर कविता जनता-जनादन को समर्पित होती है, जिसे वे स्वीकार कर लें वह कृति कतिकार दाना धन्य हो जाते है।

इलाहाबाद के घर का नाम 'वसुधा' था।
मैं कुछ दिना के लिए दिल्ली आगया हूँ।
शेष सामान्य
शुभ कामनाएँ

सादर

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

१३ विलिंगडन क्रिसेंट
नई दिल्ली ११

दिनांक २२ १२ ७६

सम्मान्य बंधु,

अपनी राजस्थानी कृति पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई।

हिन्दी पर भी आपको मिलना चाहिए।

शेष सामान्य

शुभ कामनाएं

आपका

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

अमिताभ बच्चन
'प्रतीक्षा
१५ उत्तर-दक्षिण रास्ता दसवा
बम्बई ४०० ०५६
दिनाक १२-३ ७८

सम्मान्य बधु,

बहुत दिनो से कोई समाचार नही। आशा है सपरिवार स्वस्थ सानन्द हैं।

अपनी आत्मकथा का तीसरा खण्ड 'बसेरे मे दूर' भिजवाया था
मिला ?
पढा ?
कोई प्रतिक्रिया ?
म कुछ दिनो को बम्बई आगया हूँ।
उधर होली तक रहूँगा।

रामनिवास बम्बई आए थे तो भेंट हुई थी, उनका भी इधर कोई समाचार नही।

परिवार म सब लोग सानन्द
शुभ कामनाएँ

सादर
(हस्ताक्षर)

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

C/o अमिताभ बच्चन
'प्रतीक्षा
१४, उत्तर-दक्षिण रास्ता दसवां
बम्बई ४०० ०५६
दिनांक १७ ३ ७८

सम्मान्य बंधु

पत्र के लिए धन्यवाद।
सदभावना के लिए आभारी हूँ।

मेरा कोई कविता संग्रह नहीं निकला कविता से मैंने विदा ले ली है।

बच्चों के लिए एक पुस्तक जरूर लिखी है, 'जन्म दिन की भेंट— जिसमें बच्चों के लिए ११ कविताएँ हैं। आपकी क्या रुचि होगी उसमें ?

मैं एक योजना पर काम कर रहा हूँ। भारतेंदु से आज तक की हिंदी कविता का एक संकलन—प्रतिनिधि और श्रेष्ठ—गीत या गीत परक आपका स्थान उसमें सुरक्षित है।

क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकेंगे ?
किस तरह ?

आप अपनी ५ सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कविताओं का चुनाव कर दें। मैं उनमें से २ या ३ कविताएँ चुन लूँगा। कुल कविताएँ १०८ होंगी—लगभग ३५–४० *कवियों की।*

आपसे इतनी सहायता पाकर मैं आभारी हूँगा।

राजस्थान में और किन कवियों को उस संकलन में स्थान दिया जा सकता है ?

आशा है आप स्वस्थ सानंद हैं।
शुभ कामनाएँ

आपका
[हस्ताक्षर]

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

B १६१ ग्रेटर कलाग,
नई दिल्ली-४८
फान ७४४८६
दिनाक १६ ६ ७८

सम्मा य बघु

पत्र के लिए ध यवाद।

'अनाम के निए आभारी हूँ। पूरी पढ गया।
कविता क्या मन हो हैं ये—
छाटे छोटे सूना म जीवन गहन रहस्य—वधाई!
स्वास्थ्य गिरता

आज रामनिवास के यहा गया था। सघ्या को मरे घर आएँगे। आपकी चर्चा आएगी ही। उ हें भी 'अनाम भेजा क्या?

सब को परिवार म शुभ कामनाएँ

आपका

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

C/o अमिताभ बच्चन
'प्रतीक्षा'
१४, उत्तर-दक्षिण रास्ता दसवां
बम्बई ४०० ०५६
दिनांक १७ ३ ७८

सम्मान्य बंधु

पत्र के लिए धन्यवाद।
सदभावना के लिए आभारी हूँ।

मेरा कोई कविता संग्रह नही निकला कविता से मने बिदा ले ली है।

बच्चा के लिए एक पुस्तक जरूर लिखी है जन्म दिन की भेंट– जिसम बच्चा के लिए ११ कविताएँ है। आपका क्या रुचि हागी उसम ?

मैं एक योजना पर काम कर रहा हूँ। भारतेन्दु से आज तक की हिन्दी कविता का एक सकलन—प्रतिनिधि और श्रेष्ठ—गीत या गीत परक, आपका स्थान उसम सुरक्षित है।

क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकेंगे ?
किस तरह ?

आप अपनी ५ सवश्रेष्ठ प्रतिनिधि कविताओ का चुनाव कर दें। मैं उनम से २ या ३ कविताए चुन लू गा। मुल कविताएँ १०८ हागी—लगभग ३५–४० कविया की।

आपसे इतनी सहायता पाकर म आभारी हूँगा।

राजस्थान स और किन कविया को उस सकलन मे स्थान दिया जा सकता है ?

आशा है आप स्वस्थ सानन्द हैं।
शुभ कामनाएँ

आपका
[signature]

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

B १६१ ग्रेटर कलाश,
नई दिल्ली-४८
फोन ७४४८६
दिनाक १६ ६-७८

सम्मान्य बघु

पत्र के लिए घयवाद।

अनाम के लिए आभारी हूँ। पूरी पढ गया।
कविता क्या मत्र ही हैं ये—
छोटे छोटे सूत्रा म जीवन गहन रहस्य—बघाई !
स्वास्थ्य गिरता

आज रामनिवास के यहाँ गया था। सध्या को मरे घर आएँगे। आपकी चचा आएगी ही। उन्हें भी अनाम भेजा क्या ?

सब को परिवार म शुभ कामनाएँ

आपका

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

प्रतीक्षा'
१४, उत्तर-दक्षिण रास्ता दसवाँ
बम्बई ४६
१ १ ८०

सम्मा य वधु

पत्र के लिए ध यवाद।
नया वप आपके और परिवार के लिए मग नमय हो।
प्रसन्नता है आपको अमिताभ का काव्य पाठ रुचा।

यहा के समाचार सामा य हैं।
७३ वें म पहुँच गया।
स्वास्थ्य अवस्थानुसार

वि ेप चि ता आजकल दे के भविष्य की—देखें चुनाव का क्या परिणाम होता है—वि व के रगमच पर जो घटनाएँ घट रही हैं उनका प्रभाव भारत पर भी पडेगा। खर।

याद किया आभारी हूँ।

सादर

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

'प्रतीक्षा
१०वी नाथ साउथ रोड
जूहू पारले स्कीम
बम्बई-४०० ०४६
दिनाक ३० ३ ८०

सम्मान्य बधु,

२२ ३ ८० के पत्र के लिए धयवाद।

प्रेमचन्द शती जयती म भाग लेने को मैं दिल्ली गया था।
कल ही लौटा।
गजानन्द के साथ ही ठहरा था।

प्रस्तावित सकलन नहा बन सका। कोई अच्छा प्रकाशन मिलने पर उस योजना पर फिर काम करूँगा।

योजनाबद्ध रीति से कुछ नही लिख रहा—आप कुछ लिख रहें ?
कलकत्ते आना हुआ तो निश्चय आपसे सपक करूँगा।

रामनिवास के पत्र यदा-कदा आते रहते हैं, फिर भी मिलें तो मेरी याद कहें।

परिवार म सब लोग सकुशल।

मेरा स्वास्थ्य अवस्थानुसार

शुभ कामनाएँ

सादर

डॉ हरिवंश राय बच्चन
कवि

'सोपान'
गुल मोहर पार्क
नई दिल्ली
दिनांक २३ ३ ८३

सम्मान्य बंधु

राजकमल प्रकाशन दिल्ली, मेरी सम्पूर्ण ग्रंथावली प्रकाशित कर रहे हैं।
इसी सिलसिले में यहाँ

आपका पत्र बम्बई होकर यहा मिला। धन्यवाद।

जाल समेटा का नया सस्करण प्रेस में है। आने पर एक प्रति आपको भेज कर प्रसन्नता होगी।

वह ग्रन्थ नहीं तैयार हो सका।
बीच में प्रकाशक ने योजना छोड दी।
यहाँ तेजी जी भी मेरे साथ हैं।
शेष परिवार बम्बई में सकुशल।

आपके और परिवार के मंगल के लिए शुभ कामनाएँ

कुछ लिख रहे हैं आजकल ?
कुछ गद्य क्या न लिखें ?
संस्मरण या आत्मकथा ?

आपका
[signature]

गुलाब खण्डेलवाल चौक, गया
कवि दिनांक 1।8।67

आदरणीय सेठियाजी,

आपका पत्र मुझे यहा आज पूरे एक मास के बाद दिया गया। भूल से कागजो मे दवा रह गया था। अब तो आप सुजानगढ पहुच गये होगे। वहा का समाचार सब ठीक होगा। 'उषा" के सबध मे जो पुस्तक निकली है वह आपको शीघ्र ही भिजवाऊगा। आपने भी अपनी नवीन पुस्तक भेजने का वायदा किया था सो मैं समझता हू पुस्तक शीघ्र ही मिलेगी।

वियोगी जी आपकी पुस्तक की बहुत प्रशसा कर रहे थे। उन्होने जो शब्द कहे उन्हें ही दुहरा रहा हू। "यदि दिनकर जानकीवल्लभ आदि कवियो की सर्वश्रेष्ठ रचना मगा ली जाय और प्रतिबिम्ब के किसी भी पृष्ठ से कोई कविता निकाल कर उससे तुलना की जाय तो प्रतिबिम्ब की रचना श्रेष्ठ निकलेगी।'

शेष कुशल है। आशा है सानद हैं।

भवदीय
गुलाब

नीलकंठ तिवारी श्रीपत भवन फस्ट फलोर
कवि वाडिया स्ट्रीट, तारदेव
बम्बई-34
दिनांक 15 8 68

प्रिय कविवर श्री कन्हैयालालजी,

नमस्कार।

काव्य सग्रह एव कृपा-पत्र के लिए धन्यवाद। इन दिनो अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण मैं पूर्ण रूपेण आपके काव्य-सग्रह का आनन्द नही ले पाया। इसलिए विलम्ब से उत्तर दे रहा हूँ, क्षमा करें। आपके काव्य-सग्रह ने मेरी आँखें खोली दी। आपकी रचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि आप वास्तव मे कवि हैं। भाषा की प्राञ्जलता, भावो की गभीरता, भावनाओ की मार्मिकता हृदय की गहराईयो को छू लेती हैं।

हिन्दी ससार ने आपका भी उचित मूल्याकन नही किया। आज-कल हिन्दी-ससार की गुटबाजियो के कारण वातावरण दूषित हो रहा है। स्वय-सिद्ध मठाधीश ककर को हीरा और हीरे को ककर कहकर क्षणिक और सस्ती प्रसिद्धि को साधना की सिद्धि का प्रमाण मान रहे हैं।

मैथिलीशरण गुप्त
राष्ट्रकवि

३५ मीना बाग
नई दिल्ली
ता० २५ ११ ६२

प्रिय महाशय

श्री पन्नालालजी ने आपका 'प्रतिबिम्ब' मुझे दिया। आपका इसके लिए आभार मानता हूँ। प्रतिबिम्ब आपके सुन्दर हृदय का ही प्रतिबिम्ब है।

चीन को तलवार भी मिल गई। धन्यवाद। समयोचित रचना है।

भवदीय
मैथिलीशरण

डा रामकुमार वर्मा
कवि और साहित्यकार

साकेत
४ प्रयाग स्ट्रीट
इलाहाबाद
ता ८ १० ७०

प्रिय मठियाजी

प्रणाम की प्रति मिली। जहा प्रणाम दृष्टि के लिए अभिराम है वहा हृदय के लिए भी आप्त काम है। आपकी रचनाओ म जितनी सरसता है उतनी गहराई भी और प्रवाह तो गगा की धारा की भाँति है।

हार्दिक बधाई। ऐसी रचनाओ म अग्रसर रहें।

आपका
रामकुमार वर्मा

(पद्मभूषण)
डा रामकुमार वर्मा
कवि और साहित्यकार

साकेत'
४ प्रयाग स्ट्रीट,
इलाहाबाद–२
ता-१८ ७ ७५

श्री कन्हैयालाल सेठिया की साहित्य साधना से मैं परिचित हूँ। वे भावनाओं की वीथिका में विहार करते हैं और अपनी स्वस्थ और आध्यात्मिक कल्पनाओं से प्रकृति के अनेक रहस्यों का उद्घाटन करते हैं।

वे अनुभूति कलाकार हैं। वे अन्तर्जगत में प्रवेश कर वस्तुवादी जगत की जो व्याख्या करते हैं उसमें सत्य सौन्दर्य होकर उजागर होता है। उनकी छोटी छोटी अभिव्यक्तियाँ मधु की वे बूँदें हैं जिनमें अनेक पुष्पों के पराग की सुगन्धि समाहित है।

मैं श्री सेठिया की साहित्यिक और तात्त्विक सुरुचि के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूँ।

रामकुमार वर्मा

डा गमकुमार वर्मा
कवि

'साकेत
४, प्रयाग स्ट्रीट,
इलाहाबाद-२
दिनांक ३१ ३ ७८

प्रियवर मणियाजी

आपके द्वारा भेजे गये दोनों ग्रन्थ निग्रन्थ और ताजमहल मिले। अनेक धन्यवाद।

निग्रन्थ के ८२ विचार विन्दु वास्तव म भावनाओं के अमृत विन्दु है जिनमें मानस म शान्ति का वातावरण छा जाता है और ताजमहल म कल्पना के इन्द्रधनुष उर्दू शायरी का जामा पहन कर हृदय के रगमच पर जो भाव भगिमाए प्रदर्शित करते हैं वह कभी भूलने की नहीं।

आप अपने व्यस्त जीवन म काव्य के आम्र कानन म इतना सौरभ सम्पन्न मजरियो का चयन करते हैं इसके लिए आपको हार्दिक बधाई।

भवदीय
रामकुमार वर्मा

डा रामकुमार वर्मा
पद्मभूषण

साकेत'
८, प्रयाग स्ट्रीट,
इलाहाबाद
दिनांक ६ १ ८६

प्रियवर सठियाजी,

सुन्दर कविता म लिखा गया नव वप की मगल कामनाआ का स देश प्राप्त हुआ। अनेक धयवाद।

आप ता दश क गौरव है। आपके द्वारा भापा और दश की समद्धि हो यही मेरा कामना है।

नव वप की समस्त मगल कामनाआ सहित,

भवदीय
रामकुमार वमा

डा रामकुमार वर्मा
कवि और साहित्यकार

साकेत ४
४ प्रयाग स्ट्रीट,
इलाहाबाद २
दिनांक २६ १२ ८६

प्रियवर सेठियाजी

'स्वगत' का मुकुट धारण किये हुए आपकी १०४ कविताओं का सौदर्य नेत्रों में बस गया। साथ ही इसमें मुद्रित आपका भव्य चित्र देखकर पुरानी स्मृतियाँ जाग उठीं। आपके चिंतन का विस्तार आत्म बोध से लेकर जीवन-बोध तक इतना व्यापक और मर्म स्पर्शी है कि प्रत्येक कविता को अनेक बार पढ़ने की लालसा मन में होती है। प्रत्येक कविता में एक संकेत है जो ध्रुवतारे की भांति हृदयाकाश में चमक उठता है।

इस काव्य संकलन पर आपको हार्दिक बधाई। इस ग्रंथ को पढ़कर आपके अन्य ग्रंथों को पढ़ने की लालसा हृदय में जाग उठी है।

आशा है आप स्वस्थ और सानन्द हैं।
नववर्ष की समस्त शुभ कामनाओं सहित

भवदीय
रामकुमार वर्मा

दादा धर्माधिकारी
चिंतक

२० ज्यूपिटर
२२-नौशिर भरूचा मार्ग
मुंबई ४००००७

प्रिय सेठियाजी,

निग्रंथ पाकर महीनों बीत गये। उसके बाद आपका कृपापत्र भी आया। परंतु मैं आपको लिख नहीं पाया। मुख्य कारण यह है कि मैं पुस्तकों का पाठक हूं समीक्षक नहीं। पुस्तकें रुचिपूर्वक और आस्थापूर्वक पढ़ता हूँ। उनमें आनंद और शिक्षण लेता हूँ। समीक्षक तो आनंद और रसास्वादन से प्रायः वंचित ही रहता है। क्यूं कि उसे गुणदोष विवेचन में उलझना पड़ता है। मुझे इस कार्य के प्रति बहुत अरुचि है। इसलिये मैं पुस्तकें पढ़ चुकने के बाद साथ में लेकर नहीं घूमता। आपकी पुस्तक भी मैंने एक जगह रख दी थी। अब वो मंगवाली है।

मैं साहित्य या काव्य का अभिज्ञ नहीं हूं। इसलिये आपके काव्य का मूल्यांकन करने का अधिकारी नहीं हूँ। परंतु एक रसिक के नाते यह निःसंकोच कह सकता हूँ कि, 'निग्रंथ' एक अनूठी चीज है। माघ कवि के विषय में एक सुभाषित है कि उसमें कालिदास, भारवि और दंडी तीनों के गुणों का मधुर सम्मुच्चय था। आपके काव्य में भी लालित्य, अर्थगांभिर्य और सूचकता आदि गुणों का मनोज्ञ समाहार है। जहाँ अनुभूति या दर्शन का सवाल है इसका आकलन करना तो मेरी शक्ति से परे है। परंतु जिन रचनाओं को मैं समझ सका हूँ उनमें शतशत सूत्रात्मक सूक्तियां है। वे सारी मणियां उतने ही कलात्मक सूत्र में पिरोयी गयी है। उनमें कई संकेत और ध्वनितार्थ तथा अभिनार्थ निहित है। अतएव वे जितनी मधुर उतनीही समृद्ध हैं। इस ऐश्वर्य के लिये बधाई।

णमोकार मंत्र, अहिंसा, कबीर की चादर, विस्मृति, अकुलाया दर्शन, मूल्यमुक्त अवरोध, मार्क्स, सापेक्ष निरपेक्ष अस्तित्व, भीड़, नियता, पदातीत दृष्टी यंत्रवाद प्रक्रिया, आदर्श वस्तरा, यात्रा, प्रतिध्वनि, चेतना का क्षण आदि रचनाएँ बड़ी प्यारी लगीं।

आपको लिखने में जो अक्षम्य विलंब किया उसके लिये क्षमा प्रार्थी हूं—

विनीत,
दादा धर्माधिकारी

डा रघुवीर सिंह
इतिहासवेत्ता

रघुवीर निवास
सीतामऊ
दिनांक अगस्त ५ १९६१

प्रिय सेठियाजी

सधन्यवाद वंदे० । आपका २१८ का पत्र मिला। कृतज्ञ हूं। अब तो आमप्रकाशजी बम्बई में ही है सो उनसे मिलाप हो ही जावेगा। उनका टेलीफोन न ४५१२१ है। यों तो राजकमल की परिस्थिति सुधर गई है तथापि अधिक मूलधन (Capital) की आवश्यकता और भी ज्यादा महसूस होने लगी है। अतएव मैंने पिछला पत्र लिखा था। आशा ही नहीं विश्वास है कि आपके सहयोग से हम इस कमी को भी कुछ तो पूरी कर ही लेंगे। जिस स्केल पर काम बढाया है उसी के अनुरूप प्रकाशन भी चाहिए कि हम राजकमल को भारत के एक अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रमुख प्रकाशन संस्था बना दें।

मेरा जो ग्रंथ शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है वह पूर्व आधुनिक राजस्थान । उदयपुर की राजस्थान विश्वविद्यापीठ के आज्ञा आसन से दिए जाने वाले ये भाषण छप कर अब पुस्तकाकार जिल्द में बँध रहे हैं। अगस्त १८ से २१ तक के भाषण उदयपुर में दिए जा रहे हैं तदनन्तर प्रकाशित होंगे। उस ग्रंथ को प्रकाशित भी विद्यापीठ ही कर रही है। जब छप कर तैयार हुई प्रतियाँ मेरे पास आवेंगी तब अवश्य ही एक प्रति आपके पास भी जावेगी।

जिस दूसरे गद्यकाव्य ग्रंथ के रात की मैं रचना कर रहा हूं उसका काम रुका पड़ा है। जयपुर से जुलाई के प्रारम्भ में लौटा और तब से मैं महीनों से एकत्र अपने पुराने काम धंधों में लगा हुआ हूं। इधर यदुनाथ सरकार कृत शार्ट हिस्ट्री आफ औरंगजेब का हिंदी संस्करण मेरे हाथों ही तैयार होकर मेरी ही देख रेख में छप रहा है। उसके अंतिम २०० पृष्ठों के प्रूफ्स देख रहा हूँ। सारा ग्रंथ कोई ७०० पृष्ठों का होगा। यह महत्वपूर्ण कार्य समाप्त करने के बाद में कुछ अवकाश पाऊँगा।

दीप किरण की ज्योति देखने की उत्सुकता रहेगी। अगर आप स्वयं भी छपवाना चाहें तथापि प्रकाशक (तब Selling Agency) क्यों न राजकमल को दे दें? उसका प्रचार एवं प्रसिद्धि में राजकमल बहुत कुछ

मदद कर सकता है। अब आपको इसकी अधिक आवश्यकता है। आशा है आप भी इस प्रस्ताव पर विचार करें।

आशा हैं आप सानन्द होंगे। यहा मै सकुशल हूँ। अभी इन्दौर जा रहा हू मालवा के प्रान्तीय साहित्यिक सगठन का काय है।

शेष कुशल। अधिक फिर आगे आपका उत्तर एव विशेष समाचार आने पर।

सधन्यवाद सस्नेह

भवदीय
रघुवार सिंह

अगले वर्ष जनवरी २०-२१ के लगभग मैं हवाई जहाज से गौहाटी कलकत्ता होता हुआ जाने वाला हूँ। उधर से लौट कर मैं संभवतः जनवरी २६ को कलकत्ता पहुँचूँगा। तब वहाँ ४-५ दिन ठहरने की सोचता हूँ। क्या आप तब वहाँ होंगे? तब वहाँ आपसे भेंट हो सकेगी? कलकत्ता के मेरे कार्यक्रम अब तक अनिश्चित हैं। जनवरी के प्रारंभ में ही मैं सब तय करूँगा। इसी कारण आज यह पत्र लिख रहा हूँ कि तब आपसे भेंट आदि का भी कार्यक्रम क्या संभव हो सकेगा? सूचित करें। वैसा तय करूँगा।

इधर पिछले दस वर्षों से मैं राजनीति से बाहर हूँ और कोई ५० वर्षों से सारा समय ऐतिहासिक शोध और शोध निर्देशन में ही लगा रहा हूँ।

आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि मैंने अपना सुविख्यात पुस्तकालय और अन्य संग्रह दान कर यहाँ "श्री नटनागर शोध-संस्थान" की स्थापना की है। उसे राज्य शासन से मान्यता और अनुदान मिल रहे हैं। कई विश्वविद्यालयों से मान्यता प्राप्त अथवा संबद्ध हो चुका है। यों यहाँ ऐतिहासिक शोध अध्ययन आदि का एक विशिष्ट केन्द्र बन गया है। यहाँ सुयोग्य समर्पित जीवन वाले नवयुवकों को एकत्र कर प्रशिक्षण दे रहा हूँ कि इस क्षेत्र की श्रेष्ठतम परंपराओं को अपना कर शोध आदि का स्तर उच्चतम बनाया जा सके।

शेष कुशल। आशा है आप सानंद होंगे। अधिक आपका पत्रोत्तर पाने पर हो।

सस्नेह सधन्यवाद

भवदीय
रघुबीर सिंह

रामेश्वर शुक्ल 'अचल'
कवि एव साहित्यकार

जबलपुर
दिनाक ३१ ५ ८४

प्रिय भाई सेठियाजी

आप द्वारा प्रेषित कविता पुस्तकें मिली। धन्यवाद। हम जैसे व्यासशैली के कवियो की कविता भाषण होती है आप की समास शैली केवल सूत्र का सृजन करती है। यह सूत्र नि पत्ति आत्मा के अतल म डूबने से आती है। तभी प्रत्येक अभिव्यक्ति सूक्ति बनती है और प्रत्येक सूक्ति घनीभूत होती है। बीच बीच म आपकी दार्शनिकता आत्म निरूपण, आत्म प्रकाश म बढ कर परमात्म निरूपण और परमात्म प्रकाश की ओर जाने की ललक ज्योति बिन्दुओ सी झिलमिलाती है। आप जीवन, नाद और भावना के कवि ह। कभी कलकत्ता आना हो तो मिलने का सुखद सुयोग प्राप्त करूँ।

बधाई बारबार बधाई! कृपा बनाए रहिये

सस्नेह
अचल

सीतारास चतुर्वेदी
साहित्यकार

फोन ६५७१८
६३/४३, उत्तर बेनिया बाग
काशी २ ७ ७१

प्रियवर सेठियाजी

आपका २८ ६ ७१ पत्र मिला और साथ ही प्रणाम की एक प्रति भी। पढने पर प्रतीत हुआ कि आप ने बहुत मनोयोग से सुस्थिर होकर अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा का कौशल व्यक्त करने म कोई कमी नही छोडी है।

मुझे विश्वास है आपकी इस नवीनतम कृति का व्यापक आदर होगा और आप ने जिस उदात्त भावना से इसका ग्रथन किया है उस भावना का भी उदार अभिनन्दन होगा।

आशा है प्रसन्न होगे।

सस्नेह
सीताराम चतुर्वेदी

नीलकंठ तिवारी
कवि

फ्लैट न ४०३/बी गार्डन व्यू
ताम्बे रोड बम्बई ३६
दिनांक ९ ६ ७०

प्रियबंधु सठियाजी

नमस्ते।

आपका काव्य संग्रह प्रणाम, यथा समय प्राप्त हो चुका था। धन्यवाद। आपका पत्र भी मिला। समय निकाल कर मैं धीरे धीरे आपकी रचनाओं का रसास्वादन कर रहा था सोचा कि सम्पूर्ण पारायण के बाद आपको पत्र लिखूं। इतने में आपका कृपा पत्र आ पहुँचा। प्रणाम की रचनाएं एकबार पढ चुका हूं।

मनन चिंतन दर्शन भाव भावना अनुभूति एवं संतुलित अभिव्यंजना का इतना मर्मस्पर्शी संगम गीतों में बहुत कम नजर आता है। वास्तव में आपके गीत हिन्दी साहित्य के गौरव है।

दुख की बात है कि आप जैसे सच्चे एकांत साधक कवि को हिन्दी साहित्य में जो प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये वह नहीं मिली। आज हिन्दी साहित्य समाज की गुटबन्दियों तथा मठाधीशों ने नीर क्षीर विवेक का परित्याग कर कंकर को हीरा और हीरे को कंकर बना रक्खा है।

कुछ प्रमुख पत्रों ने तो गीत छापना बंद कर दिया है। उनमें केवल नये ढंग की रचनाओं को ही स्थान दिया जाता है। साहित्य और साहित्यिक पत्रिकाओं के द्वार तो सभी विधाओं के लिए खुले रखने चाहिये। मगर अफसोस।
अस्तु एकबात हुआ कि मैं पुराना मकान छोड कर नये फ्लैट में आगया हूँ। कभी बम्बई पधारें तो दर्शन दें। अब स्वास्थ्य ठीक है।

स्नेहभाव के लिए पुनः धन्यवाद।

स्नेही
नीलकंठ तिवारी

यशपाल जैन
लेखक, पत्रकार

कनॉट सर्कस,
नई दिल्ली-१
दिनांक २१-१२-७२

प्रिय भाई

सप्रेम नमस्कार

आपका १८ दिसम्बर का पत्र मिला। यह जानकर हर्ष हुआ कि मेरा पिछला पत्र आपको मिल गया था। आपकी प्रति प्रणाम मुझे सचमुच बहुत प्रिय लगा।

श्री सीतारामजी के ग्रंथ के लिए मैं अभीतक अपना लेख न भेज कर बहुत ही अपराधी अनुभव कर रहा हूँ। भाई भँवरमलजी के आधा दर्जन पत्र आये हैं। और प्रत्येक पत्र के उत्तर में लेख भेजने का वचन देकर भी लेख भेज नहीं पाया। उनके पिछले पत्र के उत्तर में लेख भेज देना चाहता था लेकिन नहीं भेज सका। दिल्ली की व्यस्तताओं की बात किस से कहूँ! सभाएं और मेहमान इतना समय लेते हैं कि कुछ न पूछिये। एक दो दिन में अपने संस्मरण अवश्य भेज दूँगा। आशा है, देर नहीं हुई होगी। ग्रंथ कब निकल रहा है?

श्री भागीरथजी का अभिनन्दन ग्रंथ अवश्य निकलना चाहिए। उन्होंने जो सेवाएं की हैं और कर रहे हैं उनका ऋण तो चुकाया नहीं जा सकता लेकिन कृतज्ञता ज्ञापन की दृष्टि से हम जो कुछ कर सकें, अवश्य करें। उनकी असहमति की चिन्ता न करके इस काम को तत्काल हाथ में ले लेना चाहिए और ८१वीं वर्ष गाँठ पर ग्रंथ उन्हें भेंट कर देना चाहिए।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान के पृष्ठ कागज के अभाव में सीमित हो गये हैं। पता नहीं कि लेख वे छापना चाहेंगे या नहीं। दूसरे उनके चार अंक प्रेस में रहते हैं। उनकी योजना दो महीने पहले हो जाती है। फिर भी मैं उनसे पूछ देखूँगा और यदि वे चाहेंगे तो लेख अवश्य लिख दूँगा। इस बीच आप मुझे उनके बारे में कुछ इतिवृत्तात्मक जानकारी तत्काल भेज दें। उनका जन्म स्थान प्रारंभिक

शिक्षा किन किन संस्थाओं से संबंध किस किस रूप में कनवत्ता कर गये ? आदि आदि इस तरह बातें अपने संस्मरण में जोड़ दूंगा। इस काम को आवश्यक मान कर समय निकाल कर कर दें।

भाई भँवरमलजी से फोन पर पूछ कर मुझे तार दे दें कि सीतारामजी के ग्रंथ के लिए लेख की गुंजाइश है या नहीं ?

विशेष कृपा। आप सपरिवार सानन्द होंगे।

सप्रेम आपका
यशपाल जैन

यशपाल जैन मस्ता माहित्य मण्डल
"खक पत्रकार कनॉट सर्कस, नई दिल्ली १
दिनाक २८ १२ ७३

प्रिय भाई,

सप्रेम नमस्कार

आपका २६ दिसम्बर का पत्र मिला। उससे पहले तार भी मिला था। आभारी हूँ। आज मने श्री सीतारामजी के बारे म अपना लेख भाई भँवरमल को भेज दिया है। साथ म श्री वियोगी हरिजी की कुछ पक्तिया भी। एक बहुत बडे अपराध से मैं मुक्त हो गया। पिछला पत्र आपको लिखने के बाद मैं लेख लिखने म जुट गया था। और तार आया तबतक लेख पूरा करके मने टाइप करने के लिए टाइपिस्ट का दे दिया था। आपके तार ने मुझे आश्वस्त कर दिया कि मेरा श्रम व्यथ नही गया। आपका अनेकानेक धन्यवाद। आपका पत्र आया उस समय हरि जी मेरे पास थे। उनसे लिखने का अनुरोध किया तो उन्होने श्री सीतारामजी तथा श्री भागीरथजी के बारे म एक एक पृष्ठ का लेख भेज दिया। सीतारामजी वाला लेख भाई भँवरमलजी का भेज दिया है। भागीरथजी विषयक आपको भेजता हूँ। उधर के पत्रो म आप इसका उपयोग करना चाहें तो कर लीजिये। नवभारत टाइम्स को क्या आपने कोई लेख भेजा है? सभव है मैं उसके लिए कुछ लिख कर दे दूँ। साप्ताहिक हिन्दुस्तान वालो से बात हुई थी। उनका २३ जनवरी के आस पास का अक प्रेस म जा चुका है।

भागीरथजी के लिए एक ग्रथ की योजना बनाइये। उसम ५० पृष्ठ की भागीरथजी की जीवनी ५० पृष्ठ म चुने हुए सस्मरण और शेष पाच-छह सौ पृष्ठ म उनकी जन्म भूमि तथा कर्म भूमि की सस्कृति कला साहित्य, दर्शन आदि पर सारगर्भित लेख, कुछ रचनाए उन ध्येयो के विषय म भी रहे जिन्हें भागीरथजी ने पूर्ण करने के लिए अपना योगदान दिया। इस प्रकार वह ग्रथ व्यक्ति का नही, ध्येय का समर्पित होगा। आप इस बारे म सोचिये मित्रो से चर्चा कीजिये और मुझे लिखिये। भागीरथजी के प्रति मेरे मन म बडा आदर और आत्मीयता है और मेरी आतरिक इच्छा है कि उनके लिए कुछ हो।

शेष सब यथापूर्व है। आप सब सानद होगे।

सप्रेम आपका
यशपाल जैन

यशपाल जैन
[illegible]

एन ७७, कनाट सर्कस
नई दिल्ली १
दिनांक २६ जून १९८३

प्रिय भाई

सप्रेम नमस्कार।

आशा है आप सानन्द होंगे।

श्रद्धेय काकासाहेब की गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा की अध्यक्षा बहन सरोजिनी नानावटी का फोन आया था। उनके पास भाई पद्मचन्द सिंघी का पत्र आया है कि आपने श्रद्धेय काकासाहेब के पत्रों का संग्रह तथा प्रकाशन करने का सुझाव दिया है।

आपका यह सुझाव वास्तव में बड़ा मूल्यवान है, क्योंकि काकासाहेब ने बहुत बड़ी संख्या में पत्र लिखे हैं और वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उनमें से चुने हुए पत्रों का संग्रह और प्रकाशन होना ही चाहिए था।

लेकिन संभवतः आपको पता होगा कि हमने आचार्य काका कालेलकर स्मारक निधि की स्थापना की है और उसके अन्तर्गत अन्य प्रवृत्तियों के साथ काकासाहेब के सम्पूर्ण वाङ्मय को बीस खण्डों में निकालने का विचार किया है। निधि में पैसा इकट्ठा किया जा रहा है। हमारा लक्ष्य पच्चीस लाख रुपया एकत्र करने का है।

बड़ी कृपा होगी यदि आप कलकत्ते के उन महानुभावों से काकासाहेब के पत्र प्राप्त कर लें जिन्हें उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिला है। भाई भँवरमल सिंघी उन व्यक्तियों की सूची आपको दे देंगे। पत्रों का संग्रह होने तक यदि साहित्य प्रकाशन का काम आरंभ हो गया तो पत्रों को निधि की प्रकाशन योजना में छाप देंगे अन्यथा स्वतन्त्र रूप से।

अपनी कुशलता के समाचार दीजिये।

सप्रेम आपका
यशपाल जैन

यशपाल जैन
लेखक पत्रकार

सस्ता साहित्य मण्डल
एन ७७ कनाट सर्कस,
नई दिल्ली
दिनांक ६ नवम्बर १९८६

प्रिय बंधु

सप्रेम नमस्कार।

दीपावली के पावन अवसर पर 'स्वगत' की प्रति मिली। इस अनमोल उपहार के लिए आभारी हूँ। आप तो जानते ही हैं कि आपका काव्य मेरे मन को कितना प्रभावित करता है। आपकी रचनाओं में मैं उन मानवीय मूल्यों का प्रतिपादन पाता हूँ, जिनकी उपासना मैंने आरंभ से ही की है। 'स्वगत' की अधिकांश कविताएं मैं पढ़ गया हूँ। पढ़ते पढ़ते मेरा मन विभोर हो उठा है। प्रत्येक कविता में हृदय का स्पन्दन मुखर हुआ है। आपको हार्दिक बधाई। भगवान आपको लम्बी उम्र दें, स्वस्थ रखें और लेखनी द्वारा हिंदी साहित्य के भंडार को समृद्ध करते रहने की आपकी क्षमता में वृद्धि करें करते रहें।

आप सपरिवार सानंद होंगे। सबको यथायोग्य।

सप्रेम आपका
यशपाल जैन

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
लेखक, पत्रकार

सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

प्रिय श्री भाई सेठियाजी

आपका गीत संग्रह प्रणाम मिला। रोग के कारण ज्यादा नहीं पढ़ पाता हूँ मैं तो सोचा ७-८ गीत पढ़ूँगा पर पढ़ने बैठा, तो ये गीत मुझे लिपट गए और तीन दिन की तीन बैठकों में पूरे गीत पढ़ गया। बड़ा आनन्द आया, पर अपने ऊपर खीज भी आयी कि मैं अभी तक आप की साधना से अपरिचित रहा। आप चिन्तन के कलाकार हैं। चिन्तन का विवेचन विश्लेषण को रूप देना आसान है गंभीर बात गंभीर विधा पर उसे गीत का रूप देना और गीत में तितली की सी जो सुकुमारता अनिवार्य है उसे बनाये रखना बहुत बहुत मुश्किल है। आप इस मुश्किल काम में इतने सफल हुए हैं कि गीतकारों में मुझे कोई दूसरा नाम ही याद नहीं आ रहा जिसने इस कार्य में आपके समकालीन काव्य में ऐसी सफलता पायी हो। फिर आपके चिन्तन की पृष्ठभूमि संस्कृति धर्म-दर्शन है। इससे आपकी सफलता का मूल्य और भी अधिक बढ़ गया है। आपके गीत पुष्प हैं क्योंकि उनका चेहरा उनकी जाति का है जिससे वे तुरन्त पहचाने जाएं उनके चेहरे का चमक गहरी है जिससे वे तुरन्त अपनाए जाएँ पर उनकी धड़कनों के स्वर इतने झीने हैं कि नगाड़ा सुनने के आदी कान उन्हें भले ही न सुन पायें पर वीणा का रस पहचानने वाले कनरसिया तो पहली बार पर ही झूम उठें।

मैं आपकी साधना के प्रति अपना अभिवादन भेंट करता हूँ।

पुस्तक के टाइटिल पर आपकी कई पुस्तकों का विज्ञापन है। अपनी कला साधना का प्रतिनिधित्व करनेवाली १, २ पुस्तकें आप और भेजें तो मेरे मन का चित्र पूर्ण हो जाएगा।

आशा है आप स्वस्थ प्रसन्न हैं। आपने स्मरण किया कृतज्ञ हूँ।

मेरे योग्य जो कुछ!

आपका अपना सदा
क ला प्रभाकर

८ ९ ७०

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
लेखक, पत्रकार

महारनपुर ० उत्तर प्रदेश
दिनांक ३० ५ ७४

मान्य भाई

आपकी रचना 'अनाम' मिली तो लिखते लिखते यो ही देखने लगा पर लगा यह उत्तम। आपने एक नई विधा की ही सृष्टि नही की एक नया विधान भी साहित्य को दिया जिसके द्वारा आपके गीत भी अनुशासित है और दूसरा कृतियाँ भी।

पहला पुस्तके पढकर नाटम लिखे थे कि आप पर एक रचना लिखूंगा पर एक लम्बी परेशानी में पड गया। मेरे सिर में १६४२ की क्रांति में हुई पुलिस-पिटाई से सृजन का स्थायी रोग है। डाक्टर पूछते हैं तू मरा क्यो नही पर उन्हे क्या बताऊँ? उसी सिर में ६ बार चोट लगी गत १½ वर्ष में। बस लिखा कुछ नहीं। इधर कुछ राजनैतिक चिन्तन लिखे है, पर अभी सृजना की क्षमता नहीं जागी। अनिम्य भी हो गया थोडा। जरा मौसम बदले तो आपकी पुस्तक खोजकर निकालूंगा और तब १ २ पत्र लिखूँगा पाऊँगा आपका-आपसे। तब ताजगी से लिखूंगा। वैसे बहुत कठिन है आपकी साधना को कलम के घेरे में लेना।

आप अमर काम कर रहे है। सदियों बाद भी लोग ताजगी से पढेंगे, क्योकि आपके पैर बडी मजबूत पृथ्वी पर है।

मेरा अभिनन्दन लें।

आपका अपना
कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
लेखक पत्रकार

स्टेशन रोड
सहारनपुर २४७००१
दिनांक २६ २ ८३

प्रिय श्री भाई गठियाजी

आपका कार्ड मिला। इसका अर्थ है कि मेरा पत्र आप तक नहीं पहुँचा। निबन्ध मिलते ही हृदय में समा गया था। इधर रोग के कारण कुछ पढ़ा भी नहीं था तो खूब मन लगा और लाल स्याही से जगह जगह जाने क्या क्या लिख गया। आशय है मस्ती में पढ़ा। मन करता है कुछ की नकल आपको भेजूं पर पौरुष ग्रंथि का आपरेशन है। इसी से कलकत्ता जाना रुका। पत्र में आपको लिखा था कि आपके पास ठहरूंगा और आपको विविध रूपों में देखूंगा जिससे समाज के सामने आपकी इन्द्रधनुषी छवि परखने का सुख पा सकूं। कोई बात नहीं एक बार आपके साथ रहने को ही कलकत्ता जाऊंगा। आशा है स्वस्थ प्रसन्न हैं।

३० जनवरी के निकष का चिंतन (रिप्रिंट) भेजता हूं। प्रतिक्रिया लिखें, तो मजा आये।

आपका अपना ही तो
कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'　　　　　　　　　　　　　　दिनांक ३ ४ ८४
माहित्यकार

प्यारे भाई कन्हैयालालजी

आपका २० ३ का पत्र मिल गया था और बाद म 'कन्हैयालाल सेठिया और उनका काव्य' पूरा पढा तो नही, पर इतना देखा कि जिन्होने उसे पढा होगा, उनसे अधिक उस ग्रन्थ को जान गया हू। पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि इस ग्रन्थ के लिए जब मुझसे लेख मागा गया, तो मने मना कर दिया था और वह बहुत सही था। इस किताब के लेखक किताबो ह और आप किताब स बहुत ऊपर है तो आप स सब दूर है और आपको परख रह ह, इस दगाद स कि उनकी परख स पाठक आपको परख। जो किसी के माथ एकात्म नहा हुआ वह उस पर क्या लिखेगा ?

श्री अजित प्रसाद जन पहले केन्द्र म शरणार्थी मिनिस्टर (पुनवासमत्री) हुए, फिर खाद्यमत्री मने पूछा-- दोनो म आपने महनत स काम किया पर आप दोनो म किसे महत्वपूण मानते है? बोले 'पुनर्वास के काम को क्योकि वह विभाग नया था और पुरानी परम्पराओ का अभाव था, तो अफसर सक्रेटरी हरबात पर मुझस निणय मागते थे और मुझे हरबात को नये दष्टिकोण म सोचना समझना पडता था। खाद्यविभाग सरल था, क्योकि डा राजेन्द्र प्रसाद म लेकर रफी अहमद किदवई तक स्थापित परम्परायें थी और उनम प्रशिक्षित सेक्रेटरी मेरे पास थे।'

साहित्य म आपकी स्थिति पुनवासमत्री अजित प्रसाद जसी ह क्या कि आपका साहित्य ऐसा है जिसका व्याकरण अभी नहा बना, (बिना सकोच कहू मेरा भी साहित्य ऐसा हो है और दोनो कन्हैयालाल एक ही स्थिति म ह-- राह छाडि तीनो चल सायर सिंह सपूत)। एक साधक है-- महाकवि सेठिया की काव्य साधना। मत सब यही कि हीरे को फीटे स नापो और अपने मूल्याकन का डका बजाओ। विश्वविद्यालयो के परिसर म इस डक स खूब गूज रह है और गूज इतनी प्रचड है कि श्रवणीय ही अश्रवणीय हो गया है।

अपनी बात साफ करने को मैंने पुस्तक खोली। यह खुला पष्ठ १२६। सुकवि दिनकर सोनवलकर का लेख चल रहा है--'मुझे ऐसा प्रतीत होता ह

कि मेठियाजी पर गुरुन्व रवीन्द्रनाथ व दगनका गहरा प्रभाव है। ठीक है, हिंदी म कोई मौलिक लेखन वहाँ कर सकता है, पर जिस दशन का रवीन्द्रनाथ पर प्रभाव पडा था उसका क्या हागा ? सदिया की गुलामी स मन का मुक्त करना सुगम काम ता नही ?

इस पुस्तक का देख कर मुझे एक गाष्ठी म कहा अपना बात याद आगयी—हिन्दी साहित्य का जा काना मकडा क जाला स सब म अधिक भरा हुआ है वह आलोचना है। आभार गब्द और कराणी को छाड दें ता गेप २५ लखक पूरे समालोचक है। पुस्तक क पन्न पन पलटते हा दाख जाना है कि उद्धरणा का कमाकिया पर सब टिके हैं पर यदि आपका कविताआ का हा खोलना है, ता ये चुप ही रहें। आपका गन्नी ता चादनी म धुला गुलाब की पखड़ियाँ हैं। उनका रस पहचानने को मधुमक्खिया या तितली का मन चाहिए ठाक कठैया की लम्बी चाच यह काम नहा कर सकता।

पता नही यह सब पढकर आप क्या साचगे पर जब मन स मन की बात चल रही हा किया हा क्या जा सकता है ? आप के साहित्य पर लिखे जाने वाले एक लख का शीपक भीतर अभी कौंध गया है—

जय कन्हैयालालकी हाथी, घाडे पालकी

जीवनकी, चिन्तन की गरिमा रसवपिणी क्षमता और विश्वसनीय गति। मन है कि २ ३ दिन *आपके साथ जियें निश्चय ही पर जाने कब इस समय* *अनाम नमन* ! आप गतायु हा।

आपका अपना हा ता
कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

– *साथ का पत्र पढें और आशीष भेजें।*
आशीपा की फाइल हा दहेज है जो दक्षिण म पढा जायेगी।
– आशीष के कागज पर निजी बात न लिखें वह अलग से।

वीरेन्द्र कुमार जैन
कवि

गोविन्द निवास
सरोजिनी रोड,
विले पारले (पश्चिम)
बम्बई ५६
दिनांक २७ ८ ७१

प्रिय भाई

आपको लिखने में देर हो गयी क्षमा करेंगे।

आपके सुसज्जित और सुप्रकाशित दोनों कविता-संग्रह पढ़ते ही बने। आते ही उन्हें पढ़ गया था फिर फिर उठा कर पलटता था। जितना व्यस्त रहता हूँ उसमें ऐसा कम ही सम्भव होता है। बहुत चुना ही पढ़ पाता हूँ।

आपके कवि ने मुझे बरबस ही आकर्षित किया। ऊर्ध्वमुखी विश्व चेतना के अपूर्व कवि द्रष्टा योगीश्वर श्री अरविन्द की जन्म शताब्दि के इस उपकाल में हिन्दी नवकाव्य के एक कवि की ऊर्ध्व चेतस कविताएँ पढ़ना (जो एक अपवाद सा ही है) एक सुखद अनुभव दे गया। आपकी कविताएँ पढ़ कर मैं भारत की नयी काव्य धारा के बारे में आश्वस्त हुआ। आश्वस्त और उल्लसित हुआ।

नयी कविता के क्षेत्र में आज जो एक monotony रूढ़ता और mannerism चारों ओर व्याप्त है उसके बीच आपकी कविताओं में अनुभूति और चिन्तन की एक विरल स्वातन्त्र्य और निखार मिलता है खास प्रणाम की कविताओं के पीछे विद्यमान एक उन्मेषित आध्यात्म चेतना तथा चिन्तन ने मुझे विशेष रूप से आकर्षित किया। आज की महज Pattern हो गयी कविता धारा में आपकी ये रचनाएँ एक अलग और विशिष्ट द्वीप सी चमकती है। भावी विश्व-काव्य का जो स्वप्न मैंने सन ६२ में अपने नव सूर्योदयी कविता के घोषणा पत्र में देखा था आप जैसे विरल युवा कवियों को मैं उसी के बीज-कवि मानता हूँ।

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
कवि

गोविंद निवास,
सरोजिनी रोड, विलेपार्ले (पश्चिम)
बम्बई
दिनांक ३-१०-७२

प्रिय भाई

'मम' और Reflection के लिये आभारी हूँ। अति व्यस्तता में भी पढ़े बिना न रहा गया। 'मम' के लघुकाव्य सच ही बहुत मार्मिक हैं। पूरे खण्ड में उनका हार्द विस्तार पाता हुआ जैसे अनन्त भावार्थों की जगतियाँ अनावरित करता चला जाता है। इस लघु काव्य श्लोकान्त कभी ने भी लिखे हैं। पर आपके भीतर एक आध्यात्मिक चेतना है एवं दार्शनिक अन्तर्दृष्टि है इस कारण इन मम गानियों का मूल्य कई गुना अधिक हो गया है। इस संग्रह के द्वारा आपने हिन्दी काव्य में एक नया ध्रुव स्थापित किया है। यह सिलसिला चले। बन्द न हो। महावीर—उपन्यास से निवृत्त हो कर, मैं 'मम' पर एक छोटा लेख ही लिख दूँगा। उसमें आपके व्यक्तित्व की पार्श्वभूमि भी प्रस्तुत करूँगा।

Reflections की तो अधिकांश कविताएँ भट्ट साहब ने स्वयम् मुझे [illegible] थी। यह संग्रह पश्चिम में भारतीय कविता का प्रतिनिधित्व करने की [illegible]ग्यता है। प्रकाशक से कहूँगा कि वे प्रयत्न पूर्वक अंग्रेजीभाषी देशों में [illegible] अच्छी reviews करवाने का प्रयत्न करें। मैं भी यहाँ बम्बई में [illegible] चर्चा करवाने के लिये इंडो इंग्लिश लेखकों के बीच बात उठाऊँगा। [illegible] आयें तो कुछ दिन आपको पू. बाबा के पास रख कर एकदम [illegible]गा।

[illegible] आये इस बीच दो बार। बच्चे ने आकर मेरा मन हर लिया है। [illegible] सहृदय, सुगन्धित बच्चे हैं। फतहचन्द भाई भी आये थे। [illegible] मिलन में ही मुझे अनुरक्त कर लिया था। आपको ऐसे है [illegible] करने के सिवाय चारा नहीं। प्रेममूर्ति हैं आप सच ही।

ऐसा लगा कि आप वग परम्परा से जन है सत तुलसा स आपका अभिप्राय आचाय तुलसा से ही है न ? जन मघ मे उनका व्यक्तित्व अप्रतिम है। उनका चिन्तनात्मक उदात्तता, व्यापकता तथा परम्परा म रह कर भी सावभौमिक धम प्रवत्तन, तथा अपने साधु-साध्वी मध का अपूव सर्वांगाण और up to date शिक्षण सगठन धर्माचार्यों का परम्परा म एक अनुकरणीय आदश प्रस्तुत करता है।

सानन्द हागे। स्नेह स्वीकारें।

आपका भाई
वीरेन्द्र कुमार जन

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
कवि

गोविंद निवास,
सरोजिनी रोड, विले पार्ले (पश्चिम)
बम्बई
दिनांक ३ १० ७३

प्रिय भाई

'मम' और 'Reflection' के लिये आभारी हूँ। अति व्यस्तता में भी पढे बिना न रहा सका। मम के लघुकाव्य सच ही बहुत मार्मिक है। पूरे खाली पेज में उनका हार्द विस्तार पाता हुआ जैसे अनन्त भावार्थों की जगतियाँ अनावरित करता चला जाता है। ऐसे लघु काव्य थोरो ने भी लिखे है। पर आपके भीतर एक आध्यात्मिक चेतना है, एक दार्शनिक अन्तदृष्टि है इस कारण इन मम गीतियों का मूल्य कई गुना अधिक हो गया है। इस संग्रह के द्वारा आपने हिन्दी काव्य में एक नया ध्रुव स्थापित किया है। यह सिलसिला चले। बन्द न हो। महावीर--उपन्यास से निवृत्त हो कर मैं मम' पर एक छोटा लेख ही लिख दूँगा। उसमें आपके व्यक्तित्व की पार्श्वभूमि भी प्रस्तुत करूँगा।

Reflections की तो अधिकांश कविताएँ भट्ट साहब ने स्वयम मुझे सुनाई थी। यह संग्रह पश्चिम में भारतीय कविता का प्रतिनिधित्व करने की सामर्थ्य रखता है। प्रकाशक से कहूँगा कि वे प्रयत्न पूर्वक अंग्रेजीभाषी देशों में इस ग्रंथ की अच्छी reviews करवाने का प्रयत्न करें। मैं भी यहाँ बम्बई में इस संग्रह की चर्चा करवाने के लिये इंडो इंग्लिश लेखकों के बीच बात उठाऊंगा। अब आप यहाँ आयें, तो कुछ दिन आपको पू बाबा के पास रख कर एकदम स्वस्थ कर दूंगा।

प्रिय विनय आये इस बीच दो बार। बच्चे ने आपके मेरा मन हर लिया है। बड़े ही विनयी सहृदय सुसंस्कृत बच्चे हैं। फतहचन्द भाई भी आये थे। उन्होंने तो प्रथम मिलन में ही मुझे अनुरक्त कर लिया था। आपता ऐसे हैं, कि आपको प्यार करने के सिवाय चारा नही। प्रेममूर्ति है आप सच ही।

चि. जयप्रकाश के यहाँ पुत्ररत्न की प्राप्ति पर मेरा हार्दिक बधाई स्वीकारें। चि. बहूरानी और बेटे जय को इस मंगल प्रसंग में स्नेहाभिषेक करता हूँ। नवागत शिशु देवता आपको नवजीवन प्रदान करें और आपके पूरे परिवार को एक नवीन सुख शोभा से सिंचित कर दें। 'महावीर' उपन्यास लिख रहा हूँ। अप्रैल तक निकाल देना है। उसमें इतना वक्त देना पड़ता है कि आपको पत्र लिखने में बहुत विलम्ब हो जाता है। क्षमा करेंगे।

योग्य सेवा लिखें।

पूज्य पुरुष आपको
भाया मेरा सौभाग्य। — आपका अपना
वीरेन

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
कवि

गोविन्द निवास
सरोजिनी रोड विलेपार्ले (पश्चिम)
बम्बई
दिनांक २ जून १८७५

प्रिय भाई

पहले सुन्दर 'अनाम मित्र' फिर आपका पत्र आया। अर्से बाद खबर पाकर आनन्द हुआ। आपकी याद बनी रहती है। आशा है अब आप स्वस्थ सानन्द हैं।

'अनाम' तो हाथ लगते ही छूटा नहीं। समाप्त करके भी मन में असमाप्त अनन्त हो रहा। यही तो काव्य सिद्धि है। सत्य रंगहीन है। झूठ सफेद! कितना कह गई ये पंक्तियाँ।

श्री अरविन्द ने कहा था आगामी कविता सूक्ष्म यांत्रिक प्रभाव वाली होगी। आपकी इन कविताओं में वह भविष्यवाणी सच होती लगी। आप में भाव और चिन्तन की अद्भुत संयुति है। मेरा ख्याल है आपका यह संग्रह अपना एक अलग स्थान बनायेगा। इसका शिल्प मुग्ध कर देता है। आपसे मुझे स्पर्धा हुई!

'अनुत्तर योगी : तीर्थंकर महावीर' (उपन्यास) का प्रथम खण्ड कब का प्रकाशित हो चुका। प्रतीक्षा रही आपके अभिमत की। आप जैसे मेरे कद्रदानी विरले ही ४-५ हैं। यह मेरा लाइफ-वर्क है। आप न पढ़ें तो कौन पढ़े? यह उपन्यास यहाँ बहुत पढ़ा जा रहा है। पसन्द हो रहा है। द्वितीय खण्ड प्रेस में है। तृतीय का लेखन जारी है। १००० पृष्ठों में यह तीन खण्डों में विभाजित वस्तुतः महाकाव्यात्मक उपन्यास है।

आप बम्बई कब आ रहे हैं! जून बाद क्या फिर कलकत्ता जायेंगे? समाचार सविस्तार देंगे।

सानन्द हैं। स्नेहाधीन—

वीरेन्द्र कुमार जैन

श्री धीरेन्द्र कुमार जैन
कवि

फोन ५६३६१७
गोविंद निवास,
सरोजिनी रोड विलेपारले (पश्चिम)
बम्बई
दिनांक २५ ८ ७६

प्रिय भाई

१६ ८ के कृपा पत्र के लिये आभारी हूँ। इस बीच अविश्रांत व्यस्तता रही इसी कारण आपको लिख न सका। चि विनयप्रकाश आये थे कह रहे थे—आप फिर अस्वस्थ है। सुन कर मन उदास हो गया। तुरत आपको लिखना चाहता था मगर उसके तुरत बाद लखनऊ दिल्ली की यात्रा पर जाना था सो लिख न सका। आपका पत्र आया तो लज्जाबोध हुआ। लौटते ही मेरे कनिष्ठ-पुत्र आलोक का प्रेम विवाह अचानक करना पड़ा उसमें दम न मार सका। आज ही लिख पा रहा हूँ।

ताजमहल पढ़ कर चकित हूँ और मुग्ध भी। कितना सलीस और फसीह उर्दू लिखी है आपने। और शब्दों का चुनाव और नियोजन ऐसा अदभुत है कि जैसे किसी उस्ताद के हाथ से बंदिश उतरी हो। तबीयत खुश हो गई। आप तो एक जन्मजात प्रतिभा के आत्मानुभूतिशील कवि है।

आप केवल अपनी कविता में जीने का गुर पा लें तो आपका स्वास्थ्य एकदम प्रफुल्लित हो उठेगा। आप कभी फिर बम्बई आ कर रहें। मुझसे सोहबत करें तो मुझे यकीन है कि आपकी तबीयत खिल उठेगी। आजमा देखें।

खुली खिड़कियाँ का मराठी अनुवाद हुआ बधाई। मेरा ख्याल है कि मराठी में आपकी कविता को विशिष्ट स्वीकृति मिल सकेगी। मैं भी मराठी क्षेत्र में यहाँ कुछ प्रेरणा जगाऊँगा। भारतीय भाषा परिषद को आपने मेरा नाम सुझाया आभारी हूँ। पर इस वक्त तो अनुत्तरयोगी खंड ३ में समाधिस्त हूँ हिल नहीं सकता। अगले मार्च अप्रैल में यदि वे बुलायेंगे तो जरूर आऊँगा—खास कर यों कि आपसे मिलना उठना बैठना हो सकेगा। कुछ आपकी सेवा कर सकूँगा।

'अनुत्तर योगी' का ~~ा खण्ड प्रकाशित है। आप उन्हें पढ़ते तो आपका चित्त का ~~ायद ~~ गहत मिलती। क्योंकि भगवान उसम पुनरावतरित हुए हैं। पर म आजकल ~~ान है। उपरावत ~~ है। कभी कभी सुबह के वक्त बात कर~~ लें न।

आपका भाई
वीरेन्द्र कुमार जैन

श्री धीरेन्द्र कुमार जैन
कवि

दिनांक २१ १ ८५

प्रिय भाई

आपके १६ १ ८५ के पत्र के लिये आभारी हूँ मैं तो गत ३ वर्ष से दु साध्य रूप से बीमार चल रहा हूँ। पेट साफ नहीं होना हाजत बनी रहती है। आमातिसार—पुराने अंव रोग—ने मुझे तन-मन से एकदम ही छिन्नभिन्न कर दिया है कोई इलाज काम नहीं कर रहा। मैं स्वस्थ होता तो क्या आपके अभिनन्दन ग्रंथ के लिये अपना लेख न भेजता ?

प्राकृतिक चिकित्सा यहाँ बहुत असुविधाजनक और महँगा है। घर पर सम्भव नहीं है। कई सीमाएँ हैं—कठिनाइयाँ हैं।

आपने मेरे नम्र कृतित्व को इतना गौरव और महत्व दिया यह आपका बड़प्पन है। मैं तो अभी रियाज ही कर रहा था—अ या पर कि बीमारी ने हताहत कर दिया। ग्रंथ अधूरा ही रह गया।

आपने मेरी स्नेह चिन्ता की, इसके लिये आपका कृतज्ञ हूँ। श्री भगवान ने यदि नया जीवन दिया तो आप से फिर मिलेंगे। आगे ईश्वरेच्छा। आप शुभ मानन्द होंगे।

स्नेहाधीन
वीरेन्द्र कुमार जैन

रामवृक्ष बेनीपुर
साहित्यकार कवि

बेनीपुरी प्रकाशन
पटना ६
ता ६ २ ५६

प्रिय सेठिया जी

सयाग उस दिन आपस अचानक भेट हा गई। बडी प्रसन्नता हुई। किन्तु उस छोटी सी भट स तृप्ति कहाँ ?

मैं दो सप्ताह राजस्थान म रहूँगा। तय किया है जयपुर स पहले बिकानेर जाऊ सुजानगढ जाऊ फिर जाधपुर उदयपुर चितौड अजमेर हाते जयपुर।

८ फरवरी का यानी परसा ४ बजे सध्या का यहा स बिकानेर क लिए प्रस्थान कर रहा हूँ। ६ का भार म बिकानेर पहुच जाऊगा। बिकानेर म मरा कोई परिचित नही। क्या यह सम्भव हा सकता है आप बिकानर आयें और वहाँ स हम साथ साथ सुजानगढ चलें। हाँ बिकानेर भी मुझे दिखला देना हागा।

कृपया तार द्वारा सूचना दें कि मैं वहा निश्चिन्त आ सकू। या ता काई सूचना नहा मिलने पर भा सुजानगढ तक आ ही धमकूगा।

सस्नेह
श्री राम बेनीपुरी

रामवृक्ष बेनीपुरी
गद्यकार, कवि

बेनीपुरी प्रकाशन
पटना-६

दिनांक २६.२.५६

प्रिय सेठियाजी

ऐसा संयोग—मैं सुजानगढ़ नहीं आ सका। बड़ी इच्छा थी आपके साथ एक दो दिन गुजारूँ—किन्तु सबकी सब इच्छायें क्या पूरी होती हैं?

जयपुर बिकानेर जोधपुर—इतने ही में संतोष करना पड़ा। मुझे नहीं मालूम था कि राजस्थान में इतनी सांस्कृतिक चेतना है। जहां गया लोगों ने अपने परिजन की तरह स्नेह दिया।

फिर आऊंगा। चित्तौड़ उदयपुर, जैसलमेर आदि देखने को रह गये। वहां पता चला सुजानगढ़ दिल्ली से सीधी राह पर है। अब पहले सुजानगढ़ तब कहीं। आप से पत्राचार कर लूंगा कि सम्भव हो तो शेष यात्रा साथ साथ करेंगे।

जहाँ जहां गया आपकी चर्चा होती ही रही। मुझे प्रसन्नता हुई कि हर जगह आपकी साहित्यिकता और सहृदयता की प्रशंसा लोग करते रहे।

यदि आपकी रचनाओं का कोई संस्करण छपा हो तो अवश्य भेजवाइये—देखने की लालसा है।

सस्नेह
श्री राम बेनीपुरी

बालकवि वैरागी
कवि

मनासा (म प्र)
दिनांक २८ ६ ७५

पूज्य श्री सेठियाजी

सादर प्रणाम

कल पूर्वाह्न ही बाहर से लौटा हूं।

अनाम की प्रति मेरी टेबल पर तयार मिली। एक साँस म पढ गया। आपके चिंतन का यह नया आयाम है। हम लोगो के लिये यह चितन बोध का विशेष दिशा निर्देश है। शिल्प के लिहाज से भी आपने बहुत कुछ नया प्रयोग किया है। मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझे उस सूची म स्थान दिया जो कि अनाम का लक्ष्य एकदम वयक्तिक और पारिवारिक है। उपकृत हू।

पुस्तक सुदर सुपठय सग्रहणीय और शालीन है। आपको बार बार बधाई।

मेरे योग्य सेवा स सूचित कीजियेगा।

सबको नमस्कार।

विनत
बालकवि वरागी

बालकवि बैरागी
कवि

मनासा (म प्र)
जि मन्दसौर
दिनाक १८ अक्टूबर ७६

पूज्य श्रीबाबूजी

चरण स्पर्श सादर

१२ अक्टूबर को परदेस से मनासा आया हू डाक का अम्बार लगा पडा है। बराबर जूझ रहा हू। आपके दो पत्र उसमे मिले और नई पुस्तक 'निग्रन्थ' की दो प्रतिया भी। इस पुस्तक को म आते ही देख गया। आनन्द आ गया। आपसे हम लोग बहुत कुछ सीख रहे है। भावो और भाषा का इतना परिपक्व परिमार्जन यदि हम लोगो की कलम को मिल जाये तो फिर बात ही क्या है? हर बार पुस्तक नई लग रही है। कई मित्रो को दे रहा हू। यह पुस्तक तो 'ताजमहल' से भी आगे निकल गई है। आपका अभिवादन।

आपका स्वास्थ्य कैसा है।

मैं सकुशल हूँ। सारा परिवार सानन्द है।

सभावना यह है कि मैं ४ दिसम्बर को कलकत्ता रहूँ। यदि आना हुआ तो बाकायदा आप तक आऊगा ही।

सबको मेरा विनम्र प्रणाम।

विनीत
बालकवि बैरागी

बालकवि बैरागी
कवि

मनासा (म प्र)
दिनांक १६ ११ ७६

पूज्य श्री बाबूजी
सविनय चरण स्पर्श

विगत ८ नवेम्बर से ही मैं प्रवास मे था। कल शाम को घर आया तो आपकी प्रेरक कविता सहित आशीर्वाद मिला। वय और उम्र बढ गई। आपका ऋणी हू। इस तरह की कविताए कहता है कि आप स्वस्थ सानन्द है।

निग्रन्थ का अनुवाद तो और भी भाषाओ मे होगा। बगला ही क्या वह सारे देश की भाषाओ मे जायेगी। मैंने लिखा है न कि इस पुस्तक ने आपको बहुत ऊचाई दी है।

इधर मद्रास वाले आपको अपने बीच चाहते है। शायद आपसे पत्राचार करें।

मैं दिसम्बर मे कलकत्ता नही आ सकूगा। आपके मेरे बीच मे कोई औपचारिकता तो है नही। मै उधर सौराष्ट्र मे फस गया हू कटक भी नही जा सकूगा।

विवाह पर मेरी शुभ कामनाए। आपके दर्शन १९७७ मे ही कर सकूगा। सबको मेरा आदर और अभिवादन।

विनीत
बालकवि बैरागी

डॉ नेमीचन्द जैन
पत्रकार

६५ पत्रकार कालोनी, कनाडिया रोड
इन्दौर
दिनांक १ अक्टूबर १९७६

आदरणीय भाई

परमा निग्रय ' की प्रतियां मिली है। आवरण का सयोजन सुन्दर हुआ है। बधाई। कलाकार तक भी मेरे साधुवाद पहुचाये। छपाई म तो आपके साथ होड म उतरना लगभग असभव ही है। सबकुछ लाजवाब है। कटेंटस और फार्म सबकुछ मनोहारी विचारोत्तेजक ब्रेविटी इज पोएट्री का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक। *जिसे अग्रेजी म टस ' और 'कम्पैक्ट' कह सकते है और हिन्दी म* 'कसाव' वह आपकी कविता म स्पष्टत मिलता है। थोडे म विपुल और साथ कहने की कला आप जानते हैं। अधिक शाब्दिक न होकर शब्द की अर्थवत्ता म इतने गहरे जाना कठिन ही होता है। आप शब्द शिल्पी हैं आपसे हुई मित्रता पर मुझे गर्व है। अभी निग्रय ' म उतने गहरे नहीं गया हू किन्तु जितना देख पाया हू उसमें भावविह्वल हू।

भाई श्री माणकचन्दजी और जमनालालजी को आप अवश्य भेजे। म माणजी स इसकी समीक्षा का निवेदन कर रहा हू।

अपने स्वास्थ्य क सबध म लिखिये। मै २५ अक्टूबर को प्रात हर्निया और अपेंडिक्स का आपरेशन करा रहा हू। आपकी शुभकामनाए मिलती हो। *मगर तो पाथेय हो वे है।*

इस बार अक्टूबर--नवम्बर को सयुक्त कर दिया है। अक विशेषांक होगा और नवम्बर के अन्त म आयेगा। उसीकी तैयारी म व्यस्त हू। समय निकालकर १० १२ दिन म निर्वाण पर कोई कविता भेजिये और अपने आर्टिस्ट को उस सग्र रेखाओ म इलस्ट्रेट करने के लिए कहिये।

आशा है आपका पत्र जल्दी ही मिल रहा है।

आपका भाई
नेमीचन्द जैन

डॉ नेमीचन्द जैन
सपादक तायकर

दूरभाष ८८०६
६५ पत्रकार कालोनी कनाडिया रोड
इन्दौर
दिनाक २४फरवरी १६७७

आदरणीय भाई

आपके २ पत्र मेरे सामने है १७ जनवरी + १८ फरवरी। ऐसा लगता है आप एक निश्चित कालान्तर में मुझे पत्र लिखते है। लगभग एक माह। आपका स्नेह प्रणम्य है अपने आत्मीयो के स्नेहबल पर ही तो मैं जीवित हू। उन्ही के पत्रो से सजीवनी बटोरता हू और आगे कदम बढाता हू। आपके पत्र मेरा बहुमूल्य निधि है। अस्वस्थ होते हुए भी आप मेरे स्वास्थ्य और मेरी असुविधाओ का ध्यान रखते है यह क्या कम है? कृतज्ञता इस सबके लिए एक निधिन भुजबन्ध मुझे लगता है उसकी सीमा कम है आपका स्नेह और आपकी कृतज्ञता विपुल है शब्द छोटा है। घट की क्षमता ससीम है आपका स्नेह असीम है नत शिर हू इस वैभव के सम्मुख।

अप्रैल में तिर्थंकर पर प्रभावशाली मूल्यांकन जाएगा। अग्निमुख डा मूलचन्द और बटोरिया। उन तीनों की समीक्षाए इसके अन्तर्गत जाएगी। ब्लाक बनवा सकूगा। रुपया की बात कहा उठता है? यह मेरा निजी काम है इतना तो मैं अपनी ही गाठ से कर सकूगा। तीर्थंकर से कुछ भी लेने का प्रश्न ही कहा उठेगा? मेरा सर्वस्व उसे अर्पित है, मैं और तीर्थंकर लगभग अभिन्न है आप भी गणेश ललवानीजी भी राजकुमारीजी भी अग्निमुख भी। कलकत्ते का तो पूरा एक परिवार मेरे साथ है। हा विभूतिजी को तो भूल ही रहा हूँ उनका सहयोग शब्दातीत है। इतने परिजन जिसके हो उसे भय या आतक भला कैसा? मैं स्वस्थ हू सुविधा में हू प्रसन्न हूँ इसलिए कि अपने स्नेही परिजनो से प्रतिक्षण सपृक्त हू।

गीत मिला है समस्त है। प्रभावी है किन्तु क्या इस बीच २ ४ ताजा पक्तिया नही लिख पायेंगे स्वास्थ्य अनुमति दे तो कभी अवश्य करे।

परिवार में सबसे प्रचुर स्नेह कहे।

आपका भाई
नेमीचन्द

डॉ नेमीचन्द जैन
पत्रकार

६५ पत्रकार कालोनी,
कनाडिया रोड
इन्दौर
दिनांक १८ १० ७८

आदरणीय भाई

आपका २० सितम्बर का पत्र यथासमय मिल गया था। कफातिशय खांसी ज्वर, तथा अन्य पीडाओं के कारण तब उत्तर नहीं दे सका इसकी खिन्नता आज भी बनी हुई है।

आप 'तीर्थंकर' की नींव में हैं। वह जो भी है आपकी शुभाकांक्षाओं की रचनात्मक आकृति है। शुभाशंसा आपका स्वभाव है। संपादकीय ठीक ठीक था हाँ यह लगभग असंभव ही है कि कुछ लिखा जाए और वह धमनियों से जुड़ा न हो। आप स्वयं इसके प्रमाण हैं। स्वयं के बिम्बित प्रतिबिम्बित हुए बिना कोई रचना संभव ही नहीं है। यह रचनाधर्मिता ही महत्व की है। क्रिएटिविटी ही रचनाकार को धन्य करती है। मैं नहीं मानता कि संपादक में कोई रचनाशीलता नहीं होती। क्रिटिक भी क्रिएटिव होता है, होना चाहिये। कागज पर रख दिया है कलेजा निकाल कर यदि मेरी रचनाशीलता से वह जुड़ा है तो मैं बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ, किन्तु सुनिये आज लगभग सारे लोग बहरे-अंधे हुए हैं। हाथी सामने है और कोई भी उसे समग्र नहीं देख पा रहा है। समझ नहीं पा रहा हूँ कि इस स्थिति का समाधान क्या हो? हम लोग लिखते हैं, और लोगों के सिर पर से बिना कोई मार किये निकल जाता है। तीर्थंकर के संपादकीय, माना, पढ़े जाते हैं और यह भी ठीक है कि कभी उसका कोई अमृत फल सामने आयगा किन्तु तब तक काफी कुछ और अधिक बिगड़ चुका होगा। इस मरम्मत की हालत की तब ध्वंस की स्थिति के आमने-सामने होना होगा। चलिये प्रलय को भी देखेंगे। हम ही झेल पायेंगे। साहित्य ही झेल पाया है प्रलय या झेल सका है प्रलय। इसलिए जरूरी है कि हम अपनी भूमिकाओं को पूरे दायित्व के साथ निभायें। मेरा 'संपादकीय' इसी कर्तव्यपूर्ति का एक भाग था। प्रशंसा के लिए कृतज्ञ हूँ।

लिखें, स्वास्थ्य कैसा है? विशेषांक के लिए कोई नयी रचना भेजिये। प्रतीक्षा करूंगा। परिवार में सबसे स्नेह कहियें।

आपका स्नेही कुटुम्बी
नेमीचन्द

कुबेरनाथ राय
नलित निबन्धकार

नलबाड़ी
दिनांक २७ १ ७३

प्रिय भाई

आपकी दोनों पुस्तकें और दोनों पत्र यथा समय मिले थे। उत्तर न देना अपराध हुआ है। बनावटी बहाना करने में क्या लाभ? यह मेरी वृत्तिच्युति है।

आप राजस्थानी के मजे हुए गीतकार हैं यह मैं अपने मित्रों से सुन चुका हूँ। गीत लिखने की क्षमता का लोप होता जा रहा है। और सम्भवतः राजस्थानी से गहन स्पर्श रहने के ही कारण आपकी भावबोध क्षमता में आधुनिक बौद्धिक व्यध्यापन Intellectual barrenness का प्रवेश नहीं हो पाया है। प्रणाम के अनेक गीतों को एकान्त में (अपने गदभ मदन स्वरस एकान्त में) बाध्यत गा गा कर कई बार पढ़ा है। हम मानसर भूला तू अपनी उपलब्धि आप है लाख करो तुम तमको निन्दा उसको स्नेह सितारों से है ओ मछली सरवर तीर की दो पीडा को कनक बना दूँ तुमको एक गीत का कथन आदि पंक्तियाँ अब भी याद हैं गो कि कई हफ्ते पूर्व पढ़ा था। गीत काव्य की क्षमता की कसौटी मैं यही मानता हूँ कि पढ़ी या सुनी पंक्ति बहुत दिन तक सहृदय को याद रहे। और इस कसौटी के अनुसार आपके संग्रह प्रणाम में करीब एक दर्जन कविताएँ ऐसी निकलीं जो मेरे मर्म पर बड़ी शक्ति से रेखापात कर गया। मैं उन लोगों में नहीं हूँ जो अच्छा लगने पर भी ऊपर से अपनी बौद्धिकता और नयापन का इजहार करके इन्हें कवि सम्मेलनी और रोमाण्टिक कह कर तिरस्कार करते हैं। आज हिन्दी में ऐसी अराजकता है कि Pamphlet या Handbill में कविता का रूपान्तरित करना ठीक माना जाता है (या यों कहे कि इस ही मूल कवि कर्म मान लिया गया है) परन्तु जिस रोमाण्टिकता एवं संगीत (अर्थात कवि सम्मेलनीपन) से कविता का शताब्दियों से सम्बन्ध रहा है उसे अपकर्म मानते हैं। मुझे आप की कविताओं में कवित्व मिला मुझे वे अच्छी लगीं। इस बात को निस्संकोच कह सकता हूँ।

परन्तु एक शिकायत है। आपके समूचे गीत काव्य को उत्तम काव्य की कोटि में रखते हुए भी उसे सामान्य अर्थात general (मामूली नहीं

general क्या कि सामान्य शब्द के दो अर्थ होते है) ही कहूँगा। उसमे कोई विशिष्टता नहीं लगी। मैं आशा करता हूँ कि इस विशिष्टता को आप अगले संग्रह में उपस्थित करेंगे। विशिष्टता से मेरा तात्पर्य क्या है ? मेरा तात्पर्य यह है कि आपकी कविताओं को पढ कर यह नहीं लगा कि ये एक राजस्थानी मनोभूमि से उत्पन्न हैं। उन में राजस्थानीपन का अभाव है। जिस तरह बांग्लादेश के कवियों में उनकी imagery myth तथा गीत के form के अन्दर बांग्लापन झलकता है उसी तरह राजस्थानी के हिन्दी कवि से मै उसकी राजस्थानी विशेषता की अपेक्षा करता हूँ विशेषतः उस कवि से जो राजस्थानी में खुद लिखता हो। उत्तरप्रदेश की संस्कृति तो मुगल शाही के प्रभाव से ६०० वर्षो में (मध्य काल के बाद) beaurocratic हो गयी है। उस cultural deadlock में विशिष्टता के लिए फाक या अवसर कहाँ ? मुझे आशा है पूर्वी यू पी बिहार मध्यप्रदेश और राजस्थान से आप लोगों की रचनाओं में strong local colour आना चाहिए। आप अपने मानसिक उत्तराधिकार से हिन्दी को सम्पन्न करें।

आपकी खुली खिडकियां चौडे रास्ते में पुन आप की उसी क्षमता का नया रूप देखने को मिलता है। जब दो क्वार रास्ते घुर उठा पक हरा तालाब सूख गया' मेरे कमरे में ठहरे कन एक और बीमार चाँद मत छिटका सिर के खेत में पीटते रहा कनस्तर जा पके झूठे ही लटके ठहर जाय जो नार आदि लघु कविताओं में बडी ही सच्ची और समय प्रतिभा के दर्शन होते है। ये अनुभव खण्ड (और नई कविता खंडित क्षणों की कविता है) नयापन और काव्यत्व दोनों में समृद्ध है। इन में व्यक्त सीधे Via reasoning या ऊहापोह का माध्यम नहीं सीधे अपना तादात्म्य पाठक के साथ करते है और इनमें कुछ भी ऐसा नहीं जिसे 'बासी या पिटा पिटाया कहा जाए। यह संग्रह आपके गीत काव्य संग्रह 'प्रणाम' की तुलना में अधिक परिपक्व लगा।

कभी कभी पत्र दिया करें। आशा है आप सबाल गोपाल प्रसन्न होंगे।

आपका
बुद्धिनाथ राय

अमृत राय
साहित्यकार

हंस प्रकाशन
इलाहाबाद
दिनांक १२.१.७४

प्रियवर

१८.१२ का कृपा पत्र मिला।

बतरस आपको अच्छी लगी यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई।

राधाकृष्णजी भी बड़े आत्मीय हैं और इस स्थिति को एक व्यंग्य ही समझना चाहिए कि उनके दो आत्मीय स्वजन एक दूसरे को नहीं जानते। देखिए शायद यह दिन भी आ जाए।

नव वर्ष की हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

आपका
अमृत राय

अमृत राय
साहित्यकार

हम प्रकाशन
इलाहाबाद
२ फरवरी १९७४

बंधुवर सेठियाजी,

मध्यप्रदेश से लौटने पर आपका १८ १ का कृपापत्र और आपका कविता संग्रह मिला।

कविताओं में खूब रस मिला। रचनाएँ तो अच्छी हैं ही अनुवाद भी बहुत अच्छा हुआ है। हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय की प्रस्तावना भी बड़े मन से लिखी गयी है। बधाई।

आशा है आप स्वस्थ और सानन्द हैं।

आपका
अमृत राय

दिनेशनन्दिनी डालमिया
माहित्यकार

> मिकन्द्रा गड
नई दिल्ली—१
दिनाक २३ १ ७४

मान्यवर भाई सेठियाजी

पत्र के लिये धन्यवाद। मैं समझता हू मैंने आपका पत्र का उत्तर दे दिया था शायद नहीं भी दिया हो तो अब लिख दू कि मने आपकी सभी पुस्तकें आते ही पढ ली। मुझे राजस्थानी भाषा से खास लगाव है उन्हें पढकर मन रीझ उठा। अभी तक अंग्रेजी अनुवाद पूरा नही पढ पाई हू पर उस भी सरसरी तौर देख अवश्य गई हूँ। सेकसरिया जी के लिये मैं कुछ अवश्य लिख भेजती किन्तु कुछ लिखू इतना मैं उनको जानती नही अत ? मेरा लिखना एक अनधिकार चेष्टा मात्र होगी।

यह सही है कि लेखकों की एक गुटबन्दी है म तो इसीलिये उस दुनिया से अपने आपको कब का बाट चुकी हू। लिखती हू वह भी इसलिये कि जीभ की नोक पर शब्द आ जाकर कलम को विवश कर देते है।

उस गुटबन्दी की गली म घुमना अपनी प्रतिभा को घुटा देना होगा। चीज म ताकत है तो वह अपने आप सर पर चढती ही चली जायगी चाहे नाम पीठ जस लोग उस ओर आकर्षित न भी हो बस मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध उनके साथ नही है। भाषाओ म बहुत काम होना है। साहित्य के उभार के लिये नदियों की तरह हर भाषा के साहित्य म बाढ आनी चाहिये। पर आजकल तो अधिकतर लोग नकल और नकल पर जाना सीख गये है। इसीलिये तो हमारा यह क्षेत्र अभी भी अन्य देशो के मुकाबले म कमजोर पडता है।

आशा है आप प्रसन्न हैं। वास्तव म आपकी बहुत सी चाजें बहुत मार्मिक और हृदय स्पर्शी है। मेरा अभिनन्दन।

इधर आने का काम पडे तो मिलियेगा। और मार्च म यही हो तो विवाह म भी शराक होइयेगा।

एक कष्ट और देना चाहती हू आप कलकत्ते रहते है मेरी विवाह के योग्य तीन सुशिक्षित कन्या है २२ २१ २० वर्ष आयु की। उनके लिये सुयोग्य वर की तलाश म हू। देखिये कोई वहा हो तो शेष फिर।

आपकी बहन
दिनेशनन्दिनी

कालिन्दी
सम्पादक मैत्री

"मैत्री"
ब्रह्मविद्या-मंदिर
पवनार वर्धा
(महाराष्ट्र)
दिनांक ७-८

सादर प्रणाम

तारीख २२ का पत्र प्राप्त हुआ। परिचय जानकर बहुत खुशी हुई। आज तक सम्पादक-लेखक का ही नाता सा था। पर अब तो शायद हम कह सकती हैं पिता-पुत्री का ही नाता हो सकता है। हमारे जीवन तथा कार्य के लिए सदा आपके आशीर्वाद चाहेंगी। हम सब बहनें प्रणाम भेजती हैं।

पूज्य बाबा पर उनके मौन पर भेजी आपकी रचना भी मैत्री के मई के अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। रचनाओं के अलावा मैत्री के लायक और भी कोई साहित्य सामग्री हो तो अवश्य चाहूंगी।

आपका कभी इधर आना होगा तो हम सबको बहुत खुशी होगी। आशा है आप स्वस्थ सानंद होंगे।

विद्यावती कोकिल
कवयित्री

अरविन्द आश्रम
पाण्डिचेरी
दिनांक १० ७ ६६

आदरणीय बन्धु

आपसे मिल कर प्रसन्नता हुई। पुरानी पुस्तकें तो समाप्त हो चुकी हैं। एक ही दो पुस्तकें भेज सकी हूँ खेद है। इधर कुछ वर्षों में बहुत सामग्री ढेर हो गई है पर सावित्री के अनुवाद में लगे होने के कारण उधर ध्यान नहीं दिया जा सका। यह अनुवाद भी अपनी विषयवस्तु व शैली में एकदम भिन्न प्रकार का होने के कारण अभी हिन्दी वालों के पास भी भेजने में संकोच सा हो रहा है। पर आप जैसे आध्यात्म प्रेमी शायद मूल के साथ मिलाकर पढ़ने पर मेरी कठिनाइयों को समझ सकेंगे। बस प्रथम पर्व को मैं फिर से प्रकाशित करूँगी क्योंकि उसमें प्रेस की और मेरी दोनों की ही असावधानियाँ हुई हैं। यहाँ प्रेस में हिन्दी के जानकार का चलन ही नहीं है। अब मेरे कहने से कुछ होने लगा है। इसलिए पकन आदि शब्द फकन हो गए हैं। अन्य अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने हितैषियों की शुभकामनाओं और प्रभु की कृपा से ही इसे पूर्ण करने की दिशा में बढ़ रही हूँ अन्यथा ऐसे महान योगी के शान्त दर्शनों को भला मैं कैसे दूसरी भाषा में चित्रित कर पाती।

अनुरोध है कि आप तीसरे पर्व से पढ़ना आरंभ करके पाँचवें छठे पर्व को पढ़ लेने के बाद फिर पहले और दूसरे पर्व को पढ़ें। मैं अवश्य ही आप जैसे प्रबुद्ध पाठक की कुछ प्रतिक्रिया भी जानना चाहूँगी। इससे मुझे मार्गदर्शन मिलेगा। न मैंने छन्द ही संस्कृत का लिया है और न शैली ही संस्कृत की अपनाई है। सीधी सादी शैली में उनके गूढ़ और अर्थगर्भित गम्भीर शब्दों को जितनी भी उपयुक्त और सरल हिन्दी की शैली में बिना थोड़ा भी उसे घुमाए फिराए रख सकी हूँ रखने का यत्न किया है। निश्चय ही यह एक ध्यान की वस्तु है। इसके साथ ही संगीतमयता को कहीं भी जाने नहीं दिया है। मैं तो इसे अन्य कविताओं की भाँति गाकर ही पढ़ती हूँ। आपको सुनाने का समय नहीं था। पर मैंने टेप करवाए हैं। यदि आप कभी चाहेंगे तो टेप उतरवा कर भेज सकती हूँ। हाँ अगर बीस पचास मिनट का टेपका कार्यक्रम जयपुर रेडियो वाले भी किसी समय रखने की सहमति दें तो वहाँ रेडियो स्टेशन है ही उन्हें भी भेजा जा सकता है।

मेरे योग्य सेवा लिखें। प्रणाम लें।

आपकी
विद्यावती

विद्यावती कोकिल
कवियत्री

अरविन्द आश्रम
पाडेचेरी

आदरणीय भाई,

'प्रणाम' की अनमोल भेंट मिली। उसे पढ कर धन्य हुई। उसकी शैली, शब्द सचयन और उनके नव गठन, प्रतीक ध्वनियां सभी पर मुग्ध हुई। यह कहने को जी हो उठा कि अरविंद साहित्य का सागर अगम्य ऋषि को उपलब्ध हुआ। अब निश्चय ही उसके हृदय मे मत्रो के गीत पक्षी अनवरत ही उडते रहेंगे।

पर एक बात और भी कहने को जी होता है कि निर्मल नभ को शाणितमय कर डूब गया सूरज हत्यारा सूर्य जो प्रकाश का सत्य का ज्ञान का प्रतीक रहता चला आया उसे केवल एक मन की सनक के लिए हत्यारा बनाना ऐसे उन्नत वातावरण मे शोभा नही देता। इसी प्रकार तितली को भी भ्रमर की लम्पट दूती कहना बहुत 'अच्छा नही लगा। यद्यपि ऐसे प्रयास कही है नही एकाध हिंदी साहित्य मे चल आ रहे स्वभावगत ही आगए हैं। पर भावी मे कवि को जिस ऋषि मन को तैयार करना है उसका सभी कुछ परिपाटीगत छोडना पडेगा। नवीनतम को सजीव करना होगा।

अंत मे इस आनन्द विभोर कर देने वाली पुस्तक के लिए मेरी अनेक बधाइयाँ लीजिए।

सावित्री सात पुष्पो मे समाप्त हो रही है। ६ पुष्प प्रकाशित हैं एक और बाकी है। यह एक अनगढ सा प्रयास है। बहुत से स्खलन रह गए हैं। कुछ जाने मे कुछ अनजाने मे कुछ प्रेम के, उन्हें एक शुद्ध पत्रिका द्वारा कुछ दूर करने का प्रयास होगा। बाकी तो पुनरावृत्ति मे ही दूर हो सकेंगे। यह मेरा प्रथम प्रयास है। किसी भाषा मे पूरा अनुवाद उपलब्ध भी नही। आप भी कम से कम दूसरे व तीसरे पुष्पको पढ कर (मूलके साथ) मुझे अपने सुझाव भेजें अनुगृहीत होऊंगी।

विशेष कृपा।

सविनय नमस्कार लें।

आपकी
विद्यावती कोकिल

दिनकर सोनवल्कर
कवि

जावरा
१५ अगस्त ७६

श्रद्धेय

सादर नमन

आपका कृपापत्र मिला। आपके आशीर्वाद के पारस-स्पर्श से शायद कुछ बन जाऊँ। ताजमहल मिल गया। बड़ा रंगीन दिलकश है। पढ़ते पढ़ते ख्यालों की दुनिया और प्रेम तथा दर्द के समुन्दर में डूब डूब जाता है दिल। उर्दू पर भी आपका गजब का अधिकार है। और उपमाएँ तो बेमिसाल हैं। मैंने अपने शायर दोस्तों को दिखाई थी। सभी बहुत प्रभावित हुए। मेरी विनम्र बधाईयाँ तथा नमन स्वीकारें। ज्यों ज्यों आपको पढ़ता हूँ। आपके दर्शनों की इच्छा तीव्रतर होती जाती है। किसी कार्यक्रम के बहाने यदि बुला सकें तो आपके सत्संग का लाभ भी मिलेगा। यह स्वार्थवश नहीं। भक्तिवश ही लिख रहा हूँ। शेष कृपा।

विनीत
दिनकर

अनन्त कुमार पाषाण
कवि

चन्दन निवास,
कुला रोड अंधेरी
बम्बई ६६ ए एम
दिनांक ६ ६ १६७६

प्रिय सेठियाजी

आपके सुपुत्र ने ताजमहल दिया। चचगेट से अंधेरी लौटते हुए रेल म पढ लिया। मजा आया।

आवरण पष्ठ भी बडा आकषक है।

एक हैरत है-- आपकी जवानी का राज क्या है ? '

म तो अपने आपको भीष्म पितामह जसा बूढा महसूस करता हूँ या कुरुक्षेत्र म घूमते हुए विदुर जसा। असलियत यह है कि भीष्म पितामह का कॅरेक्टर मुझे पसन्द नही।

सर हर्फे सग म रुहे अन्दलीब की ये रूदाद दाद हासिल कर यही दुआ।

फकत आपका
अनन्त कुमार पाषाण

पुनश्च मिश्रजी मजे म हैं। श्री वीरेन्द्र कुमार जन भी आपको याद करते हैं---

अनंत कुमार पाषाण
कवि

चन्दन निवास
कुला रोड, अंधेरी
बम्बई ६९ ए एम
दिनांक ४ ४ १९७७

प्रिय भाई

'निशीथ' मिश्रजी ने ला कर दिया तो असंख्य वेदनाओं में भी मेरा सूरजमुखी की तरह आत्मा के सूर्य की ओर ही उन्मुख आपका हँसता हुआ चेहरा आँखों के सामने आ गया और गर्मी की वह शाम जब केवल शरबत के आधे गिलास का आपने आतिथ्य का अनाविल गौरव प्रदान किया था। भैया सच्ची बात तो है यह कि कविता आपकी बहुत सहज स्वच्छ स्वस्थ है और उन नेताओं के ऊपर एक अर्थपूर्ण टीका है जिनके हाथ में थे केवल उपमान और दुंदुभियाँ मगर जब सुनता हूँ कि आप अस्वस्थ हैं तो मुझे स्वयं अपनी एक कविता याद आ जाती है।

आत्मा का सूर्यमुखी मेरा खिलता रहे
इसीलिये देह को खाद बनाता रहा
हरेक दृश्य को सुस्पष्ट देखने को
आँख मूँदता रहा
स्वरों को ठीक ठीक पहचान पाने के लिये
मैं बधिर बन गया

पूरी कविता शीघ्र छपेगी तब पढ़ियेगा। कहने का मतलब इतना ही है कि कविता जितनी स्वस्थ है कवि का मस्तिष्क जितना स्वस्थ है उतना ही उसका शरीर भी हो यह मैं हृदय से कामना करता हूँ। नहीं तो। आप तो उनमें से हैं कि--

या इम्तिहाने बर्के तजल्ली जरूर था
क्या मैं न था इस आग में जलने को तूर था ?

एक सुझाव--कृपया आत्मकथा लिखनी शुरू कर दें चीज होगी। Then when you return to poetry you would enjoy its creation in a totally new way

सादर
अनंत कुमार पाषाण

भवानी प्रसाद मिश्र नई दिल्ली

कवि ता २४ नवंबर १९७५

प्रिय भाई श्री कन्हैयालालजी,

कल श्री पोद्दारजी के द्वारा भेजी हुई दोनों किताबें मिलीं। मैंने दोनों किताबों को एकदम पढ़ना ठीक नहीं माना है, धीरे धीरे पढ़ रहा हूँ कविताएं बहुत छोटी छोटी हैं। किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि वे बिहारी के दोहों की तरह 'नाविक के तीर' हैं।

आजकल छोटी जापानी कविताओं का बड़ा शोर है। चारों तरफ लोग 'हाईकू हाईकू' करते रहे हैं। आपकी छोटी कविताएं मेरी समझ में शिल्प और सार की दृष्टि से बड़ी प्रशंसनीय हैं। यदि संभव हुआ तो मैं हाल ही में प्रकाशित 'तथा प्रतीक' में छपी हुई जापानी कविताओं से उसकी तुलना करके 'प्रतीक' या कहीं और उनके बारे में लिखने का प्रयत्न करूँगा। एक बार उन्हें और बारीकी से पढ़ने का मन है। यह मैं पांच सात दिन में कर लूंगा। ये कविताएं ज्यादा ध्यान देने योग्य हैं।

अंग्रेजी कविताओं पर थोड़ी सी नजर दौड़ाई। मेरी समझ में मूल कविताओं का आनन्द नहीं उतरा। आपकी लिखने की शैली से मैं परिचित हूं। इन अनुवादों में न तो आपकी भाषा के सौष्ठव का अनुमान लगता है और न छन्द की कसावट का। बहरहाल यह अनुवाद की अनिवार्य हानि तो है ही। श्री अज्ञेयजी के पास आज आपकी दोनों किताबें भिजवा रहा हूं उनके कार्यालय में। वे कभी-कभी कार्यालय में आते हैं। और घर तो उनका बहुत दूर है। कोशिश करूँगा कि उनसे फोन पर बातचीत कर सकूं। इन किताबों के साथ उनके पास एक पत्र भी भेज रहा हूं।

मैंने श्री पोद्दार को अपने दो काव्य संग्रह आपके पढ़ने के विचार से दिये हैं। वे कह रहे थे कि उनकी कोई संस्था है और हम वे कलकत्ता बुलाना चाहते हैं। साधारणतः मैं आजकल यात्रायें नहीं करता हूं, किन्तु आपसे मिलने का मोह है। अगर शरीर ने इजाजत दी तो जरूर आ जाऊंगा।

शेष कृपा। समाचार देते रहें। श्री पोद्दार ने बताया कि आपको श्वास का कष्ट रहता है। अब कम है। मित्रों को नमस्कार कहें।

विनीत,

भवानी प्रसाद मिश्र

भवानी प्रसाद मिश्र
कवि

राजघाट कालोनी
नई दिल्ली २

प्रिय भाई सेठियाजी

स्नेह नमस्कार स्वीकार करें।

कृपा पत्र मिल गया था। हृदय का दौरा आपको किस प्रकार का होता है। मायोकार्डियल इन्फार्क्शन (थ्रोम्बोसिस) या और कुछ? मुझे थ्राम्बोसिस के कारण हृदय रुक कर मृत्यु के द्वार से ७ बार लौटना मिला है। ७वीं बार पेसमेकर लगाया गया था। यदि आपको थ्राम्बोसिस का कष्ट है तो पेसमेकर अर्थात पल्स जेनेरेटर लगवालें। मैंने पिछली बार २ बरस का लगवाया था अब वे डाक्टर ६ बरस का लगाने के कहते हैं। शायद जनवरी के अंतिम सप्ताह तक लग जाये। मैंने तो हाथ फैलाया तो पैसे मिल गये हैं या मिल जायगे आपको तो ठोकर में पैसे पडे हैं। यह उपकरण १३ प्रकार का है। थ्राम्बोसिस हो तो चिकित्सकों से सलाह लेकर देखिए। कोई अन्य प्रकार का कष्ट हो तो शायद यह उपयोगी न हो। निर्ग्रन्थ जिस दिन मिला था एक बार उसी दिन और फिर जब बीच-बीच में मन का मन होने पर थोडा थोडा पढता हूँ। आपके लिखने में जो गहराई है वह साधारण नहीं है। असामान्य है। विरल है। फिर आप अपनी कृतियों के प्रकाशन में सुरुचि का भी कैसा अच्छा ध्यान रखते हैं। इस पुस्तक का आवरण अवश्य और सादा हो सकता था। घर में सबको यथायोग्य निवेदन करें। पत्र का उत्तर खुद न लिखें किसीसे लिखवा दें।

विनीत
भवानी प्रसाद मिश्र

जी सी डी कविशास्त्री
साहित्यकार

३४ जानकी नगर
इंदौर (म प्र)
दिनांक १३ ७ ७७

राजस्थान के श्रेष्ठ कवि श्री कन्हयालाल सेठिया के काव्य संग्रह खुला खिडकिया चौडे रास्ते' का मराठी अनुवाद पढा। श्री सेठिया की कविताएँ हृदयस्पर्शी हैं और आजकल के भारतीय साहित्य म विशेष प्रशसा क याग्य है। अनुवादक ने कविताओं का मम बहुत अच्छी तरह से समझ कर मराठी म अनुवाद करने का सफल प्रयत्न किया है।

यह अनुवाद मराठी राजस्थानी और केन्द्रीय सस्थाओ के सहयोग से प्रकाशित करने पर मराठी साहित्य म एक नया रूप आयेगा इसम कोई सन्देह नहा है। मराठी म प्रचलित काव्यो स इनकी रचनाए अलग ढग की है। किसी भी भाषा का मौलिक रचनाएँ उसके अच्छे अनुवाद मे और भी समद्ध हो जाती है। एक श्रेष्ठ रचना के अन्य भाषाओ मे हुए अनुवाद स कवि के कुल का नाम उज्जवल होता है। भारत की विविध भाषाओ क अच्छे साहित्य का परस्पर परिचय विशेष प्रोत्साहनीय है।

इसका प्रकाशन यशस्वी हो ऐसी मैं आशा करता हूँ।

भवदीय
जी सी डी कविशास्त्री

भवानी प्रसाद मिश्र
कवि

राजघाट कालोनी
नईदिल्ली २

प्रिय भाई भठियाजी

स्नेह समादर स्वीकार करें।

कृपा पत्र मिल गया था। हृदय का दौरा आपको किस प्रकार का होता है। मायोकार्डियल इन्फोर्शन (थ्रोम्बोसिस) या और कुछ ? मुझे थाम्बोसिस के कारण हृदय रुक कर मृत्यु के द्वार से ७ बार लौटना मिला है। ७वां बार पेसमेकर लगाया गया था। यदि आपको थाम्बोसिस का कष्ट है तो पेसमेकर अर्थात् पल्स जेनेरटर लगवालें। मैंने पिछली बार २ बरस का लगवाया था अब ये डॉक्टर ६ बरस का लगाने के कहते हैं। शायद जनवरी के अंतिम सप्ताह तक लग जाये। मैंने तो हाथ फैलाया तो पास मिल गये है या मिल जायेंगे आपको तो ठोकर में पास पड़े हैं। यह उपकरण १३ प्रकार का है। थाम्बोसिस हो तो चिकित्सकों से सलाह लेकर देखिए। कोई अन्य प्रकार का कष्ट हो तो शायद यह उपयोगी न हो। निबन्ध जिस दिन मिला था एक बार उसी दिन और फिर जब बीच-बीच में मन को मन होने पर थोड़ा थोड़ा पढ़ता हूँ। आपके लिखने में जो गहराई है वह साधारण नहीं है। असामान्य है। विरल है। फिर आप अपनी कृतियों के प्रकाशन में सुरुचि का भी कैसा अच्छा ध्यान रखते हैं। इस पुस्तक का आवरण अवश्य और सादा हो सकता था। घर में सबको यथायोग्य निवेदन करें। पत्र का उत्तर खुद न लिखें किसीसे लिखवा दें।

विनीत
भवानी प्रसाद मिश्र

जी सी डी कविशास्त्री
साहित्यकार

३४ जानकी नगर
इदौर (म प्र)
दिनाक १३ ७ ७७

राजस्थान के श्रेष्ठ कवि श्री कन्हयालाल सेठिया के काव्य सग्रह खुली खिडकिया चौडे रास्ते' का मराठी अनुवाद पढा। श्री सेठिया की कविताएँ हृदयस्पर्शी हैं और आजकल के भारतीय साहित्य म विशेष प्रशसा के योग्य है। अनुवादक ने कविताओ का मम बहुत अच्छी तरह से समझ कर मराठी म अनुवाद करने का सफल प्रयत्न किया है।

यह अनुवाद मराठी राजस्थानी और केन्द्रीय सस्थाओ के सहयोग स प्रकाशित करने पर मराठी साहित्य म एक नया रूप आयेगा इसम कोई सन्देह नही है। मराठी म प्रचलित काव्यो से इनकी रचनाए अलग ढग की हैं। किसी भी भाषा की मौलिक रचनाएँ उसके अच्छे अनुवाद से और भी समृद्ध हो जाती है। एक श्रेष्ठ रचना के अन्य भाषाओ म हुए अनुवाद स कवि के कुल का नाम उज्ज्वल होता है। भारत की विविध भाषाओ के अच्छे साहित्य का परस्पर परिचय विशेष प्रोत्साहनीय है।

इसका प्रकाशन यशस्वी हो ऐसा मैं आशा करता हूँ।

भवदीय
जी सी डी कविशास्त्री

अरुण कुमार
साहित्यकार

१३/२ चन्द्रभागा
इन्दौर
६-८-१९७६

प्रिय सेठियाजी

सप्रेम अभिवादन

खुली खिडकियाँ चौडे रास्ते कई बार पढ चुका था। जितनी ही बार उसे पढा मराठी में उस के अनुवाद को प्रस्तुत करने की इच्छा तीव्र से तीव्रतर होती गयी और सितम्बर १९७५ के पहले चार पाँच दिनों में यह सम्पूर्ण कर लिया। उस समय दिलो दिमाग पर एक ही जनून सवार था—एक धुन थी।

बाद में कुछ व्यस्ततावश या यूँ कहिए कि आरभशूर सुलभ आलस्य एव प्रमादवश अनुवाद की परिष्कृत प्रतिलिपि तथा उस की टंकित प्रतियाँ बनवाने में कुछ विलम्ब हो गया। अनुवाद मित्रों को अच्छा लगा। मराठीभाषी नाता साहित्य प्रेमी मित्र चौंक से गए—मुग्ध होगए। उन्होंने आप के कृतित्व में एक अनोखी ताजगी अनुभव की। कथ्य एव कथन की अद्भुतता ने उन्हें मोह लिया। उनके लिए यह कथन अपूर्व था। निश्चय ही मराठी के सामान्य एव विशिष्ट पाठक एव कृतिकार इस कृति के अनुवाद को बहुद पसन्द करेंगे जो आपकी जादुई रचना की एक विशिष्ट उपलब्धि है। जिन्हें भी अनुवाद दिखाया वह सभी आप की अन्य कृतियों के विषय में जानने के लिए उत्सुक प्रतीत हुए।

दो टंकित प्रतियाँ प्रेषित हैं। यदि कुछ अस्पष्टता या पढने में असुविधा होतो लिखिए मूल हस्तलिखित सुपठनीय प्रति भेज दूँगा।

मराठी में यदि यह अनुवाद प्रकाशित होता है तो निश्चय ही मराठी साहित्य में एक लोकोत्तर कृति उपलब्ध हो जाएगी। विगत दशाब्दियों की सर्वाधिक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में इस का मराठी भाषा व साहित्य जगत में स्वागत होगा। स्वस्थ सानन्द हैं। स्वाधीनता दिवस के पावन अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन। अनुवाद Regd Book Post से भेजा है। पहुँच दें।

सविस्तार पत्र की प्रतीक्षा में

साभिवादन आपका
अरुण कुमार

अली सरदार जाफरी
उर्दू शायर

१० सीता महल
वामनजी पटिट रोड
बम्बई

ताजमहल हुस्न की तसवीर है लेकिन ऐसी तस्वीर जो अपना हुस्न दूसरो के दिलो मे मुतकिल करती रहती है। टगोर ने ताजमहल को देखा और एक हसीन व जमाल नज्म कह दी। कन्हैयालालजी सेठिया को भी ताजमहल के हुस्न मे एक हिस्सा मिला है जो उनकी नज्म मे जगमगा रहा है। मै यह नज्म पढकर बहुत खुश हुआ।

अली सरदार जाफरी

दिनाक २८-५-७७

ताजमहल न केवल सुदर है वह तो प्रकृति की तरह उदार है। वह अपना सौदर्य सब को प्रदान करता है। कन्हैयालाल सेठिया का उर्दू काव्य ताजमहल के सौदर्य पर चमकता हुआ प्रदीप्त हीरा है।

अली सरदार जाफरी

डा मूलचद सेठिया   जयपुर
साहित्यकार   दिनाक १४ अगस्त ७६

पूज्य भाईजी

ताजमहल यथा समय प्राप्त हो गया था। इसे पढ कर सुखद आश्चर्य हुआ। यह केवल रुचि परिवर्तन के लिए किया हुआ भाषा प्रयोग नहीं है। उर्दू शायरी की स्पिरिट और मेयार दोनों को बखूबी पकडने मे आपकी कलम ने कमाल हासिल किया है। आपकी यह उर्दू साधना कब से चल रही थी? अब तो आपकी गणना चोटी के उर्दू शायरों में करनी पडेगी। हिन्दी और राजस्थानी के बाद आपकी प्रतिभा का प्रसाद उर्दू को भी मिला और खूब मिला। कुछ पंक्तियाँ तो इस कशिश के साथ पकडती हैं कि आगे बढने ही नही देती। हर्फे सग मे रहे अदलाव का रूदाद है ताज विसाल का तर्जे अदा मे फुर्कत का फरियाद है ताज।

वास्तव मे आपने कुछ अशआर तो मीर और मोमिन जैसे उस्तादो के अन्दाज मे कहे है। अधिक लिखू तो आप समझेगे कि मै अतिशय से काम ले रहा हूँ।

निग्रन्थ की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

आपका
मूलचन्द

DR HIRA LALL CHOPRA
Lecturer Calcutta University
(Retd)

Telephone 24 3566
2 Ram Lochan Mullick St
Calcutta 700 073

Dated 29th October 1978

THE TAJ MAHAL—A poetry in marble a precious paradox in stone hauntingly mystic and bafflingly protean has now been reconstructed in metaphors and similies by Sri Kanahaiyalal Sethia to make it intelligible to the thinking world and to immortalise this structure of stones and slabs commemorating Shahjahan s beloved Mumtaz

Everything tangible is perishable and the Taj is no exception but the Taj reconstructed by Sri Sethia on the foundations of words and phrases is imperishable

The Taj of marble was built by an Iranian with the Indian material thus integrating the cultures of India and Iran harmonising them both in a happy blend So also Sri Sethia has welded Persian expressions into Hindi pattern to bring two cultures closer to each other Hindi should legitimately be proud of this new venture in its enrichment and be grateful to Sri Sethia My congratulations to Sri Sethia for his providing Indian literatures with fresh fields and pastures new for posterity also

Hira Lall Chopra

रामनन्दन मिश्र
भू पू सासद

लहेरिया सराय
दिनाक २६ जून १९७९

भाई कन्हैयालालजी

आपका ६ दिसम्बर का पत्र अभी तक अनुत्तरित पडा रहा। पिछले ६ महीना मे आपकी कविताओ के रसास्वादन म आपका ही भूल गया।

हिन्दी भाषा म ऐसी कविताएँ हैं इसका मुझे पता ही नही था। आपने सजन की जिस कला के द्वारा आत्मज्ञान और भगवत प्रेम का ओत प्रोत कर दिया है वह विमुग्धकारी है।

मुझे आश्चय है ऐसी उच्च कोटि की रचनाएँ अब तक साहित्यिक जगत म कसी उपेक्षित रही ?

मैंने आपके प्रकाशक आर्यावत्त प्रकाशन गह सुजानगढ (राजस्थान) को आडर दिया है कि आपकी सभी रचनाओ की एक एक प्रति मेरे पास V P द्वारा भेज दें।

हार्दिक शुभकामनाओ के साथ

आपका
रामनन्दन

जैनेन्द्र कुमार जैन
चिंतक, उपन्यासकार

पूर्वोदय प्रकाशन
दिल्ली
दिनांक १-११ ७३

प्रिय भाई,

पुस्तक अभी डाक से मिली और खुली है। झाँकते ही स्पष्ट हुआ कि 'मर्म गहरे में स्पर्श करने वाली कृति है। सिद्ध कर देती है कि दर्शन से कविता सूखती नहीं, और सम्पन्न होती है। बधाई लीजिए कि अब भी सृजन जारी है और आप वैसे ही ताजा हैं।

सस्नेह
जैनेंद्र

जैनेन्द्र कुमार जैन
विचारक

दिल्ली
२४४७६

श्री कन्हैयालाल सेठिया की कविताओं का संकलन प्रणाम पाकर गहरे सुख का अनुभव हुआ। अर्से से उनकी कवितायें प्रकाश में आती रही हैं। मर्म ही उन्होंने उठाया और विचार में डाला है। नई कविता जिसे माना जाता है उससे स्वर में मुखरता है। प्रणाम नाम से ही प्रगट है कि इस काव्य का स्वर भिन्न है। इसमें प्रणति है और नमन है। फिर भी भाव का एक ऊर्ध्वारोहण है। मेरा मानना है कि इन कविताओं की भव्यता चिरकालिक रह सकेगी। श्री सेठिया मुखर नहीं हैं और मौन के निकट रहते हैं। यही योग्य है और मेरा उन्हें बधाई है।

जनेंद्र कुमार

प्रिय मठियाजी

फिराजाबाद
दिनाक २२ ६ ७०

वन्दे।

प्रणाम मुझे यथा समय मिल गई थी पर म उसे पन्ने उलट कर यत्र तत्र हा देख सका हूँ। मेरा स्वास्थ ठीक नहा—पौरुष ग्रथि के आपरेशन के बाद विश्राम नहीं मिला!—और ७८ वाँ वष समाप्त हाने का है। लिख पढ नहीं सकता। रिटायर हो चुका हूँ।

प्रणाम की उच्च आध्यात्मिक भावनाओ स मैं प्रभावित हुआ हू यद्यपि उस दिशा म मेरी गति बहुत कम है।

स्वस्थ हाने पर एक बार फिर आपके ग्रन्थ का पढूगा।

विनीत
बनारसीदास चतुर्वेदी

बनारसीदास चतुर्वेदी
पत्रकार

फिराजाबाद
दिनाक २६ ६ ७०

प्रिय श्री मठियाजी

वन्दे। जसा कि मैं पिछले पत्र म निवेदन कर चुका हू म ज्यादा लिख पढ नही पाता। एक आँख से हा कुछ पढ सकता हूँ—दूसरा स जा बनी हुई है काम नही करता। फिर भी प्रणाम का मने सरसरी निगाह स देख लिया है।

३७ वा कविता मेरा है सम्बध सभी स' मुझे बहुत पसन्द आई। उसम एक सन्देश अन्तर्निहित है। यदि हमलाग तदनुसार जीवन बिता सकें।

द्वितीय कविता भी बडा मार्मिक है। गहन वेदना परम प्रेरणा की पावन महतागी पक्ति सार गभित है।

कहा कहा उक्तियाँ बडी प्रभावोत्पादक बन पडी हैं यथा--

आघातो के बिना कभी क्या
जीवन एक कला बन पाता ?

'पनघट तक आकर भी गागर रीती लौट रही है' यह कविता भी भावपूर्ण है-- पुन चाक चढ चौरासी के चक्कर गाह यही है क्या बात आपने कही है। बधाई है।

'मुझे नही पर किसी थकित को मजिल का आश्वासन दे दो, भी बढिया चीज है यदि आप मेरे मित्र श्रीयुत श्यामसुन्दर खत्री 3E Nandy Street Ballygunge, Calcutta 24 को उस ग्रन्थ की प्रति रजिस्ट्री द्वारा भेज सकें तो इस पर कुछ अधिकार पूर्वक लिख सकते हैं क्यो कि वे स्वय अच्छे कवि भी हैं।

अपनी एक ट्रैक्ट नीलकठ गार्की बुक पोस्ट द्वारा भेजता हू। कृपया उसे पढ लीजिए।

ब्रज मडल के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता बाबू वृन्दावन दास अग्रवाल, B A L L B अध्यक्ष ब्रज साहित्य मडल, मथुरा को आप अपनी राजस्थानी रचनाए भेज सकते है। ब्रज भारती म किसी से आलोचना करा सकते है।

म तो retire हो चुका हूँ। ७६ वाँ वर्ष शीघ्र शुरू कर रहा हूँ।

विनीत
बनारसीदास चतुर्वेदी

सत्यदेव विद्यालंकार
पत्रकार

४० ए हनुमान रोड
नई दिल्ली
दिनांक २ ७ ५७

प्रिय भाई सेठियाजी

आपके २ जुलाई के स्नेहपत्र और संस्मरणों के लिए आभारी हूँ। आपने मेरे सम्बन्ध में जो विचार प्रगट किया है वह कई अन्य मित्र भी प्रगट कर चुके है, मैं आँखों की दृष्टि के क्षीण पड जाने से सर्वथा असहाय सा हो गया हूँ। आर्थिक दृष्टि से और भी अधिक असहाय हूँ। इसलिए अपने को समेट कर बैठ गया हूँ। आप सरीखे कुछ मित्र ऐसा विचार कई बार प्रगट करते रहते हैं। नवभारत टाइम्स १० दरियागंज दिल्ली के सम्पादक श्री अक्षय कुमार जी जैन को पत्र लिख कर आप उनको कहिए कि इस सम्बन्ध में वे क्या करना चाहते है। वे इसके लिए तैयार है। एक अच्छे पत्रकार का सहयोग मिल जाना चाहिए। आपका कार्य बहुत सुगम हो जायगा। उनका पत्र आने पर मुझे लिखिए। फिर मैं आपको कुछ अधिक बता सकूँगा। आचार्य श्री तुलसीजी का चातुर्मास सुजानगढ में हो रहा है। मुझे सम्भवतः सुजानगढ आना पडे तो मैं आपसे कुछ व्यक्तिगत चर्चा भी कर सकूँगा। अक्षयजी के पत्र का मुझे पता दीजिए। फिर मैं आपको विस्तृत पत्र दूंगा।

अत्यन्त स्नेह सहित

आपका भाई
सत्यदेव विद्यालंकार

गगाशरण सिंह, डी लिट
सासद

७५ जवाहरलाल नेहरू मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
दिनाक १३ ५ ७७

प्रिय कन्हैयालालजी

निबन्ध की प्रति मिली। उसे पूरा पढ गया। कई अशो को कई बार पढा। यह बराबर पढने की चीज है। इसमे मौलिकता हृदयग्राहिता है और आपकी अन्य रचनाओ की तरह अथ अमित अरु आखर थोडे ता है ही। आप की रचनाए हृदय और मस्तिष्क दोनो को आप्यायित करने वाली है। आज जब लगता है कि कविता का युग समाप्त हो गया है आपकी रचना से आशा बधती है।

मा शारदा का वरद हस्त आप पर इसी प्रकार बना रहे जिससे हम लोग आप्यायित होते रहें।

विनीत
गगाशरण सिंह

गगाशरण सिंह
ससद सदस्य

४१ वेस्टन कोट,
नई दिल्ली १

प्रिय कन्हैयालालजी

आपका पत्र जब यहा पहुचा म अस्पताल म था। एक टक्सी ने पीछे से आकर टक्कर मार दिया था। म गिर गया। टैक्सी का अगला बाया पहिया मेरी दाहिनी जाघ पर चढ गया। मेरी आखें मुद गई। लोगो ने मुझे उठाया। हड्डी तो नही टूटी लेकिन मासपेशी झिल्ली और ततु बुरी तरह कुचल गये। मैं एक महीना अस्पताल म रहकर अब अच्छा हू। अभी पट्टी बाधनी पडती है। चलने म छडी का सहारा लेना पडता है। अब चिता की कोई बात नही है। डाक्टर कहते हैं डेढ दो महीने म बिलकुल ठीक हो जाउगा। विलम्ब के लिए खेद है।

'मम' पर सम्मति भेज रहा हू।

विनीत
गगाशरण सिंह

भगवद्दत्त 'शिशु'

फोन २२२२८६
एफ १३ २, माडल टाउन
दिल्ली ६

दिनाक ११ १० ७३

भाई श्री सेठियाजी

सप्रेम नमस्कार।

'प्रणाम' के बाद नई कृति मम पू पडितजी के नाम भेजी मिला और मैंने भी पढी।

पहले देखकर लगा कि छोटे छन्दो ने अधिक जगह खराब की है। किन्तु पढने पर लगा कि जगह छोटे छदो को थोडी है।

वर्षों के मनन के पश्चात जो ये छोटे छोटे छन्द प्रकाश म आये है वे आख बन्द करके सोचने को बाध्य करते हैं। व्यग्य भी कई बडे सुन्दर है। जैसे 'शहर, शुगर कोटेड जहर'।

'जो है शून्य वह मूधन्य काठ बन गया नाव।
नीचे की पक्तिया कितनी मम भरी ह
प्राणहीन पादप से लिपट गई लता
अतीत से कितनी आगत की ममता।

और पिछले ताजमहल को दो पक्तियो म अच्छा बाध दिया

आज के साथ गत कल—
यमुना पर ताजमहल।

कितना अच्छा है। बन्द कपाट खुला, बाहर भीतर म मिला इस पर तो सचमुच और भी अधिक लिखा जा सकता है क्योकि पुस्तक की एक एक पक्ति मालूम पडता है कि अनुभव और मनन के पश्चात लिखी गई है इसके लिए मेरा आपको बधाई।

आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

विनीत
भगवद्दत्त शिशु

गुलाब खंडेलवाल
कवि

फोन ७६ (कार्यालय)
चौक गया
दिनांक २ ७ ७१

आदरणीय सेठियाजी

आपका पत्र मिला। मेरी पुस्तक का प्रकाशन हो इसलिये हुआ कि आप जैसे सहृदय बंधुओं के पास मेरा लिखा पहुंच जाय। बाकी तो यहाँ साहब मूक सुसाहब अंध सभा बहरी वाली बात है।

आपने प्रणाम के संबंध में कुछ लिखने को लिखा है। मैं जब भी उस पुस्तक को निकालता हूं तो तीन चार दिनों में पूरा पढ़ कर फिर अपने सिरहाने के रैक में सजा देता हूं। ऐसा अनेक बार हो चुका है और सदा होता रहेगा क्योंकि उस का रस विशुद्ध साहित्य का रस है। शांत रस की इससे अच्छी रचना मेरे देखने में नहीं आई। दार्शनिक शब्दों में आपने काव्यात्मक उर्जा भर दी है। गीता में चिंतन और चिंतन में स्वानुभूति यह "प्रणाम" की विशिष्टता है। मेरा साहित्य प्रेरणापेक्षी है आप का साहित्य साधना से उद्बुद्ध। भिन्न भिन्न सरणियों से हम लोग एक ही मन्दिर की परिक्रमा लगा रहे हैं।

"प्रणाम" की दूसरी विशिष्टता मुझे यह लगती है कि विमुक्ति के जिन क्षणों को आपने भोगा है आपकी वाणी ने उनको सहज और सरस अभिव्यक्ति दी है। इस प्रकार अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों का समान उत्कर्ष "प्रणाम" के गीतों में मिलता है।

मैं समझता हूँ यह अब तक की आपकी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ है तथा आपकी प्रतिनिधि रचना कही जायगी।

विशेष क्या लिखूं। यह मेरी हार्दिक भावना है जो मैंने यहाँ व्यक्त की है। आपकी रचनायें पढ़ कर मेरी अकेलेपन की भावना दूर हो जाती है।

आशा है सानंद होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। नारायणजी, वियोगीजी तथा सभी बंधुओं से आप का सदेश कह दूंगा। मां भी आपकी चर्चा होती रहती है।

भवदीय
गुलाब

श्री विष्णुकान्त शास्त्री
प्राध्यापक कलकत्ता विश्वविद्यालय

२८०, चितरंजन एवेन्यू
कलकत्ता ६
दिनांक १५ ८ ७०

आदरणीय सेठियाजी

खुली खिड़कियाँ चौड़े रास्ते तथा प्रणाम के लिए मैं सचमुच आपको बधाइयाँ देना चाहता हूँ। तुमुल साहित्यिक कलह के कोलाहल में श्रद्धा की ऐसी सहज अभिव्यक्ति, ऐसी नपी तुली भाषा ऐसी तन्मयता यह तो आश्चर्य की बात है। 'प्रणाम' के गीतों में सहज समर्पण का स्वर है जो गंभीर चिन्तन का सुफल है। अनुकरण का मोह त्याग कर अपनी पारम्परिक थाती को सम्बल बनाने वाले ये गीत मुझे बहुत अच्छे लगे।

खुली खिड़कियाँ गलियों की भी स्वागत योग्य है क्योंकि वे प्रकाश और वायु को भीतर ले आती है यदि चौड़े रास्ते की हो तो फिर कहना ही क्या। धूल के डर से खिड़कियाँ बन्द रखना आत्मघात की ओर बढ़ाया हुआ कदम है। आपका साहस 'जब दो क्वारे रास्ते' और 'तन्वंगी रचाओ' के शापक कविताओं से स्पष्ट है। सड़ा गला हो खाद बन कर गुलाब का खिलना सुगम कर देता है सही किन्तु वह अपने में इष्ट नहीं है इष्ट गुलाब ही है। सामाजिक मंगल और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक कमल ही इष्ट है। भले ही उसके लिए सैकड़ों जीवनों को खाद बनना पड़े।

आशा है आप सानन्द होंगे।

शुभैषी
विष्णुकान्त शास्त्री

रामकिशोर व्यास
राजनेता

जयपुर
दिनांक १४ फरवरी ७७

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपकी नई उर्दू कृति ताजमहल मैंने शुरू से अंत तक देखी। पुस्तक का गेट अप और छपाई बहुत ही सुन्दर है और उसके अन्दर सजी हुई छोटी छोटी रचनायें ताजमहल में जडे हुए नगीनों के समान नजर आती हैं। जिस तखय्युल ने इन रचनाओं को जन्म दिया वह न यह कि रिवायती शायरी से हट कर एक अनोखा अनुभव है बल्कि आपके ख्यालात में संगे मरमर की तरह लताफत और पाकीजगी दिखाई देती है।

आपकी यह कृति वास्तव में अत्यन्त सराहनीय है। वसे आपकी हिन्दी में कई कृतियां बडी प्रशंसनीय रही हैं जिनमें में किसी एक पर आपको पुरस्कृत भी किया गया है। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में आपका योगदान महत्वपूर्ण और सामयिक होने से साहित्यकारों की श्रेणी में आप विशेष महत्व अर्जित कर चुके हैं किन्तु उर्दू साहित्य में भी आपका यह प्रयास अनूठा है। इसके लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

आशा है आपका उर्दू साहित्य की ओर यह झुकाव उर्दू साहित्य की रचना में हिन्दी साहित्यकारों की भांति आपको विशेष स्थान प्राप्त कराने में सहायक सिद्ध होगा।

आपका
रामकिशोर व्यास

वियोगी हरि
माहित्यकार

एफ २३।२ माडल टाउन
दिल्ली ९
दिनाक २७ ११ ७०

प्रिय कन्हैयालालजी

मस्नेह नमस्कार।

आपकी कविताआ का सग्रह प्रणाम मिला। कुछ कविताए दखी और मुझे वे बहुत पस द आई हैं। आपकी रचनाआ का तो मैं स्वभावत प्रशसक रहा हू। आप बहुत अच्छा लिखते है स्वत प्ररणा के बल पर। किसी किमी पक्ति म ता कागज पर कलजा निकालकर रख दते है। भावा म आकषण रहता है और भापा म प्राजलता और सहज प्रवाह। प्रणाम यह नाम आपने बहुत अच्छा साचा है। मरी बधाई।

सस्नेह
वियागी हरि

वियोगी हरि
माहित्यकार

फान २२२२८६
एफ १३/२ मा न टाउन
दिल्ली ११०००९
दिनाक २५ अक्टूबर ७६

प्रिय भाई कन्हैयालाल,

सस्नेह नमस्कार। कोई एक सप्ताह हुआ जब श्री रणजीत वास्टिया तुम्हारी हाल की कृति 'निग्रन्थ' मुझे दे गये थे। मैं उसे पूरा तो नहीं देख पाया पर उसकी कई सूत्र मणियाँ देखी जो रोचक तथा बोधक प्रतीत हुई।

तुम्हारी दो रचनाएं और भी मेरे पास बहुत दिनो से रखी हुई थी उन्हें मैं अभी देख पाया, तीनो पर अत्यन्त सक्षिप्त सम्मतियाँ अलग से लिखकर इस पत्र के साथ भेज रहा हू।

आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

तुम्हारा
वियोगी हरि

मम !

साहित्य की आधुनिक विधाओ से खास परिचित न होते हुये भी मैं मुक्त कठ से कहता हूँ कि मम ने वास्तव में मर्म-स्पर्श कर दिखाया है। इसका प्रत्येक सूत्र नि सन्देह सूक्त का पर्याय बन गया है और वह गहरे में पठने को नि सन्देह प्रेरित कर देता है यदि चिन्तन में से अनमोल रत्न निकालने की मन में लालसा हो। मेरी बधाई।

वियोगी हरि

अनाम !

मठियाजी की इस कृति ने चमत्कृत कर दिया। कई सूक्तियां संकेत करती है उसकी ओर, जिसका कोई नाम नहीं रूप की तो बात ही क्या। फिर भी वे लौटा ले जाती है ऐसे नाम के तल में पैठ जाने को, जिसे बार-बार याद रखने की कोई आवश्यकता नहीं। 'अनाम' का जप कराने को वे हठात विवश कर देती है। 'अनाम' पर ये कतिपय पंक्तियां वह लिख रहा है, जिसका साहित्य की आधुनिकतम विधाओं से शायद दूर का भी नाता नहीं है।

वियोगी हरि

निग्रन्थ !

श्री कन्हैयालाल सेठिया की यह नवीन काव्यकृति जब मैंने देखी तो उसकी कई सूत्र सूक्तियों ने मन को सहज ही आकृष्ट कर लिया। चिन्तन प्रधान यह रचना सेठियाजी की पूर्व रचनाओं से भी अधिक सुन्दर हैं। निग्रन्थ रूपी धागे में ऐसे अनेक पुष्प गूंथ दिये गये है जिनकी सुवास दूर-दूर तक फैलेगी और काव्य मधुकरों को जो सात्विक पराग सदा प्रदान करते रहेंगे। निग्रन्थ में वह सामर्थ्य पाता हूँ, जिससे ग्रन्थि की गांठ अनायास खुल जा सकती है।

वियोगी हरि

गोपीकृष्ण गोपेश
साहित्यकार

५६ ए जीरो राड
इलाहाबाद
दिनाक १८ फरवरी १९६९

आदरणाय भाई

आप का १३ फरवरी का पत्र मिला आभार।

आप का बेजाड का य सग्रह मुझे यथासमय मिल गया था और उसकी पहुच का पत्र भी मने तत्काल लिख दिया था। आश्चय है कि वह आप का नहीं मिला। इस प्रकार के पत्र तो मैं उसी दिन सिद्धान्तत लिख देता हू।

बच्चनजी ने उस दिन कृपा कर आप की जो कविताये अपने श्री मुख से सुनाई थे मैंने सग्रह म दोबारा पढी। अय रचनायें भी गुना। विचित्र शक्ति है आप म चाट खाने की और चोट के रिटाट को काव्य बनाकर प्रस्तुत करने का। आप का दद सजन करता है और सौदय के मूल्यो के पानी को कहीं स उतरने नही दता। यह विलक्षण कौशल का काय है। आश्चय है कि आप की रचनाओ की अपक्षित चर्चा हो नही रही है। उनका नई कविता के अन्तगत आन वाली कतियो के बीच अपना महत्वपूण स्थान है।

म स्वय विस्तार म उस सग्रह पर कुछ लिखना चाहता हू। परन्तु विडम्बना ये है कि मेरे एक मित्र ने वह सग्रह लिया ता ले ही लिया यानी अभी तक दिया नहीं। पर चिन्ता की कोई बात नही है वह मैं उनम प्राप्त करूगा। उस प्रति म मेर निशान है और उन निशानो का मेरे लिए बहुत बडा महत्व है। किसी दूसरी प्रति म दोबारा उतना काम हो पाना अब समय साध्य नहा है। देर-सवेर प्रति ता मेरे हाथ आ ही जायेगी।

आशा है आप स्वस्थ और सानन्द है। कभी-कभी अपन समाचार देते और लिखते रहें कि इधर आप क्या कुछ सिरज रहे है।

विशष कृपा

आपका
गोपीकृष्ण गोपेश

लक्ष्मीचन्द्र जैन
साहित्यकार

फोन ४२६६४
तार JNANPITH
बी/४५ ४७ कनाट प्लेस
नई दिल्ली ११०००१

दिनांक ४ नवम्बर ७६

महोदय

निर्ग्रन्थ पुस्तक की प्रति मिली, साथ में ६ अक्तूबर का पत्र भी। श्री मठियानी के अद्भुत साहित्यिक कृतित्व से मैं परिचित हूँ। उनसे मेरा पत्र-व्यवहार भी हुआ है। वाणी और अर्थ के जिस तादात्म्य की कामना वाग्देवी के वरद-पुत्रों के लिए कालिदास ने की उसकी प्रतिपत्ति मठियानी की कविताओं में मुखरित है। उनकी काव्यशाला का यह चमत्कार है कि मार्मिक उक्तियों और चिंतन की विविध आयामी-अन्विति सहज रूप से कलात्मक अभिव्यक्ति पाती है यद्यपि कभी-कभी भ्रम होता है कि इस प्रकार के चमत्कार की सहगामी प्रतिगामी उक्तियों का समन्वय सायास ही साध्य है। किन्तु प्रायः ऐसा होता है कि कवि जब अपने शब्दों शिल्प को पा जाता है या वह उसे सिद्ध कर लेता है तो उसका प्रतिभासन चमत्कार विशिष्ट हो उठता है।

'निर्ग्रन्थ' इन्हीं विशेषताओं का प्रतिबिम्ब है। अन्य अनेक साहित्यकारों समीक्षकों और कवि बन्धुओं ने जो पुष्पांजलियाँ मठियानी के कृतित्व को समर्पित की हैं उनमें एक फुल्ल-कुसुम मेरी भावनाओं का भी कृपया जोड़ लें।

शुभ-कामनाओं सहित

आपका
लक्ष्मीचन्द्र जैन

लक्ष्मीचन्द्र जैन
साहित्यकार

१८ इन्स्टीट्यूशनल एरिया
लोदी रोड
नई दिल्ली ११०००१
फोन ६६८४१७
दिनांक ३० मई १९८८

परम माननीय श्री सेठियाजी

भारतीय ज्ञानपीठ को इस बात का गौरव है कि मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार आपको समर्पित हुआ। समारोह अनेक अर्थों में विशिष्ट और भव्य था। आपके भाषण से श्रोता बहुत प्रभावित थे। आपका कृतित्व विश्व साहित्य में रेखांकित होना चाहिये। भारतीय साहित्य तो सदा कृतज्ञ रहेगा ही। आपने भारतीय ज्ञानपीठ को स्वागत सत्कार का विशेष अवसर ही नहीं दिया। आशा है हमारी त्रुटियों के लिए हम क्षमा करेंगे। समारोह के फोटोग्राफ्स (पूरे) और वार्निया रूप भी अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। वीडियो प्राप्त होते ही आपके पास जल्दी भेजना है आपका यह आदेश मेरे ध्यान में है। खेद है कि जिस दिन आप प्रस्थान कर रहे थे उस दिन मैं समय पर स्टेशन नहीं पहुंच सका। रास्ते में ट्रैफिक जाम था। पछताता रह गया। प्रणाम स्वीकार करें।

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ-सानन्द हैं। योग्य सेवा से सूचित करें।

आपका
लक्ष्मीचन्द्र जैन

डॉ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

३० लादी एसटेट
नई दिल्ली ११०००३
दिनाक २३ ५ ७६

आदरणीय श्री सेठिया साहिब

आपका कृपापत्र मिला। अत्यत आभारी हूँ। आप इतना आत्मीयता से स्मरण करते है उसके लिए किन शब्दो म धन्यवाद दू ?

ताजमहल और निग्रन्थ दोनो पुस्तकें मुझे मिली।

ताजमहल म कलात्मक भाषा और शैली की तराश के साथ मुझे सवेदना की अन्तरग स्रोतस्विनी मिली मार्मिक अनुभूति और अभिव्यक्ति का यह काव्य आधुनिक हिंदी की उपलब्धि माना जाएगा।

निग्रन्थ' में आपने चिन्तन का एक नया आयाम दिया है। 'मौन के बीहड म अनुभूति की यात्रा द्वारा आपने सत्य के दर्शन को एव दर्शन के सत्य को उजागर किया है। 'निग्रन्थ म एक महामानव की प्रशस्ति ही नही बल्कि मनुष्य का विचार सस्कृति के सुविशाल क्षितिज की प्रतीति है।

आपको बारम्बार बधाई "ताजमहल तथा निग्रन्थ का अभिनदन।

आपका
लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

डॉ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

'कमनालय
वी ८ साउथ एक्सटेंशन
भाग ११
नई दिल्ली ११००४
दिनांक १३ १ १९

आदरणीय सेठिया साहिब

आपका कृपापत्र दिनांक २६ १२ १९८३ मिल गया था। मधुमती का विशेषांक भी मिल गया है। विशेषांक एक संग्रहणीय उपलब्धि है। आपके कृतित्व के कई प्रसंग परिप्रेक्ष्य है काव्य और दर्शन के अनेकांत की बहुविध मुद्राओं व्यंजनाओं और भंगिमाओं की छवि में साहित्य और जीवन की अनुकम्पा के परम क्षण हैं मधु का अनवरत क्षरण है। यह विशेषांक उस वैविध्य का एक एलबम है। श्री प्रकाश आतुर का निष्ठापूर्ण प्रयास वस्तुत अभिनंदनीय है।

नए वर्ष के लिए मेरी और कमलाजी का साभिवादन शुभकामनाएं।

२१ जनवरी को कलकत्ता में आपके दर्शन होंगे। तब आपको सुनने का शुभसंयोग भी प्राप्त होगा।

आचार्य हजारी प्रसाद स्मृति न्यास के साथ कलकत्ता पूरी तरह से जुड़े यह मेरी हार्दिक इच्छा है। इस उपलक्ष्य में भी कुछ विचार करें कुछ दिशा दें।

२२ जनवरी को सायं फोर्ट विलियम में मेरी भतीजी की शादी में आपकी सपरिवार उपस्थिति प्रार्थनीय है। अवश्य पधारें।

यथासदैव
लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

भवरमल सिंघी
साहित्यकार शिक्षाविद

११६ चित्तरंजन एवेन्यू
कलकत्ता
दिनांक ३१ १२ ४७

प्रिय भाई कन्हैयालालजी,

सस्नेह मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी आपसे रूबरू मिलना हुआ हो। पर आपकी कविताओं के जरिये मैं आपके नाम से परिचित हूं। आपकी कविताओं के प्रति एक खास आकर्षण रहा है। तरुण जन के नवम्बर के अंक में आपकी 'गृहयुद्ध' शीर्षक जो कविता छपी है उसके लिये मैं किन शब्दों में आपको बधाई दूं? उसे मैंने कई बार पढ़ा है—दूसरे मित्रों को पढ़ाया है। बड़े गहरे भाव हैं—और प्राणों की झंकार है। तरुण जन आपकी कविताओं का हर वक्त स्वागत करेगा। और आशा है आप उसके लिये लिखते रहेंगे।

मैं आपसे मिलना चाहता, हूँ इस बार आप जब कलकत्ता आयें तो आशा है अवश्य मिलना होगा। मैंने सुना कि आप का स्वास्थ्य खूब ठीक नहीं चल रहा है। आशा है अब आप पूर्णतः स्वस्थ और सानन्द होंगे। अपने कुशल समाचार से सूचित कीजियेगा।

फिर एक बार बधाई!

आपका
भंवरमल सिंघी

सीताराम सेकसरिया
समाज सेवक

फोन ४४५०२१
१६ लार्ड सिन्हा रोड
कलकत्ता १६
दिनांक २२ १ ७४

प्रिय भाई सेठियाजी

सादर प्रणाम।

आपका १६ जनवरी का पत्र कल शाम को मिला आपसे मिलने और बात करने की बहुत इच्छा रहती है यदि आपके पास फोन रहता तो बातें हो सकती थी आज की स्थिति में किसी भी चीज को प्राप्त करना बडा मुश्किल हो गया है इस लिए जो है उससे सतोष मानकर चलना पडेगा।

आपने श्री राधाकृष्णजी के बारे में लिखा इससे दुख हुआ। वास्तव में हमारे देश में साहित्यकार की स्थिति निहायत सोचनीय रहती है इस विषय में अनेक वर्षों से मैं यत्किंचित प्रयत्न करता रहा हू। भारतीय सस्कृति ससद में एक फड स्थापित किया था आज से ६ ७ वष पहले। अनुभव यह हुआ कि साहित्यकार अपना आवश्यकताए सहज ही किसी के सामने प्रकट नही करता इसलिए उस फड का बहुत अच्छा उपयोग नहा हो सका। तब भी उसके द्वारा सहायता करके प्राय मने उसे खतम करवा दिया है। मैं भी नहीं चाहता कि साहित्यकार अपनी हीनता किसी के सामने प्रकट करे। साहित्यकार की सच्ची सेवा उसके लेखन का प्रचार और समाज उसको स्वीकार करे यही हो सकती है। इससे साहित्यकार का सम्मान और आर्थिक स्वालम्बन सभव होगा। पहले की अपेक्षा स्थिति सुधरी है पर आज भी अनेक साहित्यकार कष्ट और दुख का जीवन बिता रहे हैं।

श्री राधाकृष्णजी के विषय में मुझे जानकारी थी और मेरा उनसे परिचय भी था। कलकत्ता ठलुवा-क्लब की मीटिंग में श्री भगवतीचरण वर्मा और श्री अमृतलाल नागर का अभिनन्दन किया था। राधाकृष्ण का अभिनन्दन ठलुवा-क्लब की तरफ से पहले हो चुका था। राधाकृष्ण जी की साहित्य की सेवा के सबध में जानकारी होने पर भी आपके पत्र से और अधिक जानकारी मिली।

आपसे बातचीत हो सकती तो इस विषय पर और अधिक विचार कर सकते थे जो भी हो आप कहें जैसा किया जा सकता है। आप जितनी आवश्यकता समझते हैं वह मुझे लिखें। वह मासिक या एक मुश्त कैसे की जाए इस विषय म जो आप सोचें वैसे किया जा सकेगा। जल्दी स जल्दी इसे करना है। राधाकृष्णजी की स्थिति स दुख हुआ पर शायद यह स्थिति अनेको की होगी जिसे हम आप नही जानते होगे।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरी तबियत परसो काफी खराब हो गई थी अब ठीक है।

स्वय पत्र हाथ म नहा लिख सका इस के लिये क्षमा चाहता हूँ।

विनीत
सीताराम सेकसरिया

भागीरथ कानोडिया
लोकसेवक

फोन २२६२०१
इन्डिया एक्सचेंज
तामरा फ्लोर
कलकत्ता १
दिनांक १० ५ १९७५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आशा है आप सकुशल पहुचे होगे।

आपकी भेजी हुई अनाम नाम की कविता सग्रह पुस्तक पढी। दरअसल आप कविता नही लिखते बल्कि कविता के नाम पर अध्यात्म लिखते हैं। सूरदासजी को एक बार किसी ने पूछा था कि आप म और तुलसीदासजी म कवि बडा कौन है ? इसके उत्तर म सूरदासजी ने कहा था—कवि ता मैं हूँ तुलसीदासजी कवि थोडे ही है वे तो मन्त्रकार हैं मन्त्र लिखते है। तुलसीदासजी के प्रति कही गई यह उक्ति आप पर पूरी पूरी लागू होता है।

मारवाडी समाज मुख्यत व्यापारी समाज है। मेरा मतलब वह मारवाडी समाज जिससे अपने लोगो का ताल्लुक आता है। इस समाज के लोग पैसे के पीछे इतने पागल हुए फिरते है कि इनम अधिकाश का आज न तो ज्ञान की पहचान है और न मानवता की न वे यह करना ही चाहते हैं। आप जैसे आदमी की परख करने म अभी बहुत समय लगेगा ऐसा लगता है।

आपका
भागीरथ कानोडिया

भागीरथ कानोडिया
समाजसेवी

फोन २२६२०१ ०३
इण्डिया एक्सचेंज तीसरा फ्लोर
कलकत्ता १
दिनांक २८ १० १९७६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

दीपावली की राम राम-नमस्कार तथा मंगल कामनायें।

आशा है आपके स्वास्थ्य में क्रमशः सुधार हो रहा होगा। मकान आने लायक कब तक हो जायेंगे, लिखना। आपकी याद बराबर आती रहती है लेकिन सीढ़ी चढ़ना अनुकूल नहीं होने के कारण आ नहीं पाता।

आपके द्वारा भेजी हुई पुस्तक निग्रन्थ एक बार तो पूरी पढ़ गया हूँ। एक दो दिन में दूसरी बार फिर पढ़ूँगा। ऐसी पुस्तकों की उपादेयता स्वयंसिद्ध है। यह काव्य-पुस्तक तो पूरा-पूरा अध्यात्म ग्रंथ है। आपकी अब तक की रचनाओं में जो कि एक-से एक अच्छी कही जा सकती है, यह सर्वश्रेष्ठ है।

साहित्य द्वारा आपने जो समाज की सेवा की है उसका सही मूल्यांकन समाज ने नहीं किया है क्योंकि हमारा समाज मूलतः व्यापार प्रधान तथा अर्थ प्रधान है। लेकिन एक समय अवश्य ऐसा आयेगा कि लोग आपके नाम को याद करेंगे।

आपका
भागीरथ कानोडिया

रामेश्वर टाटिया
समद सदस्य

फान ४४६३८
१२ डी फिराजशाह राड
नई दिल्ली १
दिनाक २० ११ १९६२

भाई श्री सेठियाजी

आपकी पुस्तक मिली धन्यवाद। कुछ कवितायें ता बहुत ही सुन्दर और आजस्वी बन पडी है। मुझे नहा पता था कि उर्दू म भी आप इतनी अच्छी कविता कर लेते है। जसे –

उडाये अमन के कबूतर जवाहर
समय का तकाजा है बाज छाडा।

हम लागा म भी ऐसा ही धारणा बनती जा रही है और आप दखेगे कि जल्दा हा डर और लिहाज को छाड करके स्पष्ट मत व्यक्त करगे जसा कि मनन क स्तीफे के बारे म किया था। भारत पर बहुत ही बडा सकट आया है जनमानस को जागत करने क लिए आपकी ये कवितायें बडा काम करेंगी यदि आप लिख ता इनम स कुछ हिंदुस्तान धमयुग और नवभारत टाइम्स म भज दू। ऐसी कविताआ का देश के हर कोने म प्रचार हाना आवश्यक है। राष्ट्रकविजी न भी ऐसी ही एक कविता लिखी था उसकी भी एक प्रतिलिपि इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ और दिनकरजी ने भी कई कवितायें लिखी है वे नवभारत टाइम्स म छपी है आपने देखी हागी। २० दिसम्बर को फिर सशन शुरू हागी आप मुझे १०० किताब २० तारीख दिसम्बर का यहाँ भेज दीजिएगा बी पी स। आपके पिताजी को और सब लोगा के मेरा प्रणाम कहिएगा।

आपका
रामेश्वर टाटिया

रामनिवास ढढारिया
साहित्यकार

१६२ जमुनालाल बजाज स्ट्रीट
कलकत्ता ७
फोन ३३ ७४२६
दिनांक दिसम्बर १ १९६७

प्रिय भाई सठियाजी,

सप्रेम अभिवादन। तुम्हारा ता १७ ११-६७ का पत्र मिला।

यहा सभी स्वस्थ एव प्रसन्न ह। श्री शिवजी के अब एक्जिमा बिलकुल साफ हो गया है। कृष्णकुमार भी स्वस्थ है। कलकत्ते म हो रहे दगे फसादो के कारण पढाई तो उसकी अवश्य गड-बड हो ही रही है पर उपाय भी क्या है। श्री सुदर्शन दिसम्बर के प्रथम सप्ताहात म कलकत्ते आयेगा। राधा-उमा सब मजे म है। वहा सभी सकुशल एव स्वस्थ होगे। पूज्या माताजी को हम सबो का सादर प्रणाम निवेदित करें। भाभीजी को नमस्कार एव बच्चो को प्यार।

कलकत्ते की दिन दिन बदलती स्थिति के कारण मेरा राजस्थान की तरफ आने वाला कायक्रम स्थगित होता जा रहा है। मेरे काम के उलझाव के कारण मुझे घूमते रहना पडता है। विश्राम तो मुझे इस जीवन म शायद मिलने का नही। सामाजिक जीव होने के नाते इधर म कई शादी विवाहो पर भी जाना रहा है तथा माच तक और जाना पड सकता है। २५ फरवरी के विवाह म दिल्ली जाना हो सकता है। उस समय यदि योग हुआ तो कुछ दिनो के लिए तुम्हारे पास आने का प्रयत्न करूगा।

इस बार श्री बच्चनजी तुम्हारी पुस्तक खुली खिडकिया चौडे रास्ते की भूरि भूरि प्रशसा कर रहे थे। कई कविताओ को तो उन्होने कठस्थ कर लिया है। मने उन्हें पुस्तक पर कोई विवेचना या सम्मति लिखने के लिए कहा है।

तुम्हारे पास बठकर स्वाभाविक सुखानुभूति होती है शायद इसलिए कि हमरागो के उदगम का स्रोत एक ही है। सयोग म हमलोग दो भिन्न भिन्न जगहो म बिठा दिये गये है। भिन्न भिन्न कम क्षेत्र भी दे दिये गये हैं। फिर भी एकता की अतर्लहर की प्रतीति होती ही रहती है। सामने आने पर लहरें उर्ध्वमुखी हो जाती है। खैर,

तुम्हारा,
रामनिवास ढढारिया

रामनिवास ढढारिया
साहित्यकार

फोन ३४४७६२
४८ डी मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
कलकत्ता ७

जुलाई २४ १९६६

प्रिय भाई सेठियाजी

सप्रेम नमस्कार।

आशा है अब आप सुजानगढ पहुच गये हैं तथा सपरिवार सकुशल एव स्वस्थ हैं। दक्षिण यात्रा के मोहक विवरणा की प्रतीक्षा था। कवि की दृष्टि म जो दृश्य मूत होते है उनम प्रकति के रगा के अतिरिक्त उसक अपने हृदय की अनुभूति के रग भी होते हैं जिन्हें मर जसा पाठक आप जस कवि मित्र का लखनी म शब्द-बद्ध देखना सुनना चाहता है। जसा कि कन्याकुमारी के छोर पर पहुँचकर भारत माता के चरणा म प्रणाम की भावना आप में जागत हुई उसी तरह अन्य स्थाना के स्पश ने भी आपक हृदय म क्या-क्या प्रतिक्रियायें उत्पन्न की? यह जानने की मेरी स्वाभाविक अभिलापा है। कसे आपने सारी यात्रा मोटर स की? कहा-कहा ठहरे? किसी बालक का आदेश दे दें ताकि वह यात्रा का पूरा विवरण मुझे भेज दें।

मैं इन दिनो सर्दी एव इन्फ्लूयजा स पीडित हूँ। बडे भाई साहब तो आज डेढ महीने से शय्याग्रस्त हो चुक है एव शन शन उनके स्वस्थ म निरतर ह्रास ही हो रहा है। भविष्य बहुत आशापद नहीं है फिर भी किसी प्ररणा क वशीभूत ससार समुद्र म बहता जा रहा हूं। सचमुच यह विचित्र विडम्बना है कि खूब कमाकर भी सुखी नहीं हो पाया हूँ। इसलिए यह निष्कष तो सही है कि धन म सुख नहीं है पर साथ ही मरी कमिया को देखने-समझने का अवकाश ही कहा है? विडलाजी का एक लख मुझम सब अच्छे याद आता है इस सदभ म। यह कुछ कम घरा म ही होता है कि परिवार म एक नायक होता है और शष घर वाले उसके पीछे आख मूदकर चलते हैं बुर म भल म। इस एकनिष्ठता क कारण जगत की तरगा पर विजय पाना सुगम होता है पर वतमान की शिक्षा की कमिया के कारण अपनी डफली अपना राग वाला वातावरण चारो ओर व्याप्त है। लोग अपने म डेढ अक्ल समझते हैं और अपने चारो ओर के सब लोगा म आधी। और अपनी अक्ल पर जो अक्सर अपरिपक्व होती है लोग हठ अलग स करते है।

मैं तो भगवान की कृपा मानता हूँ कि उस पर यत्किंचित विश्वास है और यही विश्वास जगत के झंझावातों में से मुझे उबार ले जायगा यह भी भरोसा है इसलिए अधीर नहीं होता हूँ अन्यथा जो कुछ अपने चारों ओर गुजर रहा है वह अच्छा नहीं लगता है।

भावुक होने के नाते काजीजी "शहर के अन्देशे में दुबले" वाली बात भी घट रही है। देश की राजनीति में कोई दुर्घटना हुई तो अपने को खेद हिन्दुत्व के खिलाफ कोई घटनाचक्र चला तो हम गम हिन्दी का कहीं प्रतिरोध हुआ तो मैं दुखी। अब इसका क्या हो? प्रारंभ से ही स्वभाव दूसरे के दुख सुख में पड़ने का बन गया है आतिथ्य सत्कार भी अपने माध्यम से स्वजनों का हो यह इच्छा भी स्वाभाविक रहती है। आज के बदले युग में मनुष्य एकात्मवादी होता जा रहा है उसका 'स्व' बहुत ही संकुचित हो रहा है। इस परिवर्तन को जब अपने चारों ओर पनपते देखता हूँ तो क्षोभ होता है।

इसलिए हृदय में अवस्थित उपरामता, जो कभी-कभी उमड़ती है अपने को झकझोर जाती है। पर अभी तो शायद जगत के प्रवाह में बहना शेष है। मैं तो हाथ-पैर बांधे सा डूबता-उतराता जा रहा हूँ। कभी कोई खिवया आकर अपनी नौका में बैठाकर पार कर ही देगा। लक्ष्य निश्चित है लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित है सिर्फ काल का व्यवधान है जिसे सांसों के मिस पूरा करना ही है।

आपका
रामनिवास ढंढारिया

पुनश्च –

मेरे एक परम सुहृद बम्बई के श्री शिवकुमारजी भुवालका का अचानक गत सप्ताह यहां देहावसान हो गया है, वे अपने बड़े भाई साहब के दिवंगत होने पर क्रिया कर्म के लिये बम्बई से आये थे और १२ दिन तक उनके निमित्त का सारा कार्य पूरा किया १३ वें दिन स्वयं अचानक चले गये। इतने स्वस्थ थे कि देखते ही बनता था। बड़े ही आत्मीय एवं मिलनसार थे। जीवन की क्षण भंगुरता एवं चांद पर पैर रखने वाले मानव की असहाय अवस्था का इससे अधिक प्रामाणिक चित्र और क्या हो सकता है?

रामनिवास

रामनिवास ढढारिया
साहित्यकार

फोन ३४४७६२
४८ डा मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
कलकत्ता ७
दिनांक अप्रेल ४ १९७०

प्रिय भाई सेठियाजी

सप्रेम अभिवादन !

आपका २८ मार्च का तार मुझे दिल्ली से लौटनेपर १ अप्रेल को प्राप्त हुआ। वास्तव में मैं गत ६ मार्च से ही कलकत्ते से बाहर रहा हूं। अधिकतर समय ब्रज प्रदेश की विभिन्न पावन-स्थलियों में होली के मनभावन महोत्सव मनाने में बीता। २४ तारीख को वृन्दावन से दिल्ली लौटा एवं वहां ३१ मार्च तक रुका। वृन्दावन के फागुन उत्सव का निमंत्रण आपको भी भेजा था। लगता है आपको मिला नहीं। उसकी एक प्रति आपकी जानकारी के लिए फिर प्रेषित कर रहा हूं। ब्रज प्रदेश में ये कुछ दिन तो ऐसे बीते कि उनकी सुगंध से आज भी मन सुवासित है। वास्तव में यही मन करता रहा कि श्री गिरिराज परिसर की किसी एकान्त उपत्यका में या किसी सघन कुरमुटे के एक कोने में सदा के लिए अपने को सौंपकर यहां कहीं खो जाय। भैया ! आप रहते तो आप को भी यही अनुभूति होती। आप तो भारतीय दर्शन के अनोखे कवि ठहरे। बहुत संभव था वहां की फगनौटी मस्ती आपकी अंगुली पकड़कर आपको भी वहां ठहरने के लिए विवश कर लेती। इस कृष्ण के स्वरूप में कुछ ऐसा ही अद्भुत आकर्षण एवं आत्मीयता है कि कोई भी भावुक भक्त वहां ठिठक कर ठहर ही जाता है। आखिर अष्ट छाप के इन भक्त कवियों की वाणियों में भी वह छलिया रसिया कहां सिमट पाया। आज भी वह उतना ही नूतन और उतना ही अवर्णनीय है जितना कभी अपने बाल्यकाल में समकालीन इतिवृत लिखने वालों के समक्ष रहा होगा। उसके साथ होली खेलने की लालसा रोम रोम में भीजने की उत्कंठा स्वाभाविक लज्जा से उन्मुक्त हो उसके किंचित से संस्पर्श की अभिलाषा उसकी कनखियों की तिरछी डोरम बंध जाने की भावना उसकी वंशी के सुरों में खो जाने की उतावली के रस को तो भैया वे भाग्यवान ही समझ पा सकेंगे जिन्हें

वह अपनाना चाहता है। म ता कारी लकार पर भागता हा फिर रहा हू पर इतना अवश्य है कुछ अभूतपूव सुख की आन्तरिक अनुभति अवश्य हाती है जिसक आगे यह सब कुछ फीका फीका लगता है। व कुछ दिन जीवन म सदा याद आते रहेंगे। सग-साथ भी कुछ ऐसा हा था। भया! आप बहुत याद आये।

वल्कि आपक सुजानगढ म हाने की सूचना हाती ता म आपस एक दिन वहा आकर मिल ही जाता। बहुत दिन हा गये अपने का पास बैठे। सुना है आप इस बीच बहुत हा शारीरिक कष्ट भाग चुक है। दुबल तन की बासुरी क सुरा की महिमा का भूलकर आप इसके स्थूल की चिन्ता स स्वय सशक हा गये है एव घर वाला का भी आतकित कर चुके है। भया! मरी प्राथना है, आप इस म मुक्त हाइये। दखिये मैं भी हृदय का रागा करार दिया गया हूँ और किस स्वतन्त्र राग का मने अपना देह म शरण नही दी है फिर भी अपने प्यार की बाह का पकडे-निश्चित हा जीवन की सारी आपा धापी क बीच म सीना तान कर गुजर रहा हू। आपस ता मने प्रेरणा ग्रहण की है। फिर आप क्या राग म बद्ध स भिन्न भिन्न व्यथ का आशकाआ स अपने मन का बोध रहे है? क्या आपक पास अपना सासा का हिसाब है? क्या आपके पास थाडे ही समय पश्चात क्या हागा इसकी पक्की जानकारी का काई प्रामाणिक जरिया है? या क्या आप घटने वाली किसी हानी का टालने या सरकाने म समथ है? या क्या आप अपने को मुरझाये रखकर, किसी अन्य के मन की कली का जीवन की काई हलकी सी थपकी भी द पायेंगे? ता फिर क्या अपने को किनारे का सा वृक्ष समझे हुये नदी के प्रवाह की सहारशील आशका स उसकी लहरा का या उनक वेग को गिनने का अभिनय करते है। आप प्रभु क प्यार है, उस के सखा ह। जबतक जीयें, खूब डटकर जमकर जायें। आपके कमफल का यही भुगतान हाना है। कोई और जम अब थाडे ही लेना है। तुमने लागा को प्रकाश दिया है दिशा-बोध कराया है शाश्वत सत्य के दशन कराये है ब्रह्म का अनुभूति कराई है जाने का सकल्प प्रदान किया है और आज तुम्ही गुदडी म लिपटे अपने तन की डिबिया क लिए चिंतित हा? कुछ समझ म नहीं आता। कवि ता पदा ही हाता है मृत्यु जयी बनकर। वह ता लागा म प्राण फूकता है, मर हुआ का जिलाता है उसकी वाणी म अमृत और उसके सस्पश म सजीवनी हाती है, फिर भया! क्या अपने स्वरूप को भूले हुये हो? आओ! मेरे साथ कुछ दिन बम्बई या गाआ चलो। या फिर चलो कन्याकुमारी के छार के पार विवेकानन्द शिला पर। कुछ दिन साथ रहकर इसी जीवन म उस प्रकाश की अनुभूति करे

जिसके लिए प्राणी मात्र विकल है। मेरे भाव के अनुसार वह तुम्हें प्राप्त है। बस उसकी अपने साथ की स्थिति का बोध भर होना शायद शेष है।

मैं इसी २१ को बम्बई के लिए प्रस्थान कर रहा हूं और वहां शायद १० दिन तक रहूं। अपने समाचार दें।

भाभी को नमस्कार। चि. जयप्रकाश को प्यार--

आपका
रामनिवास ढंढारिया

मोहनलाल महतो वियोग
माहित्यकार

फोन २०३०४
विष्णुपद माग
गया
दिनाक १३ अगस्त १६८६

श्री कन्हैयालाल सठिया रचित प्रतिबिम्ब मैंने पढा। यह देखकर मुझे खुशी हुई की प्रतिबिम्ब जसी रचना भी लिखी जा सकती हैं। इसकी हर पंक्ति अपने आप म एक स्थान रखती है--

आख मूद कर रच सकते हो
अपने लिये अधेरा

तो हम अधेरे स निकल कर प्रकाश की ओर चलें जहा प्रतिबिम्ब अपने म प्रकाशवान सामने नजर आ रहा है।

पर न पलक म तेरे होगा
तिल भर बन्द सवेरा।

हम दिवा और होने वाले प्रकाश के सामने खडे है।

प्रतिबिम्ब स्वयम एक छाया है।

पतझर के हर नग तरु से
निकली साज बहारा की

सूरज की हर शाम भोर है
दीपक चाद सितारा की।

इसी तरह इस प्रतिबिम्ब म कई तरह के प्रतिबिम्ब हैं जिसे कवि ने आपके सामने प्रस्तुत किये हैं। म श्री सठिया की रचना के लिए बधाई देता हूँ --

मोहनलाल महतो 'वियोगी

राजेन्द्रशंकर भट्ट
परामर्शदाता

मुख्य मंत्री कार्यालय
जयपुर
राजस्थान
दिनांक २७ ६ १९८६

प्रिय श्री मठियाजी

जब आपसे मिलना होता है बहुत अच्छा लगता है और जब आपको सुनने को मिलता है बहुत प्रेरणा मिलती है। इस बार आपका निकट सानिध्य प्राप्त हुआ बहुत ही कृतज्ञ हू।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर जो आपने भाषण दिया उसमें कलकत्ता का हिन्दी के उन्नयन में योगदान बहुत अच्छी तरह प्रस्तुत हुआ है मैं इसे पूरा पढ गया हू।

उस दिन शाम को नाहटा जी के यहा कुछ ऐसा विचार विनिमय हुआ जिस म मुझे लगता है कि आपको जो कुछ मैंने कहा वह रुचिकर नहीं लगा होगा। इस का मुझे बाद में बहुत खेद रहा। वास्तव में बात यह है कि सही वही है जो आप कहते हैं। परन्तु जिस व्यवहारिकता और वास्तविकता का सामना करना पडता है उसे विवश होकर दूसरी पगडंडी पकडनी पडती है। इसीलिए आज के युग का सक्रांति काल कहा जाता है। इसमें आप जैसे उन व्यक्तियो का बहुत महत्व हो जाता है जो मूल की बातो को पकड कर उनके लिए अपना ओर से बात करने के लिए ही नहीं त्याग करने के लिए भी प्रस्तुत रहते है। मैं आपका बहुत आदर करता हूँ।

सस्नेह

आपका
राजेन्द्रशंकर भट्ट

मगल त्रिपाठी
साहित्यकार

१०-बी डॉ कार्तिक बास स्ट्रीट
कलकत्ता ७००००६
दिनाक १०-१२ ८७

आदरणीय सेठियाजी

सादर नमस्कार।

गत मगलवार का आपसे मिलकर अपार प्रसन्नता हुई है और ऐसा लगा है कि आपके रूप म मैंने एक आध्यात्मिक अभिभावक पा लिया है। आपका स्नेह जो मिला उस फिर फिर पाने के लिए मन लालायित रहेगा। श्रवण से दर्शन कई गुणा अधिक था। देह विदेह के अन्तर्मुख गायक का स्वगत गुजन विश्व जीवन का आत्म सगीत बने यही कामना है।

आपस मिलने क बाद ऐसा लगा कि गीता माता की साधना म म अकेला नही हू अब कोई मनीक्त और समादरणीय मार्गदर्शन मेरे साथ रहेगा। भगवत्ताय म व्यक्ति के माध्यम स प्रभु ही साथ देता है। म आपके स्नेह के प्रति आभारी हू।

स्वगत और देह विदेह की कविताओ ने मुझे औपनिषदिक ऋषि चिन्तन की गोद म दुलराया है और इस काव्य साधना के रेगिस्तानी युग म इन कविताओ क कवि क रूप म नखलिस्तान का दर्शन हुआ है। इन कविताओ ने मेरी हृदयवीणा के तारो को छू दिया है और इनकी प्रतिक्रिया भी काव्य के रूप म फूट पडी है। यद्यपि कविता की प्रति कविता नही होती किन्तु उसकी सतति होती है और मैं उसकी सम्भूति का अविति के भावात्मक सम्प्रेषण का सवरण हो आपके अवलोकनार्थ रखने की धृष्टता करूंगा। देह विदेह पर यह वार्तिका होगी एक मूर्धन्य कवि से उत्प्रेरित सामान्य जन की भावात्मक स्फुरणा। मुझे रवीन्द्र की कविताए वैदिक ऋचा लगती है और आपकी कविताए भी ऋचा लगती हैं। प्रसाद के पश्चात जिस गौरव से हिन्दी वचित थी उसे आपके रूप म वह प्राप्त हुआ है।

म रवीन्द्र नाथ को नोबुल-पुरस्कार स भी बडा मानता हू और ज्ञानपीठ का पुरस्कार भी आपको मनीषा को समर्पित होकर अपने प्रति ही उपकार करेगा।

आशा है, मैं अधिक कुछ आपके विषय म जान सकूगा क्योकि मेरा मन महामनीषी क जीवन दर्शन पर कुछ अकित करने के लिए व्यग्र हो रहा है। शेष पुस्तको द्वारा स्नेहार्पण क लिए आभार।

सादर

भवदीय,
मगल त्रिपाठी

स्वामी अगेह भारती
रजनीश शिष्य

जेड २१७/सी अपर टाइप
जबलपुर ४८२००१
दिनांक मार्च २७ १९७६

प्रिय श्री सेठियाजी

प्रेम।

आप चकित होंगे यह पत्र देखकर। स्वाभाविक है। मैं स्मरण दिलाता हूं। अगस्त ७० के आस पास मैंने आपकी पुस्तक प्रणाम भगवान श्री रजनीश के निवास पर (तब वे CCI Chambers Churchgate बम्बई में रहा करते थे) रखी थी। एक एक कविता भीतर पठती जाती था। जबलपुर आने पर अपने भाव आप को लिखकर प्रकट किये थे। तब आपने कृपा करके एक प्रति मेरे लिए भी भेजी थी। उस प्रति पर मेरा हस्ताक्षर दिनांक पांच अक्टूबर सत्तर का है।

भगवान श्री सी सी आई चम्बर्स से पेडर रोड आये वुडलैण्ड नामक बिल्डिंग में। फिर १९७४ की २१ मार्च को वे पूना आ गए। तब से वहीं हैं। श्री रजनीश आश्रम कोरे गाँव पार्क पूना (महाराष्ट्र) यह पता है।

मैं भुलक्कड़ इतना हो गया हूं कि यदि भगवान श्री के प्रवचन सुनकर निकल रहा होऊं और कोई गेट पर ही पूछे कि एक भी बात बता दूं कि क्या बोले तो असंभव है। पर २१ मार्च १९७६ को जब मैं पूना में था प्रातः प्रवचन में भगवान श्री ने जब अपने प्रवचन के दौरान एक कविता पढ़ी — आज श्याम के मरु मानस में इन्द्र धनुष उग आया—————————— तो जाने किस गहरे अचेतन से आपकी याद आई। शब्द तो कुछ याद न थे पर ऐसा लगा कि शब्दों के पीछे एक जो लय है वह तो रंगा उस 'प्रणाम' नामक पुस्तक की ही होनी चाहिए। ७० में पढ़ा था यह ७६ है। कितना रहस्यमय है सब ? हां तो मैं कल ही जबलपुर वापस आया। आपकी पुस्तक ढूंढी। पृष्ठ १२ पर वह कविता पाई। अपने पर आश्चर्य भी हुआ। काश, अपनी कविता आप स्वयं भगवान श्री के मुख श्री से सुन पाते। वहां कैसेट टेप रेकार्डर हो तो २१ मार्च के प्रवचन का आर्डर भेज सकते हैं आश्रम की सेक्रेटरी के नाम। एक कैसेट प्रवचन के साथ रु ४५/ में आती है। शायद २.७५ तक postage। उनके मुख से सुनना बात ही और है। नहीं तो नारद का भक्ति सूत्र भाग २ जब छपे तब बुलवायें तो मुझे संभावना है कि अवश्य ही भगवान श्री ने भक्ति सूत्र के अंत

प्रवचनो म भी आपकी कविताएँ पढी हागी। लगभग आठ माह से वे अचानक अपने प्रवचनो मे उर्दू शेरो शायरी, हिन्दी कविताएँ, इगलिश कविताएँ, इन सब का खूब उपयोग कर रहे हैं। एक कविता बच्चन की, नीरज की कई दिनकर की एक, निराला की बहुतेरी। मैं चार दिन ही रहा वहा। मुझे आशा है कि आपकी शायद ही कोई कविता बचे या बची हो। हो सकता है ढेर ले चुके हो। हो सकता अभी आपकी कविता पढ रहे हों।

आपके लिए यह साधारण बात हो सकती है। मैं उन्हें कृष्ण, बुद्ध महावीर व क्राइस्ट *की हैसियत का मानता हू। अब कहूँ तो थोडा ज्यादा ही। अत मैं* तो आपको भी धन्य मानता हूँ जिनकी कविताएँ भगवान श्री प्रवचनो मे उपयोग कर रहे हैं। बात स्मरण म आगई तो आपको सूचित करना अपना धर्म समझा। अत कर दिया। नहीं जानता, यह पत्र आप को मिला भी या नहा। आशा यही करता हूँ कि निश्चित ही मिला होगा। अन्यथा यह अब लीला क्या होती ?

आशा है स्वस्थ व प्रसन्न हैं।

भगवान श्री द्वारा पढे गए एकाध उर्दू शेर लिख द रहा हूँ आपके आस्वाद हेतु।

स्वामी अगेह भारती

(१) कुछ तेरी सूरत भी सादा और मासूम है
कुछ मेरा प्यार भी शामिल तेरी तस्वीर म।

(२) लबालब जाम साकी ने फिर वापस ले लिया मुझ से
न जाने क्या कहा मैंने, न जाने क्या हुआ मुझ से ?

(३) हम भी तसलीम की लत डालेंगे
बेनियाजी तेरा आदत ही सही।

आचार्य तुलसी
संत विचारक

जन विश्व भारती
लाडनू
दिनाक १ जुलाई १९७७

निग्रन्थ के कलाकार केवल कला ममन ही नही सत्य सधित्सु भी हैं। उनका कल्पक मनीषा म कथ्य क नए उन्मप नव शिल्पन की दिशाए खोल रहे है। उनक सजन म ताप और प्रकाश (दशन और कला) का युगपत योग है इसलिए जनसाधारण की पकड मे बाहर है। इनका प्रस्तुत कृति निग्रन्थ म अनुभत सत्य की अभिव्यक्ति जितनी सुखद है उतनी ही अदभुत है सरल भाषा म दशन की अनायास आविर्भूति। जन्म मत्यु के अधेरा और उजाला से भयभीत व्यक्ति निग्रन्थ के माध्यम स आत्म भीति से मुक्ति पा सकता है। स्व और पर की मुक्ति हा किसा कलाकार को कभी न चुकने वाली सतत सतप्ति दे सकती है।

निग्रन्थ के कवयिता है हमारे समाज क कुशल शब्द शिल्पी कन्हैयालालजी सेठिया। इनकी कतिया ने कविकुल म शीपस्थ स्थान पाया है। साहित्य जगत मे इनकी प्रगति और प्रतिष्ठा देखकर मुझे सात्विक प्रसन्नता है। कवि की काव्य चेतना जन दशन की अतल गहराइया मे अवगाहित होकर निग्रन्थ जसे उज्जवल मोतिया से आलोकित होती रह यही शुभाशसा है इनके सजन क प्रति।

आचाय तुलसी

आचार्य रजनीश

२७, सी सी आई चेम्बर्स
बम्बई २०
फोन २६३७८२

मेरे प्रिय,

प्रेम। पत्र पाकर आनंदित हूँ।

प्रणाम' को पढ गया हूँ।

प्रभु से आप पर निरंतर ही काव्य-वर्षा की कामना करता हूँ।
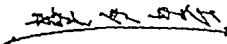
७ १० १९७०

आचार्य रजनीश

२७ सी सी आई चेम्बर्स
बम्बई २०
फोन २६३७८२

मेरे प्रिय

प्रेम। 'प्रतिबिम्ब', 'खुली खिडकियाँ, चौड़े रास्ते', और 'गल्पांचिया'—ग्रन्थों को देख गया हूँ। उन्हें पढ़कर अति आनंदित हुआ हूँ। मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार करें।

२४ १० १९७०

राधा बाबा
मत

गोरखपुर
८ ३ ७८

श्री कन्हैयालालजी सेठिया अभिनंदन ग्रंथ पर पू० बाबा का आशीर्वाद
दिनांक ८ ३ ७८ समय सायंकाल ६ ५५

श्री कन्हैयालालजी सेठिया की रचनायें समय समय पर मेरे दृष्टि पथ में आई हैं भावोद्दीपन के लिये मेरे जीवन में इनकी रचनाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव जो मैंने अनुभव किया है उन सबका वाणी के द्वारा व्यक्त करना सम्भव नहीं है उनकी कुछ कृतियाँ तो इतनी अद्भुत प्रतीत हुई कि उनमें से एक को कौन लिखता है बताओ नींव का इतिहास साथी मैंने इसे ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर अपनी अन्य संकलित कविताओं के साथ सुरक्षित करवा दिया है और मेरा विश्वास है कि काल के प्रवाह में उस रचना की गरिमा को कुछ पाठक अनुभव कर त्रिगुण जगत से प्रतिदान पानेकी वासना से निश्चय ही निर्मुक्त हो सकेंगे बस और मैं क्या कहूं।

(राधा बाबा)

स्वामी परमानन्द सरस्वती
महामण्डलेश्वर

सरस्वती पीठ
निगमबोध मार्ग
दिल्ली ७
३० ११ ७२

श्री सेठियाजी के गीता का सकलन प्रणाम देखा और पाया कि गीत मात्र शब्दा का जोड ही नही है उनम मार्मिक भावनाओ के मनोरम मोड भी है।

प्रथम गीत का ही पढना आरम्भ किया था कि उसकी दो पक्तिया ने बलात चित्त का खीच लिया। गुनगुना गुनगुना कर मैं उनका आनन्द लेता रहा। पक्तिया थी—अलख रहेंगे नखत, उषा यदि बन न शाम सा दीखे।

सेठियाजी क ४४ गीता का सकलन प्रणाम सूक्ष्म अनुभूतिया की कृति है। प्रकृति के आपात रूपा म सेठियाजी ने क्षीण स्वर म हो रहे जो आध्यात्मिक सदेश सुने है उन्हें शब्दा के प्रवाह म प्रकट होने दिया है। अत गीता म सहज अकृत्रिमता है।

प्रत्येक साहित्य प्रेमी जन इन गीता का खुले मस्तिष्क स आस्वादन करें ऐसी मेरी आकाक्षा है।

स्वामी परमानन्द सरस्वती

श्रीधर शास्त्री
प्रबन्ध मन्त्री,

१४४ विवेकानन्द मार्ग
इलाहाबाद ३
१०-११ दिसम्बर १९८

मान्यवर

सादर प्रणाम।

आपका पत्र मिला। आपने सम्मेलन की प्रार्थना स्वीकार कर जो कृपा की है उसके लिए सम्मेलन सदा आभारी रहेगा।

१० दिसम्बर, ८३ की सायम ५ बजे उद्घाटन समारोह के अवसर पर 'साहित्यवाचस्पति' की उपाधि प्रदान कर आपकी वाङमयी अर्चना सम्मेलन करेगा।

आपके आवास निवास की व्यवस्था स्वागत समिति ने कर ली है। आपको इन्दौर में किसी प्रकार का कष्ट नहीं हो सकेगा। उसका पूरा ध्यान रखा गया है।

आप किस ट्रेन से इन्दौर पहुचेंगे इसकी सूचना स्वागत-समिति को अवश्य भेज देगें जिससे कि ट्रेन पर स्वागत समिति उपस्थित हो सकेगी।

विश्वास है आपका स्नेह सदा मिलता रहेगा।

विनीत
श्रीधर शास्त्री

स्वागत समिति का पता
श्री अम्बिकाप्रसाद पाण्डेय
स्वागत मन्त्री
४०, मालण्डचौक
इन्दौर

श्रीधर शास्त्री
प्रबन्ध मंत्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
हीरक जयन्ती महोत्सव

१८४, विवेकानन्द मार्ग
इलाहाबाद ३

आदरणीय भाईजी

सादर प्रणाम।

आपका पत्र मिला आपके इस स्नेह के लिए सदा आभारी रहूँगा। निवेदन है जिस प्रकार आपने कलकत्ता महानगर में हीरक जयन्ती समारोह के अध्यक्ष पद को स्वीकार कर हमें बल प्रदान किया है उसी प्रकार अब साल भर के कार्यक्रम को भी सफल बनाने की कृपा करें।

कलकत्ता में एक राज्य स्तर का हिन्दी साहित्य सम्मेलन का गठन हो सके इस दिशा में भी विचार करेंगे ?

सम्मेलन के पदाधिकारियों का नया निर्वाचन होना है। कुछ विशिष्ट लोगों ने आपके नाम का भी प्रस्ताव किया है।

सम्मेलन की वर्तमान स्थिति आपसे छिपी नहीं है अभी हमारे पास कार्यालय भी नहीं है। किसी तरह एक किराये के मकान में काम चला रहा हूँ ऐसी स्थिति में क्या आप उक्त पद स्वीकार कर सकेंगे ?

आप निर्देश देंगे तो मैं स्वयं आपकी सेवा में बैठकर विस्तार से चर्चा कर सकूँगा। निवेदन है लौटती डाक से पत्रोत्तर देने का कष्ट स्वीकार करेंगे।

आपका
श्रीधर शास्त्री

अशोक कुमार जैन
ज्ञानपीठ के त्यागी

टाइम्स हाउस
चौथा मंजिल
७ बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली ११० ००२
दिनांक ११ १ ८६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपसे कलकत्ते में मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के हीरक जयन्ती महोत्सव पर आपके अध्यक्षीय भाषण को मैंने ध्यान से पढ़ा। मैं आपके विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ।

शुभ कामनाओं सहित

आपका
अशोक कुमार जैन

राम निवास जाजू
कवि

७ श्री राम रोड
दिल्ली ११००५४
२ जनवरी, १९८६

प्रियवर श्री सेठियाजी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हीरक जयन्ती महोत्सव पर दिया गया आपका भाषण मैं आद्योपान्त पढ़ गया। हिन्दी के प्रचार और प्रसार में बंगाल के योगदान को आपने पूरे उदाहरणों के साथ सिद्ध किया। कई नामों की जानकारी तो मुझे भी नहीं थी। आपका भाषण आगे की लेखन प्रक्रिया में कई लोगों के काम आएगा।

आप सामान्यतः राजस्थानी के प्रबल स्वयंभू समर्थक रहते हैं किन्तु इस भाषण में हिन्दी के पुरजोर हिमायती और एक सशक्त स्तम्भ के रूप में उभरे हैं। आपकी यह बात सही है कि राजस्थानी ने हिन्दी के भंडार को भरने के लिए काफी त्याग किया है। कुल मिलाकर मुझे लगा इस महोत्सव में आपके व्यक्तित्व का सदुपयोग किया गया है।

मेरी नयी कविता पुस्तक को पढ़ने-परखने का समय आप निकाल सके इसके लिए आभारी हूँ। आपकी बधाई के लिए अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

नववर्ष की मंगलकामना का पत्र कल ही मिला है। आपके स्नेह-स्मरण के लिए अपना आदरभाव ज्ञापित करता हूँ।

सादर,

आपका
राम निवास जाजू

रामनिवास जाजू
कवि

४२ जकरिया स्ट्रीट, कलकत्ता
दिनांक ११ ५ ८७

भाई श्री सेठियाजी

उनहत्तरवें जन्मदिन पर आपका अभिवादन।

लोग बिखराव के बाद ठहराव की तलाश म रहते है किसी नई टूटन को गूथने के लिए। आप किन्तु न भागे और न कभी भटके। जीवन और सृजन के मार्ग म हर बार आपने एक चढाव पार किया और दूसरी चोटी की ओर कूच कर दिया। स्थान स्थान पर आप तो चदन बिखराते चले हैं। आज आपकी साधना के शख बज रहे हैं---उसकी उत्कर्षमयी ध्वनि पर अपने अधूरे स्वर को समर्पित कर आनद का भागीदार बन रहा हूँ।

पुन हार्दिक बधाई के साथ

सादर स्नेहाधीन
रामनिवास जाजू

राम निवास जाजू
कवि

दूरभाष २५१८५७७
७, श्री राम रोड
दिल्ली ११००५४
दिनाक २६ मई १६८८

प्रिय श्री सेठियाजी

सप्रेम नमस्कार।

आपका २२ ५ ८८ का पत्र मिला। समारोह म मेरी अनुपस्थिति पर आपकी निराशा को समझ सकता हूँ। किन्तु मैं तो प्रारभ से अत तक समारोह म उपस्थित था इसलिए इस जानकारी के साथ हो आपको प्रसन्न हो जाना चाहिए।

आपका भाषण लगभग कविता की तरह आपने सुनाया। विचारो की गहराई का प्रभाव तो मन पर पडा ही किन्तु समूचे वक्तव्य को काव्य पाठ की तरह जिस प्रकार आपने प्रस्तुत किया उसका आनन्द भी खूब आया। वैस यह मानना पडेगा कि श्री बलराम जी जाखड आपके बारे म खूब मन से बोल और श्री लक्ष्मीमलजी खूब आदर से। श्री गगा बाबू तो भीष्म पितामह हैं और उनकी वाणी भी बहुत खुले-खुले स्नेह की तरह छिटक रही थी। सबने आपकी कविता के बारे म थोडा-बहुत कहा, किन्तु ज्यादा वजनदार बातें कवि ने ही अपनी कविता के बारे म कहा था। मुझ जसे जिज्ञासु को तो वजनदार बातो स ही काम था और वे सब वहा आपके श्रीमुख स मिली।

श्री हिमाशु जन का बायोडाटा मिल गया है उसे इटरव्यू के लिए बुला लिया जाएगा और यथासभव प्रयास किया जाएगा।

आप म समाज के प्रति कल्याणभाव की प्रवत्ति इन दिनो म बहुत अधिक उजागर हो रहा है, यह हृदयगम कर मन को बहुत अच्छा लगा। परिवार मे सब को मेरा यथायोग्य कहें।

सादर

आपका
राम निवास जाजू

लक्ष्मी निवास बिरला
उद्योगपति

६/१, आर एन मुखर्जी रोड
कलकत्ता ७०० ००१
अक्तूबर २६, १९८६

प्रिय श्री मठियाजी,

'स्वगत" बडी रुचिकर लगी। 'स्मृति म रूप रग रस गध यहा है सम्बध

सत महात्माओ की वाणी म गुप्त आध्यात्मिक तत्वो का जो परिष्कृत विवेचन है--उसी धारा म आपने भी गोते लगाए है।

स्वगत' आपकी आत्मप्रेरणा और दिव्य स्वरूप के दर्शन की बडी अनमोल कृति है।

कहा सब अनकहा

शेष सब स्वगत रहा।

आपका
लक्ष्मी निवास बिरला

लक्ष्मी निवास बिरला
उद्योगपति

६/१ आर एन मुखर्जी रोड
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक फरवरी २४ १९८७

प्रिय सेठियाजी,

आपका पत्र काफी ढाढस बंधाता है। अंधेरा एक माचिस की रोशनी से ही डरकर भागता है आपने तो रश्मियों का उजाला दिया है।

धन्यवाद,

आपका
लक्ष्मी निवास बिरला

(श्री बिड़लाजी की पत्नी श्रीमती सुशीलाजी बिड़ला के निधन पर दिये गये सांत्वना-पत्र का प्रत्युत्तर।)

लक्ष्मी निवास बिरला
उद्योगपति

६/१, आर एन मुखर्जी रोड
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक मई १०, १९८८

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आज यह जानकर खुशी हुयी कि आपको मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार दी जा रही है।

मैं तो आपके ग्रन्थ बराबर ही देखता रहता हूँ। आपके विचार गहरे व गम्भीर हैं। मुझे हर्ष है कि लोगों ने आपके विचारों का मूल्यांकन किया है। मैं आपको बधाई देता हूँ।

आपका,
लक्ष्मी निवास बिरला

उमाशंकर दीक्षित
राज्यपाल पश्चिम बंगाल

राज भवन
कलकत्ता ७०० ०६२
दिनांक १६ दिसम्बर १६८५

प्रियवर सेठियाजी

आपका दिनांक ७ दिसम्बर का पत्र मिला। मैंने 'प्रणाम' का अधिकांश भाग पढ लिया था। उसके बाद फिर समय नहीं मिला। दूसरी पुस्तक का तो प्रारम्भ भी नहीं हुआ है।

काव्य साहित्य की एक विशेषता यह है कि जितना मानसिक श्रम कवि को रचना के समय में होता है, अनायास उभरी हुई प्रेरणा के प्रभाव को छोड़कर उतनी ही श्रम शक्ति कविता के मर्म और कला की अनुभूति की अभिव्यक्ति में पाठक को लगानी पडती है।

आपकी अपनी कविताओं के कारण काव्य जगत में जो प्रतिष्ठा का स्थान उपलब्ध है वह सामान्य वस्तु नहीं है। राजकीय प्रभाव का कोई विशेष योग साहित्य के लिए विशेष महत्व नहीं रखता है।

कदाचित आपको यह विदित नहीं है कि मेरी व्यस्तता अत्यधिक समय और शक्ति का ध्यान में रखते हुए कम नहीं है। समय मिलने पर अवश्य दूसरा पत्र लिखूंगा।

स्नेहादर सहित

आपका
उमाशंकर दीक्षित

उमाशकर दीक्षित
राज्यपाल, पश्चिम बगाल

राज भवन
कलकत्ता ७०००६२
दिनाक ६ जनवरी १६८६

प्रिय सेठियाजी

आपके दिनाक १५/१२/८५ तथा २०/१२/८५, इन दोना पत्रा का उत्तर दे रहा हूँ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हीरक जयन्ती महोत्सव पर दिये गये आपके अध्यक्षीय भाषण का मने साद्योपान्त ध्यान से पढा है और उससे आपके दृष्टिकोण तथा सरल किन्तु प्रभावी भाषा से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। कुछ छोटे छोटे गुटके से आपने भेजे थे दो या तीन उनको भी सरसरी निगाह से देख गया हूँ। अत म मेरी एक प्राथना है आपकी कविताओ वाली दोना पुस्तका का मैं समय मिलने पर शान्ति से अध्ययन करूँगा। परन्तु उनके बारे म अपना मत आपके सूचनाथ कब व्यक्त करूँगा यह बताने म असमथ हूँ। मैं इन दिना कुछ प्राचीन ग्रन्था के अध्ययन म लगा हूँ। जो भी समय अतिथियो तथा सावजनिक समारोहो के प्रसग से बचता है वह सारे का सारा उसी अध्ययन म लगता है और महत्वपूण अशा का अलग नोट भी लेता जाता हूँ। इसलिए अत्यधिक आवश्यक विषयो का छोडकर नियमित पत्राचार मेरे लिए अत्यन्त कठिन हो गया है। मेरा अनुरोध है कि मेरी इस परिस्थिति पर आप ध्यान देने की कृपा करेंगे।

स्नेहादर सहित,

भवदीय,
उमाशकर दीक्षित

उमाशंकर दीक्षित
राज्यपाल पश्चिम बंगाल

१ सरकुलर रोड
नई दिल्ली-११० ०२१
१४ नवम्बर १९८७

प्रियवर सेठियाजी

आपका दिनांक १२ अक्तूबर १९८७ का पत्र मिला। आपकी दो उच्चस्तरीय काव्य कृतियां भी, स्वगत और 'देह विदेह' मिल गई है। स्मारिका अवश्य आयी होगी लेकिन मेरी नजर उस पर अभी तक नहीं पड़ी है। 'स्वगत' का अध्ययन उसी दिन पढ़ गया था। आपकी शैली में शब्दों और भाव का ऐसा अपूर्व समन्वय रहता है और उसका पठन इतना सरल और सुविधा युक्त होता है कि जो कुछ पढ़ा जाता है उसकी हृदय पर चोट अवश्य लगती है।

मैं नहीं कह सकता हूँ कि शान्ति से दोनों पुस्तकों को साद्योपान्त पढ़ने का कब समय मिलेगा ? मैं तो जिस काम में लग जाता हूँ उसी में मुझे रस आने लगता है और उससे ओत प्रोत हो जाता हूँ।

एक कहावत हमारे गाँव की याद आती है कि 'नीम के कीड़े को नीम ही मीठा लगता है'।

आपने अपनी दो सुन्दर पुस्तकें भेजने की जो कृपा की है उसके लिए हम आपके हृदय से आभारी हैं और आपके उज्जवल भविष्य की हृदय से कामना करते हैं।

अनेक शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभकांक्षी
उमाशंकर दीक्षित

गुमानमल लोढा
चीफ जस्टिस (रिटायर्ड)
गुवाहाटी हाई कोर्ट

जयपुर

दिनांक १९ ५ ८८

आदरणीय सेठिया साहब

मेरी हृदयगत बधाई स्वीकार कीजिये।

दिल्ली मे आपकी सवधना के कार्यक्रम म सम्मिलित होने की हार्दिक इच्छा थी पर निमत्रण पत्र दरी स मिला। जिसस जाना नहा हुआ। । हिन्दी और राजस्थानी साहित्य मे आपका जा योगदान है वह आने वाली पीढिया का गौरवान्वित करता रहेगा। आपकी कृतिया युग युग तक मानव चेतना का प्रेरणा देती रहेगी।

मैं सपरिवार आप का अभिनन्दन करता हू। और शासनदेव से विनती करता हू कि आप अनेक दीपावलिया तक पूजित होते रहें तथा शतायु हो।

आपका हितकारी
गुमानमल लोढा

Dr Ramnath Anandilal Podar
LL D

Podar House
10 Marine Drive
Bombay 400 020
Tel 2041371/
2040344

May 19 1988

Dear Shri Sethiaji

I have received today the invitation about the Presentation of a Sahitya Puraskar to you by Bharatiya Jnanpith on your book of Poems NIRGRANTHA' The function has already been held on Thursday May 12 1988 at Delhi

I congratulate you on your receiving the prestigeous Award which you so richly deserved I also wish you many more higher Awards in future

With best regards

Yours sincerely
Ramnath Podar

मौ० उस्मान आरिफ
राज्यपाल

स १३०६/पी एस एच ई
राज भवन
लखनऊ
सितम्बर १५, १९८७

प्रिय कन्हैयालालजी सेठिया,

आज बीकानेर से लखनऊ वापसी पर प्राप्त काड द्वारा यह जानकर मुझे अपार हर्ष हुआ कि आपके जन्म दिन ११ सितम्बर १९८७ को आपकी नवीन कृति द्वय-"सतवाणी एव 'देह विदेह'' का लोकापण समारोह सम्पन्न किया गया है। नि सन्देह हिन्दी साहित्य म आपके अनमोल रत्नो म उक्त अमूल्य कृतियो का और समावेश हुआ है।

आशा है कि समारोह सफलतापूवक सम्पन्न हुआ होगा।

आपके जन्म दिवस पर दीर्घायु की कामना करते हुए।

आपका,
मौ० उस्मान आरिफ

जगन्नाथ सिंह मेहता — अजमेर ३०५००१

अध्यक्ष

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड — दिनांक २ दिसम्बर, १९८७

राजस्थान

प्रिय श्रासठिया साहिब

अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा आपके काव्य संग्रह 'निग्रंथ' के लिए १९८६ के मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार से आपको सम्मानित करने का निश्चय किया गया है।

आप 'मरुधरा' के सच्चे सपूत यशस्वी कवि एवं दार्शनिक विचारधारा से काव्य जगत को अभिसिंचित करने वाले सच्चे मनस्वी हैं। आपको प्राप्त होने वाले हर गौरव से हम भी स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है आप चिरकाल तक निरंतर साहित्य की ज्योति को प्रज्जवलित करते रहें।

आपका

जगन्नाथ सिंह मेहता

शिवचरण माथुर
सदस्य
राजस्थान विधान सभा

कार्यालय ३, हॉस्पिटल रोड
जयपुर ३०२००४
निवास ए-८७ श्यामनगर
अजमेर रोड, जयपुर

दिनांक २ १२ ८७

प्रिय श्री सेठियाजी

आशा है आप प्रसन्न होंगे। आजकी डाक से आपकी रचना "अंधारी काल मिली। उसके लिये धन्यवाद।

मेरे जैसे राजस्थानियों के लिये यह प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि आप जैसे सुहृदय मनीषी को इस वर्ष ज्ञानपीठ का मूर्ति पुरस्कार आपकी रचना निग्रन्थ पर देने का निर्णय ज्ञानपीठ पुरस्कार समिति ने किया है। इस तरह का सम्मान वास्तव में व्यक्ति का न होकर उसके द्वारा प्रतिपादित मूल्यों तथा जीवन की अनवरत साधना का अभिनन्दन है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि आप शतायु हों और लम्बी अवधि तक साहित्य द्वारा समाज की सेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहें।

आपका सुहृद
शिवचरण माथुर

सुमनेश जोशी
कवि

एस एम एस अस्पताल
जयपुर
दिनांक १६ ५ ६५
रात के ३ बजे

मेरे प्यारे मित्र सेठिया

तुम्हारे लिए अभिवादन के शब्द न मुँह से निकलते हैं न कलम से लिखे जाते है। तुम तो सपूर्ण रूप से अभिनदनीय हो। सो जीवन म पहलीबार यह पत्र तुम्हे बिना अभिवादन और आप आदि शाब्दिक शिष्टाचार के लिख रहा हूँ। आज इस पत्र म मैं दिल खोल कर रख देना चाहता हूँ। मैं घुट रहा हूँ। घुटन इतनी अधिक है कि वह प्राण लेवा हो गई है। सच मेरा दम घुट रहा है। लेकिन मैं किसके आगे अपने आपको खोलूँ? किसके आगे अपने आप को नगा करके नाचूँ? किसके आगे अपने कलेजे के घाव दिखाऊ? किसे कहूँ कि जरा आकर मेरी दुर्बलताओ को सहला दो?

जिंदा रहने के लिए निरतर किए जाने वाले लबे सघर्ष म मं पूरा तरह टूट चुका हूँ। मेरा मन मर गया है उमगे नष्ट हो गई है सपने बिखर गए ह मेरे मर्म को मेरे मन की पीडा को कोई नही समझता। और को बात छोड़। मेरी पत्नि भी नहीं समझता। केवल इसलिए कि मैंने कभी किसी के आगे कभी भी न सर झुकाया न अपनी व्यथा प्रकट की न याचना की भाषा बोला मेरा व्यक्ति वशिष्ट्य मेरी स्वाभिमान की भावना मेरा अहम मेरे प्राणो म भरा हुआ स्नेह का सागर आत्मीयता का अनत कोष और मेरी सवेदनशीलता इन्होने ऐसा लगता है कि आज मुझे खा लिया है। म निरतर अपनी भावनाओ पर बडी कुशलता से नियत्रण करता रहा हूँ और कभी भी किसी के आगे तुम्हारे आगे भी, अपने वास्तविक म को प्रगट नहीं होने दिया। इसलिए जगत यही समझता रहा कि मैं कितना सुखी हूँ। आज भी मेरी जबान किसी के आग नही खुलता है। तुम से शायद कोई पूर्व जन्म का नाता दिखता है कि तुम्हारा तार आते ही मैं अपने आपको रोक नहीं सका। तुम्हारा आत्मीयता और स्नेह का तुम्हार सौहार्द और बधुता का और तार मे लिखे तुम्हार तीन शब्दो के पीछे छिपी हुई एकात्म भावना ने मुझे इतना झकझोर दिया कि मैं फूट फूट कर रोने लग गया। किसीने नही समझा कि क्या बात है। डाक्टर लोग इकट्ठे हो गए। मैंने भी दर्द का बहाना किया। इजेक्शन लगे और छुट्टी हो गई।

लेकिन मेरे मित्र ! तुम जैसे मेरे बंधु जबतक धरती पर बैठे हैं तबतक मैं मर थोड़े ही सकता हूँ। तुम्हारा स्नेह तो मुझे मौत के मुँह से भी खींच कर ले आएगा। जयपुर में मेरे सैकड़ों राजनैतिक साथी सहयोगी बैठे हैं। उनमें से किसी को कोई पीड़ा नहीं हुई। न किसीने कुछ पूछा न किसी ने कुछ जानने की कोशिश की। उनके लिए राज कीड़े मकोड़े जीते, जन्मते और मरते हैं। उन्हें या उन में से किसी को अवकाश कहाँ ? तुम ठाली बैठे थे तुम्हें अवकाश था या जयपुर में मुकुल को अवकाश था। उसने जमीन आसमान एक कर दिया। उसी का परिणाम है कि आज मैं तुम्हें पत्र लिखने की स्थिति में आ पाया हूँ।

तुम मेरा पत्र पढ़ते पढ़ते दुःखी मत होना। मेरी व्यथा की कहानी तो बहुत लंबी है। मैं तुम्हें दुख देने या तुमसे कुछ लेने या मांगने के लिए यह पत्र नहीं लिख रहा हूँ। तुम भी बड़े आदमियों की तरह यह खयाल मत करना। मैं यह पत्र केवल इसलिए लिख रहा हूँ कि मैं अपने भीतर की घुटन यदि तुम्हारे आगे भी प्रकट नहीं कर सका तो जीवन में ऐसा और कोई नहीं है जिसके आगे मैं कुछ भी कभी भी प्रकट कर सकूँगा। मैं इस पत्र की एक एक पंक्ति लिख कर हल्का हो रहा हूँ। इस पत्र के पूरे होने तक मेरे मन का बोझा बहुत हल्का हो जाएगा और मेरे मन में यह शांति तो रहेगी कि इस निर्मम धरती पर एक मेरा ऐसा भी मित्र है—जिसके आगे मैंने अपना दिल खोल कर रख दिया था।

तुम मेरे स्वास्थ्य के बारे में जानना चाहते थे तुमने औपचारिक रूप से मुझे तार थोड़े ही दिया था। ऐसे औपचारिक सैकड़ों तारों और पत्रों का उत्तर तो बधी बधाई भाषा में टीपू या चम्पा अपने आप दे देते हैं। शायद तुम्हारा तार भी उनके हाथ में पड़े और वे तुम्हें कुछ उत्तर दें। लेकिन तुम्हारा तार तो अस्पताल के जनरल वार्ड के पते से आया। अस्पताल में हर वार्ड जनरल वार्ड है। अस्पताल के आफिस के कर्मचारियों ने तार खोला और मेरा पता लगाकर मेरे पास भेजा। मुझे उस समय नशे के नींद के इंजेक्शन देकर सुलाने का यत्न किया जा रहा था। मैं अपने कमरे में अकेला था। तार पढ़ते ही मैं तुम्हारे मन की पीड़ा को भाँप गया कि जिसने घर नहीं देकर अस्पताल में तार दिया। मैं तेरे स्नेह के आगे परास्त हो गया। मैं बच्चों की तरह फूट फूट कर रोने लग गया। स्नेह और प्रेम और आत्मीयता का रोना था। उस रोने ने मेरे मन की दुर्बलता तो व्यक्त कर दिया, क्योंकि किसी ने कभी मुझसे इस तरह

से देखा ही नही परंतु मेरा मन आनद से सुख से भर गया। मुझे लगा कि अब मैं ठीक हो जाऊगा। हा ही जाऊगा। मुकुल और उसकी डाक्टर पत्नि सतोप ने जितनी पीडा महसूस की उस समय भी मरा यही हाल हुआ। तुम जानते हो मुझम कभी inferiority complex नही आया। कभी नही आया। लेकिन इन दिना मैं अपनी ही दृष्टि म इतना हीन हो चुका हू कि मुझ लगने लग गया कि मैं निरथक हू। म पृथ्वी का बोझ हूँ। मैं कहा किसी पर भार तो नही बन रहा हू। किसी का थोडा सा स्नेह भी मुझे बहुत बडा एहसान लगता है। परिचिता कविया साहित्यिका पत्रकारा की टालिया मिलन आती ह। मैं कृतज्ञ हो जाता हू उनके स्नेह क आगे। साचता हू अभी धरती पर प्यार है। और मुझ लगता है कि म एकदम तो निरथक नही हू। खर छोडो। ये सब बेकार बातें है। मरा दिमाग खराब है। म क्या क्या लिख गया हू। तुम बुरा मत मानना।

तुमने मरी तबियत के बार म पूछा था सो मेरा वजन इस समय दिसम्बर ६४ की तुलना म १५० पौड घट गया है जनवरी ६५ की तुलना म १३७ पौंड घट गया है। और अप्रेल ६५ म २१४ पौड था। आज १८ मई को मैं १६४ पौंड हूँ। दिसम्बर ६४ म ३१४ पौड जनवरी ६५ म ३०१ पौड अप्रेल ६५ म २१४ पौंड और मई १८ ६५ को १६४ पौंड है।

सिर के बाल कट गए हैं। शरीर हड्डिया का ढाचा जसा हो गया है। मेरे हाथ टीपू के हाथा जसे पतले हो गए हैं। अब इन दिना आखा म जीवित व्यक्ति की झलक दिखाई देती है। मुर्दापन मिट रहा है। मैं अब स्पष्ट बोल सकता हूँ। किसी को पहिचानन म मुझे कोई कष्ट नहा होता। मरी स्मृतिया लौट आई हैं। एक क्षण म थोडा सा सोचते ही किसी भी पुराना बात का प्रसग ध्यान म आ जाता है। अपनी और अपने मित्रा की कई क्या सभी कविताए मुझे याद आने लग गई हैं। इस सबका श्रेय चिकित्सा करने वाले डाक्टरा को बाद म और मुकुल को पहल है। उसने पता नही किस किस डाक्टर स जा कर मेरे बारे म क्या क्या कहा? मेरी एसी दहशत अस्पताल म बिठा दी कि मैं बहुत बडा आदमी हूँ। परिणाम यह हुआ कि साधारण जन की चिकित्सा स मरी चिकित्सा का स्तर बदल गया मरे प्रति डाक्टरा का और सबका दृष्टिकाण मुकुल न ऐसा कर दिया कि हर व्यक्ति अस्पताल का यह समझने लग गया कि मैं या तो कोई मिनिस्टर हूँ या उनसे कुछ ऊपर हूँ। फिर उसने २००) रु

दो सौ रुपए मेरे पास लाकर रख दिए, बहुत जबरदस्ती। पता नही कहा से लाया था। उससें भी बहुत सहारा मिला।

अब चिकित्सा चल रही है बीमारी PARESIS है। यह पेरेलिसिस का एक Partial Form माना जाता है, जिसम शरीर के प्रभावित अगा म हलन चलन Movement तो होता है लेकिन उनकी स्नायविक क्रिया एकदम मद पड जाती है, स्नायुविक क्रिया समाप्त होने पर तो परलिसिस हो जाता है। इसम स्नायविक क्रिया अति मद हो जाती है लेकिन उसके पीछे ऊपर का विश्वास रहता है। वह उभर रही है।

डाक्टरा का मानना है कि अति अधिक चिंता और मानसिक पीडाओ अथवा अचतन मन की आतरिक अव्यक्त हलचल से यह स्थिति आती है। उनका निदान सपूण रूप स सही है। व्यक्त तो मने अपने को कभी किया ही नही, और हलचल तो क्या तूफान, भूचाल और ज्वालामुखी ता मेर सचेतन म ही गरज रह थे जो विचारे अव्यक्त ही थे। उन्हें अभिव्यक्ति मिल ही नही पाता था और मैं मित्रा के साथ काव्य शास्त्र विनोद म अपनी पीडाओ का भूलने का प्रयत्न करता था।

जब तुम वसत होटल म आए थे वे मेर अत्यत विकट, भयकर और प्राण लेवा दिन थे। मरा एक एक क्षण और एक एक साम लेना मरे लिए भारी हा रहा था। शायद तुमने इसकी भनक भी नही पाई होगी।

उसके बाद ११ जुलाई ६४ को मै घर स बिना किसा को खबर किए और बिना कोई सामान लिए घर स चल पडा था। मेरे मन की स्थिति यह थी मैं परिवार का भरण पोषण नही कर सकता। कही कोई काम नही मिलता। बडप्पन का मुलम्मा इतना भारी चढ गया कि कोई वस्तु स्थिति को समझने की दिशा म सोच ही नही सकता। बच्चा का स्कूल म भर्ती कराने और फीस जमा कराने की स्थिति नही थी। पानी का नल कट गया था। बिजली का कनेक्शन कट गया था। और मैं असहाय था।

मैं इसीलिए इसी इरादे से घर से निकला कि जबतक परिवार के भरण पोषण की स्थिति पदा नही कर लूगा तबतक घर नही लौटूगा। उस बीच घर म जा हाना हो—हो। मेरी अनुपस्थिति म बहुत दुघटनाए घटी। टीपू फीस के अभाव म परीक्षा नहीं दे सका। चपालालजी का काम ठप्प हा गया।

तुम उनको चिट्ठी लिखना और तुम किसी को भी लिखना और जयपुर आना। तुमसे मिलकर भी मन को सुख मिलेगा।

मैं बहुत थक गया हू मुझसे अब लिखा नहीं जाता। मैंने मेरी बहुत सी बात तुमको लिख दी।

मुझको पावों में, नीचे के हिस्से में, मस्तिष्क निद्रा हाथों कंधों और Right eye पर असर हुआ था। अब शरीर के किसी किसी स्नायु में क्रिया आ रही है थोड़ा थोड़ा आने लगी है। पाव अभी काम नहीं करते बिस्तर से उठाना मना टट्टी पिशाब बिस्तर पर हो। खाया कुछ जाता नहीं। लिखना पढ़ना सख्त मना है। इसलिए तुम को रात में पत्र लिखा है। ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। ऊचा में ऊचा २२० चला जाता है नीचे में नीचे १२०। नोरमल १३८/९० १४०/९० होता है मेरे लिए। डाक्टर स्थिति नोरमल पर ले आए हैं पर रोज सुबह १४० है ता शाम को १६० हो जाता है। आज सुबह बहुत बढ़ जाएगा। तुम पत्र देना और तुम आना। मैं खड़ा नहीं हो सकता। रग पुट्ठों में अभी जान बाकी है। ३ ४ महीने इलाज में लगेंगे। तुम्हारा सदा अपना

सुमनेश जोशी

(सुमनेश १६ जून १९७४ को दिवंगत हुये।)

सुमनेश जोशी कवि	नारनोली भवन सागानेरी गेट, जयपुर १३ अक्टोबर, ६५

प्रिय भाई श्री सेठियाजी

सादर सप्रेम वन्दे

मैं पूरे ५ महीने के बाद अस्पताल से घर आगया हूँ। या मैं काफी स्वस्थ हू। चलने फिरने म मुझे सामान्यत कोई असुविधा नही होती लेकिन सीढियें चढने उतरने म कष्ट होता है। चिकित्सा अभी भी यथावत जारी है।

राजस्थान राज्य ने पिछले दिनो भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय की योजना के अतगत मुझे २५००) ढाई हजार रुपए चिकित्सा सुविधा के लिए भेजे थे। यह जो कुछ सुविधा मुझे चिकित्सा काल म प्राप्त हो सकी उसका अधिकाश श्रेय तुम्हें ही है।

पिछले दिनो मेरे जन्मदिवस पर जयपुर के मित्रो ने अस्पताल मे ही एक समारोह किया था। उस दिन मैंने भी एक कविता पढी थी—

यह अद्ध शांति की मत्रपूत ज्वाला आई'।
कविता तुम्हें अलग से भेज रहा हूँ।

अभीतक आगे का कोई कायक्रम और योजना नही बना सका हूँ। शरीर भी अधिक दौडभाग और श्रम करने की स्थिति म नही है। लेकिन काम म तो लगना पडेगा बिना विलब के। सोचा था, अस्पताल से निकलने के बारद १० १५ दिन के लिए सुजानगढ़ आकर ही विश्राम करूगा लेकिन शायद यह सुविधा भी अब नहीं मिल सकेगी। अस्पताल से घर आते ही दुनियावी परेशानिया ने चारो ओर से एक साथ आक्रमण कर दिया है। मेरे जीवन म अतिम घडी तक यही क्रम चलता रहेगा। सघष का अत कभी नही आयेगा। यह सोचता हूँ कि जीवन जीने के लिए है जीने की तैयारी के लिए नहीं। यह भी समझता हूँ कि जीवन का स्वयसिद्ध वरदान जीवन है। फिर मेरा जीवन तो जीने की तैयारी करते करते ही बीत जाएगा और सभवत जीवन जीने का क्षण आयेगा ही नही।

तुम भी तो कई दिनो से जयपुर आने की सोचते हो लेकिन तुम्हारा पारिवारिक परेशानिया और सामाजिक प्रवृतिया के कारण जयपुर नही आ पाते। कब तक आने का सोचते हो ? तुमसे मिलकर आतरिक शाति और सुख का अनुभव होता है यदि कोई काम निकाल कर भी जयपुर आ सको तो आना।

विश्वनाथ को याद करना कहना। जयप्रकाश प्रकाश और बच्चा को प्यार तथा सभी परिचित अपरिचित मित्रा के प्रति कृतज्ञता और आदर भाव

सदा तुम्हारा अपना
सुमनेश जोशी

सुमनेश जोशी
कवि

३ कॉटेज वार्ड
एस एम एस अस्पताल
जयपुर
दिनांक २२ ८ ६६

आदरणीय श्रीसेठियाजी

सप्रेम अभिवादन।

मैं अभी अस्पताल मे ही हूँ। आपके दो पत्र घर पर गए थे। लेकिन सभी घर भरके लोग पिछले आठ महीना से अस्पताल म ही हैं। घर तो भूले भटके कोई कभी चले जाते हैं। ऐसे मे ही आपके दो पत्र मिले।

मैं पहले से बहुत ठीक हूँ। लेकिन अभी भी चलने फिरने म स्थिति सामान्य नही है। अभी घोडी का (बैशाखी) का सहारा लेकर चलना पडता है। और थोडा भी चलने पर बहुत अधिक वेदना होती है। अभा चिकित्सा चल रही है। फिर भी ऐसा लगता है के १०–१२ दिन मे अस्पताल से छुट्टी हो जाएगी और समवत अपने जन्म दिन ३ सितम्बर तक मैं घर चला जाऊँगा।

अस्पताल से लौटने पर विशेष व्यवस्था राज्य सरकारी चिकित्सा के साथ ही कर दी थी चिकित्सा की इस अवधि म ५००) रु सा अकादमी ने भेजे थे और १०००) रु आपने। आपके आग्रह अनुरोध पर लाडनू से श्री कन्हैयालाल फूलफगर ने २००) रुपए पिछले दिनो भिजवाए थे। वसे तो अस्पताल मे नौ महीना की अवधि पूरी होने आरही हैं।

अस्पताल से मुझे समय समय कर बाहर जाने का भी १ २ दिन का अवकाश मिलता रहता है इसी सिलसिले मे मैं बूंदी, झालावाड, उदयपुर जोधपुर और लाडनू भी हो आया हूँ। लाडनू मे ओसवालो के समारोह मे कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करने गया था। वहा से भी २००) भेंट स्वरूप प्राप्त हुए थे। अन्य स्थानो पर अकाल सहायताथ अकाल पीडित सहायता के लिए आयोजित कवि सम्मेलनो मे अध्यक्षता करने जाना पडा था।

इस समय भी अस्पताल मे लिखने पढने का काम तो करता ही हूँ मन से और तन से स्वस्थ हूँ। अस्वस्थ भी शरीर का एक भाग पाव है। चलने का अभ्यास करवाया जाता है। आप सबकी मगल कामना और आशीर्वाद से शीघ्र ही स्वास्थ लाभ कर सकूँगा।

अस्पताल की राजकीय सुविधाएं और अस्पताल के कॉटेज में पूरे परिवार के निवास आवास की सुविधाओं के बावजूद भी जीने के लिए तो संघर्ष करना ही पड़ा था। वह अभी भी चल ही रहा है।

अपने ५४ वें वर्ष के प्रवेश में पुनः एकबार गृह प्रवेश करके यही सोचना है कि अब जीवन की यात्रा कहां से शुरू करूं?

आपकी दक्षिण पथ की यात्राएं सुखद ज्ञान वर्द्धक और प्रेरणाप्रद रही होंगी? इस यायावरी में काव्य यात्रा का कौनसा नया मील का पत्थर आपने खड़ा किया लिखें। जयपुर कब आ रहे हैं सूचित करें।

सदा आपका अपना ही
सुमनेश जोशी

सुमनेश जोशी
कवि

नागनारी भवन
मागानेरी गेट जयपुर,
दिनाक २३ ३-७२

प्रिय भाई सेठियाजी

प्रणाम, उस दिन आपका अमूल्य कष्टसाध्य और निश्छल आत्मीय स्पर्श पाकर मैं कृतकृत्य हो गया। अभी भी इस निमम धरती पर ऐसे हृदय हैं कि जो मुझे अपनी ममता बाँटने के लिए अपने प्राणो का मोह भी नही करें। मेरे पास शब्द नहीं है कि जिससे मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त करूँ और अपनी कृतज्ञता भी। तुम मीठे हो स्नेह भरे हो निश्छल हो जबतक बने ऐसे ही बने रहना इस निमम धरती पर अभागे मनुष्य के लिए हृदय का नितात ही अभाव है।

कूकू मैंने देखी है, मुझे बहुत अच्छी लगी क्योंकि ऐसी गठी हुई रचनाए मुझसे नही होती। तुम्हारा मुकाबिला कर हो कौन सकता है? कूकू के पर्गलिया से तुमने राजस्थानी काव्ययात्रा को नया व्यक्तित्व प्रदान किया है। यह नई विधा अभी तक तो पूरी तरह हिन्दी की भी नहीं हो पाई उसके पहल ही तुमने उसे राजस्थानी म अवतरित कर दिया। तुम्हारी प्रत्येक कृति राजस्थानी काव्य यात्रा को एक साथ कई कई कदम आगे ले गई है।

कम्मू के कागज भेज रहा हू। यदि आपको विश्वास हो कि आपके अनुरोध पर श्री भागीरथजी कानोडिया कम्मू को जयपुरके कनोडिया कॉलेज मे नियुक्ति दिलवा दें ऐसी अवस्था म ही आप उन्हें पत्र लिखें अन्यथा अपनी बात का व्यथ न जाने दें।

कम्मू कनोडिया कॉलेज की श्रीमती तर्वे (प्रिंसिपल) से मिल चुकी थी। वह एम ए म सकेड डिविजन है परतु उसके ५५ प्रतिशत नम्बर नहीं हैं। अत अब श्री भागीरथजी कनोडिया की चिट्ठी पर भी उसकी क्या प्रतिक्रिया हो-आप सोचें

मेरी इच्छा उसे जयपुर रखने की है, लेकिन वह अपना एक क्षण भी व्यथ गवाना नही चाहती अत उसने तो यह भी निणय ले लिया है कि मैं सुजानगढ जाकर रह जाऊगी। यदि आपके यहा आप उसे तत्काल रखवा सकें तो इस सबध म भी कोशिश करें। और कम्मू को अलग उत्तर दें।

मैं समझता हूँ हमारी इस मनोदशा को आपने भली प्रकार समझ लिया होगा। उचित और विवेक सगत निणय लें।

जयप्रकाश, बहू, विनय को प्यार आशीर्वाद—सेठानी भाभी को नमस्कार। पत्र दें।

सदा तुम्हारा अपना
सुमनेश जोशी

अस्पताल की राजकीय सुविधाए और अस्पताल के कोटेज मे पूरे परिवार क निवास आवास की सुविधाओ के बावजूद भी जीने के लिए तो सघष करना ही पडा था। वह अभी भी चल ही रहा है।

अपने ५४ वें वष के प्रवेश मे पुन एकबार गह प्रवेश करके यही सोचना है कि अब जीवन की यात्रा कहा से शुरू करू ?

आपकी दक्षिण पथ की यात्राए सुखद नान वद्धक और प्रेरणाप्रद रही होगी ? इस यायावरी मे काय यात्रा का कौनसा नया मील का पत्थर आपने खडा किया लिखें। जयपुर कब आ रहे है सूचित करें।

सदा आपका अपना ही
सुमनेश जोशी

राधाकृष्ण
व्यगकार

रांची
दिनांक २३/२/७४

प्रिय भाई मेठियाजी,

इस बार जो बच गया उसका सारा श्रेय आपका है। अगर मुझे मदद नहीं मिलती तो आर्थिक अभाव के कारण मैं गलत-सलत दवाइयों पर ही निर्भर करता और जो नतीजा होने वाला था वह मैं भी समझ रहा था। मगर आर्थिक सहायता मिली अच्छा किया और अच्छी चिकित्सा मिली, फल हुआ कि बच गया।

मेरा रोग उसी दिन से आरम्भ होता है जिस दिन मैं आपसे मुलाकात करने कलाकार स्ट्रीट में गया था। सीढ़ियां चढ़ते हुये हठात् मुझे अनुभव हुआ कि मैं साँस नहीं ले सकता और निस्सहाय की तरह हाँफने लगा। फिर काफी समय तक रुक रहने के पश्चात आपके पास तक पहुँचा था। बटुकजी की समझ में तो कुछ आया नहीं था मगर डा० सत्यनारायण उपाध्याय घबरा गये थे। उसके बाद यह चीज वसन्त पंचमी की शाम को उभरी। चितपुर रोड में एक प्रसिद्ध और कुशल आयुर्वेदीय चिकित्सक हैं श्री देवव्रत त्रिवेदी (मारुति रसायनशाला) उन्हें बुलाया। उनकी दवा से ठीक होकर रांची आ गया। मगर जैसे ही दवा छूटी कि फिर वही दिक्कत। डाक्टरों को दिखलाया। किसीने दमा माना और जब रिपोर्ट में वैसा कुछ नहीं मिला तो कमजोरी समझा और विटामिन की सूइयाँ देते रहे। सभी दवाइयाँ चलीं—आयुर्वेदीय एलोपैथी होमियोपैथी बायोकेमिक मगर परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। दिसम्बर में भयानक रूप से खाँसी हो गई। एक ओर दम घुटने का रोग और दूसरी ओर खाँसी। आखिर जनवरी में एक अनुभवी एलोपैथ को पकड़ना पड़ा। उसने कहा कि अगर आप १५/२० दिन और देर कर देते तो TB का Patch पड़ जाता। दवा होने लगी। इसी समय आपका अनुग्रह हुआ, रुपये आ गये। अब १ ता० को डाक्टर ने अच्छा होने के बाद बतलाया कि आपके Heart में पानी जम गया था। इसी कारण साँस लेने में तकलीफ थी।

अब कमजोरी है और बहुत कमजोरी है। मगर सम्भलता जा रहा हूँ। लगता है होली तक काफी ठीकठाक हो जाऊँगा। अभी तक तो लगता था कि मर रहा हूँ मगर अब लिखने पढ़ने की ओर तबीयत झुक रहा है। बीमारी की अवस्था में शिक्षाशास्त्र और चित्रकला के बारे में पढ़ता रहा। लगता है कि शिक्षा और चित्रकला का मूल सिद्धांत कुछ भी ऐसा नहीं है जो जगत-मान्य हो।

राधाकृष्ण
व्यंगकार

२१ राधाकृष्ण लेन,
राँची
दिनांक २७ जनवरी ६६

प्रिय बंधु

मैं स्वयं मर मरकर जाने का आदी हूँ। इसलिए आपके मनोरथों की मृत्यु और लिखना पढ़ना बंद होने के समाचार से न आश्चर्य हुआ और न निराशा ही हुई। वास्तविकता विशाल अग्नि शिलाओं की भांति कल्पना और भावनाओं पर गिर पड़ती है और लगता है कि जैसे सबकुछ समाप्त हो गया। मगर उसके बाद उसी शिलाखण्ड को तोड़ती हुई भावनाओं की धारा झरने की तरह बह निकलती है और साहित्यदेवता सब ठीक कर देते हैं। मौसम यहां आज से कुछ ठीक लग रहा है और आज से ही लिखना आरम्भ करने का विचार है। होली के अवसर पर आज को हर साल लेख भेजना पड़ता है। इसके अलावा अन्य पत्र पत्रिकायें हैं। देखा जाय क्या कुछ लिख सकता हूँ। अभी तो सोच रहा हूं कि संसार में वसन्तऋतु का महत्व इसलिए है कि इस ऋतु में बहुत आराम मालूम होता है और लोग झपकियाँ लेकर ऊँघते रहते हैं।

परसों बम्बई से सारिका-सम्पादक कमलेश्वरजी आये हुए थे और कहानी के लिए कह रहे थे। एक गोष्ठी भी हुई। वहां कमलेश्वर को तो समझा मगर रांची में जो नया युग आया है उस स्वर को नहीं समझ सका। मालूम होता है जैसे वे काफ्का का ग्रामोफोन रेकर्ड सुनकर उस तोते की तरह दुहराते हैं। मगर अनुवाद में भूल हो जाती है और जो कुछ वे कहते हैं उसे स्वयं नहीं समझते। दिल्ली अभी जाने का विचार नहीं है। कलकत्ता नजदीक पड़ता है और कम खर्च में काम बन जाता है। हमलोगों के लिए दिल्ली दूर है। सुभाषबाबू का दिल्ली चलो का नारा हमारे पास तक नहीं पहुंचा पाया। आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। यहां भी लड़के फड़के ठीक हैं और चल रहा है।

आपका ही—
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
व्यंगकार

रांची
दिनांक जुलाई २३ १९७४

भाई कन्हैयालालजी

जे पी और भी अधिक आत्ममंथन करें आपके इन शब्दों का अभिप्राय मैं ठीक-ठीक नहीं समझ पाया। अगर आप बिहार में होते तो देखते कि जे पी का आन्दोलन कितनी सफलता के साथ गतिमान है। अहिंसक आन्दोलन में वेग तो जरूर होता है। मगर निर्लज्जता के साथ उस आन्दोलन को नकारा भी जा सकता है। उसी बेहयाई का पल्ला पकड़कर बिहार सरकार चल रही है। ऐसा लगता है कि आप परिणाम देखकर ही इस आन्दोलन की सफलता को स्वीकार करेंगे। उसमें कुछ देर लगेगी, मगर वह समस्त भारत का एक फैसला होगा।

अमृत राय का पत्र कल ही मिला है मगर उसमें उस सम्बन्ध की चर्चा नहा है। मैं उन्हें फिर लिख रहा हूँ। आजकल वे CPI से बौखलाये हुये हैं। शायद इसलिये कि उन्होंने उससे आशायें की थी। आपके पत्र उनकी टंकित प्रतिलिपियाँ आदि भेज चुका हूँ आपके पास।

आप एक मास बाद कलकत्ते आयेंगे। वह समय नजदीक आ रहा है। मैं तो भाई इस मँहगाई और निराशाओं में बहुत टूट गया हूँ और इस स्थिति में हूँ जब अक्ल काम नहीं करती। अपने को बहुत व्यस्त रखता हूँ, बस इससे ज्यादा गति नही मिलती।

उस दिन गुलाबजी का लड़का उनकी गजलों का संग्रह दे गया है। पढ़ता हूँ तो मस्ती आ जाती है। बड़ा अच्छा लगता है। लगता है जैसे मैं भी उनके साथ-साथ गा रहा हूँ। आप की राजस्थानी पुस्तक पाकर मुझे प्रसन्नता होगी। राजस्थानी से मुझे एक प्रकार का मोह है। और आप तो राजस्थानी के लिये शुरू से ही कुछ कर रहे हैं। आपका लगाया नन्हा सा पौधा धीरे धीरे कितना बढ़ गया और किस प्रकार पुष्पित पल्लवित हो रहा है ?

आपका ही
राधाकृष्ण

अब पार्लिटिक्स की ओर भी ध्यान जाता है। लगता है कि पराजय की पगध्वनियाँ इंदिरा गान्धी को पहले से ही सुनाई देने लगी हैं। इसी कारण अब *उनके मुह से असम्बद्ध प्रलाप और विरोधी दलों के प्रति शाप निकल रहे हैं।* मैं यह भी देख रहा हूँ कि देश की दशा और भी खराब होनेवाली है। अनाज की कमी नये सिरे से आनेवाली है क्योंकि पेट्रोल की कमी से नेप्था वगैरह का उत्पादन रुक जायेगा जिनसे रासायनिक खाद बनती है। इस रासायनिक खाद के भरोसे ही Green Revolution का नारा लगाया जाता था।

यानी आप देख रहे हैं मेरा दिमाग अब ठीक काम करने लगा है भले ही वह ठीक दिशा में न हो। कागज की कमी ने पेपरवाला को मार दिया है और पेपरवाला ने हमलोगों को किनारे कर दिया है।

आपसे और भी बहुत कुछ बातें करने का जी चाहता है मगर अभी खत्म करता हूँ।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक है। मैं चाहता हूँ कि निकट भविष्य में आपके दर्शन करूँ। मगर कब सो मैं नहीं कह पाऊँगा।

आपका ही—

राधाकृष्ण

समय बहुत ही गूढ है। खास तौर पर मँहगाई के कारण मेरी स्थिति बहुत गिर गई है। मगर अपना रोना क्या रोवें। अभी का समय ही असाधारण है। जब साधारण समय आवे तब बटुक की शादी आदि के बारे में सोचें। अभी तो दिमाग ही काम नहीं करता।

आजकल आप क्या लिख पढ़ रहे हैं? मुझे तो सब अजीब किस्म का फालतू लगता है। देश की ऐसी हालत है और धर्मयुग जैसे पेपर में बड़े-बड़े बहुमूल्य साहित्यकार इस बात की बहस में पड़े हैं कि साहित्यकारों के लिये पत्नी के अलावा एक प्रेमिका भी बहुत जरूरी है। प्रेमिका ही क्या देखरेख और खाना-खर्चा का बोझ उठाने के लिये और वाह-वाह कहने के लिये एक बाप के साथ-साथ एक दूसरा extra साहित्यप्रेमी बाप भी जरूरी जान पड़ता है। मगर धर्मयुग की बात के आगे मेरी बात कौन सुनेगा?

आप सुजानगढ़ में हैं तो वहाँ जरूर ही साहित्यिक वातावरण होगा। कभी-कभी बड़ी इच्छा होती है कि वहाँ जाकर देखूँ कि आप किन लोगों से मिल रहे हैं क्या-क्या बातें कर रहे हैं। रांची में कभी साहित्यिक वातावरण बनता है कभी बिखर जाता है। अभी १४ ता० को हिन्दी दिवस मनाया गया और रांची के हम चार जाने माने लोग एक ही मंच पर उपस्थित थे—मैं फादर बुल्के, द्वारका प्रसाद डा० रामखेलावन पाण्डेय—और सबके भाषण एकदम अलग-अलग और परस्पर विरोधी दृष्टिकोण के थे। कुछ नये लोग भी मंच पर आये और कुछ सस्ता सुस्ता सुनाकर अपना बुखार उतारा। फिर दूसरे दिन एक कवि सम्मेलन हुआ। जब जमे हुये कवि कविता पढ़ते थे तो नये लोग उन्हें उखाड़ने के लिये टूट करते थे और जब नये लोग कविता पढ़ते थे तो वह किसी की समझ में नहीं आती थी। साफ लगता है कि न भारतवर्ष एक है और न साहित्यिकों की दृष्टि साफ है। क्या होगा? शायद कुछ भी नहीं होगा। हमलोग बड़े उत्साह के साथ एक डग आगे रखते हैं मगर फिर पाँच पग अनायास पीछे हट जाते हैं।

मगर इन बातों में कुछ रखा हुआ नहीं है। अतएव मुझे बस करना चाहिये और आपके आनेवाले पत्र की प्रतीक्षा करनी चाहिये।

आपका ही
राधाकृष्ण

यह पत्र बहुत पहले ही लिखा गया था मगर Post होने में देर हो गई है। बीमार पड़ गया था और डाक में डालना भूल गया था।

२७।९।६४

राधाकृष्ण
व्यगवार

रांची
दिनाक सितम्बर १७, '७४

बन्धुवर सेठियाजी,

आप कहते हैं कि जयप्रकाश नारायण आत्मचिन्तन करें। अगर आप यह भी कहते कि हमारे फखरुद्दीन अली अहमद इन्दिरा गाधी उमाशकर दीक्षित शकरदयाल शर्मा आदि भी आत्मचिन्तन करता बात मेरे हृदय तक पहुचती क्योंकि भारतीय जन जीवन पर कब्जा तो उन्ही लोगो का है। पर इसका मतलब यह नहा है कि म जयप्रकाश नारायण को सोलह आना सही बतलाता हू। इस समय उन्हे प्रबल जन समर्थन प्राप्त है मगर उनकी अपनी अस्थिरता और रोज रोज प्रोग्राम बदलने के कारण आदोलन डूबता जा रहा है। वह समय भी नजदीक आ गया है जब जे पी विहार के आदोलन का भाग्य भरोसे छोडकर चर्खा चलाने लगेंगे या किसी आश्रम म रामभजन करने लगगे। अगर आदोलन मर जाय तो यह मत समझियेगा कि इस आदोलन को विहार की जनता का समर्थन नही प्राप्त था।

आपने सूखे की बात कही है। यहा (छोटानागपुर) सूखाक्षेत्र डिक्लेयर हो गया है। मगर जहाँ तक राहत का बात है सरकार न हमारे छोटनागपुर क्षेत्र म राहत पहुँचाती है और न बिहार के बाढ-पीडित क्षेत्रो म। सबकुछ रामभरोसे चल रहा है और लोग अभी अभाव म छटपटा रहे हैं फिर अक्तूबर स सम्पूर्ण विहार म भुखमरी शुरू हो जायगी। विशेषज्ञो ने भारत का नाम तो नहा लिया है मगर कहा है कि इस वर्ष एशिया म भूख से लगभग दो करोड लोग मर जायेंगे। विहार राजस्थान पूर्वी उत्तर प्रदेश गुजरात और हमारे शासक है जो कान म तेल डालकर पडे हुये हैं। उनका प्रत्येक भाषण होता है कि सरकार को सहयोग दो। शायद वे यह नही सोचते कि उन्हें भी जनता के दुख दर्द का भागी बनना चाहिये। सरकार को शायद तब चेत होगा जब लाखो-करोडो काल के गाल म समा जायेंगे।

आपका पत्र नही मिलने के कारण मुझे चिन्ता हो रही थी। आप सितम्बर के अन्तिम सप्ताह म कलकत्ते पधार रहे हैं यह जानकर प्रसन्नता हुई। आप कलकत्ते म रहते है तो लगता है जसे आप आसपास म है जसे हाथ बढाकर आपको छू लूगा। आपके पत्र से यह भी लगा कि श्री जयप्रकाशजी भी सुजानगढ म हो हैं। यानी पूरा परिवार।

पार्टिया के मतभेद उभरेंगे और झगडे बढेंगे। झगडा ता अभी भी है। हमारी सभा म जनसघ समाजवादी रडिकल आदि सभी सस्थायें एक साथ मिलकर बठती हैं मगर माक्सवादी अपनी सभायें अलग करते हैं क्याकि जनसघ के साथ बैठना उन्हें मजूर नही है। मगर आप यह न भूलिये कि इस बार जनता और युवाशक्ति जीतेगी और अपने मतभेदा और स्वाथ आदि के कारण सस्थायें और भी निबल पडेंगी और बिखरेंगी। ज्यादा शक्ति जनता के हाथ म आयेगी। एक बात और। क्या आप नही कह रहे है कि हेनरी किसिंजर आये और बहुत-सी गुप्त बातें हुइ ? उन बाता का पिटार म बद रखा जा रहा है मगर इतना जरूर है कि निक्सन के बाद अमरिका और भारत क सम्बधा म सुधार हुआ है। यह रूस के बहुत अनुकूल नही है। फिर भी आसमान बहुत साफ नही है। साफ इतना ही है कि कांग्रेस आत्महत्या कर गई और इन्दिराजी अपने एक मुर्दा बच्चे का गाद म चिपकाये हुये है जिसका नाम अब्दुल गफूर है।

आपने ठीक लिखा है कि मुझे भगवान महावीर पर कुछ लिखना चाहिये। सन १६५६ म मैं उनके जन्मस्थान पर भी गया था जब वहा राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद शिलायास करने के लिये पधारे हुये थे। मगर उस समय और इस समय के राधाकृष्ण म खासा अन्तर है। वह राधाकृष्ण रेडियो का एक अफसर था जो महीने म ८५० रु० पाता था। यह राधाकृष्ण फक्कड़ फकीर है और सदा बीमार तथा चिन्तित रहता है तथा उसकी समझ म आता ही नही कि वह क्या लिखे। मगर आपने कहा है तो सोच रहा हू। साथ ही यह भी साच रहा हूँ कि क्या जैन-वाङ्मय का मेरा अध्ययन है ? जसा कि न्यूटन ने कहा था कि ज्ञानसिन्धु के तीर पर मैं कंकड बीनता रह गया। यह भी ठीक है कि न्यूटन की इस उक्ति का किसीने विश्वास नही किया मगर आप मेरी बात का अवश्य ही ...गे। मैं सोच रहा हूँ कि उस समय की बात लिखू जब भगवान ...नागपुर के लोहरदगा (लोहगल) चरिया (चौरग्राम) चाढिल ...रमताल (पुरुलिया) आदि का भ्रमण किया था। राँची जिला ...जाति रहती है जो श्रावक शब्द का अपभ्रंश है। वे लोग बड़ी बुरी अवस्था म रहते हैं तथा कम सख्या म हैं। ...गर जाकर उन्हें देख आऊँ और उनसे मिल कर उनकी ... अपने कहा है तो कुछ तो करूँगा ही। याद आता है कि ...सरोवर को 'सरवाक' का नाम देती हैं क्याकि ...ने तालाब खुदवायें थे। इस तरह की बहुत-सी ...अछूता विषय है।

राधाकृष्ण
व्यगकार

रांची
दिनाक ४ ११ ७४

प्रिय भाई कन्हैयालालजी

आपका पत्र देखने मे तो छोटा रहता है मगर वह इतना गम्भीर होता है कि उन बातो के विश्लेषण म बहुत-कुछ लिखा जाय तब भी ऐसा नहा लगता कि बात पूरी हो गई।

जयप्रकाश नारायण अगर शुद्ध मार्क्सवादी दृष्टिकोण रखे तो वह उन्हे *कम्यूनिस्टो और मार्क्सवादियो की गार्द म फेंक देगा।* गाधीवाद उन्हें भारत और भारत की जनता क पास पहुँचाता है। मार्क्सवाद और गाधीवाद का समन्वय ही उन्हें छात्र और जनमानस का एक सूत्र म बाधने म सफल हो रहा है। वैसे आप देखिये तो नेहरू ही क्या थे क्या सिद्धात था उनका ? एक ही साथ गाधी वाद और पाश्चात्य दृष्टिकोण क गीत गाया करते थे और भारत म सबसे सफल व्यक्ति हुये। सफलता बहुधा किसी सिद्धात या वाद के अधीन नही सफलता सयोग पर निभर है। जयप्रकाश अपने पिछले दिनो म सफल नहीं रहे मगर असफलता तो हमेशा की चीज है और सफलता एक ही बार मिलती है। आज जयप्रकाश भारत का सर्वाधिक सफल व्यक्ति है क्योकि प्रजातत्र का नाम लेनेवाले शासको का नकाब उलट गया है और उनका भयावना और निदय चेहरा साफ नजर आ रहा है। वे छात्रो और जनता पर गोलिया चला रहे हैं और उनके हाथ और मन रक्त स सने हुये हैं। कुल मिलाकर जयप्रकाश अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि के लिये कुछ भी नही कर रहे है और इसके विपरीत इन्दिराजी जो कुछ करा रही हैं वह अपने अहकार जिद और सत्ता क लिये करवा रही हैं। सबकुछ का सक्षेप यह जनता की आर्थिक आजादी की लडाई है जो गाधीजी के अहिंसक तरीके पर लडी जा रही है छात्र जिसके सनिक हैं

आप बगाल की बात कहते है। मैं यहा बिहार म ही देख रहा हू कि यहा के *बगाली इस सम्मेलन का विरोध कर रहे है।* विरोध इसलिये कर रहे है कि वे बिहारियो को कुली-दरवान गाडीवान से अधिक स्वीकार नही कर पाते और *जयप्रकाश जी एक बिहारी है। मगर हवा की रुखने बतला दिया कि राजस्थान* पजाब, दिल्ली जे पी के साथ है। शायद सम्पूर्ण उत्तर भारत जे पी के साथ है। *आपका कहना ठीक है कि जसे इस आन्दोलन को सफलता मिलेगी वसे वसे*

पार्टियों के मतभेद उभरेंगे और झगडे बढेंगे। झगडा तो अभी भी है। हमारी सभा में जनसंघ समाजवादी रेडिकल आदि सभी संस्थायें एक साथ मिलकर बठती हैं मगर मार्क्सवादी अपनी सभायें अलग करते हैं क्योंकि जनसंघ के साथ बठना उन्हें मंजूर नहीं है। मगर आप यह न भूलिये कि इस बार जनता और युवाशक्ति जीतेगी और अपने मतभेदों और स्वार्थ आदि के कारण संस्थायें और भी निर्बल पडेंगी और बिखरेंगी। ज्यादा शक्ति जनता के हाथ में आयेगी। एक बात और। क्या आप नहीं कह रहे हैं कि हेनरी किसिंजर आये और बहुत सी गुप्त बातें हुई। उन बातों को पिटारे में बंद रखा जा रहा है मगर इतना जरूर है कि निक्सन के बाद अमेरिका और भारत के सम्बन्धों में सुधार हुआ है। यह रूस के बहुत अनुकूल नहीं है। फिर भी आसमान बहुत साफ नहीं है। साफ इतना ही है कि कांग्रेस आत्महत्या कर गई और इन्दिराजी अपने एक मुर्दा बच्चे को गोद में चिपकाये हुये हैं जिसका नाम अब्दुल गफूर है।

आपने ठीक लिखा है कि मुझे भगवान महावीर पर कुछ लिखना चाहिये। सन १९५६ में मैं उनके जन्मस्थान पर भी गया था जब वहां राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद शिलान्यास करने के लिये पधारे हुये थे। मगर उस समय और इस समय के राधाकृष्ण में खासा अन्तर है। वह राधाकृष्ण रेडियो का एक अफसर था जो महीने में ८५० रु० पाता था। यह राधाकृष्ण फक्कड़ फकीर है और सदा बीमार तथा चिन्तित रहता है तथा उसकी समझ में आता ही नहीं कि वह क्या लिखे। मगर आपने कहा है तो सोच रहा हूं। साथ ही यह भी सोच रहा हूँ कि क्या जैन-वाङ्मय का मेरा अध्ययन है? जैसा कि न्यूटन ने कहा था कि ज्ञानसिन्धु के तीर पर मैं कंकड बीनता रह गया। यह भी ठीक है कि न्यूटन की इस उक्ति का किसीने विश्वास नहीं किया मगर आप मेरी बात का अवश्य ही विश्वास कर लेंगे। मैं सोच रहा हूँ कि उस समय की बात लिखूं जब भगवान महावीर ने छोटानागपुर के लोहरदगा (लौहर्गल) चेरिया (चौरग्राम) चाडिल (चाण्डालग्राम) पुरिमताल (पुरुलिया) आदि का भ्रमण किया था। रांची जिला में एक सारवाक नामक जाति रहती है जो श्रावक शब्द का अपभ्रंश है। वे लोग पुरातन जैनी हैं और बडी बुरी अवस्था में रहते हैं तथा कम संख्या में हैं। सोचता हूँ कि एक बार जाकर उन्हें देख आऊँ और उनमें मिल कर उनकी रीतियों को समझूं। आपने कहा है तो कुछ तो करूँगा ही। याद आता है कि सिंहभूम की हो जाति सरोवर को सरवाक का नाम देती हैं क्योंकि पुरातनकाल में जैन श्रावकों ने तालाब खुदवायें थे। इस तरह की बहुत-सी बातें हैं। लिखूंगा। एक अछूता विषय है।

मेरी पत्नी को लकवा नही है कोई दूसरी चीज है। न्वा हो रही है। कुछ लाभ भी है, मगर कम।

अभी तो मेरी कोई अक्ल ही काम नही करती कि मैं क्या करूँ। आप बटुक की शादी के बार म कह रहे है और बुद्धदव ने ठीक कहा था कि सब कुछ दुख ही दुख है। खैर, आग फिर लिखूँगा।

जयप्रकाश आदि को शभ आशीर्वाद।

सप्रेम
राधाकृष्ण

५ ११ ७४

जयप्रकाश नारायण का कल मार पडी है और वे बेतरह बौखला गये हैं। स्थिति बेतरह विस्फोटक होती जा रहा है। ऊपर से गफूर और कांग्रेसवाले भल ही प्रसन्न हो मगर भीतर भीतर उनके हाथ मे परिस्थितियाँ खिसकती जा रही हैं।

राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
बुधवार

रांची
दिसम्बर ३१, १९७४

बन्धुवर

वाराणसी में जयप्रकाश ने कहा है कि उनके २७ लाख के कूपनों में १८ लाख का हिसाब लोगों ने नहीं दिया है। इस बात को लेकर बिहार में हंगामा मचा हुआ है। खास तौर पर तो छात्र इतने उत्तेजित हैं कि अगर जयप्रकाश के बदले किसी दूसरे ने ऐसा कहा होता तो उसकी पटरी उड़ गई होती। जो भी हो जयप्रकाश की इस उक्ति ने जयप्रकाश को चाहे जितना सत महात्मा साबित किया हो उनका साथ देनेवाले कार्यकर्त्ता बहुत ही लज्जित और पराजित हैं। मैं स्वयं अनुभव कर रहा हूँ कि जे पी ने हमलोगों को बहुत ही खराब परिस्थिति में पहुँचा दिया है। कल रात एक सभा हुई थी जिसमें जनसंघ वाले इस बात पर सहमत थे कि जन-संघर्ष के सभीलोग सम्मिलित रूप में त्यागपत्र दे दें। मगर समाजवादियों ने कहा कि जे पी के इस कसूर के कारण एक अच्छे और विशाल दृष्टिकोण को लेकर चलनेवाला आन्दोलन लक्ष्यभ्रष्ट हो जायगा। जो भी हो हमलोगों ने तो इस बात पर पर्दा डालने की चेष्टा की है मगर सम्पूर्ण बिहार में एक विकट उत्तेजना है और लगता है कि जे पी की यह उक्ति उनके आन्दोलन को अगर तोड़ न सकी तो कमजोर तो अवश्य ही कर डालेगी। आखिर आपकी बात सच उतरी। जे० पी० को और भी अधिक गहराई में उतर कर आत्मालोचन करना चाहिये।

कल गोरखपुर के सिंघीजी ने कृपापूर्वक आकर दर्शन दिये। बड़ी प्रसन्नता हुई। खास तौर पर इसलिये कि आपलोग हमें कितना निकट और अभिन्न समझते हैं। आपका समाचार मिला। खास तौर पर आपके स्वास्थ्य के बारे में जैसा समाचार मिला उससे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। क्या इस समय आप कुछ लिख रहे हैं? मैं तो देखता हूँ कि रोज रोज की चिंता कुछ भी लिखने से वंचित कर देती है।

इधर मालूम हुआ कि आदरणीय सेकसरिया को भी हृदयरोग ने स्पर्श कर दिया था और वे आराम कर रहे हैं। सुनकर बहुत कष्ट हुआ।

नये वर्ष की बधाइयाँ।

आपका ही—
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
व्यगवार

२१, राधाकृष्ण लेन रांची
फरवरी १७ १९७५

प्यारे भाई कन्हैयालालजी

जब से आया हू आपका व्यक्तित्व मेरे मानस पर छाया हुआ है। मानता हूँ कि इस बार मैंने आपको बहुत कष्ट दिया है। सबसे अधिक दुख तो इस बात का है कि आप बहुत ऊचे ह और मैंने अपने स्वार्थसाधन के लिये आपको नीचे उतारा। पर कभी समय आयेगा तो आप भी मेरी योग्यता देखेंगे और सराहेंगे। आपसे अभी सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि मैं वनस्पति में लता की जाति का हूँ। सहारा मिलने पर बहुत ऊचा उठ सकता हूँ और फल और फूल भी दे सकता हूँ। सिर्फ सहार की जरूरत है।

वहा जाकर सुख भी हुआ। जयप्रकाशजी को देखा और उनकी योग्यता और तत्परता पर मुग्ध हुआ। सिद्धार्थ को भी देखा और उसके उज्वल भविष्य की कामना की। एक प्रकार से आपके परिवार का अग ही बना रहा।

आपने कानोडियाजी के कहानी सग्रह के लिये एक लोककथा की माग की थी। उसके साथ दूसरी लोककथा भी इसलिये है कि कदाचित आपको पसद आ जाय। हमारे देश म एक से एक लोक कथायें हैं। अगर इसका विशाल सग्रह हो तो देश के लोकसाहित्य का गौरव बहुत ही बढ जाय। मगर इसकी खोज कष्टकर और उबा देनेवाली है क्योंकि किसीके पास एक लोककथा है और किसीके पास दो। जिसके पास है वह भी उसकी कीमत नही जानता और उसे उत्कृष्ट ढग से नही कहता। खैर यह गूढ विषय है और इसपर विस्तार से बातें करने का अवसर मिल सकता है, क्योंकि आपका हेल्थ देखकर इस बार मुझे उत्साह हुआ है।

लालटास। मैं अपनी अक्षमता जानता हूँ मगर इससे पहले मुझे मालूम नही था कि स्वय अपने आपको राजस्थानी कहनेवाले भी राजस्थानी भाषा से अनभिज्ञ हैं। मजा यह कि वे गौरव करते हैं कि वे राजस्थानी जानते हैं फिर भी नही जानते। सिर्फ एक सत्यनारायण पोद्दार बोले कि लालाबाबू हम इसे नही समझ सकते तो आप इसे क्या समझेंगे। कई लोग बोले कि यह सुजानगढ की बोली है मेरी भाषा से भिन्न। मैंने कहा सुजानगढ भी तो आपके उसी चूरू जिले म है जहा के रहनेवाले आप हैं। बोलती बद। कहने लगे कि हमलोग तो भाया लालटास नहीं लीलकठ कहते हैं। सत्साहित्य पुस्तकालय से आपका समस्त कृतियो के लिये

आइर जा रहा हूँ। पुस्तकाध्यक्ष से पूछा गया है कि सेठिया की कौन-कौन-सी पुस्तकें पुस्तकालय में हैं। पुस्तकाध्यक्ष अभी समारोह के साथ सरस्वती पूजा कर रहे हैं।

यहा आया तो मौसिम अच्छा था। मगर दूसरे दिन ही बादल ने घेर लिया और वृष्टि होने लगी। दो दिना तक पानी बरसने के बाद आज आसमान खुल गया है और ठंडी हवा चलने लगी है।

बिजनेस की बात लेकर सत्यनारायण पोद्दार के पास गया था। उस समय वे बहुत बीजी थे। बोले कि रविवार को आइये तो जमकर बात हो। रविवार को बसंतपंचमी थी और बेतरह पानी बरस रहा था। आज मौसिम ठीक है मगर मैं जानता हूँ सत्यनारायण पोद्दार व्यस्त होंगे। उनसे बातचीत के लिये अवसर की प्रतीक्षा करनी पडेगी। तब तक जो-कुछ ढेर-सा काम बाकी पड गया है उसे निवटा लूं।

इस बीच एक हंसी का सारियस बात भी हो गई थी। जिस दिन मैं यहा से चला उसी सायंकाल को पुलिसवाले मेरा दरवाजा खटखटा रहे थे। रीता ने दरवाजा खोला तो देखा कि एक डी० एस० पी०, दो पुलिस इंसपेक्टर, दारोगा और सिपाही। उसके तो होश उड गये कि वे बाबा को गिरफतार करने आये हैं। कहने लगी कि वे अभी ही गये है। आपलोग चाहें तो उन्हें स्टेशन पर अरेस्ट कर सकते हैं। वे लोग हसने लगे। बोले कि अरेस्ट करने के लिये हमलोग खबर दिये बिना आपके दरवाजे नही आ सकते। हमारे सीनियर एस० पी० की बदली हो गई है। वे यहा से जा रहे हैं और उन्होंने ही लालबाबू को मिलने जुलने और बातचीत के लिये व्यक्तिगत रूप से बुलाया था। एस० पी० साहब का खयाल था कि आपस में एक दूसरे के प्रति किसी किस्म की गलत फहमी नही रहनी चाहिये। इसीलिये अभी चार्ज देने के बाद उन्होंने कहा कि जरा लालबाबू से मिला दीजिये। जो हो रीता ने कहा संकट टला। मैं तो डर से थरथरा रही थी।

भाई राधेश्यामजी से तो बात करने का अवसर ही नहीं मिला। अगर वे आ गये हों तो उनसे मेरा प्रणाम कह देंगे।

राजनीतिक सूचना यह है, कि १८ तारीख से छात्रगण आकाशवाणी का घेराव करनेवाले है। मैंने तो पहले से ही आकाशवाणी मे जाना छोड दिया है। यह भी एक कारण है कि मेरा अभाव बढता जा रहा है। मगर क्या किया जाय। जन-सम्पर्क-समिति की प्रतिष्ठा भी रखनी पडती है।

सप्रेम,

१८ ता० को जे पी ने छात्रों को बुलाया है। राधा कृष्ण

राधाकृष्ण
व्यंगकार

रांची
दुर्गा नवमी
१३ अक्तूबर, १९७५

बंधुवर

अच्छा हुआ जो आपका काव्य 'ताज' सम्पूर्ण हो गया। आपने जो नमूना *पेश किया है 'जल न भी जले सरे मज़ार दिया' वाकई बेजोड़ है। और इसके लिये मुकर्रर इर्शाद। आपकी काव्य प्रतिभा का एक अदद अच्छा उजाला नजर* आया है। सचमुच आपकी प्रतिभा विविध रूपों में प्रकट हो रही है। अन्तर्मन की विविधता का एक अपूर्व उदाहरण। और बाहरी विविधता के भीतर एक एक अदभुत एकता। जैसे सागर पर चाँदनी पर तिर रहे हों। मूँगा छूते हो मोती बिखेरते हो, मन के कमल खिलाते हो। अपने आप में आप बेजोड़ हैं। आप नित्य नवीन हैं। शायद आप कभी पुरातन नहीं होंगे—आकाश की तरह, जहाँ सूरज आता है चाँद आता है तारे छिटकते हैं। वे आते हैं और जाते हैं और आकाश का पटल नित्य नवीन रहता है जैसे कमल खिलते हैं और जलराशि निर्लिप्त रहती है

आपकी यह तड़प और तत्परता देखकर लगता है कि आपका स्वास्थ्य इन दिनों बहुत अच्छा है। तभी तो मन में उत्साह है और आपका हृदय सागर तरंगों से आलोड़ित है। और मैं हूँ कि मेरे साथ अँधेरा उजाला दोनों चलता है। अपने स्वास्थ्य को अगर अच्छा कहें तो वास्तविकता से ज्यादा कह देंगे। अगर खराब कहें तो वह सरासर झूठ होगा। *अतएव यही कहना उचित है कि दिन दिन स्वस्थ होता जाता हूँ। केवल ऊपरी उत्साह और भीतरी आशा से कुछ नहीं होता। समय निरंतर जटिल और दुर्बोध होता जाता है।* भविष्य तो एक कल्पना है वर्तमान ही कलेजे पर तीर की तरह लगता है और छटपटाते लगता हूँ। लगता है कि यह राष्ट्र यह समाज यह कानून यह व्यवस्था हमारे जैसे लोगों को मार्ग या छाया देने के लिये नहीं है। झाँसा देनेवाले, कपटाचार करनेवाले ही जीवन के सुख के भीतर इस प्रकार घुसते हैं जैसे मक्खन के भीतर छुरी घुसती है।

पिछले दिनों बराबर वृष्टि होती रही थी और मन में जैसे काई पड़ गई हो जैसे अंतःकरण में भूसा गड़ रहा हो एकदम अच्छा नहीं लगता था। मगर

अब चार दिन से वर्षा नहीं है। अब सूर्योदय और सूर्यास्त होता है और आकाश में उजले बादल तैरते हैं। ऐसे समय में कलकत्ते से बहुत-से लोगों का दल राँची आकर आरोग्य भवन में ठहरा हुआ है। उनमें एक श्री राधाकृष्ण नेवटिया भी हैं जिनके साथ मेरा पुराना सरोकार है। यश दीर्घजीवी नहीं होता, मगर एक समय था जब वे कलकत्ते के विख्यात समाजसेवियों में परिगणित होते थे। अब युग बहुत बदल गया है और समाजसेवा का काम करोड़पतियों ने सम्भाल लिया है और आश्चर्य की बात है कि मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी जैसी संस्था में भी हड़तालें होती हैं। जो भी हो मैं उनसे मिलने के लिये दो बार गया था। मुझे स्वयं आश्चर्य होता है कि उनमें बातचीत नहीं होती। अक्सर हमलोग चुपचाप बैठे रहते हैं। यानी जितनी बातें थीं वे सारी की सारी समाप्त हो चुकी हैं। अब कहने-सुनने को कुछ शेष नहीं बचा। सिर्फ उन्होंने पूछा था—'जेल नहीं गये?' मैंने कहा था 'वे ले नहीं गये।' 'आश्चर्य है' उन्होंने कहा और मैंने कहा— मुझे भी आश्चर्य है— और चुप्पी की चादर फैल जाती मगर मैंने पाया कि सन्नाटा भी बोलता है और हमलोग चुप रहकर भी बातें कर लेते हैं। वे यहाँ से फादर बुल्के को लेकर जयपुर जायेंगे जहाँ रामनाथ पोद्दार के किसी मंदिर में बुल्के साहब का रामकथा पर प्रवचन होगा।

गेंद और गोल की प्रति शीघ्र आपको मिल जायगी। सिद्धार्थ को भाई हुआ है इस समाचार ने मन को आनंदित किया है। मेरा आशीर्वाद तो है ही। आपसे मिलने की बड़ी इच्छा होती है। देखिये कब तक मिल पाता हूँ। कलकत्ता मुझे बहुत पसंद आता है और साथ ही साथ कलकत्ते के लिये मन में असीम घृणा है क्योंकि वहाँ के बंगाली अबंगालियों के प्रति विचित्र भाव और अदभुत आक्रोश रखते हैं। इधर गैर बंगाली हैं, उन लोगों ने कला-साहित्य आदि को कौन कहे मनुष्यता का भी मोल गिराया है।

पत्र शुरू किया था कि कुछ दूसरी बात लिखूँगा, मगर वे बातें शुरू भी नहीं हुईं और पत्र समाप्त हो गया।

आपका ही—
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
व्यगकार

रांची
दिनाक जनवरी १३, ७

सुहृदवर

आपका कपापत्र आता है तो लगता है जसे आकाश स टूटकर कोई तारा गिरा और मेरी हथेली पर आ गया। आपके पारदर्शी हीरक मन की पहचान होती है जिस पर सूय और चद्रमा की निश्चर ज्योति बरस रही है। कितना बहुमल्य और कैसा सहज प्राप्य जसे अपना सपना या अपनी ही सास हो। मैं यहाँ जो भोग रहा हूँ उसे आप वहाँ महसूस कर रहे हैं। कितना सवेदनशील मन है आपका जो करुणा के उसी पथ से यात्रायें करता है जिस पगडडी को ऋषि मुनि महात्माओ ने अपने चरण चिन्हो से बनाया था और आगे चले गये थे।

ऐसा नहा है कि मैंने आपको आज ही पहचाना हो। बादलो स भरा हुई ६७ की उस बरसात मे ही मैं ने आपके अन्त करण को दखा परखा था जब मैं लकवा से पीडित था और आप स्नेहवश २०/२२ दिना तक राँचा मे रह गये थे। बडी बात, छोटी बात हर बात से मनुष्य के अन्त करण का परिचय मिलता है। मगर महानगर कलकत्ता, जो इट-पत्थरा से बना है जहाँ की सड़कें और गलियाँ लम्बी तीथयात्रा करने के बदले आपस मे एक दूसरी को काटती रहती हैं जहा की सडकें कोलाहल से मुखर है और जहाँ के श्रेष्ठ जन मात्र भ्रम और अहकार के अधकार मे ही उस अधकार म आप दीपक की तरह पल्लवित-पुष्पित वक्ष की तरह झुके हुये मैं आपका कहकर बतला नही सकता कि जब आप सहायता के लिये मेरी ओर हाथ बढाते हैं तो मुझे कितना सकोच होता है।

जहाँ तक श्री राधाकृष्णजी नेवटिया की बात है उनका हृदय स्वग का टुकडा है। मैं ने उन्हें निकट से देखा है और दूर से भी देखा है। कसा निश्छल स्नेह उन्होने दिया है कितनी प्रीति कितना आशीर्वाद। ३६/३७ वष कुछ कम नही होते। तबसे उन्हें देखता आ रहा हू। इतने महान और इतने अच्छे हैं वे कि आज के इस अधकारमय युग तक नही पहुँच पाये। वे दूसरे महायुद्ध से पूव किनारे के मनोयुग म रुके हुये हैं जब हल्के-से इशारे या अपने हाथ के मैल से भी गरीबो का जीवन निर्माण हो जाता था। आज का परिवर्तित युग अजीब शापग्रस्त और विकट है। प्रजातत्र और सविधान तक को हाई-जैक कर लिया

गया है। आज किसीकी सहायता या सहानुभूति के लिये भी बहुत effort करना पड़ता है। नेवटियाजी के सम्बन्ध बड़े अच्छे लोगों से हैं। वे मेरे लिये कुछ करना चाहें तो क्या नहीं हो सकता। मगर अपने स्वाभाविक संकोच के कारण किसीसे कह नहीं पाते। यदि आप उनसे मिलें तो वे अस्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि आपके लिये उनके मन में बहुत आदर है। मैं ने उन्हें जो पत्र लिखा है उसकी प्रतिलिपि पीछे की ओर है। मैं अब पहले से अच्छा हूँ मगर अत्यन्त अशक्त और दुर्बल अस्थि चर्म अवशेष।

आपका ही—
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
बुधवार

राँची
दिनांक १४ ६ ७५

भाई कन्हैयालालजी,

आप मेरे पत्र की प्रतीक्षा कर रहे थे और मैं इधर विकल तथा कातर था। मेरा एक मित्र है मोहनलाल गुप्त जो "आज" (वाराणसी) में Literary section का editor है। रिटायर होने के बाद भी नौकरी में चिपका हुआ था क्योंकि जानमारू मँहगाई है और उस परिवार का पालन करना होता था। उसे लहू की क होने लगा। अस्पताल गया। वहाँ से लौट कर घर आया तो फिर रोग ने पकड़ा। उसके बारे में बनारस के मित्रों के पास से जो चिट्ठियाँ आ रही थी उन्होंने मुझे उदास कर दिया था। चित्त विकल रहता और किसी काम में मन लगता ही नहीं था। लिखना-पढ़ना सब फिजूल मालूम होता था। अब उसके हाथ का लिखा पत्र आया है तो जरा सन्तोष मिला। आपके ही शब्दों में— गिरते टूटते हैं मरते नहीं। माँ ने कहा। पर बालक रोता रहा।'

'पहरों के गमलों में लगाई जाती है नामों की पौध। गमले टूट जाते हैं रह रहते हैं नाम।' इस अनाम में कैसी ऊँची उड़ानें हैं कापी गहराइयाँ। आँसुओं की मशाल में सत्य और सपने। बड़ा सुंदर सुंदर बातें लिखी हैं—

'पानी को नहीं पचा पाती माटी। माटी को नहीं बहा पाता पानी। वहां से होती है शुरू कीचड़ की कहानी।' कितनी ऊँची उड़ान है— याचना। दान। मात्र मरीचिकायें हैं हथेली की।' हो गया चौकन्ना भीड़ के कोलाहल में रुंधा हुआ रास्ता। दुख हुआ उसे कि वह है क्या इतना सीधा और सरल।

अफसोस है कि मैं आलोचना व्यक्त करना नहीं जानता। केवल रस से प्रयोजन रखता हूँ। यही कारण है कि मैं ठीक से अभिव्यक्ति की राह नहीं पा रहा हूँ। उधर आप चाहते हैं कि मैं आपसे अपने मन की बात कहूँ। मगर गूंगा गुड़ का स्वाद कैसे बताये।

स्वास्थ्य मेरा अच्छा है। इसका मतलब यह नहीं कि भीम या हरकुलिस हो गया हूँ। कुछ कुछ लिखने भी लगा हूँ। मन में बड़ा विद्रोह बजता है। अभिव्यक्ति कलात्मक नहीं हो पाती। प्रयत्न किये जा रहा हूँ। शायद कुछ-कुछ रास्ते पर आ रहा हूँ।

आपकी ओर ध्यान जाता रहता है। आप जून के अंतिम सप्ताह तक आ रहे हैं और जुलाई का दूसरा सप्ताह जा रहा है। कलकत्ते का रौरव। आश्चर्य है कि यहाँ पशुओं के साथ साथ मनुष्य और देवता भी रहते हैं। अजीब जगह है। यहाँ जनों का अपमान भी होता है और आदर भी होता है। हिंसायें होती रहती हैं झूठ की नदी बहती रहती है मगर अहिंसा और सत्य के महत्व पर उपदेश और भाषण भी होते हैं। कलकत्ते में रहने की सीखने की और प्राप्त करने की बड़ी इच्छा रही मगर कभी पैर जम नहीं सका। अब तो जीवन और कामनाओं का लोप हो गया। अब इतना ही है कि आप हैं और मुजफ्फरगढ़ दूर है कलकत्ता नजदीक है।

हाँ, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ने १५ वर्षों के अन्तराल के बाद मुझे फिर से सदस्य मनोनीत किया है। संचालन समिति और परिषद में। ऐसी जगहों में कुछ होता हवाता नहीं। पटने की यात्रा हो जाती है मित्रों से मुलाकात और गपशप हो जाती है। उर्दू अकादमी के डाइरेक्टर मित्र सुहैल अजीमाबादी लिखता है कि इतना भी बहुत है। कम से कम मिल तो लेंगे।

अपना समाचार दीजिए।

आपका ही—
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
[illegible]

२१, रामानरण लेन
रांची
२० दिसम्बर, १९७५

प्रिय भाई

आपका पत्र पाकर मेरी आंखों में आंसू आ गये। आपके मन में मेरे लिये कितनी करुणा है। मगर भाई, बड़ी ग्लानि होती है और बार-बार पछताता हूं। इस जिन्दगी से मर जाना ज्यादा अच्छा है। मेरी प्रार्थना है आप मुझे भगवान को ही समर्पित कर दें। मैं भगवान का त्याज्यपुत्र हूं और वे ही नहीं चाहते कि मेरे लिये कुछ हो। तभी तो इतना कष्ट है।

रोग का कष्ट अभी घटा नहीं है। जयप्रकाश के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सुनकर क्लेश हुआ है।

पहले किताब की जिल्दबंदी नहीं हुई थी इसलिये नहीं जा सका था। अब जिल्दबंदी हो चुकी है मगर मैं ही घर से निकलने के लायक नहीं। इसीलिये किताब नहीं जा पाई। आपको अपनी किताब न दूं तो किसे प्रेजेण्ट करूंगा? किताब शीघ्र ही जायगी।

प्रणाम लें। हाथ से पत्र नहीं लिख पाता इसीलिये टाइप कर रहा हूं।

आपका ही—
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
व्यापार

गया
रविवार ११ अक्तूबर, ७६

प्रिय बन्धु,

इतिहास कहाँ आकर ठहर गया ? ऐसी जगह आकर यह रुक गया है जहाँ इसे रुकना नहीं चाहिये था। मगर वात्याचक्र ही ऐसा है। स्वास्थ्य और शरीर मन का ही दर्पण और छन्द है। मन ठीक नहीं रहता तो शरीर और स्वास्थ्य कहाँ तक ठीक रहे ? पता ही नहीं चलता कि आकाश के सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्र अपनी अपनी जगह पर है या नहीं।

अमरिका का पूँजीवाद है। वह भी दरिद्रों और मजदूरों को नहीं सताता मगर मध्यवर्गीय को लूटता है। साम्यवादी समाजवाद भी अमीरों को नहीं छूता मजदूरों को भी पुष्पक विमान में नहीं बिठाता मगर मध्यवर्गीय को नष्ट करने में तुला रहता है कहिये कि नष्ट कर चुका है। भारत तो दूर की बात है अपने बिहार में ही तरह-तरह के नमूने देख रहा हूँ समाजवाद के। ये रिक्शामालिक कबके पूँजीपति ? ५०० रु जिसके पास हुआ उसने रिक्शा खरीद लिया। वे न टाटा है न बिरला हैं ? मगर रिक्शामालिकों से उनका रिक्शा छीन लिया गया और मजदूरों को उसका मालिक बना दिया। (बैंको से Loan दिये और रिक्शामालिकों का भुगतान हो गया) मगर हमारे जैसे पत्रिक मर रहे हैं। आपके Eastern Trading में रिक्शावालों को पुकारते हुए हमारे घर तक चले आइये मगर उनका मन मिजाज नहीं मिलता। यह स्थिति है। बल्कि उससे भी भयंकर स्थिति है। एक आदमी को रात के ११ बजे Heart attack हुआ मगर उसे रिक्शा नहीं मिला और वह अस्पताल तक (३१/२ मील) पैदल चला गया। नतीजा ? मृत्यु। कैसी करुण स्थिति है ? जब जीवदया की बात आती है तो कहने की इच्छा होती है कि अरे मनुष्य तू पहले मनुष्य पर तो दया कर जीवदया की बात पीछे करना।

पहले के लोग पाप पुण्य की कसौटी पर बात घटना और समस्याओं को तौलते थे। अब तो पाप पुण्य की कोई बात ही नहीं करता। जोड़ घटाव, गुणा भाग की संस्कृति हो गई है। लोग स्वर्ग के देवताओं और मनुष्य को

न्तामाओ के साथ अपना अपना हिसाब करते हैं। परिस्थितियाँ क्षण क्षण बदल रही हैं और सद्भावनायें नष्ट हो रही हैं। आप कहेंगे कि देखो भविष्य में क्या होता है। मैं कहूँगा कि नष्ट होने के बाद भविष्य का क्या देखना और क्या सुनना? ऐसा ही है। जीवन में जरा रस नहीं रहा। आशा ही तो जीवन का रस है। आशायें सूख गईं।

उधर समाचारपत्र नवीन उपलब्धियों से भरे रहते हैं। हमारा रुपया पौण्ड से ज्यादा मजबूत है। मगर मेरे लिये रुपया तो इतना दुर्लभ है जितना पहले कभी नहीं था। वाणिज्य उद्योग-व्यवसाय बढ़ गया है। मगर बेकारों की फौज बढ़ गई है। २० सूत्री आर्थिक योजना आर्थिक योजना अब केवल युवा कांग्रेस और कांग्रेस के लिये। रोजगार के नारे और ठेके उन्हें ही दिये जा रहे हैं जो २० सूत्री आर्थिक कार्यक्रम की प्रशंसा कर रहे हैं। यानी अर्थ ही सबकुछ है बाकी सब व्यर्थ!

व्यर्थ शब्द मन में आता था तो पहले हंसी आती थी। अब नहीं आता। अर्थ में एक नये सत्य का निर्माण हुआ जिसमें धर्म और काम और मोक्ष सबकुछ है। दर्शनशास्त्र व्यर्थ हो गया है साहित्य नीरस हो गया है, संगीत और कविता की ओर तो कोई ध्यान भी नहीं देता। मैं सोचने लगता हूँ कि हम कहाँ जा रहे हैं? हम कहाँ पहुँचेंगे? मुसीबत तो तब होती है जब साहित्यिक और कविगण भी रुपये-पैसे की जोड़ घटाव करते हैं और पैसे से साहित्य और कविता को तौलते हैं। मैंने साहित्य और कलाओं को पैसे से अलग करके रखा और अपने इसी विश्वास के अनुसार अपना विकास किया। मेरी अंतरात्मा कहती थी कि भविष्य में मनुष्य उन्नति करेगा और साहित्य-कलाओं को पैसे से नहीं तौलेगा। मगर मेरी अन्तरात्मा झूठी थी। मनुष्य का विकास उस प्रकार नहीं हो रहा था, बल्कि आज के युग में पैसे का मान बहुत बढ़ गया है। यह पाप मेरे जीवन का बहुत बड़ा धोखा था। मन प्राण कुंठित रहते हैं। मेरी बीमारी का यही रहस्य है। रस घुटता रहता है रोग बढ़ता रहता है।

आपको एक अवांतर भार दे रहा हूँ। इस का विचार नहीं था मगर लाचारी है। दमा का रोग, जाड़ा पहुँच गया और मेरे पास गर्म कपड़ा बिल्कुल नहीं है। कोई उपाय करें? कुरता? बंडी? कोट को गर्म कपड़ा भेजवायें। अगर एक गर्म चादर भी हो तो ज्यादा अच्छा। खादी हो तो सबसे अच्छा।

भेजवाने का उपाय ? अगर कोई मिल जाय (मिलते ही रहते हैं) तो सबसे अच्छा। यदि कोई नहीं मिले तो मालती का लड़का राँची में पढ़ता है। (उसके पिता का नाम है डा० सन्तनारायण उपाध्याय कालीघाट ११ / १ ईश्वर गांगुली स्ट्रीट) देखवा लीजियेगा कि वह कब तक आयेगा। या अगर कोई दूसरा आदमी उपलब्ध हो गया तो सबसे अच्छा।

अब मैंने अपने स्वार्थ की बात लिख दी आपको कष्ट दे दिया अब आगे मेरा लिखा जा रहा है। बाकी दूसरे पत्र में।

सप्रेम,
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
रांची

ब्यगवार
शनिवार २३ अक्तूबर ७६

प्रिय बन्धु कन्हैयालालजी

आपका पत्र मिला। मैं आपके पास पत्र भेजकर लज्जित था और आपका पत्र आ जाने के बाद लज्जा की सीमा नहीं रहा। आप उस बात को मजाक में लीजियें। मैं एक चलन तत्व हूँ। पार्थिववाद के दृष्टिकोण को सह सकता हूँ। पार्थिव वस्तुओं को उतना महत्व नहीं दे सकता हूँ जितना महत्व दूसरे लोग देते हैं। ६५ साल की उम्र कम नहीं होती। अवसर भी मिले हैं पाजीशन भी पाया मगर न कभी बाहरी सम्मान को सम्मान माना और न पार्थिवता को महत्त्व दिया। आज भी हमारी जो स्थिति है वह इसीलिये ऐसा है कि राजनैतिक मार से पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति निरंतर बिगड़ती गई और तो इतनी खराब हो गई है (free lancer के लिए) कि अब आशा नहीं की जा सकता। मैं भी Hoping against hope में नहीं रहा बीमारी के कारण परेशान रहा।

जो हो उस सम्बन्ध में आप सोचिये ही मत। मुझसे जो गलती हुई उसे क्षमा कर दीजिये। अब मेरे लिये किसीसे कहने-सुनने की जरूरत नहीं। लगता है भगवान मेरे योग क्षेम के लिये अपने ढंग से सोच रहे हैं। सितम्बर ६ ता० को ही मिल गया था जिस दिन आपको पत्र लिखा था कि मिल जायगा। स्वास्थ्य की खराबी के कारण उस गहराई में नहीं पढ़ पाया। आपकी कवितायें मस्तिष्क की उर्जा ज्यादा लेती है। यही कारण है कि उसके सम्बन्ध में नहीं लिखा।

इसके अलावा लोग आते ही रहते हैं। उस समय डा० शिवनाथ (शान्तिनिकेतन) आये थे फिर पटना से रामगोपाल शर्मा "रुद्र" आ गये उसके बाद मनोहरश्याम जोशी (सम्पा साप्ता हिन्दुस्तान) आये भूपेन्द्र अबोध आये अब विष्णु प्रभाकर आ रहे है। यह सब भी समय लेता ही है।

इस बीच १९ ता० को किसी तरह भेज पाया कन्हैयालाल सेठिया मेरी दृष्टि में। मेरी दृष्टि में कविताओं और शब्दों के टुकड़े नहीं थे, मैंने सम्पूर्ण कन्हैयालाल को देखने की चेष्टा की है। ढंग भी नया है। अब मैं अपनी तारीफ क्या करू। आप पढ़कर लिखयेगा कि आपको कैसा लगा? हां मेरा दृष्टिकोण उन आलोचकों की तरह नहीं था जो सरल को भी गूढ बनाते हैं और दुरूह ढंग से लिखते हैं।

आपका यह पत्र आया है तो मैं सोच रहा हू कि अपने को प्रसन्न रखना चाहिये। तब सोचा कि कुछ ऐसा लिखू। शुरू कर रहा हू 'फाहियान की दूसरी भारतयात्रा'। आज के युग में फाहियान आया है और देख रहा है और हंसी आती है। (पहली बार वह गुप्तकाल में आया था यानी जो समय गुप्त हो)।

क्षमाप्रार्थना के साथ

आपका हो—
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
व्यंगकार

२१ राधाकृष्ण लेन
रांची
सायंकाल ११ ११ ७६

प्यारे भाई,

निग्रन्थ के पन्ने उलटकर तो मैं चमत्कृत रह गया। आपने जैसे महाकाश को दियासलाई की छोटी सी डिबिया में बंद कर लिया है। सम्पूर्ण जन दर्शन इन छोटी छोटी कविताओं में अपने पूर्ण प्रकाश के साथ प्रतिबिम्बित है। जैसे ओस की बूंद पर सूर्य की परछाई पड रही हो।

मैं पढ रहा हूं पढूंगा और समय निकालकर आपके पास अपना विचार भेजूंगा।

अभी मन ठीक नहीं है। मनस्थिति इतनी खराब हो गई है कि पार्थिवता और जड शरीर के सिवा मन ऊपर उठता ही नहीं। लगता है जैसे चेतन तत्व यहां है ही नहीं जैसे मनोमय लोक का अस्तित्व ही नहीं। सम्पूर्ण धरित्री ने मुझे अस्वीकार कर दिया हो और मैं नितान्त व्यर्थ हो गया हूं। ऐसा कारण मैं आपकी कविताओं की भावना के प्रकाश के साथ चल नहीं पाया। मात्र अंधकार चाहता हूँ जहां सोया जा सके और अपने आपको भूला जा सके। मगर यह भी ठीक है कि ऐसी स्थिति सदा नहीं रहेगी। तब पढूंगा। तब आनन्दलोक में आपकी कविताओं के साथ भ्रमण करूँगा और आपकी वाणी में जो सत्य है उसका ध्यान करूंगा।

आशा है आप प्रसन्न हैं। आदरणीय भुवालकाजी द्वारा भेजी गई चीजें अभी तक नहीं पहुँच पाई हैं। अगर आपके पास रहता तो ५ ता० को ही पहुंच गई होती। वैसे मैंने आदरणीय नेवटियाजी के पास लिखा है (५ को और ८ को) कि उसे लक्ष्मी टेक्सटाइल में भेज देने पर पहुंच जायगा। मगर कहा है कि समय पाई तरुवर फरे।

आपका ही
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
व्यापार

गोवा
दिनांक २६.९.७७

बन्धुवर

आपका कृपापत्र मिला। राजनैतिक पार्टियाँ भी देखने में नारंगी की तरह मालूम होती हैं। मगर भीतर खोलिये तो अलग-अलग फाँक हैं। आजकल जनता पार्टी के अन्याय की धूम है। आपका कहना ठीक है कि देश का भविष्य चिन्तनीय है। आशा भी नहीं है कि गांधीजी के समान व्यक्तित्व अपनी लकुटी धारण किये जनजीवन के समक्ष प्रकट होगा। इतना विशाल देश मगर व्यक्तित्व एक भी नहीं। सत्तालोलुप लोग पागल की तरह बतियाते हैं वाद करते हैं और देश को प्रगति की राह पर आने नहीं देते। हार कर मैं तो अब युवकों का ही समर्थन करने लगा क्योंकि भविष्य उनका ही है। जनता पार्टी ने जिस ढंग से टिकट बाँटा है उससे लोग क्षुब्ध हैं। युवा गण ने इस झगड़े का विद्रोह किया है और चुनाव लड़ रहे हैं।

मौसम यहाँ भी ऊटपटाँग है। अनाप शनाप परमाणु विखंडन और वायु प्रदूषण! क्या हो? मौसम गड़बड़ स्वास्थ्य गड़बड़ और राजनारायण-सरीखे Public Health के मंत्री। श्वासरोग ने मुझे निकम्मा कर दिया। न कहीं आना जाना न लिखना पढ़ना। बस लड़खड़ाता रहता हूँ। अब यह आशा भी नहीं रही कि पहले का स्वास्थ्य प्राप्त कर लूँ। इसलिये ऐसी परिस्थिति पर सन्तोष करना पड़ता है।

आपका पत्र आता है तो लगता है जैसे कोई आत्मीय आ गये। आपसे भेंट हुये भी काफी दिन हो गये। चि० विनय की शादी में भी जाने से स्वास्थ्य ने रोक लिया।

सप्रेम,
राधाकृष्ण

राधाकृष्ण
व्यागवार

रांची
दिनांक १२ ६ ७७

प्यारे भाई

सादर वंदे !

आपका तार पाकर मुग्ध हो गया। जिस जन्मदिन को मुझे भी याद नहीं था उसे आपने याद किया और बधाई भेजा। बस जिस प्रकार मनुष्य अपने मरण को भूला रहता है उसी प्रकार मैं अपने निकम्मे और बीमार जीवन को भूल चुका हूं क्योंकि यह जीवन व्यर्थ है कष्टदायक है निकम्मा है। अब तो इतना रुग्ण रहने लगा हूँ कि याद भी नहीं आता कि कभी अच्छा था और खूब काम करता था।

भगवान आपके स्वास्थ्य को समथ करें---उस दयालु करुणावरुणालय से यही प्रार्थना है। पेपर में पढा था कि कलकत्ते में बहुत वृष्टि हो रही है। बहुत वृष्टि यहां भी हो रही है मगर वह पेपर में नहीं छपता सिर्फ मेरा स्वास्थ्य खराब करता है।

कलकत्ते में आनन्दबाजारवालों ने 'रविवार' नामक एक खूबसूरत साप्ताहिक निकाला है। पाठ्यसामग्री कुछ खास नहीं मात्र मनोरंजक है। हां खूबसूरत बेहद है। इस बात से याद आया कि श्री कृष्णचंद्र अग्रवाल पिछले दिनों मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की हीरक जयन्ती के सिलसिले में आये हुये थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में रांची के मारवाड़ियों पर कुछ रिमार्क किया जिससे कतिपय मारवाड़ी युवक उनसे रुष्ट हैं।

राजनीति की हलचल और अभावों ने रांची के जनजीवन से साहित्यिक समारोहों को उच्छिन्न कर दिया। अब मात्र विश्वविद्यालय A G Office आदि में साहित्यिक सभायें होती हैं जहां श्रोता और वक्ता दोनों सुलभ रहते हैं। इधर भारी अभियंत्रण निगम (H E C) के हिन्दी परिषद ने १४ और १५ को हिन्दी सम्मेलन रखा है जिसमें साहित्यिक तो आयेंगे ही एक-आध मिनिस्टर भी आयेंगे। १४ को डा० सत्यनारायण सिन्हा (मिस्तर युनि जमना) सभापति रहेंगे जो आपके परिचित मित्र हैं। १५ को प्रांगण में 'हिन्दी और शिक्षा का माध्यम हिन्दी' पर खुब भाषण होंगे। अध्यक्ष रामदयाल पाण्डेय। उस दिन

दो व्यक्तियों का सम्मान भी किया जायगा (१) स्व० फादर कामिल बुल्के और (२) राधाकृष्ण। अयात ? अर्थात् आदमी जुटाने के लिये बढ़िया सांस्कृतिक प्रोग्राम रखा गया है। एक आयोजिका डा० उषा सक्सेना से मैंने कहा इससे भी ज्यादा अच्छा तो तब प्रोग्राम होता जब फादर बुल्के और राधाकृष्ण अपना dance दिखलाते।

सप्रेम
राधाकृष्ण

श्री राजस्थान ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम रतनगढ़

दिनांक २ अप्रैल १९६२

सेवा में,
माननीय श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सुजानगढ़

आपको सादर सूचित करते हुए मुझे अतीव हर्ष हो रहा है कि आश्रम की उच्च सत्ता प्रबन्ध कारिणी सभा ने अपनी दिनांक १ अप्रैल ६२ की बैठक में सर्व सम्मत राय से यह निर्णय लिया है कि आपको आश्रम के इस वर्ष रामनवमी के दिन दि० १३ अप्रैल १९६२ को होनेवाले ४० वे वार्षिक महोत्सव पर "साहित्य मार्तण्ड" की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया जाये।

आप आश्रम के परम हितैषी एवं राजस्थान के प्रमुख साहित्य सेवी हैं। प्रबन्ध कारिणी सभा आपको "साहित्य मार्तण्ड" की उपाधि से सम्मानित करने में गौरव का अनुभव करती है।

आप से विनम्र निवेदन है कि आप इस महान आयोजन पर पधार कर अपना सम्मान पत्र अधिग्रहण करने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

भवदीय
शिवानन्द 'आनन्द' विद्यावाचस्पति
कुल सचिव

राजस्थान साहित्य अकादेमी (संगम), उदयपुर

प्रेषक

संचालक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर (राजस्थान)

दिनांक २०.८.६२

सेवा में
श्रीयुत कन्हैयालाल सेठिया
सुजानगढ़ (राजस्थान)
पत्र सं० ६२१

महोदय

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) उदयपुर के संविधान की धारा १२(अ) के उपनियम ४ के अनुसार आप श्री को राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) की सरस्वती सभा (जनरल कौन्सिल) के सदस्य निर्वाचित किया गया है कृपया अपनी स्वीकृति प्रदान कर अनुगृहीत करें।

भवदीय
एल एल व्यास
संचालक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर (राजस्थान)

राजस्थान साहित्य अकादेमी
(राज्यस्तरीय स्वायत्तशासी साहित्यिक
संस्थान स्थापित १९५८ ई०)
क्रमांक सभा/वापि/७६।४६६०

फोन कार्यालय ३४७७
निवास ४४६८
उदयपुर
दिनांक १० ६ ७६

श्री कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ़ (राज०) चरू

यह सूचित करते हुए हर्ष है कि अकादमी-संचालिका ने आपकी साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए इस वर्ष अक्टूबर में आयोज्य वार्षिकोत्सव एवं साहित्यकार सम्मान समारोह के अवसर पर आपको विशिष्ट साहित्यकार (हिन्दी) के रूप में समादृत करने का निर्णय किया है। वार्षिकोत्सव एवं साहित्यकार सम्मान समारोह सम्भवत दिसम्बर १९७६ में होगा। वास्तविक तिथियों की सूचना आपको यथासमय दी जा सकेगी। आशा है आप इस अवसर पर अवश्य पधार कर हमें अनुग्रहीत करेंगे।

कृपया इस समादरण तथा समारोह में पधारने की स्वीकृति भिजावें। साथ ही अपना परिचय तथा पासपोर्ट आकार का एक साफ सुथरा चित्र भी भिजवाने का कष्ट करें।

भवदीय
निर्देशक

डॉ० प्रकाश आतुर
अध्यक्ष
राजस्थान साहित्य अकादमी

फोन कार्यालय ३८७७
निवास ६२२६
८६१७

२४६ भूपालपुरा
उदयपुर ३१३००१

क्र० २२०२

दिनांक ८.७.८३

आदरणीय मटियानीजी

सादर प्रणाम। सूचनार्थ निवेदन है कि राजस्थान साहित्य अकादमी ने आपको साहित्य मनीषी उपाधि से अलंकृत करने का निर्णय लिया है।

वस्तुतः आपका अलंकरण कर अकादमी स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करना चाहती है। अलंकरण के अन्तर्गत ५००१.०० रु० की नकद राशि, शाल, सम्मान पत्र तथा अकादमी के हिन्दी प्रकाशनों का एक सेट भेंट स्वरूप सादर अर्पित किया जाएगा।

कृपया लौटती डाक से अपनी सहमति एवं स्वीकृति प्रदान कर अनुगृहीत करें।

धन्यवाद।

विनीत
डा० प्रकाश आतुर
अध्यक्ष

डा० कन्हैयालाल सहल
प्राध्यापक साहित्यकार

पिलानी
दिनांक ११ १२ ५७

प्रिय श्री मेठियाजी

आपका ६ १२ ५७ का पत्र मिला। आपका लिखना यथार्थ है। अधिकारियों से अशुद्धियों आदि के संबंध में मेरा पत्र व्यवहार पहले से ही जारी है। आपसे अनुमति नहीं ली गई यह जान कर बड़ा आश्चर्य और दुःख हुआ। इस संबंध में मैं जानकारी कर रहा हूँ और आपको उत्तर दूँगा। इतना सब कुछ होने के बाद भी मैं अपने दायित्व से इन्कार नहीं कर सकता। निश्चय ही जिस स्थिति का उल्लेख आपने किया है वह अत्यन्त शोचनीय है और उसके लिए हिन्दी पैनल की ओर से मैं विनम्रता पूर्वक आपसे क्षमा-याचना करता हूँ। आशा है आप अपनी उदारतावश क्षमा करेंगे। त्रुटियों के परिमार्जन आदि के लिए यथाशक्य प्रयत्न करूँगा।

स्नेहाधीन
कन्हैयालाल सहल

(राष्ट्रीयकरण बोर्ड राजस्थान द्वारा श्री सेठिया की अनुमति बिना पाठ्य पुस्तकों में उनकी रचनाएं सम्मिलित करने तथा उन्हें अशुद्ध छापने के सन्दर्भ में दिए गये पत्र का प्रत्युत्तर)

डा० कन्हैयालाल सहल
वाइस प्रिंसिपल

बिरला आर्ट्स कालेज
पिलानी (राजस्थान)
दिनांक २१-१-६०

प्रिय श्री सेठियाजी

पाठ्य पुस्तक राष्ट्रीयकरण बोर्ड के मंत्री महोदय के नाम जो पत्र आपने भेजा था उसकी प्रतिलिपि मुझे मिली है। पाठ्य पुस्तकों में जो पाठ लिये गये हैं उनमें लेखकों तथा कवियों के पत्र पुष्प विषयक एकरूपता के निर्वाह की चेष्टा की गई है। श्री सोहनलाल द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास रामनरेश त्रिपाठी आदि ने एक रचना के लिए एक मुश्त ५० पचास रुपये द्वारा अपनी स्वीकृति दी है। आशा है जैसे उक्त विद्वान् लेखकों और कवियों ने मेरे आग्रह की रक्षा की है वैसा ही आप भी करने की कृपा करेंगे। श्री मथिलीशरणजी तथा सियारामशरणजी ने १०० रु० लेकर स्वीकृति की बात लिखी है। आप चाहें तो उक्त लेखकों द्वारा हस्ताक्षर दिया हुआ मूल पत्र भिजवा दूँ। मेरे लिखने का तात्पर्य आपकी माँग को अनुचित ठहराना नहीं है। उसके औचित्य के संबंध में मुझे कुछ नहीं कहना है। आशा है यथाशीघ्र उत्तर भिजवा कर अनुगृहीत करेंगे। आप सानंद एवं स्वस्थ होंगे।

आपका,
कन्हैयालाल सहल

डॉ दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'

24677
विजय भवन
सिविल लाइन्स कोटा
दिनांक 4/11/87

श्रीयुत सेठियाजी
सप्रेम नमन।

परसों रात को जाकर स्नेह विन्दु ले आया हूँ। उसी रात को ही 2 घंटे जग कर उसे आद्योपांत पढ़ गया हूँ) प्रणाम और निग्रन्थ की परम्परा देह विदेह में पूरी तरह अनुसरित हुई है। आपका अनुभूत अध्यात्म चिंतन सर्वत्र मुखर है। सूत्र शैली में कहा हर बात अपने अर्थ गौरव के क्षितिजांत व्योम को स्पर्श किए है। सरस प्रवाहमयी तत्सम शब्दावली प्रौढ़ता की अमिट छाप मन पर छोड़ती है। प्रसाद गुण शब्द लालित्य तथा भाव गाम्भीर्य से सभी रचनाएं नव शिव आप्लावित है। एक और श्रेष्ठ रचना के लिए भूरि भूरि प्रशंसापूर्ण साधुवाद। इस आयु में आपने जिस गति से रचनाओं को आकार दिया है यह देख मेरा यह विश्वास दृढ़ हुआ है कि सृजनशील रचनाधर्मी की ऊर्जा क्षीणता के क्षणों में भी बनवती रहती है। आप लिखें और लिखें लिखते रहें यही जिनेन्द्र से कामना है।

जनवरी में मेरी भी कोई कृति शायद आ जाये। एक वर्ष हो गया। प्रकाशक ने पटक रखी है। भेजूंगा।

आपने जिस मनोयोग से रचनाओं का प्रकाशन दिया है उससे आपके सौन्दर्यबोध का आभास मिलता है। स्नेह विदेह का हर चिकना पृष्ठ स्पृहणीय एवं वरेण्य है। वह आपकी हस्तलिपि पाकर सनाथ हो गया है। एक बार और साधुवाद।

आपका ही
दयाकृष्ण

डॉ. मेजर रामप्रसाद पोद्दार, बी ए
उद्योगपति

मचुरी भवन
डा. एनी बेसेण्ट रोड
बम्बई-400 025

दिनांक 26 दिसम्बर '88

आदरणीय श्री सेठियाजी,

सादर प्रणाम।

आपको भारतीय ज्ञानपीठ ने आपकी कृति निर्ग्रन्थ पर पुरस्कार देकर सम्मानित किया यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे इस बात का गर्व है कि आपने हमारे समाज को भारी गौरवान्वित किया है। मेरा और से हार्दिक अभिनन्दन स्वीकार करें। आपके भाषण की प्रतियां भी मुझे मिल गई हैं। वह भी काफी श्रेष्ठ एवं सामयिक है।

विनीत,
रामप्रसाद

प्रफुल्ल चन्द्र ओझा 'मुक्त'

बी ११६ पाटलिपुत्र नगर
पटना ८०००२०
दिनांक १८ ५ १९८६

प्रिय सेठियाजी

सप्रेम नमस्कार। १३ तारीख की शाम को ओपीनगाडी के बाद जब मैं आपके आवास से बाहर निकला तो टैक्सी पाने में मुझे काफी परेशानी हुई। एक बालक ने न केवल मेरे लिए टैक्सी लाकर बल्कि मुझे कुर्सी से स्थान पर खड़ा कराके और टैक्सी वाले को आवश्यक हिदायतें देकर मेरी बड़ी सहायता की। उसके बाद के दो दिनों में मैं बहुत व्यस्त रहा और उसके बाद कलकत्ता से वापस चला आया। आपसे फिर मिलना नहीं हो सका।

आपके पास बैठना और आपकी बातें सुनना बड़ा सुखद होता है। आपके मौलिक चिन्तन से मैं सदा प्रभावित रहा हूँ। वस्तुत आप अपने काव्य सूत्रों द्वारा सत्य का विराट द्वार उद्घाटित करते हैं और श्रोता के मन को स्तब्ध तथा चकित कर देते हैं। बार-बार विस्मय विमूढ़ होकर मैं सोचता हूँ कि वस्तुत आप कोई योगभ्रष्ट ऋषि हैं जिसने मूल्य हीनता और आस्था हीनता के इस युग में मानवमन को सत्य का इंगित करने के लिए जन्म धारण किया है ?

प्रभु से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि वह आपको शतायु बनायें सदा स्वस्थ प्रसन्न रखें और आप अपने वचामृत काव्य के सहाय मोतियों से भारती का भंडार भरते रहें।

अपनी जीवन संध्या में भी मुझे आपसे बार-बार मिलने और आपकी बातें तथा आपकी कविताएँ सुनने की लालसा बनी रहती है।

आशा करता हूँ, जुलाई के अंतिम सप्ताह में फिर मैं आपसे मिलने का सुयोग पा सकूँगा।

सप्रेम–'मुक्त'

राजस्थानी भाषा खण्ड (१)

राजस्थानी भाषा को भारत के संविधान मे मान्यता दिलवाने के लिये श्री सेठिया द्वारा प्राय आधी शताब्दी से किये जाने वाले अथक प्रयासों की कहानी, पत्रों की जबानी।

शौचगृह का प्रबध पूर्णतया सतोषजनक होना चाहिअे। मेरे लिअे अलग शौचगृह का प्रबंध हो सके तो उत्तम। तीन दिन तक अेक स्थायी मेहतर रखने का प्रबंध कर सकें तो और भी अच्छा जैसा आप उचित समझें करें पर सफाई का प्रबंध सतोषजनक होना चाहिअे।

आशा है आप सानंद होंगे। प्रोग्राम छपने पर भेजने की कृपा करें।

सबको प्रणाम

भवदीय
नरोत्तमदास स्वामी

नरोत्तमदास स्वामी
राजस्थानी भाषा के विद्वान

बीकानेर
दिनांक १९४८

प्रिय कन्हैयालालजी,

जय भारत। कृपापत्र मिला। बड़ी प्रसन्नता हुई, राजस्थानी के लिअे व्याकुलता रखने वाले व्यक्ति हैं तो सही। अब वह नहीं मर सकती। विधान परिषद, व्यासजी आदि को यहां से भी तार भिजवाये थे पर किसी का कोई उत्तर नहीं आया।

राजस्थानी आंदोलन का नेतृत्व करना मेरे वश की बात नहीं। दौड़ना भागना लोगों से मिलना मिलाना उन्हें कायल करना भाषणों या लेखों के द्वारा धुआंधार प्रचार करके अेक आंदोलन खड़ा कर देना ये काय मेरे लिअे संभव नहीं। आप जैसे व्यक्ति उन्हें सफलतापूर्वक कर सकते हैं। मैं आप के साथ हूं। परामर्शक का कार्य करता रहूंगा पर क्रियात्मक कार्य तो आप ही को करना होगा। सब के लिअे अनेक व्यक्तियों की आवश्यकता है पर अेक व्यक्ति इसके पीछे पड़ जाने वाला होना चाहिअे। जब तक असा व्यक्ति नहीं होगा आंदोलन चल नहीं सकेगा। असे ही व्यक्ति की आवश्यकता है।

अभी हम यह मांगना है—

१ राजस्थानी को राजस्थान की अेक भाषा स्वीकृत कर लिया जाय जिसमें यहां के लोग चाहें तो अपने प्रार्थनापत्र (far the redress of grievances etc) दे सकें।

राजस्थान संघ की राजभाषा हिंदी रहे हमें आपत्ति नहीं। न्यायालयों की राजभाषा हिंदी रहे हमें आपत्ति नहीं पर लोगों को यह अधिकार होना चाहिअे कि वे अपनी अर्जियां आदि राजस्थानी में दे सकें।

२ शिक्षासंस्थाओं में राजस्थानी को भी स्थान दिया जाय। हिंदी अनिवार्य रह सकती है पर राजस्थानी को अनिवार्य नहीं तो कम से कम अैच्छिक विषय के रूप में स्थान दिया जाय—

श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा (नाहटों की गवाड़ बीकानेर) से भी पत्र व्यवहार करें। वे बहुत अच्छे सहायक सिद्ध होंगे। साथ ही नाथूरामजी खड़गावत (भारतीय विद्यामन्दिर बीकानेर) से भी।

भवदीय
नरोत्तमदास स्वामी

गोकुल भाई भट्ट
सांसद

३२ कैनिंग लेन
नई दिल्ली
दिनांक १८ ११ ६६

प्रिय भाई कन्हैयालालजी

आपका पत्र मिला। मैंने आपकी यहां की स्थिति समझा दी थी। अगर फिर मैं कोई मौका आयेगा तब मैं राजस्थानी के विषय में बात करूंगा मगर वे संभव कम है। अगर राजस्थान की किसी रियासत ने राजस्थानी को पहले में स्थान दिया होता तो राजस्थानी का समर्थन होता। सब रियासतों ने हिंदी को ही राजभाषा माना था इसलिये मुझे खास मौका नहीं मिलता है।

आप आनन्द में होंगे।

आपका
गोकुलभाई भट्ट

No CA/5/Cons/49

CONSTITUENT ASSEMBLY OF INDIA

Council House
New Delhi
September 28 1949

To

The Secretary
Rajasthan Sahitya Sadan
Sujangarh (Rajasthan)

Dear Sir

I am desired to acknowledge the receipt of your communication dated the 1st September 1949 requesting for the inclusion of Rajasthani in the Schedule containing the list of Regional languages

Yours truly

(S N Mukerjee)
Joint Secretary

Sri Kanhaiyalal Sethia
Secretary
Rajasthan Sahitya Sadan
Sujangarh

जयनारायण व्यास
राजनेता

३१ फिरोजशाह राड
नई दिल्ली
दिनाक २६ ११ ४६

प्रिय सेठियाजा

सप्रेम जयहिन्द--पत्र मिला। अभातक सिराहा क प्रश्न की अत्येष्टि नहा हुई है। अत सिरोही दिवस मनता मरने के पहिले मरसिया गाना हागा।

'राजस्थानी' भाषा है और उसका प्रचार और प्रसार होना चाहिये यह राय मेरी पहिल था और अब भा है पर एक खानगी सी मीटिग म मैंने अपने समाजका अवश्य कोसा कि उसने इस भाषा का जीवित और प्रचलित रखने के लिये कुछ नही किया जिसस लोगा को हमारी भाषा को मान्यता नही दने का साहस और उत्साह हो जाता है। मन यतिया की पोशाला का कभी जिक्र किया था। जिसके द्वारा भाषा जीवित थी पर हमारी उपेक्षा से वे भी समाप्त हो गई। अखबारा ने एक ही बात को ज्यादा प्रकाशन दिया है।

नवयुग म प्रकाशित कविता का कवि पुराना काम है आज का नहा। कल एक 'लोकराज आपको मिलेगा। आशा है अब तो आप स्वस्थ होगे ही।

आपका
जयनारायण

ब्रिजलाल बियाणी
राजनेता

तार बियाणी
फान ५५
राजस्थान भवन
अकोला (वरार)
दिनाक २० दिसबर ४६

भाई कन्हैयालालजी,

सविनय व-दे। आपका ता ११ ११ का कृपा पत्र यथासमय आया।

उदयपुर के भ्रमण के पश्चात मैं बिमार होगया और कुछ दिन काफी अस्वस्थ रहा। अत पत्र का उत्तर नही दे सका। अब दो तीन दिन से तबियत ठीक है। चिन्ता का कोई कारण नही।

सरदारशहर म जब से आपके दशन हुए तबसे आपके साथ ममत्व का नाता बन गया है। आपके स्वभाव का और आपकी प्रतिभा का मुझ पर स्थायी असर है। आपके हाथा साहित्य तथा अ-य सावजनिक क्षेत्रा म खूब काय हो यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

राजस्थानी भाषा के विषय म आपके विचार जाने। राजस्थान के बहुताश साहित्यका और कायकर्ताओ की इस विषय की ममत्वपूण भावना को मैं जानता हूँ। उस भावना की इज्जत भी करता हूँ। उदयपुर म भी कायकर्ताओ से इस विषय की चचा हुई थी। मेरी राय अभी भी वही है। और चाहता हू कि राजपुताने के साहित्यिक अपनी शक्ति हिन्दी भाषा के विशाल दायरे म खच करें। इससे व्यक्तियो का स्थान तो बनेगा ही परतु राजस्थान की भावी पीढ़ी का निश्चित कल्याण होगा। भविष्य क भारत की स्थिति और आवश्यकताओ का देखकर हम वतमान का निणय करना चाहिए। आप भावना रहित मनोवृति से इस प्रश्न का अवश्य विचार करें।

जेल म मेरी पुस्तक के विषय म आपके विचार पढे। हष होना स्वाभाविक। आपको किताब पस-द आयी। इससे मुझे बल मिला है। आपकी लिखी समालोचना 'अमर भारत' म प्रकाशित होगयी होगी। मैं देख नही सका हू।

नोट यह पत्र बरार केसरी स्व ब्रिजलालजी बियाणी का है। इस पत्र का दूसरा पृष्ठ उपलब्ध नही हुआ।

कन्हैयालाल मा० मुन्शी
कृषि मंत्री भारत सरकार

नं० एच २६० ५० पीएम
१ क्वीन विक्टोरिया रोड
नई दिल्ली २
दिनांक अगस्त ४ १९५०

श्री भाई

आपका तारीख २७ ७ ५० का पत्र मिला। इसके लिए धन्यवाद। राजस्थान में ता सर्वत्र हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है फिर राजस्थानी भाषा को स्वीकार कराने से क्या फायदा है।

भवदीय
क मा मुन्शी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
श्री राजस्थान साहित्य मंदिर
सुजानगढ़ बीकानेर

ले कमांडर शुकदेव पाण्डे एम एमसी — विडला एडयूकेशन ट्रस्ट, टेलीफोन पिलानी ८ ६, पिलानी (राजस्थान), दिनांक १७ मार्च, १९७३

पत्र संख्या ६६७८

प्रिय महोदय

आपका कृपा पत्र मिला धन्यवाद।

मैं यह समझता हूँ कि भारत वर्ष को एक सूत्र में बांधने के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि समस्त देश में राष्ट्र भाषा सब मान्य हो। भाषा को लेकर जो कुछ वैमनस्य देश में फैल रहा है उसे यदि समय पर न रोका गया तो देश टुकड़ों में विभाजित हो जायगा। एक प्रान्त वाले दूसरे प्रान्त वालों से वैमनस्य रखेंगे और ऐसी दशा में हम स्वतंत्र रह सकेंगे कि नहीं यह संशयात्मक हो जावेगा। मैं यह सब देश में वास्तव में जो हो रहा है और होनेवाला है उसको लक्ष्य व विचार कर ही लिख रहा हूँ। आन्ध्र देश में जो कुछ हुआ वह किसी से छिपा नहीं। देश को समृद्धशाली बनाने के लिये कुछ त्याग की आवश्यकता होगी। राजस्थान को इस बात का गौरव होना चाहिये कि यह त्याग वह स्वयं कर चुका। राजस्थान में वर्षों से राष्ट्र भाषा द्वारा शिक्षा दी जा रही है। इस प्रान्त में मुसलमान भी महज हिन्दी पढ़ते व लिखते थे। आपका यह कहना कि यहां के बालक बानिवार्य हिन्दी नहीं समझते मुझे मान्य नहीं। मैं राजस्थान में शिक्षा के कार्य में २२ २३ वर्ष से सम्बद्ध हूँ। बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट ने एक समय ८०० से अधिक स्कूल राजस्थान में चलाये। इन सब संस्थाओं में २०००० विद्यार्थी पढ़ते थे। हिन्दी में ही शिक्षा दी जाती थी। इस भाषा को समझने में कभी भी किसी को कोई कठिनाई नहीं हुई।

राजस्थानी में पुराने साहित्य को खोजने में इने गिने कुछ सज्जन लगे हुऐ हैं परन्तु साहित्य सृजन में कितना प्रगति है उसे विचार कर ही आप अनुमान लगा सकते हैं कि कहां तक यह भाषा एक इतने बड़े प्रान्त की शिक्षा व साहित्य की भाषा हो सकती है। कितनी मौलिक व नई पुस्तक इस भाषा में प्रति वर्ष निकल रहा है। क्या प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा इस भाषा के द्वारा देने के लिये यथेष्ठ पुस्तकें वर्तमान हैं या इसके लिये कुछ प्रयत्न हो रहा है। यह गौर प्रश्न विचारणीय हैं।

जिस प्रकार उत्तरप्रदेश या बिहार ने राष्ट्रीयता की दृष्टि से अपनी बोलचाल की भाषाओं अवधी, ब्रज, मैथिली आदि को बोलचाल में ही सीमित कर शिक्षा और साहित्य में हिन्दी को अपनाया है इसीप्रकार राजस्थान ने भी राजस्थानी को बोलचाल में ही सीमित रख हिन्दी को शिक्षा और साहित्य में अपना लिया है। राष्ट्र भाषा को हटाकर शिक्षा के लिये राजस्थानी को अपनाना राष्ट्रीयता के प्रगति चक्र को उलटा चलाना होगा। मेरे लिखने का यह अर्थ कदापि नहीं कि मैं राजस्थानी भाषा का अहित चाहता हूं। इस भाषा के पुराने साहित्य की खोज में इस देश के लोक गीत लोक कथा इत्यादि के संग्रह में मुझे बड़ी रुचि है मैं स्वयं प्रयत्न में हूं कि राजस्थान की यह अमूल्य सम्पत्ति लुप्त न हो। इसके लिये आप जैसे सज्जनों को विशेष सतर्क होने की आवश्यकता है।

भवदीय
शुकदेव पाण्डे

ले कमांडर शुकदेव पाण्डे विड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट टेलिफोन पिलानी ८, ६
एम एससी पिलानी (राजस्थान) दिनांक ४ अप्रेल १९५३
पत्र सख्या –७/७२१४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका पत्र २४ ३ ५३ का मिला धन्यवाद।

पुराने राजस्थानी साहित्य से भारतवर्ष के साहित्य प्रेमी वंचित नहीं रहने चाहियें। जो साहित्य के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान रखते हैं उनकी यह प्रबल इच्छा है कि यहां के साहित्य का प्रचार हो।

इस प्रश्न से और राजस्थान में जिस प्रकार अबतक हिन्दी द्वारा शिक्षा दी जाती है कुछ सम्बन्ध नहीं मालूम पड़ता। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि हिन्दी में शिक्षा देने के कारण राजस्थान में शिक्षा प्रचार में कमी हुई। इस कमी का कारण यहां के रजवाड़े थे और जनता की उदासीनता। मुझे इस बात का पूरा अनुभव है कि किस प्रकार यहां के रजवाड़ों ने शिक्षा प्रचार में रोड़े अटकाये और पोलिटिकल विभाग ने भी उनका इस काम में हाथ बटाया।

भवदीय
शुकदेव पाण्डे

काका साहब कालेलकर

सन्नीधी, राजघाट
नई दिल्ली १

नई दिल्ली
२४ ४ ५८

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सप्रेम वन्देमातरम

आपका ता २२ ४ का पत्र मिला। राजस्थानी व्याकरण' की अेक प्रति भी आज मिली। धन्यवाद।

अिसी व्याकरण की अेक प्रति लेखक अध्यापक सीताराम लालस की ओर से अभी मुझे मिली है। और देखता हूं कि आपने अपनी भेंट मिली पुस्तक भेजी है। आप कहें तो मैं अिसे आपके पास वापिस भेज सकता हूं। आपको आदरके साथ भेंट दी हुयी चीज आपके पास रहे यही अच्छा है।

राजस्थानी भाषाकी स्वल्पाक्षर समर्थ शैली ओर मेरा ध्यान गया। अिसलिये कुतूहल हुआ। मैंने यह भी देखा कि श्री जमनालालजी के राजस्थान से सामंतशाही हट गयी है। राजस्थान अेक हुवा है। अब राजस्थानी के द्वारा अभूतपूर्व जनजागृति होनेवाली है।

साथ साथ जैन धर्म बौद्ध धर्म, वेदान्त और वैष्णव भक्तिके समन्वय से बडी जीवन शक्ति भी हो सकती है।

सिंधी कच्छी जैनी गुजराती और राजस्थानी मिलकर अेक अेकम् है जिसके साथ पंजाबी भी घूलमिल सकती है। उत्तर भारतके पश्चिम हिस्सेका अेक अपना निजी व्यक्तित्व है। इसका सांस्कृतिक चैतन्य जागृत और संगठित होनेपर वह भविष्यके स्वाधीन भारतकी अभूतपूर्व सेवा कर सकता है।

यह सब मैं देख सका हूं। लेकिन अिस दिशामें प्रत्यक्ष कार्य करनेकी मेरी अवस्था नहीं है। मेरी उम्र ७३ बरसकी है। अब जो देखता हूं अुसीकी कल्पना नवयुवकों के सामने रखकर उन्हें कार्यके लिये तैयार करना यही मेरा काम है।

आपने अहिल्या की अुपमा दी है। मेरा अभिप्राय है कि जहां हल चलना मुश्किल है असी अ हल-या भूमि में खेतीका प्रयोग श्री रामचन्द्रजीने कर दिखाया अिसलिये लोगोंने कहा कि सीतापति रामने अहिल्याका अुद्धार किया। सीता तो हलसे पैदा होनेवाले जमीनकी लकीर (furrow) ही है। आपकी अुपमा बड़ी सुन्दर और मार्मिक है। श्री लालसजी का लिखा हुवा व्याकरण राजस्थानी भाषामें है। हिन्दीमें लिखा हुवा व्याकरण होता तो बड़ी सहूलियत होती।

भवदीय
काका कालेलकर

काका साहब कालेलकर
मनीषी राजघाट
नआ दिल्ली १

नआ दिल्ली ७ ५ ५८

प्रिय कन्हैयालालजी

आपका १ मअी का पत्र बम्बअी म मिला। कल ही यहाँ लौटा हू। श्री सीतारामजी लालस वाला राजस्थानी व्याकरण आज ही रजि बुक पास्टस आपके पते वापस भेजता हू। डाक टिकट भेजने की जरूरत नही थी।

मैं ता २७ अप्रैल को बिकानेर जानेवाला था। लेकिन नहीं जा सका।

जाता तो सारदूल रिसच अिंस्टिटयूट का राजस्थानी भाषा शब्दकोश वहाँ देख लेता। अगर वह छपकर प्रकाशित हुआ हो तो उसकी प्रति ले लेता।

राजस्थानी भाषा का कोश बनाने के बारे म जो मेरा सुझाव है वह म श्री पदमचन्द्र सिंघीको भेज दूगा। वे उन सुझावकी नकलें बनाकर आपके सूचित पाँच नामोपर भेज देंगे।

सक्षेप म मेरा सुझाव है कि टनरकृत A Dictionary of the Nepali Language के ढग का बनना चाहिये। राजस्थानी भाषा नेपाली भाषासे कहा अधिक महत्व रखती है। भारतीय भाषाओ के कोश सवप्रथम श्रीरामपुर के चमार अंग्रेज मिशनरी Carey की ओरसे तयार हुये थ। लेकिन टनर जो अेक फौजी अफसर था उसके नेपाली कोश के जितना सर्वांग परिपूर्ण वज्ञानिक ढगसे बना हुवा कोश दूसरा नहा। अकेले टनरने जो काम किया है वह बडी बडी संस्थाअें भी नही कर सकी है।

जोधपुर या किसी अन्य स्थानपर राजस्थानी भाषाके सवकोश दशन करने की इच्छा है। पदम सिंघीजी जिसका प्रबध करनेवाले हैं।

आपका
काका कालेलकर

डा० कन्हैयालाल सहल
सम्पादक
मरु भारती

पिलानी
दिनाक ६ १ ७५

जमी मन म जाया

प्रिय श्री सठियाजी

लालटास के सबध म दो सबद म आपने जो कहा है वह तो सामान्यत सभी श्रेष्ठ कविता के सबध म सच है।

मैं सारी कविताए एक ही बठक म पढ गया हू। कठ है किस्या कलावन जका करता कुदरत नैं अरदास मिलाता हिवड रा तार झरता नणा स्यू धार आदि ? ये पक्तियाँ पुस्तक समाप्त करने पर भी मन म गूजती रही है।

सभी प्रकार की वानगी इन कविताओ म है -- करणो जाणाजँ सूक्ति प्रधान है थाथा बडपण क लिए ऊट की थूई का प्रयाग बडी ताजगी लिये हुए है। नहा ता कुण कैता कोरै ही लूण नै रतनागर --गिट ज्याव माय का माय भाभर व ही खीरा बण माती र हीरा--अच्छी उडान है।

कविता की अनेक परिभाषाएँ दा गई है--आपके कवि द्वारा दी हुई परिभाषा भाषा री विमता न इत्यादि आज क युग म भा सोचने के लिए बाध्य करती है।

'नही लागज्या निजर इ खातर घाल दिया रामधणख रो गलावडा। अच्छी उत्प्रेक्षा है।

परमात्मा ने मनुष्य को एक चेहरा देकर पदा किया है किन्तु मनुष्य सौ चहर लगा रखा है जिन्हें आत्मीया के लिए भी पहचानना मुश्किल है। इस प्रकार का भाव भी शायद किसी कविता म प्रकट हुआ है।

सात तारा म स एक टूट जाने पर सितार कलीता हो गया आदि भी बडा मार्मिक है। 'राम नाम म भी अच्छा व्यग्य है। उन्याला सियालो चौमासा आदि पर भी आपकी अच्छी रचनाएँ इसम हैं।

'लालटास पर भी Skylark की तरह कोई मार्मिक रचना होती तो और भी अच्छा रहता।

और का छाटा रूप रामंर, पूर्वकालिक क्रिया गुणंर आदि प्रयोग इसम बहुतायत स हुए है। बांर घालना म भी आपने इस प्रकार का प्रयाग किया है सभवत हमारी तरफ कुछ उच्चारण म अतर हागा।

सदही पीड हम ज्याग मदेहा जसा उच्चारण करते हैं। जो भी हो राजस्थान ने अच्छे कवि पदा किये हैं। आपको बधाई।

लीलटास पर गोविन्द शर्मा एक समीक्षा लिख दें (हिन्दी माध्यम से) तो वह मरु भारती म छपने पर लोगों का ध्यान और भी आकृष्ट करगी--
आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक हागा।

स्नेहाधीन

कन्हैयालाल सहल

आज के युग मे इतनी साफ-सुथरी पुस्तक का प्रकाशन साहस का ही काम समझिये। राजस्थान म भी अच्छी पुस्तकें खरीद कर पढने वालो का अभी अभाव ही लगता है।

SAHITYA AKADEMI

National Academy of Letters Rabindra Bhavan New Delhi
Telegram Sahityakar Phone 386247

SA 121/9/ 13 April 1973

Dear Sri Sethia

On behalf of the Sahitya Akademi I have the honour to inform you that the Executive Board of the Akademi has nominated you as a Member of the Advisory Board for Rajasthani

We hope you will kindly accept the membership and will give us the benefit of your valued cooperation

With kind regards

Yours sincerely

Dr R S Kelkar
Asstt Secretary (Admn)

SAHITYA AKADEMI
National Academy of Letters Rabindra Bhavan New Delhi
Telegram Sahityakar Phone 386247

डा० भारतभूषण अग्रवाल

मा०अ० ११६/६/१९७७१ दिनांक १४ मार्च १९७४

बन्धुवर

आपका ५ मार्च का कृपापत्र प्राप्त हुआ जिसके अनुसार आपने पृथ्वीराज राठौड़ की जयन्ती पर विशेष डाक टिकट निकालने के लिए भारत सरकार से अनुशंसा करने की बात कही है। हम आपका प्रस्ताव अपने राजस्थानी परामर्श मण्डल के समक्ष उपस्थित कर देंगे और तदनुसार अगली कार्यवाही करेंगे।

इस बीच कृपया यह सूचित करने का कष्ट करें कि पृथ्वीराज राठौड़ की आगामी जयन्ती कब मनाई जायगी।

धन्यवादसहित

भवदीय
डा० भारतभूषण अग्रवाल
सहायक मन्त्री

SAHITYA AKADEMI
National Academy of Letters Rabindra Bhavan New Delhi
Telegram Sahityakar Phone 386247

डा० प्रभाकर माचवे

गा० अ० ११६/६/२०८ | दिनांक ८ अप्रैल १९७४

प्रिय बन्धु

आपका ३० मार्च का कृपापत्र मिला। आपने महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ की जयन्ती पर विशेष डाक टिकट जारी किए जाने के लिए भारत-सरकार से अनुरोध करने का सुझाव दिया है।

निवेदन है कि अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मण्डल की बैठक मई के महीने में होने की सम्भावना है। तब मैं आपका सुझाव मण्डल के समक्ष उपस्थित कर दूंगा और उनका जो निर्णय होगा तदनुरूप कार्य किया जाएगा।

शुभकामनाओं के साथ

भवदीय

डा० प्रभाकर माचवे
मन्त्री

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक

Phone 226201
India Exchange 3rd floor
Calcutta 1

दिनांक १३ ५ १९७५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आशा है मेरा पहला पत्र आपके पास पहुंचा होगा।

निहालदे सुलतान नामक पुस्तक श्री कन्हैयालालजी सहल की लिखी हुई आपने देखी होगी। साहित्य अकादमी से इस पुस्तक पर पुरस्कार मिल सकता है क्या? आपकी राय में यह पुस्तक सिफारिश करने जैसी है क्या? आप राजस्थानी एडवाइजरी बोर्ड में हैं सो ख्याल रखना। यदि ऐसा हो कि आप केवल राजस्थानी में लिखी हुई पुस्तकों के बारे में ही पुरस्कार देने के लिए सिफारिश कर सकते हो तो इस बारे में मुझे किससे पत्राचार करना चाहिये लिखना।

आपका
भागीरथ कानोडिया

LALLGARH PALACE
BIKANER (Rajasthan)

September 12 1975

Shreeman
Kanhaiyalalji Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh
(Rajasthan)

Dear Sir

Kindly refer to your letter dated the 4th September addressed to His Highness the Maharaja Sahib of Bikaner Your suggestions are very valuable and are much appreciated

You would be interested to know that several Trusts have been created in Bikaner and part of the Lallgarh Palace has been converted into Maharaja Ganga Singhji Trust They are collecting library books and a library has been established for research scholar Your suggestions are being passed on to them for their consideration

Thanking you

Yours faithfully

Private Secretary to
H H The Maharaja of Bikaner

(राजस्थानी भाषा का (उप पद) [illegible] पर प्रवेश [illegible] इक्यावन हजार रुपये का पुरस्कार देने के [illegible] गतिविधियों के सुझाव के सम्बन्ध में प्राप्त पत्र।)

सुकुमार सेन
प्रख्यात भाषाविद

10 RAJA RAJKISSEN STREET
Block No 2/Suite No 32
CALCUTTA 6

9 6 77

Sri Kanhaiya Lal Sethia
3 Mangoe Lane
Calcutta 1

Dear Sir

Thanks for your letter dated the 2nd inst I know that Mira wrote in Rajasthani But Rajasthani is closely related to Gujarati and both Narsi and Mira were Vaishnab poets *Hence my error*

Thanks for all the source

Yours faithfully
Sukumar Sen

चन्दनमल वैद
वित्त व शिक्षा मन्त्री

जयपुर राजस्थान
दिनांक जुलाई १४ १९८२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहब

आपका पत्र दिनांक ९ जुलाई १९८२ राजस्थानी भाषा साहित्य अकादमी के नाम के सिलसिले में प्राप्त हुआ। आपने अपने पत्र में जो तर्क दिए हैं मैं उनसे प्रभावित हुआ हूँ। अभी नाम के बारे में अन्तिम निर्णय नहीं लिया गया है।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

आपका
चन्दनमल वैद

चन्दनमल बैद
वित्त व शिक्षामंत्री

मालवीय मार्ग
सी' स्कीम जयपुर

दिनांक १४ अगस्त, १९८६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहब

आपका पत्र दिनांक ६ अगस्त १९८६ प्राप्त कर बडी खुशी हुई। उसके साथ आपने जो आदरणीय प्रधान मन्त्रीजी को पत्र लिखा है उसकी प्रतिलिपि भी मिली धन्यवाद। सुना है इन दिनों में आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। आशा है अब आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। अपने स्वास्थ्य की पूरी हिफाजत रखें। यह जानकर बडी खुशी हुई कि इस अवस्था में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहते हुए भी राजस्थान और राजस्थानी भाषा के हित में आप बराबर सक्रिय है।

पूज्य पिताजी का स्वास्थ्य ठीक ठीक चल रहा है। नवम्बर मास में मेरा कलकत्ता आने का विचार है तब आपके दर्शन करूंगा।

सादर
आपका

चन्दनमल बैद

राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी — थरपणा २५ जनवरी १९८३
भाषा साहित्य एव सस्कृति री स्वायत्तशासी सस्थान — बीकानेर ३३४००१
प्रभाव रा० अ०/प्र०प्र०/८३ ८४/७६ — दिनाक १२-४-८३

आदरजोग पू सेठियाजी सा

आपरो १८ ३ ८३ रो कागद। धयवाद। राजस्थानी री स्वतत्र अकादमी २५ जनवरी ८३ र दिन प्रात रा मुख्यमत्रीजी स्थापित कर दी। राज विधानसभा रा स्पीकर श्रीयुत पूनमचदजी बिश्नाई इय अकादमी रा अध्यक्ष है। आपरो आकार इण रो सचिव। लारल १६ साला स्यू उदयपुर री राजस्थान साहित्य अकादमी मे काम करता हो अब म्हारी सवा इण अकादमी म निराजी है।

राजस्थानी री अलायदी अकादमी कायम करण खातर आप री पीढी जिकी आवाज बुलन्द करी म्हा स्वका—इये आवाज ने सरजणा सू जाडतै थकै जिका सपना सजोयो हो वो सपनो फल्यो रये रो हरख अर सो श्रेय आपरी कलम अर वाणी न है। साम ही अब अकादमी म रुपान्तरित हुय गया है। मुख्यालय बीकानेर ही है नागरी भडार म सागी जग्या।

आपरै कागद साथै पूज्य मोहनलालजी चौखाना रै पत्र मुजब उनानै राजस्थानी री पोथ्या रा सूची पूगती कर रयो हूँ। अकादमी री थापना सू जुडयाडी घणखरी औपचारिक कार्यवाहिया री पूर्ति मार्–म्हू बीकानेर सू जयपुर अर उदयपुर बिचालै जात्रावा म व्यस्त रया इण विवशता वश कागद री उथलो टेम सर नी द पायो माफी बगसवाज्यो।

म्हारा वया वद्ध पिताजी श्री बालमुकुन्दजी (आपरा मित्र!) आपन घणाघणा याद करणा—लिखाया है। म्हू ता आपरो टावर हू। राजस्थानी अकादमी री थरपणा तो हुयगी अब रण रो मारग दरसण भी आपन दणा है। राज सरकार आपन इय अकादमी रा मेम्बर मनानात करया पण आप अस्वस्थतावश इणरी सदस्यता नी सिकार सक्या, आ एक अलग बात है। बाकी मन पूरा पतियारो है क आप रो दिशाबोध इय अकादमी न बराबर मिलता रसा। इणा आस विश्वास साथ—

आपरी हजारी ऊमर री कामना करता थको—

विनात
आकार पारीक
सचिव

राजस्थान भाषा प्रचार सभा
प्र वा जयपुर परीक्षा विभाग

श्री लाल नथमलजी जोशी पत्रांक मानगिरी चौक
सचिव बीकानेर
दिनांक २४ १० १९८४

आदरजोग भाई सेठियाजी

वाल श्री सत्यनारायण स्वामी रा मारफत मायड रा हेला री एक प्रति मिली जिणरी चरचा हूं डा० मनोहरजी शर्मा कनै सू सुण चुक्यो हो।

जद नाहै सैं अयग्य रैं कठा मू चीख नीसरी ही ता वा अरण्य रादन हुवता थका भी सगला न झकझोरण आली ही अर समाज म नुइ चेतना रा श्रेय पावण म सिमरथ हुई। वा आवाज राजस्थाना र उगत सूरज रा ही जिण र अतस म आसावा अर आज रा अथाग सागर उथन पुथल मचाव हा वा सूरज प्रखर जोत सू जगमगायो तारा तेज सू तमतमायो अर निरासा र वातावरण म आसा रा प्रतीक बण्या।

पचास बरसा र अतराल म थाक्ला महसूसणा ता सुभाविक है पण औस्था मागै अनुभव रा जिका आतमबल अर्यो है उणरी थाह कुण आक सक? सरीरी दीठ मू आधमणै रा ध्यान आवणा अपरागो कोनी, पण आ बयू भूला क वाणी अर लखणी म आज जिकी खिमता है जिका प्रभाव है वा अपूरव है। आपरा मरू मू म्हा लागा खातर भी प्रेरणा अर प्रोत्साहन रा लूठा स्रोत रया हा। आज भी मायड न उण कन्हैय मू घणा घणी आसावा है जिक बालपण म कस मारया अर आग जायर पाडवा न महाभारत म जीत दिराई।

आपसू आगली पीढी प्राय उठगी—नाहटाजी स्वामीजी ठाकर साब व्यासजी आद सगला गया। सागला रा भार एक सबल मोवीरी हैसियत सू आपरै काधा माथै है। आप कांई योजना बणावा ता म्हारा सहयोग त्यार है। आठवी सूची म सामल करण सारू जित्त ताई आप जिसा लूठा सपूता री आवाज महानगरी सू नइ उठसी आ काम पार नई पडसी।

मायड रो हेला री आठ दस प्रतिया भिजवा सका ता अठ साहित्यकारा रा वातावरण बणावण म घणा मदद मिलसी।

आज दियाली है। इण मगलमय परब माथ हू आप सारू अर आपरै परवार सारू स्वास्थ्य अर सुख सामती री कामना करू। आपरो

श्री न जोशी

म० घ० ख० शीरघानी

भारत मरकार
मस्कृति विभाग
नई दिल्ली
दिनाक ४ जुलाई १९८५

म० एफ० १४ २१।८५ मी०एच० ४

मवा म

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

विषय —पटियाला म उत्तरी क्षेत्र के लिए आचलिक सास्कृतिक केन्द्र की स्थापना

महोदय

उपयुक्त विषय पर भारत क प्रधानमत्री को सम्बोधित आपक पत्र दिनाक १८ ८ ८४ के सन्दर्भ म मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि पटियाला पजाब की उत्तरी क्षेत्र क लिए क्षेत्रीय सास्कृतिक केन्द्र की स्थापना क सम्बन्ध म भारत सरकार द्वारा पहले ही निर्णय लिया जा चुका है। इस क्षेत्रीय केन्द्र म पजाब हरियाणा राजस्थान, जम्मू और कश्मीर हिमाचल प्रदेश और चण्डीगढ़ राज्य शामिल होगे।

भवदीय
म० व० ख० गेरवानी
(एम० डब्ल्यू० क० गेरवानी
सहायक शिक्षा सलाहकार

(पश्चिमी-सास्कृतिक परिषद क गठन पर पुनर्विचार करने क लिये दिये गये सुझा पत्र का प्रत्युत्तर।) प्रसन्नता है कि श्री सेठिया के सुझाव क अनुसार पुनर्गठन कर पश्चिमी सास्कृतिक परिषद का मुख्यालय उदयपुर म स्थापित किया गया।

कृष्णकुमार बिरला   दिनांक २६ १० ८४

प्रिय सेठियाजी

आपका १८ सितम्बर का पत्र प्राप्त हुआ। मैं राजस्थान के मुख्य मंत्री से भारतीय संविधान में राजस्थानी भाषा को उचित स्थान दिलाने के लिए बातचीत करूंगा।

आपका
कृष्णकुमार बिरला

कृष्णकुमार बिरला
संसद-सदस्य
(राज्य सभा)

बिरला हाऊस
४ तीस जनवरी मार्ग
नई दिल्ली ११००११
दिनांक १४ अगस्त १९८६

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका ६ अगस्त का पत्र मिला जिसमें आपने राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में रूप की एक भाषा के रूप में शामिल करने के लिए लिखा है। मुझे सन्देह है कि जब तक राजस्थान सरकार इस प्रश्न को भारत सरकार के सामने नहीं रखता तब तक इसका समाधान सम्भव नहीं होगा। मैंने राजस्थान के मुख्यमंत्री को इस संबंध में पत्र लिखे हैं और उनसे मैंने स्वयं कहा भी है। मुझे विश्वास है कि उन्होंने इस संबंध में भारत सरकार को अवश्य लिखा होगा। वास्तविकता यह है कि कई कारणों से इस प्रयास में अभी कोई सफलता नहीं मिली हम निरन्तर प्रयत्न करेंगे कि राजस्थानी भाषा को देश की एक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हो।

आदरपूर्वक

आपका
कृष्णकुमार बिरला

बालकवि बैरागी
सदस्य राज्यसभा

मनासा (म प्र)
जिला मन्दसौर
४५८११०
दिनांक २६ मई ८४

पूज्य श्री बाबूजी

सादर चरणस्पर्श

आपका ६ मई का पत्र मुझे २३ मई को राज्यसभा सत्र के बाद घर जाने पर मिला। जो पत्र आपने राज्य सभा के पते पर दिया था वह मुझे इससे दो तीन दिन पूर्व ही मिला है। दिल्ली में मुझ जैसे कई सांसद सदस्यों को अभी तक आवास नहीं मिले हैं। इससे डाक कुछ अंशों में अस्त व्यस्त हो जाती है। मेरे खुद के ३ पते चल रहे हैं। यही कारण है कि आपके पत्र के उत्तर नहीं दिये जा सके। क्षमा कर दें। यह एक अपरिहार्य स्थिति है। दिल्ली में निवास तय होते ही आपको सूचित कर दूंगा।

बोराजी को आपने जो कुछ लिखा है उस में मालवा को संरक्षण मिलता है और उसकी गरिमा बढ़ती है। आपकी हम पर यह कृपा विशेष समूचे मालवा परिवार को आश्वस्त करती है। हम सभी कृतज्ञ हैं। बोराजी से कल ही भेंट होने वाली है। हम लोग भी चर्चा करेंगे और आगे का रास्ता तैयार करेंगे।

शायद मैं जुलाई में कलकत्ता आऊँगा। आपके दर्शन अवश्य करूंगा। आशा है आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। हम सभी सानन्द हैं। सारा परिवार सोल्लास है।

अब मैं अगले सत्र तक के लिए मनासा ही हूं। दिल्ली आते जाते रहना होगा पर पत्राचार इस समय मनासा के पते पर ही उचित होगा। सभी को मेरा यथायोग्य आदर एवं अभिवादन।

विनीत
बालकवि बैरागी

No F 14 4/35 CH 6

Government of India

Ministry of Human Resource Development

(Department of Culture)

New Delhi dated the 21st February 1986

To

Shri Kanhaiya Lal Sethia
Sethia Trading Co
3 Mangoe Lane
Calcutta 700001

Dear Sir

I am directed to acknowledge the receipt of your letter No nil dated the 1st February 1986 addressed to the Prime Minister

Yours faithfully

(M W K Sherwani)
Assistant Educational Adviser

(सेठियाजी के पत्र में दिये गये सुझाव के अनुसार पश्चिमी सांस्कृतिक परिषद के गठन के लिये किये गये बधाई पत्र का प्रत्युत्तर)

नृसिंह राजपुरोहित

माणक प्रकाशण
जलते दीप भवन
जालोरी गेट
जोधपुर ३४२००३

दिनांक २४ ६ १९८५

आदरजोग मठियाजा सा०

रामास्यामा घणमान !

राज माहि अवाल्मा म सस्कृति र धादा न र र पूनमचदजी विस्नाइ र नाव लिख्योड आपर कागद न दख र म्हन घणी खुशी हुई। क्षुद्र स्वार्थां सू प्रेरित होय र ओ धादौ जिण लागा पजायौ हा अब तो वेई समझग्या के वारी स्वाथ पूर्ति सभव कोना। आप इण सवालन उठाय न घणा आछौ काम रियौ। अब लाग गरवन इण धादा न निकालयाई नेहचौ करणौ है।

भारतीय भापा परिषद आपरा भापा—सूचा म राजस्थानी न ई जाडी—आ ई आपरै सदप्रयत्ना री सुफल है इण सारू आपन साधुवाद ! 'माणक' र वात विचार' स्थभ वास्त वखत निकाल र की लिख भेजावौ।

आपरै स्वास्थ्य री मगल कामनावा साग

विनीत
नसिंह राजपुराहित

No F 14-4/35 CH 6
Government of India
Ministry of Human Resource Development
(Department of Culture)

New Delhi dated the 21st February 1986

To

Shri Kanhaiya Lal Sethia
Sethia Trading Co
3 Mangoe Lane
Calcutta 700001

Dear Sir

I am directed to acknowledge the receipt of your letter No nil dated the 1st February 1986 addressed to the Prime Minister

Yours faithfully

(M W K Sherwani)
Assistant Educational Adviser

(सेठियाजी के पत्र में दिये गये सुझाव के अनुसार पश्चिमी सांस्कृतिक परिषद् के गठन के लिये दिये गये बधाई पत्र का प्रत्युत्तर)

नाथूराम मिर्धा
सदस्य
राज० विधान सभा
प्रदेशाध्यक्ष (लोकदल)

१८, सिविल लाइन्स
जयपुर ३०२ ००६

दिनांक १४ ८ ८६

श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका ६ ८ ८६ का पत्र मिला जिसमें आपने राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित करवाने के बारे में हम सब लोगों को प्रयास करना चाहिए सुझाव भेजा। इस मामले में आपने जो प्रधानमंत्रीजी को पत्र लिखा उसकी प्रतिलिपि भी भेजी। प्रधानमंत्री को आपने काफी भावात्मक तरीके से लिखा है। आगे क्या असर होगा वो तो प्रभु की इच्छा पर ही निर्भर करता है। आप इस काम के लिए प्रयास कर रहे हैं अच्छा है।

मैं तो मेरे राजनैतिक जीवन में राजस्थान के आम लोगों से राजस्थानी भाषा में ही बात करता हूँ और घर पर आने वाले लोगों से भी। मुझे राजस्थानी भाषा से प्रेम है। इसके आठवीं सूची में जुड़ने के सिलसिले में प्रयास करने का बात आपने उचित ही लिखा। प्रयास करते रहेंगे। आपके परिवारवालों को और सब मित्रों को मेरा नमस्कार अर्ज करें।

आपका
नाथूराम मिर्धा

नाथूराम मिर्धा
सदस्य
राज० विधान सभा
प्रदेशाध्यक्ष (लोकदल)

१८ सिविल लाइन्स
जयपुर ३०२००६

दिनांक २७ १२ ८६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका २२ १२ ८६ का पत्र मिला। उसके साथ अखबार का एक कतरन व आपने जो पत्र प्रधान मंत्री जी को लिखा उसकी नकल भी मिली। इस मामले में आपकी लगन व प्रयासों की सराहना करता हूं। प्रधानमंत्री जी ने जो प्रेस रिलीज की उसमें अभी तो यह कहा है चारों भाषाओं जिसमें नेपाली भी एक है संविधान की आठवीं सूची में जोड़ने का इन्तजार कर रही है। चौथी कौनसी भाषा है जिसका मुझे पूरा ज्ञान नहीं। राजस्थानी को भी उसी लिस्ट (वेटिंग लिस्ट) में शामिल करने के लिए राजस्थान में एक जुट होकर प्रयास करने की बात आपने लिखी। मैं मुख्यमंत्रीजी व कैबिनेट के साथियों से इस मामले में चर्चा करूंगा और उपयुक्त वक्त पर विधान सभा में भी मित्रों की सलाह करके किसी तरह यह बात उठे ऐसा प्रयास करूंगा।

आप रो ओ कागद पढ़ण रै बाद म्हारै मन में भी पूरो जोश आयो है। मैं आपरी मदद करण सारू पूरी कोशिश करूला। आपणा सब लोगां ने म्हारा राम राम कैजो और रामजी री किरपा सूं सगली बातां ठीक है।

आपरो,
नाथूराम मिर्धा

गोरधन सिंह शेखावत लक्ष्मणगढ़

१ सितम्बर ८६

आदरजोग सेठियाजी

आपरो कागद अर वो परफ्रन्ट मिल्या। आप राजस्थानी रा मानता सारू जो कदम उठाया उण री घणी जरूरत है अर आप जड साहित्यकार सू ही ओ काम पार पड सक है। आपरै साथ म जन न सफलता है प्रधानमन्त्री जरूर जरूर इण रा रसपास देखता अर सरकार री तरफ स मानता सारू की कदम उठैला।

आपरै परफ्रन्ट रा प्रतिया नवलगढ़ फतपुर अर मकुन्दगढ़ भिजवाली है अर दो चार तार भी पुगाया है।

अब म्हनै वो भरोसो हुयो है क इ काम सारू आप कमर कसी है तो जरूर सफलता मिलसी।

म्हारै लायक की भी सेवा हुवै तो निसंकोच लिखज्या राजस्थान आवो तो कागद लिखज्या

आपरो
गोरधन सिंह शेखावत

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
२४ अकबर रोड नई दिल्ली ११००११

नवल किशोर शर्मा
संसद सदस्य
महासचिव

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका पत्र मिला तदर्थ धन्यवाद। राजस्थानी भाषा को संविधान के ८ वें शेड्यूल में शरीक करने के बारे में प्रयत्न तो किये जा रहे हैं लेकिन मामला काफी पेचीदा है। देश की अनेक भाषाओं की यह मांग बढ़ रही है। इस पर फिलहाल कोई सहानुभूतिपूर्वक विचार करना सम्भव नजर नहीं आता। फिर भी प्रयत्न करते रहना चाहिए। हम सब इस बारे में प्रयत्न करेंगे।

शुभकामनाओं सहित

भवदीय

नवल किशोर शर्मा

मूलचद डागा
समद सदस्य

नई दिल्ली ११०००१

दिनाक २० ८ १९८६

आदरणीय कन्हैयालालजी सेठिया साहब

आपका पत्र मिला। मैं अपने अनुभव के आधार पर कुछ बातें आपको लिख रहा हू। मैं सबसे पहले तो आपसे क्षमा चाहता हू कि राजस्थानी भाषा को ८वीं शेडयूल मे लिया जाये उसके पक्ष मे अभी मैं नहीं हू। इसके कुछ कारण हैं जिन्हें मैं नीचे लिख रहा हू -

(१) मैंने दो तीन बार इस बात पर लोक सभा मे बहस की थी और सरकार से कहलाया कि राजस्थानी भाषा को ८ वी शेडयूल मे रखना उचित नहीं रहेगा। क्योंकि राजस्थानी लोग न तो आप जैसे हिन्दी के ज्ञाता है और न शुद्ध हिन्दी ही जान सकते हैं। अग्रेजी मे वे काफी पीछे रहे तो फिर वे राष्ट्र की मुख्य धारा मे अपना स्थान कैसे बना सकते है जो कि उन्हें बनाना चाहिए।

(२) हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। उस भाषा मे उच्चारण करने के लिए उसका उपयोग घरो मे भी हो सके तो करना चाहिए। अलवर देहरादून मे खरी हिन्दी भाषा बोली जाती है। भरतपुर मे ब्रज भाषा बोली जाती है। सिरोही मे गुजराती बोली जाती है। मेरे आदिवासी इलाके मे गुजराती बोली जाती है। शेखावाटी वाले शेखावटी भाषा बोलते है। मारवाडी अपनी भाषा अलग बोलते है।

(३) आज भी हमारा राजस्थान विधान सभा की भाषा हिन्दी है। कोर्टों मे सारे फैसले हिन्दी मे होते है और हिन्दी मे ही बयान होते हैं। स्कूलो मे पढाई हिन्दी माध्यम से दी जाती है। अत किस दृष्टि से इस पर विचार किया जाये ?

यदि एक दो कोई पत्रिका निकल जाये तो उसके कारण ही हम राजस्थानी भाषा को ८वी शेडयूल मे ले लें ? राजा महाराजाओ को शौक है अपनी प्रशसा सुनने का वे एक भाषा रखे। अथवा कही म्यूनिसिपलटी मे इसे रख दे लेकिन अगर हमने राजस्थानी भाषा को ८वी शेडयूल मे ले लिया तो उसका क्या

परिणाम होगा, आप उस पर विचार करके रखें। मैं इस छोटे से पत्र में समयाभाव के कारण पूरी बात नहीं लिख पा रहा हूं। मैंने बड़ी गहराई से सोचा है और कइयों की नाराजगी मोल ली है। आखिर में स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने और भी अन्य विद्वानों ने मेरी बात को माना है। नहीं तो आज दवीं शेड्यूल ब्रजभाषा, गोवा की कोंकणी, जम्मू की डोगरी, हिमाचल की हिमाचली ये सब भाषायें दवीं शेड्यूल में आ जातीं।

कभी आपके दर्शन होंगे या कभी मैं निकट भविष्य में उधर आया तो चर्चा कर लूंगा। मैं यह दावा नहीं करता कि मैं सही हूं। मैंने अपने विचार रखे हैं। मैं आपके विचारों से प्रभावित हो जाऊंगा तो उस बात को आगे बढ़ाऊंगा।

विशेष कृपा बनाये रखिये।

आपका
मूलचंद डागा

मूलचंद डागा
संसद सदस्य

नई दिल्ली ११०००१

दिनांक २६.८.१९८६

श्रीमान कन्हैयालालजी सेठिया

आपका प्रेमभरा पत्र मिला। मैं भी आपके विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ।

मैं पोस्टल बिल की कमेटी का एक सदस्य हूँ। अगरतला से वापिस आते समय मैं कलकत्ता एक घण्टे के लिए कलकत्ता एयरपोर्ट पर रुकूंगा। अगरतला से मैं २२.८.८६ को १५.२० बजे फ्लाइट नं० आई०सी० २४२ से कलकत्ता जाऊंगा और उसी दिन १७.४५ बजे आई०सी० नम्बर ४८६ से दिल्ली के लिए रवाना हो जाऊंगा।

आप २२ सितम्बर को यदि कलकत्ता एयरपोर्ट पर मुझे मिलेंगे तो सारी बात कर लूंगा।

विशेष मिलने पर।

आपका
मूलचंद डागा

मूलचंद डागा,
संसद सदस्य

नई दिल्ली ११०००१
दिनांक ३०.१२.१९८६

आदरणीय सेठिया साहब,

मेरा सुपुत्र पंकज का विवाह ११ जनवरी १९८७ को होना निश्चित हुआ है। अगर आप दिल्ली पधार सकें तो कृपया सूचित करें अन्यथा मैं वर-वधू के लिए आपके आशीर्वाद की अपेक्षा करूंगा।

आप जो प्रश्न उठा रहे हैं वह बिल्कुल सही है और हिंदी के मानने वाले लोग भी यह बात मान चुके हैं परन्तु आजकल हिंदी जानने वाले भी अंग्रेजी में बात करना और उसी वातावरण में रहने में ही अपना गौरव अनुभव करते हैं। जब तक लोगों में अपनी राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' के प्रति अन्तर से प्रेम नहीं होगा तब तक यह केवल दिखावा ही कहलायेगा। हिंदी में अभी भी अच्छी-अच्छी पुस्तकें नहीं निकल रही हैं और न ही अच्छा साहित्य ही मिल रहा है एवं न ही हिंदी विशेषता का ध्यान रख आगे गया है। इसी कारण हिंदी भाषा अपना प्रभुत्व नहीं जमा पायी है। एक ऐसा संगठन बनना चाहिए जो हिंदी के लेखकों को अच्छी-अच्छी पुस्तकों का अनुवाद करना, सुन्दर पुस्तकें लिखना और जगह-जगह इसकी उपयोगिता से आम जनता को अवगत कराना आदि बातों की ओर ध्यान दिला सके। हिन्दी के प्रति प्रेम रखने वाले भाइयों को हिंदी में बोलना और लिखना जैसे मार्गों को अपनाना चाहिए। यदि वे यह मार्ग अपनाएं तो अपने आप ही हिन्दी भाषा तरक्की कर जायेगी अन्यथा जिस गति से यह प्रगति कर रही है वह संतोषजनक नहीं कही जा सकती। आपने जो सुझाव दिया है वह सराहनीय है।

आपके द्वारा भेजी गयी पुस्तक मुझे प्राप्त हो गयी है। पुस्तक बड़ी ही रोचक और वास्तविकता को लिये हुए है। पुस्तक के लिए हार्दिक धन्यवाद।

सादर

आपका
मूलचंद डागा

वैजनाथ पँवार
मानियवार

श्रीडूगरगढ़
दिनांक २२ ८ ८६

आदरजोग भाईसाहब

स्वतंत्रता दिवस रा आपरा काड अर श्री राजीवजी गांधी न दियाड पत्र री २० प्रतियां मिली। आ पत्र घणा प्रभावी है अर म्हारी तर कोसिसा हुवनी स्या सा मान्यता लेवणी पडली। मैं आपर आदेस मुजब आपरी संस्थावां म प्रति कार भिजवा दूंरा कारण डाक आज दा बजे मिली है। राजाबजा न तारभी दऊ हूं। अठ सा राजस्थानी रै प्रचार प्रसार माह सारा जुट रया है। अबा १० अगस्त नै एक कायक्रम करयो है जिण री जाणकारी आप न भेजू हूं। आप लाग सेनाना रै रूप म आगीवाण हो जद म्हैं नार जूझणिया त्यार हां।

आपरो
वजनाथ पवार

सांवर दइया
लेखक

उच १४, पवनपुरी
बीकानेर (राजस्थान)

दिनांक २४ ८ ८६

आदरजोग श्री सेठियाजी

आपरो कागद अर गजीवजी र नाव लिख्याडो कागद पूग्या। आप जिको बीड़ो उठाया है वो बगत री माग है। आठ कराड राजस्थानी लागा र हिवड़ री हूक है। भाषा खातर आ अपणायत अर पीड 'मायड री हेलो' म पग-पग मुणीज। थारो बा 'भारतेन्दु-स्वर' गाव-गाव गळी गळी अलख जगावण रा ई अेलान है।

थारा भेज्योडा कागद च्यारूमेर भेजसू अर सगळा न ई कागद का तार देवण री अरज करसू। सौ दा सौ नेडा कागद ता हफ्तै रै माय माय पूगता हा जासी।

भाषा री मान्यता खातर आप जिकी लडाई छेडी है वी म सफलता मिलसी। जान आपणी है। म्हार जोगी कोई और सेवा ?

थारो ई
सावर दइया

कैलाशदान एस उज्ज्वल
अध्यक्ष
राजस्थानी साहित्य भाषा एवं संस्कृति अकादमी

३५ उणियारा गार्डन
जयपुर ३०२००४
टेली ७३०२८ ६१४००

दिनांक ३ ४ ८६

आदरणीय कन्हैयालालजी

जै हिन्द

पूनमचंदजी बिश्नोई ने लिख्योड़ आप रै दिनांक १५ ६ ८५ रै कागद री प्रतिलिपि मिली। मायड़ भासा राजस्थानी रा सांवासपूत इण आप ज्यूं हरमेस अपणी भासा रै सम्मान सारू चिंतित रैवे। अकादमी रै दूजा सदस्यां रो हमार तक मनोनयन नीं हुओ। पूरे सदन रो गठण होणै पर आपरा अनमोल सुझाव साथ विचार विमर्श नै आगे कारवाई सारू पेश करस्यां। म्हारे मन है कि निरंतर अपणी भासा सारू जूझण वाला आप जेड़ा सरदारां न अकादमी रा सलाहकार बिणण रो निवेदन करू। सलाहकार मण्डल रो प्रस्ताव भी अकादमी र सामी यथा शीघ्र पेश करस्यां। म्हारा मान दान सारू आप निसंकोच म्हारो निवेदन है, सलाह दिरावता रवण री किरपा करावसा।

सादर

आपरो
कैलाशदान उज्ज्वल

कैलाशदान उज्ज्वल
अध्यक्ष
राजस्थानी अकादमी

दूरभाप ४०६६६
३५, उणियारा गार्डन
जयपुर ३०२००४

दिनांक १५ अप्रल १६८६

आदरणीय कन्हैयालालजी,

आपरो दिनांक ६.४.८६ रो कागद पूगो। हू बीकानेर सू काल पाछो आयो। अकादमी र नाम र सम्बंध मैं आपरा विचारां सू लगभग सगला राजस्थानी साहित्यकार सहमत है। म म्हारै लारलै कागद म अरज की ज्यू इण सम्बंध मै आगे कारवाई अकादमी मन्च र पूरै गठन र पछ करी जासी।

सादर

आपरो
कैलाशदान उज्ज्वल

कैलाशदान उज्ज्वल
अध्यक्ष
राजस्थानी भाषा अकादमी

३१, उणियारा गार्डन
जयपुर ३०२००४

दिनांक २१ ८ ८६

आदरजोग कन्हैयालालजी सा

आपरो दिनांक ६ ८ ८६ रो कागद हू जोधपुर सू १८ ८ ८६ ने आया जद मिलियो। हू दिनांक ११ ८ ८६ ने दिल्ली परो गयो ने आज घड़साण जावू हू।

अपणी भाषा ने आपतो सवधानिक स्थान दिरावण रा विषय अपणै सारू घणा महताऊ है। आप रा सुझावा माथ कारवाई करणी जरूरी है। अपनी रणनीति सबधी मुद्दा उपर विस्तार सू विचार करने हू आपने खुलासे फुरसत सू वेगोइज लिखण री उमीद राखू हू। मावन विचार कर दूजा हितौषियां री राय लेवण री आवश्यकता मनै विश्वास है आप उचित समझावोला।

साग्रह

आपरा
कैलाशदान उज्ज्वल

कैलाशदान उज्जवल
अध्यक्ष
राजस्थानी भाषा साहित्य
एवम
संस्कृति अकादमी

दूरभाष–४२६६६ (घर)
६१४०० (कार्यालय)
निवास ३५ उणियारा बाग
जयपुर ३०२००६

क्रमांक

दिनांक १६ दिसम्बर १६८६

आदरजोग सठियाजी सा

आपरा दिनांक १० १२ ८६ रा कृपा पत्र मिल्या। राष्ट्रपति जी ने दियोड़ आप र कागद माथ, आप री सलाह माफिक कारवाई कर न आप री सेवा म सूचना मेजण री म्हने याद पड है। या तो डाक विभाग री गलती रही है और ना तो म्हारी भूल।

राजस्थान रा शिक्षा मंत्री जी आप री तरफ सू समथन देवण रो विश्वास दिरायो है। म्हे उणा न अरज की क राजस्थान लोक सेवा आयोग री परिक्षा म राजस्थानी री विकल्प लेवण री अनुमति देवणी चाइजे। निणय उणा र हाथ म कोनी परतु व अपणी अकादमी रै प्रस्ताव माथ कारवाई जरूर करला। अकादमी र प्रस्ताव री रूप रखा रे बारे मैं आप काई सुझाव भिजावो तो म्हारो माग दशन होवलो।

विधायक भी खासी सख्या मैं राजस्थानी माल तयार होवण की आशा है। विधायको सू किण तरह रो सहयोग आप र आदोलन सारू उपयोगी रवलो आ लिखावण री कृपा करावसा।

कृपा महरबानी बणी रखावसा।

आपरो
कैलाशदान उज्जवल

कैलाशदान उज्जवल
अध्यक्ष
राजस्थानी भाषा, साहित्य
एवम सस्कृति अकादमी

जयपुर-३०२००४
दिनाक १३ जनवरी १९८७

आदरजाग सठियाजा

आप रा दिनाक २२ १२ ८६ रो कागद हू जाधपुर मू ५ तारीख नै पाछा आया जद मिरया। प्रधानमत्री जी न राजस्थानी सारू लिख्याड कागद रा प्रति आपरी सेवा म भेजू हू। आप समय माथ खुद लिख दियाया और म्हने भी फरमा दिया ओ ठीक र्यो।

राजस्थान रा मामदा न भी हू इण सम्बध मे निवेदन करू हू। कागद लिख न उणा न सूचित करला कि आ अवसर उपयुक्त है। इण रो लाभ उठावणा चाइज। चूक होवण सू और देर लाग जावैला।

राष्ट्रपतिजी ने पला कागद दियो हा वो आप रा सलाह अनुसार लिख्या हो। राष्ट्रपतिजा बगलौर म भाषा बाबत माथ विचार प्रगट किया व उत्माहजनक है। उणा न भेजण सारू ममोरेडम तयार करू हू। प्रति आपरी सेवा म भेजूला।

मथुरादासजी माथुर प्रयत्नशील है। कई विधायका ने उण फरमाया है और म्ह भी निवेदन किया है कि विधानसभा मे सकल्प पेश करें। प्रतिक्रिया उत्साह वधक है। हू एक विगतवार ममोरेडम बणावण री कोशिश म हू। ग्रीयरसन, सुनीतकुमार चटर्जी ने दूजी भाषाविदा रा विचार ने सर्वे और शिक्षा शास्त्रीया री राय इण मैमा रा आधार बणावण रा विचार है। आप बषा स्यू इण साधना मै लाग्योडा हा, मारगदरशन आप सू मिलता र्यो है नैं अपेक्षा रवैला। मैमोरन्डम सारू काई सामग्री या सलाह होव ता महरबानी कर जल्दी भिजवावसा।

आपरा
कलाश दान उज्जवल

कैलाशदान उज्वल
अध्यक्ष
राजस्थानी भाषा अकादमी

३५ उणियारा गार्डन
जयपुर-३०२ ००४
दिनांक १ जुलाई १९८७

आदरजोग कन्हैयालालजी

आप रा २४ ६ ८७ रा कागद न प्रधानमंत्री जी न दियोड़ै आप रै कागद री नकल मिली। नवोदय विद्यालया म राजस्थानी पढ़ावण री व्यवस्था नी होवणो राजस्थानियां साथै एक घोर अन्याय है। आप रो पैलो इण सम्बंध मैं कागद आवण पर म भी विरोध म मैमोरैंडम भेज्यो। प्रधानमंत्री नै निवेदन कर नै साथ साथ राजस्थान रा मुख्यमंत्री न दूसरा सम्बंधित मंत्रीयां अधिकारियां न लिखणो लाभप्रद रेवेला। इण र बारे मैं अकादमी री तरफ सू लिखूला। दूजा प्रयत्न भी जारी रवेला।

अकादमी री लारली बैठक म अपणै रिप्रजेंटेसन वगैरह री चर्चा मैं चलाई। म्हनै आ देख न दुख हुओ कि जिणा सज्जना ने राजस्थानी रा हितैषी समझ कमेटी मैं लियो उण मैं स कामा आप जका काम करण री सलाह दी उण र प्रति उत्साह नी दिखायो। म्हनै कई सदस्यां री सामान्य प्रतिक्रिया जिण म राजस्थानी र प्रति उत्साह कम ने आप र खुद र स्वार्थ र प्रति उत्साह ज्यादा दीख दौरो लागो। अध्यक्ष पद री जिम्मेवारी सभालण सू पैली हू वर्तमान स्थिति र सारू सरकार नै पूर्णतया दोषी मानतो। पण थोड़ा सा दिनां म मालूम हुओ कि अपणा भी कई मिनखा रा सहयोग सिर्फ किणी कीमत साथ मिल सकै है। हू कई दिना सू इण उधेड़ बुन म लागो हो कि म्हनै एक दो काम जका मैं हाथ मैं लिया हू और पार पड़ता दिखै है व पूरा होवण तक इण पद माथै रवणो चाइजे या नी? म्हनै हमार तक तो आ ही जच है कि अकादमी र भवन और राजस्थान लोक सेवा आयोग सू राजस्थानी ने मान्यता मिलण सारू आज तक करी मेनत इण वगत अकादमी छोड़ण सू शायद बेकार सिद्ध होवला। क्यू कि अपणी खुद री कमजोरी नै, दुर्भाग्य सू अपणा अकादमी र विचारा ने सरकार रा करणधार उचित महत्व नी देवै इण सारू सामूहिक अस्तिफा प्रस्ताव र निर्विरोध अनुमोदन होवण पर भी देवण म शायद वर्तमान हालत मैं उनरा लाभ नी जितरा हाथ म लियोड़ा काम पूरा करण तक ठैरण मैं है।

दा एक साहित्यकार सरदारा र रवया म्हनै स्ताफा दवण रा साचण ने वाध्य किया। आप रा कागद न अधिकार लाभ उठावण री प्रवति सू दूर साहित्यकार सरदारा री शुभकामना सू मनोबल प्राप्त कर आ सौच न क जुआ रै दुख घावला नी नाखीजै फिलहाल साची है।

म्हारा मान्यता है कि इण सगली वाता माथे सावल विचार कर ने पछै निणय लियो जावै। कैठई एडी नी होव कि हाथ बल नै हाला ढुल जाव। आप रा विचार हू फेर अकादमी री अगला कायकारिणी री बठक म विचार विमष मारू राखूला।

उम्मीद है आप सपरिबार राजा खुशी हा।

आपरो
कलानदान उज्वल

ओं मेजर रामप्रसाद पोद्दार, बी ए
उद्योगपति

सन्चुरी भवन
डा एनी बेजण्ट राड
बम्बई ४०० ०२।
दिनाक २३ अगस्त ८६

आदरणीय श्री सठियाजी

सादर प्रणाम।

आपका पत्र दिनाक १५ ८ ८६ का मिला तथा साथम आपने जो पत्र माननीय श्री राजीवजी का लिखा है उसकी प्रतिलिपि भी मिली। आपके द्वारा श्री राजीवजी का लिखे गये पत्र म आपने राजस्थानी भाषा का क्या मान्यता दनी चाहिए उसम इतने अच्छे एव दढ विचार लिख है सो मेरी राय म श्री राजीवजी जरूर इस पर विचार करेंगे। आपने इस विषय म और बाता चालू की है सो मैं समझता हू कि आज नहीं तो कल अवश्य सफल होनेवाली है तथा म तो इसम काफी प्रभावित हुआ हू। बम्बई की राजस्थानी सस्थाओ क द्वारा राजस्थानी भाषा को स्वीकार करने के लिए आपन श्री राजीवजी को पत्र अथवा तार दिलान क लिए लिखा सो मैं इसके लिए चेष्टा करूगा।

विनीत
रामप्रसाद पोद्दार

डॉ गिरिजा शकर शर्मा
एम० ए०, पी एच० डी०

बीकानेर (राज०)
दिनाक ५ ६ १६८६

घणा मानीता सेठियाजी साहब

घणा घणा प्रणाम।

इण बात रो मन घोणो दुख है क मैं म्हारी ४८ साल री उमर म कलकत्त प्रवास म ही आपरा दरसण करिया। जे पैला दरसण हुय जावता अर आपरी बाता सुणल्तो तो कलकत्त चदो उगावण आली टाली म कदई नी आवतो। म्हार जीवन म पहीबार म्हारा हतारा अर घण आग्रह सू कलकत्त जावण री हिमत करली ही। कलकत्त म अर आर्थिक दृष्टि स कमजोर पण मन सू लठो सस्था न घणा धन लाभ तो नो हियो मकयो पण अक इस मिनख रा (सेठियाजी) आशीर्वाद निगावण म जरूर सफलता हासल करी है जिको क राजस्थानी भाषा न मरता नी देख सक है। आप आपर घर पत्नी भेट म ही जिको आशीर्वाद मनै आझाजी अर बाठियाजी न दियो उणन सुण र म्हार कालज म भी आग लागगी। सरकारी नौकर हू इण खातर बाता ही कर सकू हूं इणस ज्यादा नी। मायड भाषा न आपरो हक दिरावण वासत आप उणवखत जिकी जुगत्या बतायी ब म पैला किणी र मूढ़ सू की सुणाना। इण बाबत थ जिकी आग उगली उणन निश्चय ही गाव गाव म लगावण री जरूरत है। अठ बीकानेर म म्हारा साथिया न आपरो आह्वान सुणा दियो है। स्कूल अर काल्जा म जद ताई आपणा टाबर मायड भाषा नै लावण वासतै हडताला नी करसी-करासी जद ताई राजस्थानी भाषा न आपरो उचित स्थान मिलणो सभव नी है। आपण राजस्थान म आपर अलावा अबार आम लोगा न इण बाबत ललकारणिया निजर नी आयरया है। कवण रो मुतलब ओ क अठ इसो सक्षम आदमी नी है जिणरी बात रो आम लोगा माथ असर हुव। आप मायड भाषा वासत मरणो मारणो माड राख्या है अर राजस्थान भर म एक मरीसा पूजाजी भी हो जो बात सगला जाण है। जो एक अपाल आप कलकत्त सू निकलवा दो तो राजस्थान म हडकप मचजासी। आप राजस्थान म घणा ही राजनतिक आदोलन चलाया है मायड

भापा वासत भी चलवा दा। जे आप जा चिणगारी छाड सका तो छोड दा नी ता मगल्या न पछतावा ही रैंमा।

वनक्त प्रवास म आप सस्था न जापरो जिका निजा आयिक सहयाग श्री गणग म ई दिया उणमारू आपरा आभार प्रगट करण म गब्दा रो सकाच ता जरूर है पण हृदय सू धाप रै अनुगहीत हू। आप म्हार परवार रा हताळू रैया हा आ म्हारै मायै आपरी विशेप क्पा है।

साभार
गिरिजा गकर गमा

शिवचरण माथुर
सदस्य
राजस्थान विधान सभा

निवास ए ८७ श्यामनगर
अजमेर रोड जयपुर
दिनांक ६ ९ ८६

क्रमांक १७२७/एस सि एम /८६

प्रिय श्री भठियाजी

लम्बे अंतराल के पश्चात आपका ६ ८ ८६ के पत्र को पाकर सुखद अनुभूति हुई। राजस्थानी भाषा को उसका प्रतिष्ठित स्थान दिलवाने के लिये आपने जो प्रयत्न किये है वे स्तुत्य हैं।

आपको तो मालूम है मैंने अपने समय में इस संबंध में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी को लिखा था। राजस्थान विधान सभा में भी इस संबंध का प्रस्ताव हम लाये थे परन्तु राजस्थान के पूर्वांचल के जन प्रतिनिधियों ने इस प्रस्ताव को राजस्थान को दो हिस्सों में बांटने वाला मानकर थोड़ा विरोध किया था। मेरे इस प्रश्न पर आपसी बातचीत के जरिये एक उपयुक्त वातावरण तैयार करने के लिये प्रदेश के अधिकांश व्यक्तियों से सम्पर्क करने की चेष्टा की थी। आज भी इस प्रयास की महत्ता आवश्यकता है। मेरा विश्वास है आप जैसे मां भारती के सतत् सेवक इस बीडे को उठाकर प्रदेश की सांस्कृतिक तथा भाषायी एकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करेंगे। इस संबंध में जो भी सेवा उपयुक्त समझें कृपया अधिकार पूर्वक मुझे लिख भेजें।

अक्टूबर के दूसरे या तीसरे सप्ताह में कलकत्ता आने का कार्यक्रम बना रहा हूं तब आपसे अवश्य भेंट करूंगा।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

आपका
शिवचरण माथुर

शिवचरण माथुर
सदस्य
राजस्थान विधान सभा

ए ८७ श्यामनगर
अजमेर रोड जयपुर

क्रमांक २७८७/एम सि एम/८६ दिनांक १७ १२ ८६

प्रिय श्री सठियाजी,

आपका १२ १२ ८६ का पत्र यथा समय मिला। भारत की प्रान्तीय भाषाओं के उन्नयन का कार्य देश की एकता को बनाये रखने के लिए बड़ा महत्व का है। सोवियत रूस में इस समस्या को जिस सुन्दरता तथा बुद्धिमानी से सुलझाया गया हम उससे सबक ले सकते हैं। भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी को भी उसी हालत में हम सम्मानपूर्वक स्थान दिला सकेंगे। जब तक यह नहीं होता समय के गुजरने के साथ प्रान्तवाद के नाम पर अलगाव वादी शक्तियां ज्यादा मजबूत होंगी और राष्ट्रीय एकता को गंभीर खतरा पैदा होगा।

मैं भी इस संबंध में प्रधानमंत्री जी को पत्र लिख रहा हूँ जिसकी प्रति आपको भेजूंगा। कलकत्ता के कार्यक्रम बनने पर आपको अवश्य लिखूंगा।

आशा है आप प्रसन्न होंगे।

आपका,
शिवचरण माथुर

तारा प्रकाश जोशी
निदेशक

प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर
दिनाक २५ ६ ८६

क्रमाक शिविरा/निजी/वि ब/८६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

सादर वन्दे ।

आपका पत्र नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ म राजस्थानी भाषा को मातृ भाषा के रूप म पढ़ाने के सबध म प्राप्त हुआ। इस सबध म कार्यकारी दलो म आपके प्रस्ताव पर चर्चा हो चुकी है और कार्यकारी दल की रिपोर्ट आने के बाद इस पर लिये जानेवाले निर्णय से आपको सूचित करूगा।

आशा है आप स्वस्थ एव प्रसन्न होंगे। बेटी साधना को भी अलग से पत्र लिख रहा हूँ लेकिन आप भी फोन से बात कर लेना। घर म पूजनीय भाभी साहब को सादर प्रणाम। समस्त बालगोपाल को मेरी शुभकामनायें।

आपका,
तारा प्रकाश जोशी

प्रधान मन्त्री कार्यालय

एस० एस० अहलावत
अनुभाग अधिकारी

नई दिल्ली ११००११
३० सितम्बर १९८६

प्रिय महोदय

मुझे निर्देश हुआ है कि प्रधान मंत्री जी को सम्बोधित आपके पत्र दिनांक १६ सितम्बर १९८६ की प्राप्ति सूचना आपको दूं।

भवदीय
एम० एम० अहलावत
अनुभाग अधिकारी

(साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं को संविधान में सम्मिलित करने के संदर्भ में दिये गये पत्र का उत्तर)

हीरालाल देवपुरा
शिक्षा मंत्री

जयपुर
राजस्थान
दिनांक १८ अक्टूबर, ८६

अ० शा० पत्र सं० ४५८७ शिम / ८६

प्रिय श्री सेठियासाहब

आपका पत्र दिनांक १६ ९ ८६ के साथ भारत के राष्ट्रपति के नाम से सम्बोधित पत्र की प्रति भी प्राप्त हुई।

शिक्षा सचिव को टिप्पणी शीघ्र प्रस्तुत करने हेतु लिखा है।

सादर।

आपका
हीरालाल देवपुरा

हीरालाल देवपुरा
शिक्षा मंत्री

जयपुर
राजस्थान
दिनांक २६दिसम्बर १९८६

अ० शा० पत्र सख्या ५७४६/इ एम/८६

प्रिय श्री सठियाजी

आपका पत्र दिनांक १० दिसम्बर १९८६ प्राप्त हुआ जिसमे आपने त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता दिलाने के बारे मे लिखा है।

मैने इस सम्बन्ध मे शीघ्र टिप्पणी भेजने के लिए शिक्षा सचिव राजस्थान को लिख दिया है।

आपका
हीरालाल देवपुरा

पुलक चटर्जी
प्र० म० जी के उप सचिव
स पी एम पी १३६२६

प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली ११० ०११
दिनाक २२ दिसम्बर १९८६

प्रिय श्री सेठिया,

मुझे आपको सूचित करने का निर्देश हुआ है कि प्रधान मंत्री जी को आपका १० १२ ८६ का पत्र प्राप्त हो गया है।

आपका
पुलक चटर्जी

(साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं को संविधान में मान्यता देने के लिये लिखे गये पत्र का प्रत्युत्तर)

दामोदरदास आचार्य
राज्य मंत्री, शिक्षा

जयपुर
राजस्थान
दिनाक १५ जनवरी, ८७

अ० शा० पत्र सख्या ६८/रा म शि/८७

प्रिय श्री सेठियाजी,

आपका पत्र दिनाक ३ जनवरी, १९८७ का राजस्थानी भाषा को संविधान में सम्मिलित करने हेतु राज्य सरकार की ओर से केन्द्र को अनुशंसा भेजने बाबत मिला।

मैंने इस सम्बन्ध में शीघ्र ही कार्यवाही करने हेतु शिक्षा सचिव को लिख दिया है।

आपका,
दामोदरदास आचार्य

भैरोंसिंह शेखावत
राजनेता

संख्या ८७/२११

फोन ६४८८७
सि ५१ सरदार पटेल मार्ग
जयपुर ३०२००१
दिनांक १६ जनवरी ८७

प्रिय श्री मढियाजी

आपका पत्र मिला। आप हर समय राजस्थानी भाषा के सम्बन्ध में मुझे व अन्य साथी व्यक्तियों को प्रेरित करते रहे हैं परन्तु दुर्भाग्य है कि हम अभी तक इसमें सफलता नहीं मिली। यह सही है कि इसका कोई संगठित प्रयास भी नहीं हुआ अन्यथा इसके परिणाम बहुत ही अच्छे होते। मैंने इस सम्बन्ध में कुछ प्रयास आरम्भ किये हैं और मेरा विश्वास है कुछ दिनों में इसका परिणाम सामने आयेगा। अब की बार विधान सभा में हमारे कुछ लोगों का प्रयास होगा कि इस विषय में राज्य सरकार को भी हमारे साथ लेने की चेष्टा करें। मेरा विश्वास है कि इसमें हम सफल होंगे।

आपको प्रेरणा सदैव मिलती रहेगी इस आशा और विश्वास के साथ आपने जो पत्र लिखा है उसके लिए आभार प्रकट करता हूं।

आशा है आप का स्वास्थ्य अच्छा होगा।

भवदीय
भैरोंसिंह शेखावत

Mathuradas Mathur
Politician

Ph 72292

K 12 Malvia Marg
C Scheme
Jaipur 302 001

February 11 1987

My dear Sethiaji

I have your letter of the 21st January 1987 with a copy of the letter you have addressed to Shri Rajiv Gandhi Prime Minister India in connection with the incorporation of Rajasthani as language in the Constitution of India We here in Jaipur would try in the ensuing Budget session of the Rajasthan Legislative Assembly to meet the M L A. s and get a non official resolution moved about recognition of Rajasthani and incorporating it in the Constitution of India After this resolution is moved, we will discuss with the Government representatives to take a favourable steps If the resolution is passed in the Assembly it will definitely strengthen our hands The difficulty which I feel is that nobody is interested in this subject and has enough time to pursue it day in and day out Occasional representation or discussion does not carry much ahead Any way we will do our best

I am sure you have a sound health and everything is well in the family

With regards

Yours sincerely

Mathuradas Mathur

के० एस० शर्मा
डाइरेक्टर

टेलेक्स ३१२२३८ ३८२५८७

नवोदय विद्यालय समिति
मानव ससाधन विकास मत्रालय
(शिक्षा विभाग)

दिनाक ४ ८ ८७

म एफ १३ २८/८७ न० वि० म०

प्रिय श्री सठियाजी

आपका दिनाक २४ ६ ८७ का प्रधानमत्रीजी को लिखा हुआ पत्र, नवोदय विद्यालया म राजस्थानी को ततीय भाषा के रूप म पढाने क सम्बध म नवोदय विद्यालय समिति म प्राप्त हुआ।

नवोदय विद्यालया म छात्र एव छात्राओ का प्रवेश छठी कक्षा म किया जाता है। छठी से सातवी या आठवी कक्षा तक उनकी शिक्षा का माध्यम मात भाषा/क्षेत्रीय भाषा होती है तथा उसक पश्चात हिंदी/अग्रेजी। क्योकि राजस्थान के विद्यालया म पाचवी कक्षा तक शिक्षा का माध्यम हिंदी है इसलिए राजस्थान म स्थित नवोदय विद्यालय म शिक्षा का माध्यम सातवी या आठवी या आठवी तक हिंदी ही होगा।

जहा तक तृतीय भाषा का प्रश्न है, हिंदी भाषी प्रान्तो म स्थित नवोदय विद्यालय म ततीय भाषा किसी अहिन्दी क्षेत्र की भाषा हो सकती है।

सादर।

आपका
के एस शर्मा

पालिका प्लेस, रामा कृष्णा आश्रम माग नई दिल्ली ११०००१

हरिदेव जोशी
मुख्य मन्त्री

जयपुर
दिनांक ११ जुलाई १९८७

अ शा पत्रांक निम/मु म/८७।८६८०

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका पत्र दिनांक २४ ६ १९८७ आप द्वारा श्री राजीव गांधी को राजस्थानी भाषा के बारे में दिये गये पत्र की प्रतिलिपि सहित प्राप्त हुआ।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय
हरिदेव जोशी

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

बीकानेर ३३४००१
(राजस्थान)
दिनांक ८६८७

क्रमांक

सेवामे
श्रीमान एम० एम० शर्मा
निदेशक
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग शास्त्री भवन
रामकृष्ण आश्रम मार्ग नई दिल्ली ११०००१

विषय – नवोदय विद्यालयों में राजस्थानी शिक्षण

सन्दर्भ –आपका पत्र दिनांक ६ ८ ८७ श्री कन्हैयालाल सेठिया के नाम।

मान्यवर

राजस्थान राजस्थानी भाषा भाषी प्रान्त है। यहा की लगभग ९० प्रतिशत जनता की अपनी मातभाषा राजस्थानी है। राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थानी अकादमी की स्थापना की गई है। केन्द्रीय साहित्य अकादमी मे मान्यता प्राप्त है। जिसका अपना इतिहास, व्याकरण, कोश है। वास्तव मे तो राजस्थानी साहित्य विश्व विख्यात है।

ऐसे सुन्दर राजस्थानी भाषाई प्रान्त राजस्थान को हिन्दी प्रांत मान कर नवोदय विद्यालयो मे राजस्थानी न रखकर बडा अनर्थ किया है। आपने प्राथमिक शिक्षा के छात्रों को अपनी मातभाषा मे अध्ययन से वंचित कर दिया है।

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर को राजस्थान के लेखको विद्यार्थियो बुद्धि जीवियो के प्रस्ताव प्राप्त हो रहे हैं। अकादमी पर बराबर जन दबाव पड़ रहा है।

आपम निवेदन है कि आप अपनी राजस्थानी विषयक नीति नरान्य
शिक्षालया म तताय भाषा क रूप म निदाण विषय पर पुन विचार करें। यहां
की मिट्टी स जुडी हुई वर्षों का सौगात मातृभाषा राजस्थानी को ततीय भाषा क
रूप म पढ़ाय जान का निणय रें।

प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा म।

भवदीय
पृथ्वीराज रतन
सचिव

प्रतिलिपि–

(१)—अध्यक्षजी जयपुर

(२)—श्री कन्हैयालाल सठिया कलकत्ता की सेवा म आपक १२ ८ ८७ क पत्र क
प्रत्युत्तर म।

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

बीकानेर ३३४००१
(राजस्थान)

क्रमांक ६२०५

सेवामें
श्रीमान कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता ७०० ००१

विषय —कालूराम पेडिवाल पुरस्कार प्रक्रिया

मान्यवर,

आप र प्रयासां स्यूं श्रीमान नागरमल जी पेडीवाल ११) हजार रु रा 'कालूराम पेडावाल पुरस्कार" री अकादमी कानी सूं देवण री घोषणा करी। आ बहुत ही सरावण जोग बात है। इण सूं मायड भाषा र सपूतां रो मान बढसी अकादमी मारू भी आ शुभ सूचना है।

ओ पुरस्कार इण हीज बरस अर्थात दिसम्बर ८७ ताईं छपी पोथ्यां नैं देवणो उचित रैसी। पुरस्कार देवण री प्रक्रिया छोटे रूप म इण भांत राखणै रो सुझाव है —

१ आ पुरस्कार हर साल राजस्थानी साहित्य री किण ही विधा नैं दियो जा सकै।

२ एक बार दिया पछै उण साहित्यकार नैं पाछो आ पुरस्कार नहीं दियो जावैला।

३ हर साल र दिसम्बर महीनै ताईं छपी पोथ्यां पर विचार कियो जासी।

४ लारला ३ बरसां री अवधी म छपी पोथ्यां पर ही विचार हुसी।

५ अकादमी कार्य समिति कानी स्यूं २० मानीता साहित्यकारां रो पैनल बणायो जासी। जिका सब स्यूं आछी पोथी रो प्रस्ताव भेजसी।

६ अध्यक्षजी कानी स्यूं मनोनीत एक प्रतिनिधि जद श्रीमान कन्हैयालाल सेठिया उण प्रस्ताव पोथ्यां री प्राथमिक छटणी करसी।

७ प्राथमिक छटणी में छटी पोथ्यां अध्यक्षजी तीन समीक्षकां ने भेजसी।

८ निर्णायकां री दृष्टि में सर्वोत्कृष्ट कृति ने अध्यक्ष जी 'बालूराम पटावरी पुरस्कार' सारू घोषित करसी।

आप स्यूं विनम्र निवेदन है कि आप उपरोक्त प्रक्रिया ने जे समुचित समझो तो मंजूरी दिरावसो। जे कठै आप रूप में परिवर्तन चावो तो सुझाव जरूर दिरावसो।

इण हाल बरस सूं आ पुरस्कार चालू करण री भी आप कृपया आप री सादर सम्मति भिजवावसो।

सादर।

विनीत,
पृथ्वीराज रतनू
सचिव

कानूराम पडीवाल जनकल्याण ट्रस्ट

नागरमल पेडीवाल
ट्रस्टी

फोन २६ ४०८०/८१
९ एजरा स्ट्रीट
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक २२ ११ १९८७

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
६, आशुतोष मुखर्जी रोड,
कलकत्ता

आ० सेठियाजी

सादर प्रणाम।

कल आपसे मुलाकात हुई थी और आपके साथ जो विचार विमर्श हुआ उसके अनुसार राजस्थानी साहित्य के लिए रु० ११ ०००/ (रुपये ग्यारह हजार मात्र) का एक पुरस्कार प्रति वर्ष कानूराम पडीवाल के नाम से आप करवा देवें या जो भी व्यवस्था आप करें।

आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगे। यहाँ सब सानन्द है।

आपका,
वास्ते कानूराम पडीवाल जनकल्याण ट्रस्ट
नागरमल पडीवाल
ट्रस्टी

नागरमल पेडीवाल
समाजसेवी

६ एजरा स्ट्रीट
कलकत्ता १
दिनांक १५ २ ८८

आ० सेठियाजी

सादर वन्दे।

पत्र आपका मिला। आपने रु० ११,०००/ (रुपये ग्यारह हजार मात्र) का ड्राफ्ट राजस्थानी भाषा साहित्य के भवन के लिए लिखा सो जाना। ड्राफ्ट मैं उनको शीघ्र ही भिजवा दूंगा।

आप सब मजे मे होंगे। यहां सब मजे में है।

आपका
नागरमल पेडीवाल

श्री सेठिया द्वारा राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता प्रदान करवाने के सन्दर्भ मे दिये गये कुछ महत्वपूर्ण पत्र

कन्हैयालाल सेठिया

सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता १
दिनांक बसंतपंचमी १९७४

आदरणीय बन्धु

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर जुलाई १९७४ से नवम-दशम कक्षाओं में ऐच्छिक विषय के रूप में राजस्थानी साहित्य की पढ़ाई लिखाई प्रारम्भ कर रहा है। आधुनिक राजस्थानी भाषा में पाठ्यक्रमों में रखी जाने योग्य पुस्तकें विरल ही हैं। विशेष कर आधुनिक राजस्थानी में गद्य की उपयुक्त पुस्तकें सरल व्याकरण, बाल साहित्य, गुटका, शब्द कोष आदि का लेखन और प्रकाशन अविलम्ब अपेक्षित है। गद्य और पद्य की अनेक विधाओं में उत्कृष्ट मौलिक सृजन, श्रेष्ठ अनुवाद और सङ्कलन की दिशा में जो भी प्रयास किए जायेंगे, वे भविष्य की दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण होंगे। मेरा विनम्र सुझाव है कि राजस्थानी गद्य में राजस्थान की महान विभूतियों के जीवन चरित्रों का एक सांगोपांग सङ्कलन 'गुदड़ी रा लाल' या जिस नाम से भी उपयुक्त हो प्रस्तुत कर नवम-दशम कक्षाओं के पाठ्यक्रम में रखा जाय। सङ्कलन में उन विभूतियों के जीवन चरित्रों को प्राथमिकता दी जाय जिन पर आज तक अपेक्षित प्रकाश नहीं पड़ा है। कुछ एक नाम जो मेरी स्मृति में आए हैं उन्हें यहां लिख रहा हूं —

१ पृथ्वीराज
२ भामाशाह
३ पन्नाधाय
४ डा० राम मनोहर लोहिया
५ जमनालाल बजाज
६ कृष्णदास जाजू
७ बृजलाल बियाणी
८ जयनारायण व्यास
९ केसरी सिंह बारहठ
१० स्वामी गोपाल दास
११ मोती लाल तेजावत
१२ जुगल किशोर बिड़ला
१३ सोहनलाल दूगड़
१४ चन्द्रधर गुलेरी
१५ पुरोहित हरिनारायण
१६ सिरेमल बाफना
१७ उदयराज उज्जवल
१८ नाथूदान महियारिया
१९ मूलनारायण पारीक
२० सुमनेश जोशी

इन नामा के अतिरिक्त जो भी उपयुक्त नाम हा, उन्हे उक्त सकलन म दिया जाय।

आप राजस्थानी भाषा के जाने माने लेखक है, आशा है कि आप राजस्थान के इन महान सपूता का पुण्य गाथा का सचयन सकलन और प्रकाशन कर भावी पीढी को कृताथ करेंगे।

भवदीय

कन्हैयालाल सठिया

(राजस्थानी भाषा के मूधन्य लेखका का लिखे गये पत्र का प्रतिलिपि)

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

रजिस्टर्ड ए डी

दिनांक ६ ११ ८४

प्रिय शिवचरणजी साहब

हमारी प्रिय नेता इन्दिराजी की हत्या से सारा देश शोक निमग्न हो गया है। वे भारत की आत्मा थी। विश्व इतिहास के महानतम व्यक्तित्व के उठ जाने से एक पूरा इतिहास ही समाप्त हो गया। नियति ने श्री राजीव गांधी के कन्धो पर भारी बोझ रख दिया है। अब तो हर देश भक्त को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र को अराजकता से बचाने के लिये एकजूट होकर श्री राजीवजी के हाथ मजबूत करने चाहिये। आप की सरकार ने राजस्थान की जीवन धारा राजस्थान नहर का नाम करण इंदिरा नहर कर दिवंगत नेता को हार्दिक श्रद्धाजलि दी है उसके लिये मेरी बधाई स्वीकार करें।

मेरा सौभाग्य था कि मैं १६ अक्टूबर ८४ को स्व इन्दिराजी से मिला था और बीस मिनट तक उनके साथ मेरी बातचीत हुई। राजस्थानी भाषा तथा राजस्थान के विकास के बारे में मैंने जो कुछ कहा उसे उन्होंने ध्यान पूर्वक सुना। राजस्थानी भाषा के बारे में उन्होंने कहा कि उन्ही की प्रेरणा से केन्द्रीय अकादमी ने राजस्थानी भाषा को साहित्यिक मान्यता दी है। मैंने इसके लिये अपनी कृतज्ञता प्रकट की और राजस्थानी भाषा को यथा शीघ्र संविधान में मान्यता देने के लिये अनुरोध किया। हल्दी घाटी की पावन माटी की एक विशेष रूप से बनवाई गई मंजूषा तथा मेरी पांच भाषाओं में लिखी पुस्तकें उन्हें भेंट की तो उन्होंने अपने फोटोग्राफर से उस समय का चित्र भी खिंचवाया। हल्दी घाटी स्थल के निर्माण के बारे में उन्होंने पूरी दिलचस्पी ली। मैंने कहा कि राज्य सरकार के पर्यटन विभाग ने केन्द्र से आर्थिक अनुदान प्राप्त करने के लिये आवेदन भी भेजा है तो उन्होंने कहा कि मेरे सामने तो ऐसी कोई बात नहीं आई मैं देखूंगी। दिनांक २५ अक्टूबर १९८४ को फिर स्व इंदिराजी के यहां कलकत्ते में गठित राष्ट्रीय एकता समिति की दिल्ली शाखा के उद्घाटन समारोह का आयोजन हुआ था मैं उसका स्वागताध्यक्ष था और स्व इन्दिराजी ने उसका विधिवत उद्घाटन किया था। वह सब तो अब स्वप्नवत हो गया है।

पाकिस्तान के आक्रामक रुख तथा पंजाब के विवाद के कारण राजस्थान की विशेष स्थिति बन गई है।

राजस्थान सीमान्त प्रदेश है इसलिये समुचित विकास भारत के हित की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हो गया है।

गंगा के बाढ़ के पानी को यमुना में डालकर लिफ्ट सिस्टम द्वारा राजस्थान के भरतपुर अलवर झुंझणू सीकर चूरू और नागौर क्षेत्र में सिंचाई एवं पेय जल के लिये दिये जाने के सम्बन्ध में मैंने १९७२ में स्व इन्दिराजी को दिये गये सुझाव के सन्दर्भ में केन्द्रिय सरकार ने १२ मई १९८३ को जो आयोग गठित किया है उसे ध्यान में रखते हुये इस प्रस्तावित योजना को क्रियान्वित कराने के लिये राज्य सरकार निरन्तर प्रयास करें तो उचित होगा।

बड़ी रेल लाईन से जयपुर जोधपुर बीकानेर को जोड़ा जाना डिफेन्स की दृष्टि से अत्यन्त जरूरी है।

राजस्थान में विद्युत उत्पादक संयत्रों को लगाने के काम को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

मेरे दिल्ली प्रवास में मैं अनेक विशिष्ट राजनेताओं से मिला था। श्री बलरामजी जाखड़ श्री रामनिवासजी मिर्धा श्री आरिफ से राजस्थानी भाषा को मान्यता दिये जाने के बारे में खुल कर चर्चा हुई थी। श्री जाखड़ने कहा कि राजस्थानी जैसी समृद्ध भाषा को मान्यता नहीं दी गई तो यह राजस्थान की निबलता है।

आपकी जानकारी के लिये मैंने सारे समाचार लिखे हैं। आप आवश्यक कदम उठाने की कृपा करेंगे।

आप स्वस्थ होंगे। मेरे योग्य सेवा पत्रोत्तर दें।

विनीत

कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक ४ १ ८६

प्रिय हलवासियाजी

स्नेहाशीष। आपका २/१ का पत्र मिला आपके विचार से अवगत हुआ।

अगर आपके विचार को क्रियान्वित किया जाय तो भारत के संविधान में संशोधन कर उन सोलह भारतीय भाषाओं की तथा विदेशी भाषा अंग्रेजी की संवैधानिक मान्यता को अस्वीकृत कर केवल मात्र हिन्दी को ही भारत की संवैधानिक भाषा घोषित की जानी चाहिये। अन्यथा केवल राजस्थानी को ही संविधान में उसका न्यायोचित स्थान देने से देश विघटित हो जायेगा यह तर्क संगत नहीं है।

आज तक देश का विभाजन कभी भाषा के आधार पर नहीं हुआ है न होगा। पाकिस्तान का निर्माण धर्म और राजनैतिक स्वार्थों के आधार पर हुआ है। पाकिस्तान से बंगला देश का विघटन भी आर्थिक और राजनैतिक कारणों से हुआ है अगर बंगला देश भाषा के नाम पर विघटित होता तो पश्चिमी बंगाल और बंगला देश पुनः एक इकाई बन जाते।

भाषा का प्रश्न मस्तिष्क से नहीं हृदय से जुड़ा हुआ है। हिन्दी मिट्टी से जुड़ी हुई भाषा नहीं है। भारत के किसी भी प्रान्त का किसान हिन्दी नहीं बोलता उत्तर प्रदेश और बिहार के किसान भी ब्रज भोजपुरी, अवधी बुन्देलखंडी और मैथिली भाषा ही बोलते हैं। हिन्दी मात्र सम्पर्क की भाषा है और भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही देश की सम्पर्क की भाषा बन सकती है अन्य कोई भी भाषा नहीं यह निश्चित है।

सहज आत्माभिव्यक्ति माटी से जुड़ी भाषा में ही हो सकती है। तुलसी सूर, मीरा की कविता उनकी अपनी भाषा में ही रची गई थी इसी कारण उनकी तुलना में हिन्दी में रची कोई कृति नहीं ठहर पाती। रवीन्द्रनाथ बंगला में लिख कर ही विश्व कवि बन सके थे अगर हिन्दी में लिखते तो वह चीज नहीं दे सकते थे जो उन्होंने बंगला में लिख कर दी।

विदेशी शासक अगर शासितों पर अपनी भाषा लादते हैं तो यह तो समझ मे आने वाली बात है पर हिंदी को जबरन लादा जाय ऐसा विचार ही हिंदी के लिये आत्मघाती होगा ।

आशा है भारतीय भाषायें भारत के शतदल कमल की अलग अलग पखुंडिया के रूप मे रहते हुये उसके सौन्दर्य को द्विगुणित करेंगी और अनेकता मे जुडी यह एकता ही सही एकता होगी ।

आप स्वस्थ होंगे ।

मेरे योग्य सेवा—पत्र की प्राप्ति की सूचना दें ।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

पुनश्च —उर्दू को संविधान मे मान्यता प्राप्त है और उसका अपेक्षित विकास हो इससे किसी का विरोध नही है । पर धर्म के आधार पर उसे किसी प्रदेश की भाषा बताने की माग जबकि वह किसी प्रदेश की सम्पूर्ण इकाई की भाषा नही है, अनुचित है ।

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १६ ४ ८६

प्रिय श्री जोशीजी

समाचार पत्रों में राजस्थान सिंधी अकादमी तथा राजस्थान उर्दू अकादमी में क्रमश: आपका दिया हुआ भाषण तथा श्री हीरालाल देवपुरा का दिया गया भाषण पढ़ा। मुझे प्रसन्नता है कि राज्य सरकार सिंधी और उर्दू के विकास के लिये जागरूक है। पर यह कैसी विडम्बना है कि चार करोड़ राजस्थानियों की भाषा के प्रति राजस्थान सरकार पूर्णत मौन साधे हुये है। राजस्थानी भाषा के प्रति राज्य सरकार के इस उपेक्षापूर्ण रुख से मेरा मन दुखी है और यह कहावत पत्र लिखते समय मेरी लेखनी पर आ गई है –

घर रा पूत कवारा डोलै पाडोस्या रा फेरा।

राजस्थानी को राज्य स्तर पर मान्यता दिये बिना राजस्थान के मौलिक व्यक्तित्व को स्वीकार नहीं किया जा रहा है। राजस्थान की महान सांस्कृतिक चेतना जो मरुभाषा के माध्यम से व्यक्त हुई है उसे अनदेखा किया जा रहा है।

राजस्थानी भाषा की अमान्यता के कारण पग पग पर राजस्थानियों को अपमानित होना पड़ता है और उन्हें दूसरी श्रेणी का नागरिक माना जाता है।

आप सांस्कृतिक चेतना के धनी व्यक्ति हैं इसलिये मेरे हृदय की अपार पीड़ा को मैंने इस पत्र द्वारा आपके समक्ष व्यक्त की है।

अब भी समय है कि हम इस प्रश्न को गंभीरता से लें और इस महान भूल को संशोधित करें।

आप स्वस्थ होंगे। योग्य सेवा। पत्रोत्तर दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

माननीय श्री हरिदेव जी जोशी
मुख्य मंत्री राजस्थान
जयपुर—,

प्रतिलिपि —(१) श्री हीरालालजी देवपुरा
शिक्षा मंत्री राजस्थान
जयपुर—,

(२) श्री कैलाशदानजी उज्जवल
अध्यक्ष राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ६७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

व्यक्तिगत

दिनांक १७ ६ ८६

प्रिय श्री जोशीजी

सादर स्नेहाभिवादन।

आपका और मेरा परिचय चालीस वर्ष पुराना है। आजादी की लड़ाई हम ने कंधे से कंधा लगाकर लड़ी है। आपका मेरे प्रति सहज आत्मीय भाव है वैसा ही आपके प्रति मेरा हार्दिक आत्मीयभाव है। यह व्यक्तिगत पत्र मैं आपको कई दिनों से लिखने की सोच रहा था शायद वह क्षण अब आया है।

आप भले राजस्थान के मुख्य मंत्री या मंत्री नहीं रहेंगे पर राजस्थानी आप सदा ही रहेंगे। इस जीवन के बाद भी आपको राजस्थानी के रूप में ही याद किया जायेगा।

स्व. श्री जयनारायण व्यास को छोड़कर आप सभी भूतपूर्व मुख्य मंत्रियों में सबसे अधिक सांस्कृतिक और साहित्यिक रुचि रखने वाले हैं। प्रांत की भाषा राजस्थानी को संविधान की आठवीं सूची में मान्यता देने की अनुशंसा आपके द्वारा हो यह मेरी हार्दिक कामना है। इस महत् कार्य से आप इतिहास में राजस्थान के चेतना पुरुष के रूप में याद किये जायेंगे।

राजस्थान का राजनैतिक गठन उसके सांस्कृतिक व्यक्तित्व के बिना निष्प्रभ है।

मैं सभी प्रदेशों में गया हूँ उन प्रदेशों की जनता राजस्थानी के बिना राजस्थान का मौलिक व्यक्तित्व स्वीकार नहीं करती और राजस्थान को हिन्दी के उपनिवेश के रूप में हीन दृष्टि से देखती है।

जिस तरह सभी भूतपूर्व रियासतों के विलीनीकरण से राजस्थान बना है उसी तरह सब आंचलिक बोलियों के सम्मिश्रण से राजस्थानी भाषा का स्वरूप बना है। ये भाषाएं राजस्थान में पहले भी थीं पर साहित्य की भाषा सारे

राजस्थान मे डिंगल थी, इसी तरह आधुनिक राजस्थान की साहित्यिक भाषा राजस्थानी है।

हर राज्य के सीमाचल की भाषाए स्वाभाविक रूप स ही खिचडी भाषाए होती हैं इसका राजस्थान भी अपवाद नही है पर राजस्थान का बहुसख्यक जन समुदाय तथा प्रवासी राजस्थानी जिनकी सख्या करीब तीन कराड है एक ही भाषा बोलते और लिखते हैं। व्याकरण का मूल ढाचा एक है। श्री राजीवजी गाधी को ६ अगस्त, ८६ को लिये गये मेरे पत्र के प्रत्युत्तर म (जिसकी प्रतिलिपि मैंने आपको भेजी थी) प्रदेश के सभी अचलो के साहित्यकारो राजनीतिज्ञो, उद्योगपतियो और मनीषियो के पत्र मुझे प्राप्त हुये है जिनम उन्होने मेरी माग का पूर्ण समर्थन किया है।

राजस्थानी भाषा को सविधान म स्थान देने स हिन्दी की कोई क्षति नही होगी बल्कि हिन्दी (जिसके कोष म केवल एक लाख पद्रह हजार शब्द है) राजस्थानी के विपुल शब्द भडार (करीब पाच लाख शब्दो का) अपने म समाहित कर गगा बन जायेगी। यही बात मैंने स्वर्गीय श्रीमती इदिराजी गाधी के एक प्रश्न के उत्तर म कही थी और उन्होने इस बात की सच्चाई को स्वीकार किया था।

बस आपने राजस्थान म व्रज भाषा की अकादमी सिंधी भाषा की अकादमी, उर्दू भाषा की अकादमी सस्कृत भाषा की अकादमी तथा हिन्दी की अकादमी स्थापित कर अल्प सख्यक भाषा भाषियो को आश्वासित किया ही है अत अल्प भाषा भाषियो को भी अपना दृष्टिकोण राजस्थानी भाषा के प्रति जो प्रान्त के बहुसख्यक लोगो की भाषा है उदार रखना चाहिये।

आशा है आप मेरे पत्र पर गहराई से विचार करेंगे और अपने सुचिन्तित मतव्य से अवगत करेंगे।

आप स्वस्थ होगे। मेरे योग्य सेवा।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

माननीय हरिदेवजी जोशी
मुख्य मत्री राजस्थान
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाप ४७ ०८१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १५ ६ ८५

घणा मानीता सिरी पूनमचदजी विश्नोई स्यू कन्हैयालाल सेठिया का ज राजस्थानी बधावमी।

आप ३१ अक्तूबर १९८४ म जद कलकत्ता पधारचा हा उण बगत आप स्यू राजस्थानी भापा साहित्य अर सस्कति अकादमी र बार म नीच लिख्या मुजब बात हुई ही —

१ राजस्थानी भापा साहित्य अकादमी र साग सस्कति न जोडण स्यू राजस्थानी साहित्य री खिमता र बी री समग्रता र आग एक प्रश्न चिह्न लागग्यो जको उचित नही। काइ राजस्थानी भापा साहित्य अता निबला है क बो सस्कति बिना कोनी चाल सक ?

२ कोई भी प्रान्त री भापा साहित्य री अकादमी साग सस्कति कोनी जोडी गई। ब खाली साहित्य अकादम्या ही है। राजस्थान म भी जका हिन्दी सिन्धी उर्दू तथा सस्कृत री अकादम्या है बा र साग भी सस्कति न कोनी जोडी गई। फेर राजस्थानी भापा साहित्य री अकादमी र गल म आ सस्कति री काठ बेडी क्यू ?

३ राजस्थान सरकार रो जद सस्कति र पयटन रा एक मत्रालय ही अलग बण्योडो है फेर राजस्थानी भापा साहित्य अकादमी र साग सस्कति न जोडण म काई तुक कोनी। सस्कति र नाव पर और भी का जोडणा हुव तो बो सस्कति र पयटन विभाग र साग जोडचा जा सक है।

४ राजस्थानी भापा साहित्य री अकादमी साग सस्कति न जोडण स्यू अकादमी रा मूल उद्देश्य साहित्य गौण हुग्या र सस्कति मुख्य हुगा। १९८४ म अकादमी री ओर स्यू जका आठ जणा न सम्मानित करया गया है बा म खाली एक जणो मौलिक सिरजणधरमी साहित्यकार री गिणती म आण सक है। सम्मान रा समाचार म जागता जात र बुलटिन म काल देख्यो।

५ अकादमी जे राजस्थानी भाषा साहित्य र मौलिक सिरजण'र साहित्य री सगली विधावा रै विकास न बल दणी चाव है ता अकादमी र माग लगायाई सस्कृति मवद नै हटा दणी उचित है।

आप ऊपर लिख्य विचारा स्यू आप री सहमति प्रगट करी हो और क्या हो' क मैं जैपर जा र अपेक्षित सशोधन रा प्रस्ताव पास करस्यू। अकादमी रा मनोनीत सम्प्य श्री वेद व्यास भी मन आप र कागद म लिखी ही क चुनावा र बाद 'सस्कृति मबद' न हटाण रा प्रस्ताव पास्या जासी।

जठ ताई अकादमी र सागै जुड्योड सस्कृति सबद न नहीं हटाया जासी वठ ताई राजस्थानी भाषा साहित्य अकादमी आप रा आपरा रतवो कोनी पाण सक।

आशा है आप राजस्थानी भाषा साहित्य र सागै न्याय करोला और आ अकादमी दूजी प्रान्ता री साहित्य अकादम्या री पगत म दूजी दरज री अकादमी बाज रण अपमान'र दुरगत स्यू राजस्थानी न उबारस्या।

कागद रो पडूत्तर दिरावस्या।

आपरो
कन्हैयालाल सठिया

श्री पूनमचद जी विश्नोई
अध्यक्ष रा० भाषा साहित्य अर सस्कृति अकादमी
बीकानेर

प्रतिलिपि
श्री कलानाथजी उज्जवल
बीकानेर,

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७-०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक २७ ६ ८६

प्रिय श्री हरिशंकरजी,

आपका १७/६/८६ का पत्र मिला। आपका राजस्थानी संस्कृति एवं भाषा के प्रति अनुराग है यह जानकर प्रसन्नता हुई।

मारवाड़ी सम्मेलन को एक सजीवित संस्था बनाईये। अभी तक मारवाड़ी सम्मेलन पूर्वांचल के मध्य वित्तीय व्यवसाईयों की एक संस्था मात्र है जिसके पास समग्र मारवाड़ी समाज की दृष्टि से कोई रचनात्मक कार्यक्रम नहीं है।

राजस्थान हरियाणा एवं मालवा जो सारे मारवाड़ी समाज के मूल स्थान है वहां सम्मेलन की कोई क्रिया या संगठन नहीं है। इन क्षेत्रों में महिलाओं में शिक्षा का प्रतिशत अन्य प्रान्तों की तुलना में अत्यन्त चिन्तनीय है। शिक्षा के अभाव में ही कुरीतियां और अंध विश्वास पनपते हैं। सम्मेलन उपरोक्त क्षेत्रों में महिला प्रौढ़ शिक्षण का काम व्यापक रूप से करें तो यह एक रचनात्मक दिशा होगी। मंचीय प्रचार और भाषणों से पर्दा प्रथा, दहेज, बाल विवाह आदि कुरीतियों का उन्मूलन नहीं होगा। समाज की नारी शक्ति की सांस्कृतिक चेतना जगाईये तभी अंध रूढ़ियों से समाज मुक्त होगा। समाज की अर्थ प्रधान मनोवृत्ति को सांस्कृतिक चेतना ही सन्तुलित कर सकती है।

आपसे कलकत्ता में मेरी बात हुई थी। दिल्ली में मारवाड़ी विश्वविद्यालय बनाईये। जिसमें मारवाड़ी संस्कृति मारवाड़ी भाषा के विशेष अध्ययन की व्यवस्था हो।

प्रस्तावित मारवाड़ी विश्वविद्यालय के निर्माण में समस्त देश के सभी मारवाड़ियों से सहयोग लीजिये।

भूतपूर्व राजा महाराजाओं से जिनके बड़े-बड़े व्यापार हैं, देश में चारों ओर बिखरे मारवाड़ी धनपतियों से उक्त योजना के लिये सहयोग लीजिये।

समग्र द०ग के मारवाडी बुद्धिजीविया म स कुछ एक चुने हुये बुद्धिजानिया की एक समिति इस याजना की रूपरखा बनाने क लिये डा० लक्ष्मामलजी सिघवी की अध्यक्षता म गठित कर दीजिये।

डा० दौलत सिहजा कोठारी (विश्व विख्यात वज्ञानिक) स भी आप अपक्षित मागदशन ले सकत हैं।

मैं चाहता हू कि आप क प्रभावी व्यक्तित्व स समूचे समाज का गति मिल और हम समग्र राष्ट्र क परिपक्ष्य म एक जावन्त शक्ति बन।

आप स्वस्थ हाग।

याग्य सवा—पत्र दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री हरिशकरजी सिहानिया
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक ९ अगस्त, १९८६

प्रिय श्री राजीवजी

आपने देश में नई शिक्षा नीति लागू करने का जो सकल्प किया है उसके लिये मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

त्रिभाषा सूत्र को क्रियान्वित करने के लिये ससद ने स्वीकृति दी है यह अभिनन्दनीय है।

मैं यह पत्र इस आशय से लिख रहा हूं कि त्रिभाषा सूत्र की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि उन भाषाओं को भी जिन्हें साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने तो मान्यता दी है पर जो सविधान की आठवी सूची में स्वीकृत नहीं है उन्हें स्वीकृत किया जाय जिससे कोमल मति शिशु अपनी मातृ भाषा के माध्यम से अपेक्षित मानसिक विकास कर सकें।

मैं यह पत्र मेरी महान मातृभाषा राजस्थानी में ही (जो आठ करोड राजस्थानियों तथा प्रवासी राजस्थानियों की मातृभाषा है) लिखता तो सभव है कि आपको पढ़ने में किंचित कठिनाई होती अत राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिख कर आपको नम्र निवेदन कर रहा हू –

१ राजस्थानी भाषा विश्व की समृद्धतम भाषाओं में से है जिसे भारतीय और विदेशी भाषाविदों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।

२ राजस्थानी भाषा का आधुनिक साहित्य किसी भी अन्य भारतीय भाषा के साहित्य से कम श्रेष्ठ नहीं है।

राजस्थान के मरुस्थल के जीव जन्तु वनस्पति (Fauna & Flora) जिनके लिये दूसरी भारतीय भाषाओं में पर्यायवाची शब्द नहीं है तथा वहां के निवासियों का खानपान पहनावा त्यौहार और लोक गानों को एक अपनी

विशेषता है जिसे आपने स्वयं ही अपने राजस्थान भ्रमण के समय लक्षित किया ही होगा, अत राजस्थान की आत्मा की अभिव्यक्ति केवल और केवल राजस्थानी भाषा में ही हो सकती है। अन्य किसी भाषा में नहीं। हिन्दी राष्ट्र की सम्पर्क भाषा है पर व्यक्ति अपने हृदयगत भावों को अपनी ही भाषा में व्यक्त कर सकता है यह मनोवैज्ञानिक सत्य है।

४ मैं १६ अक्टूबर १९८३ को आपकी पूज्या माताजी स्व इन्दिरा गांधी से राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित करने के सम्बन्ध में मिल चुका हूं। वे राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता देने के मेरे विचारों से प्रभावित हुई थी उन्होंने मुझे बताया कि साहित्य अकादमी से राजस्थानी भाषा को मान्यता उन्होंने ही दिलवाई है। मैंने इसके लिये उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। दैव योग से वे असमय में ही संसार से चली गई अन्यथा आज यह पत्र मुझे आपको नहीं लिखना पड़ता।

अगर साहित्य अकादमी द्वारा जिन भाषाओं को (जिन्हें देश के मूर्धन्य भाषाविदों ने मान्यता दी है) संविधान में स्वीकृत नहीं किया जाता है तो त्रिभाषा सूत्र उन भाषाओं वाले राज्यों के शिक्षार्थियों के लिये कोई अर्थ नहीं रखता।

आपकी संवेदनशीलता और विवेकपूर्ण चिंतन से मैं विशेष रूप से प्रभावित हूं। आपने मेरे सुझावों के अनुसार ही सांस्कृतिक केन्द्रों (Cultural Centres) के सम्बन्ध में लिये गये पूर्व निर्णयों पर पुनर्विचार किया और पश्चिमी सांस्कृतिक इकाई को तदनुसार ही गठित कर उदयपुर को उसका मुख्यालय बनाया इसके सम्बन्ध में दिये गये मेरे बधाई पत्र की प्राप्ति की सूचना का पत्र आपके कार्यालय से मुझे मिला, मैं इसके लिये आपका कृतज्ञ हूं।

आप देश के विभिन्न भागों की संस्कृति भाषा एवं लोककलाओं में गहरी रुचि रखते हैं तथा उनके संरक्षण के लिये सतत जागरूक हैं इसलिये मैंने आपको राजस्थान के जनमानस से (दुर्भाग्य से जिससे वहां के राजनेता नहीं जुड़े हुए हैं) अवगत कराना अपना पवित्र कर्त्तव्य और दायित्व समझा है।

मुझ आशा है कि आप मेरे इस महत्वपूर्ण पत्र पर गम्भीरता से चिन्तन करेंगे और राजस्थान को अपनी भाषा राजस्थानी प्रदान कर अतीत म की गई भूल को सशोधित करने की कृपा करेंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा म
श्री राजीव गाधी
प्रधान मंत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाप ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३, मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक १४ ६ ८६

महामहिम श्री जेलसिंहजी
राष्ट्रपति भारत
नई दिल्ली

आदरणीय

कलकत्ता की सस्था ज्ञान भारती' के रजत जयन्ती समारोह म आपने अपने भाषण म शिक्षा के सन्दभ म बोलते हुये कहा था कि छात्रो पर निरथक पुस्तको का बोझ नही बढे यह ध्यान म रखना चाहिये।

आपके इसी कथन के सन्दभ म आपकी सरकार द्वारा त्रिभाषा सूत्र के अतगत जो नई शिक्षा नीति लागू करने का निणय लिया है उसके बारे म निम्न निवेदन करना चाहता हू।

त्रिभाषा सूत्र की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि उन भाषाओ को भी जिन्हें साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने मान्यता दी है पर जो सविधान की आठवी सूची म स्वीकृत नही है उन्हें स्वीकृत किया जाय जिसस कि कोमल मति शिशु अपनी मातृ भाषा के माध्यम से अपेक्षित मानसिक विकास कर सकें।

अगर साहित्य अकादमी द्वारा जिन भाषाओ को जिन्हें देश के मूधन्य भाषाविदो ने मान्यता दी है उन्हें सविधान म स्वीकृत नही किया जाता है तो त्रिभाषा सूत्र उन भाषाओ वाले राज्यो के शिक्षार्थियो के लिये कोई अथ नही रखता और उनके सिर पर पुस्तको का निरथक बोझ बढेगा।

राजस्थानी भाषा जो विश्व की समृद्धतम भाषाओ म से है जिसे साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने भी मान्यता दी है) तथा जो आठ करोड राजस्थानियो तथा प्रवासी राजस्थानियो की मातृभाषा है उसे सविधान म मान्यता न देना किस आधार पर उचित है? राजस्थान के मरुस्थल के जीव जन्तु वनस्पति Fauna

& Flora जिनके लिये दूसरी भारतीय भाषाओं में पर्यायवाची शब्द नहीं है तथा यहां के निवासियों का खान पान पहनाव, त्यौहार और लोक गीत एक अपनी विशेषता रखते हैं और केवल राजस्थानी भाषा में ही राजस्थान की आत्मा की अभिव्यक्ति हो सकती है यह मनोवैज्ञानिक सत्य है अतः राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता नहीं देना विश्व के समस्त वाङ्मय की अपूरणीय क्षति है।

मैं आपकी संवेदनशीलता तथा देश के विभिन्न भागों की संस्कृति, भाषा एवं लोक कलाओं के प्रति आपका जो उदार दृष्टिकोण है उससे विशेष रूप से प्रभावित हूँ अतः मैंने आपको राजस्थान के जन मानस की भावना से अवगत कराना अपना पवित्र कर्तव्य और दायित्व समझा है।

आशा है आप मेरे इस महत्वपूर्ण पत्र पर गंभीरता से चिन्तन करेंगे और अपने सुचिन्तित विचार से अपनी सरकार को समुचित सुझाव देंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा में
ज्ञानी जैलसिंहजी
राष्ट्रपति भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक १९ ९ ८६

प्रिय श्री राजीवजी,

आपकी हाल ही में सम्पन्न हुई कलकत्ता यात्रा में आपने मुझे मिलने का अवसर दिया तथा मेरे द्वारा भेंट स्वरूप दी गई हल्दीघाटी की पवित्र माटी की मंजूषा एवं मेरी पांच भाषाओं में छपी कृतियां स्वीकार की इसके लिये मैं हृदय से आभारी हूं।

आपने मेरे सुझावों को ध्यानपूर्वक सुना इसकी मुझे प्रसन्नता है। पुनः विनम्र निवेदन है कि

१ साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त सभी भाषाओं को संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित किया जाय इससे हिन्दी के शब्द भंडार की समृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

२ भारत के चारों अंचलों में जिस प्रकार सांस्कृतिक परिषदें स्थापित की गई हैं उसी तरह भारत के चारों अंचलों में हिन्दी विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाय इससे देश के भाषा की एकीकरण को गति मिलेगी।

३ अहिन्दी राज्यों में हिन्दी की अकादमियां संस्थापित करने का सुझाव केन्द्र सरकार संदर्भित राज्यों को दे इससे इन प्रान्तों के हिन्दी लेखकों को प्रोत्साहन मिलेगा तथा उनकी रचनाओं का प्रकाशन और प्रसारण सहज रूप से हो सकेगा।

आप हिन्दी की समृद्धि एवं प्रसार के लिये निरन्तर प्रयत्नशील हैं अतः मेरे सुझावों को क्रियान्वित करने के बारे में आवश्यक विचार करने की कृपा करेंगे।

पत्र के प्रत्युत्तर की अपेक्षा है।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजीवजी गांधी
प्रधान मंत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १० १२ ८६

प्रिय राजीवजी,

जैसा कि १८ सितम्बर, १९८६ को कलकत्ता के राजभवन मे आपसे हुये साक्षात्कार के समय ने आपका निवेदन किया था कि हिन्दी के प्रति विरोध को समत करने के लिय आप उन भाषाओं को जिन्हें साहित्य अकादमी ने तो मान्यता दी है पर जिन्हें सविधान की आठवी सूची म सम्मिलित नही किया गया उन्हें आप सविधान म मान्यता प्रदान करें।

वत्तमान के घटनाक्रम क सन्दभ म मेरा उक्त निवेदन आपके विशेष ध्यान देने योग्य है।

भाषाविदो ने जिन भाषाओं को पूर्ण मान्यता दी है उन्हें राजनैतिक कारणो से सविधान म मान्यता न देना हिन्दी के हित म नहा है।

हिन्दी के प्रति सदभावना का वातावरण बने और हिन्दी का विरल शब्द कोष सपुष्ट बने यह राष्ट्र के आत्मिक एव सास्कृतिक एकीकरण के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

आशा है आप मेरे इस महत्वपूर्ण सुझाव पर गभीरतापूवक विचार करने की कृपा करेंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजीवजी गाधी
प्रधान मत्री, भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक २१-१२ ८६

प्रिय श्री राजीवजी

बगाल के सफल दौरे के लिये हार्दिक बधाई।

आपने गुवाहाटी जाने के पूर्व हेलीपैड स्थल पर प्रेस कान्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुये नेपाली एव अन्य तीन चार भाषाओं को सविधान की आठवीं सूची म सम्मिलित करने की बात को विचाराधीन बताया यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

मेरे मन म पूर्ण विश्वास है कि तीन चार भाषाओं को सविधान म सम्मिलित करने की बात कहते समय आठ करोड राजस्थानी भाषा भाषियो की समृद्धतम मातृभाषा राजस्थानी अवश्य ही आपके मन म रही होगी।

स्व इन्दिराजी गाधी से मैं १६ अक्टूबर १९८४ को राजस्थानी भाषा को सविधान म सम्मिलित करने का निवेदन करने के लिये मिला था। उनके साथ पूर्ण विस्तार स बात हुई और उन्होंने मुझे कहा कि राजस्थानी भाषा को साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता मैंने ही दिलवाई है तथा राजस्थानी को सविधान म सम्मिलित किये जाने के मेरे सुझाव पर उनकी पूर्ण सहानुभूति थी एव उन्होंने इस पर यथासमय विचार करने का आश्वासन मुझे दिया था।

अब समय आ गया है कि आप विश्व की महानतम भाषाओं म से एक राजस्थानी भाषा को सविधान म सम्मिलित कर आठ करोड राजस्थानियों की न्यायोचित माग का उचित सम्मान करेंगे।

आप स्वस्थ होगे। पत्र का प्रत्युत्तर अपेक्षित है।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजीवजी गाधी
प्रधान मन्त्री, भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक २१ १ ८७

आत्मजाण कलानाथजी सा

आप रो १३ जनवरी ८७ रो कागद तथा श्री राजीव गांधी नै लिख्योड़ो कागद री नकल मिली।

आप जको मेमोरण्डम त्यार करो उण रै बाबत म्हारा अै सुझाव है —

१ मेमोरण्डम संक्षिप्त हूणो चाहीज।

२ मेमोरण्डम में इण बात पर जोर दियो जावै कै जिण भाषावां नै साहित्य अकादमी मानता दी है वां नै संविधान में मानता देणी उचित है। साहित्य अकादमी राजस्थानी भाषा नै पूर्ण और समृद्ध भाषा मान र मान्यता दी है जद कोई भी राजनैतिक कारणां स्यूं राजस्थान नै बी री भाषा स्यूं वंचित राखणो देस र सांस्कृतिक ढांचे नै क्षतिग्रस्त करणो है।

३ त्रिभाषा सूत्र रै सन्दर्भ में मायड़ भाषा नै मानता देणी जरूरी है कोमल मति बालकां रो विकास खाली मायड़ भाषा में ही हुय सकै है तथा मायड़ भाषा र माध्यम बिना वै आपरी जलम भोम री विशेषताआं नै कियां जाणसी? राजस्थानी भाषा नै संविधान में मानता नहीं देवण रै कारण ही राजस्थान शिक्षा रै क्षेत्र में सगळे प्रान्तां स्यूं घणो पिछड़योड़ो है। राजस्थान में लुगायां में तो ११ प्रतिशत ही शिक्षित है इण कारण स्यूं परिवार नियोजन तथा सामाजिक सुधारां नैं राजस्थान में अपेक्षित गति कोनी मिळी।

मेमोरण्डम त्यार हुयां पछै उण री एक प्रति मनै भिजवावोला।
आप निरोग हुस्यो। कागद रो पडूत्तर दिराईज्यो।

श्री कलानाथजी उज्जवल
जयपुर

आपरो
कन्हैयालाल सेठिया

पुनश्च —राजस्थानी भाषा नै मानता नहीं मिलण स्यूं राजस्थान रै मौलिक व्यक्तित्व नै स्वीकार कोनी करयो जावै प्रवासी राजस्थान्यां नै दूसरी श्रेणी का नागरिक मानै।

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक १२ ३ ८७

प्रिय श्री चिदम्बरम

भाषाओं के सम्बन्ध में दिये गये आपके वक्तव्य की स्टेटसमन की दिनांक १२/३/८७ की कतरन आपकी जानकारी के लिये भेज रहा हू।

अगर स्टेटसमन में छपा उक्त वक्तव्य सही है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

आपका यह मन्तव्य कि संविधान की आठवी सूची में और अधिक भाषाओं के सम्मिलित करने से अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं होगी भारत के जनतांत्रिक संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है।

जिन भाषाओं को साहित्य अकादमी ने पूर्ण भाषा मानकर मान्यता दी है और जिन्हें राजनैतिक कारणों से संविधान में सम्मिलित नहीं किया गया है उन्हें संविधान में स्थान न देना देश के सांस्कृतिक ढांचे की उपेक्षा करना है और विघटन की प्रक्रिया को बढ़ावा देना है।

भारत के प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी से जब मैं गत वर्ष १८ सितम्बर ८६ को कलकत्ता के राजभवन में मिला था तब मैंने यही सुझाव दिया था कि जिन भाषाओं को साहित्य अकादमी ने मान्यता दी है उन सब भाषाओं को संविधान में सम्मिलित किया जाना चाहिये अन्यथा हिन्दी का विरोध उग्रतर होता जायेगा।

आशा है आप मेरे पत्र पर विचार करेंगे। पत्र का उत्तर दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री पी चिदम्बरम्
राज्य मंत्री भारत सरकार
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ६७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मंगो लेन कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक २३ ३ ८७

प्रिय श्री हरिशंकरजी,

राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता देने के सम्बन्ध में आपका दिनांक १३ मार्च ८७ का विज्ञप्ति पत्र मिला।

मेरा उक्त सन्दर्भ में आपको दिया गया पत्र जिसके साथ प्रधान मंत्रीजी को दिये गये पत्र की प्रतिलिपि भिजवाई थी आपको मिल गया है ऐसा श्री रतन शाह से विदित हुआ। मेरे उक्त पत्र के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा है।

जैसा कि मैंने उपरोक्त पत्र में विनम्र सुझाव दिया था कि आप अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष के नाते प्रधान मंत्रीजी से राजस्थान के सांसद श्री कृष्ण कुमारजी बिड़ला श्री नवल किशोरजी शर्मा एवं श्री लक्ष्मीमलजी सिंघवी के साथ एक प्रतिनिधि मंडल के रूप में मिलें और राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता देने के अनुरोध के साथ तथ्यात्मक स्मरण पत्र भी दें। स्मरण पत्र आप डा० लक्ष्मीमलजी सिंघवी से विचार विमर्श कर बनवा सकते हैं। आप चाहें तो प्रस्तावित प्रतिनिधि मंडल में मैं भी सम्मिलित हो सकता हूं।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से उठाया गया ऐसा कदम राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलाने के लिये चल रही प्रक्रिया को अपेक्षित गति एवं बल देगा।

प्रस्तावित स्मरण पत्र की एक प्रतिलिपि मुख्य मंत्री राजस्थान को तथा राजस्थानी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री कलानाथजी उज्ज्वल को भी भेजी जाय। अकादमी के अध्यक्ष श्री कलानाथजी को प्रस्तावित प्रतिनिधि मंडल में लिया जाय तो यह उचित होगा।

अभी दिनांक १५/३/८७ को राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी से मेरा मिलना हुआ था उन्हें भी उपरोक्त सम्बन्ध में केन्द्र को यथाशीघ्र अनुशंसा भेजने का निवेदन किया है। इस तरह हम सबके सम्मिलित प्रयास से इच्छित परिणाम की आशा की जा सकती है।

योग्य सेवा पत्र दें।

श्री हरिशंकर सिंघानिया
नई दिल्ली

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक २४ ६ ८७

आदरजोग कैलाशदानजी

इण कागद रै सागै श्री राजीव गाधी न दियाड कागद री नक्ल आप री जाणकारी वास्त भेजू हू।

राजस्थान म खुलण वाल सर्वोदय विद्यालया म तीसरी भाषा र रूप म गुजराती, मराठी आदि भाषावा पढाई जासी राजस्थानी भाषा न कोनी पढाई जाव इण स्यू बेसी अपमान री बात काई हुसी ? म आप नै इण सम्बन्ध म पैली भी कागद दियो हो और इस सन्दभ म एक छाप री कतरन भी भेजी ही। आप न कागद मिल्या हुसी पडूत्तर कोनी मिल्या।

राजस्थानी अकादमी री तरफ स्यू इण सम्बन्ध म जोरदार विरोध करणा चाहीज तथा अकादमी रै प्रतिनिधि मडल नै मुख्य मत्राजी स्यू मिल र विरोध पत्र दणो चाहीज।

अगर राजस्थान सरकार इण बात पर काई कारवाई नही कर तो आप जिस्य मायड भासा र सवग न अकादमी रै अध्यक्ष पद स्यू इण बात पर ही अस्तीफो दे देणा चाहीज। इण स्यू राजस्थानी री न्यायोचित माग न नतिक बल मिलसी।

कागद री पूग दिराईज्यो।

आपरो
कन्हैयालाल सेठिया

श्री कैलाशदानजी उज्ज्वल
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ६७ ०५१५
सठिया ट्रेडिंग कम्पनी
४ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक २४ ६ ८७

प्रिय श्री राजीवजी

गत वर्ष १८ सितम्बर १९८६ को आपसे राजभवन कलकत्ता म मेरा मिलना हुआ था तो मने आप से निवेदन किया था कि राजस्थानी भाषा को जिसे साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने मान्यता दी है सविधान की आठवी सूची म सम्मिलित किया जाय।

आज आपको निम्न तार दिया है –

Kindly Instruct Rajasthan Government Rajasthani Must be Taught as Third Language in the Navodaya Vidyalayas

तार आपको मिला होगा। त्रिभाषा सूत्र के अन्तगत अगर मातभाषा राजस्थानी को पाठ्यक्रम म स्थान नही दिया जायेगा तो राजस्थान के करोडो बालक अपनी मातभाषा राजस्थानी के महान साहित्य और राजस्थान की महान सास्कृतिक परम्परा स कैसे परिचित होगे ?

राजस्थानी भाषा को सविधान म सम्मिलित करने के प्रश्न को राजनतिक दष्टि स नही देखा जाना चाहिये पर शुद्ध मानवीय दष्टिकोण स आठ करोड राजस्थानियो (प्रवासी राजस्थानियो सहित) की समद्ध भाषा को मान्यता देना उचित है।

पत्र की प्राप्ति की सूचना दें।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजीव गाधी
प्रधान मत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
माहित्य वाचस्पति

दूरभाप ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक १४ ७ ८७

प्रिय श्री नवल किशोरजी

इन दिनों समाचार पत्रों म आपकी विशेष चर्चा है। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप प्रधान मंत्री क निकटस्थ एव विश्वस्त व्यक्तियों म से हैं। सत्ता की इस समीपता का कुछ लाभ घोर उपेक्षित राजस्थान को दिलवाईये।

पीने के पानी क अभाव म राजस्थान के हजारों गाव मन्दिया म तडप रहे हैं। निरन्तर पड़ने वाले सर्वग्रासी अकालो स जूझते मृतप्राय राजस्थान को इस विभीषिका स सदव क लिये मुक्ति दिलाने क लिये गगा के व्यर्थ बहकर जाने वाले बाढ के पानी को राजस्थान की तपित धरती को दिलवाईये। नर्मदा परियोजना जो केवल कागज पर ही बनी हुई है उसे क्रियान्वित कराईये।

राजस्थान की मातभाषा राजस्थानी को जिस अपने ही घर स निर्वासित कर दिया गया है उस राजस्थान म खुलने वाले नवोदय विद्यालयो म ततीय भाषा क रूप म पढाये जाने का निर्देश केन्द्र स अविलम्ब भिजवाइये। तीसरी भाषा के रूप म राजस्थानी नही पढा कर गुजराती मराठी आदि भाषाए पढाई जायेंगी इस स अधिक एक महान और जीवन्त भाषा का गरिमामयी संस्कृति का और क्या अपमान होगा? राजस्थान की शालीन ममतमयी सांस्कृतिक देन को केवल पर्यटको के मनोरजन मात्र तक सीमित कर दिया गया है, इसे मैं राजस्थान का ही नहीं भारत का दुर्भाग्य मानता हू।

मैने राजस्थानी भाषा को त्रिभाषा सूत्र के अतर्गत पढाई जाने का आवश्यक निर्देश देने के लिये श्री राजीव गाधी को तार तथा पत्र देकर विनम्र अनुराध किया है। राजस्थान के मुख्य मत्री को भी उक्त पत्र की प्रतिलिपि तथा पत्र भेजा है।

आशा है आप अपने प्रभावी व्यक्तित्व का राजस्थान के व्यापक हित में उपयोग करेंगे।

आप स्वस्थ होंगे। योग्य सेवा। पत्र की प्राप्ति की सूचना दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री नवल किशोरजी शर्मा
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७ ०५१५
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक २५ ११ ८७

आदरजाग उज्जवलजी

इणा दिना म आप रा कागद समाचार नही। म्हारै जलम दिन पर प्रकाशित विवरणिका आपन चि राधा रजिस्टड पोस्ट स्यू भेजी ही मिल गई हुसी। म्हारी नुई पोथी 'अघोरी काल' आज बुक पास्ट स्यू भिजवाई है। विवरणिका तथा पोथी री पूग दीजा।

इण कागद साग श्री नागरमल जी पेडीवाल रो एक कागद भेजू हू। अकादमा री आर स्यू कालूरामजी पेडीवाल क नाव स्यू भारतीय सम्कति'र चितन नै उजागर करणवाली राजस्थानी भाषा री गद्य या पद्य की उत्कृष्ट कृति पर ग्यारह हजार रो पुरस्कार प्रति वष देवणँ री व्यवस्था कर दीज्यो। कृति मौलिक हुणो चाहीज। आ वात आप ध्यान म राखाज्या।

आप निरागा हुस्या। म्हार सारू सवा लिखीज्यो।

कागद री पूग तुरत दोज्यो।

आपरा
कन्हैयालाल सेठिया

श्री कलाशदानजी उज्जवल
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ८७ ०/१२
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
२ मगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक २ ५ ८८

प्रिय श्री राजीवजी

लोक सभा की सागर श्रीमती निर्मला कुमारी शक्तावत के राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवी सूची मे सम्मिलित करने के सन्दर्भ में पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर मे गृहराज्य मंत्री श्री चिदम्बरम् का यह कथन कि कुछ भाषाओं को आठवी सूची में सम्मिलित करने से कई समस्याएं पैदा होगी अत्यन्त चिन्तनीय है। यह वक्तव्य लोकतंत्र के मूल आधार पर ही कुठाराघात करने वाला है।

अंग्रेज भी यही कहा करते थे कि भारत को स्वराज्य देने से कई समस्याएं उठ खड़ी होगी। साम्राज्यवादियों की कुतर्क की गंध श्री चिदम्बरम द्वारा दिये गये उत्तर में आती है।

आप लोकतंत्र के प्रहरी हैं अतः मुझे विश्वास है कि विश्व की महानतम भाषाओं में से एक राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता देकर आठ करोड़ राजस्थानियों को (जिनमें प्रवासी भी सम्मिलित हैं) आत्माभिव्यक्ति का प्रायोचित अधिकार प्रदान करेंगे।

श्री चिदम्बरम के वक्तव्य की कतरन इस पत्र के साथ संलग्न है।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा में
श्री राजीव गाधी
प्रधान मंत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
स्वतत्रता सग्राम सेनानी

दूरभाष ४७०५२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक २६-१० १९८९

सेवा मे
महामहिम आर वेकटरमनजी
राष्ट्रपति, भारत गणराज्य
नई दिल्ली

आदरणीय

दीपावली की मगल कामना स्वीकार कीजिये। यह वर्ष भारत गणराज्य के लिये शान्ति और सतत विकास का हो ऐसी कामना है।

आठ करोड राजस्थानियो की मातृ भाषा राजस्थानी को भारत के सविधान मे मान्यता नही देने की जो अक्षम्य भूल की गई है तथा राजस्थान को हिन्दी भाषी प्रदेश घोषित कर जो मनमानी की गई है उसके सन्दर्भ मे मै सोवियत भूमि के १० अक्तूबर १९८९ के अक के एक महत्वपूर्ण लेख की कतरन इस पत्र के साथ सलग्न कर आपकी जानकारी के लिये भेज रहा हू।

आशा है आप सोवियत रूस के नव चिन्तन के परिप्रेक्ष्य मे राजस्थानी भाषा को भारतीय सविधान मे मान्यता देने के लिये अपनी सरकार को आवश्यक अनुशसा करने की महती कृपा करेंगे।

भारत की सभी समृद्ध भाषाओ को मान्यता दिये जाने से ही सम्पर्क भाषा हिन्दी के सहज विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

पत्र के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

दिनाक १० अक्तूबर १९८९

जातीय संस्कृतियों और भाषाओं से संबंधित खंड में पार्टी का दृष्टिकोण बताया गया है जिस के अनुसार सो स क पा जातीय संस्कृतियों की मौलिकता उनके अद्वितीय मूल्यों को मान कर चलता है । किसी भी रूप में जातियों की संस्कृतियों में हस्तक्षेप की भर्त्सना करते हुए पार्टी अपना कर्तव्य यह मानती है कि सोवियत संघ के सभी लोगों के सांस्कृतिक कार्यों के स्वतंत्र विकास को सुनिश्चित किया जाये। सोवियत लोगों की भाषाओं के स्वतंत्र विकास को वह विशेष महत्व देती है।

जातियों के प्रश्न तथा नागरिकों के अधिकारों के प्रयोग को इस दस्तावेज में पूरा ध्यान दिया गया है। हर नस्ल और जाति के सोवियत संघ के नागरिकों के बीच पूर्ण समानता का सिद्धांत पूरी तरह तथा निष्ठापूर्वक लागू किया जाना है। देश के किसी भी भाग मे सोवियत नागरिक अपने को पराया न अनुभव करे। अतर जातीय सबधो को सुसगत बनाने के समस्त प्रयासो का सर्वोच्च एव अतिम लक्ष्य यही है। दस्तावेज में ऐसे प्रस्ताव रखे गये है कि उपयुक्त कानून बनाये जाये मातृभाषा में पढ़ाई करने के अधिकार को गारंटी की संपुष्टि की जाये और सोवियत लोगों के जातीय सम्मान व प्रतिष्ठा की कानूनी रक्षा को बढाया जाये।

तास १७ अगस्त १९८९

राजस्थानी भाषा खण्ड (२)

सेठियाजी के साहित्य सृजन पर सृजनधर्मी साहित्यकारों और सुविज्ञ पाठकों के कतिपय पत्र ।

लक्ष्मी निवास झुंझुनवाला
उद्योगपति

M 104 Greater Kailash
New Delhi 110048

दिनाक २३ सितम्बर, १९७४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

आपके अगस्त के पत्र का उत्तर अभी तक नही दे पाया हू। आपके दिल्ली आगमन की खबर मुझे भाई गजानन्द जी से मिली थी। सुजानगढ आने का मन बहुत करता है पर इन दिनो इतना व्यस्त हो गया हू कि बाहर जाने की कल्पना भी नही कर पा रहा हू। जोधपुर से श्री रणछोडदास जी का भी अनुरोध है कि एक दो दिन उनके साथ आकर रहू। इस वर्ष ऐसा कर पाना शायद सभव लगता नही है।

आपकी गलगचिया इस बार खूब पढी। अगर भूमिका नही पढी होती तो गलगचिया का अर्थ ही समझ मे नही आता। पुस्तक की कुछ अभिव्यक्तिया तो बहुत आनन्ददायक हैं। जस-ताव रो कलसो डूगर री चोटी परा कारी मटकी म, वन्दूक उठा र, आभै र सूनै, मिनख क्यो, पिणघट परा पडी, कुम्हार घडो ल्याया। पर कुछ तो बिल्कुल समझ म नही आये जैसे–सिझ्या हूता हो, आगियो पूछ्यो दही पूछ्यो, आँख रै ना बेटा आदि। कुछ तो बहुत ही सुन्दर हैं। राजस्थानी म ही उनकी अभिव्यक्ति स तृप्ति हो सकती है। हिन्दी म यह सभव भी नही है। जब आप मिलेंगे तब इसका पूरा लाभ हम मिलेगा।

आपका
लक्ष्मी निवास झुझुनवाला

डॉ हीरालाल माहेश्वरी
एम ए एल् एल बी ,
डी फिल् , डी लिट्

प्राध्यापक हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर
B 174A, Rajendra Marg
Bapunagar Jaipur-4

7 1 75

बन्धुवर

सप्रेम नमस्कार। पत्र एव लीलटास की एक प्रति मिली। नववप की मरी बधाई भी स्वीकार करें। लीलटास की कविता' तक की रचनाए आज पढ गया हूँ। और कविता के पश्चात ता माव विभार हो गया। दर्शन भावा और ससार की ययाथता की त्रिवेणा बह रही है मानो पूरी पुस्तक म। मैंने तो अनेक बार ये पक्तियाँ दुहराई हैं और अब याद होगई हैं —

भापारी खिमता न तौलण री ताकडी है कविता,
सवदा र भारै मैं चन्दण री लाकडी है कविता।

यदि मैं कवि हाता ता प्रत्युत्तर कविता मे ही देता। यहाँ ता हृदय का उल्लास प्रकट करते हुए आपका बधाई दता हू। इतना ही कह सकता हूँ कि आपकी कतिया स राजस्थाना का गौरव बढा है। क्या अब आप भविष्य मे इसी प्रकार क मावा को मुक्तक गीता म बद्ध नही करेंगे ? भगवान स म प्रायना करता हूँ कि वह आपका शतायु बनाएँ और सम्बल शक्ति और स्वास्थ्य प्रदान करें ताकि आपकी वाणी मे स्वर मिलाकर साधारण पाठक भी अपनी अनुभूतियाँ गुनगुना सकें। मेरा दृढ विश्वास है कि अवश्य ही निकट भविष्य म अकादमिया के माध्यम से भी आपकी कतिया को सम्मानित किया जाएगा।

जाधपुर म हुई (सितम्बर म) बठक (केन्द्रीय सा अकादमी की) के बाद आपको सुजानगढ और Mango Lane Calcutta के पते से दो पत्र लिखे थे। किन्तु दाना ही मरे पास वापस आगए हैं क्योकि आप मिले नही। मैंने इनका उल्लेख भाई श्री रतनजी साह स दिसम्बर म कलकत्ता म किया था मेरा वहाँ दा दिन के लिए मेरे साढू श्री नन्दलालजी राठी के निधन पर

जाना हुआ था, तब। सम्भवत उन्होने आपसे कहा भी हो। आपको ज्ञात ही होगा कि मैंने सा अकादमी की ओर से अंग्रेजी म History of Rajasthani Literature लिखना स्वीकार कर लिया है। यह अकादमी द्वारा स्वीकृत २० भाषाओ के साहित्येतिहासो की शृखला म एक है। इसके साथ ही बृहद रूप म हिन्दी मे "राजस्थानी साहित्य का इतिहास' भी लिख रहा हूँ—और जो मैं सन् १९६९ से ही करता आ रहा हूँ। आपसे तो छुपा नही है कि काम कितना कठिन श्रम, समय और व्यय साध्य है क्योंकि अभी तक तो महत्वपूर्ण उल्लेखनीय अनेकानेक कृतियो का पता भी साहित्य जगत को नही दिया जा सका है। अकादमी द्वारा लिखवाए गए अंग्रेजी के प्रकाशित ६ इतिहास ग्रन्थ मैंने-मगवा लिए हैं और पढ रहा हूँ। राजस्थानी साहित्यतिहास का अंग्रेजी म लेखन भी एक अत्यन्त कठिन और चुनौती भरा काय है। पर आप जसे विचारशील विद्वान और यशस्वी साहित्यकारो के सहयोग और सहायता के भरोसे यह मैंने बेहिचक स्वीकार कर लिया है। आप भी एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य हैं और सोचता था कि आप अवश्य आएँगे। आते तो, वहा बात हो ही जाती। इस सम्बन्ध म आपसे निवेदन है कि आप अपने समकालीन और परम्परागत सृजन के सन्दर्भ मे Self assessment अवश्य ही लिखवा कर भेजने का कष्ट करें। आपकी देन तथा महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालें और मूल्याकन खूब तन्मय हो कर करें। आपको इसमे सकोच हो सकता है किन्तु यह विचार न करें और अवश्य भेजें। इससे मुझे बडी भारी सहायता मिलेगी साथ ही आपके प्रति न्याय भी हो सकेगा। फिर, हो सकता है मैं आपकी सारी विशेषताओ और महत्वपूर्ण देन का यथास्थान उल्लेख करने म किसी प्रकार की चूक भी कर जाऊ। सवत १००० से २०३० तक का काल है और अनेक धाराएँ अन्तर्धाराएँ हैं। अत यह Self asseesment कर आप मेरी बडी भारी सहायता करेंगे। दूसरे आपके प्रकाशित साहित्य म (हिन्दी म) मेरे पास बारहो पुस्तको म से एक भी नही है। राजस्थानी म सारठा नही है। आपका समग्र कृतित्व समझने के लिए इन सभी का पारायण करना आवश्यक है। अनुरोध है कि कृपया सबकी एक एक प्रति का बन्दोबस्त तो मेरे लिए सुविधानुसार करवाएँ ही।

मैंगो लेन वाले पते से जब मेरा पत्र लौट आया तो मुझे किंचित् आश्चर्य हुआ था, पर अब इसी पते से लोलटाम पुस्तक मिली है, सो आश्वस्त हूँ कि यह पत्र आपको मिलेगा। फिर भी पहुँच की एक पक्ति लिख भेजें

कृपाभाव बनाए रखें। साहित्योतिहास के सम्बन्ध में तो आपको कष्ट देता ही रहूँगा। आपका स्वास्थ्य कैसा है ? सुना था कि आप बम्बई में बीमार हो गए थे आशा है अब पूर्णतः स्वस्थ होंगे। मेरे योग्य सेवा कार्यों से सूचित करें। शेष शुभ।

भाई श्री रतनजी मिलें तो कहिएगा कि निर्णय शीघ्र भेजूंगा। इधर पत्नी की बीमारी के कारण देर हो रही है सो अन्यथा न समझें।

एकबार पुनः हार्दिक धन्यवाद

विनीत
हीरालाल माहेश्वरी

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक

Phone 226201
India Exchange
3rd Floor
Calcutta 1

दिनांक ७-१-१९७५

भाई श्री कन्हैयालालजी,

आप अपनी 'लीलटांस' नामक रचना कल मुझे दे गये थे। उसकी उड़ान देखी। कई आलों में उसके प्रत्यक्ष दर्शन किये उसकी बहुत सुनी और उससे बातचीत की।

आपने मुझे एक बार कहा था कि एक मित्र ने आपकी मम नामक पुस्तक पर यह कहा था कि मम में जो कुछ लिखा गया है वह तो मन्त्र जैसा है। दरअसल ही मम ऐसा कहलाने की अधिकारिणी है किन्तु लीलटांस को और ऊँची उड़ानें भरता देखकर तो मम के मन्त्र कुछ-कुछ धुँधले लगने लगे।

आपको किन शब्दों में बधाई दूँ इतनी सुन्दर रचना के लिए जो अत्यन्त सरल बोलचाल की भाषा में होते हुए भी पूरा-पूरा आध्यात्मिक है और है गहरी आध्यात्मिक। भाषा सरल है, सुबोध है, रसमय है किन्तु मननपूर्वक पढ़ने पर तो लगता है इसमें उपनिषद् का सार भरा है।

आपका
भागीरथ कानोडिया

Gram MILADITYA Phone 97, 98 99

ADITYA MILLS LIMITED

Regd Office
Madanganj Kishangarh
(Rajasthan) 305801

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवा

दिनांक ४ १ १९७३

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

मेरे एक पुराने सहयोगी आज पावरण से आये थे उन्होंने बताया कि केन्द्रीय साहित्य अकादमी ने आपकी 'लीलटांस' पर पुरस्कार दिया है। जानकर बहुत ही प्रसन्नता हुई। पुरस्कार मिले तो कुछ दिन हो गये हैं लेकिन मुझे इसका पता नहीं था। दरअसल यह कृति है भी ऐसी ही। मुझे तो आपकी कृतियों में यह सर्वश्रेष्ठ लगती है। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरी रचनायें उच्च कोटि की नहीं है लेकिन मुझे पता नहीं क्या इस पुस्तक ने मेरे मानस में जितना आदर पाया वह मुझे अपूर्व-जमा लगता है।

आशा है आप इस जोड की या इससे भी उत्तम दूसरी कृतियां समाज को समय-समय पर देते रहेंगे।

आपके स्वास्थ्य के इन दिनों कैसे क्या हाल हैं?
मैं ७ तारीख की रात को कलकत्ता पहुंच रहा हूं। प्रेम भाव बनाये रखें।

आपका,
भागीरथ कानोडिया

G D BIRLA
मूधन्य उद्योगपति

9/1, R N Mukherjee Road,
Calcutta 1

दिनाक ८ दिसम्बर, ७५

प्रिय सठियाजी,

आपका पत्र मिला। 'लीलटास' तो मैं पहले देख गया था, आपके दूसरे ग्रथ मैं दिलचस्पी के साथ पढ़ूगा।

आप कवि हैं इसलिये आपके विचारा और भाषा मे उडान आ जाती है।

आपने मुझे अपनी पुस्तकें भेजी उसके लिये धन्यवाद।

आपका,
घनश्याम दास

रामेश्वर टाटिया
भू पू सासद

बम्बई
C/o श्री सीताराम मिल लि०
डिलायल रोड

दिनाक १४ १ ७६

भाई श्री सेठियाजी,

५ ४ दिना स ऊचे रक्त चाप के कारण घर पर ही रहता हू लेटा या बैठा हुआ पढता हू। कई तरह की पुस्तकें पढी। आपकी लीलटास कई बार पढ़ गया। ऐसा लगता है कि इस पुस्तक को जितना मान और प्रचार मिलना चाहिये था वह नही मिला। कुछ कवितायें-ता बहुत ही ऊँची है सूत्रा की तरह।

पेज–४० करणी जाणीज
पेज–३८ आसया
पेज–३३ त्याग'र भोग
पेज–२५ सगुण निरगुण
पेज–१५ भेदू
पेज–६० सौ पगी हूण
प्राय सभी अच्छी हैं इनमे कौन-ज्यादा कम।

बसत चौमासो सियालो उयालो, आधी, नुवै धान रीसुग न आदि कविताआ म कुछ शब्द ऐस हैं जिन्हे शुरु म नही समझ सकते परन्तु दुबारा ध्यान से पढने पर समझ म आ जाता हैं वे सब राजस्थान म प्राय ही बाले जाते है।

परमात्मा आपको शतायु कर जिससे हिन्दी और राजस्थानी दाना भाषाआ की वृद्धि हा।

अगर गुजराती और बगला भाषा म ऐसा कवि होता तो लोग उस सिर आखा पर बैठाते परन्तु अपने समाज म तो कीमत रुपया की है।

प्रेमचन्द और प्रसाद को भी पीछे जाकर लागा ने पहिचाना था।

आशा है आप प्रसन्न हागे।

आपका
रामेश्वर टाटिया

National Academy of Letters

Sahitya Akademi		Rabindra Bhavan
Dr R S Kelkar		New Delhi 110001
Secretary		*Telegram* Sahityakar
		Phone 388667
SA 119/8/21121	Regd	Date 15 December 1976

Dear Sri Kanhaiya Lal Sethia

I am happy to inform you that the Sahitya Academi has selected your book *Leeltans* for its Annual Award in Rajasthani for the year 1976 The Award will be in the form of a casket containing an engraved copper plate and a cheque for Rs 5 000/ and will be presented to the recipient by the President of the Academi Dr Suniti Kumar Chatterji at a special function to be held at Bangalore later, the exact date of which will be communicated to you shortly

In the meantime may I request you kindly to let us have immediately a short paragraph about your work and career to enable us to publicise the Award As this material is required by us urgently we should much appreciate your sending it to us as soon as possible

It is customary for us to request the year s Award winners to address the gathering at the function about their work and literary experience I hope you will kindly agree to do so and speak on the occasion for approximately 3 minutes While we will very much like you to speak in your beautiful mother tongue we propose to print and distribute English and Hindi renderings of your speech for the convenience and benefit of the audience I shall therefore be grateful if you kindly let me have the text of your speech as soon as possible so that we may arrange to get it translated In hope you will kindly do so

With kind regards and looking forward to hearing from you

Yours sincerely,

Dr R S Kelkar
Secretary

प्रेमजी प्रेम
कवि

भवर भवन
करबला माग, लाडपुरा
कोटा-३२४००६ (राज०)

दिनाक १८ ७ ७६

आदरजोग भाई साहब,

घणा घणा मान मूजरो

परस्यू 'घर कूचा घर मजला' मली अर आज आपको कागद। पोथी मिलताई बाच जावा को मन करघो अर 'लीलटास अर कू कू' की नाई बाच न्हाकी।

आणद की एक लहर सी मन म दौडगी। या किताब लीलटास सू अग्याडी छ अर ई का दोहा 'देखन म छोटे लगैं घाव करें गभीर' छ वाकई।

हृदय मू बधाई स्वीकार ज्या आपको आभारी छू क वखत बखत याद करता रवो छो। सूरज' राजस्थानी खण्ड काव्य प्रकाशित कर'र निमट्यो छू प्रति भेजूगो।

शेष शुभ म्हार लायक सेवा माडज्यो।

हमेस जस्यो ई।

आपको
प्रेमजी प्रेम

पुनश्च
'घर कूचा घर मजला' की समीक्षा स्थानीय पत्र मे दी छ छपताई प्रति भेजूगा

बालकवि बैरागी
कवि

मनासा (म प्र)
जिला-मन्दसौर
४५८-११०

दिनांक २५ जुलाई ७६

पूज्य बाबूजी

सविनय चरण स्पर्श

सब कुशल मंगल है। आपकी कृपा है। आशा करता हूं कि आप स्वस्थ प्रसन्न और सपरिवार सोल्लास होंगे।

इस पत्र के साथ कुछ छपे हुए प्रपत्र हैं। देख लें, एकाएक यह सब करना पड़ा। आपका आशीर्वाद तो चाहिए ही।

आपकी नयी पुस्तक 'घर कूचा घर मजला' एक ऐसे समय मिली जिसकी मैं कल्पना ही नहीं कर सकता था। उस समय अनायास मेरे यहां मालवी के नृपि डा० चिन्तामणि उपाध्याय, हिन्दी के श्री सरोजकुमार, श्री चन्द्रसेन विराट', श्री दिनकर सोनवलकर श्री श्रीकान्त जोशी, श्री सुरेश उपाध्याय जैसे जाने माने हस्ताक्षर विश्रामार्थ टिके हुए थे। उस पुस्तक को किस किसने पढ़ा यह मैं कह नहीं सकता हु। चिन्तामणिजी तो उस पर बहुत कुछ लिखना चाहते हैं। उनका पता है, सत्यनारायण मंदिर फ्री गंज, उज्जैन म० प्र० हो सके तो आप उनको एक प्रति भेजने का व्यवस्था कर दें।

मैं तो इस पुस्तक के दोहे पहिले ही सुन चुका था। बहुत कुछ आपने मुझे सुनाया था। पुस्तक एक दस्तावेज है। आध्यात्म्य और मानवीय मूल्यों का एक प्रामाणिक अलबम है। आपका अभिवादन।

कलकत्ता की आगामी यात्रा में हाजिर होऊंगा।

सबको मेरा समादर।

विनीत
बालकवि बैरागी

यालकवि वैरागी
संसद सदस्य
(लोकसभा)

फोन ३८५०३३
३४ गुरुद्वारा रकाबगंज रोड
नई दिल्ली

दिनांक १७ मार्च ८६

पूज्य श्री बाबूजी

सविनय चरण स्पर्श

सब आपकी कृपा है। कुशल मंगल है।

आपका 'सवद' मेरी टेबुल पर है। जिस तरह कोई पवित्र ग्रंथ रहता है बिलकुल उसी तरह समय समय पर उसे पढ लिया करता हू। जब दर्दी मित्र मिलते है तो उसका वाचन करता हू। लोगो को समझाता हू। आप बहुत आगे चले गये हैं। शब्द साधना और चिन्तन तपस्या का यह अदभुत सुमेरु है। आपको बार बार प्रणाम।

आपका भाषण पुस्तिका भी बिलकुल मेरे सामने है। उसे भी मैं अक्सर पढ कर उर्जा ले लिया करता हू।

दो पत्र आपके मिल गये मेरी मालवी की पुस्तक प्रकाशक के यहा फसी पडी है। कल ही उसका पत्र आया है कि वह छप कर तयार जसी है। राम जाने वह कब हाथ म आयेगी आने पर आपको दोनो पुस्तकें भेज दूगा।

मैं ८ मई तक प्राय दिल्ली ही हू। लोक सभा का सत्र चल रहा है। इस बीच बाराजी से दो एक बार भेंट हुई। हम लोग मालवी मेले पर नये सिरे से विचार कर रहे है। यदि मई जून म कुछ बात बन गई तो मालवी परिवार आपकी याद करेगा। यदि आपकी सेहत आज्ञा दे तो कृपया अवश्य समय निकालने की कृपा करना।

और सब आपकी दया है। भगवान की बडी मेहरबानी है।

सभी को मेरा आदर दें।

विनीत
बालकवि बैरागी

बाल्कवि बैरागी
संसद सदस्य
(मंदसौर जावरा)

नई दिल्ली
दिनांक 23 अक्टोबर '88

पूज्य श्री सेठियाजी

सविनय चरणस्पर्श

सब कुशल है। कृपा है आपकी और अलख अनंत की।

इस बीच मुझे डाक द्वारा आपकी ताजा कृति 'दीठ' मिल गई। बहुत कृतज्ञ हूं। 'दीठ' राजस्थानी साहित्य में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी। बेशक इस पुस्तक की कविताएँ शिल्प और भाषा की दृष्टि से पूर्वापेक्षा कुछ जटिल हैं तब भी रसिक और तत्वज्ञानी इस कसौटी मानकर कई पुस्तकों और कृतियों को इस पर कसेंगे। आपको प्रणाम।

आपकी महत्वपूर्ण लोककृति 'धरती धोरां री' पहली बार समग्र रूपेण देखी। जिन नये छंदों को आपने जोड़ा है उसमें 'ईडर' का उल्लेख है। ईडर किसी अंचल का नाम है या किसी नदी पहाड़ का? संयोग यह बनता है कि मेरे जिले में मेरे गांव से कुल 6 7 कि.मी. दूर एक नदी बहती है इसका नाम है ईडर। मैंने पंजाब समस्या से जुड़ी अपनी एक चर्चित कविता में 'ईडर' का ससम्मान उल्लेखनीय उपयोग और प्रयोग किया है। आपने जिस 'ईडर' का जिक्र किया है वह क्या है? जानना चाहूँगा।

और सब आपकी छत्रछाया में उल्लासपूर्ण है। त्यौहार जैसा। आशा है आप सानंद होंगे। सभी को मेरा यथायोग्य।

विनीत,
बालकवि बैरागी

बालकवि बैरागी
संसद सदस्य
(मंदसौर–जावरा)

फोन ११३/५५
पो मनासा (म प्र)
जिला मन्दसौर
४५८११०

फोन ३७८२७३२
३८ गुरुद्वारा रकाबगंज रोड
नई दिल्ली ११० ००१

पूज्य श्री सेठियाजी
सविनय चरण स्पर्श

पूरा सितम्बर बहुत व्यस्त रहा हूँ। कल मेरे यहाँ मन्दसौर में राजीवजी पधार रहे हैं। अनुमान लगा सकेंगे मेरी भागदौड़ का। क्षमा करें कि विलम्ब हो गया पत्रोत्तर में। आशा है आप सानन्द होंगे। मैं सानन्द हूँ।

आपकी ताजा कृति नीमड़ो मेरे सामने है। आपके अन्य ग्रन्थों की तरह इसे भी मित्र लोग रुचि और आस्था से पढ़ रहे हैं। चिंतन की चौपाल पर नीमड़ो विचार को सबल स्वास्थ्य देने वाली कृति है। आपको बधाई और आपका अभिनंदन।

इस बीच आपके जन्म दिवस समारोह की सूचना भी मिली थी। आशा है सानंद सम्पन्न हो गया होगा वह समारोह भी। आपका दीर्घ जीवन हम सभी का मंगल प्रसाद सिद्ध हो। ईश्वर को धन्यवाद।

विनीत
बालकवि बैरागी

हमारे काय म गति तब ही वेग पकडती है जब हम इस बात का निरतर चिन्तन करते रहें कि हमारी यह दह यात्रा क्षण भगुर है काल से बधी हुई है। साधक जीवन यापन करने के लिए गतिशील होना अनिवाय है। यही काल का सकेत है। इस चिर सत्य का कितने तुले हुए शब्दा म आपने अकित किया है।

सुमरण माटो सबद है
उडा अरथ विचार
गूढ इमारो जीव नै
हर दम मरण चितार

मत्यु का विचार नैराश्य का हेतु न बन कर चरणा म तीव्र त्वरा भरने वाला उद्बोधक मन्त्र बन जाता है।

आपकी इस अनुपम कृति के प्रकाशन पर मैं अपनी हार्दिक बधाई देता हू। एव पुस्तक मुझे भेजने के लिए धन्यवाद। आपकी आत्मीयता एव स्नेह से मैं उपकृत हू। आपके उत्साह एव साहित्य के प्रति समपण भाव ने मुझ म एक गहरी निष्ठा प्रदान की है। यह इसी का परिणाम है कि मैं अपने अध्ययन को अचना मे परिणित करने का प्रयास करता हूँ। विश्वास है आप स्वस्थ एव प्रसन्न होगे। पत्रोत्तर देवें। शेष शुभ।

आपका
जयकिशनदास सादानी

ॐ

जयकिशनदास सादानी
साहित्यकार

Ahmedabad 380 002

दिनांक २२-२-१९८८

आदरणीय सेठियाजी

सादर प्रणाम।

हुवै न जिण रै हेत में
रच सुवारथ गंध
मिनख पणै रा पुसब वै
सामी बसै सुगंध (३२३)

उपरोक्त पद में आपके स्वभाव का शतदल सहज रूप से महक उठा है। आपकी स्नेह सुरभि का आनन्द मुझे सदा मिलता रहा है। जैसे जैसे मैं सतवाणी के छंदों को पढता हूँ नई प्रेरणा का प्रकाश प्राप्त करता हूँ। लगता है आपके संवेद के पारस-स्पर्श से सतवाणी के पदों का हर शब्द स्वर्णिम हो उठा है। इन्हें पढकर यदि हम प्रदीप्त हो जाए तो इस में कौन सा आश्चर्य है। कभी कभी तो ऐसा लगता है निराकार ज्ञान ने संवेदनशील होकर आपके पदों में साकार रूप धारण कर लिया है। सतवाणी की वाक् निसरी हर पद में संवेदन संवृत करती हुई निगूढ ज्ञान के गंतव्य की ओर पूरे संवेग के साथ प्रवहमान हुई है। आप का सहज भाव भंगिमा सरल शब्दों में गहनतम अनुभूतियों को उजागर करते हुए सत्यम शिव-सुन्दरम को अभिव्यक्त कर देती है। कवि की अनुभूति जब व्यक्ति तक सीमित न रह कर विराट का स्पर्श करती है तब कवि "मनीषी परिभू स्वयम्भू" हो जाता है। मेरे जैसा सहज पाठक सतवाणी को पढते पढते विभोर हो जाता है तब सुधि पाठकों की अनुभूति कैसी होगी इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। एक एक पद गहरी अर्थ गरिमा से ग्रथित है। लगता है मानो उज्ज्वल ज्ञान संवेदन में स्नात हो कर नई ताजगी के साथ मानवीय मूल्यों को नवीन दृष्टि व आयाम प्रदान कर रहा है संस्कृति में नवोन्मेष की किरणें विकीर्ण कर रहा है। सतवाणी के हर पद में अध्यात्म अनुरंजित है, सतवाणी वास्तव में सतवाणी ही है।

जसे जस मैं सतवाणी के पदो को पढता हूँ मेरा यह विश्वास दृढ होता जाता है ज्ञान का प्रकाश दिशा निर्देश कर सकता है लेकिन सवेदन ही मानव को मानव बनाता है उसे सुसस्कृत व सस्कार सम्पन्न बनाता है। ज्ञान और सवेदन का सुन्दरतम सामजस्य सतवाणी म हुआ है। इस जीवन म चरिताथ कर हम जीवन को साथक बना सकते हैं।

पच महाव्रता से पुस्तक का समापन करके आप ने आज के विशृखल जीवन को आत्मानुशासन की मर्यादा द्वारा समग्रता प्रदान करने का निदेश किया है। हमारे कौटुम्बिक सामाजिक एव राष्ट्रीय जीवन के सदभ म आज यह नितान्त आवश्यक है। अनुशासन विहीन जीवन तो दिग भ्रान्त हो जाता है। आप की इस मागलिक कृति को पढकर मैं कृताथ हुआ हूँ। इस बार बार पढ़ता हूँ।

मेरा स्वास्थ्य ठीक चल रहा है लेकिन पूण निदान व इलाज के लिए अगले महिने मद्रास जा रहा हूँ। वहाँ Apollo Hospital म Engiography एव Treatment होगा। विश्वास है आप स्वस्थ एव सानन्द हैं। डा० अम्बाशकर नागर एव डा० उमाशकर जोशी को पुस्तकें दे दी हैं। वे आपको सीधा लिख रहे हैं। जयप्रकाशजी को मेरी शुभ कामनाए बच्चो को प्यार। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा म।

आपका,
जयकिशनदास सादानी

सुबोध कुमार अग्रवाल
कवि

चूरू-३३१००१

दिनाक १३ ८ ७९

बधु श्री सेठियाजी

प्रणाम

'घर कूचा घर मजला' क्या पार निकल जावोगे ?
ये स्वर्गिक स्वर' वहा पहुच कर भी गावोगे ?
हर लगमात लिए अस्तित्व स्व का सृजन कर रही,
कण कण म मरु के अमृत के कुम्भ भर रही,
जिस को जीना कहते हैं वह तुम को आया,
मृत्यु को लटका कधे पर खूब निभाया,
सब कुछ ही जब चला चली का मेला
है तो चलने से क्या डरना कैस रुक जावोगे ?

समारोह के सयोजन म व्यस्त हू। पता नही गल्त जा रहा हू या सही ? धीरे धीरे किनारे की ओर खिसक रहा हू मैं भी। स्वास्थ्य अब मन का कहा नही मानता है। मन सदा ही नादान बच्चे की भाति अभी तक अपनी मानी करता है।

माग दशन और शुभ कामनाओ की प्रतीक्षा म।

सुबोध कुमार

सुबोध कुमार अग्रवाल
कवि

बम्बई

ता २० २ ८१

प्रिय बन्धु सठियाजी

स्नेहाभिवन्दन,

स्वास्थ्य की मगल कामना के साथ आज यहा आदरणीय रामप्रसादजी पोद्दार की निर्णायक सम्मति स्वरूप इस वर्ष राम-नवमी पर स्वर्ण पदक समर्पण समारोह म राजस्थानी के लिए डा एल पी तस्सातोरा स्मृति स्वर्ण पदक से आप को अलंकृत कर लोक संस्कृति शोध संस्थान नगर श्री चूरू गौरवान्वित होगी।

समारोह की तिथि मिति एव उक्त समारोह को सुशोभित करने योग्य पदाधिकारियों की सूचना चूरू पहुँच कर दूगा। १२ मार्च तक उदयपुर होता चूरू पहुँच जाऊगा।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा म

आपका
सुबोध कुमार

सुबोध कुमार अग्रवाल
कवि

कैम्प-कलकत्ता
दिनाक २१ ४ ८६

सेठियाजो

'मन्द' आज एक बार पढी । ओजू पढणी पडसी । मनै लागै है जितणी बार पढस्यू बितणी बार नया अथ निक्ल कर म्हार बारकर फिरसी ।

तू के के घडै है ?
हीरै की जगा हीरो'र
मोती की जगा मोती जड है

सबद की सातरी सुवास ले बीरणिया तू तो सीधो हा

आगल कै कालज म बडै है ।

सुबोधकुमार

रामकुमार भुवालका
भू पू सासद

पी ३२/३३, इंडिया एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १७ अगस्त, ७६

प्रिय श्री सेठियाजी

सप्रेम राम राम।

आपकी नई रचना धर कूचा धर मजला मे १५६ कविता आपने बनाई इसमे प्राय सारी कविताओ मे वैराग्य तथा निगम आगम की भावना का समावेश है। यह भी सत्य है मै सारे शब्दो का पूरा अर्थ न समझ सका। बहुत से ऐसे शब्द राजस्थान मे काम मे लाये जाते है जो बोलचाल की भाषा मे चलते है वह तो समझ मे आ जाते है लेकिन कविताओ मे तथा लेख मे ऐसे भी शब्द व्यवहार मे आते है जो हर समय बोलचाल की भाषा मे प्रयोग नही होते। जहा तक मै समझ सका हू यह आपकी पुस्तक राजस्थानी भाषा मे एक विशेष स्थान ग्रहण करेगी ऐसा मेरा विश्वास है। आपके विचार सभी जानते है इतने साफ तथा सजे हुये हैं जिनके हृदय से तथा मन से जो भी शब्द पैदा होगें वह तो सार सहित होगें। सार रहित नही होगें।

मै आपको बहुत बहुत बधाई देता हू इस ग्रंथ के लिखने तथा प्रकाशित करने पर और ईश्वर से प्रार्थना करता हू जो आपके सदैव ऐसे ही विचार बने रहे बल्कि और भी उन्नत विचारो द्वारा आपकी रचनायें समाज मे प्रवेश हो। इन शब्दो के साथ आपको बहुत धन्यवाद देता हू जो आपने मुझे इस पुस्तक को भेज कर मन प्रफुल्लित किया।

विशेष धन्यवाद

आपका प्रिय,
रामकुमार भुवालका

लक्ष्मी निवास बिरला
उद्योगपति

9/1 R N MUKHERJEE ROAD
CALCUTTA 700 001
दिनांक २४ अगस्त, १६७६

प्रिय सठियाजी,

खुशी है कि आप घर कूचा घर मजला बढते ही जा रहे हैं और साप फेंकर मोती निकालते जा रहे हैं। मधुमक्खी का उदाहरण उचित है वह भी दूसरों की भलाई के लिए शहद इकठ्ठा करती है और आपने भी रस पिलाया है।

पुस्तक के लिये धन्यवाद,

विनीत,
लक्ष्मीनिवास बिरला

लक्ष्मीनिवास बिरला
उद्योगपति

कम्प पिनाना
दिनांक २६ ६ १६८४

प्रिय श्री सेठियाजी

आपको मायड रा हेला कविता सग्रह को मैंने देखा। सगहीत कविताओ का स्तर ऊचा है। अपनी मातृ भाषा राजस्थानी के प्रति राजस्थानी जनता की उपेक्षा वत्ति से क्षुब्ध हृदय म उठी भाव-तरगो को बडी सफलता से आपने इसमे अभिव्यक्ति प्रदान की है।

राजस्थान की मरुभूमि म जिस प्रकार अनेक वीर पैदा हुए हैं वस ही यहाँ अनेक सत धनाढय और साहित्यकार भी पैदा हुए हैं। उनकी कीति की अमर गाथा सब विदित है।

आपका,

लक्ष्मीनिवास बिरला

नृसिंह राजपुरोहित
साहित्यकार

पुरोहित कुटीर
खाडप (बाडमेर)
दिनाक २ ३ ८०

आदरजोग सठियाजी !

सादर हरि सुमिरण।

आपरी अणमोल कृति 'घर कूचा घर मजला' देखताई मन राजी हुयौ हो। गै दिन म्हू ई अलवर सू दिल्ली गयौ परौ अर उठ फुरसत मिल्याई अेक बैठक म इज पूरी पोथी वाच गयौ। पण तिरस नी बुझा सो आज इण नैं फेरू ठेट सू पाछी वाचा अर साथिया नईं सुणाई।

मायड भाषा म कम सू कम सब्दा म इण भात मरम री बाता कैवणी आपर बूत री बात इजही। कई चतुष्पदिया ता पछ लाखीणी'ज वणी है।

दाखला सरूप क्रम स० ६, ७ १५ २५, २८ ३८, ५७, ६८, ७४, १०८, १२३, १३६ १४५ अर १५६ इत्याद।

कठा ताई बखाण करू ? अेक्की आली चितन मनन करै जिसी। इसी ओपती रचना र सिरजण खातर म्हारी कानी सू बधाई स्वीकार करावौ।

म्हारै जोग सेवा फरमाई जौ।

स्नेहाधीन
नृसिंह राजपुरोहित

नृसिंह राजपुरोहित
साहित्यकार

लाडप
दिनांक १८ ३ १९८६

परम आदरणीय सेठियाजी

रामास्यामा घणैमान । दक्षिण यात्रा सू पाछा गाव आया 'सबद' री प्रति मिली।

वास्तव म

धरती कागद, हल कलम
बिरखा मसि रो नीर,
बाया आखर बीज जद
सबद उग्या गभीर
रचना म्हन घणी दाय आई। कई दूहा राजस्थानी म
सूक्तिया रो काम करसी।
आप री कलम न वदन !
पूव पत्र प्राप्त हुयो हासी।

आपर स्वास्थ्य री मगल कामनावा साग।

विनीत
नृसिंह राजपुरोहित

नृसिंह राजपुरोहित
राजस्थानी लेखक

जोधपुर
दिनांक २ १२ १९८७

आदरजोग सेठियाजी

रामास्यामा घणैमान

अत्र कुशलम तत्रास्तु। आपरी कृति अघोरी काल मिली। आप सागर मे सागर भरता दुकाल रै दरद नै उजागर कियो है। कृति सगळा न दाय आई।

माणक' म समीक्षा करी ज्यासी। दो दिन पैली आपरै पुरस्कार री खबर रडियो माथ सुणी अर मन घणौ राजी हुयो पण न्याव री बात तो तद होवती जद ज्ञानपीठ वालो सर्वोच्च पुरस्कार आपनै दियो जावतो। इणो लखावै जाण राजस्थान री अवहेलना हुई है।

पण खैर इण सारू ई म्हारी बधाई स्वीकार करावो। आपर स्वास्थ्य री मगल कामनावा सागै।

विनीत
नृसिंह राजपुरोहित

नेमीचन्द जैन
सम्पादक–तीर्थंकर

६५, पत्रकार कालोनी,
इन्दौर ४५२००१
मध्य प्रदेश
दिनाक ४ ४ १६८०

आद भाई,

आपका २५ ३ १६८० का कृपा वात्सल्यपूर्ण पत्र मिला है   कृतज्ञ हुआ। आपकी तीनो कविताए अप्रैल अक म सयोजित कर दी हैं। 'घर कूचा घर मजला' मिली है। रस विभोर हुआ। आनन्द आ गया। इसे आज आद्यन्त पढूगा और 'लेटेस्ट' मई १६८० के अक म समीक्षा करूगा। आप प्रातिभ है, इसम दो मत नही हो सकते। समस्त/सामासिक शली म आप-सा आज कौन लिख रहा है? आप अपने क्षेत्र मे आप ही है। कलकत्ते की वह शाम ताज़ा हो आयी है जब हम मिले थे और एक दूसरे को नज़दीक से देख सके थे। आपकी सादगी उसकी तो कोई उपमा ही मेरे पास नही है   वस्तुत जो सादगी आपके रहन-सहन म है वही आपकी रचना प्रक्रिया म है। क्या ऐसा अन्य हिन्दी–रचनाकार कभी कर पायेंगे?

कृपया अपने स्वास्थ्य के बारे म बताइये। पत्र सपर्क बनाये रखिये। प्यार का तागा मजबूत कीजिये, उसे तोडिये मत। परिवार म सबसे स्नेह कहिये। 'ती' मे साल म ४ बार लिखने की कसम खाइये। जुलाई, सितम्बर, दिसम्बर और अप्रल। इन चार माहो म आपकी रचना सदव प्रतीक्षित रहेगी।

आपका भाई
नेमीचन्द जन

राजस्थान सस्था सघ

जगमोहन लाल माथुर
महामत्री

५०१, सेक्टर ३, आर के पुरम
नई दिल्ली ११००२२
फोन महामत्री ३८४०५६

दिनाक ३ माच, १९८१

आदरणीय श्री कन्हैयालालजी सठिया

राजस्थान सस्था सघ राजधानी म राजस्थान दिवस के अवसर पर विभिन्न समारोहा का आयोजन कर रहा है। इस बार २९ माच को शिक्षा के बारे म गाष्ठी है। ३० माच का शाम फिक्की (FICCI) आडिटोरियम म मुख्य समारोह तथा ३१ माच क साय आपके सम्मान म विठ्ठलभाई पटेल हाउस म साहित्य गाष्ठी का आयोजन कर रहा है। मुख्य समारोह मे ३० माच का सस्था सघ आपका सम्मानित करेगा और ३१ माच का गोष्ठी म आप के साहित्यिक यागदान पर चर्चा और आपकी रचनाआ क पाठ का आयोजन है। हमारी कायकारिणी के सदस्य श्री पन्नालालजी नाहटा ने आपस कलकत्ता म मिलकर स्वय आपको समारोह क लिए आमत्रित किया है और हम अत्यन्त आभारी हैं कि आपने हमारा यह निमत्रण स्वीकार कर लिया है। हम आपकी इच्छानुसार भवानीभाई स साहित्य गाष्ठी की अध्यक्षता क लिए सम्पक साध रहे हैं।

आपकी स्वीकृति के दा शब्द पाकर हम अत्यन्त आभारी हागे।

आपका
जगमोहन लाल माथुर
महामत्री

Telephone 3201

Maharana Mewar Foundation
City Palace Udaipur

Udaipur [Rajasthan]
(India)

No MMCF/194/83-84

दिनांक २७ जनवरी ८४

Regd A D

आदरणीय सेठिया साहब,

आपको यह सूचना प्रेषित हो चुकी है कि भारतीय परंपरानुरूप साहित्य-इतिहास के क्षेत्र म आप द्वारा सम्पादित जन चेतनाय स्थायी मूल्य की सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको सन् ८३ ८४ के महाराणा मेवाड फाउण्डेशन के महाराणा कुम्भा पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय हुआ है तत्य आपकी स्वीकृति भी फाउण्डेशन को प्राप्त हो चुकी है।

आपसे निवेदन है कि रविवार दिनांक १६ फरवरी, ८४ को अपरान्ह ३ बजे सीटी पलेस उदयपुर प्रांगण मे आयोज्य पुरस्कार समर्पण समारोह म पधार कर पुरस्कार स्वीकार करने का अनुरोध स्वीकारें।

आप अपने उदयपुर प्रवास म फाउण्डेशन के अतिथि होंगे तथा आपको यात्रा-व्यय फाउण्डेशन की ओर से सादर भेंट होगा। कृपया अपनी उदयपुर पहुच की सूचना पूर्व म प्रेषित करने का कष्ट करेंगे।

भवनिष्ठ
सेक्रेट्री
महाराणा मेवाड फाउण्डेशन
राजमहल उदयपुर

K. K. BIRLA
Member of Parliament
(Rajya Sabha)

BIRLA HOUSE
7, Tees January Marg
New Delhi 110011

दिनांक १४ सितम्बर, १९८४

प्रिय श्री सेठिया,

आपकी लिखी हुई पुस्तक 'मायड रो हेलो' आपने भिजवाई उसके लिये धन्यवाद। मैं पुस्तक की सब कविताएं तो नहीं पढ़ पाया, कुछ कविताएं ही देख सका। कविताएं बहुत अच्छी लगी। आपकी भाषा में ओज भी है और सरसता भी।

आपका,
कृष्ण कुमार बिरला

कृष्ण कुमार बिरला
ससद सदस्य
(राज्य सभा)

बिरला हाउस
७, तीस जनवरी माग
नई दिल्ली ११० ०११
दिनाक २५ सितम्बर १९८६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

राजस्थानी म विरचित आपकी काव्य पुस्तिका नीमडा मिली। माप नाम का माध्यम बनाकर आपने उसके सारे गुण इस लघु-काव्य म गिना दिये हैं। इसम सदेह नही है कि नीम का वक्ष अपने गुणा के कारण ही नहा पर्यावरण की दृष्टि स भी महत्वपूण है। सहज और प्रवाहमयी भाषा म लिखी आपकी यह कृति उपयोगी है।

साभार

आपका
कृष्ण कुमार बिरला

श्री कन्हैयालाल सेठिया
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

सीतारास महर्षि
कवि

कृष्ण कुटीर
रतनगढ
दिनाक १८-९-९४

आदरणीय सेठियाजो

सादर सप्रेम नमस्कार। आप री नूवी काव्य-पुस्तक मायड़ रो हेलो।
श्री दीपचदजी नाहटा सू भेज्योडो मिलो। मैं पुस्तक न आछी तरिया देखी-परखी।
आ किताब आपर नाव र मुजब-ई है। इणरी रचनावा राजस्थानी भासा भास्या
रै अंतस माय मायड भासा खातर एक [illegible] जहर पदा करसी। आ बात
अलगी है क जका रा अंतस किणीज सुवारथ रै कारण काठ्ठीजग्या है वा
उपरा स्यात् इणरा उजास काई प्रतिक्रिया नी दिखणै मक। जका अपण आपन
सजग अर प्रबुद्ध मान, वानै आ बात स्वीकारणी ई पडसी क अब सोवण रो
वगत बीतग्या है। अब जागण रा वेला आय पूगी है। सगला न जागणू पडसी
अर मायड भासा न उणरा ठावा अधिकार दिरावण खातर एक लूठी लडाई
लडनी पडसी।

आपरी पुस्तक रा अ अश म्हान घणा चोखा लाग्या –

नेह आतमा ज्यू धरती रा
भासा स्यू सम्बध
आ नै अलघा करणा चाव
व मूरख मति मद।

पेज इग्यारा

इतिहासा म आज कठई
थारा नाव न नारा
मन म मोटा बण्या, भनाइ
पाटो लाख दिहारा।

पेज चवदा

भरो साग मन भावता
पण ल्यो आ थे माड
जका भेस भाषा तजै
वा नैं क्वै भाड !

पज अठारा

भासा कोनी रमत जकी नै
चाव जिया भुजाणा
आ आतमा रो धरम देह न
जिया वायरा पाणा ।

पेज तेईस

आपनै इण सजोर रचणा खातर घणा घणा नमन नै हियतणी बधाई ।

आपरो
सीताराम महर्षि

किशोर कल्पना कांत
कवि

रतनगढ ३३१०२२
दिनांक १९८८, सितम्बर १९

आदर रै ओ द-सरधा रै सिखरै–
पूजनीक भाई श्री क न्हैयालालजी,

सादर पावाधोक !

मोकला दिन वीतग्या–आपरा कागद-न पत्तर !

लिखणनै तो भिडतै ई आ वात लिख मारी, पण मैं खुद भी तो उण विचालै कागद पत्तर नी लिख पायो। आप ता जाणा ई हा क मैं डील रो ता सपोलियो पण आदत रो इजगर सो विमगति र इण परवाण आपन आगद लिखण रा मनसूबा वाधतो रैयग्या अर काल री डाक माय मायड रो हेला वापरयो जणा आज मनसूबै रा आकार घडीजै !

साची नित हमेस आपरी याद आया करै–कदे वतलावण र प्रसग तो कदे आपूआप ! म्हारा घण हेतु श्री मुरारीलाल जा महषि रै जरियै जद-कद राजी-खुसी रा अर दूजा समाचार भी मिलता रवै।

॥ मायड रो हेला ॥

'मायड रा हेला' मनभावण
ममताली मनवार।
साच मन सू सुण्या-साभल्या
हाव वैडा पार !

'मायड रा हेला लाखाणा
धरम-करम साधार
गुण-सामल अणमुणी कर ता
जूण्या नै धिरकार !

कवि रा तप मायड रा हेला
कविता र परताप
चतै ता पुन जाग चूक्या
पाप-ताप सताप।

मायड रै हेल जे जाग
रूडा राजस्थान
स्वाभिमान मायड भापा है
कवि-कविता सुग्यान।

मायड रो हेलो है आलग
कविता रै अैनाण
साचोती है पीड प्यार री
सावल जाण पिछाण।

मातृभापा कानलै आपरी चतना कारी मरावणजाग ई कानी पण खराखरी तो बा सग्धा र जोग र अनुकरणीय है। आपरी आ अलख जगावती साधना जरूर सिद्धि रा सापाना चढसी अर 'मायड रो हेला सिखर पूगती सपूर गरणाट है। मैं इणन कविता क्रिया क्यू आ ता आख राजस्थान रै मन मायला आरती है। आरती रो आरत भाव तो सग्बस-समरपण रै तप सू ऊपन। मैं जिण आराध्य न धाकू पूजू हूँ उणरा ज चरणा माय आप भी पूजा रो थाल लिया ऊभा हो मन मोकलो मिलायोज क आपा साग ऊभा हा इण वास्त मन 'मायड रो हेलो' रो आखर आग्वर दीव सरीखा लाग।

अर–

हेला मारै हेत रा मजला री मनवार,
आग बध रे गायवी तू कद रैया लार।

सवला डग धर सातरा हासी लार हजार
मारग दरसा मातवर धम हिरदै तू धार।

मायडभापा मोकला माग मगलाचार
लाहौ सू लिख लेखणा तापस री तरवार।

जामण जाव जाग रैं कोही नैं ललकार,
माता रै हित मातबर जूथ जलम जूझार।

जामण जाया न जगा, आदर रा औतार।
सख फूंक दै साख रो जागैं ज्यूं नर-नार।

'मायड रो हेलो' रो उद्बाधी-सुर घणा सातरो है। आप जिण पवित्रतायी सूं इणन उगेरया-गाया है, बा सयत'र सजमी भाव घणा दा रा है। कंठा कितरी पीडावा नैं सवता अै सबद घडीज्या है। मैं म्हारली अनुभूति रै परवाणै आ न बीत'र दख सकूं।

कागद दीज्यो। म्हार जाग सेवा लिखज्या।

आपरो
किशोर कल्पनाकान्त

किशोर कल्पनाकांत
कवि

कल्पना लोक
रतनगढ ३३१०२२
राजस्थान

१९८६ फरवरी ११

आदर रा औतार !
भाई श्री सेठियाजी सादर प्रणाम !
सोच रैया हा घणा दिन होया कागद ना ना समचार !
मैं कद्' क कागद लिखूं पण आलसिया'र थाकयाडा दिन
उछाव विहूण पल छिन
पछै म आपरो सबद' स्पाकार-समेत आय ढूक्या
देखू ता देखता ई रयो
सबद' आपर अणहद सगीत समत काना माय बाजण लाग्या
जिका तो बाज्या ई जावै
नादबिरम सू ओलखाण करावै

सबद गुजायो मातरो
पडै कान पडकार
नादबिरम सू नीसरी
झाणी आ झिणकार !

सबद रूप जो साभलै
जग म च्यारूमेर
घणा'र घारी धाम ग
अणहद तणी उगेर !

सबद कदे ना मर मक
रमै वाम कण राम
सबद-सबद म सार है
थिर रसी आ थाम !

अनुभव आखर ऊपज्या
चित बपरायी चात
सबदा रल मरणायगी
पुण्याया परतीत।

सबद-तणी ममा सग्व
किण विध क्यूं 'किशोर'।
सबद धणी साधार है
सबद रूप सँजोर।

आप निरागा र राजी-खुसी होवाला। मिनण रो मन दरस उतावलो। कागद बेगा दीज्यो आघा मिनाप तो बणसी'क। सेवा ?

आपरो
किशोर कल्पनाकांत

मनोहर शर्मा
साहित्यकार

बीकानेर

दिनांक २४ ९ ८४

प्रिय श्री सेठियाजी

मायड रो हेलो पोथी मिली, धन्यवाद। आप रै हिरदै म राजस्थान अर राजस्थानी भाषा तथा संस्कृति खातर जिका आतमीय भाव है वो इ पोथी रा कवितावा म सहज रूप सू बह चाल्या है। इ स राजस्थान रै निवासिया न तथा प्रवासिया नै पूरी प्रेरणा मिलसी, इसो म्हारो पक्को विश्वास है। भगवान करै, आप री सरस्वती सतत प्रवाहित रैवै—

जग जीवण रा सार अर
काव्यकला रा रूप
करै कन्हैयालाल नित
रचना नई अनूप ॥

आपरा
मनोहर शर्मा

जहूरखा मेहर
साहित्यकार

मिवान्ची गेट
सिंधिया रो वाम
जोधपुर
राजस्थान

दिनांक २६-६ ८४

घणमानीता कन्हैयालालजी सठिया

अल्लाह करै आपरी जस तर तर दिन दूणो रात चोगणो वधतो ई जाव वधतो ई जावै।

'मायड रा हेला' वाचण र समर्थ म्हारै अतस माथै अेक साव नवो अटग चितराम अकेरीज्योडो लखायौ। ओ अेक अेड सास्कृतिक जूझार रो चितराम है जिण र पाडियाडो हेलो सडा परखडा रिन्द राई महानगरा डीगा डगरा, धारा, अर पत्कारा मारतो बलझलती लूवा माय सू निकल अर काळज म सटीड उठावतो सा लागो।

> खालो धड री कद हुव
> चरै किया पिछाण ?
> मायड भासा रै बिन्या
> क्या रो राजस्थान ?

अेकूको आखर मूड बोल बोल अर कवै क मायड र मोह री पीड पालतो कोई बिरला ई जमा जायो धपलका ऊठत काल्ज री कोर सू इज इण गत रा भाव काड सकै ?

जाणै राजस्थानी री सगली चाखाया वखाणतो कोई सातगो मेमोरेण्डम त्यार हुयो। नीजू सस्कृति ने सुगा अर दूजै कच्च रग म रगीजण सारू डुल्ता न मामा वाला री फटकार, मरुधर मेहमा भारतवासिया न ओलबो इत्याद अेक सू सवाया अमोलक विचार। राजस्थानी न राज री मानेतण वणाया सू हिन्दी रै वधापै न ठवक पूगला इण भरम रो आप कित्ती नरमाई सू परखच्चा उडाया है ? धिन है आपरी छाती नै रग है आपरी सबली सूझ नै अर घणो जस आपरी कवली कलम नै।

ईस्वर करै आपर इण हेल सू सात क्राड राजस्थानिया री कुभकरणी भाग, मया जाग अर नीजू भामा सारु अवखण रौ गाड भेलो व्हे।

"म्हारी वित्तीव जिनात अर काई जमागो
पण म्हे आपन भरोसौ दिराऊ क जीव
मे जीव रवण ताई आपरी हेत रौ
हेला म्हारै कालजै म कुदडका
करतो गूजवो करैला अर मायड भासा
राजस्थानी री सज आवती चाकरी
कर उणन ठावी ठौड दिरावण खातर
की न की कलाप करतो इज रैवूला।

पाछौ कागद लिख सवौ तो म्हारा धिन भाग। आप सरीसा मायड रा मोबी नै बारम्बार नमस्कार।

जहूरखा मेहर

जहूरखा मेहर
ग्रथकार

जोधपुर
१८ ११ ८७

धणमानीता कन्हैयालालजी सेठिया

अल्लाह आपरी हजारी ऊमर करै अर साजा-ताजा राख।

मनवाणी मारू घणा रग। ठेट दुरगा जाळा पछ आपरी कलम री करामात इण बात नै पक्कावट पकडा अर चावी करी क राजस्थानी भासा जुद्ध र घमसाणा अर आगातर री बाता सारू सरीसी जोगवर।

आवती दा जनवरी नै भारतीय भासा परिसद कानी सू जो नूतौ दिरीज्यौ है उण सारू म्ह मन सू आपरौ किरियावर अगेजू। परमात्मा री इच्छा पछ आपरा आसीस र पाण ई मनै कलकत्ते बुलावण री तेवडीजी है इण बात री जडा म्हारै जीव म हरमेस जम्योडी रेवैला।

श्रीमती सेठियाजी नै म्हारा सलाम।

जहूरखा मेहर

नथमल केडिया
कवि

कलकत्ता–
दिनांक ४ १० ८४

आदरणीय श्री सेठियाजी,

सादर प्रणाम। 'मायड रो हेला' की दो प्रतिया मिली। एतदथ धयवाद। पुस्तक पर आप द्वारा रचित पक्तिया मरे प्रति आपके स्नेहिल मन का सुदर परिचय है। ये मेरे लिये बडा के आशीर्वाद मदश्य शिरोधाय है।

मायड रो हेला की कवितायें मैं एक साम म पढ गया। सभी सशक्त है, ओजपूण है सबल तक लिये है भावनात्मक है। एक तरफ आपने राजस्थाना की एक रूपता के लिये भक्तिमती मीराबाई ने जिस राजस्थानी म लिखा है उसे हा राजस्थाना मानने का हेला दिया है तो दूसरी ओर हिन्दा भी राजस्थानिया को उतनी ही प्रिय है जितनी कि दूसरे प्रान्त वाला को यह लिखकर वहुत लोगा क मन स भ्रम डर को मिटाने की चेष्टा की है कि राजस्थानी वाले हिन्दी के साथ ही सघष रत है। इस पुस्तक की आपकी कविताआ ने राजस्थानी का बहुत ही प्रवल पक्ष प्रस्तुत किया है।

यद्यपि पुस्तक की सभी कवितायें वहुत अच्छी है पर उनम मुझे जो बहुत ही अच्छा लगी उनके बारे म कुछ लिखने का लाभ सवरण नही कर पा रहा हू। उनम एक है नग धडग अरावळी। इस कविता को पढकर मुझे लगा–अरावला कोई एक पहाड नहा है वह जसे पूरे मानव समाज की ओर से बोल रहा है। उस मानव समाज की आर से जिसका हरियाली को विनष्ट करने क लिये हर जगह स्वार्थी तत्वा द्वारा बारूद बिछायी जा रही है।

इस संग्रह की दूसरी कविता जो मुझे और भी अच्छी लगी—वह है 'मरुधर'। मुझे लगता है 'मरुधर' के ऊपर आप जब कुछ कहते हैं तब आपके भीतर से कोई स्रोत फूट पड़ता है—शीतल, मीठा और तृप्त करने वाला। शायद इसी लिये इन कविताओं के मीठास में पाठक विशेष परितृप्त होता है।

आपके स्वस्थ जीवन के साथ साथ आप द्वारा साहित्य संसार को और भी सुन्दर सुन्दर रचनाएं प्राप्त होने की कामना के साथ।

आपका
नथमल केडिया

कुम्भाराम आर्य
संसद सदस्य
(लोक सभा)

फोन ३८७१६४
११ ऐ०, पण्डित पन्त मार्ग
दिनांक १५-११-८४

मानजोग सठियाजी !

थे थारी पोथी मायड रो हेलो
मिल्या घणो हर्ख्यो।
मरु धरा री कूख थां सरीसा पूता दीप।
मायड रो हिया-कोठ रा होठ-
मायड रो हेलो सूत्या जगाव।
मां ! मरुवाणी-हरषै अर भरोसा राखै-
पूत ! कूख नी लजावैला !
अठै हूँ कह सकूं -
क्यूं दीख मा अणमणा
तेरा आगा ठाठ ठठ
तेर कान सरीखा लाडला
राख्या रुकै कठ !
मायड रो रिण उतारण रो थे बीडा चबायो
सरधा साह स साथ देवला।
हूँ ! हू जिस्यो थारो

कुम्भाराम आर्य

हरिदेव जोशी

जयपुर
दिनाक १८ नवम्बर, १९८४

आदरणीय सेठियाजी

आपका ६ नवम्बर १९८४ का पत्र और साथ म आपकी नव प्रकाशित 'मायड रो हेलो' पुस्तक मिली। आप मेरे प्रति इतना स्नेह रखते है उससे अभिभूत हुआ।

सरसरी तौर पर पुस्तक के पन्ने पलटे हैं। आपकी भावनाओ की मुझे जानकारी है।

आशा है आप स्वस्थ एव प्रसन्न होगे। कृपया स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें।

सादर

भवदीय
हरिदेव जोशी

श्री मेजर रामप्रसाद पोद्दार बी ए
उद्योगपति

बम्बई
दिनांक २८ नवम्बर '८४

आदरणीय श्री कन्हैयालालजी,

सादर प्रणाम।

आपका पहला पत्र दि ६ ११ ८४ तथा दूसरा पत्र दिनांक २२ ११ ८४ का दोनों यथासमय मिल गये थे। मैं करीब डेढ महीने से अस्वस्थ हूँ। इसलिए उत्तर समय से नहीं दे सका। आशा है आप क्षमा करेंगे।

आपके द्वारा प्रेषित मायड री हेलो पुस्तक मिल गई है। मैंने उसे पढ भी लिया है तथा मैं मानता हूँ कि गत कुछ वर्षों से इस प्रकार की राजस्थानी भाषा की जोरदार हिमायत करने वाला कोई ऐसा पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। इसलिए मेरी ओर से हार्दिक अभिनन्दन स्वीकार करें।

मेरी तो भी राय है कि इस पुस्तक की प्रतियां लोगों में बटवानी भी चाहिए जिससे कि लोगों में प्रचार प्रसार हो सके। मैं भाई श्री दीपचन्दजी नाहटा को भी इस सबंध में पत्र लिख रहा हू।

मेरा स्वास्थ्य पहले से ठीक है और शायद ३ ४ दिन में दफ्तर जाना प्रारम्भ कर दूगा।

विनीत,
रामप्रसाद पोद्दार

डॉ मेजर रामप्रसाद पोद्दार, बी ए
उद्योगपति

सेन्चुरी भवन
डा एनी बेसण्ट रोड,
बम्बई ४०० ०२५
दिनाक ८ सितम्बर १९८९

आदरणीय श्री सेठियाजी

सादर प्रणाम।

आपके द्वारा प्रेषित आपका लघु कृति नीमडा मिल गई है तथा इसको एक साथ म ही पढ गया हूँ। बडी प्यारी कृति है। नीम की व्यापकता तथा उसकी उपादेयता तो जगत् प्रसिद्ध है और आपने इसको बहुत अच्छे शब्दों म व्यक्त किया है। ऐसा नीम का गुणगान शायद ही पहले किसी कवि ने किया हो।

मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

विनीत
रामप्रसाद पोद्दार

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
३, मैंगो लेन,
कलकत्ता ७०० ००१

SARALA BIRLA
उद्योगपति

18 Gurusaday Road
Calcutta 700 019

दिनांक 24 10 84

श्री सठियाजी

हल्दीघाटी की पावन माटी के साथ मायड़ री हेला सुण्या । आपको प्रयास भात सराहनीय है । मीरा मिम आ बमा विग्ज म साय किमन स्यू फेरा पत्र कर आनंद आया

दीवाली को सब नै म्हारा शुभ कामना–

नम्र
सरला

ॐ

SARALA BIRLA
Atlas Apartment

Flat 91A Ninth Floor
दिनांक २२ ६ ८६

आदरणीय श्री सठियाजी

नमस्कार ! नीमड़ा मिल्या/कविता सुन्दर है । पढ र बजली ताज री याद आई जद म्हे सब उगाया सुहाग क वास्ते नीमडला की पूजा करा हा। पुस्तक की छपाई कला पूर्ण है।

नम्र
सरला बिरला

Guman Mal Lodha
Ex Chief Justice
Guvahati

A-4 Gadhinagar Jaipur
302015

Respected Shri Sethiyaji

Sadar Namaskar

You would excuse me for sending reply of your letter of 11th October 1984 in English for the time being I would love to send a real reply in Rajasthani as and when I get time to write letter in my own hand writing It was thrilling and fascinating to know from the news paper that you had led a deputation of Rajasthani Patronogists to the Prime Minister and presented your valuable books

I have been one of your fans so far as your Rajasthani peom 'Dharati Dhora ree and Pithal Pattal are concerned We recite them in our family with great emotions and pleasure off and on My grand children are very much fond of these poems

I have received your latest book Mayar ro hailo and I am going through it I find it very fascinating enlightening and heart touching greatness of your books

I would write to you very soon in my own handwriting It is indeed regrettable how the due recognition has not been given by the Government or non government agency at the highest level although they have been realising greatness of your books

With regards

Yours sincerely

Guman Mal Lodha

JUDGE
NAGENDRA SINGH

International Court of Justice
Peace Palace
2517 KJ The House Netherland
Cables Intercourt Thehague
Telephone 92 44 41
AND
6 Akbar Road New Delhi 110011
T Nos 373258 373187

दिनांक दिसम्बर २३ १९८४

आदरणीय श्री कन्हैयालालजी

आपका दिनांक १३.१२.८४ का पत्र तथा 'मायका हुआ' की दो प्रतियां प्राप्त हुईं। धन्यवाद। मैं अभी विदेश से वापस आया हूँ और जनवरी के अन्त में वापस चला जाऊँगा। अगर इसके अन्दर आप मुझसे भेंट करना चाहते हों तो आप से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी और मुझसे जो कुछ सेवा हो सकेगी मैं अवश्य करूँगा। नव वर्ष आपके लिये मंगलमय हो यही मेरी कामना है।

शुभ कामनाओं सहित।

१८ जनवरी बाद आवें अभी मैं बहुत व्यस्त हूँ

आपका
नागेन्द्र सिंह

लक्ष्मण सिंह
महारावल डूगरपुर

उदय विलास
डूगरपुर (राजस्थान)
दिनाक १४-१-१९८५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका पत्र दिनाक २४ ११ ८४ प्राप्त हुआ। धन्यवाद व्यस्त होने से समय पर आपको प्रत्युत्तर नही भेजा जा सका।

मुझे आप द्वारा भेजी गई राजस्थानी भाषा की पुस्तक मायड रो हेलो प्राप्त हो गई है। मातृभाषा की सवाम आपका अनुराग और अभिरुचि प्रशसनीय है।

पुन धन्यवाद के साथ।

भवदीय
लक्ष्मण सिंह

सबद सबद सब एक है सबद सबद म भेद।
एक सताव जीवन, एक मिटावै खेद ॥१०॥
ग्यानी तपसी संजमी जती, सती, व्रत धार।
धारा सबद उजालता, हिवडा रा अंधकार ॥११॥
मीठा मधरा रस भरया करता सा मनवार।
सबद न चूकै बाहरा करता ऊडी मार ॥१२॥

रावत सारस्वत

डॉ मूलचद सेठिया
साहित्यकार

मालवीय मार्ग, 'सी' स्कीम
जयपुर (राजस्थान)
दिनाक २८ १ ८६

पूज्य भाई जी

सादर प्रणाम। आशा है, आप सपरिवार स्वस्थ और सानन्द हैं।

आज रजिस्टर्ड पोस्ट से सबद प्राप्त हुआ। मैं श्री वासुदेव पोद्दार के साथ भाई ताराप्रकाशजी से मिलने गया था तो उन्होंने मुझे कहा था कि मैं कलकत्ता गया था और कन्हैयालालजी के सबद बाण से विद्ध हो कर आया हूँ। तभी से इन सबदो के लिए मैं अत्यन्त उत्सुक हो रहा हू। दोहा बडा करामाती छन्द है और जब कभी यह तुलसी कबीर रहीम और कन्हैयालालजी जस भाव सिद्ध कवि के हाथो म पड जाता है तो विस्फोटक शक्ति धारण कर लेता है। मैं दो घण्टा म करीब ५० सबद पढ गया हूँ कई सबदो को बार-बार पढा है और पढता ही रहूँगा। कहा कही पर ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन क गहनातिगहन सत्यो को आप ने सजीव बिम्बो क माध्यम स जीवन्त मूर्तता प्रदान कर दी है। यो तो आप का सारा काव्य आत्मामुख है परन्तु इन सबदो म तो आत्म-सत्य की अनुभव रस से इतना सराबोर कर दिया गया है कि पढ कर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि की अनुभूति के रूप म आत्मानुभूति का ही सहज साक्षात्कार हो रहा है।

सारी पुस्तक आपकी हस्त लिपि स अकित होने के कारण कविताओ को और भी आत्मीय स्पर्श प्राप्त हो गया है। पुस्तक म कुछ और भी सबद सकलित होते तो पाठक को अधिकतर तृप्ति का अनुभव होता। यह तो आपने प्यास जगाने का काम किया है।

इस नवीनतम कृति के लिए मेरे हार्दिक साधुवाद स्वीकार करें।

मूलचद सेठिया

डॉ मूलचद सेठिया
एशोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

२७६, विद्याधर नगर
जयपुर ३०२ ०१२
दिनाक १ १२ ८७

पूज्य भाईजी

सादर प्रणाम। कल T V पर यह सुन कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि निग्रन्थ पर आपको १९८६ के मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार स सम्मानित किया गया है। आपकी महत्ती साहित्य सेवा के कारण कोई भी पुरस्कार आपके हाथ म आ कर अपने को स्वय सम्मानित अनुभव करेगा। मैं तो उस दिन की प्रतीक्षा म हूँ जिस दिन आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार स सम्मानित किया जाएगा।

अघोरी काल' की प्रति कल प्राप्त हुई। यह आप की कृपा है कि प्रत्येक कृति प्रकाशित होते ही अपने प्रसाद स्वरूप मुझे अविलम्ब प्रेषित कर देते हैं। पर एक अभाव अवश्य अनुभव होता है कि किसी भी प्रति पर आपके हस्ताक्षर नहीं होते। इस बार आप जयपुर पधारेंगे तो सभी कृतियाँ एक साथ हस्ताक्षरित कराऊंगा।

काल हमारे आप के जन जीवन का एक ज्वलन्त सत्य है। आपने समय के इस सत्य को शाश्वत के सदभ म रख कर जो प्रभावी अभिव्यक्ति प्रदान की है वह राजस्थान के दग्ध हृदय पर अवलेपन का काय करेगी।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका
मूलचद सेठिया

भूपतिराम साकरिया
साहित्यकार

॥ ॐ ॥

वल्लभविद्यानगर
(गुजरात) ३८८१२०
दिनांक ३१ १-८६

घणामान श्री कन्हैयालालजी सा,

नमस्ते।

काल री टपाल सू आपरी सबद प्रमादी मिली। आपरो जितरो पाड मानू ओछो है। कबीर, नानक दादू नै घणा निगुणी सता रा 'सबद' तो अध्ययन-अध्यापन रा विषय रह्या है, पण अब सठिया रा सबद भी इण माय जुड रह्या है। घणी हरख री बात है।

भगवान आपरी हजारी उमर करे नै इणीज तरै सू मातभाषा री सेवा म मग्न तत्पर रह्वो आईज परमात्मा सू विनती है।

पू० पिताजी री आशिष। किन रो स्वास्थ्य लारला दिना बिगड गयो हो पण हम थाडा ठीक है। आपनै आशिष लिखावै है।

आप सू हुबहू मुलाकात तो कदैई हुई कोनी, दरसण करण री इछा जरूर है। देखा भगवान कद करावै। योग्य कामकाज लिखावजो। तीन महीना विदेश यात्रा गयोडो हो, इण वास्तै लारली दीवाली माथै आपन अभिनदन नी भेजीजिया।

आपरो
भूपतिराम साकरिया

डा दयाकृष्ण विजयवर्गीय
कवि

सिविल लाइंस कोटा
दिनांक ३१-१-८६

आदरणीय मठियाजी

प्रणाम।

सबद की सुन्दर प्रति प्राप्त कर हर्ष हुआ। सबद का प्रत्येक दोहा अपने आप में पूर्ण है। एक पूरी कविता ही नहीं एक पूरा जीवन है। क्षण का महत्व तात्कालिक घटना विशेष के संदर्भ में सही हो सकता है पर पूरे समग्र जीवन का महत्व आंकना ही सही विवेचन है।

क्षण की तुला तुला कब जीवन पूरा पूरा
आयु नहीं क्षण क्षण ही आयु जिया करता है।

मेरी यही मान्यता है। क्षण के प्रति सचेत रहना ठीक है। क्षण को पकड़ कर बैठना नहीं। आपने मोतियों की एक लड़ी में पूरे जीवन को उतारा है किसी खण्ड विशेष को नहीं। आपने ज्ञान बाँटा है। अपने निष्कर्षों का निचोड़। अनुभूतियों का सार ही इस में कहूंगा। जो सच में संसार का विष पीकर संसार को अमृत बाँटता रहता है संसार उसी को याद करता है।

बाँट सुधा को, सब में घट घट—गरल पी गया
जग उस नील कण्ठ का नाम लिया करता है।
आप जैसा दार्शनिक कवि ही उतनी गहरी अनुभूत सूक्तियाँ कह सकता है।

सबद नाम सार्थक हो गया है। गुरु नानक के शिष्य ही सबद कीर्तन करते रहे हैं अब सारा विश्व सबद कीर्तन करेगा त्रय ताप हरे यही विश्वास है।

मैं इस नई रचना का स्वागत करता हूँ और आशा करता हूं आपकी लेखनी से ऐसे अमोल मोती झरते रहेंगे।

भवदीय

दयाकृष्ण विजयवर्गीय

डा० शक्तिदान कविया
कवि

जोधपुर
दिनांक ३१.१.८६

पूज्य बापूसा

सादर चरणस्पर्श।

आपरै दरसणां अर सतसंग सूं कृतार्थ हुय म्हैं २८ जनवरी ८६ नै राजी खुसी जोधपुर पूगग्यो। आपरै उद्‌बोधन रा वै सारभरिया सबद 'बंगाली थारै पईसां आगै नीं झुकला वा थारी सम्पति आगै झुकला' म्हैं अठै कुछ विशिष्ट व्यक्तियां नै सुणाया, तो वै आपरै इण अनुभव री ऊंडाई नै घणी सराही। 'सबद' री प्रति जहूरखां नै डाक में मिल चुकी है सो म्हैं वा प्रति म्हारै कनै ही राखी है। नारायणसिंहजी सूं कालै मिलण चौपासणी गयो, वां नै भी 'सबद' री प्रति मिल गई है। दोनूं जणां इण अणमोल कृति नै घणी वखाणी। सोनारामजी बिश्नोई मिलग्या हा वां नै भी आपरी आसीस कह दी अर 'सबद' री प्रति भी भेंट कर दी। म्हैं तो समझूं हूं कै 'सबद' री महिमा नै व्यक्त करण सारू साहित्यकारां कनै सबद है ही नहीं। आ कृति तो अमरत कलस है जिणरो एक एक दूहो आमी री घूंट है। निश्चय ही आ कालजयी अमर राजस्थानी रचना है। म्हैं सागैक सारू समीक्षा लिखस्यूं।

म्हैं आपरी 'ताजमहल' पढण नै घणो उत्सुक हो सो रात में दिनूगै सुरू करी सो पूरी पढ नै बाद में चाय पी। ऐडो नशो लखायो। ताजमहल रै सारू इतरी अछूती अनूठी अर ऊजळी ओपमावां आज ताईं कोई रचना में एकठी नीं मिलै। आ रूपाळी रचना पढनै म्हारै सूं एक दूहो रचीजग्यो, कै—

ताजमहल पर आज तक काव्य ओपमा काज।
कवि सेठिया री कृति सारां में सिरताज॥

'प्रणाम' री कवितावां पढनै तो श्रद्धा सूं आपनै प्रणाम करूं हूं। सजोग स्यूं वो गीत भी इणमें मिलग्यो—खतम हुआ जाता है मेला तुम भी एक खिलौना लेला आणंद आयग्यो।

शेष कुशल आपरो हीज—शक्तिदान कविया पाली II जोधपुर

डा० शक्तिदान कविया   पाल II जोधपुर
कवि

परम श्रद्धेय मेठियाजी सा०

सादर चरणस्पर्श।

आपरो अपणायत भर्‌यो कृपापत्र मिलियो घणी खुशी हुई। ट्‌लीजी रा अनुवाद आपन मिलियो उणरी पूग रो कृपापत्र भी मिलग्यो हो। आपरी पुस्तक मायड रो हेलो री एक प्रति श्री दीपचंदजी नाहटा री तरफ सू मिली अर एक ही ठौड बैठ तुरत फुरत पायो ने पूरी पढ्‌ली ही। म्हू 'माणक' म राजस्थानी री महिमा सम्बधी आपरी कविताबा पढी जरही गदगद हुयग्यो हो आप जडा धरती रा सपूता न इतिहास चितारसी। म्हारी विनम्र सम्मति इण भात हैं—

राजस्थानी रा चावा अर ठावा कवि श्री कन्हैयालालजी मठिया री पोथी मायड रा हेलो' तो मरभाषा री महिमा र रग रो रलो है। मायड भामा रै जस अर अजस री जको अनूठी रूपाल कवि अतस रा आखरा म दरसाई है वा सरस हिवडा नै घणी दाय आई है। उदयराज उज्वल रा अमर बात—दीपै वा रा दम, ज्यारा साहित जगमग री भात मठियाजी रो ओ दूहा अणमोल है—

काली धडरी कर हुव, घर विन्या पिछाण
मायड भामा रै विना क्यारो राजस्थान ?

श्री मठियाजी व्यक्तित्व अर कतित्व दानू दृष्टिया सू राजस्थान रा गौरव है। ऐडा सबल सुकवि रै अतस री हेला राजस्थानी समाज र काना म पूग आपरा असर करसी अर आवण वाली समै बाग सपूताचार री साख भरसी। आकार मैं छोटी पण गुण म माटी सुरग सरूप म ओपती आ पोथी घणी अनूप है। मरुधरा रा मनीषी श्रद्धेय मेठियाजी र प्रति दीर्घायु हावण री शुभकामना अर अतस रा आभार।

मायड रा हेलो तो पाठयक्रम में राखीजै जडी रूपाली पोथी है।
शेष कुशल।

आपरो
शक्तिदान कविया

डा शक्तिदान कविया ।। श्री ।। पावटा II
कवि जोधपुर
दिनांक ८.५.८६

परम श्रद्धेय सेठिया सा०

सादर चरण वन्दन।

आपरो कृपापत्र मिल्यो उणसूं पैली हल्दीघाटी वाली स्मारिका भी मिल गई।

हल्दीघाटी स्मारक प्रेरक समिति कलकत्ता घणा घणा धन्यवाद री हकदार है जिण ऐडी शानदार स्मारिका साहित्यिक अर सांस्कृतिक जगत रै सामी प्रकट करी है। इण संस्था रा सगला पदाधिकारी अनुभवी देशभक्त अर संस्कारशील सपूत है ज्यारी अंतस री भावना रै मुजब मोतियां री लड़ियां ज्यूं हा काव्य री कड़ियां जुगता सूं जोडीजी है इणरा चित्र अर पत्र दोनूं ही ऐतिहासिक महत्व रा आराव है। लेख लाखीणा है कविता रा भाव पीणा है। साची बात तो आ है क इण स्मारिका में जिण ढंग सूं हल्दीघाटी कविता छपी है वा एक अणमोल मंत्र है जिण में मरुधरा री संस्कृति जस अर अजस री पुनीत त्रिवेणी है। आज रै अनुष्टुप छन्द रा वणगत सूं इणमें अनूठो उजास दीपायमान हुयग्यो। म्हे रण आलिया माथै घूमतो थको बलिहारी लेवूं हूं—

कोना कोरा नाव रतन रा हल्दीघाटी
अठै उग्यो इतिहास पुजीजै रण री माटी

शक्तिदान जैड़ै जून छन्द रै कोडाऊ खातर तो हल्दीघाटी देशप्रेम री पवित्र पाती है। कृपा बणा रखें।

आपरो
शक्तिदान कविया

डा शक्तिदान कविया ।।श्री।। जोधपुर
कवि दिनांक १ १२ ८७

परम श्रद्धेय सेठियाजी सा०

सादर चरण-स्पर्श ।

आपने ज्ञानपीठ रै मूर्तिदेवी पुरस्कार सारू घणा घणी बधाई। आज सूरज री उगाली 'राजस्थान-पत्रिका' में औ शुभ समाचार वाचता ई म्हारो हियो हरख सू हबोला लेवण लागो। म्है काल ईज आपरै व्यक्तित्व अर कतित्व री महीमा री कडिया कई साहित्यकारा नै समझावतो हो कै इण ऊमर में हर साल एक महान ग्रंथ रो निर्माण करणवाला विरला ई हासी। सबद री खुमारी उतरीनी, जिणसू पैली सरवाणी री मात्रा रै सुमर मिणिय सापरू सतवाणी प्रगट हुयसी। सगला पुरस्कार तौ आपने मिल चुका पण सतवाणी सारू तौ कोई नवो पुरस्कार ज्ञानपीठ जड़ो घोषित होणो चाहीजे। आपरो कृपापत्र मितियो जिणा स्यू ठा पड़ी क अधारी काल नवी पोथी भी तयार हाय रही है—आप तौ कालजयी अजर अमर महापुरुष बणग्या दणमे कोई दाय राय नी है। भाई जहूरखा नै सतवाणी रा प्रति मिल गई है म्है पूछ लियो। राजस्थानी अकादमी री मालाना जलसी तय हाता ही आपने वगी सूचना मिल जासी। मुख्यमंत्रीजी री व्यस्तता रै कारण तारीख मुकर नी हो सकी। टसी टोरी भवन अकादमी न उस मौके भेट करया जासी एड़ो प्रयास चल रयो है। आपरी मौजूदगी सू जलमो ऐतिहासिक बण जासी। म्है आपरी आसास सू इटली जाय न पाछो आयो हू डा० एल पी तस्सीतोरी जन्म शताब्दी समारोह रै अतरराष्ट्रीय सेमिनार में पत्र-वाचन कियो। म्हनै रसरी कडिया एसोसिएशन वेनिस री तरफ सू बुलायो हो सारो खर्चो वारा हो। भारत रा राजदूत मिर्जा अक्बर खलीलो (मिर्जा इस्माइल जयपुर रा दीवाण रा दोहिता) भी आया हा वासू चासनर मेयर सबा म्हारै डिंगल पाठ अर पत्र वाचन री सराहना की त्रिएस्ते (Trieste) विश्वविद्यालय में भी म्हारो भाषण हुयो। म्हारै V C साहब न वा धन्यवाद लिखियो–म्हनै प्रशस्तिपत्र दियो। आप महापुरुषा री आसीस म्हारै साथ रही। शुद्ध शाकाहारी जीवण वितायो भगवान मदद राखी तबियत भी ठीक रही। कृपाभाव है ज्यू बणायो रखावसो।

शेष कुशल

आपरो
शक्तिदान कविया

डा० शक्तिदान कविया
कवि

श्री

जोधपुर
दिनांक १२ ६ ८९

परम पूज्य महामनीषी श्री सेठियाजी

सादर चरणस्पर्श ।

आपरी अमोलक अर रूपाली रचना 'नीमड़ा' री प्रत मिली । छोटे आकार रै छन्द री छटा में नीम नारायण रा नव-नवा गुणां री आ मोवणी माला रूप भांत रै विषय री अनूठी अर अमर रचना है । केई आखर तो जूनी राजस्थानी अर पिछमी धरा में बोलीजण वाला मुटकणा अर महताऊ है ज्यांरो प्रयोग आजकाल रा राजस्थानी रचनाकार तो कर ई ना सके । म्हनै सुखद अचंभो हुवो के इतरा बरस हुवा राजस्थान स्यूं दूर कलकत्ता जड़ा महानगरी में बसण वाला महामनीषी अजे ताई वां सबदां नै भूला नी है । राजस्थान रो साहित्यिक जगत आपरो ऋणी रहसी । आपरै स्वस्थ दीरघ जीवण री शुभ कामनावां साथै ।

आपरो कृपापत्र भी पूगो । कृपाभाव है ज्यूं रखावसो । सेवा चाकरी लिखावसो ।

आपरो आशीषाकांक्षी

शक्तिदान कविया

डॉ सत्यनारायण स्वामी
साहित्यकार

बीकानेर
दिनाक २५ २ १९८६

परमपूज्य सेठियाजी साहब

सादर अभिवदन। आपकी नव कृति सबद' मुझे यथासमय मिल गई थी। इस बीच मैं कुछ दिना के लिए जोधपुर चला गया था। लौटने पर आपका १८ २ का कृपापत्र भी प्राप्त हुआ। आपको पहुच न लिख पाने से निश्चय ही असुविधा हुई होगी। क्षमस्व माम!

'सबद का देख पढ कर जो आनन्दानुभूति हुई है उसके लिए समझ म नही आता अभिव्यजना शब्दावली कस जुटाऊ! इस टाइप की पुस्तक मैंने ता दखी ही पहली बार है। आदि से अत तक सौन्दर्य छिटकाती इस कृति म आप का रोम रोम दृष्टिगत हो रहा है। शब्द माला के मनके अक अक स बढकर, रमणीय चित्ताकर्षक एव अनमोल है। सरल और सही शब्दो म भावो को जिस विराट भूमि पर आपने उतारा है वह आप सरीखे मनस्वी साहित्य मनीषियो के ही बस की बात है। कलात्मक बनाने म भी इसम आपने कोइ कसर नही छोडी है। आपके जीवन के इस अनुभव सार को पाकर राजस्थान और राजस्थानी सदव गौरवान्वित रहेंगे, ऐसा विश्वास है। ईश्वर करे राजस्थानी भाषा मान्यता के युद्ध म शीघ्र ही विजय पाकर आप सरीखे कर्तव्यिनिष्ठ एव यशस्वी नर भूषणो के समय नेतृत्व म खूब फूले फले। किमधिकम?

कलकत्ते म इन दिनो राजस्थानी की अच्छी सेवा की जा रही है। कभी-कभी उसका प्रसाद मुझे भी पहुच जाता है।

आप सपरिवार स्वस्थ एव सानन्द होगे। यहा सब सानद है। विशेष आनद।

भवत्स्नेहाकांक्षी
सत्यनारायण स्वामी

मो उस्मान आरिफ
राज्यपाल

राजभवन
लखनऊ
दिनाक फरवरी २८, '८६

प्रिय सेठियाजी,

आपका पत्र दिनाक २५ २ ८६ व राजस्थानी भाषा की आपकी नई पुस्तक सबद प्राप्त हुई। १४-१५ दिन हुए मेर बहनाई का बीकानेर म इन्तकाल हो गया है और मैं शोक मे हू वैसे आपकी किताबें और रचनायें उच्च-कोटि की होती हैं जिसको तमाम राजस्थानी अदब के लोग बराबर तस्लीम करते चले आ रहे हैं। आप जैसे साहित्यकार राजस्थानी साहित्य के लिये एक गौरव है। यह किताब भी बहुत सराहनीय है।

आपका
मो उस्मान आरिफ

सावर दइया
कवि कहानीकार

३ च १४ पवनपुरी
बीकानेर (राजस्थान)
३३४००१
दिनांक २ ३ ८६

आदरजोग श्री सेठियाजी

आनन्द मंगल हुवाला !

आज घरां पूग्यां तो मन सूं पैली 'सबद' बांचा बाच'र जी सोरा हुग्या। इयां लाग्यो जाणं माला पूरी कर'र उठ्यो हावूं। साची कवूं अ अेक सौ नव मिणिया आली धनमाला बातां जीवन री ऊंडा मरम उजागर करै। आपरी दार्शनिकता अर अनुभव री छाप गूज परतख देखण नै लाधी है।

आसूं झर निरथक गया मन मांचा आ बात
अ गीता रा बीज है उगसी रात बिरात।

न्यारी-न्यारी बूंद पण समद मापड़त एक

सबद हंस ऊपर उड़या सुर री पांखा खोल

काइठा कित्ता कित्ता आं लेया मन में रच पच गा है सास लेवूं तो बी बगत आं ओलया री सुगंध म्हारै च्यारूंमेर बिखरयोड़ी सी लखाव। दोहा छंद रो इत्तो सुघरयाड़ो रूप देख र आ बात भल पुख्ता हुव क आप जिसं सिद्धहस्त कलम र कारीगर खातर किणी भी छन्द नैं परोटणो डावै हाथ रो खेल है।

सबद खातर घणी घणी बधाई। राजस्थानी साहित्य न अेक नुवो खजानो मिल्यो है म्ह आ मानूं।

आप सुजानगढ कद पधारया करो हो? बी बगत म्हे आपसूं रू-ब रू मिलणो चावूं। बिया लाडनूं म्हारो नानेरो है। बिनै तो बरस म एक-दो चक्कर लगाय लिया करू। जद पधारणो हुवे तो खबर करज्यो।

सुजानगढ पधारणो हुव तो थां सूं मिलण रो सुख मिल सकै।
म्हारै जोगी सेवा ?

थारो ई
सावर दइया

दिनकर सोनवलकर
कवि

जावरा
मध्य प्रदेश ४५७ २२६
३ अप्रेल, ८६

श्रद्धेय सेठियाजी सादर प्रणाम निवेदित

पिछले दिनों दिल्ली गया था। वहा भाई श्री बालकवि बरागी जी के साथ ही ठहरा था। रविवार की शाम को आपके नए कविता सग्रह 'सबद' का पाठ भाई बरागी करते रहे और म सुनता रहा। कविता म इतनी सहजता एव गहराई म अध्यात्म का सगम और कहीं पढने नहीं मिला। जीवन के छोटे छोटे अनुभवों तथा प्रसगों म आपने जिस तरह दर्शन और चिन्तन को बाधा है वह अद्भुत बन पडा है। सचमुच कबीर और मीरा राजस्थानी म फिर अवतरित हुए हैं। आपकी लेखनी को शतशत नमन करता हूँ और यह विनम्र निवेदन करता हूँ कि यदि सबद की एक प्रति भेजने की कृपा कर सके तो मुझपर बडा अनुग्रह होगा। आश्वस्त हूँ कविता के इस प्रसाद के प्रति। उत्सुक प्रतीक्षा में

विनीत
दिनकर

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

लाडनू
दिनांक २६ जून, ८६

श्री कन्हैयालालजी सेठिया का एक कविता संग्रह 'सबद' परमाराध्य आचार्यवर से प्राप्त हुआ। आचार्यश्री का निर्देश था—पढ़ो और अपनी प्रतिक्रिया लिखो। श्री सेठियाजी के काव्य-सौष्ठव और सूक्ष्म सत्य को पकड़कर अभिव्यक्त करने की क्षमता का मन पर प्रारंभ से ही प्रभाव रहा है। शब्द को पकड़ छोड़ने के लिए अशब्द तक पहुंचने का उनका मनोभाव उन्हें अन्तर्जगत की गहराइयों में ले जाकर छोड़ता है। उनके 'सबद' को पढ़कर जो कुछ संवेदन हुआ उसे शब्दों में रूप दे रहा हूं—

१ राजस्थानी काव्य की,
सबद स्वयं पहचान
अल्प अक्षरां में अमित
अर्थ निहित अनजान।

२ भाषा मुग्धा नायिका
सहज सरल विन्यास
नए प्रतीकों से सजी
चढ़ी स्वयं आकाश।

३ शब्दां की बैसाखियां ली हाथां में थाम
अनुभव चरणां में अतुल मंजिल मिली ललाम।

४ अंतर चेतना तक पहुंच,
शब्द हुए सप्राण
पढ़ते-पढ़ते फूटता
भीतर से सगान।

श्री सेठियाजी से अपेक्षा
आवृत जो अब तक रहे
जन घम के तत्व।
रूपायित करना उन्हें
हो आन्तर एकत्व।।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

नया दिल्ली
दिनाक अगस्त १०, १९८७

(१) सत्‌वाणी पोथी नही
है अनुभव रा बाल,
पढता जी सोरा हुवै,
गुणता बण अमोल ।

(२) सबद-सबद म सार है
दीठ नुई इकधार
दिस्टी निज री मम हुया
सचमुच ही निसतार ।

(३) सबद अलप गहरो अरथ,
मन न लेवै बाध
बिखरचा हार विचार रो
देव खिण मे साध ।

(४) पाच महाव्रत रो निमल
निखरचो धणा सरूप
जा सरूप न्है देखणा,
आतम दरपण रूप ।

(५) अमिय दीठ गुरु रा मिला
सतवाणी र साथ
पोथी पढ सवेदणा
लिखला हायाहाय ।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

कल्याणमल लोढा
भू पू कुलपति जोधपुर विश्वविद्यालय

२ ए, देशप्रिय पार्क ईस्ट
कलकत्ता ७०० ०२६
दिनांक ८ जुलाई, १९८६

प्रियवर श्री मठियाजी

मैं गत दो मास से कलकत्ते के बाहर था। गत सप्ताह ही लौटा। इसी प्रवास के कारण आपसे न तो सम्पर्क हो सका और न सान्निध्य ही। मुझे विश्वास है कि आप सपरिवार स्वस्थ एवम् प्रसन्न हैं।

मैंने हल्दी घाटी स्मारक की स्मारिका देखी। आपने मुझे उस पावन माटी की मंजूषा भी भेंट की थी–वह माटी नहीं हमारे इतिहास का एक पंजीयत दस्तावेज है–राजस्थान की धारा धरती की अमर विभूति। आपने हल्दीघाटी के स्मारक के निर्माण हेतु सचमुच एक स्तुत्य और अनुकरणीय कार्य किया है। यह आपकी विराट अन्तर्दृष्टि और जातीय चेतना कवि की अन्तश्चेतना का परिणाम है।

इसी स्मारिका में मैंने डा० महेन्द्र भानावत का निबंध भी पढ़ा। इस निबंध में उन्होंने आपके एक वक्तव्य का उल्लेख किया है जिसमें आपने कहा कि मैं अब हिन्दी में न तो पत्र लिखूंगा और न कोई रचना ही। इस वक्तव्य के सम्बन्ध में अनेक मित्रों से चर्चा हुई। मैं जानता हूं कि आपने राजस्थानी का मस्तक ऊंचा किया है और उसे नवीन गति मति और प्रेरणा दी है। भारतीय भाषा परिषद् में राजस्थानी साहित्य पुरस्कार के आप ही पुरोधा और प्रेरक हैं। आपके हिन्दी प्रेम से भी मैं पूर्णत: अवगत हूं। जितना प्रशस्त कार्य आपने राजस्थानी के लिए किया है उतना ही हिन्दी के लिए भी। आप दोनों के धनी हैं। हम सब राजस्थानी के पक्षधर हैं और उसके जन्मजात ऋणी भी। हमारे लिए हिन्दी भी उतनी ही अपनी है– आत्मीय। वह भी राष्ट्र की अक्षय मंजूषा है उसकी वाग्मी है अतः मित्रों से मैंने कहा कि डा० भानावत ने आपके कथन को उद्धृत करने में कहीं चूक की है। हिन्दी आपकी कभी खो नहीं सकती और आप उससे कभी विमुख नहीं हो सकते। राजस्थानी और हिन्दी दोनों आपकी आंखें हैं उच्च चेतना के दो स्तर। आपके चिंतन से मैं भली भांति परिचित हूं मुझे विश्वास है कि आप भी मेरे मत से सहमत होंगे। मेरे कान खराब हैं––ठीक होने पर मैं आपसे सम्पर्क करूंगा। विश्वास है आप मेरे इस पत्र को अन्यथा नहीं लेंगे।

शुभ कामनाओं के साथ।

आपका
कल्याणमल लोढा

पवन पहाड़िया
कवि

डह
दिनांक २८ ७ ८६

आदरणीय भाटियाजी

नमस्कार।

'मायड रा हेला' पढ्या। का दो आखर प्रतिक्रिया रै रूप में म्हे आपनै लिख्या है।

मायड रा हेला पढ्या सुणज्यो म्हारी बात
हेला निमरा नी पड पडो भलाई हाथ।
बूढा कवि रो तन हुवै सबद न बूढा होय
आ पाथी पढिया पछै पूत सवै नी माय।
आख्या पाणा छिडकिया रिवी नीद उडाय
मायड रा हेला पढ्या लागी अगा लाय।
निरभ नीद तुडायदी थारा है अहसान
एकण हू दिरावस्या मायड भापा मान।
थ राजा रजथान रा म्हे हा आठ करोड
मायड मान दिरावस्या कहता मूछ मरोड।

म्हारो आपसू अरदास है क आप एक आखरो 'राजस्थान विधान सभा र नाव लिखो।

म्हार इण कागज माथै आप गौर फरमास्या अर पडूतर दिरास्या इसी आसा है।

आपर सरीर री स्वस्थता री अरदास म प्रभु चरणा म।

आपरो ही टाबर
पवन पहाड़िया

मोहनलाल लोढा
ललितेश

१४६/२ ओल्ड चायनाबाजार स्ट्रीट
कलकत्ता १
दिनांक ११ ९ १९८६

श्री सेठियाजी के साहित्य की संक्षिप्त समीक्षा

(१)

किसने 'धरती धोरां री' में सौरभ का गान गाया ?
किसने 'पातल औ पीथल' में भैरव राग सजाया ?
किसने 'धर कूंचा धर मंजलां' धीरे धीरे चल के ?
आत्म सत्य को किया उजागर, दीप किरणवत् जल के ?

(२)

अक्षर अक्षर में अक्षर का रूप उभरता चलना
क्षर काया के अन्तराल में अलख ज्योतिमय जगना,
किसने 'सबद'—सरित के गहरे अन्तराल में जा के ?
वाणी के मंदिर में रक्खा मुक्ता थाल सजा के।

(३)

जैसे किसी अचल से चलने वाली सरिता धारा
सजग साधनामय बहता है तज कर कूल किनारा,
उसी तरह आलोक शिखर से ही, यह 'सबद' ढले हैं
मानो स्वन सरिता में यह भावाम्बुज अरज फले हैं।

(४)

'धर कूंचा धर मंजलां' में जाग्रत जीवन का स्वर है
यह कवि की कविता है या यह छन्दबद्ध मुकुर है ?
श्लेष यमक उपमा उत्प्रेक्षा रूपक रम्य छटा में,
पल पल विद्युतवत् प्रकाश रेखा से तिमिर घटा में,

(५)

मानस पट पर नये-नये, बिम्बा का नया निरूपण–
होता चलता आत्म चेतना म भर कर नव स्फुरण ।
आठ ओड गूगा के काना म मायड का हेला'
बीस प्रकारान्तर से सज्जित मदु छदा का मेला ।

(६)

आज जागरण के क्षण म भी भूले हम निज भाषा ।
अपनी भाषा की अमान्यता हित हम बने कुहासा ।
अपना उपवन सूखा सूखा अपना कण-कण प्यासा ।
अपने आगन म छाई है चारा ओर निराशा ।

(७)

इसी निराशा म आशा के चरण बढ़े जो आगे–
'फूकू' 'मींझर' 'गलगचिया म गीत उन्हीं के आगे
'लीलटास' ने ललित पख उन्मुक्त गगन म खोले
जीवन का जड चेतन कोई तोल सके तो तोले ?

(८)

वाणी के उत्तुग शृग पर किसने इसे धरा है ?
मानव के मगल विकास की ही यह सुभग त्वरा है,
सजन मनन रत कौन प्राण निज अन्तर तोल रहा है ?
कौन मनीषी मानव मन की गाठे खोल रहा है ।

(९)

बाद एक के एक सजन ग्रन्था का चला निरन्तर
कवि श्री कन्हैयालाल सेठिया के सडसठ सवत्सर,
नहीं मात्र साहित्य-साधना के पथ पर आगे है
इनकी मजिल मरु का मगल अभी और आगे है ।

मोहनलाल लोढा

कैलाशदान उज्वल
अध्यक्ष,
राजस्थानी भाषा साहित्य एवम
संस्कृति अकादमी

'श्री

दूरभाष ४२६६६ (घर)
६१४०० (कार्यालय)
निवास ३५, उणियारा बाग
जयपुर ३०२००४
दिनांक २५ ३ ८७

आदरजोग सठियाजी

जयहिन्द।

हाली री मगल कामना सारू धन्यवाद अरज करता थका म्हारी मगल कामना स्वीकारण रा निवेदन करूं हूं।

आप रै ग्रन्थ 'सबद' नै सूरजमल्ल सिखर पुरस्कार रा कूत म श्रेष्ठ पायो नै अकादमी बड मान रै साथै आपरी कृति न पुरस्कृत करण रो निरणा लियो जिण रै सारू म्हारी तरफ सू एक शुभ चिन्तक मित्र री हैसियत सू बधाई स्वीकार करण री महर करावसी।

जिण भात रा मैमोरन्डम तयार करण रा विचार हा अडा तैयार नहा हुआ। जिण बाता नै ममोरेन्डम म उभारणी चाइजे उणा उपर अकादमी री कार्य कारिणी री तारीख ३० माच री बठक मैं विचार करणा है। कार्यकारिणी र निर्णय रे आधार माथै ममोरन्डम बणावणा सार्थक रसी।

मुख्य मत्री जी र मन म राजस्थानी भाषा र समथन र बार म उदासीनता रा दृष्टिकोण मायड भाषा र दूजा सवका नै भी लखाया। पण म्हन आ लागे है कि हरदेव जा जिसा कुशल राजनीतिज्ञ जन साधारण, री उचित मनसा री अवहेलना करण री गलती नी कर सके इण सारू इणा रै मौन रो कारण राजनीतिक हावण री ज्यादा सभावना है। प्रभावशाली ढग सू डेपुटेशन मिल नै निवेदन कर ता अनुसंशा री समथन करण रा उणा सू आश्वासन मिलणा चाइजे।

आप राजा खुशी हास्यो।

आदर सहित।

आपरा
कैलाशदान उज्वल

भगवतीलाल व्यास
कवि

३५, खारोल कॉलोनी
फतहपुरा
उदयपुर ३१३००१
दिनांक १ १२ १९८७

परम श्रद्धेय भाई साहब

सादर प्रणाम।

कल शाम की डाक से अकाल सम्बन्धी आपकी राजस्थानी कविताओं का संकलन अघोरी काल प्राप्त हुआ।

आज सुबह अखबारों में आपके ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी पुरस्कार से पुरस्कृत होने की खबर पढ़ने को मिली।

कह नहीं सकता कि इस समाचार से व्यक्तिगत मुझे कितनी प्रसन्नता है।

पहले तो आपको 'अघोरी काल' की कविताओं के लिए प्रणाम। पहली बार अकाल की पीड़ा को दो टूक शब्दों में राजस्थानी में इतनी जीवन्त अभिव्यक्ति मिली है।

पुरस्कृत होने के समाचार वस्तुत: हम सब लोगों के लिए गर्व और गौरव का विषय है। मां भारती की सेवा में आप द्वारा और भी विशिष्ट कृतियां अर्पित हों तथा आप सम्मान एवं यश के सर्वोच्च शिखरों पर आरूढ़ होते रहें यही विनीत प्रार्थना है। कृपया इस महिमाशाली उपलब्धि के लिए मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

कुशल पत्र बखशावें। योग्य सेवा से सूचित करावें।

आपका
भगवतीलाल व्यास

डॉ सोनाराम बिश्नाई
एम ए पी एच डी
असिस्टेंट प्रोफेसर

राजस्थानी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय
जोधपुर-३४२ ००१
दिनाक ५ दिसम्बर १९८७

घणै आदरजोग कविवर चिन्तक सेठिया साहब,
घणै मान सू पाव धाग ।

आपरी भेज्योड़ी पाथी अघारी कारू पूगा, ग्ण सारू हिवडे रै अन्तराल सू घिनवाद । धिनभाग म्हारा जिका आप जैड़ा मा सुरसत रा माटा सपूत म्हन याद राखो । म्हे लारली वेला कलकत्तै म आप सू मिलिया पछै जाधपुर आय'र आपरी पाथिया आपरी आग्या मुजब ठावो ठाव पूगाय'र आपनै जिका कागद मेल्यौ वा मिलिया क नी इण री म्हनै आप कानी सू कोई पडूत्तर नी पूग्यौ । महर करनै लिखजो ।

अघोरा काल री कवितावा इण मरभूमि रै मानखै खातर चेतणा रा मूलमत्र है। आपरा आखर अठ रै किसाना मजदूरा अ'र मध्यम वग र लागा री कठण जिदगानी री पुकार अर वा र अतस रा बाल है। मरु भोम री पुकार है।

म्ह म्हारै इष्टदव रामापीर सू आपरै सुन्दर स्वास्थ्य सारू अ'र हजारी उमर सारू वीणती करू । ज्ञानपीठ पुरस्कार रै इण मान रै मौकै म्हारी वधाई अगेजो सा।

कागद पूगण र पडूत्तर म
दा ओल्या री उडीक म—

आपरो
सोनाराम बिश्नाई

RAO BIKAJI SANSTHAN, BIKANER

LajPatbhan Dhabhai Building K E M Road Bikaner 334001

दिनांक ७ दिसम्बर १९८७

आदरणीय कन्हैयालालजी साहब

समाचार पत्रां सू आ जाणकारी पाय म्हानें बडी खुशी हुई के आपने साहित्य सेवा रे वास्ते मूर्तिदेवी पुरस्कार सू सम्मानित करया गया है। आ पूरे बीकानेर रे नागरिकां रे ताई एक बडे हर्ष व घमण्ड री बात है। आप हिन्दी र राजस्थानी भाषा म जकी कविता लिखी है बा न पढ र हर एक रा मन प्रभावित हुवे है। आ बीकानेर रा सौभाग्य है के आप जिसा महान कवि ई मरू भूमि म जलम्या। ईश्वर आपने आगे और भी सम्मान देवे आ यहा सब री प्रार्थना है।

इये बात रा जिक्रो पंच शताब्दी समारोह समिति री हाल री बैठक म हायो। सदस्यां इण समाचार पर बडी प्रसन्नता दर्शायी और आपने बधाई भेजने रो कह्या है। ई वास्ते मैं म्हारी तरफ सू समिति री आर सू और राव बीकाजी संस्थान रे समस्त सदस्यां कानी सू आपरी ई उपलब्धि री सराहना स्वरूप बधाई भेज रह्या हां।

भवदीय

ले. जन. कु. चिमन सिंह

जनकराज पारीक
प्रधानाचार्य

ज्ञान ज्योति उ मा विद्यालय
श्री करणपुर

दिनांक २०-१ ८८

आदरणीय सठियाजी

चरण-वन्दना,

गोरा धोरा री तिरसी धरती पर मसाण सेवतो अघोरी काल आख्या देख्यो अर बी रो हूबहू विकराल रूप आपरी नुइ पोथी म भी निश्चय ही अै कवितावा धोरा र दु ख-दरद अर धोरिया र सघप री मायली पडताल है, ओ र री आग मे भुलसीजता मरुधर रै मिनखा री परबस पुकार है।

आपर सजन नै नमन करणै सू वेसी म्हान और कोई अधिकार नी है, इण वास्तै म्हारी प्रतिक्रिया फक्त इती ईज कै म्हा सरीखा 'कागद काला करण हाला' री उमर रो एक एक हिस्सो आपन मिल जावै, तो मायड भासा अर भोम रो बहोत बडो उपकार हा सक । म्हारा विनम्र प्रणाम स्वीकारज्यो अर स्नेह आशीष बणायें राखज्यो। आपरै स्वास्थ्य अर दीर्घायु की कामना सहित।

आपरा
जनकराज पारीक

मदनराज दौ० मेहता
शिक्षाविद्

३८१ चौथी सडक
सरदारपुरा, जोधपुर
दिनाक २८ १ १९८८

मानीता सेठियाजी सा

प्रणाम ।

भाई जहूरखाजी म्हारा सैण है । वार साथ आपरी दोय लाखीणी पोथिया देह विदेह अर अघोरी काल मिला । आपरी नवाजिस सारू ता म्हारे कन ओपता आखरा री सूझ कोनी पण आ म्हैं जरूर जाणू हू के आप री तजरबो और ग्यान घणो वोला है । देह विदह माय आप कदीमी दरसन री उलझियाडी अर ऊण्डी वाता ने कवितावा माय ढाल नै एक नवा रूप न्यिो, जिण री आज घणी जरूरत है ।

अघारी काल पढता मन जूना कवि ऊमरदान जी याद आया । अबखाई नै समज न वा कोई ५० बरसा पला काल माथै एक लावो कविता लिखी ही—पण आपरी कवितावा माय नै एक नवो दाठ को ओलखाण मिला । आपर एक एक आखर म आपरी हिया री वाणा प्रगटी है । कलकत्ता माय विराज न आज जलम भौम की जको विगत लिखी है—वा इण बात की साख है के आप रो अतस इण घरती सू आछी तर जुडियोडा है ।

आपसू मारो प्रतख मिलणो नो हुयो । आपरी तारीफ ता टावर पणा स्यू सुणता रह्यो हू । म्हैं अठे यूनिवर्सिटी म हिन्दी म रीडर हूँ । म्हारे अठे आपरी हिन्दी री कवितावा विश्वविद्यालय री तरफ सू छपी पोथिया माय सग्रै की है वा नै म्हे पढावा हा ।

एकर फेर आपरी नवाजिस सारू धन्यवाद ।

आपरो हीज
डा० मदनराज दौ मेहता

डा पुरुषोत्तम छगाणी
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

उदयपुर

दिनांक १२ २ ८८

घणा माणीता सेठियाजी,

सादर प्रणाम !

आप री काव्य-पोथी 'अघोरी काल' मिली घणा हरख वियो ! म्हनै याद कियो, आभार ! सकलन री स कवितावा बाच लीधी। अकाल री अवखी मार सू कलपती मरुभोम री जीवत चितराम तन-मन म लाय लगा दै। लोहियाजी अेकर जैसलमेर मे कह्यो हो—"सरकार री लापरवाही अर पाजीपन जैसलमेर न रेगिस्तान बणायो है।"

'माणक' रै जनवरी, ८८ अक म 'अघोरी काल' री समीक्षा ई वाची। घणी दाय आई।

मायडभाषा रै वास्तै आपरा सेवावा घणी महताऊ अर ऐतिहासू है।

म्हार लायक सेवा लिखजो।
किपा राखजो।
पत्र री उडीक पण रैसी।

आपरो
डॉ पुरुषोत्तम छगाणी

डा सावित्री डागा
माहित्यकार

११८, मदन डागा माग
नेहरु पार्क
जोधपुर
दिनाक १५ २ ८८

आदरणीय कविवर,

प्रणाम !

आपकी नव प्रकाशित अति मूल्यवान पुस्तक 'अधारी काल' प्राप्त हुई बहुत बहुत आभारी हूँ ।

देश की और मुख्यत राजस्थान की समकालीन एव ज्वलत समस्या का उजागर करने वाली, इस धरती की मानव समूह का करुण कथा व मूक व्यथा को वाणी देने वाली महत्वपूर्ण रचना के लिये अनेक बधाइयाँ ।

आशा है सपरिवार स्वस्थ्य एव सानद हैं ।

साभार

आपकी
सावित्री डागा

पुनश्च मेरे निर्देशन म दो विद्यार्थी राजस्थान की हिन्दी कविता पर शोध कर रहे हैं । मैंने इस सन्दभ मे साल भर पूव आपसे पुस्तकें उपलब्ध करवाने का निवेदन भी किया था शायद पत्र नहा पहुँचा हो । शेष फिर ।

सावित्री डागा

देवकर्ण सिंह
साहित्यकार

ग १ अरुणाभवन
सवाश्रम मार्ग
उदयपुर
दिनांक १९-४-८८

मानेता सठिया साहब

आपकी हाथम सू भेज्यानी उपारा बात पोथी म्हने मली। बाच र मन प्रभावित व्हियो। पाछला दना महाराणा मेवाड फाउण्डेशन रा उछव म आपरा स्मरण व्हिया हा। कवू ता बराद नी मानी जाय के बडा महाराणा भगवत सिंहजी मेवाड आपरा साहित्य स्यू घणा घणा राजी व्हा। वा म्हने खास तौर फरमाया के सठियाजी री मेवाड घराणा री तरफ सू पूजा व्हेणी चाहीज। म्हनै आप जा पोथी भेज ने याद राखा जणी र वास्ते घोन-घान धन्यवाद (लीलटास) वी पी सू भेजा जा सके ता अहसान मन रवगा।

आपरा
देवकरण सिंह

गजसिंह
भ पू महाराजा जोधपुर

UMAID BHAWAN
JODHPUR
दिनांक १६ मार्च १९८८

श्रीमान कन्हैयालालजी सेठिया

आपरी घणमान और स्नेह सू भेज्योड़ी पोथी म्हारी कानी र वास्ते घणा घणा धन्यवाद। पोथी रो आवरण चितराम ने भूमिका रो आलेख्या देखता ही पोथी रा पूरा आस्वाण मिल जावै।

मारवाड र जरा गाल र बार म जो पोथी जो दरसाव कि मारवाड र गावा रा ने गाव वाला र मन रा पीर रा किती नजदीकी जाणकारी र आधार माथ ए कविताओ आपर हिरद सू नीकली है।

एक बार और आपने घणा घणा धन्यवाद।

आपरा शुभेच्छु
गजसिंह
महाराजा आफ जोधपुर

गजसिंह
जोधपुर महाराजा

UMAID BHAWAN
JODHPUR

दिनांक दिसम्बर १५ १९८८

माननीय श्री कन्हैयालाल सेठिया

म्हनै आ जाण'र घणो हरख हुयो क राजस्थानी भाषा साहित्य अर संस्कृति अकादमी बीकानेर आपने मायड़ भाषा राजस्थानी री सेवा करण अर इणरी बढ़ोतरी सारू अमोली पोथ्यां लिखण खातर मान सम्मान अर ईनाम दियो है।

आपणी भाषा राजस्थानी री इण सेवा सारू अर आपनै मिल्या इण मान खातर मैं आपनै म्हारी तरफ सूं बधाई देवूं अनै आपरै सुस्वास्थ्य अर मगन जीवन री कामना करूं।

नुवै साल री बधाई भेजां।

आपरो शुभेच्छु
गजसिंह
जोधपुर महाराजा

श्रीहरि

कविराज रामाधीन शर्मा
वशिष्ठ

फोन २८८०७२
दिनांक १२.९.८८

महामनीषी श्री कन्हैयालाल सेठिया

सादर जय श्रीकृष्ण।

आपके ११ सितम्बर के जन्म दिवस पर मैं शारीरिक इच्छा होते हुये भी चिकित्सा सम्बन्धी आवश्यक कार्य के कारण नहीं पहुंच सका। भगवान धन्वन्तरि आपको आरोग्य प्रदान करें जिससे आप साहित्य जगत में इसी प्रकार सेवा करते रहें।

मन अतीत में यात्रा करने लगा तो ऐसा लगा कि आपने कलकत्ते आने के बाद जो सेवा साहित्यकारों की साहित्य की निष्ठा पूर्वक की है वह हजारों हजार वर्ष तक स्मरणीय रहेगा। परम श्रद्धेय स्व० सीतारामजी सेकसरिया जी के अभिनन्दन ग्रन्थ से लेकर आजतक साहित्यकारों की समाज के द्वारा सेवा कराने में आप की ही सूत्रधार रहा है। राजस्थानी भाषा के लिये भी जन जागरण जो आपने प्रारम्भ किया था उसका फल सामने आने लगा है।

आप द्वारा रचित साहित्य का यदि सही मूल्यांकन समय आने पर होगा तो लोग आपको सूर तुलसी तथा कबीर की भांति याद करेंगे।

मेरी पुस्तक जाविम पर जो पंक्तियां आपने लिखी थी वह अपने आप में एक धरोहर रहेगी। आप स्वस्थ रहें यही मेरी मंगल कामना है।

शुभेच्छुक
कविराज रामाधीन शर्मा वशिष्ठ

साध्वी जयश्री

कलकत्ता
चातुर्मास १९८८

1 'सतवाणी' रा समद है
अनुभव रतन अथाह
पढ़ता चितवता मिलै
अणजाण्यै नै राह।

2 'सतवाणी' रचना सुघड़
महत—अर्थ लघु छन्द
साची कविता आ बणी
बाकी कवित कबन्ध।

3 बड़ा हुवै विधि स्यूं कवि
गढ़ आपरा वाल
वां वालां ने पढ बण
हिवड़ो रतन जमाल।

4 दीठ सध्या सिष्टी सब
हुव जीव भव पार
अल्प ग्यान स्यूं काढ़िया
सतवाणी रो सार।

—साध्वी श्री जयश्री

भगवतीलाल व्यास
कवि

35 Karol Colony Fatehpura
UDAIPUR

आदरणीय भाई साहब

सादर प्रणाम।

आपरा 12 8 87 रो पोस्टकार्ड अर रजिस्टर्ड डाक सू भेज्योड़ा मतवाणी ग्रंथ मिल्या। आपरे आसीरवाद रूप ऐ दोयू चीजा पा'र हरख हुया।

मतवाणी री चितण मणिया आपरै जस रा उजास जण जण रा हिवड़ा मे पहुचावसी। काव्य चितण अर चेतना री अनूठा मल सूत्र रूप मे माड'र आप नछे हा आज री एक बडी जरूरत री पूर्ति कीधी है। इसू बेसी सेवणा म्हारे लिए छोटे मूडे बडी बात हुसी।

म्हारे जोग सेवा चाकरी हुवे तो हुकम करावस्या।

विनयवत आपरा
भगवतीलाल

Dr I Panduranga Rao
Director

भारतीय भाषा परिषद
कलकत्ता
31 01 89

आदरणीय श्री सेठियाजी

सादर अभिवादन।

परिषद आपकी 'सतवाणी' का स्वागत कर अपने को ही सम्मानित कर रहा है। इस निर्णय पर मुझे आत्मिक आंतरिक और आंतरंगिक प्रसन्नता है। इसलिए मैं व्यक्तिगत रूपसे आपका अभिनंदन करते हुई यह पत्र लिख रहा हूं।

परमसत्तात्मक स्वामी से प्रार्थना है कि वह आपको सत्कृतित्व में समन्वित करता रहे।

आपका
पाण्डुरंग राव

डॉ पाण्डुरंग राव
निर्देशक भारतीय भाषा परिषद

कलकत्ता
दिनांक 30 1-1989

आदरणीय मठियाजी

सादर नमस्कार ।

आपको यह सूचित करते हुए हम प्रसन्नता हो रही है कि आपकी प्रशस्त रचना सतुवाणी भारतीय भाषा परिषद की पुरस्कार योजना के अन्तर्गत इस वर्ष साहित्यिक पुरस्कार के लिए चुन ली गई है। इसके लिए आपको मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। यह पुरस्कार 4 मार्च 1989 को सायं 5 00 बजे परिषद के सभागार में आयोजित होने वाले विशिष्ट समारोह में आपको समर्पित किया जाएगा। पुरस्कार की राशि ग्यारह हजार रुपये के अतिरिक्त आपको एक प्रशस्ति पत्र तथा मान चिह्न भी समर्पित किए जाएंगे।

आपसे अनुरोध है कि आप कृपया अपनी स्वीकृति तुरंत भेजें तथा साथ ही अपना संक्षिप्त परिचय तथा फोटो भी भिजवा दें ताकि हम पुरस्कार उत्सव में प्रकाशित होने वाले परिचय पत्र में तथा प्रशस्ति पत्र में उनका उपयोग कर सकें।

पुरस्कार उत्सव 4 मार्च 1989 को आयोजित हो रहा है और अगले दिन 5 मार्च 1989 को प्रातः 11 00 बजे से 5 00 बजे तक एक विचार गोष्ठी का भी आयोजन किया जा रहा है जिसमें स्थानीय साहित्यकार आपसे मिलने तथा आपकी वाणी सुनने का लाभ उठाएंगे।

कृपया अपनी स्वीकृति परिचय तथा फोटो यथाशीघ्र भिजवा दें।

आपका
डा पाण्डुरंग राव
निर्देशक

रामनिवास जाजू दिनाक १४ ६-१९८९
कवि

प्रिय श्री सठियाजी

सादर नमस्कार।

'नीमडा' का पारायण कर गया हूँ। २४ पदा की इस रचना ने मन माह लिया। वचपन की यात्रा करा दी। ऊँट पर बैठ कर जाया करता था और रेगिस्तान मे पशु और सवार दोना को विश्राम और सरक्षण नीम के नीचे मिलता था। आधिया और लू लपट म नीमडा' ही सहारा था। आपने हृदय-स्पर्शी चित्र खाचा है। वधाई।

आपका
रामनिवास जाज

डा० जयचन्द्र शर्मा
संगीतकार

इण्डस्ट्रियल एरिया
बीकानेर ३३४ ००१

मानीता श्रीमान् कन्हैयालालजी सेठिया

सादर नम आपरा कागद ता ७ ६ ९५ रै साथै 'नीमड़ा' पोथी बुक पोस्ट सू मिली।

नीमड़ै रा हरी भरी छिया मे बैठ'र उण रै गुणा रा बखाण पढ र जी सोरो हुयगा। सहरा माय जलम लेवणिया टावर नीम रा गुण के जाण ? आपरी आ पोथी उण लोगा नै नीम र गुणा रा जाणकारी बरोबर दती रसी। कविता रै नाव सू गीत री धुन रै रूप सू अर नाच र भावा र भाव सू दोन्यू गुणा री लय इण बाला माय पढ र जी सोरा हुयगो।

आपरो
जयचन्द्र शर्मा

समाज सेवा खण्ड

श्री सेठियाजी की समाजसेवा का क्षेत्र बडा व्यापक है। सामाजिक सेवाओं के अन्तगत हरिजन सेवा का विशेष स्थान है। आपने सन १६४० ई मे अपने नगर सुजानगढ़ में हरिजन विद्यालय की स्थापना की। भगी मुक्ति आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और देहाती क्षेत्र मे हरिजनों को कुओं से पानी भरने का अधिकार दिलाया जिसके लिये उन्हें एक लम्बा सघष करना पडा।

नागरिक सेवाओं की दृष्टि से आपने चिकित्सा, सचार, परिवहन, विद्युत तथा रेल्वे के विकास हेतु सतत प्रयास किया। अनक उपलब्धिया प्राप्त की।

इस खड मे सकलित पत्र श्री सेठियाजी की सामाजिक सेवाओं पर प्रकाश डालते हैं।

Do No 126 S

Government House
Calcutta
The 26th October 1946

Dear Sir

I am desired to acknowledge your telegram dated the 24th October 1946

Yours faithfully
P B Sengupta
Assistant Secretary
Governor s Secretariat Bengal

Kanhaiyalal Sethia
The Secretary
East Bengal Relief Fund
Sujangarh

(नोआखाली के नर सहार के सदभ म भेजे गये तार की प्राप्ति की सूचना श्री सेठिया ने पीडिता को रिलिफ फण्ड की ओर से स्व श्यामाप्रसाद मुखर्जी एव स्व शरत चन्द्र बोस के माध्यम से आर्थिक सहयोग भिजवाया।)

खुशालचन्द डागा
मंत्री बीकानेर राज्य

डागा का चौक, बीकानेर
दिनांक २३ ५ १९४८

श्रीमान सेठियाजी

पूज्य बापू की स्मृति में गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि एकत्रित करने के लिए देशरत्न डा राजेन्द्रप्रसाद, प्रधान कांग्रेस अ भा कमेटी के पत्र के अनुसार बीकानेर में उपस्थित सम्मानित व्यक्तियों की एक बैठक श्री सुगनचन्दजी एवं चौ हरदत्तसिंहजी की संयोजकता में ता २१ २ ४८ को शाम के साढे सात बजे हुई और एक अस्थाई समिति इस के लिए चुनी गई जिसमें आपका नाम भी रखा गया है। आशा है आपका नाम इसमें लिए जाने में आपको कोई आपत्ति न होगी। आपकी ओर से कोई सूचना न आने पर आपकी स्वीकृति है ऐसा मान लिया जायगा।

नामों की सूचि २६ ३ ४८ तक भेजनी है इसलिए हमें यह तरीका बरतना पड रहा है आशा है उत्तर देते समय आप भी इस बात का ध्यान रखेंगे।

निवेदक
सुगनचन्द डागा

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सुजानगढ

Office of the Commissioner, Bikaner
D O No STN/5084/C

Bikaner
17th December 1949

Dear Shree Kanhaiya Lal

I am in receipt of your letter regarding relief measures to those persons who suffered due to fire in last March I am reaching Sujangarh on the afternoon of the 19th and I shall be grateful if you will please meet me there

Yours Sincerely
B Mehta

Shree Kanhaiya Lal
President District Relief Committee
Sujangarh

(श्री सेठिया की प्रेरणा से सुजानगढ तहसील के अग्नि पीडितो को राज्य सरकार की ओर से आर्थिक सहयोग एव घर बनाने के लिये टिन वगैरह दिये गये।)

चन्दनमल बैद एम ए एल एल बी
अध्यक्ष चूरू जिला कांग्रेस कमेटी
तथा
सदस्य, राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी

सरदारशहर
(राजस्थान)
दिनांक १० ३ १

प्रिय कन्हैयालालजी सेठिया

I G P जयपुर ने यह आश्वासन दिया था कि सुजानगढ चाडवास छ
तारानगर सरदारशहर तथा मामासर आदि जगहो म मौजूदा आतंक तथा र
सामना करने के लिए समुचित मात्रा म सशस्त्र पुलिस रख दी जावेगी । क
करके सूचित करें कि सुजानगढ म ऐसी कार्यवाही हुई कि नही ।

श्रीवमाजी व्यासजी तथा गोकुल भाई ने पत्रों तथा फोन द्वारा सूचित
है कि वे इस मामले म पूरा दबाव डाल रहे हैं तथा चुरू जिले की समुचित सु
के लिए पण्डितजी तथा आयगर जी स सम्पर्क स्थापित किया है ।

श्री राजबहादुरजी का पत्र इस बार म सबसे ज्यादा आशाजनक आय
उन्होंने राजस्थान से भेजे गए सारे समद के सदस्यों की एक सभा बुलाई त
पिडिहारा के सवाल को समद म एक तात्कालीन प्रश्न द्वारा उठाने का निश
किया है ।

आशा है आप सानन्द होगे ।

जयहिन्द

आपका अप
चन्दनमल ब

पुनश्च चाडवास छापर तथा बीदासर का भी इस तरह के पत्र भेज क
लगावें कि वहा पर सशस्त्र पुलिस का इन्तजाम हुआ कि नहीं ।

चन्दनमल ब

(पडिहारा डकैती काड के सन्दर्भ म)

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

995/PA/HMC Dated 23 10 1051

To
Shri Kanayalal
Sujangarh (Bikaner)

I here by acknowledge your letter dated 4 10-51 addressed to the Hon ble Minister for Law regarding Munsifs court

I am directed to inform you that the matter is receiving consideration

Private Secretary to
Hon ble Minister for Law

(सुजानगढ म मुंसिफ कोट की स्थापना कर दी गई है।)

सार्वजनिक निर्माण मन्त्री
कार्यालय,

जयपुर राजस्थान
दिनांक ६ मई १९५२

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका तारीख ३० अप्रैल १९५२ का पत्र मुझे बीकानेर से लौटने पर मिला। अग्नि पीड़ितों को सहायता देने का कार्य रेवेन्यू विभाग का है। ऐसा फंड कलक्टरों के पास रहता है। टीन उनको जरूर मिल सकता है और इसके लिए कोशिश कर दी जायगी।

आपका
भोलानाथ

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सुजानगढ़ (राजस्थान)

GOVT OF RAJASTHAN

जयपुर
राजस्थान
दिनांक २२ जून १९५३

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया,

सुजानगढ में मुंसिफ मजिस्ट्रेटी स्थापित करने की बाबत आपका १० जून का पत्र मिला। सुजानगढ में मुंसिफ मजिस्ट्रेट कोर्ट स्थापित किया जा सकता है या नहीं इस बारे में विस्तृत जानकारी व जांच की जा रही है। उचित समय पर निर्णय की सूचना आपको देदी जावेगी।

जयहिन्द।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

GOVT OF RAJASTHAN

जयपुर
राजस्थान
दिनांक २८-७-५३

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहब

सादर जयहिन्द!

श्री जीवानन्दजी के साथ आपका पत्र मिला। इसके पहले सुजानगढ मे मुन्सिफ मजिस्ट्रेट कायम होने के सिलसिले मे एक पत्र दिया था। मालूम नहीं वो आपको कैसे नही मिला।

बालमन्दिर का काम हो रहा है।

योग्य सेवा से सूचित करें। सब साथियो को जयहिन्द कहे।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

गणेशनाथ पुरोहित जाधपुर
ई आ नगरपालिका सुजानगढ दिनांक २२ १ १९५४

प्रिय भाई श्री मठियाजा,

सादर सप्रेम नमस्ते। आशा है आप स्वस्थ एव सकुशल होंगे। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। आपके आदेशानुसार मैं पत्र लेकर यहा पहुचा। सुप्रिन्टेन्गि इजानियर श्री वी डी माथुर स मिला। उन्हें पत्र दिया और सडक के बारे म बातचीत की। बातचीत का परिणाम अच्छा रहा। उन्होने सडक सुजानगढ नगर के बीच म होकर निकालने का पूर्ण आश्वासन दिया है और यह लगभग ६०% निश्चय हो चुका है कि सडक सुजानगढ के बीच म ही होकर निकाली जावेगी। कोठा के पास होकर स्टेशन बाहर सडक निकालने का जो प्रश्न था वह समाप्त कर दिया गया है और अब सडक गनोणी व किस रास्ते शहर म लाई जावे यह निर्णय करना ही रह गया है। आपके निस्वार्थ अथक परिश्रम के लिये धन्यवाद एव सफलता के लिए मेरा बधाई स्वीकृत कीजियेगा।

गैनाणी स सडक शहर म लाने के लिये मने दो सुझाव दिये है जिनम एक तो सीधाजी के मंदिर के पिछे होकर गाधी चौक म होकर पोस्ट आफिस के सामने वाली गली म होकर दक्षिणबाजार होकर चोपडा। और दूसरा रास्ता भराडियाजी क चौक म होकर दक्षिण बाजार होते हुए चोपडा। सिर्फ मुश्किल दोनों जगह गलियो की चौडाई कम होने एव मोड के लिए जगह कम होने की रहती है। इसके लिये हम थोडा सा प्रयत्न गलियो को चौडा करने का करना होगा। जहा तक होगा मौजूदा स्थिति म जिस प्रकार रास्ते है उसी म समावेश करने का प्रयत्न किया जावेगा।

इसके बारे म मने सुप्रिन्टेंडिंग इजानियर उसके असिस्टेन्ट एक्जक्यूटिव इजानियर एव इजिनियर इन्चार्ज लाडनू सुजानगढ़ रोड स बातचीत कर ली है। आवरसीयर सर्वे के लिए ता० २४ या २५ को सुजानगढ पहुचेगा। उस समय म उसको तमाम मौके बतला कर बाकी कार्यवाही कर दूगा। आप निश्चिन्त रहें।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि म आपके प्रयत्नो स मेरी अभिलाषा को पूरी होने क आभार स्मरण रहा हू।

गोपालकृष्ण शास्त्री
लोक सेवक
सुजानगढ

सुजानगढ
दिनांक २३ १ १९५४

अभिन्न बन्धु मठियाजी

सस्नेहालिंगन। पत्र मिला। पत्र के बारे में आदेशानुसार श्री गणेशनाथजी को जोधपुर भेज दिया गया है। आज रात को वापिस लौटेंगे। आने पर सडक सम्बन्धी सब समाचार फिर लिखूगा। गणेशनाथजी भी इस सम्बन्ध में प्रयत्नशील है।

भाई ओमप्रकाश भी कोशिश कर रहा है। १२ जगह पत्र डाले थे। उनके उत्तर आ रहे है। कलकत्ता में मार्टीन कम्पनी ने साफ उत्तर दे दिया है। उत्तर प्रदेश की सरकार का पत्र आया है। उसने लिखा है कि हमने हमारे इंजीनियर को लिख दिया है। आप उनसे सम्पर्क कायम कीजियेगा। दो चार जगह के उत्तर आ जाने पर ओम प्रकाशजी को रवाना कर दूगा।

आज कल श्रम पक्ष मनाया जा रहा है। कांग्रेस पूर्ण सहयोग दे रही है।

छापर का चुनाव कल हो गया है। नानकराम चाडक एव पूनमचन्द दूधेडिया चुने गये हैं।

सुजानगढ में भी उप चुनाव होंगे। डा एन बी वाला ने कलक्टर का सुझाव नामजूर कर दिया है। आगे चुनाव की स्थिति जैसी रहेगी फिर लिखूगा।

पत्रोत्तर देना। और कोई आदेश हो तो लिखना।

मिश्रीलालजी को जयहिन्द।

अभिन्न
गोपाल कृष्ण

गणेशनाथ पुरोहित
ई आ नगरपालिका
सुजानगढ

प्रिय भाई श्री मठियाजी

सप्रेम जयहिन्द

जोधपुर से मैं आज १० बजे लौटा हूं। वहां को पत्र जिसमें एस ई जोधपुर ने १२ ०००/ रु सड़क चौड़ी करने २७,०००/ रु पीच डालने व ३५००/ रु एक कलवट बनाने के लिये कुल ४२ ७००/ रु की मांग की है। आज चीफ इन्जीनियर से मिला तो उसने कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया बल्कि यह कहा कि इसकी मंजूरी के लिए वह आगे लिखेंगे जिसमें काफी समय लग जावेगा। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि चीफ इंजीनियर अपने पास से रकम दे सकता है। जोधपुर के इंजीनियर ने कहा है कि हम सिर्फ आर्डर मिल जायें कि सड़क को चौड़ी बना दिया जाय। हम बचत में से इस किस्म का एडजेस्टमेंट कर देंगे अथवा आगामी वर्ष पेमेन्ट कर देंगे।

यह काम आपके आने से हो हो सकता है वरना नहीं होगा। अतः आप कल शाम की गाड़ी से रवाना होकर यहां शनिवार की डाक में पहुंच जायें। मैं आपको स्टेशन पर मिलूंगा। मुझे तार द्वारा रवानगी की सूचना बेयर दिलवा में दें। मैं आपकी प्रतीक्षा में हूं।

आपका
गणेशनाथ पुरोहित

गोपालकृष्ण शास्त्री
ाक सेवक
सुजानगढ

सुजानगा
िनाक ११ १० १९७३

अभिन्न बधु मठियाजी,

गाढालिंगन। पत्र आज मिला। पत्र पहले वाले भी मिल गये थ। उन सबके लिये धन्यवाद। पत्र क्या मिलते हैं मानो नया जाग, नई स्फूर्ति नये उत्साह एव नये विचारो का एक शृखला भी बन जाता है। बधु! सच कह रहा हू। पत्र को बार-बार पढने की मन म स्फुरणा होती है। एतदथ बार बार पढता हू।

सन्त तुलसीदासजी के बारे म जो कुछ लिखा पढकर बडा सन्तोष मिला। पर दुख इस बात का है कि मठियाजी के विचारो का मूर्त रूप देने म हम असफल है। न अग्रवाल सम्मेलन इसे स्वीकार करता है और न वह बगीचा ही अगर के पर की तरह इधर स उधर होता है। जहा अड गया वही अडा पडा है।

स्टेडियम का अभी उदय नही आया है। जब तक नगर पालिका म स्थायित्व नही होगा तब तक कुछ नहा हो सकता। वृक्ष लगाने के बारे म निवेदन है कि यह काय चालू है। वृक्ष और गट्टे बनवाये जा रहे हैं। स्मशान रा ऐसी सुन्दर बन गई है देखने से आनन्द होता है। इस बारे म ज्यादा न लिखकर देखने का ही अनुरोध करूँगा।

अभिन्न
गोपालकृष्ण शास्त्री

गोपालकृष्ण शास्त्री
गौ सेवक

सुजानगढ़
दिनांक १२.७.१९८४

अभिन्न बन्धु सेठियाजी

शुभाशीर्वाद। पत्र अभी मिला। सालासर में अतिथि गृह के निर्माण के बारे में लिखा है कि सालासर में मन्दिर के चारों तरफ खूब निर्माण हो गया है। कोई जमीन खाली नहीं है। अब तो गांव से बाहर जो चौधरियों के खेत हैं वे बिकते हैं। कीमत भी बहुत ऊँची लेते हैं। मैं एक दिन गया था तब वहां पर संस्था की एक पार्टी उसी लिये बात कर रही थी। तब सारी बातें सुनी थीं। जमीन निःशुल्क मिलने की तो कोई सवाल ही नहीं है। न पंचायती के पास कोई जमीन है। जमीन खरीदनी पड़ेगी लेकिन मन्दिर से काफी दूर मिल सकता है। सालासर अब बहुत महंगा हो गया है।

मैं चौहत्तर गर्मियां पार कर चुका हूँ। मेरे दोनों गोडों में बहुत दर्द है। चिकनाहट सूख गई है। घुटनों ने सारा उत्साह ठंडा कर दिया है। उठते समय धरती पर हाथ रखकर उठना पड़ता है। अब आप समझलो कि आपके आदेशानुसार कार्य कर सकता हूं क्या? इशारा ही बहुत है। आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सुजानगढ़ तहसील विकास समिति ने दो साल में मन्दिरों का जीर्णोद्धार का काम हाथ में लिया था। अभी तक कई मंदिरों का जीर्णोद्धार हो गया है। कल से वर्षा की शुरुआत हुई है। देखें ज्यादा कब होती है।

पत्रोत्तर दें। योग्य कार्य लिखें।

अभिन्न
गोपालकृष्ण शास्त्री

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

No 2384 Dated 17 3 1955

To Shri Kanahaiya Lal Sethia
Sujangarh

Sub **Collection of Fund for extension repairs & renovation of Kothi at Sujangarh**

Ref **Commissioner's Bikaner letter No 2222/2497, d/ 15 9 53, addressed to the Secretary Med & Health Deptt**

During my recent tour of Sujangarh dated 6 3 1955 I had been to your house to talk with you on the above subject as I was informed by the Medical Officer Sujangarh that it were you who had taken the trouble of getting promises from certain parties for the above fund It will be very helpful if you kindly let me know whether there are any concrete proposals regarding this and if so to kindly get these amounts collected and deposited with the D M & H S Jaipur as early as possible so that the *repair work of the Old Kothi of H H may be got started*

Distt Medical & Health Officer Ratangarh
(Churu District)

Copy forwarded to the Director of Med & Health Services Rajasthan Jaipur, for information

Distt Medical & Health Officer, Ratangarh
(Churu District)

(महाराजा गगासिहजी की कोठा को सावजनिक कार्यों के लिये उपयुक्त बनाने के सदभ म)

जुगलकिशोर बिडला
उद्योगपनि ममाजमवक

बिन्ना हाउग
न्यू न्लिी
न्निाक ४ १० १९५५

प्रिय श्री क न्हैयालालजा

आपका पत्र मिला। धन्यवान्। सुजानगन्ट म क्लाड निमाणकाय क बारे म लिखा। मेरा पूरी महानुभूति है पर इम ममय कुछ करने का विचार नहीं है।

चूरु म घटाधर करवा रहे है इमका एक अलग कारण है। चूरु हमार मामरा का गाव है। न्मी तरह मरदारशहर चि कृष्णकुमार (भाई घनश्याम नाम का पुत्र) का मामरा है।

आशा है आप क्षमा करगे।

आपका
जुगलकिशोर

श्री क न्हैयालाल मठिया
रतन निवाम
सुजानगढ

(सुजानगढ म मुख्य बाजार क चौराहे पर बगडिया परिवार द्वारा घटाधर बना दिया गया है)

माणिक्यलाल वर्मा
राजनेता
राजस्थान

उदयपुर
दिनांक ३ ८ १९५७

प्रिय सेठियाजी,

१२ परिवार गाडिया लुहारों को जमीन दिलाने तथा उनके पुनर्वास में दिलचस्पी लेने के लिये धन्यवाद।

आप जब कभी जयपुर आवें श्री हरिभाऊजी तथा भोगी भाई से मिलें और उन से पूरा काम करवालें। आज कल वे बंदोबस्त मकाम में कोई डायरेक्टर नहीं है वह अनाथावस्था में है। आवश्यकता पड़े तो मगर यह पत्र भी बता दें। जब मजूरी हो गई तो यह गंगा कौन से शिव की जटा में उलझ गई ? वहीं पता लगेगा। इस के बावजूद भी सफलता न मिले तो फिर एक पत्र आप मुख्यमंत्री जी को और उसकी प्रति मुझे भेज दें। फिर से उन गरीबों की सम्हाल करते रहें।

आपका
माणिक्यलाल वर्मा

(गाडिया लुहारों के लिए भूमि आवंटित कर दी गई)

कुम्भाराम आर्य
राजनेता
राजस्थान

जयपुर
१४ ८ ५७

मान्य सेठियाजी

अस्पताल का काम हो गया ऐसा सूचना मिली। आप सब का समाचार करें-

मिलने का मन करता है कभी मिल जावें-

सबको जयहिन्द !

आपका आपना
कुम्भाराम आर्य

डायरेक्टर,
राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर

सेवा म
श्री कन्हैयालाल सठिया
रतन निवास
सुजानगढ (राजस्थान)

क्रमाक २०६१ — दिनाक २१ ७ १६६१

प्रिय महोदय

राजस्थान साहित्य अकादमी क अध्यक्ष श्री जनार्दनरायजी नागर को लिखा आपका पत्र पहुचा। श्री अदभुत शास्त्री को यहा स कभी का एक तार दिया जा चुका है जिसम उनको कहा गया है कि मडिकल एड क लिये वे श्री शिक्षा-सचिव राजस्थान सरकार स प्राथना करें। कृपया आप भी उनको इस मामले म जल्दी करने क लिये कहिये।

भवदीय
मेनारिया
डायरेक्टर
राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर

उप मत्री उद्योग
राजस्थान

क्रमाक १६६२/डि/१४२/६२

जयपुर
राजस्थान

दिनाक २६ दिसम्बर १६६२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

आपका पत्र दिनाक २५ दिसम्बर १६६२ प्राप्त हुआ। जिलाधीश चुरु को चुरू जिले के कोटे म से सुजानगढ की श्मशान भूमि के लिए २० टीनें देने के लिए लिख दिया गया है।

आशा है आप स्वस्थ होगे।

आपका अपना
चन्दनमल वैद

CHIEF MINISTER
Rajasthan

Jaipur Rajasthan

Dated 8th February 1962

My dear Sethiaji

I am in receipt of your letter dated the 2nd February 1962 *regarding the construction of new building for hospital at* Sujangarh I am asking the Medical Secretary to look into the matter and take necessary action as early as possible

Yours sincerely
Mohanlal Sukhadia

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas Sujangarh

(बगड़िया परिवार द्वारा अस्पताल निर्मित हुआ)

Minister
Medical Health Services LSG
Rajasthan

Jaipur Rajasthan

Dated June 27 1964

My dear Sethia Sahib

Many thanks for your letter and your kind offer The question of opening an eye hospital at Sujangarh is under examination and as soon as I am in possession of full facts I will send you a complete reply However let me assure you from my side that all efforts will be made to bring this hospital into being

With kind regards

Yours sincerely
Barkatullah Khan

Shri Kanahiyalal Sethia
Sujangarh

श्री कल्याण आरोग्य सदन
(टी० बी० अस्पताल)
पत्रांक ३८/६४/५२४१

पो० आरोग्य सदन
सीकर (राजस्थान)
दिनांक ९ दिसम्बर, १९६४

प्रिय भाई सेठियाजी

आपके स्नेहभरे पत्र मिले। मुझे लगता है कि आपका यदि सक्रिय योग मिले तो इस काम से लोगों को बहुत बडी राहत पहुचाई जा सकती है। शिक्षा का भी एक बडा काम है पर स्वास्थ्य की भी एक बडी समस्या है। इलाज इसका एक पहलू है। निरोधात्मक और शिक्षणात्मक काम बुनियादी बाजू है। मैं चाहता हू कि पहाड पर सडक बन जाने के बाद आप एक बार १/२ दिन का समय निकाल कर आवें और सोचें कि आप इसमें कितना क्या योग दे सकते हैं।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। आपके भाई साहब को प्रणाम। मैं आजकल यहा हूँ।

आपका
बदरीनारायण सोडाणी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ

PEOPLE'S WELFARE SOCIETY

उदयपुर राड
सीकार ३३२ ००१
२० १२ ७५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका १६ १२ ७५ का पत्र मिला। समाचार लिखे सा जाने। एक रजाई का कीमत करीब २० रुपया पडती है। रजाई हम पूरी लम्बी चौडी चलाऊ कपडे की देते हैं ताकि कम से कम ४ ५ साल चल सके। रजाइया हम तैयार करवा कर लागा को उनके घरा पर ही पहुँचाते हैं। पहुचाने का खर्चा करीब दो रुपये और पड जाता है। इमस बूढे अपाहिज लोगा का आने जाने म तकलीफ नही उठानी पडती। आपका सामचार आने पर हम रजाइया तयार करवा देंगे।

जिन जिन लागा को सिलाई की मशीनें दी जानी ह उनकी सूची इसके साथ भिजवा रहा हूँ जो आप देख लेवें।

पेंशन के बारे म आपने लिखा सा अब स्थिति ऐसी है कि वजन की इसम कोई दिक्कत नही आती है। राजकीय विधि विधान का काम वास्तव म बडा कठिन है पर आदमी लगातार पीछे लगा रहे तो काम हा जाता है। सुजानगढ तहसील म पेंशन लायक केसा की कुल सख्या १४५ है जिनके फाम भरवा कर कायवाही चालू कर रहे हैं। देर अबेर यह काम हा जाना चाहिये ऐसी उम्मीद है। जब तक काम नहा हाता है तब तक उसके पीछे लगा रहना पडता है।

आशा है आप स्वस्थ एव प्रसन्न हागे।

आपका,
बन्शीनारायण सोढाणी

सलग्न सूची
श्री कन्हैयालालजी सेठिया
कलकत्ता

PEOPLE S WELFARE SOCIETY

उदयपुर रोड,
सीकर ३३२००१

१८-४ १९८०

प्रिय भाई सेठियाजी,

सादर नमस्कार ! डूंगरा के पास जो कुआ है पहले उसके पानी का हिसाब देखेंगे। कितना क्या पानी मिलता है फिर उस हिसाब से आगे कोई योजना बनाई जावे तो अच्छा रहेगा।

मदर टेरेसा से मैं मिला था। उसने आना कबूल कर लिया है। मुझे लगता है यहां असहाय अपंग कुष्ट रोगी विकलांग अनाथ त्यक्त बच्चा आदि के कामों को लेवें तो कैसा क्या रहेगा। उसका नाम भागीरथजी के नाम पर रख दिया जावे ऐसा मेरा सुझाव है। इस बारे में आप विचार कर लेवें।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका
बदरीनारायण सोढाणी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
कलकत्ता

PEOPLE'S WELFARE SOCIETY

उदयपुर राड
सीकर-३३२००१

२२ १२ १९८४

आदरणीय श्रीयुत सठियाजी,

सादर नमस्कार। मंदिरो के जीर्णोद्धार के लिये आपका सुझाव सामयिक एव बहुत ही सुदर है। वास्तव म इस समिति द्वारा मदिर के जीर्णोद्धार को लेकर दाताओ स बराबर पत्र व्यवहार जारी ह। दिल्ली के श्रीयुत जयदयालजी डालमिया के सहयोग स चार पाच मदिरो का जीर्णोदधार करवाया भी है। उनकी पुत्र वधू को इसी काम के लिये एक बार यहा बुलाया भी तथा उनके कहने क अनुसार उन्हें कुछ मदिरो की योजना भेजी हुई भी है पर एक न एक कारण स उनकी स्वीकृति नही मिल पा रही है मैं प्रयत्नशील बराबर हू। इसी प्रकार श्रीयुत राधाकिशनजी कानोडिया एव कुछ अन्य दाताओ से भी पत्र व्यवहार चल रहा है पर सफलता नही मिल पा रहा है।

यह तो आपके ध्यान म है ही कि इस समिति का मुख्य कार्यक्षेत्र सीकर, झुझुनू, चूरू और नागौर जिले है, यद्यपि हम कुछ अन्य जिलो मे भी आवश्यकता नुसार काम करवा रहे हैं पर इन चार जिलो म तो बराबर काम करवाते रहे हैं। आपने चारो जिलो म मदिरो के जीर्णोद्धार हेतु समितियाँ बनवाने का सुझाव दिया जो बहुत ही अच्छा है। आपने जिन लोगो से सम्पर्क करने हेतु लिखा उनम से श्री भागीरथ प्रसादजी भर्दा व श्री कन्हैयालालजी सिखवाल से हम हरेक काम म बराबर सम्पर्क म रहते है। अब अन्य लोगो से भी सम्पर्क कर आपके सुझाव के अनुसार समितिया बना कर काम को आगे बढाने का प्रयास करूगा। आपका सहयोग मिलेगा ही और उसी के बलबूते पर आशा है यह एक अत्यन्त आवश्यक काम लोगो का ध्यान आकर्षित करेगा तथा हमारी पुरानी सस्कृति के विकास हेतु लोगो का भरपूर सहयोग मिलेगा। हमारे प्रतिनिधि श्री सीतारामजी शर्मा सम्भवत जल्दी ही कलकत्ता आवेंगे जहा वे आपसे मिल कर आगे के लिये कार्य करवाने हेतु रूपरेखा तयार कर लेंगे।

आशा है आप सानन्द है। कभी इधर पधारने का कार्यक्रम हो तो कृपया सेवा का अवसर देवें।

रजाई वितरण का काम प्रगति पर है। करीब ३२०० रजाइयों का वितरण सीकर झुंझुनू चूरू व नागौर जिलों में हो चुका है। अलवर व कोटा जिलों में काम अब चालू कर रहे हैं। आशा है हमारे लक्ष्य के अनुरूप ५००० रजाइयों के वितरण का काम पार पड़ जावेगा जो काम पूरा होने पर आपको रिपोर्ट भिजवा दूंगा।

सादर,

आपका,
मगनी राम मादा

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
कलकत्ता

MARWAR TENT FACTORY

मोती चौक
जोधपुर
११ ९-१९६५

श्रीमान कन्हैयालालजी साहब

सादर जय जिनेन्द्र। आपका १० ८ ६५ का लिखा हुआ पत्र मिला। बहुत ही प्रसन्नता हुई। आपने अपने इस पत्र में जो विचार व्यक्त किये है उसके लिए हम बहुत ही आभारी हैं। यहाँ पर हवाई आक्रमण की वजह से कुछ आतंक है और सरकार ने सुरक्षा की दृष्टि से रात में अंधेरा और साय ७ बजे से सुबह ६ बजे तक घरों में रहने का आदेश दिया है। फिर भी जनता में शांति है। देश के प्रति जागरूकता है। हर व्यक्ति विशेष कर विद्यार्थियों में जोश है—देश सेवा के लिए तयार है। कोई भगदड नहीं है। शांति बनाये रखने के लिए सरकार ने जो आदेश निकाला है वह जनता पूरी तरह से मानती है। कहीं कुछ छुटपुट गोला पडने से थोडी बहुत जान अथवा माल की हानि हुई है। उससे जनता में कोई व्यग्रता नहीं है। अगर फिर भी कभी ऐसा काम पडे और यहाँ से दूर जाने का काम पडे तो अवश्य ही आपके निमंत्रण का उपयोग करेंगे। यहा पर शहर में महा सतियाँजी महाराज गोराजी ठाणा पाच व सरदारपुरा में मुनि श्री सपतरामजी ठाणा २ से विराज रहे हैं। सुखसाता है। गोराजी बहुत ही निर्भीक हैं। मुनि श्री सपतरामजी के पैर में प्लास्टर है। काफी ठीक है। आपके यहा विराजित चारित्र आत्माओं को हमारी वन्दना विधि पूर्वक अरज करावें।

आपका
सिंघवी केवलराज दौलतराज

और आपणे मोराई परिवार ने हमारा प्रणाम तथा आसीस बचावसी घणा मान स्यू श्रीमान श्रीचंदजी साह वठ हुवे तो म्हारी जयजिनेन्द्र बचावसी घणी मान सू आपरो अतो मोईतपणो है।

प्रेम तथा आपरा सद् भावना वासते मैं आपरा बोहत बोहत आभारी हूँ जरूरत पडी तो जरूर हाजिर हुवांगा बाकी हाल तो इसी कोई बात नहीं है।

(१९६५ में जोधपुर पर पाकिस्तान के हवाई आक्रमण के सन्दर्भ में लिखे गये पत्र का प्रत्युत्तर)

डा० गोपालसिंह राठौड

निदेशक
पशु पालन विभाग
राजस्थान
क्र० सा० पत्रांक एफ० बी० १०(२) विकास (६६) ४६१६

जयपुर
दिनांक २० जून १९६६

प्रिय श्री मठियाजी

आपके अन्तर्देशीय पत्र दिनांक २८ ५ ६६ जो माननीय श्री नाथूरामजी मिर्धा को प्रेषित किया गया था के प्राप्त होने पर खेद के साथ लिखना है कि वर्तमान में विभाग के पास उक्त कार्य निमित्त मथा नग कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र आदि खोलने हेतु प्रावधान नहीं हो सकने से आप द्वारा प्रेषित विचार पर इस वर्ष कोई कार्यवाही नहीं हो सकती है।

आपका
गोपालसिंह राठौड

श्री कन्हैयालाल मठिया
रतन निवास
सुजानगढ

(सुजानगढ के पशु चिकित्सालय में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र की व्यवस्था कर दी गई है)

रामेश्वर टांटिया
भूतपूर्व सामद, उद्यागपति

बम्बई अस्पताल
दिनाक ८-१-१६७४

प्रिय भाई सेठियाजी

पत्र मिला। क्या लिखू मन बहुत ही खराब हो रहा है। परसा मैं—आपके दादाजी रूपचन्दजी की बात सुना रहा था। शायद सन्ता की सभा म उन्ह बीकानेर के तिलोकचन्दजी दूगड के पिता का देहान्त का समाचार मिला। वे चुपचाप बठे रहे। सभा उठने के बाद शान्ति से आचार्य को जाकर कहा परन्तु वसे महापुरुष ता आज दुर्लभ है।

आपका
रामेश्वर टाटिया

राजस्थान सगीत नाटक अकादमी
(राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित)

फान ७३०
तार सगीतराज
पावटा जोधपुर

सख्या ६१४

दिनाक १३ जुलाई, १६७१

श्रीमान कन्हैयालालजी,

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय के नाम आपका दिनाक ८ ७ ७१ का पत्र हुआ। श्री माधुरी प्रमादजी को आर्थिक सहायता देने बाबत म अकादमी द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

भवदीय,
नरपत सिंह चम्पावत
सर्वेक्षण अधिकारी

श्री कन्हैयालाल सेठिया,
रतन निवास
सुजानगढ

रामेश्वर टाँटिया
नगर प्रमुख

कानपुर

दिनांक २३ ८ १९६६

भाई श्री सेठियाजी

कानपुर नगर महापालिका का काम पिछले डेढ़ माह से संभाल रहा हूँ। शहर इतना बड़ा हो गया है कि समुचित व्यवस्था होनी कठिन हो रहा है। चारों ओर मलबे और मल के ढेर पड़े हुए हैं। पिछले १० वर्षों में जनसंख्या दुगुनी हो गई है जब कि उपलब्धी कुछ भी नहीं बढ़ पाया है। देहातों से लोग बेकार और बेजार होकर शहर में आ जाते हैं और यहां का नारकीय जीवन उन्हें और भी कष्ट प्रद हो जाता है। यह सब देखकर मुझे आपकी कविता शहर उग आयेगा याद आ जाती है। आपने जो भाव उस सुन्दर कविता में व्यक्त किये हैं वह जब मैं इस शहर का दौरा करता हूँ तो सामने आ जाते हैं। चार दिन के लिये मैं कलकत्ता जा रहा हूँ बस अब मुझे कानपुर में ही रहना पड़ेगा।

आशा है कि आप प्रसन्न होंगे।

आपका,
रामेश्वर टाँटिया

श्रीयुत कन्हैयालालजी सेठिया
सुजानगढ़
राजस्थान

रामेश्वर टाँटिया
भूतपूर्व सासद उद्योगपति

बम्बई अस्पताल
दिनाक ८ १ १९७४

प्रिय भाई सेठियाजी,

पत्र मिला। क्या लिखू मन बहुत ही खराब हो रहा है। परसो मैं—आपके दादाजी रूपचन्दजी की बात सुना रहा था। शायद सन्ता की सभा म उन्हें बीदासर के त्रिलोकचन्दजी दूगड के पिता का देहान्त का समाचार मिला। वे चुपचाप बठे रहे। सभा उठने के बाद शान्ति म आचार्य को जाकर कहा परन्तु वैसे महापुरुष तो आज दुलभ हैं।

आपका
रामेश्वर टाटिया

राजस्थान सगीत नाटक अकादमी
(राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित)

फोन ७३०
तार सगीतराज'
पावटा जोधपुर

सख्या ६१४

दिनाक १३ जुलाई, १९७१

श्रीमान कन्हैयालालजी

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय के नाम आपका दिनाक ८ ७ ७१ का पत्र हुआ। श्री माधुरा प्रसादजी को आर्थिक सहायता देने बाबत म अकादमी द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

भवदीय,
नरपत सिंह चम्पावत
सर्वेक्षण अधिकारी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ

मोहन छागाणी
स्वास्थ्य मन्त्री राजस्थान

जयपुर
राजस्थान

अ० शा० पत्र क्र० स्वा म० ५/७४/४२

जनवरी ६ १९७३

प्रिय श्री सठियाजी

आपका दिनांक १ १ ७४ का पत्र नववर्ष की शुभकामनाओं सहित प्राप्त हुआ धन्यवाद।

ग्राम चाडवास में एक हेल्थ सेन्टर खोलने के सम्बन्ध में अग्रिम कार्यवाही किये जाने हेतु मैं निदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग को आपका मूल पत्र भिजवा रहा हूं।

भवदीय
मोहन छागाणी

श्री कन्हैयालालजी सठिया
सठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन कलकत्ता १

(ग्राम चाडवास में हेल्थ सेन्टर खोल दिया गया है)

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक, उद्योगपति

मदनगंज किशनगढ़
दिनांक ९-२ १९७४

भाई श्री कन्हैयालालजी

आपका ४ तारीख का पत्र मिला। धन्यवाद।

मैं हरिदत्तजी जोशी से ११ या १२ फरवरी को मिलने वाला हूं तब जल बोर्ड तथा राजस्थान भवन दोनों योजनाओं के बारे में भी बात करूंगा।

के० सी० पंत के बारे में आपने लिखा सो ठीक। मैं उन्हें आज एक पत्र लिख रहा हूँ। मेरा विचार है कि वापस कलकत्ते जाते समय दिल्ली में उनसे एक बार मिल भी लूं लेकिन मुझे बताया गया है कि वे होम मिनिस्ट्री में नहीं है किन्तु सूचना एवं प्रसारण में है। पता नहीं उनका डिपार्टमेन्ट हिन्दी भाषा के लिए खर्च करता है या नहीं लेकिन जो हो उनका उत्तर आने से पता लगेगा।

राजस्थान में ठण्ड खूब है। मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है। आप निश्चिन्त रहें।

आपका,
भागीरथ कानोडिया

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
६ आशुतोष मुखर्जी रोड
कलकत्ता २०

भागीरथ कानोडिया
समाज सवक उद्योगपति
कलकत्ता

मन्नगज किशनगढ

दिनाक २२ ८ १९७४

भाई श्री कन्हैयालालजी,

आपका ४ तारीख का पत्र मुझे यहा मिला क्योकि म ६ तारीख सुबह ही कलकत्ता छोड चुका था। यहा आने के बाद भी इधर उधर घूमता रहा अत उत्तर इतनी देरी म जा रहा है।

आपका विचार सितम्बर के प्रथम सप्ताह म कलकत्ता जाने का लिखा सो ठीक। म भी तब तक वहा पहुच जाऊँगा।

मैं सीकर गया तो था किन्तु सुजानगढ जाना नहा हुआ।

सीतारामजी क अभिनन्दन ग्रथ की पाच प्रतिया आपको भेजने के लिए मने आज भवरमलजी को लिख दिया है। मने सम्भवत उन्हें कलकत्ता म कह भी दिया था किन्तु पक्की याद नही है अत फिर स लिखना ठीक समझा।

प्रस्तावित राजस्थान भवन के सम्बन्ध म हरिदेवजी कुछ कर सकें ऐसा मुझे नही लगता क्योकि सरकार म रुपया की कमी है। लक्ष्मीनिवासजी भी विशेष कुछ करें ऐसा मुझे नहा लगता। लेकिन आपके मनकी एक भावना है एक चाह है उसके लिये प्रयत्न करना तो स्वाभाविक है।

जमनालालजी की जीवनी का राजस्थानी अनुवाद करना मेरे लिए सम्भव नहा होगा अत उसका व्यवस्था आप ही करें।

पत्रोत्तर किशनगढ क पते पर द।

आपका
भागीरथ कानोडिया

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ

भागीरथ कानोडिया मदनगंज

ममाज सवक, उद्योगपति किशनगढ

कलकत्ता

दिनाक ३० ६ १९७७

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

आपका पत्र २७ तारीख का मिला।

मेरा विचार अभी कुछ दिन राजस्थान ही रहने का है।

आपने इलेक्ट्रिक क्रेमेटोरियम की बात लिखी सो बिल्कुल ठीक हैं। एक अच्छे से स्थान की बहुत ही आवश्यकता हैं। यह काम करने जैसा है। एक आदमी के पैसा से नहीं होकर सार्वजनिक चंद से होना चाहिये। इसमें मुख्य बात तो कारपोरेशन से करने की है। वे लोग कोई स्थान बता सकें तो चंदा तो मेरी समझ मे हो सकता है। शुल्क क्या लेना-क्या नहीं लेना यह बात भी कारपोरेशन वाले ही तय करें। अपन तो उनको स्थान बनाकर दे दें तथा मशीन मगा दें। जमीन वे लोग दे दें।

कलकत्ते आऊगा तब इस बार मैं बात करूँगा किंतु मेरे आने मे तो काफी देरी माननी चाहिये।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक-ठाक चल रहा होगा।

आपका

भागीरथ कानोडिया

श्री कन्हैयालालजी सेठिया

सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी

३, मैंगो लेन

कलकत्ता ७००००१

श्रीचन्द पारीक
मंत्री
नगर कांग्रेस कमेटी
क्रमांक ६७८

सुजानगढ़ (राजस्थान)
दिनांक ३० ७ ७५

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
पता–सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मगो लेन
कलकत्ता १

सम्माननीय

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ–आपने जो मार्गदर्शन किया है वैसे ही कार्य को क्रियान्वित करने का प्रयत्न शीघ्र प्रारंभ करने का विचार है।

वर्तमान में गनाणा का पानी पंपों द्वारा निकलवाया जा रहा है नाथालाव से पानी गोगाला बीड में ४५०० फुट दूरी तक कच्चे नाले की खुदवाई करवा रहे है दो तीन दिन में कार्य पूर्ण हो जावेगा।

स्थाई समाधान के लिये ई ओ से आज सम्पर्क करूंगा–प्रगति की रिपोर्ट जो भी होगी शीघ्र भिजवाऊंगा।

कलकत्ता में केवल आपसे ही इस समस्या पर संपर्क किया गया है अतः सम्पूर्ण स्थिति को हम संभाल सकें इसमें आप बराबर हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

विनीत
श्रीचन्द पारीक
मंत्री

श्रीचन्द पारीक
मत्री,
नगर काग्रेम कमेटी
कमाक ७५५

सुजानगढ (राजस्थान)

दिनाक ३० ८ ७५

श्री कन्हैयालालजी सठिया
पता–सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मगा लेन, कलकत्ता १

मा यवर,

आप द्वारा अनिवष्टि स उत्पन्न समस्या की सहायनाथ नागरिक परिषद द्वारा जा राशि भिजवाई गई थी जिसम गरीबा का काफी राहत मिली जिसक लिए आपको हार्दिक धन्यवाद।

वतमान म अनिवष्टि क कारण मलेरिया मच्छरा का शहर म भारी प्रकाप है और वषा लगातार ७ ८ राज स जारी है। राज्य सरकार द्वारा सुजानगढ शहर का मलेरिया पीडित क्षेत्र घोषित किया जा चुका है। आपस भी निवेदन है कि मलेरिया की रोकथाम क लिए विभिन्न प्रकार के कुनैन अतिशीघ्र अधिक स अधिक मात्रा म गरीबा की सहायताथ भिजवाने की कृपा करें।

भवदीय,
श्रीचन्द पारीक
मत्री

(श्री सठिया की प्रेरणा स कलकत्ता स पर्याप्त मात्रा म आवश्यक औषधिया भजी गई)

नेमीचन्द फाफाणी
उद्योगपति

कलकत्ता ६४२१२४

दिनांक ६-१० ७१

आदरणीय भाई साहेब श्री कन्हैयालालजी सठिया स लि नेमीचन्द कावाणी का सादर प्रणाम बञ्चना। कलकत्ते म गत सप्ताह आपके साथ कुछ समय रह सका—बातचीत के दौरान बहुत कुछ पाया बडी प्रसन्नता हुई।

आबू क्षेत्र म चाय उत्पादन का सभावनाओ की जाँच क लिए कुछेक सूचनाए जरूरी हैं। अग्रेजी म टाइप की हुई तीन प्रतियाँ भेज रहा हू। कपया एक प्रति आप राजस्थान सरकार को भेजकर इन मूल प्रश्ना का उत्तर मगवा भेजें। आबू में meteorological station है अत ये सभी सूचनाए सुलभ होनी चाहिए। इन सूचनाओ के आधार पर बहुत कुछ निणय लिया जा सकता है। सूचना मिल जाने के बाद थोडी भी सभावना हुई ता मैं स्वय उस प्रदेश का दौरा करने का इच्छुक रहूगा।

चि सुबोध कुमार का प्रार्थनापत्र मिल गया है विचाराधीन कागजा म शामिल कर लिया है—अवश्य कोशिश करूगा।

मौसम आने पर तीन चार किलो छोटी अच्छी इलायची की आपकी फरमाइश नोट कर ली है। VPP से भेजने का आदेश भी underline कर लिया है। आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

घर म हमारा नमस्कार कहें। चि जय विनय स आशीष।

आपका
नेमीचन्द कावाणी

त्रिलोक चन्द जैन
उद्योग एवं सहकारिता मंत्री
राजस्थान

क्रमांक ३०३/उ मंत्री/७८

जयपुर
राजस्थान

दिनांक १० जनवरी, १९७८

प्रिय श्री सेठियाजी,

आपका पत्र मिला। जालूर क्षेत्र में चाय की खेती की संभावनाओं के बारे में आपने जो पत्र लिखा है उसके लिये मैं अत्यन्त आभारी हूँ। मैं इस संबंध में तुरन्त ही आपने जो प्रश्नावली भेजी है उसकी जांच करवाकर आपको भिजवाऊंगा।

राजस्थान में छोटे छोटे उद्योग लग सकें इसके लिये आप कलकत्ता में तकनीकी विशेषज्ञों से सम्पर्क कर सकें तो राजस्थान के उद्योग के विकास में बहुत सहायता मिलेगी।

आप राजस्थान पधारें तो दर्शन देने की कृपा कीजिये।

भवदीय
त्रिलोक चन्द जैन

श्री कन्हैयालालजी सेठिया,
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी,
३, मैंगो लेन कलकत्ता १

DIRECTORATE OF AGRICULTURE
RAJASTHAN JAIPUR

No F31 (54) Fruits/996 98 Dated the 14 3 1978

To

Sri Kanhaiyalal Sethia
3 Mangoe Lane Calcutta 1

Sub **Possibilities of tea cultivation in Abu Area**

Ref **Your letter No Nil dated 11 10 77 addressed to Hon'ble Chief Minister of Rajasthan**

Dear Sir

Itemwise information available with the department is as under

(1) It is more than 750 metres above M S L

(2) In general the depth of soils is shallow on the tops and moderate in valley and plain area The colour varies from yellowish red to red or red and black with medium texture

(3) The P H is generally neutral

(4) Organic metter content is medium to high

(5) The area is covered by sub tropical forest with Themedapennisilium type grass More information can be made available from the forest Department

(6) to (12) Information may be obtained from Meterological Department

(13) The slope varies from 10 to 20% and at places it may be more

(14) The contour map of the area may be obtained from the Surveyor general of India Dehradun

Since the detailed soil survey of Abu Panchayat Samiti Distt Sirohi has not been done the required information in detail is not possible to be furnished The above mentioned information is based on the broad reconnaissance soil survey

Yours faithfully

Director of Agriculture

Copy forwarded for information to

1 The Dy Director of Removal of Public Grievances Office of the Chief Minister of Rajasthan with ref to his No CM/RG/ 4454(4) dated 1 12 77

2 Shri N C Kankani Group Manager Sholayar Estate P O Sholayar (Coimbatore)

Director of Agriculture

नरसिंह दास बांगड
अध्यक्ष मारवाडी रिलीफ सोसाईटी,
कलकत्ता
उद्योगपति

21 Strand Road
Calcutta 700 001

Dated June 21 1978

Shri Kanhaiyalalji Sethia
3 Mangoe Lane
Calcutta

Dear Shri Sethiaji

Received your letter dated 15th June

Negotiations between the workers and the Society have started If they fail the Hon ble Minister for Health will arbitrate So the question of any mediation does not arise

With regards

Yours sincerely

R N Bangur

(मारवाडी रिलीफ सोसाईटी, कलकत्ता में चल रहे अशांत वातावरण के सन्दर्भ में लिखा गया पत्र।)

राधा भालोटिया
हनुमानप्रसाद पोद्दार स्मारक समिति

फोन ४२७८
पो गीतावाटिका
गोरखपुर २७३ ००६
दिनांक २४-४ १९८१

आदरणीय श्रीसेठियाजी

सादर प्रणाम।

आप जैसे चिरंतन सत्य के साधक प्रतिभा के धनी एवं निष्काम समाजसेवी देश के गौरव हैं। पूज्य श्रीभाईजी के महान आदर्शों में आपकी सच्ची आस्था है। अतएव मैं व्यवस्थापिका परिषद की ओर से आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप संरक्षक सदस्य (PATRON) के रूप में समिति का मार्ग दर्शन करें।

कृपया अपनी स्वीकृति संलग्न पत्र पर यथाशीघ्र प्रेषित करें।

भवदीय
राधा भालोटिया
कोषाध्यक्ष

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता १

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी (आई)
बी ६१३ सवाई जयसिंह हाई वे बनीपाक, जयपुर

नवलकिशोर शर्मा
अध्यक्ष

फोन ७६१६४ कार्यालय
७७०२३ निवास
(अध्यक्ष)

क्रमांक

दिनांक १६ ४ १९८५

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका पत्र मिला तदर्थ बहुत-बहुत धन्यवाद। राजस्थान मे पैट्रोलियम तथा गैस की खोज के काम को अब तेज करने का फैसला किया गया है और सभी उन स्थानो पर चाहे वह चूरू जिला हो या जैसलमेर या बीकानेर जहा भी जिओलाजिकल सर्वे के अनुसार कुछ सम्भावनाए हैं, इस काम को तेज करने का फैसला अगली पच वर्षीय योजना मे कर लिया गया है। मै समझता हूँ कि आने वाले समय मे इस काम मे तेजी लाई जाएगी।

शुभ कामनाओ सहित

भवदीय
नवल किशोर शर्मा

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

चरण सिंह
अध्यक्ष, लोक दल

फोन ३८८९२५
३८३७५९
लोक दल
केन्द्रीय कार्यालय
१५ विण्डसर प्लेस
नई दिल्ली ११० ००१

क्रम सं० ११५८५/८५ दिनांक १-११ १९८५

प्रिय सेठियाजी

आपका दिनांक १८/१०/१९८५ का पत्र मिला। देश के इस ज्वलन्त प्रश्न पर आप मेरे विचारों में सहमति रखते हैं यह जानकर प्रसन्नता हुई।

आशा है आप इस विषय पर जनमत तैयार करने में योगदान देंगे।

सधन्यवाद,

आपका,
चरण सिंह

(विदेशी मिशनरियों की राष्ट्रद्रोही प्रवृत्तियों के सन्दर्भ में हुआ पत्र-व्यवहार)

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

हरिदेव योशी
मुख्य मत्री राजस्थान

जयपुर

दिनाक २१ अक्टूबर, १९८७

अ शा पत्र क्रमाक मुम/१/प/२ (५५)
गह/८७/५५२०

प्रियश्री सेठियाजी

नाथद्वारा क श्रीनाथजी के म दिर म हरिजना को प्रविष्ट नही होने दने तथा सीकर जिल म हुए सती काण्ड क सम्ब ध म आपका दिनाक १९ ९ ८७ का पत्र प्राप्त हुआ।

म आपको सूचित करना चाहुगा कि उक्त घटनाओ के दोषी व्यक्तियो को दण्डित करने की कायवाही की गई है और म आपको आश्वस्त करना चाहूगा कि इन मामलो के दोषी व्यक्तियो के साथ सरकार सख्ती से निपटेगी। इन घटनाओ की पुनरावत्ति न हो इसके प्रति सरकार पूण रूप से सजग है।

सादर

सदभावी
हरिदव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मगो लेन
कलकत्ता ७००

हरिदेव योशी
मुख्य मत्री, राजस्थान

जयपुर
राजस्थान

अ शा पत्राक निस/मुम/८७/३१३० दिनाक १५ अक्टूबर १९८७

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका २ अक्टूबर १९८७ का पत्र मिला। आपने राज्य सरकार द्वारा सती प्रथा के विरुद्ध बनाये गये कानून की सराहना की है इसके लिए हार्दिक धन्यवाद।

आशा है आप स्वस्थ एव प्रसन्न होगे।

सादर

भवदीय
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३, मगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

गौरीशकर डालमिया
महामत्री
सताल पहाडिया सेवा मडल

बी० दवघर (बिहार)
दिनाक १० २ १९८८

आदरणीय सेठियाजी

प्रणाम।

आप हम लोगो का बराबर ख्याल रखते है यह आपकी कृपा है। हमारे क्षेत्र मे कुष्ठ जैसे बीमारी मे १९५०० रोगी थे अब सिर्फ ५५०० रह गये है। शीघ्र हम लोग और काफी कम कर सकेंगे, ऐसा विश्वास है। अब ठीक हुए रोगियो को कुछ काम देने की जरूरत है। जिसके लिये चेष्टा हो रहा है। आप जैसे मनीषियो का आशीर्वाद हमलोगो पर है इसलिये भगवान शीघ्र सफलता देंगे।

सादर

आपका,
गौरीशकर डालमिया

सेवा मे
श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

RAJBAHADUR
Minister of Shipping
India

NEW DELHI

दिनांक जून १९५७

प्रिय कन्हैयालाल सेठिया,

आपका पत्र दिनांक ३० मई, १९५७ का प्राप्त हुआ जिसमें आपने बीदासर में पब्लिक कॉल आफिस से कनेक्सन न मिलने के विषय में लिखा है जब कि उसके लिए आदेश दिया जा चुका है। मैं इस सम्बन्ध में शीघ्र आवश्यक जांच कर रहा हूं और फिर आपको सूचित करूंगा।

आपका
राजबहादुर

श्री कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ़
राजस्थान

From

The Distt Medical & Health Officer,
Ratangarh (Churu Distt)

Rajasthan Jaipur

Dated 6 6 1964

To

The Director of Medical & Health Services

Sub **Telephone facility for Sujangarh Hospital**

I am submitting in original a letter dated 7 4-1964 from Sh Kanhaiyalal Sethia on the subject cited above He has intimated that the Seth Shri Ranglal Ji Bagria the donor of the newly constructed hospital at Sujangarh will pay all costs for the installation of the phone but regular expenses will be borne by the department

I also agree with the proposal of the applicant because immediate medical aid can be given to the needy persons if a telephone is installed It is therefore requested to very kindly obtain permission of G A D for its installation

Sd/

Distt Medical & Health Officer
Ratangarh (Churu Distt)

Copy to
Sri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh

(सुजानगढ़ के राजकीय अस्पताल में टेलीफोन लगा दिया गया है)

राजबहादुर
मंत्री, डाक तार विभाग
भारत

नई दिल्ली

दिनांक ४ २ १९६०

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

जयहिन्द,

सुजानगढ़ के डाक खाने के लिये भवन निर्माण के सम्बन्ध में आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। मैं इस सम्बन्ध में आवश्यक जांच एवं व्यवस्था करने के उपरान्त आप को पुनः सूचना दूंगा।

आशा है आप प्रसन्न होंगे।

विनीत
राजबहादुर

From

The Distt Medical & Health Officer,
Ratangarh (Churu Distt)

Rajasthan Jaipur

Dated 6 6 1964

To

The Director of Medical & Health Services

Sub **Telephone facility for Sujangarh Hospital**

I am submitting in original a letter dated 7 4 1964 from Sh Kanhaiyalal Sethia on the subject cited above He has intimated that the Seth Shri Ranglal Ji Bagria the donor of the newly constructed hospital at Sujangarh will pay all costs for the installation of the phone but regular expenses will be borne by the department

I also agree with the proposal of the applicant because immediate medical aid can be given to the needy persons if a telephone is installed It is therefore requested to very kindly obtain permission of G A D for its installation

Sd/

Distt Medical & Health Officer
Ratangarh (Churu Distt)

Copy to
Sri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh

(सुजानगढ के राजकीय अस्पताल में टेलीफोन लगा दिया गया है)

राजवहादुर
मत्री, डाक तार विभाग
भारत

नई दिल्ली

दिनाक ४-२ १९६०

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

जयहिन्द

सुजानगढ के डाक खाने के लिये भवन निर्माण के सम्बन्ध में आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। मैं इस सम्बन्ध में आवश्यक जाच एव व्यवस्था करने के उपरान्त आप को पुन सूचना दूगा।

आशा है आप प्रसन्न होगे।

विनीत
राजवहादुर

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

श्री कन्हैयालाल सठिया
रतन निवास
सुजानगढ (राजस्थान)
१४ ३१ ६० पी०एल०जी०

नई दिल्ली

दिनांक १४ मार्च, १९६०
फाल्गुन, १८८१ (शक)

प्रिय महोदय

सुजानगढ़ में डाकघर भवन के निर्माण के सम्बन्ध में राज्य मंत्री के पत्र क्रम संख्या ४४० एम० एस० दिनांक ८ फरवरी, १९६० के प्रसंग में आगे निवेदन है कि डाकघर के पुराने भवन को जो राज्य सरकार का था इसलिये छोड़ना पड़ा चूंकि वह बहुत ही खतरनाक हालत में था और उसे लगातार रखना उचित नहीं समझा गया। अब उसकी आवश्यक मरम्मत कर दी गई है तथा लोक निर्माण विभाग अधिकारियों ने सूचित किया है कि वह अब रहने योग्य हो गया है। अतः बीकानेर के डाकघर अधीक्षक डाकघर को पुराने भवन में ले जाने की व्यवस्था कर रहे हैं।

चूंकि राज्य सरकार के उक्त भवन की अब मरम्मत कर दी गई है, इसलिये इस समय उसे खरीदने तथा उसका पुनर्निर्माण करने की कोई योजना नहीं है।

भवदीय,
एस एम घोष
निदेशक, रेल डाक सेवा

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

No 14-3/60-PLG II Dated New Delhi 27 6 61

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Sujangarh

Sub **Construction of Post Office building at Sujangarh**

Sir

I am directed to refer to your letter dated 8 3 61 addressed to Shri Raj Bahadur, Minister for Shipping and to say that the suggestion for the construction of P O building at Sujangarh by Shri Murlidharji Saraf on the conditions stipulated was carefully considered and it was found that the proposal is not feasible as the conditions mentioned in your letter it is regretted are not acceptable

Yours faithfully
S M Ghosh
Director

राजबहादुर

न ६५२ एम एम/६१

६, अकबर रोड
नई दिल्ली

दिनांक १५ मार्च, १९६१

प्रिय श्री कन्हैयालाल सेठिया

आपका पत्र दिनांक ८ ३ १९६१ प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद। जैसा कि आपको विदित होगा आजकल डाक व तार विभाग का कार्यभार मेरे चार्ज में नहीं है अत मैंने आपका पत्र डा० पी० सुब्रायन जो आजकल इस विभाग की देखरेख कर रहे हैं उनके पास भेज दिया है। आशा है वह डाकघर का भवन निर्माण कराये जाने सम्बन्धी आपके सुझावों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे।

शेष शुभ।

आपका,
राजबहादुर

श्री कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ़ (राजस्थान)

INDIAN POSTS & TELEGRAPHS DEPARTMENT

Office of the Director General
Posts & Telegraphs

20 Ashoka Road
Sanchar Bhavan
New Delhi 110 001

No 65 4/85 PRP

Dated 1 3 1984

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Sethia Trading Co
3 Mango Lane
Cal 1

Sub **Departmental P O Building at Sujangarh (Rajasthan)**

Sir

I am directed to acknowledge the receipt of your letter dt 1 1 85 addressed to the Minister of State for Communications in regard to construction of departmental post office buildings in Rajasthan and to say that the matter is receiving attention

2 A further communication will follow

Yours faithfully

A V B Menon
Director (BP)

DEPARTMENTS OF POSTS

20 Ashoka Road
Sanchar Bhavan
New Delhi 110 001

No 65 4/85 PRP

Dated 16 4 1985

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Sethia Trading Co
3 Mangoe Lane
Calcutta 700 001

Sub **Departmental P O Building at Sujangarh (Rajasthan)**

Sir

In continuation of this office letter of even number dt 1 3 84 in response to your letter dt 1 1 85 addressed to the Minister of State for Communications on the above mentioned subject I am directed to inform you that as reported by the Postmaster General Rajasthan Circle Jaipur Sujangarh post office is presently functioning in an Ex state building which has been recently renovated and is in good condition The construction of a departmental building at Sujangarh will be considered during the 7th Five Year Plan subject to availability of suitable land and funds for the purpose

Yours faithfully

A V B Menon
Director (BP)

राम निवास मिर्धा
सचार मत्री
भारत सरकार
स० ६५ ४१८५ पाआरपी

नई दिल्ली ११० ००१

दिनाक ६ जून १९८५

प्रिय श्री सेठियाजी,

कृपया सुजानगढ म विभागीय डाकघर के भवन की व्यवस्था करने के बारे म मेरे दिनाक १८ ५ ८५ के पत्र की ओर ध्यान दें जो आपके दिनाक २२ ४ ८५ के पत्र के उत्तर म था।

मने इस मामले की जाच करा ली है। मुझे बतलाया गया है कि सुजानगढ म विभागीय डाकघर के भवन का निर्माण का काय सातवी पचवर्षीय योजना म शामिल कर लिया गया है। इस परियोजना के लिए उपयुक्त भूमि मिल जाने तथा आवश्यक निधि उपलब्ध हो जाने के बाद यह काय प्रारभ कर दिया जाएगा।

आपका
राम निवास मिर्धा

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सुजानगढ

आपका पत्र दिनांक १२ जनवरी १९५५ का स्वास्थ्य मंत्रीजी को मिला जिसमें आप ने लाडनूं से सुजानगढ को जानेवाली रोड का जिक्र किया। चीफ इंजिनियर से पूछने से पता चला है कि यह रोड अभी तक चालू है और कलक्टर चूरू का इस सड़क को बंद करने के लिये कोई पत्र नहीं आया है। इस विषय में आगे कोई बात हो तो कृपया टेलीफोन से बात करें या पत्र द्वारा सूचित करें।

आपका
निजी सहायक, स्वास्थ्य मंत्री,
राजस्थान

(लाडनूं सुजानगढ सड़क सुझाव के अनुसार ही बना दी गई है)

राजबहादुर
परिवहन एव सचार मन्त्री

न० डब्ल्यू १ २१ (१२)/६०

नई दिल्ली

दिनाक ७ अप्रैल, १६६२
२७ चत्र, १८८४ (शक)

प्रिय श्री कन्हैयालाल सेठिया

नमस्कार।

आगरा जयपुर-बीकानेर माग (राष्टीय राजमाग सख्या ११) के फतेहपुर-रतनगढ भाग के सम्बध मे भेजे गये आप के पत्र दिनाक २३ जुलाई, १६६१ के उत्तर म निवेदन है कि दूसरी पचवर्षीय आयोजना काल म मजूर किये गये जिस माग का आपने उल्लेख किया है वह राष्ट्रीय राजमाग सख्या ११ म नही बल्कि प्रस्तावित फतेहपुर रतनगढ प्रदेश माग म पडता है। राष्ट्रीय राजमाग सख्या ११ का रास्ता भारत सरकार द्वारा जून १६६१ म मजूर किया गया था और राजस्थान का सावजनिक निर्माण विभाग इसी अनुमोदित रास्ते पर सडक बना रहा है।

पुन प्रदेश माग के रास्ते म राष्ट्रीय राजमाग बनाना सम्भव नही है क्योकि यह रास्ता माग से दूर पर पडता है और राष्ट्रीय राजमाग के अयोग्य है।

आपका,
राजबहादुर

श्री कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास सुजानगढ
राजस्थान

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

Public Works & Power Minister s office

From

The Private Secretary
Minister for P W & Power
Jaipur

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
C/o Ratan Niwas Sujangarh
(Rajasthan)

Jaipur

No R 20W P A /P W M /60 Dated 29th July 1960

Sub **Inadequate supply of Electric Power to Sujangarh**

Ref **Your number nil dated 4th July, 1960 addressed to Minister for Power**

Sir

I am directed to say that necessary instructions have been issued to meet the demand

Yours faithfully

S M Dave
Private Secretary
Minister for P W & Power

OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER
BIKANER CIRCLE
(Rajasthan State Electricity Board)

From
The Superintending Engineer Bikaner Circle
Rajasthan State Electricity Board
Bikaner

To
Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh

No SE/BC/ Dated 25th August 1960

Sub **Supply of electric power to Sujangarh**

Ref **Your letter dated 4 7 60 addressed to the Minister, Electricity and copy to the Chairman Rajasthan Electricity Board Jaipur**

Please refer to your above cited letter asking for additional transformer for Sujangarh You are informed in this connection that there is sufficient provision to take additional load at Sujangarh For this the required transformers have been ordered As soon as we receive these the same will be installed to cater extra load *In the meantime you are requested to indicate specific* load requirement if any to the Executive Engineer Ratangarh who will provide for the augmentation of the same line & S/S to accommodate the additional power requirement

Superintending Engineer (BC)

HARISH CHANDRA
Minister for P W &
Power
Rajasthan

Jaipur

Dated September 13 1961

Sub **Dangerous electrification of public road at Sujangarh (District Churu)**

My dear Shri Kanhaiyalalji

I acknowledge with thanks the receipt of your letter dated the 11th September 1961 regarding the above subject I am getting the matter examined by the Chief Engineer Rajasthan S Electricity Board and on receipt of his report I will see what can be done

With regards

Yours sincerely

Harish Chandra

Shri Kanhaiyalal Sethia
Member R S Transport Authority
Ratan Niwas Sujangarh (Rajasthan)

(सुजानगढ़ की स्टेशन की सड़क के बीच में लगे खम्भों को हटा कर सड़क के किनारे लगा दिया गया है)

Copy of D O letter No 706/PWD/61 dated 8 2 61 from the Dy Secretary to Govt Power & Irrigation Deptt, Jaipur to Secretary Rajasthan State Electricity Board, Jaipur

It has been brought to the notice of the Govt that in Sujangarh there is no proper arrangement for supply of electricity It is reported that one 100 KV set was installed in 1928 and the transmission lines and transformers are such that they are unable to take full advantage of the supply of electricity from Bhakra sources Sujangarh is an industrial town of District Churu where there are possibilities of certain industries being run by electricity But in the absence of adequate supply of electricity it is not possible to do so In the circumstances the public of Sujangarh have requested that in place of 100 KV transformer a 200 KV transformer may be installed very early and that the old transmission lines may be replaced by suitable lines so that full advantage may be taken of Bhakra sources I am directed to request you kindly to send your views in this matter early

Copy of D O letter No RSEB/GAB/D 4240/61/F 3 (114)/61 dated 3/17th May 1961 from the Assistant Secretary Rajasthan State Electricity Board Jaipur to Dy Secretary to the Govt of Rajasthan Irrigation Power Deptt Jaipur

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
POWER DEPARTMENT

No D 2698/62/F 1 (55)Pow/61 Dated 2 June 1962

From
The Deputy Secretary to the Government
Jaipur

To
Shri Kanhaiyalal Sethia
Member Rajasthan State Transport Authority
Ratan Niwas Sujangarh, Rajasthan

Sub **Dangerous electrification of public roads at Sujangarh**

Dear Sir

I am directed to refer to Power Minister s D O letter No 3052/PA/PWM/61 dated the 15th September 1961 and to inform you that the State Electricity Board authorities to whom the matter was referred to have now intimated as under

(1) The Chairman Municipal Board has requested the department for this work and on the authority of the local body this work was started in the month of March 1961

(2) There are big trees on both sides of the road and the old line passing through old trees was constant source of discontinuing of supply to the consumers there The Municipality has however extended the road on both sides

Shifting of poles there as per your suggestions is however not possible because the local authority viz. The Municipal Board is the competent authority under Section 12 of the Indian Electricity Act 1910 for such purposes with whom you may kindly take up this matter

Yours faithfully
Deputy Secretary to Government

RAJASTHAN STATE ROAD TRANSPORT CORPORATION

Parivahan Marg
Jaipur
Dated 31 7 1975

No PA/DGM/(Tr)/75/3456

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ex Member State Transport Authority
Ratan Niwas
Sujangarh

Dear Sir

Kindly refer to your letter dated 1st July 1975 sending thereunder some suggestions in regard to the nationalisation of Road Transport and operation of buses In this connection point wise position is indicated below

(1) For displaying the time table and the fare table chart at all the Booking Stations necessary instructions have already been issued and its compliance is also being watched and enforced

(2) All possible care is taken to observe regularity and punctuality in the operation of the services It is possible that due to some mechanical defects in the buses its departure is delayed This is further been enforced that all the buses that are outshedded for route operation are sent in perfect mechanical condition so that its failure on the route and any delay in departure may be avoided to the extent possible

(3) Arrangement to provide the services of Porter in all the important services are being made and orders in this regard have been issued It is not possible to provide a Khalasi in all the buses

(4) Over loading in the buses is being discouraged by providing all the schedules in time It is hoped that in future there will be no overcrowding in the buses of the Corporation

(5) For providing a direct service over Sujangarh Churu route we have applied to the R T A for obtaining a permit over Chhapar Ratangarh portion which is not covered under the nationalisation scheme As soon as the permit is obtained direct service from Sujangarh to Churu will be provided

(6) Complaint books are being provided separately to the conductors of each bus along with the Ticket Book and Way Bill which are issued to the conductors

(7) Instructions written on the body of the buses when defaced are again got painted this will however, be re inforced for timely action

(8) Over Jaipur Bikaner via Sikar Salasar route, the buses provided have their stoppages at main stations only System of advance reservation at important stations already exist

Yours faithfully

Dy General Manager

NORTHERN RAILWAY

Headquarters Office
Baroda House
New Delhi

No I TT 2 Dated 20 August 1954

Shri Kanhaiyalal Sethia
Sethia Trading Co
15 Nurmal Lohia Lane
Calcutta

Sub **Provision of an additional Express between Delhi & Bikaner**

Ref **Your letter Dated 16/6/54 addressed to the Railway Minister New Delhi**

Dear Sir

It is regretted that an additional Express train cannot be introduced between Delhi and Bikaner owing to the acute shortage of coaching stock and power

Regarding allegation of Mal practices the matter is under investigations and a further communication will be made later

Yours faithfully

for General Manager (Optg)

Copy of the above is forwarded to the Director Traffic (T) Railway Board Ministry of Railways New Delhi for information in reference to their letter No 4281 TT/N/4 of 3/8/1954

लाल बहादुर शास्त्री
परिवहन एवं रेल मंत्री
भारत सरकार

१ यार्क प्लेस नई दिल्ली

दिनांक जून २३ १९५४

प्रिय सठियाजी

आपका १६ जून का पत्र मिला। आपने जो लिखा है उस पर विचार करने के लिए कह रहा हूँ।

आपका
लाल बहादुर

श्री कन्हैयालालजी सठिया
सठिया ट्रेडिंग कम्पनी
१५ नूरमल लोहिया लेन कलकत्ता

(रेल विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में लिखे गये पत्र के प्रत्युत्तर में प्राप्त पत्र)

NORTHERN RAILWAY

From

General Manager (Complaints)

To

Kanhaiyalal Sethia
President Churu District
Harijan Sewak Sangha
Sujangarh (Rajasthan)

No 112/CP/gu Dated 16 6 85

Sub **Request for providing benches for the passengers & Constructing**

Dear Sir

With reference to your letter Dated 4 3 1955 on the above Subject it is stated that Benches on the platform and a shed over a portion of the passenger platform at Sujangarh Station will be provided during the current financial year

There is already a high level platform at this Station but this does not have a pucca surfacing which will be proposed in the works programme for the year 1956 57

for General Manager
(Complaints)

(सुजानगढ़ रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के लिये जिन सुविधाओं की मांग की गई थी उन्हें पूरा कर दिया गया)

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)

New Delhi

No 57 TT(IV)/4/N/14 Dated 3 12 1957

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Member Regional Transport Authority &
Rajasthan Water Board Sujangarh (Rajasthan)

Dear Sir

Sub **Extension of through Coach Service running between Ratangarh and Marwar, to and from Ahmedabad**

I am directed to acknowledge receipt of your letter dated 16 11 57 endorsed to the Minister for Railways on the subject mentioned above and to state that the matter is being examined and a further communication will follow

Yours faithfully
S P Patel
for Secretary Railway Board

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)

New Delhi

No 57 TT(IV)/4/N/14 Dated 29 1 1958

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Member Regional Transport authority and
Rajasthan Water Board
Sujangarh Rajasthan

Dear Sir

Sub Extension of through Couch service running between Ratangarh and Marwar to and from Ahmedabad

In continuation of this Office letter of even number dated 3 12 57 I am directed to state that with effect from 1 2 58 arrangements are being made to run as an experimental measure one third class bogie coach between Ratangarh and Ahmedabad by Nos 1JRD 205/95/5 and 6/96/206/2JRD trains in replacement of the third class luggage & brake van at present running between Ratangarh and Marwar by Nos 1JRD/205/95 and 96/206/2JRD trains

Yours faithfully

S P Patel

for Secretary Railway Board

NORTHERN RAILWAY

Headquarters Office
Baroda House
New Delhi

No 11 CT/5/394 Dated 22 August 1960

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Member Rajasthan State Transport Authority
Ratan Niwas Sujangarh

Sub **Regarding provision of certain amenities at Sujangarh**

Ref **Your letter dated 9 8 1960**

Dear Sir

While acknowledging the receipt of your above cited letter it is stated that the matter is receiving attention and a further communication will follow

Yours faithfully
for General Manager
(Complaints)

NORTHERN RAILWAY

Headquarters Office
Baroda House, New Delhi

No ITT/109/Pt I

Dated 6 9 1960

Sri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
P O Sujangarh (Rajasthan)

Sub **Provision of amenities at Sujangarh Stations**

Ref **Your letter dated 9/8/60**

Dear Sir

Your suggestion as far as the operating branch is concerned has been examined and the following remarks are given

Item No 2 The extension of 93 Up/94 Dn Jodhpur mails to and from Ahmedabad will involve provision of an extra Rake & Power which is not available at present

Item No 3 The running of 3rd class sleeping coach from 93/94 Jodhpur Mails was withdrawn due to very poor filling The coaches released from this service have been put to run between Jaipur & Jodhpur by 7/95 & 96/8 trains where these are fairly utilized No other spare coaches are available which can be put on Jodhpur Mails

Yours faithfully
for General Manager

NORTHERN RAILWAY

No 701 T/442(MG)

Headquarters Office
Baroda House New Delhi
Dated 27 4 1961

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh (Rajasthan)

Sub **Extension of 1BDS/2BDS to and from Degana**

Ref **Your letter dated 12-4 1961**

Dear Sir

The suggestion has been examined The extension of Nos 1BDS/2BDS Diesel Rail car to and from Degana will involve provision of an additional Diesel Rail car which is not available at present

Yours faithfully
for General Manager (Optg)

Copy of letter No MG2659/69/39 dated 19th June 1963 from the Divisional Supdt Jodhpur to the Public Relations Office to H H the Maharaja of Bikaner Lallgarh Palace Bikaner

Sub **Extra coach on 94 Dn/93 Up Mails between Sujangarh & Delhi**

Ref **Your letter No 4362 of 29 5 63 received under DS BKN end No Comml/C38/62 dated 10 6-63**

The suggestion is under consideration of the General Manager (Optg) No Rly New Delhi and a decision is still awaited

No 4810 Date 26 6 63

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalal Sethia Sujangarh for information & necessary action

Public Relations Officer
to H H the Maharaja of Bikaner

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)
New Delhi 1

No 63 TT(IV)/16/N/7 Dated 8 11 1963

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas Sujangarh

Dear Sir

Sub **Additional train service facilities to Bikaner, Jodhpur, Sujangarh etc**

In continuation of letter dated 22 10 63 from the Additional Private Secretary to the Minister for Railways I am directed to state that the matter has been examined and the position is as under

(a) **A day Express train to Jodhpur & Bikaner**

There is no traffic justification for a daily additional train either to Jodhpur or to Bikaner from Delhi There is also no line capacity on Delhi Rewari section over which such a train has to pass

It is however stated that immediate connections are available to passengers from Calcutta to go to Jodhpur and Bikaner as per timings shown below

To Jodhpur			**To Bikaner**		
Howrah	D	20 50 by 11 Up Exp	Howrah	D	19 10 by 1 Up mail
Delhi	A	06 20	Delhi	A	21 00
	D	09 25 by 203 Up Exp		D	21 30 by 91 Up mail
Marwar	A	01 42	Bikaner	A	9 00
	D	04 00 by 210 Dn Pass			
Jodhpur	A	08 05			

It will be observed that passengers do not have to wait the whole day at Delhi

(b) Extension of 1BRR/2BRR to and from Sujangarh

There are no terminal facilities at Sujangarh and hence the trains cannot be extended to Sujangarh

Passengers arriving by 1BRR at Ratangarh can avail of 93 Up Jodhpur Mail leaving Ratangarh at 04 37 hrs and reaching Sujangarh at 05 52 hours

2 It is hoped that the position as set out above will be appreciated

Yours faithfully

C Prabhakaran
for Secretary Railway Board

Addl Private Secretary to
MINISTER FOR RAILWAYS
INDIA

New Delhi
Dated October 22 1963

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh

Dear Sir

I am desired by Shri H C Dasappa Minister for Railways to acknowledge receipt of your letter of the 20th October and to say that the matter is receiving attention

Yours faithfully
V B Menon

It will be observed that passengers do not have to wait the whole day at Delhi

(b) Extension of IBRR/2BRR to and from Sujangarh

There are no terminal facilities at Sujangarh and hence the trains cannot be extended to Sujangarh

Passengers arriving by IBRR at Ratangarh can avail of 93 Up Jodhpur Mail leaving Ratangarh at 04 37 hrs and reaching Sujangarh at 05 52 hours

2 It is hoped that the position as set out above will be appreciated

Yours faithfully,

C Prabhakaran
for Secretary Railway Board

Addl Private Secretary to
MINISTER FOR RAILWAYS
INDIA

New Delhi
Dated October 22 1963

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh

Dear Sir

I am desired by Shri H C Dasappa, Minister for Railways to acknowledge receipt of your letter of the 20th October and to say that the matter is receiving attention

Yours faithfully
V B Menon

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)

New Delhi 1
No 63 TT(IV)/16/N/7 Dated 7 March 1964

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
P O Sujangarh

Dear Sir

Sub **Introduction of an additional mail train between Delhi and Jodhpur via Ratangarh and Sujangarh**

With reference to your letter dated 28 1 1964 to the Minister for Railways on the subject noted above I am directed to state that the points raised have been very carefully examined and the position is as indicated below

(i) **There is heavy rush of passengers and they have to keep standing frequently on Jodhpur Mails—**

The percentage occupation of 93 Up/94 Dn Jodhpur Mails as revealed in the census taken in October 1963 shows that there is no overcrowding on these trains There is therefore no justification for an additional train between Delhi and Jodhpur

(ii) **To obtain line capacity, sectional trains may be replaced by a single mail train between Delhi and Jodhpur—**

Though sectional trains are available on the Delhi Rewari *Rewari Ratangarh and Ratangarh Degana sections* there are no such trains on the Degana Mirta Road Jodhpur Section These sectional trains do not also provide immediate connections and therefore there is no question of amalgamating them so as to run a single mail train Moreover sectional trains have been

MINISTER FOR PLANNING COOPERATIVE AND LAW

MATHURADAS MATHUR
D O No 1998/PA/PLM/64

Jaipur Rajasthan
Dated August 9 1964

My dear Shri Kanhaiyalalji

I had written to Shri Ram Subhag Singh Minister of State for Railways Government of India about Jodhpur Delhi Mail I am sending a copy of the letter which I have received from him for your information

Thanking you

Yours sincerely
Mathuradas Mathur

Encl one

Shri Kanhaiyalalji Sethia
Sujangarh

Copy of letter No 725/MSR/64 dated the 30th July, 1964 from Shri Ramsubhag Singh, Minister of State for Railways, New Delhi to Shri Mathuradas Mathur, Minister for Planning, Rajasthan, Jaipur

* * *

Thank you for your letter No 1802/PLM/64 of 27th instant I recently learn from papers about your return from your foreign trip It is good that you have visited so many countries where you must have obtained rich experiences which might be profitably utilised for the benefit of our country

I know your anxiety about the Jodhpur Delhi Mail We shall see that the cause for your anxiety is removed

With kindest regards

Copy of letter No 64 TT(IV)/16/N/7 dated the 25th September 1964 form Shri S K Patil Minister for Railways India, New Delhi to H H the Maharaja of Bikaner, Bikaner

* * *

Further to my letter No MR/1277/64 dated 14th September 1964 regarding the diversion of Jodhpur Delhi Mails I have had the matter looked into There is no proposal at present to divert the Delhi Jodhpur Mails from their existing route via Sadulpur and Ratangarh to the shorter route via Reengus and Phulera

No 3631 D/ 1 10 64

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalal Sethia Sujangarh for information with reference to this office No 2041 dated 9 9 64 & No 3365/3366 Dated 18 9 64

Public Relations Officer
to H H the Maharaja of Bikaner

विशेष सहायक
निजी सचिव
राज्य मंत्री
गृह मंत्रालय, भारत

नयी दिल्ली
दिनांक अप्रैल ६ १९७३

प्रिय श्री सठियाजी

श्री राम निवासजी मिर्धा मंत्री गृह मंत्रालय को अपने पत्र दिनांक ३ अप्रैल १९७३ के साथ राजस्थान में छोटी रेल लाईनों को बड़ी रेल लाईनों में बदलने हेतु रेल मंत्री भारत सरकार के नाम भेजे गए आपके पत्र की प्राप्ति स्वीकार करते हुए मुझे आपको सूचित करने का निर्देश हुआ है कि आपका पत्र रेल मंत्री, भारत सरकार को भेज दिया गया है।

आपका
द० सि० फौजदार

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सठिया ट्रेडिंग क०,
३ मेंगो लेन कलकत्ता-१

राष्ट्रीय कृषि आयोग
भारत सरकार

अ० स० न० सी एन सी ए (२)/७३

विज्ञान भवन अनेक्सी
नई दिल्ली-११

दिनांक १० ४-१९७३

प्रिय मठिया साहब

आपका पत्र दिनांक ३ ८-७३ का प्राप्त हुआ। जो रेलवे लाईनें छोटी है उनको बडा करने बाबत रेल मन्त्रीजी को लिखा सो ठीक किया पर अभी तो सिर्फ एक अहमदाबाद रेलवे लाईन का सर्वे का काम चालू हुवा है। बननी कब शुरू होगी इस बार मे भी कोई निश्चित तिथी नही है। पर हम से जो कोशिश बनेगी करते ही रहेंगे।

आपका
नाथूराम मिर्धा

श्री कन्हैयालाल मठिया
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मगो लेन कलकत्ता १

जन सम्पर्क कार्यालय
त्तर रेलवे

स्टेट एन्ट्री रोड
नई दिल्ली १

८/४८/७

दिनांक १७/९/७३

हैयालाल सेठिया
ट्रेडिंग क०
ा ेन कलकत्ता १

मन्तोन्य

ा –उत्तरी रेलवे क स्टेशन तान छापर स नागा रेलवे स्टेशन क बीच रेलवे
मिनी-बस सविस चालू करने के बारे म प्राप्त प्रार्थनापत्र ।

आपका दिनांक १५ ८-७३ का पत्र प्राप्त हुआ। इसके लिए धन्यवाद।

यह मामला मुख्य वाणिज्य अधीक्षक उत्तर रेलवे बडौदा हाउस नयी
ा को आवश्यक कार्यवाही क लिए भेजा जा रहा है क्योंकि इसके लिए वही
त अधिकारी हैं। यदि आप आगे पत्र व्यवहार करना चाहें तो कृपया
उन्हा को लिखें।

भवदीय
ब्रह्म बल आहूजा
कृते मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी

CITIZENS' CENTRAL COUNCIL

MATHURA DAS MATHUR
General Secretary

Phones 375422 375447
RASHTRAPATI BHAVAN
NEW DELHI-4

May 28 1975

My dear Shri Kanhaiyalalji Sethia

I received your letter addressed to the Union Railway Minister Shri Tripathi as well as the telegram

Shri Amrit Nahata M P and others are trying to divert the Jodhpur Mail via Phulera and Reengus so that the people of Jodhpur going to Delhi and vice versa will have to travel at least two hours less than the present time They will be benefitted by less railway freight since the difference between the two routes comes approximately 75 kms less Shri Nathu Ram Mirdha and myself have been pressing upon the Railway authorities that the status quo be maintained because the present route caters the people belonging to Nagaur and Churu districts who are doing business at Calcutta and other parts of Eastern India The Railway receive quite handsome business from stations like Didwana Ladnun Sujangarh etc etc The time that the Jodhpur Mail takes could be reduced even on this route by putting diesel engine This will accelerate the speed within the permissible limits as well as save time which is being taken at the watering stations The matter has not been finalised yet and the question is under active consideration of the Railway Ministry What finally comes out will be known in a couple of weeks If the route is diverted via Phulera and Reengus then the Northern Railway proposes to run another fast train from Jodhpur to Ratangarh via Degana Didwana Ladnun Sujangarh

etc There will be few direct bogies of I and II Class for Delhi At Ratnagarh the direct bogies will be attached to the Bikaner Mail This would facilitate the passengers travelling between Delhi and other important stations like Sujangarh Ladnun Didwana etc The Railway Board is still considering the pros and cons of the various proposals Anyway if the route is diverted then the railway administration agrees to provide facilities to our people for having direct links with Delhi through Bikaner Mail I have placed the situation before you as it exists to day We are trying our best for the status quo Let us see what comes out

I am glad to learn that you enjoy sound health and are on *your heels*

My good wishes and regards

Yours sincerely
Mathura Das

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh

अध्यक्ष
राष्टीय कृषि आयोग

ज० स० स० सी एम साए (२)/७५ सी

विज्ञान भवन अनेक्सी
नई दिल्ला ११

दिनाक ३० मई १९७५

प्रिय त्रिपाठी साहब

मैं आपक पास श्री कन्हैयालालजा सठिया स आए पत्र दिनाक २४ ५ १९७५ जा कि आपका सम्बोधित हैं की प्रति व तार बाबत दिल्ली जाधपुर मल के रूट का बदलने बावत आपका जानकारी व उचित कायवाही हेतु भेज रहा हूँ। पिछला उत्तरी रलवे की पालियामटरी सलाहकार समिति म जा चचाए हुई थी उस समय जाधपुर मल के रास्ते का बदलने बावत चचा हुई थी और मैंने मरे इलाक के लागा का एतराज होने का बात भी कही थी। उस समय यह कहा गया था कि क्षेत्र के लागा का काई रेल सविम का घाटा नही हाने दिया जावेगा।

इस बार म अगर कुछ निश्चय निणय हुए ह ता कृपया मुझे मारी स्थिति स अवगत करावें। मरे क्षेत्र के लागा का मैं क्या ममझाऊँ जिसस उनका सताप हा सक।

श्री अमत नाहटा ने यह रूट बदलने का प्रश्न उठाया था—जाधपुर दिल्ली स जल्दी पहुचने बावत। जाधपुर जाने वाल लोग ता दिल्ला स जाधपुर जल्दा पहुच जावे पर बहुत स मर क्षेत्र क मुख्य कस्बा व शहरा के लागा की रल सवा कम हा ता उनकी नाराजगी हाना बिलकुल उचित है। कपया इस मारे मामल म गहराई से विचार करावे।

मादर

आपका
नाथूराम मिर्धा

श्री कमला पतिजा त्रिपाठा
रल मत्री, रल भवन
नई दिल्ली-२

प्रति वास्ते जानकारी—श्री कन्हैयालालजी सठिया, रतन निवास, सुजानगढ (राजस्थान)

अध्यक्ष
राष्ट्रीय कृषि आयोग

अ० स० स०

विज्ञान भवन अनेक्सी
नई दिल्ली ११

दिनांक ७ जून १६७५

प्रिय सेठिया साहब

आपका पत्र दिनांक ४ जून ७५ का प्राप्त हुआ। आपने जो पत्र माथुर साहब व अमृत नाहटा को लिखे हैं उनकी प्रतिलिपि मिली। श्री अमृत नाहटा ही तो वो व्यक्ति है जो जोधपुर मेल को कम समय में जोधपुर पहुंचाने के लिए इस नये मार्ग का सुझाव दे रहे हैं। और रेलवे वालों का कहना है कि दिल्ली रोहतक फुलेरा होकर जोधपुर जल्दी पहुँचाया जा सकता है क्योंकि उस रास्ते में पूरी दूरी में ६० पौंड की रेलवे लाईन है इसलिए ट्रेन की स्पीड वहां तेज रखी जा सकती है। मौजूदा जोधपुर मेल के रास्ते में डेगाना से रतनगढ तक रेलवे लाईन ७० पौंड की है इसलिए स्पीड बढाना सम्भव नहीं है। इसलिए जो समय अभी लगता है उसको कम करना सम्भव नहीं है—इसी बहस में तो जोधपुर मेल के रास्ते को बदलने की बात चल पडी है। इसलिए श्री नाहटा पर आपके पत्र का क्या असर होगा मेरी समझ में नहीं आता। माथुर साहब से अभी मेरी बात नहीं हुई है उनसे मैं इस बारे में चर्चा करूँगा।

और सब कृपा है।

आपका
नाथूराम मिर्धा

श्री कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास
सुजानगढ (राजस्थान)

उत्तर रैलवे

प्रधान कार्यालय
कश्मीरी गेट
दिल्ली ६

उप सचिव शासन
राजस्थान सरकार,
जयपुर

पत्राक ६ डब्ल्यु/७/१/स्प/सा

दिनाक १-१० ८२

विषय –नोखा सीकर वाया सुजानगढ रेल लाईन के निर्माण के सम्बन्ध म।

सदभ – पत्राक/८/३/आये ग्रुप ४/८१ दिनाक ४ अगस्त, १६८१

महोदय

नोखा से सीकर बरास्ता जसरासर साण्डवा, बीदासर सुजानगढ व मालासर के रेल निमाण का प्रस्ताव प्राप्त हुआ। इस नवीन रेल लाईन की अनुमानित लम्बाई २१८ कि मी है तथा जिसक निर्माण पर ३२ कराड रुपये व्यय का अनुमान है। आरम्भिक ईजीनियरिंग व ट्रफिक सर्वेक्षण की अनुमानत लागत १३ लाख रु होगी।

वस्तुत नई लाईन के सर्वेक्षण व निमाण की स्वीकृति रल मन्त्रालय, याजना मन्त्रालय तथा वित्त मन्त्रालय की सम्मति स करता है। अगर आप उपरावत रल लाईन क निर्माण में रुचि रखते है तो रेल मन्त्रालय को सीधे पहुँच कीजिये।

भवदीय
हस्ताक्षरित
एम ए उमर
कृते मुख्य अभियन्ता/निर्माण

श्री कन्हैयालाल सठिया
रतन निवास
सुजानगढ (राजस्थान)

दौलतराम सारण
सदस्य, लाक सभा

१४ नाथ एवन्यू
नई दिल्ली

दिनाक २-८-१९८३

प्रिय भाई सठियाजी

सस्नेह बन्द।

आपका २३/७/१९८३ का पत्र यथा समय मिल गया था परन्तु म कुछ विलम्ब से पत्रोत्तर द रहा हूँ। कारण कि ३० जुलाई को जयपुर म लोकदल के राजस्थान भर के कायकर्त्ताओ का सम्मेलन था जिसम लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ चरण सिंहजी कायकर्त्ताओ का उदबोधन और माग दशन दने के लिए पधारे थे। मैं उसम लगा था। बहुत अच्छा कायक्रम रहा। आनाक प्रसन्न है आप स प्रणाम कह रहा है।

आपक पत्र क अनुसार मैंने जो रल मत्रीजी को पत्र लिखा है उसकी प्रति इस पत्र क साथ भेज रहा हूँ और सरदार शहर परिषद के एक पत्र क उत्तर म मुझे जो रल मत्री का पत्रोत्तर मिला है उसका प्रति भी सलग्न है कृपया इस आप अवलोकन कर परिषद को प्रेषित कर दने का कष्ट करें।

मुझे जबभी अवसर मिलेगा आपके सुझावो के अनुसार अन्य मुद्दो क साथ कायवाही करवाने की चेष्टा करता रहूँगा। मर योग्य सेवा लिखते रहें। आशा है स्वास्थ्य ठीक होगा पूरा ध्यान रखें। सब परिजनो एव परिचित सज्जनो स मर हार्दिक नमस्कार कहिएगा। आपका अपना—

दौलतराम सारण

श्री कन्हैयालालजी सठिया
६ आसुताष मुखर्जी राड
कलकत्ता

कुम्भाराम आर्य
मसद सदस्य
(लाक सभा)

११ ए पण्डित पत मार्ग
नई दिल्ली

दिनाक २९ ८ ८३

प्रिय श्री मठियाजी !

आपका पत्र ता० २३ ७ ८३ मिला। उत्तर देर स द रहा हूँ। कारण ! अस्वस्थ्य रहा अस्पताल और डाक्टरा के पास अधिक रहना पडा। अब की बार लाक सभा भी यदा कदा जा सका—डाक देखने म असमर्थ रहा।

अब ठीक हु। सरकार के पास एक ही जवाब रहता है कि धनाभाव है। पदमपुर मण्डी जा श्री गगानगर जिले का हाट है अभी तक रेल म नही मिलाई गई। मुझे काई उमद नहा फिरभी आपकी इच्छानुसार मत्री महादय स जानकारी प्राप्त करुगा।

मुनि श्री नगराजजा स दा दिन पहले मिल कर आया था। एक ग्रन्थ आगम और त्रिपिटक' मिला जिस पर आपकी अभिव्यक्ति अकित थी पढी।

शुभ कामना
कुम्भाराम आर्य
२९ ८ ८३

माधवराव सिन्धिया
रेल राज्य मंत्री भारत

नई दिल्ली

दिनांक जुलाई ८ १९८७

प्रिय श्री सठियाजी

राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के प्रति रेल मन्त्रालय की नीति पर पुनर्विचार करने के सम्बन्ध में आपका पत्र दिनांक ४ जुलाई १९८७ अनुलग्नक सहित प्राप्त हुआ।

मैं मामले की जांच करवा रहा हूं।

शुभकामनाओं सहित

आपका,
माधवराव सिंधिया

श्री कन्हैयालाल सठिया
स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी
सठिया ट्रेडिंग कं०
३ मंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

रामगोपाल मोहता बीकानेर

समाज सेवक उद्योगपति दिनांक २२/१/४७

श्रीमान
कन्हैयालालजी सेठिया,
सुजानगढ़

प्रियवर

आपका पत्र माणिकलाल आसोपा के द्वारा मिला। हरिजन सेवासंघ के बच्चों के लिए पोशाक भिजवाने का लिखा सो १६ कोट और १६ पेंट खाकी जीन का यहां फौज के महकमे से लेकर भिजवाये हैं इसके बाबत माणिकलाल आसोपा को यहां पर रु. १५० दिये हैं और साफे यहां पर नहीं मिले। आजकल फौज में टोपिया बरती जाती है सो बच्चों के लिए आप टोपिया का प्रबन्ध करें तो ठीक है नहीं तो साफा का कपड़ा मिलने का तो कोई ढंग नहीं दीखता। हरिजन उद्धार के लिए आप लोगों का उद्योग अत्यन्त सराहनीय है। कोट व पतलूनें माणिकलाल अपने साथ ले जा रहे हैं। आप को मिलने से पत्र द्वारा समाचार सूचित कर दें। रु. १५० एक सौ पचास यहां पर भेज देने की कृपा करें।

आपका
रामगोपाल मोहता

निजी सचिव, श्रम मंत्री
भारत सरकार

3 Queen Victoria Road
New Delhi

Dated 22nd May 1950

Dear Sir

I am desired to refer to your letter of the 13th April 1950 and to inform that the Ministry of I & Supply has made a *ad hoc* allotment of 575 G I Sheets to the Govt of Rajasthan A copy of the memorandum is attached herewith for your information You are requested to contact the Rajasthan Govt for the early release of the G I Sheets required for providing roofs for the Harijans houses

Yours sincerely
Sinha

Shri Kanhaiyalal Sethia
Sujangarh (Bikaner)
Encl 1

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

From
The Secretary to Government
Civil Supplies Department
Rajasthan Jaipur

To
The Commissioner
Civil Supplies
Jaipur

No F 8(54) CS(C) 50 — Jaipur Rajasthan, Dated 13th July 1950

Sub Iron and Steel Adhoc allotment of for distribution among Harijan fire sufferers

***Ref* Your endorsement No CR IS(7) IND 13070 dated 5 7 50**

Please make immediate arrangements for the distribution of the material in question under intimation to this office

Secretary to Government
Civil Supplies Department

No F 8(54) CS(C) 50 — Jaipur Rajasthan, Dated 13th July 1950

Copy forwarded to Shree Kanhaiyalal Sethia Member Sarvodaya Samaj Sujangarh for information with reference to his letter dated 1st July 1950

Secretary to Government
Civil Supplies Department

वियोगी हरि
अध्यक्ष
हरिजन सवक सघ

किंग्सवे, दिल्ली–९

दिनाक १-११-१९५४

प्रिय भाई कन्हैयालालजी

नमस्कार।

आपने मरे लिखने पर प्रभुजी था पर घणू धिणाप गैमा एक लोकगीत मुझे भेजा था। यह गीत जयपुर म प्रकाशित हरिजन वार्ता क सितम्बर क अक म प्रकाशित हुआ है। थोडा सा पाठ भेद मने इसम पाया। म उस आपके पास भेज रहा हूँ। इसम यदि कोई गलती हो तो उस ठीक करके मुझे लौटा दे। आपने धिणापे लिखा है और इसम छपा है धिणाय। इस गीत को म हरिजन सवा क इसी अक म द रहा हू। कृपाकर इसका अथ भी लिखकर भेजें। क्योकि म जनपदी वाणियो व गीतो का अथ समेत प्रकाशित किया करता हूँ।

किन्तु इस एक गीत स काम नही चलेगा। इसक साथ ही एक और गीत अथ समेत तुरन्त भेजने की कृपा करे। दोनो गीतो को अथ के साथ म प्रेस म तुरन्त देना चाहता हूँ।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका
वियोगी हरि
प्रधान मत्री

श्री कन्हैयालाल सठिया
रतन निवास
सुजानगढ (राजस्थान)

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
BACKWARD CLASS WELFARE OFFICE
JODHPUR AND BIKANER DIVISIONS BIKANER

No B/BK/54/228 Dated 17 3 54

To

Shri Kanhaiyalalji Sethia
President Harijan Sewak Sangh
Sujangarh

Sub **Payment of Scholarship to the trainees of Harijan *Udyogshala, Sujangarh***

Ref **Your correspondence ending with your Secretary's letter No 105 dated 4 3 54**

A Bank Draft No A 468179/6 dated 17 3 54 for Rs 375/ only is sent herewith for paying the same amount to the trainees according to the bill attached herewith The following points may be observed while distributing the amount

1 The payment may be made only to the students concerned

2 The payment may be made to those students only who have regularly attended the Udoygshala during that period for which the scholarship has been sanctioned

3 The undistributed amount if any may be returned through Bank Draft to the undersigned The postage or Bank Commission charges may be borne by your Institution

4 A Certificate to the effect that The payment has been made by me personally and the students have regularly attended the Udyogshala during the period for which scholarship has been sanctioned may be given on the bill itself

The bill then may be returned to this office immediately along of with the signature of the students on one Anna revenue stamp

Encl 1 One Bank draft
 2 Bill for Rs 375/

N L Bordia
Backward Class Welfare Officer
Jodhpur and Bikaner Divisions
Bikaner

Copy submitted to the Director Backward Class Welfare Department Rajasthan Jaipur in reference to his endt No 2066/SCH dated 18 2 54 The bill has been encashed to day the 17th March 1954

N L Bordia
Backward Class Welfare Officer
Jodhpur and Bikaner Divisions
Bikaner

अर्द्ध राजकीय पत्र सख्या ६

राजस्थान सरकार
दिनाक २ ४ १९५७

श्री कन्हैयालालजी सठिया
अध्यक्ष जिला हरिजन सेवक सघ
सुजानगढ

सादर नमस्ते । सहायक सचालक समाज कल्याण विभाग बीकानेर का पत्र सख्या २७५६ दिनाक ३० ३ १९५४ आपको मिल ही गया होगा जिसम श्री छगनलाल आय को कार्पेंटर डमटेक्टर की जगह पर नियुक्त करने व उनका इस काम के लिए औजार व नक्शा के पाटिये दिये गए हैं उसके बार म लिखा है। सारा सामान आप एक बार अवश्य देख लवोगा ।

अब स्कूल क लिए स्थान का सवाल उठता है जिसके लिए मने श्री खूबचदजी सठिया क मकान के कमरा का प्राप्त करने हेतु असिस्टेंट इन्जीनियर पी डब्लू डी (बी एव आर) रतनगढ का सुजानगढ म इस काम के लिए सरकारी मकान उपलब्ध न होने की हालत म प्रमाण पत्र देने व श्री सठियाजी के मकान के कमरा का किराया निश्चित करने के बाबत पत्र लिखा था और पत्र के जवाब म उनका लिखना है कि सुजानगढ म सरकारी बिल्डिग उपलब्ध है और उसम कार्पेंटरी स्कूल चल जायेगी उनके पत्र का अश इस प्रकार है –

To

Welfare worker
Social welfare office
Churu

Ref your latter No S/ww/c/38 Dt 8 3 57

I have to inform you that the building is available at Sujangarh and can accommodate the Carpentry School in that Building

Sd/
Gurumukh Singh
Assistant Engineer
P W D & B+R
Ratangarh

इसी पत्र पर मैं फिर टनस मिलने रतनगढ गया था ता इन्होने बताया कि दरबार की कोठा जा कि डाक बगला है उसम कई कमरे है उनम से अपनी आवश्यकतानुसार कमरे काम म ले सकते है। आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्र ही सुजानगढ के overseer से मिलकर इस कोठी म स कम स कम ३ कमरे ले लीजिएगा। A E के पत्र की प्रतिलिपि overseer के पास आज की डाक म भेज रहा हू जिससे उनको कमरे देने म दिक्कत नही होगी। इनको भेजे जाने वाले पत्र का स ५ ता २४५७

काम सीखने वाले हरिजनो के १५ लडके होगे जिसकी सूची श्री छगनलाल जाय के पास है। म समझता हू काम का शुरू करने म अब किसी प्रकार के सामान की कमी नही है अत स्कूल का प्रारम्भ करवा दीजियेगा।

आपकी अभिलाषा की पूर्ति के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करे। पत्रोत्तर अवश्य दे।

आपका
कार्यकर्त्ता
म क कार्यालय चूरू

भागीरथ कानोडिया

अध्यक्ष, राजस्थान हरिजन सेवक संघ — दिनांक २६.४.१९५८

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका ता० २२.४.५८ का पत्र मिला।

मैं आपके साथ इस बात में सहमत नहीं हूँ कि एक अवधि के बाद किसी आदमी को किसी संस्था के पद से हट ही जाना चाहिए। आपने लिखा कि ऐसा होने से अधिक व्यक्तियों को काम करने का अवसर दिया जाएगा सो ठीक है लेकिन काम करने वाले व्यक्ति अगर हों तो कामों की क्या कमी है ! हिंदुस्तान में तो आज इतने काम करने पड़े हैं कि कोई करना चाहे तो जिस क्षेत्र में काम शुरू कर सकता है। सभापति या अध्यक्ष बन कर ही कोई काम कर सके, ऐसा तो नहीं होना चाहिए।

आप चार वर्ष से काम कर रहे हैं तो मेरी दृष्टि में यह आवश्यक नहीं है कि आप इसे छोड़ें ही। आपको काम करते रहना चाहिए।

आशा है आप सानन्द होंगे।

आपका
भागीरथ कानोडिया

(चूरू जिला हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष पद के दायित्व से मुक्त होने के सन्दर्भ में दिये गये पत्र का प्रत्युत्तर)

सहायक सचालक समाज कल्याण, बीकानेर

अव गजकाय पत्राक ४२७६ — दिनाक २८ ६ ५८

श्री कन्हैयालालजी सठिया

आपको सूचित करते हुए प्रसन्नता इस बात की हो रही है कि सुजानगढ म हरिजनो के हिताथ एक सस्कार केन्द्र खोलने का निश्चय किया गया है जिसम दिन म हरिजनो की औरत लडकिया हस्तकला एव शक्षणिक ज्ञान पा सकेगी। जिस के चलाने के लिये एक महिला कल्याण कायकर्ता भी होगी जिसका ग्रेड ६० स १४० तक का है। इस पद के योग्य कोई महिला मिल सके तो आप उनका प्रायना पत्र यहा तत्काल भेजने की कपा कर और एम्पलायमण्ट एक्सचेंज बीकानेर म रजिस्ट्रेशन के लिये भी उचित कायवाही शुरू कर द। उक्त केन्द्र को खोलने के लिये हरिजन एव पिछडी जातियो या सवण मोहल्लो के बीच अच्छा सा मकान देखना है। मकान जहा तक हो सक बिना किराये मिल जाये तो ठीक है। ऐसा न मिल सके तो फिर उचित व्यवस्था कर ली जाये।

पत्र आप अपन आदमी के साथ भजने का कष्ट करे। कारपटरी स्कूल क सफल छात्रो को इनाम वितरित करना है।

उपरोक्त दोनो काय श्री भीखा भाई स जुलाई के प्रथम सप्ताह या दूसरे सप्ताह म सम्पन्न करवाना है। इसलिये आपस प्रायना है कि आप अपने विचार शीघ्र ही हम भेजने का कष्ट करें ताकि उसक पहल म आपसे आकर मिल लू।

शम्भुदत्त शर्मा
सहायक सचालक समाज कल्याण
बीकानेर

OFFICE OF THE ASSTT DIRECTOR SOCIAL WELFARE DEPARTMENT

D O No 4001/ /Estt/57 58

Bikaner
Dated 3rd January 1958

My dear Shri Kanhaiyalalji

Thank you much for your kind letter dated 31 12 57 One Social Education Centre has been reserved for Sujangarh But as discussed with you the application for the appointment of the Part time worker should come through you

Moreover I may kindly be informed whether suitable accommodation has been selected for the centre or not and whether 20 or more adults will be available for the centre or not

On receipt of above information further action will be taken to start the centre

With regards

Yours sincerely
Shantilal Gupta

राजस्थान सरकार

कायालय महायक सचालक समाज कल्याण विभाग बाकानेर

क्रमाक ५१६७ नियुक्ति   िनाक ३१ ७ ५६

श्रीमान क हैयालालजी सठिया
अध्यक्ष
जिला हरिजन सवक सघ
सुजानगढ

विषय सस्कार क द्र सचालित करने हेतु

प्रसग आपका पत्र क्रमाक शून्य िनाक २६ ७ ५६

उक्त प्रासगिक पत्र क उत्तर म लख है कि सस्कार क द्र सुजानगढ म शाघ्र सचालित करने का व्यवस्था की जा रहा है जिसक लिये आवश्यक सामान क्रय किया जा रहा है। सम्भवत वह अगस्त क ततीय सप्ताह म काय शुरू कर दिया जायगा।

२ हरिजना का भवन निर्माण हेतु इस विभाग द्वारा कोई कज नहा दिया जाता है अपितु अनुदान ७५०/ रु० प्रति परिवार सुव्यवस्थित आवास निर्माण हेतु दिया जाता है जा इस तरह का अब इस विभाग के पास कोई प्रावधान नहा है। क्या कि इस मद की रकम अ य स्थाना पर आदश बस्ती हेतु तय हा चुकी है।

३ श्री हनुमान दत्त जी समाज कल्याण कायकर्त्ता चूरू इस समय महिला आश्रम गह चूरू का काज द रह है क्या कि उस आश्रम गह क अधिक्षक का स्थानान्तर हा चुका है। अ य महिला की नियुक्ति होने पर श्री हनुमान दत्त जी सुजानगढ जा कर आप स सम्पक स्थापित करेंगे।

४ मैं स्वय माह अगस्त म उपरोक्त बारे म बातचीत करने क लिये आ रहा हूँ।

सहायक सचालक
समाज कल्याण विभाग
बीकानेर

OFFICE OF THE ASSTT DIRECTOR SOCIAL WELFARE DEPARTMENT BIKANER

D O No /Estt/59 60/9124 Dated 24 12 54

My dear Shri Sethiaji

I thank you very much for your D O letter dated 17 12 59 Regarding Sanskar Kendra to be started in Sujangarh I have appointed Shrimati Shanti Devi Sharma as Lady Welfare Worker and it is expected that she will be reaching Sujangarh within a couple of days

Regarding Carpentary tools to be awarded to the successful candidates I am taking necessary action and shall let you know very soon about it

With regards

Yours sincerely
Shanti Lal Gupta

राजस्थान हरिजन सेवक संघ

अध्यक्ष भागीरथ कानोडिया
मंत्री भवरलाल भादा   दिनांक ०४ ७ १९६१

प्रिय श्री सुखाड़िया साहब

आपका ता० ४ ३ ६१ का पत्र प्राप्त हुआ। सुजानगढ तहसील में हरिजन छात्रावास खोलने की बात स्वागत योग्य है और मैं इस बारे में प्रयत्न करूंगा लेकिन यह व्यवस्था अगले वर्ष ही संभव दिखती है कारण अब छात्रावास की स्वीकृति मिलना संभव नहीं दिखता है।

आशा है आप प्रसन्न होंगे और योग्य सेवा सूचित करते रहेंगे।

आपका
भवरलाल भादा
मंत्री

कार्यालय प्रशिक्षण अधिकारी समाज कल्याण विभाग बीकानेर

क्रमाक १०२६२ जनग्न/बा के/पुनवास   दिनाक २८ २ ६

श्री कन्हैयालालजा सठिया
अध्यक्ष चूरू जिला हरिजन सवक सघ
सुजानगढ।

महोदयजी

विषय   हरिजन पुनवास हेतु सहायता

आज आपका पत्र मय मकान सहायता के ४४ फार्मों के मिला इसम म्युनिसिपल बाड की ओर स कुछ कमी पूरी कराना है जो पत्र बाकर श्री मातीलाल जाय को समझा दी गई है।

इनम प्रमुख शत यह ह कि प्रार्थी क पास जिस जमीन पर वह मकान बनाना चाहता है उस का पट्टा होना चाहिए। इन लोगो के पास ऐसा पट्टा नहीं है हालाकि मुझे यह जबानी बताया गया है कि पीढिया स यह जमीन इनक कब्जे म है। पट्टे पर इस लिए जोर दिया जाता है कि पहल कुछ एक स्थानो पर इस प्रकार मकान बनाते समय जमीन के कब्जे के मकान को लकर झगडा खडा हो गया और निमाण काय चालू ही नहा हो सका अथवा उस बीच म ही रोकना पडा सो इस हतु ये फाम म्युनिसिपल बाड म भिजवाए जा रहे हैं।

इन पर नाच लिखी बातें भी पूरी होना चाहिए।

१ यह प्रमाणित किया जाता है कि समाज कल्याण विभाग स इन्हें इस काय हेतु पहले कभी भी सहायता नहीं मिली।

२ इनके पूर होने पर आगे कायवाही की जावेगा।

विनीत
जगदीश
प्रशिक्षण अधिकारी

प्रतिलिपि मय फामा क श्री अध्यक्ष म्युनिसिपल बाड सुजानगढ के पास आवश्यक कायवाही हेतु प्रपित है। यदि इन लागा का पट्टा अभी नहा दिया जा सकता ता जिलाधीश महादय स यह तस्दीक कराके भिजवावें कि यह जमान इन्हा की है इस पर इन्हे मकान बनाने की आज्ञा है। तथा समाज कल्याण विभाग की सहायता स इन फार्मों पर इन्हे मकान बनाने क लिए सहायता दा जानी उचित है।

२ प्रतिलिपि श्री सहायक सचालक महादय समाज कल्याण विभाग जाधपुर वास्ते सूचनाथ।

प्रविक्षण अधिकारी
समाज कल्याण विभाग
बाकानेर

कार्यालय परिवीक्षण अधिकारी समाज कल्याण विभाग बीकानेर

क्रमांक ३४१ जनरल/वा के ६२ ६४ दिनांक २० ४ ६३

श्री कन्हैयालाल सेठिया
अध्यक्ष
चूरू जिला हरिजन सेवक संघ
सुजानगढ़

विषय वर्ष सहायक हरिजन छात्रों को छात्रवृत्ति प्राप्त न होने के सम्बन्ध में

प्रसंग आपका पत्र संख्या शून्य दिनांक १६ ४ ६३

उपरोक्त प्रसंग में लेख है कि इस वर्ष श्री संचालक शिक्षा विभाग को छात्रवृत्ति के बजट कम होने के विचार में बजट और बढ़ाने के लिए लिखा गया था लेकिन उनको इससे अधिक बजट की आवश्यकता न होने की सूरत में कोई कार्यवाही नहीं की गयी हालांकि इस में कोई भी छात्र छात्रवृत्ति से वंचित नहीं रहना चाहिए।

अगर किसी और कारण से उन बच्चों को छात्रवृत्ति नहीं मिली हो तो आप मुझे पूरे विवरण सहित सूचित करें ताकि मैं इस बाबत शिक्षा विभाग से सम्पर्क स्थापित करके उचित कार्यवाही करा सकूं।

परिवीक्षण अधिकारी
समाज कल्याण विभाग
बीकानेर

कार्यालय समाज कल्याण अधिकारी बीकानेर

क्रमांक ४२६ दिनांक २७ २ ६५

अध्यक्षजी
चूरू जिला हरिजन सेवक संघ
सुजानगढ

विषय सुजानगढ की मासी बस्ता म प्राथमिक शाला हेतु।

आपका प्रार्थना पत्र दिनांक १६ १ ६५ का सुजानगढ की मासा बस्ता म प्राथमिक पाठशाला प्रारम्भ करने हेतु प्राप्त कर निवेदन है कि राज तान्त्रिक विकेन्द्रीकरण याजना क अन्तगत विभाग द्वारा सचालित समस्त पाठशालाए एव उनसे सम्बन्धित बजट प्रावधान आदि पचायत समितिया का हस्तान्तर कर दिया गया है। ऐसी अवस्था म इस विभाग द्वारा कोई शाला प्रारम्भ करने म विवशता है। फिर भी म यह निवेदन करना चाहूगा कि अनुसूचित जन जाति एव अनुसूचित जातिया का जो सुरक्षित (रिजवड) कान्स्टीच्यूएन्सी है, उसम शालाए प्रारम्भ करने के लिये सचालक प्राथमिक एव माध्यमिक शालाए राजस्थान बीकानेर के पास प्रावधान है। अत आप यह सूचित करने का कष्ट करें कि क्या सुजानगढ सुरक्षित कान्सटीच्यूएन्सी है ? ताकि यह प्रस्ताव श्री सचालक प्राथमिक एव माध्यमिक शालाए बीकानेर को प्रेषित किया जा सके।

चान्दमल जैन
सोसल वेलफेयर अधिकारी
सोसल वेलफेयर डिपाटमेन्ट
बीकानेर

कार्यालय सचालक समाज कल्याण विभाग राजस्थान जयपुर

पत्राक डव/६५ ६६/८२६६२ दिनाक २२ ६ ६५

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
अध्यक्ष
चूरू जिला हरिजन सेवक सघ
सुजानगढ

विषय सुजानगढ के महतरो को मकान सहायता

उपरोक्त विषय म दिनाक १६ ८ ६५ को आपने माननीय मत्री समाज कल्याण को जो पत्र लिखा उसके सम्बन्ध म लेख है कि सुजानगढ के महतर परिवारो के आवेदन पत्रो म कुछ कमिया रह गई थी जिसके कारण उनको वापिस समाज कल्याण अधिकारी बीकानेर को लौटा दिया गया है। आवेदन पत्रो के पूर्ण हो कर आने पर आवश्यक कार्यवाही की जा सकेगी। किन्तु कृपया यह भी बात ध्यान म रक्खें कि गत वर्ष जो अनुदान गृह निर्माण हेतु स्वीकृत किया गया था उससे मकान ६ माह म पूर्ण करने थे। अत जब तक वे मकान पूर्ण नही हो जाते तब तक नये मकानो के लिये अनुदान स्वीकृत करना कठिन होगा।

सचालक
समाज कल्याण विभाग

जगजीवन राम
रक्षा मंत्री भारत

नई दिल्ली

दिनाक ७ अगस्त १९७३

प्रिय श्री कन्हैयालाल

आपका दिनाक ३० ७ ७३ का पत्र मिला। ज्यो ज्यो हरिजनो मे जागृति आवेगी और आत्म सम्मान की भावना मे वे अपमान और अत्याचार का प्रतिरोध करेगे त्यो-त्यो उन पर अत्याचार बढेगा। शासन के स्थानीय अधिकारियो द्वारा न्याय नहीं मिल पाता हो तो अत्याचार करने वालो का हौसला बढता है। इस सम्बन्ध मे सवर्ण नेताओ द्वारा आन्दोलन अधिक उपयुक्त और प्रभावशाली होगा।

शुभकामना सहित

आपका
जगजीवन राम

श्री कन्हैयालाल सेठिया
३ मनोहर … कलकत्ता १

मोहन छागाणी
स्वास्थ्य मंत्री

जयपुर
राजस्थान

अ० शा० प० एफ/(ई०एम०पी०) म०क०/७२ ७३/६७१२६

दिनांक २ दिसम्बर १९७५

प्रिय श्री सेठियाजी

शैक्षणिक संस्थाओं में पिछड़ी जातियों के छात्रों को शिक्षा शुल्क से मुक्त करने के लिये जाति प्रमाण पत्रों के संबंध में मुख्य मंत्री महोदय के नाम आप का पत्र दिनांक ३ ७ ७५ प्राप्त हुआ। इस संबंध में जाति प्रमाण पत्र जारी करने के लिये सैकण्डरी व हायर सैकण्डरी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों संबंधित पंचायत समितियों के प्रधानों मजिस्ट्रेटस राजपत्रित अधिकारी संसद सदस्य एवं विधान सभा सदस्यों को अधिकृत करने के आदेश शीघ्र ही जारी किये जाने की कार्यवाही की जा रही है। आदेश जारी होते ही उसकी एक प्रतिलिपि आपके पास भिजवा दी जावेगी।

सधन्यवाद।

भवदीय
मोहन छागाणी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सुजानगढ़

हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री राजस्थान
नं० ६०१८/CMO/७६

जयपुर

दिनांक १५ जुलाई ७६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

हरिजनों आदिवासियों व पिछड़ी जातियों को जाति सम्बन्धी प्रमाण पत्र देने के सम्बन्ध में सरल प्रक्रिया अपनाने का सुझाव देते हुए आपका पत्र दिनांक २ ७ ७६ प्राप्त हुआ। मैं इस प्रस्ताव का परीक्षण करवा रहा हूँ।

धन्यवाद सहित

आपका
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
अध्यक्ष जिला हरिजन सेवक संघ
सुजानगढ़

राजस्थान सरकार

नमाक ४८५ दिनाक ११ ७ ८६

आर मे
कायकर्त्ता
ममाज कल्याण विभाग
चूरू

निमित्त
प्रधान
चूरु जिला हरिजन मेवक मघ
सुजानगढ

थामान मठिया माहब

जयहिद सस्कार केद्र क लिए जा मकान मिला है वह आप ही के प्रयत्नो का फल है। म अभी महिलाश्रम गह म काय कर रहा हूँ। यहा की अधाक्षिका महोदया अभी छुट्टी पर है। अत जब तक वह उपस्थित न हो म यहा से मुक्त नही हो सकूगा। इसके अतिरिक्त आप म सचालक को मुझे आपके यही भेजने को बाध्य करें उनकी स्वीकति मिलने पर म वहा आ मकूगा। काय और मकानो का नक्शा भी वहा से उपलब्ध हो मकेगा।

धन्यवाद।

कायकता
ममाज कल्याण विभाग
चरू

छगनलाल भारती
हरिजन बस्ती
सुजानगढ़ (चूरू) राजस्थान

दिनांक ८.९.८६

परम पूज्य एवं श्रद्धेय भार्गव जी श्री कन्हैयालाल सेठिया जी को
सादर नमस्कार।

आपका पत्र मिला पढ़कर मेरी भावुकता का अहसास हुआ। वास्तव में हमारा जाति बदलने का विचार तो स्वप्न में भी नहीं आ सकता। केवल मात्र एक जाति सम्बोधन के लिए शब्द ढूंढने की कोशिश मात्र थी ताकि जाति के लिए प्रचलित शब्द भंगी बोलने से अधिक रूप के लिए प्रचलित शब्द के स्थान पर मानव प्रभाव के ना अहसास का निवारण मात्र के लिए सोचा था जो हमारी वास्तव में भावुकता ही रही अन्यथा जाति एवं समाज में लगाव व प्रेम बना कर रखते हुए हम प्रगति की ओर ले जाने हेतु अग्रसर रहेंगे।

आपके द्वारा भेजा गया प्रस्ताव सभी प्रतिनिधियों द्वारा पढ़ा गया तथा पढ़ कर भी सुनाया गया जिसके लिए सभी ने आपके प्रति आभार व्यक्त करते हुए भावात्मक विचार का त्याग कर समाज के रचनात्मक कार्य में रुचि लेने का निश्चय किया जो आपकी आशीष से सदा सफल रहेगा।

आपका शुभचिंतक
छगनलाल भारती

हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री राजस्थान

जयपुर
दिनांक ११ ९ ८७

अ०शा० पत्र न० माएन ३/एम ०८(१)
स० क०/८७/४७३० जयपुर

प्रिय श्री मठियाजी

आपका दिनांक ८ ८ ८७ का पत्र एव उसके साथ नेहरू रोजगार योजना के अन्तर्गत मुजफ्फरगढ़ में महिला सिलाई केन्द्र खोलने के सम्बन्ध में प्रतिवेदन भी प्राप्त हुआ।

मैं इस पर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दे रहा हूँ।

आपका
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
३ मदन मोहन बर्मन कलकत्ता ७०० ००१

शिवचरण माथुर
मुख्य मत्री गजस्थान

क्रमाक मुम/जमप्र/८८/७२१६ दिनाक १ १० १९८८

प्रिय सठियाजी

नाथद्वारा म हरिजन प्रवेश क सन्दर्भ म आप द्वारा व्यक्त की गई भावनाओ क लिए कृतज्ञ हूँ।

मुझे विश्वास है कि इस प्रकार क सामाजिक अनुष्ठाना म आपका सम्यक पूववत् प्राप्त हाता रहगा।

शुभकामनाओ सहित

भवनिष्ठ
शिवचरण माथुर

श्री कन्हैयालाल सठिया
सठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मगा लेन कलकत्ता ७०० ००१

शिवचरण माथुर
मुख्य मंत्री

राजस्थान जयपुर

दिनांक १८ अक्टूबर १९८९

अ०शा० पत्र क्रमांक मुम/१/प० १२(१५) गृह/८६/९२९४

प्रिय श्री सेठियाजी,

कृपया आप अपने पत्र दिनांक १५ सितम्बर १९८९ का अवलोकन करें जिसमें आपने कोटा में हुए साम्प्रदायिक दंगों के सम्बन्ध में राज्य में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिये कठोरतम कदम उठाये जाने का उल्लेख किया है।

मैं आपको सूचित करना चाहूंगा कि राज्य में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिये समुचित कदम उठाए गए हैं और मैं आपको विश्वास दिलाना चाहूंगा कि किसी भी दोषी व्यक्ति के प्रति कार्यवाही करने में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरती जाएगी।

सादर।

सद्भावी
शिवचरण माथुर

श्री कन्हैयालाल सेठिया
३ मैंगो लेन,
कलकत्ता ७०० ००१

राजस्थान सरकार

कार्यालय मंत्री गृह एवं जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी

क्रमांक निस/म /गृह जनस्वा/नि/८६ दिनांक

महानिदेशक पुलिस
राजस्थान जयपुर

महोदय

लाडनूं में हुए साम्प्रदायिक दंगा बाबत श्री कन्हैयालाल मठिया सेठिया ट्रेडिंग कंपनी ३ मैंगो लेन कलकत्ता के पत्र दिनांक २० १० ८६ एवं तार की प्रति माननीय मंत्री महोदय के कार्यालय में प्राप्त हुई है जो निर्देशानुसार मूल रूप में आपको प्रेषित कर निवेदन है कि उक्त संबंध में निष्पक्ष समुचित कार्यवाही करावें।

जी के तिवारी
निजी सचिव
मंत्री गृह एवं जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी

क्रमांक निस/म /गृह जनस्वा/नि/८६/G २६ दिनांक २० ११ ८६

प्रतिलिपि श्री कन्हैयालाल सठिया सेठिया ट्रेडिंग कंपनी ३ मैंगो लेन कलकत्ता ७०० ००१ को सूचनार्थ प्रेषित है।

जी के तिवारी
निजी सचिव,
मंत्री गृह एवं जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी

श्री सेठिया द्वारा प्रेषित
कतिपय महत्वपूर्ण पत्र

(विविध)

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh
Dated 2nd February 1962

Hon ble Chief Minister
Government of Rajasthan
Jaipur

Sub **Construction of new Building for Hospital at Sujangarh**

Sir

I write to remind your goodself of my verbal talks with you and my previous letter on the above subject handed over personally on 30th January 1962

For your ready reference I may again add that Seth Ranglalji Dhanraji and Shiv Prasadji Bagaria of Sujangarh have donated a sum of Rs 2 lacs for the construction of a new building for Hospital at its old site This offer was duly accepted by the Govt vide Director of Public Health Office No D21159/F 1 (7) (25) MPH/57 dated 31st December 1959

The donors started construction work but very soon it was suspended in compliance of the orders of the Executive Engineer P W D (B & R) Bikaner No dated Suspension of work has resulted in much loss to the donors as well as to the public The Executive Engineer has issued such orders on the ground that he has not received sanction for demolishing the old building In this connection I have the honour to bring to your kind notice that the condition of the old building is very deplorable and needs immediate reconstruction According to the Gift Deed executed by the donors the new building will be

handed over to the Government It is therefore earnestly requested that necessary orders be kindly issued to the concerned authorities so that the donors may be allowed to demolish the old building and to utilise its materials in the construction of the new building

I am confident that this matter will receive personal attention of your kind honour

Yours respectfully
Kanhaiyalal Sethia

Copy submitted to

1 Seth Ranglalljee Bagaria Bagaria Bhawan
165 Chittaranjan Avenue Calcutta 7

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh
Dated August 28 1963

Respected Sukhadia Sahib

I have the honour to bring to your kind notice that the new building of Civil Hospital Sujangarh constructed by the Bagaria family of Sujangarh is nearing completion and that the donors will like to get it inaugurated in near future It is therefore requested that the essential and necessary equipment be supplied before the inauguration ceremony is performed I am sending herewith a list of requirements for the new hospital for your kind perusal and request your honour to arrange for them at your earliest convenience

With the kindest regards

Yours respectfully
Kanhaiyalal Sethia

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh
Dated August 28 1963

Respected Baraktulla Khan Sahib

I had an opportunity to have a talk with you recently at Jaipur while I had been in connection with the approval of Water Scheme for Ladnun On that occasion I had also brought to your kind notice that the new building of the Civil Hospital Sujangarh constructed by the Bagaria Family of Sujangarh was nearing completion and that its inauguration ceremony might be arranged soon I had requested your honour to supply necessary equipments to meet the needs of the new hospital You were kind enough to ask for a list of the requirements I am therefore sending you the desired list and request you again to arrange for the equipments before the new building is inaugurated

Thanking you

Yours faithfully
Kanhaiyalal Sethia

Ministry for Health
Rajasthan Govt
Jaipur

Copy submitted to

1 The Chief Minister of Rajasthan Jaipur
2 Seth Ranglal Dhanraj and Shivprasad Bagaria Calcutta

Kanhaiyalal Sethia

Sujangarh
Dated 7 4 1964

To

To District Medical & Health Officer
Ratangarh

Through
The Medical Officer Incharge
Sujangarh

Sub **Telephone facility for Sujangarh Hospital**

Dear Sir

I bring to your kind knowledge that Sujangarh Hospital is lacked of telephone facility as such it is likely that the patients and people living in fartherly situated residences from the Hospital requiring immediate medical help may lose their lives due to not reaching the hospital in time Telephone is one of the necessary facilities for a hospital and in want of which many will be harmed It is therefore emphatically advised that telephone must be installed in the hospital building at the earliest

Donor of the Sujangarh Hospital Building Sri Ranglalji Bagaria is agree to pay all costs for installation of the Phone subject to the payment of regular expenses of phone by your department

Hoping that you will apprise me with your reply into the matter at the earliest

Yours faithfully
Kanhaiyalal Sethia

Copy forwarded to Sri Ranglalji Bagaria Calcutta for information

anhaiyalal Sethia
Member Rajasthan State
ransport Authority

Ratan Niwas
P O Sujangarh
(Rajasthan)
Dated 9th August 1960

espected Shri Kishori Lalji Sahib

I hope this will find you in the best of spirits

I take this opportunity to approach you again in connection
ith the tarring of road joining Ladnun and Sujangarh In last
eptember I had the privilege of meeting you personally at Jaipur
nd you were kind enough to assure that the work will be done
y September 1960 I suppose it is the appropriate time to put
he same request before you so that it may be executed during
he current financial year It is needless to add that the said road
which joins two important commercial towns is in a very poor
condition and it worsens to a miserable extent in rainy season
I believe my request will receive your personal attention

Thanking you

Yours sincerely
Kanhaiyalal Sethia

Kanhaiyalal Sethia
Member Rajasthan State
Transport Authority

Ratan Niwas
P O Sujangarh
(Rajasthan)
Dated 8th August 1960

The General Manager
Northern Railways
New Delhi

Sir,

Sub **Provision of amenities at Sujangarh Sation**

I beg to bring to your kind notice some of the discomforts experienced by the passengers at Sujangarh station and request you to ameliorate them as soon as possible

Sujangarh is a very important station on Jodhpur Delhi route The majority of its population belongs to business class who have got heavy traffic of goods and passengers The railway authorities are in know of all these facts fully well

(1) The present platform falls much short of its needs It is therefore requested that the platform and the existing shed may be reasonably extended

(2) The number of Bombay going passengers on this route is sufficiently high on account of their business connections They experience much hardship in transit due to the compulsory change of train at Jodhpur or Marwar Jn In order that this difficulty may be obviated it is requested that the present Delhi Jodhpur mail be kindly extended upto Ahmedabad

(3) The Sleeping Car which was formerly attached to the Delhi Jodhpur mail was discontinued from October last Now that the passengers are gradually realising the utility of Sleeping Cars they are feeling its necessity more and more Would you kindly reconsider to continue the Sleeping Car on this route ?

(4) The present shed of the Sujangarh station is running short of fans for want of which the passengers get restless in the hot season Only recently two fans have been removed from the shed by the railway officials to utilise them elsewhere It is therefore requested that at least two new fans be kindly provided for this station to take the place of the old ones At the same time the platform also needs a big sized clock to be commonly used by every passenger

It is hoped that the above difficulties of the general public will attract your personal attention

Thanking you

Yours faithfully
Kanhaiyalal Sethia

Sujangarh
Date 9 8 1960

Copy submitted to the Chief Commercial Supdt Head Quarters Office Baroda House New Delhi for favour of kind consideration and necessary action

Kanhaiyalal Sethia

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh
Dated 20th October 1963

Hon ble Sri Dasappa Sahib

I have the honour to bring to your kind notice the difficulties faced by the people of this area and request your honour to alleviate them in the light of the following facts

It is a well known fact that the trains running between Delhi & Jodhpur and between Delhi & Bikaner are generally overcrowded with passengers who have their business concerns in Bengal and Assam Many of these passengers reach Delhi from Calcutta side in the morning and according to the present timing of trains leaving Delhi for Jodhpur or Bikaner they have to stay at Delhi for the full day because both the Jodhpur and Bikaner Mails are available to them in the night Thus an additional main train leaving Delhi for Jodhpur in the day time is needed very much We approached the Railway ministry and other authorities to fill up this gap several times but it was not accepted on one plea or the other

Now through a Notification issued by Northern Railway we have come to know that the passenger train running between Rewari and Churu has been extended upto Ratangarh This step will no doubt help the passengers to some extent but the trouble of the people of Sujangarh Chhapar Parihara and Jaswantgarh still remains intact Hence it may prove still more beneficial if the said train is extended upto Sujangarh This extension if sanctioned will save a lot of time and trouble of the passengers coming from Bikaner and Sardarshhar sides for these places At present they have to stay at Ratangarh for the whole night which will be avoided by the proposed extension Sujangarh is a very important Railway station on this route and is also a big junction of buses It will also minimise the chances of over

croadedness in the main train which is an ordina y fea u e at present

I earnestly request you to consider my humt le sugges on for wh ch the publ c of this area will feel grateful to you

Yours fa thfully
Kanhayalal Se h a

To
Sri H C Dasappa
Minister of Railway
Government of India
New D lhi

TELEGRAM

Hon ble Lalbahdur Shastri
Prime Minister
New Delhi

Public avail with pride the facilities of Jodhpur Delhi mail via Sujangarh Ratangarh sanctioned by you as Railway Minister Rumour of withdrawing this facility is highly regretable Existing arrangement be supported by additional Mail Train to cope with increasing traffic

Kanhayalal Sethia

Not to be telegraphed

Kanhayailal Sethia
Sujangarh

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh (Rajasthan)
Dated 21 12 1967

To
The General Manager
Northern Railway

Sir

Sub **(i) Proposal for change in timing of Bikaner Express**
(ii) Provision for a through Sleeper Coach between Ratangarh and Ahmedabad
(iii) Provision of amenities at Sujangarh Station

I beg to bring to your kind notice some of the discomforts experienced by the passengers of this area and request you to ameliorate them as soon as possible

1 The present Bikaner Express leaves Delhi at 8 35 A M and does not provide connections to the passengers arriving from Calcutta side by Janta Express Upper India Express and Air Conditioned bi weekly Express and they have to wait uptil 20 20 P M The condition of the passengers coming from Assam region via Lucknow is not less inconvenient

The arrival timings of the trains from Calcutta side are as follows

	Departure time from Howrah	*Arrival time at Delhi*
(a) Delhi Express	21 15	6 05
(b) Janta Express	21 40	8 55
(c) Upper India Express	21 25	10 05
(d) A C bi weekly Express	11 20	10 55
(e) Kalka Mail	19 40	19 45

From the above timings it is clear that the first four trains reach Delhi upto 11 00 A M Therefore if the present Bikaner Express

leaves Delhi at 11 00 A M it will provide a convenient connection to passengers coming from Calcutta and Assam side

2. The number of Bombay going passengers on this route is sufficiently high on account of their business connections They experience much hardship because of no facilities of reservations and a compulsory change of train at Jodhpur or Marwar Jn In order that this difficulty may be obviated it is requested that a Sleeper Coach should be run between Ratangarh and Ahmedabad by train No JRD and 2 JRD from and to Ratangarh Regarding this in a letter from the Secretary Railway Board dated 29-1 58 Ref 57 TT(N)/4/N/14 we were assured that a through IIIrd class bogie will be run between Ratangarh and Ahmedabad with effect from 1 2 1958 But we do not know why this assurance was not put into practice

3 The passengers travelling from this area to Calcutta side do not get reservations in connecting trains from Delhi although the reservation and Booking is done sufficiently in advance and telegrams for further reservations are sent The telegrams sent for further reservations from Delhi now have to go a long way via Degana Merta Road Bikaner Bhatinda and Rewari and are subsequently delayed If telegrams are sent direct to Ratangarh and from there to Delhi the process may be sped up

4 The present platform shed falls much short of its need It is therefore requested that the existing shed may be reasonably extended

5 A Water Cooler should be provided at the Platform to provide cold water during Summer season

6 The gate for coming and going inside the station to platform is very narrow and as such very inconvenient A collapsable gate should be provided similar to that at Ratangarh station

7 The Station Master should have a separate room The present waiting room may be converted into Station Master s room And a separate and well furnished waiting room should be constructed

8 Sujangarh town is a very big business Centre and as such the existing godown at this station falls too short to meet the needs of this place Much of the goods often remain exposed to rains and sun and are thus spoilt This is therefore suggested that the present godown and the goods shed be extended or another larger one be constructed

9 A big size electric clock should be provided at the platform for convenience to passengers

I earnestly request you to consider my useful suggestions for which the public of this area will feel grateful to you

Yours faithfully
Kanhaiyalal Sethia

कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास सुजानगढ

सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन, कलकत्ता १
दूरभाष २३ ६३२४
दिनांक ५, अप्रल १९७२

आदरणीय श्री ललितनारायण बाबू

कल के समाचार पत्रों में आपका यह वक्तव्य पढकर बहुत प्रसन्नता हुई कि देश की समस्त छोटी रेल लाइनों को बडी रेल लाइनों में बदल दिया जायेगा। आपका यह निर्णय अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

राजस्थान रेलवे लाइनों के विकास एव वृद्धि की दृष्टि से अब तक बहुत ही उपेक्षित रहा है। भारत का सीमा प्रान्त होने के नाते छोटी रेल लाइनों को बडी रेल लाइनों में बदलने के कार्यक्रम में राजस्थान के सामरिक महत्व को ध्यान मे रखते हुए प्राथमिकता दी जानी उचित है। साथ ही साथ इसी योजना के अन्तर्गत अकाल ग्रस्त लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो सकेगा।

निम्न छोटी रेल लाइनों को बडी रेल लाइनों मे बदलने के सम्बन्ध में आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ

१ दिल्ली से रेवाडी लुहारू रतनगढ सुजानगढ होते हुए जोधपुर जाने वाली छोटी रेल लाइन।

२ सवाई माधोपुर से जयपुर फुलेरा जोधपुर होते हुए अहमदाबाद तक जाने वाली छोटी रेल लाइन।

३ बीकानेर से गगानगर तक जाने वाली रेल लाइन।

सूचनार्थ निवेदन है कि इस सम्बन्ध में सन १९५३ में इस क्षेत्र के नागरिकों का एक प्रतिनिधि मडल मेरे नेतृत्व मे स्व० श्री लालबहादुर जी शास्त्री से भी मिला था स्व० शास्त्रीजी ने इस माग पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया था।

आशा है कि आप राजस्थान की इस उचित माग को ध्यान मे रखते हुये इस सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश देने की कृपा करेंगे।

विनीत

कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास सुजानगढ़ Dated 24 5 1975

Hon'ble Shri Kamalapati Tripathi,
Minister for Railways
Rail Bhawan
New Delhi

Dear Shri Tripathiji

Sub **Route diversion of Jodhpur Mail (93 up 95 Dn)**

In the recent weeks there have been strong rumours in the air that the present route of Jodhpur Mail will be changed and the train will run via Rewari Reengus Phulera While no official confirmation on this has been available so far the very possibility is causing great anxiety to the people of all the towns in the Degana Sujangarh Ratangarh Churu Loharu Rewari region linked by Jodhpur Mail under the existing route Thus in case the Railway Authorities are actually contemplating a change in the route I wish to convey to you on behalf of the people of the concerned region a strongest protest against such a step and would like to draw your kind attention to the following relevant facts

The region to be affected most adversely by the above change will be the one between Degana and Ratangarh To the people of this region no other direct train is available to reach Delhi which is their sole link to the rest of India People from the important towns like Sujangarh and Ladnun in this region have business and other interests all over India and these towns are also the major transport heads for neighbouring areas serviced only by road transport Therefore it is crnical that these towns have a direct and convenient train service to Delhi

Apart from the Degana Ratangarh region the whole sector between Degana Sujangarh Ratangarh Churu Rewari will be adversely affected because even at present the passenger traffic in this section is far greater than the combined capacity of Jodhpur Mail and Bikaner Express Both these trains run most

कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास मुजानगढ

सेठिया ट्रेडिंग कं०
३ मैंगा लेन, कलकत्ता १
दूरभाष २३ ६३२४
दिनांक ५ अप्रल १९७२

आदरणीय श्री ललितनारायण बाबू

कल के समाचार पत्रों में आपका यह वक्तव्य पढकर बहुत प्रसन्नता हुई कि देश की समस्त छोटी रेल लाइनो को बडी रेल लाइनों में बदल दिया जायेगा। आपका यह निर्णय अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

राजस्थान रेलवे लाइनों के विकास एवं वृद्धि की दृष्टि से अब तक बहुत ही उपेक्षित रहा है। भारत का सीमा प्रान्त होने के नाते छोटी रेल लाइनों को बडी रेल लाइनों मे बदलने के कार्यक्रम में राजस्थान के सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए प्राथमिकता दी जानी उचित है। साथ ही साथ इसी योजना के अन्तर्गत अकाल ग्रस्त लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो सकेगा।

निम्न छोटी रेल लाइनों को बडी रेल लाइनों में बदलने के सम्बन्ध में आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ

१ दिल्ली से रेवाडी लुहारू रतनगढ सुजानगढ होते हुए जोधपुर जाने वाली छोटी रेल लाइन।

२ सवाई माधोपुर से जयपुर फुलेरा जोधपुर होते हुए अहमदाबाद तक जाने वाली छोटी रेल लाइन।

३ बीकानेर से गंगानगर तक जाने वाली रेल लाइन।

सूचनार्थ निवेदन है कि इस सम्बन्ध में सन १९५३ में इस क्षेत्र के नागरिकों का एक प्रतिनिधि मडल मेरे नेतृत्व मे स्व० श्री लालबहादुर जी शास्त्री से भी मिला था स्व० शास्त्रीजी ने इस माग पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया था।

आशा है कि आप राजस्थान की इस उचित माग का ध्यान में रखते हुये इस सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश देने की कृपा करेंगे।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास, सुजानगढ Dated 24 5 1975

Hon'ble Shri Kamalapati Tripathi,
Minister for Railways
Rail Bhawan
New Delhi

Dear Shri Tripathiji

Sub **Route diversion of Jodhpur Mail (93 up 95 Dn)**

In the recent weeks there have been strong rumours in the air that the present route of Jodhpur Mail will be changed and the train will run via Rewari Reengus Phulera While no official confirmation on this has been available so far the very possibility is causing great anxiety to the people of all the towns in the Degana Sujangarh Ratangarh Churu Loharu Rewari region linked by Jodhpur Mail under the existing route Thus in case the Railway Authorities are actually contemplating a change in the route I wish to convey to you on behalf of the people of the concerned region a strongest protest against such a step and would like to draw your kind attention to the following relevant facts

The region to be affected most adversely by the above change will be the one between Degana and Ratangarh To the people of this region no other direct train is available to reach Delhi which is their sole link to the rest of India People from the important towns like Sujangarh and Ladnun in this region have business and other interests all over India and these towns are also the major transport heads for neighbouring areas serviced only by road transport Therefore it is critical that these towns have a direct and convenient train service to Delhi

Apart from the Degana Ratangarh region the whole sector between Degana Sujangarh Ratangarh Churu Rewari will be adversely affected because even at present the passenger traffic in this section is far greater than the combined capacity of Jodhpur Mail and Bikaner Express Both these trains run most

कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास सुजानगढ

सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मगा ल्न वलवत्ता १
दूरभाष २३ ६३२४
दिनाक ५ अप्रल १९७२

आदरणीय श्री ललितनारायण बाबू

कल क समाचार पत्रा म आपका यह वक्तव्य पढकर बहुत प्रसन्नता हुई कि देश की समस्त छोटी रेल लाइनो को वडी रेल लाइना म बदल दिया जाये आपका यह निणय अत्यन्त महत्वपूण है।

राजस्थान रेलवे लाइना के विकास एव वद्धि की दष्टि से अब तक बहुत ही उपेक्षित रहा है। भारत का सीमा प्रान्त होने के नाते छोटा रेल लाइना वडी रेल लाइना म बदलने के कायक्रम म राजस्थान के सामरिक महत्व को ध्यान म रखते हुए प्राथमिकता दी जानी उचित है। साथ ही साथ इसी योज के अन्तगत अकाल ग्रस्त लोगा को रोजगार भी प्राप्त हो सकेगा।

निम्न छोटी रेल लाइना का बडी रेल लाइना मे बदलने के सम्बन्ध म आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हू

१ दिल्ली स रेवाडी लुहारू रतनगढ सुजानगढ होते हुए जोधपुर जाने वा छोटा रेल लाइन।

२ सवाई माधोपुर से जयपुर फुलेरा जोधपुर हाते हुए अहमदाबाद तक ज वाली छोटी रल लाइन।

३ बीकानेर से गगानगर तक जाने वाला रेल लाइन।

सूचनाथ निवेदन है कि इस सम्बन्ध म सन १९५३ म इस क्षेत्र क नागरिका का एक प्रतिनिधि मडल मेरे नेतत्व मे स्व० श्री लालबहादुर जी शास्त्री से भी मिला था स्व० शास्त्रीजी ने इस माग पर सहानुभूति पूवक विचार करने का आश्वासन दिया था।

आशा है कि आप राजस्थान की इस उचित माग को ध्यान मे रखते हु इस सम्बन्ध म आवश्यक निर्देश देने की कृपा करेंगे।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिय

Kanhayalal Sethia

Calcutta
Dated 1st January 1985

Hon ble Sri Bansilalji
Minister for Railways
Govt of India
New Delhi

My dear Sri Bansilalji

Please accept my greetings and best wishes for the New year The assignment of Railway ministry to your charge has generated a wave of enthusiasm in the minds of people of underdeveloped states of Haryana Rajasthan and Madhya Pradesh The pace of Railway development in these states during the past thirty seven years of our independence has been dismal with the result that industrial uplift of these regions has lagged far behind I have been having a continuous correspondence with your predecessors the Late Sri Lalit Narayan Mishra and recently Sri A B A Ghani Khan Chowdhury in this respect but to no tangible effect

Haryana Rajasthan & Madhya Pradesh are inter connected and as you would agree their concentred development not only would mean a development of a large chunk of this country but would also contribute in no small measure to the integrated development of the country as a whole Rajasthan is a frontier state & Railway development of this region is of national importance The present network of Railway lines in these states is of metre gauge which has a limited utility and calls for conversion into Broadgauge on a very high priority Delhi the national capital needs to be connected with Ahmedabad via Rewari Ratangarh Sujangarh & Jodhpur by Broad Gauge A direct Broad Gauge line from Kota to Jaipur would also be very helpful for the people of this area The proposal to convert the Ganganagar Delhi Bikaner link into Broad Gauge should be accelerated while Delhi Ajmer Udaipur should also be placed on the Broad Gauge so that the development of rail links in Madhya Pradesh is reinforced side by side

As you are well aware Rajasthan state is sufficed with precious minerals The towns of Churu Sujangarh Ratangarh

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh (Rajasthan)
Dated June 4 1975

My dear Shri Nahataji

I hope this will find you in the best of your spirits

I take this opportunity to approach you about a very important matter which is likely to become a problem for lacs of poeple of this region I request you to think over the matter seriously and also to take necessary steps to relive the people of the likely suffering

A rumour is in the air of which you might also be aware that a proposal of changing the route of Jodhpur Delhi Mail is under active consideration of the Railway Board If this proposal is materialised it will cause underscribable hardships to the people specially residing in the region stretching from Degana to Rajgarh Perhaps you are aware that this is the only direct train for them to go to Jodhpur in the west and to Delhi in the East It is needless to mention that thousands of people have their commercial concerns on both sides and this is why this train is invariably overcrowded Even rural folk residing in Tehsil Rajgarh of Churu District have to go to Jodhpur frequently being the seat of High Court If you please refer to the data in respect of the passengers travelling by this train You will certainly realise that even this train falls short of their need What will be their plight in view of the proposed alteration is a matter of imagination only

Before this state of affairs comes into existence I request you to exercise your good office so that the public concerned may not be put to a desperate condition

Thanking you very much

Sri Amrit Nahata M P
New Delhi

Yours very sincerely
Kanhaiyalal Sethia

Copy submitted to

1 Shri Mathura Dass Mathur New Delhi
2 Shri Nathu Ram Mirdha New Delhi

Kanhayalal Sethia

Calcutta
Dated 1st January 1985

Hon ble Sri Bansilalji,
Minister for Railways,
Govt of India
New Delhi

My dear Sri Bansilalji,

Please accept my greetings and best wishes for the New year The assignment of Railway ministry to your charge has generated a wave of enthusiasm in the minds of people of underdeveloped states of Haryana Rajasthan and Madhya Pradesh The pace of Railway development in these states during the past thirty seven years of our independence has been dismal with the result that industrial uplift of these regions has lagged far behind I have been having a continuous correspondence with your predecessors the Late Sri Lalit Narayan Mishra and recently Sri A B A Ghani Khan Chowdhury in this respect but to no tangible effect

Haryana, Rajasthan & Madhya Pradesh are inter connected and as you would agree their concentred development not only would mean a development of a large chunk of this country but would also contribute in no small measure to the integrated development of the country as a whole Rajasthan is a frontier state & Railway development of this region is of national importance The present network of Railway lines in these states is of metre gauge which has a limited utility and calls for conversion into Broadgauge on a very high priority Delhi the national capital needs to be connected with Ahmedabad via Rewari Ratangarh Sujangarh & Jodhpur by Broad Gauge A direct Broad Gauge line from Kota to Jaipur would also be very helpful for the people of this area The proposal to convert the Ganganagar Delhi Bikaner link into Broad Gauge should be accelerated while Delhi Ajmer Udaipur should also be placed on the Broad Gauge so that the development of rail links in Madhya Pradesh is reinforced side by side

As you are well aware, Rajasthan state is sufficed with precious minerals The towns of Churu Sujangarh Ratangarh

Ladnun Didwana etc on the Delhi Jodhpur via Rewari Rail line are very important commercial centres and are prospective for large industrial development only if Rail transport is upgraded

A track of over 200 km from Sikar to Nokha via Sujangarh, Salasar Bidasar Chadwas Sandwa Jasarasar and Nokha has at present no rail link at all although this region is very important from the point of wool and salt production Besides a number of religious places are situated in this section A Rail link in this region would benefit over 2 Millions of inhabitants and the development of the countryside would be very much accelerated

You have been the Chairman of the Railway Estimate Committee in the past and I am sure that these three states of Haryana Rajasthan and Madhya Pradesh will receive the benefit of your experience and insight I am sure with your indulgence and initiative in the matter these so for ignored states will receive your kind and engaging attention thereby contributing to the progress of the entire country

May I request for a acknowledgement of this letter ?

Thanking you

Yours sincerely
Kanhaiyalal Sethia

Copy forwarded for information & favour of necessary action

1 Hon ble Sri Madhav Rao Scindhia
Minister of State for Railways
Govt of India
New Delhi

2 The Chairman Railway Board
Ministry of Railways
New Delhi

3 Hon ble Sri Shiv Charanji Mathur
Chief Minister
Rajasthan State
Jaipur

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५२५
मेठिया ट्रेडिंग क०
३, मगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक १७ ७ १९८६

प्रिय भाई छगनलाल,

शुभ आशीष। तुम्हारा ११/७ का पत्र मिला ममाचार जाने। तुम ने जो विचार लिखा है वह बहुत विचारणीय है। भावुकता वश काई निणय नहा लिया जाना चाहिये।

१ भारत के सविधान के अ तरगत हरिजना का जा विशेष मुविधाआ का प्रावधान है उसे त्यागने के लिये क्या लाग तयार है ? अन्यथा नई जाति बनाने पर भी पुराना जातीय बाध नही बदलेगा !

२ वस अनेक महत्तर अपनी जाति की दष्टि स वाल्मीकी लगाते है क्या इमस उन का जिन्हाने भगी का पेशा छाड दिया है सताप नही है ? कई लाग आय भी लिखते हैं। मूल बात ता सस्कार बदलने की ह। नाम, जाति तो गौण है।

३ अगर जाति का नाम बदलने का ही आग्रह हो तो अपने नाम के बाद 'भारती' लगाना उचित है। यह दश भरतवशिया का था इस लिये इस दश का नाम 'भारत पडा और हम सब जा भरतवशी हैं भारती हैं। यथा छगनलाल भारती तुम या वे सब लिख सकते हैं जा जाति का नाम बदलने का इच्छुक हैं।

सबस पहली बात तो यह है कि स्वय हरिजना का हान भावना से मुक्त हाना चाहिये। जो हरिजन राजकीय सवाआ म हैं तथा जा व्यवसाय या और काई अन्य पेशा करते हैं उन्हें अपने का समाज से ऊँचा या अलग नहा समझना चाहिये। काम कोई छाटा नही है केवल दृष्टि बदलने की जरूरत है। आज के युग म सब कामा का आधुनिकीकरण हा रहा है। ब्राह्मण, वश्या के चमडे के

कारखाने हैं, हड्डियों के विक्रेता हैं, इसी तरह अगर भंगी पेशे के लोग अपने काम का आधुनिकीकरण कर लेंगे तो यह काम घृण्य नहीं रहेगा। भंगी अगर सफाई के पुराने तरीकों को नहीं बदलेंगे तो संभव है कि इस पेशे का दूसरी जातियां आधुनिकीकरण कर लेंगी और इसको आर्थिक लाभ की दृष्टि से अपना लेंगी। मैं प्रस्तावित सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं। मुझे आशा है कि समाज के नेता सस्ती नारेबाजी छोड़ कर समाज को रचनात्मक दृष्टि देंगे और समाज को अपने स्वार्थ के लिये गुमराह नहीं करेंगे।

जय भारत जय भारती !

तुम्हारा
कन्हैयालाल सेठिया

श्री छगनलाल आर्य
सुजानगढ़

कन्हैयालाल सेठिया
स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक ४ ७ ८७

प्रिय श्री राजीवजी,

एक स्वतन्त्रता सेनानी के नाते रेल पास के सम्बन्ध म दिये गये मेरे पत्र के प्रत्युत्तर म प्राप्त रेल राज्य मत्री, भारत के पत्र की प्रतिलिपि इस पत्र के साथ सलग्न कर आप की जानकारी के लिये भेज रहा हूँ।

उक्त सन्दर्भ म निवेदन है कि जब कि देशी राज्यो का विलय होकर राजस्थान भारत का एक प्रदेश बन गया है प्रजा परिषदें और प्रजामडल अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी म समाहित हो गये है देशी राज्यो की रेलो का अस्तित्व भारतीय रेल विभाग म समाहित हो गया है ऐसी स्थिति म राजस्थान के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो के प्रति रेल मत्रालय की दुहरी नीति पर पुनर्विचार किया जाना उचित है।

देशी राज्यो के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो को दुहरी गुलामी से मुक्त होने के लिये जो अथक सघर्ष करना पडा था और उन्होने जो यातनाए सही थी वे भारत के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो द्वारा सही गई यातनाओ से किसी भी प्रकार कम नहीं थी।

आशा है आप गृह मत्रालय का इस सम्बन्ध म बनाये गये नियमो पर पुनर्विचार करने का आदेश देंगे और देश के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो के प्रति एक ही नीति लागू करने का सत परामर्श देंगे।

पत्र के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजीव गाधी
प्रधान मत्री—भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी

दूरभाष ४८१२४५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक ५/६/८८

प्रिय श्री साठेजी

सन १६८१ म दिल्ली के फिक्की सभागार म मेरे सम्मान म आयोजित समारोह म आप मुख्य अतिथि के रूप म उपस्थित हुए थे। स्व मोहनलाल सुखाडिया ने अध्यक्षता की थी। उस समय आप से साक्षात्कार कर प्रसन्नता हुई थी। यह सदर्भ आपकी स्मृति म होगा।

आठवी योजना म राजस्थान के लिए एक भी नई विद्युत उत्पादन योजना को स्वीकृति नही मिली है यह जान कर चिन्ता हुई। राजस्थान गत दस वर्षों से गहरे विद्युत सकट से ग्रस्त है। विद्युत के अभाव म औद्योगिक और कृषि विकास नही हो पा रहा है।

आशा है आप इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार करेंगे और राजस्थान के विद्युत सकट को देखते हुये आठवी योजना म नई योजना का प्रावधान रखेंगे।

आप स्वस्थ होगे।

योग्य सेवा। पत्र दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री वसन्त साठे
ऊर्जा मत्री, भारत
नई दिल्ली

प्रतिलिपि—मुख्य मत्री राजस्थान जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष-४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक १५ ६ ८६

प्रिय शिवचरणजी,

कोटा म हुये साम्प्रदायिक दगे के समाचार सुन कर गहरी व्यथा हुई। अनेक निर्दोष व्यक्तियो की हत्या आगजनी और लूट खसोट से प्रशासन की क्षमता के सम्मुख एक गभीर प्रश्न चिन्ह लग गया है।

प्राय पिछले एक वष मे राजस्थान म धम के नाम पर साम्प्रदायिक तत्व योजना वद्ध तरीके मे गडवड कर रहे हैं। मुझे लगता है कि कोटा का दगा आकस्मिक नही है यह पूव योजित व्यापक षडयन्त्र का हो एक अग है।

मैंने राज्य के गृह मत्री श्री अशोक गहलोत को राजस्थान मे इस सम्बन्ध म पूण सतकता बरतने के लिये अपने २४ ६ ८४ के पत्र म लिखा था पर लगता है कि प्रशासन ने स्थिति को अपेक्षित गभीरता स नही लिया।

राज्य मे कानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिये कठोरतम कदम उठाया जाना आवश्यक हो गया है। अवाछित तत्वो की धर पकड तथा जिला स्तर पर शांति समितियो का गठन प्रभावी ढग से किया जाना उचित है।

कोटा काड की न्यायिक जाच से जो तथ्य सामने आयें उनके सन्दभ म प्रशासन को आवश्यक निर्देश दिये जाने की अपेक्षा है।

आप स्वस्थ होगे। योग्य सेवा। पत्र दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री शिवचरणजी माथुर
मुख्य मत्री राजस्थान
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ८८१२४५
सेठिया ट्रेडिंग क०
२ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक २० १० ८६

प्रिय श्री शिवचरणजी

लाडनूं में हुये साम्प्रदायिक दंगे के सम्बन्ध में दिया गया मेरा तार आपको मिल गया होगा। तार की प्रतिलिपि इस पत्र के साथ संलग्न है।

कल मैंने इसी सम्बन्ध में आपको फोन किया था जिसकी सूचना आपको आपके सचिव ने दी होगी?

लाडनूं—डीडवाना सुजानगढ़ संवेदनशील क्षेत्र है अतः वहां चुनाव होने तक P.A.C की Unit को Station करना उचित होगा।

आपने तथा श्री देवपुरा ने शान्ति यात्राए करने का जो निश्चय किया है वह बहुत आवश्यक है।

यस्त स्वार्थ देश में गडबड करने के लिये कृत सकल्प हैं अब प्रशासन को शान्ति बनाये रखने के लिये सभी आवश्यक कदम अविलम्ब उठाने चाहिये।

कोटा के सन्दर्भ में दिया गया मेरा पत्र आपको मिल गया होगा प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा है।

आप स्वस्थ होगे। योग्य सेवा। पत्र दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री शिवचरणजी माथुर
मुख्य मंत्री राजस्थान
जयपुर

जल समस्या खड

राजस्थान के मरुभाग की विकट जल समस्या के सदभ मे श्री सेठिया द्वारा दिये गये महत्वपूण पत्रों के प्राप्त प्रत्युत्तर ।

राजस्थान सरकार
मुख्य मन्त्रीकार्यालय

जयपुर
दिनाक २० अप्रल, १६५०

सख्या १८६३

सुजानगढ म पानी की योजना

महादय,

आपका मुख्य मन्त्रीजी के नाम का पत्र दिनाक ८ अप्रैल १६५० प्राप्त हुआ। सुजानगढ की पानी योजना के लिए सरकार करीब १ लाख रूपये खच करने का विचार रखती है।

विनीत,
प्राईवेट सेक्रेटरी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
मन्त्री जल प्रबन्ध योजना
सुजानगढ

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

No H/112 D/ 11 5 50

To

The Secretary,
Sujangarh Water Supply Scheme Committee
Sujangarh

Dear Sir

Special Officer Water Supply Jodhpur has informed me that he is reaching Sujangarh to investigate the necessary data and on the receipt of his report I shall take further action in the matter

Please render him all possible assistance in the accomplishmen of his work

Yours faithfully

Superintending Engineer
Health Rajasthan
P W D Jaipur

JODHPUR GOVT PUBLIC WORKS DEPTT

No V/20 Dated 23rd May 1950

From

The Special Officer,
Village Water Supply Jodhpur

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Secretary Water Supply Scheme Committee
Sujangarh

Sub **Improvement of water supply at Sujangarh**

Ref

As requested by you I am sending herewith a copy of my report regarding the existing water conditions and their improvement at Sujangarh

I think the further investigation in the matter by Shri Professor Kaul and Shri Pani wala Maharaj is necessary and you should wait till then Meanwhile the trial borings at three local places have already been recommended

Special Officer
Village water Supply
Jodhpur

P S I shall be obliged if you will please send samples of water from 2 or 3 Kuees inside the town for analysis If possible you may also send a sample of water from Jaswantgarh well as well as from Natas well The samples should be separately labelled

No V/27

Jodhpur
Dated 6th June 1950

From

The Special Officer,
Village Water Supply
Jodhpur

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Secretary Sujangarh Water Supply
Scheme Committee Sujangarh

Sub **Improvement of water supply at Sujangarh**

Ref **Your letter dated 28/5/1950**

Dear Sir

I acknowledge with thanks the receipt of your letter cited above and the five small phials containing samples of water of different wells

I may inform you that the scheme of improving the water supply at Sujangarh is in good progress What I want to trouble you about is that as the samples you sent are two small to be tested qualitatively and quantitatively larger samples that is full two bottles of each sample are required to enable the Government Chemist to make proper analysis

I would therefore request you please to send as soon as possible the requisite samples I may further say that samples from Natas and Jaswantgarh are not required because we know that Natas water is quite good and that there is not sufficient water at Jaswantgarh

Yours faithfully

Special Officer
Village Water Supply
Jodhpur

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

No H/499 Dated 3rd July 1950

From

The Superintending Engineer,
Health Rajasthan
P W D , Jaipur

To

The Secretary,
Sujangarh Water Supply Committee
Sujangarh

Dear Sir

Ref **Your Application 27th April, 1950 addressed to H M T**

I have gone through above letter as well as report of Shri Ram Dayal Special Officer Water Supply Jodhpur and shall be visiting the place by the middle of July 1950 and shall go through the possible sources of potable Water supply at Sujangarh and its vicinity and possibility of obtaining water from Deeper Strata as met with in boring to prepare an economical Water supply Scheme for Sujangarh

Yours faithfully

Superintending Engineer
Health Rajasthan
P W D Jaipur

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

Public Works Department

Jodhpur

No 4791 *Dated 28 7 1950*

From

The Supdtg Engineer,
Public Works Department
Jodhpur (Rajasthan)

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Secy Sujangarh Water
Supply Scheme Committee
Sujangarh (Rajasthan)

Sub **Water Supply at Sujangarh**

Ref **Your No nil dated 6 7 50**

The official who saw you on 17th & 18th June 50 was Mr H N Pandey who had already discussed the scheme with you The scheme prepared by Mr Pandey has been submitted to the Government for consideration

Superintending Engineer
P W D Jodhpur

असिसटेन्ट इन्जीनियर
मव डीवीजन
जन काय विभाग जोधपुर

दिनाक ७ ८-५०

श्रीयुत कन्हैयानालजी
मत्री सुजानगढ जल प्रबन्ध योजना
सुजानगढ

आपका पत्र प्राप्त हुआ, पत्रोत्तर इमस पूव भेजा गया था मिला होगा। सूचनाथ आपके सुजानगढ के जल वितरण एव वर्षीय याजना हमनें अध्यक्ष जन स्वास्थ विभाग (जन काय विभाग) जयपुर का दिनाक २२-७ ५० का भेज दी गई है जिसम मुख्यत –

नाटाम के कुवें म ४" बारिंग करने के लिए योजना गई है और उसम लगभग ३०००/ रु सिफ उसके प्रारभिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए है कारण क वहा पर जल ३० ३५ हजार गेलन ही निकलता है जहा कि २ २११ लाख गेलन प्रति दिन पानी की आवश्यकता रहती है इस प्रकार नाटाम म सात आठ कुयें हो तब यही ना कर आपके उस क्षेत्र म पर्याप्त सरया म जल के अभाव की पूर्ति की जा सकती है।

गापालपुरा पहाडी से नहर बनाकर सुजानगढ शहर तक लाई जावे और वहा तालाव मे जल प्रवेश किया जावे।

गापालपुरा पहाडी म ४ इच का बारिंग कराया जावे।

नायोलाव तलाव म प्राय ३० ००,००० गेलन का हौज बनवाया जाय जिसके चहुँ और तल म पक्का कराया जाय जिसस जनता को फिर हाल पानी की कुछ सुविधा हो सके।

बलाइया की कुई जा स्टेशन के पास बलाइयो के मोहले म है वहा उसके पास नया कुवा १२ फिट व्यास का १२० फिट गहरा खुदवाया जाय और उससे ४ इच बारिंग ८० फिट कराया जाय फिर वहा माटर लगवा कर वहा से नल के द्वारा स्कूल के पाछे के चौक म हौज बनवा कर उसके लगा दिया जावे जिससे वहा के निवासियो को अधिक से अधिक लाभ हो सके। जब आप को जयपुर से इस जल वितरण योजना के काय प्रारभ करने की सूचना प्राप्त हो तो हमे भी सूचित करियेगा।

भवदीय
हरनारायण पाण्डे

यातायात सचिवालय

जयपुर राजस्थान

दिनाक २५ ८ १६५०

प्रिय महोदय

आपका पत्र ता ८ अप्रल सन १६५० का मिला। आदेशानुसार आपको सूचित कर रहा हू कि सुना जाता है कि वहा मीठे पानी के कुए भी दो चार वष म कड़वे हो जाते है यह कहा तक सही है। इस विषय की जानकारी आने पर निश्चित ही सकेगा कि वहा क्या किया जा सकता है।

अगर आप यह भी बता सकें कि कितनी गहराई पर कस्बे के खच लायक पानी मिल सकेगा तो अच्छा हो।

आदेशानुसार

निजी सेक्रेटरी
माननीय यातायात मत्री महोदय

श्री कन्हैयालालजा सठिया
मत्री
सुजानगढ जल प्रबन्ध योजना समिति
सुजानगढ राजस्थान

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

No H/1085 Dated 26 9 50

Secretary,
Sujangarh Water Supply Scheme Committee
Sujangarh

Dear Kanhaiyalal

I have submitted estimate for putting trial boring and have called quotations for borings and am appointing special overseer to investigate the sub-soil water conditions at Sujangarh and adjoining country

Sincerely yours

Superintending Engineer Health
Rajasthan Jaipur

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

Public Works Department

No P2(155) PW/50 Dated 22 11 50

Sub **Sujangarh Water Supply Scheme**

The Secretary
Sujangarh Water Supply Scheme Sujangarh

A meeting will be held in the Chamber of Honourable the Transport Minister on Friday the 1st December 1950 at 3 p m

The following are requested to please attend

1 The Chief Engineer Buildings and Roads Rajasthan Jaipur

2 The Superintending Engineer Health Jaipur

3 The Secretary to the Government Transport Comm & P W Department Rajasthan Jaipur

4 The Secretary Sujangarh Water Supply Scheme

M L Chobey
Assistant Secretary to Government

Dy No 5041/52 IRN
Government of India
Ministry of Food & Agriculture (Agri)

New Delhi the 18th December 1952

Sub **Exploration of the sources of subterranean water in Sujangarh**

Dear Sir

With reference to your letter No W/61 dated the 6th December 1952 I am directed to say that the Rajasthan Underground Water Board does not undertake the exploratory work of the type mentioned in your letter However, the Board is being consulted and a further communication will follow in due course You are advised to contact the Administrative Officer of the Board and discuss with him the problem

Yours faithfully

for Deputy Secretary to the
Govt of India and Executive
Member Rajasthan under
ground water Board

To

The Secretary
Sujangarh Water Supply Scheme Committee
Sujangarh (Rajasthan)

No D 3184 AE/53

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF STATES

New Delhi 2
Dated 8 August 1953

MEMORANDUM

Sub **Scarcity of drinking water—drinking water tube wells**

With reference to his letter dated 18th July 1953 to the Minister for States Shri Sethia is requested to contact the Chief Engineer Rajasthan Public Health Engineering (Mr Padmana bham) for advice on drinking water tube wells

A N Sachdev
Under Secretary
to the Government of India

Sri Kanhaiyalal Sethia
Rattan Niwas
Sujangarh (Rajasthan)

सूरजमल कनोई
उद्योगपति

दिनाक १७ ६-१६५४

श्रीयुत कन्हैयालालजी सेठिया

आशीर्वाद।

मैं कालदिन दिल्ली आयो हो। फ्रेंचग्रूप ड्रिलिंग कम्पनी क साथ अेग्रीमेन्ट करन क लिए। मिस्टर डेलीकूट डाअीरेक्टर है जक क साथ म मुलाखात हुयी--मिस्टर माली अीजीनियर बम्बअी गयो हुयो है जक स उस स्यू मुलाकात नही हुयी।

मिस्टर डेलीकूट क साथ अेग्रीमेन्ट क बाद पोयन्टा की जा जो बात करनी है जक बार म सारा पायन्टा पर डिसकास हा गयी है। लेकिन मिस्टर डेलीकूट कव है अेग्रीमन्ट को ड्राफट म नही कर सकू मिस्टर माली आन पर अेग्रीमेन्ट का ड्राफट बना कर दसी--मिस्टर माली ३ ४ दिना माय आय जावेगो। मिस्टर डेलीकूट स बातचीत पक्की होय गयी है--मिस्टर माली आन म ड्राफट बनाय कर सही होय जावगो--ड्राफट सही सामवार मंगलवार तक हाय जावगा।

मसीन बम्बअी अक्टुबर म पुगन की क्यी है और सुजानगढ मशीन नवम्बर म पुग जावगी क्यी है और नबम्बर म काम शुरु कर देवगा असी और विसेज कोअी समाचार है नही।

अठ सब राजी है। आप बालकाँन राजी होवोगा।

जमीन बार माय श्री तहसीलदारजी स पूछ कर लिखोगा कि जमीन को काम सारो ठीक होय गया होवगा। यदि कोअी काम बाकी है तो आप चेस्टा कर काम न ठीक करावोगा जक स मसीन पुगन क बाद काम शुरू करन म बाधा नही आव।

चिट्ठी सारा समाचारां की कलकत्त देवोगा।

आपका
सूरजमल कनोई

सूरजमल कनोई
उद्योगपति

कलकत्ता
दिनांक २६ ७ ५५

श्री कन्हैयालालजी

शुभाशीष

पत्र आपका ता १५ ५ ५५ का लिखा हुआ मिला। समाचार अवगत हुए।

मेरा विचार सुजानगढ आने का भादवा वदी तक है।

श्री कुभरामजी से बातचीत हुई सो ठीक है। देश आने से सारी बातचीत करेंगे।

कुआ खुदवाने का विचार पक्का ही है।

इजीन २००/२५० फुट नीचे से पानी खीचनेवाला की अभी तक कोई तजबीज नही हुई। ३०/४० फुट तक पानी खीचनेवाला तो मिलते है। सो चेष्टा कर रहे हैं। आशा है मिल जावेगा। मिलने से जल्दी बुक करा देंगे।

वर्षा पानी हुआ होगा।

यहां सब राजी खुशी हैं। आप बच्चो को प्रसन्न रखें।

पत्रोत्तर दें।

सूरजमल कनोई

राजस्थान सरकार
सावजनिक सम्पक कार्यालय

दिनाक मई ४, १६५५

प्रिय श्री सेठियाजी,

आपके कपापत्र दिनाक २७ अप्रल के लिये धायवाद। 'हरिके पत्तन' पर अभी इस कार्यालय म कोई प्रकाशन सहज सुलभ नही है। कारण स्पष्ट ही है कि इस योजना पर कदाचित अब सक्रिय विचार निर्धारण ही रहा है। फिर भी मैं पूरी पूरी जानकारी एकत्र कर रहा हू और आशा करता हू कि कुछ समय पश्चात आपके प्रश्न के विषय मे निश्चित उत्तर दे सकू।

आशा है आप सानन्द स्वस्थ हागे।

आपका,
अमरनाथ चचल

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सुजानगढ

MATHURA DASS MATHUR
M P

Dated 27 8 1959

My dear Shri Kanhaiyalal Sethia

I received your letter of 19th August 1959 with the proposals of finding permanent solution of drinking water problem in desert regions of Rajasthan

I have gone through these proposals very carefully They appear to me very sound These proposals if found technically sound will be given due consideration by the Committee appointed by the State Government for the purpose I am glad that you have taken such a keen interest in a subject of extreme importance

Yours sincerely
Mathuradass Mathur

MATHURA DASS MATHUR
Home Minister

D O No 1347 PA/HLM/62

Jaipur Rajasthan
Dated July 28, 1962

My dear Shri Sethiaji

I will be reaching Ladnun by car on the 31st July 1962 at about 8 0 P M I would like to discuss with you the water supply scheme of Sujangarh and Ladnun You may therefore please come and meet me at Ladnu on 31st July 1962 The Chairman Municipal Board, Ladnu as well as Sujangarh would also be there to participate

With regards

Yours sincerely
Mathura Dass Mathur

MATHURADASS MATHUR
Home Minister

Jaipur Rajasthan

D No /6731 PMNM

Dated August 10 1962

My dear Shri Kanhaiyalal Sethia

I have your letter I have not received from the Municipal Board Sujangarh the names to be included in the Committee Kindly ask the Chairman to do the same as early as possible After I have received all the names I will call a meeting of the Committee at Jaipur

I am sending to you the Resolution of the Cabinet sanctioning the scheme for your persual

As regards report I have aksed Chief Engineer Shri Bhargava to supply a copy to you immediately the final report is ready

The Riggs of the Water Board have already reached Ladnun in connection with boring of the tube wells We have therefore now to expedite collections

With regards

Yours sincerely
Mathuradass Mathur

Shri Kanhaiyalal Sethia
Sujangarh

Copy of the Resolution of the Cabinet

A combined water supply for Ladnun Sujangarh and Jaswantgarh towns should be prepared and executed during the Third Plan period provided the following funds by way of local contributions are forthcoming

I Sujangarh —Rs 10 lakhs from Shri Kanoiji and associates

II Jaswantgarh —Rs 1 lakh already deposited by Seth Shri Tapania

III Ladnun —Rs 3 lakhs is raised by way of donation from the residents of Ladnu or 1/3rd of the total cost of scheme for Ladnun Town is provided by way of loan for the scheme by the local people

मथुरादास माथुर
गृह मंत्री

जयपुर, राजस्थान
दिनांक १८ सितम्बर ६२

क्रमांक २२६०

प्रिय श्रीसेठियाजी

संयुक्त जल प्रदाय योजना समिति की बैठक की कार्यवाही का विवरण मेरे हस्ताक्षर सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु भिजवा रहा हूं।

आपका
मथुरादास माथुर

श्री सुजानगढ़ लाडनूं जसवंत गढ़ संयुक्त जल प्रदाय योजना समिति कार्यवाही

पूर्व सूचना के अनुसार दिनांक ६ सितम्बर ६२ को संयुक्त जल प्रदाय योजना समिति की प्रथम बैठक दिन के चार बजे राजस्थान सचिवालय स्थित गृह मंत्री के कार्यालय में समिति के अध्यक्ष माननीय श्री मथुरादासजी माथुर की अध्यक्षता में हुई। समिति के निम्न सदस्य उपस्थित थे। श्री कन्हैयालाल सेठिया मंत्री संयुक्त जल प्रदाय योजना समिति श्री दीपकर शर्मा अध्यक्ष लाडनूं नगर पालिका श्री स्वामी रामतीर्थ अध्यक्ष सुजानगढ़ नगर पालिका श्री जेठमलजी शर्मा सदस्य जल प्रदाय योजना समिति और श्री सदासुखजी कोठारी। माननीय श्री माथुर साहब तथा समिति के सदस्यों ने जल प्रदाय योजना की अब तक की प्रगति पर विचार विमर्श किया। चीफ इंजिनियर श्री के एन भार्गव से हुई बातचीत के आधार पर निम्न निर्णय किये गये।

१ लाडनूं के पास अभी जो बोरिंग चालू है उसे तब तक बंद नहीं किया जाय जब तक नीचे कठोर चट्टानी धरातल नहीं आ जाय।

२ इस बोरिग की रिपोट आने पर लाडून नगर की जल योजना के लिए चार पाच बोरिग और करवाये जावें और अगर उपरोक्त बोरिगस की रिपोट आशाजनक हो तो सयुक्त जल योजना की रिपाट चीफ इजिनियर स तैयार करवा कर याजना के लिए आवश्यक धन प्राप्त करने का प्रयास किया जाय जिसस कि यह जन कल्याणकारी योजना निश्चित रूप स तीसरी पचवर्षीय योजना के अन्तरगत क्रियान्वित की जा सके।

३ चूकि लाडनू नगर के लिए तो वतमान म सुलभ जल राशि के आधार पर ही जल योजना को सफलता पूवक क्रियान्वित किये जाने की आशा है इसलिये लाडनू नगर के लिए प्रस्तुत की गई जल याजना पर व्यय होने वाली कुल धनराशि ६ ६०००० का ततीयाश ३ २० ००० रुपया जा जनता द्वारा राज्य सरकार को दिया जायेगा एकत्रित करने का निणय किया गया। इस सम्बन्ध म सयुक्त जल प्रदाय याजना के मत्री और लाडून नगर पालिका के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्या का जो इस दष्टि स उपयागी हा कलकत्ता जाने का निश्चय किया गया। कलकत्ता जाने के लिये सितम्बर मास के अन्तिम सप्ताह तक निणय किया गया। वहा चन्दा प्राप्त करने की रूप रेखा बन जाने पर माननीय माथुर साहब का भी एक दा दिन के लिए पधारना आवश्यक समझा गया अत अध्यक्ष महादय ने भी वहा पर पधारने की अनुमति दी।

४ सुजानगढ क्षत्र स विधान सभा के सदस्य श्री फूलचन्दजी जन का भी सयुक्त जल प्रदाय याजना समिति के सदस्य के रूप म लिया जाना तय हुआ।

मथुरादास माथुर
अध्यक्ष

मत्री
कन्हैयालाल सठिया

MATHURADASS MATHUR
Minister for Home & Law

D O No 1744 PA/HLM/63

Jaipur Rajasthan

Dated July 7 1963

My dear Sethiaji

I express my regrets for not replying to your two letters which you were kind enough to write to me from Calcutta I am grateful to you for contacting important people of Calcutta to contribute for our water scheme at Ladnun and Sujangarh I am writing to Shri Prakash Saravagi S/o late Shri Tolaramji Saravagi whether he is agreeable to contribute 1/3rd of the scheme which comes to about Rs 3 lacs If he agrees in writing the Government can then proceed for the execution of the scheme I propose to visit Calcutta in any case in the near future for collecting funds for the memorial of late Shri Jai Narainji Vyas

I am sorry that I could not meet you at Sujangarh although you were there This was not to my knowledge Had I known about your presence I would have surely visited you I propose to visit Ladnun in the near future I would communicate to you the date when finalised Any other service for me

With regards

Yours sincerely
Mathuradass Mathur

MATHURADASS MATHUR
Home Minister

Jaipur, Rajasthan

Dated July 23 1963

No 3410/HM/63

My dear Shri Sethia

I have your letter I am grateful to you I have received a telegram from Shri Shobha Chand S/o Shri Tola Ram contributing 1/3rd share of Ladnun Water Supply Scheme I am contacting him and we hope to meet in near future and finalise the whole matter After Ladnun scheme is put into action we will take up the question of Sujangarh

Any other service for me

With regards

Yours sincerely
Mathuradass Mathur

No 20 27/59 T W

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE
(Deptt of Agriculture)

New Delhi
Dated 12th Bhadra 1881
(Saka)
3rd September 1959

From

Shri N S Sreekantiah
Under Secretary to the Govt of India

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
P O Sujangarh
(Rajasthan)

Sub **Proposals for Finding permanent solution of Drinking water in Desert regions of Rajasthan**

Dear Sir

I am directed to acknowledge with thanks the receipt of your letter dated the 13th August 1959 and the booklet on the above mentioned subject

Yours faithfully
N S Sreekaniah
Under Secretary
to the Govt of India

PRIME MINISTER'S SECRETARIAT

नई दिल्ली

पत्र स० ३।२०८।६० हि०

दिनाक २३ दिसम्बर १९६०
२ पौष १८८२ शक

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनाक १६ दिसम्बर १९६० प्राप्त हुआ।

२ आपका पत्र दिनाक ९ सितम्बर १९५९ इस सचिवालय म प्राप्त हुआ प्रतीत नही होता। हम उल्लिखित मामले को प्रदेशीय सरकार के ध्यान म ला रहे हैं।

भवदीय
प्राण नाथ साही
प्रधान मत्रीजी के निजी सचिव

श्री कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास, सुजानगढ
राजस्थान

(भारत के प्रधान मत्री प० जवाहरलाल नेहरू का मरु क्षेत्र की पानी की समस्या के सन्दर्भ म दिये गये पत्र के प्रत्युत्तर म प्राप्त पत्र)

GOVERNMENT OF INDIA
GEOLOGICAL SURVEY OF INDIA
(Engineering Geology Circle Eastern Region)

Telegrams Geosurvey
Calcutta
Telephone 44 8552
5 Middleton Street
Calcutta 16

No 134/47 555(1)/61 Dated 25th January 1961

From
Hamzah Ali
Superintending Geologist
Geological Survey of India

To
Mr Kanhaiyalal Sethia
Secretary
Sujangarh Water Supply Scheme Committee
Sujangarh Rajasthan

Sub **Exploratory data for Sujangarh**

Sir

With reference to your letter No nil dated 5 1 61 on the above subject addressed to the Director Geological Survey of India I write to inform you that no exploratory data for Sujangarh is available with us One borehole was drilled at Ratangarh and if you are interested we can furnish you the data of this borehole

Yours faithfully
Hamzah Ali
Superintending Geologist
E G & G W Section
Geological Survey of India

}

GOVERNMENT OF INDIA
GEOLOGICAL SURVEY OF INDIA
(Engineering Geology Circle—Eastern Region)

Telegrams Geosurvey
Calcutta
Telephone 44 6552
5 Middleton Street
Calcutta 16

No 199/47 555(1)
Dated 7 2 1961

From

Hamzah Ali
Superintending Geologist
Geological Survey of India
E G & G W Sections
Eastern Region

To

The Secretary
Sujangarh Water Supply Scheme Committee
Sujagarh
Rajasthan

Sir

With reference to your letter number nil dated 30 1 61 I am forwarding herewith strata chart of the exploratory borehole No 6 (Ratangarh) Rajasthan as desired

Kindly acknowledge receipt

Yours faithfully
Hamzah Ali
Superintending Geologist
Geological Survey of India

मोहनलाल सुखाडिया
मुख्य मंत्री

जयपुर राजस्थान

दिनांक ११ अप्रैल १९६१

प्रिय श्री सेठियाजी

सुजानगढ़ नगर तथा आस पास के क्षेत्र में पीने के पानी की समस्या के सम्बन्ध में आपका ४ ४ ६१ का पत्र मिला आपके दिये गये सुझावों को परीक्षण हेतु मैं इसे अतिरिक्त मुख्य सचिव को भेज रहा हूँ।

आपका
मोहनलाल सुखाड़िया

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सुजानगढ़

मोहनलाल सुखाडिया
मुख्य मन्त्री

जयपुर राजस्थान

दिनाक २३ अप्रल, १९६३

प्रिय मठियाजी

आपका दिनाक १९ अप्रल का पत्र प्राप्त हुआ। मैं २७ तारीख को आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हो रहा हू। आपने जो सुझाव दिया है वह मेरे ध्यान मे रहेगा।

आपका
मोहनलाल सुखाडिया

(आस्ट्रेलिया में पाताल तोड कुओ के बारे में जानकारी करने हेतु दिये गये पत्र का उत्तर)

फूलचन्द जैन
सदस्य राजस्थान विधान सभा

फोन ४७५७
मुराणा भवन आगरा रोड
जयपुर
दिनांक ३ ५ १६६२

क्रमांक

प्रिय भाई सेठियाजी

आपका २८ अप्रल का पत्र मिला है। बिजली उपभोक्ता सघ का पत्र भी प्राप्त हो गया था।

बिजली विभाग की अव्यवस्था के सबध म मैंने श्री विद्युत मत्री जी से विस्तार स बातचीत की है एवम् उन्होने विभागीय-अधिकारियो को शीघ्र आवश्यक कार्यवाही किये जाने के सबध म भी लिख दिया है। बिजली विभाग का बजट आगामी एक दो रोज म विधानसभा म आयगा इस समय इसपर होनेवाली बहस के दौरान म वहा पर भी सारी स्थिति अवश्य रखूगा।

राजस्थान कैनाल द्वारा लिफट सीसटम स पीने के पानी की अपने यहा की योजना के सबध म मैंने हालही में मुख्य मत्रीजी सहीत मत्रीमण्डल के सदस्यो के समक्ष एक बैठक म श्री भीमसनजी के साथ म सारी स्थिति पर बातचीत की थी। मुख्यमत्रीजी के कथनानुसार कम स कम एक वर्ष एक इस सबध म सरकार द्वारा कोई कार्यवाही नही की जा रही है। आगामी वर्ष म अन्य स्थानो के साथ २ आपके सुझावानुसार सुजानगढ सहीत नागौर जिला व अन्य स्थानो का सर्वे भी सम्मिलित किया जाए इसके लिये कोशीश भी करेंगे-तथा मुख्यमत्रीजी ने आश्वासन दिया है मै इस सबध म राज्य सरकार द्वारा किसी भी समय की जाने वाली कार्यवाही के प्रति बराबर सजग रहूगा।

मेरा सुजानगढ आने का कार्यक्रम १५ १६ मई के आस पास का है। विशेष मिलने पर।

आशा है, आप स्वस्थ होगे ?

आपका
फूलचन्द जैन

Copy of letter No nil dated nil from the Executive Engineer Waterworks Bikaner to the Chief Engineer, Health Rajasthan Jaipur

Sub **Combined Water Supply Scheme for Sujangarh, Ladnun and Jaswantgarh**

Ref **Your letter No H/G 1(177)63/9224 dated 27 5-63**

With reference to your letter under reference I have to inform you that a detailed note on the above subject has already been submitted to your office vide this office No 4405 dated 5-4-63 The combined scheme for Sujangarh Ladnun and Jaswantgarh is under preparation with Assistant Engineer Waterworks Churu The same will be submitted as soon as it is completed

No 6862 dated 10-6 63

Copy to the Public Relations Officer to H H the Maharaja of Bikaner Lallgarh Palace Bikaner with ref to his No 4363 dt 29 5 63

Sd/

Executive Engineer
Waterworks Bikaner

No 4652 Date 15-6-63

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalalji Sethia Sujangarh for information

Public Relations Officer
to H H the Maharaja Sahib
Bahadur of Bikaner

Copy of D O No H/G I (26)63 JU(30600 dated the 7th October 1963 from Shri K N Bhargava Chief Engineer Health Rajasthan Jaipur to Shri K K Joshi Private Secretary to the Minister for Community Development & Cooperation Government of India New Delhi

My dear Shri Joshi

Kindly refer to your D O No PS/CDM/63 dated 26 7 63 regarding Nagore and Sujangarh water supply scheme

The position is as follows

Sujangarh Water supply scheme Government has already sanctioned in principle the undertaking of water supply scheme for Sujangarh if possible with a combined head works for Sujangarh Yashwantgarh and Ladnun cities Rajasthan Government has been doing its best to locate a dependable sourc of water for Sujangarh but so far our attempts have not met witl success The nearest source of water located was at Sandwa abot 20 miles from Sujangarh and at one time it was contemplated to bring water from Sandwa to Sujangarh and Government had also accepted it on condition that a promised donation of Rs 1O lacs was forth coming from Shri Kanoiji Unfortunately Shri Kanoiji has backed out and naturally we are in search of anothe assured source of potable water nearer Sujangarh. We have don a number of bores but as our machines were of small capacity we could not go to a depth of more than 400 ft Now we have referred the matter to Exploratory Tube wells Organisation Government of India to take up exploration of Sujangarh Ladnun and Rajgarh areas as this organisation has now started work in this district and they have to carry out number of exploratory bores during the Third Plan The Department has discussed this problem with local MLAs and others and it is advisable to await results rather than risk a scheme without any assured source of supply The matter is being persued vigorousl by this Department

Nagore Water Supply scheme At Nagore we have a comprehensive scheme in hand and in this area also there is a great scarcity of water and it is a real problem to find out an assured source of supply After a great deal of investigation we decided to locate our wells at Chinar but there after we had constructed 3 wells we found water is brackish and a limited pocket of sweet water area is only available After further investigation to suppliment the supplies we decided to acquire another well known as Tausar well which gives about 8000 gallons per hour and arranged to lay lines etc from this side also These two sources put together will be able to meet the requirements of Nagore at a moderate rate Award of the land acquistion officer has already been given but the possession of the well has not been handed over to this Department so far and the matter is under correspondence with the Collector Some orders for the pumping set etc for the second well now being acquired have also been placed and material is expected within a month or two

The position in the last summer was very bad and it was on commissioning the first head work that saved the situation Since the quantity of water available was limited water was being supplied through the public stand posts and limited house connection were given Now connections are being given freely as the demand has now decreased and it is also expected within about two months time we will be able to commission the second head works also Everything is being done for these two places

I regret the delay in the reply as the matter was referred to the Executive Engineer for finding out the upto date position about Tausar well etc

No 5528 PA/HLM/63 Dated 18th 1963

Copy to Shri Kanhaiyalal Sethia Sujangarh

K N BHARGAVA
Chief Engineer

Health Rajasthan
Jaipur
Dated 9 12 63

D O No 4/GI(177)631—44061

Dear Shri Sethia

I am in receipt of your letter Dated 19th November 1963 regarding water supply scheme Sujangarh

It is at present not established that it will be possible to meet the requirements of all the three towns Sujangarh Jaswantgarh and Ladnu from borings at Ladnu Further exploration is necessary The Explorating tube well organisation Govt of India has already been requested in the matter If finally it is established that water/resources at Ladnu are enough to meet the requirement of the three towns regular schemes will be submitted to Govt for sanction

With regards

Yours sincerely,
K N Bhargava

Copy forwarded to the following for information along with a copy of letter under reference—

1 The Executive Engineer Water Works Jodhpur
2 The Executive Engineer Water Works Bikaner

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

No Tech 40/12619 Dated 29 10-1963

From

The Executive Engineer
Water Works Dn
Bikaner

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Secretary
Ratan Niwas
Sujangarh (Rajasthan)

Sub **Sujangarh Water Supply Scheme**

Ref **Your letter No Nil dt 16 10 63**

The manuscript copy of Sujangarh Water Supply Scheme has been sent to Chief Engineer Office on 3 10 63 through personal messanger for scrutiny You are therefore to be intimated to contact if necessary Chief Engineer Office for further action

Executive Engineer,
Water works Binaker

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
HEALTH, P W D, JAIPUR

No H/G I(177)63 BK/ Dated

To

The Executive Engineer
Water Works
Bikaner

Sub Sujangarh Water Supply Scheme

The Scheme of above Town has already been returned to you for modification which may please be returned at once

Chief Engineer Health
Rajasthan Jaipur

No H/G I(177)63 BK/52453 Dated 21 1 64

Copy forwarded to The Secretary Combined Water Scheme for Sujangarh Ladnun and Jaswantgarh Ratan Niwas P O Sujangarh, Rajasthan with reference to his letter No Nil dated 22 9 63

Chief Engineer Health
Rajasthan Jaipur

चन्दनमल वैद
उप मन्त्री उद्योग
राजस्थान

जयपुर
दिनाक ३ सितम्बर १६६४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका सरकुलर पत्र दिनाक २५ अगस्त १६६४ कल मिला। जोधपुर बीकानेर क्षेत्र म जल प्राप्ति के सिलसिले म एकत्रित होकर परस्पर विचार विमर्श करने के सुझाव का स्वागत करता हू। इस बारे म मैं खुद ही हाजिर होकर सुझाव द सकू इसके लिए तैयार हू।

आपका अपना
चन्दनमल वैद

MATHURADAS MATHUR
Home Minister

C Scheme
Jaipur

Dated August 27 1965

Dear Friend

You will be pleased to know that the Joint Scheme of Water Supply to the towns of Ladnu Sujangarh and Jaswantgarh has been formulated by the Government costing about Rs 40 lakhs The Government desires 1/3rd contribution from the people of these towns In order to achieve this purpose a committee has been formed under my Chairmanship with Shri Kanhaiyalal Sethia of Sujangarh as Secretary The list of the members of the committee is attached herewith for your perusal

The first meeting of the Committee shall take place at Jaipur on the 6th September 1962 at 4 0 P M in my chamber at Rajasthan Secretariat to consider the further line of working of the committee so that the committee may be able to collect in shortest time the desired amount from the citizens of Those towns and who are residing and carrying on business at present at Calcutta or other important cities of this country I need not impress upon you your presence in the first meeting of the committee I am sure you will make it convenient to attend the meeting without fail A word in reply will be very much helpful

With regards

Yours sincerely
Mathura Das Mathur

Kanhaiyalal Sethia
Sec Joint Schem of Water Supply
Sujangarh

चन्दनमल वैद
वित्त मन्त्री, राजस्थान

जयपुर

दिनांक अक्टूबर, १९७२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका पत्र दिनांक २० अक्टूबर का प्राप्त हुआ। सुजानगढ़ तहसील की जल समस्या के समाधान के बारे में आपने जो सुझाव दिये हैं इस बारे में मैं गम्भीरतापूर्वक विचार करूंगा। परसों जयप्रकाश मिलने के लिये आया था उससे मिलकर बहुत खुशी हुई। खासकर इस बात से कि वह अपने पिताजी से ज्यादा सक्रिय तथा उत्साही है। अगर उत्साहित किया जावे तो बहुत अच्छा कार्यकर्ता बन सकता है।

मैं ३१ अक्टूबर तक जयपुर में ही हूं आप कभी भी पधार सकते हैं।

आपका, अपना
चन्दनमल वैद

CITIZEN CENTRAL COUNCIL

Chairman
SRIMATI INDIRA GANDHI
RASHTRAPATI BHAVAN
NEW DELHI-4

Dated December 5 1972

My dear Kanhaiyalalji

Received your letter of 22nd November 1972 It was a great pleasure to see it

I am glad that you have now completely recovered from the heart ache that you suffered

I have seen the representation which you have addressed to the Prime Minister about the route of so called Yamuna Canal This scheme is still in embryo and have not yet been finalised I doubt very much whether this scheme will find any place in the Fifth Plan Already the Rajasthan Canal is proving a great financial burden to the Rajasthan Plan However if this scheme is materialised it will give great benefit to the desert districts of our State As desired in your letter I will surely pursue it and do as much as I can

I will be visiting Calcutta at the time of the A I C C Session I am sure you will stay at Calcutta by that time

Rest all well Keep fit and active

My good wishes and regards

Yours sincerely
Mathura Das

चन्दनमल बैद
वित्त मंत्री राजस्थान

जयपुर
Dated December 13 1972

My dear Shri Sethiaji

With reference to your letter dated 12th November 1972 the Water Supply Scheme for Charwas has been sanctioned for Rs 1 37 lacs and the work will be started very shortly

As regards the schemes for Tharda and Duliyan in Tehsil Sujangarh I am writing to the Chief Engineer Public Health Engineering Department to prepare water supply scheme for these villages and other brackish water villages

With regards

Yours sincerely
Chandan Mal Baid

चदनमल वैद
वित्त मत्री राजस्थान

जयपुर
दिनाक २७ माच, १६७३

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहब

आपका पत्र दिनाक २८ माच १६७३ मिला। आम तौर पर मैं आपके पत्रो का बराबर जवाब देता रहता हूं। पता नही ऐसा कौन सा पत्र रह गया जिसका मैं आपको जवाब नहा दे सका।

ग्राम भोजलाई जोनरासर वडाबर की जल प्रदाय योजना के बारे म पूरी जानकारी करके आपको सूचित करूगा।

आपका अपना
चदनमल बद

चन्दनमल वैद
वित्त मन्त्री, राजस्थान,

जयपुर
दिनाक १७ अप्रैल, १९७३

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहब,

आपका पत्र दिनाक १ अप्रैल, १९७३ बम्बई से वापिस आने पर प्राप्त हुआ। आपने अपने पत्र म जिन जल प्रदाय योजनाओ का जिक्र किया है उनके बारे म मैं सर्वे करवा रहा हू और उसके बाद उनको स्वीकृत करने की कायवाही करूगा। राजस्थान की पेयजल की समस्या बडी विकट है और इसके समाधान क लिए करोडा नही बाल्कि अरबो रुपया की जरूरत है फिर भी जो कुछ भी साधन राजस्थान सरकार क पास है तथा भारत सरकार से प्राप्त कर सकते हैं उनको मिलाकर काफी काय किया जा रहा है।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

सस्नेह,

विनम्र
चदनमल वद

चन्दनमल वैद
वित्त मंत्री, राजस्थान

जयपुर
दिनांक मई ६ १९७४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका पत्र दिनांक २ मई १९७४ प्राप्त हुआ। मैं वायदा २८ ४ १९७४ को रतनगढ नहीं जा सका। इस वर्ष अभी तक कोई नई जल प्रदाय योजना स्वीकृत करने के लिये धनराशि उपलब्ध नहीं है। साल के बीच में अगर कोई धनराशि उपलब्ध हुई तो आपके द्वारा सुझाए गए गावों पर भी विचार किया जावेगा।

जून के तीसरे सप्ताह में जब आप राजस्थान की तरफ आयेंगे तब आपसे मिलूंगा।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

अभिवादन

आपका अपना
चन्दनमल वैद

चन्दनमल वैद   जयपुर राजस्थान
राजस्थान नहर मंत्री   दिनाक अगस्त १९८४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

आपका पत्र दिनाक ७ अगस्त १९८४ स्टेटसमैन मे प्रकाशित श्री जे एन उप्पल के लेख के साथ प्राप्त हुआ। मै इस लेख के जवाब की तयारी कर रहा हू। आशा है आप स्वस्थ होगें। राजस्थान के हिता के सम्बन्ध म आप कलकत्ते म बैठ कर जो रुचि ले रहें हैं उसके लिए मैं और मेरे साथी आपके आभारी हैं।

सादर नमस्कार

आपका
चन्दनमल बैद

(रावी-व्यास क पानी का राजस्थान म दिये जाने वाले हिस्से के विवाद के सदभ म दिये गये पत्र का प्रत्युत्तर)

KARNI SINGH
Member Parliament

Lallgarh Palace,
Bikaner
Dated 4th Sept 1964

My dear Sethiaji

With reference to your circular dated 15 8 64 addressed to H H the Maharaja Sahib Bahadur I write to say that His Highness appreciates its contents and the keen interest you have been evincing in the solution of this most difficult problem pertaining to the supply of drinking water which is a basic demand in a Welfare State In this connection I would like to mention that His Highness has been dealing with this question for so many years and we have been informing you and the Municipal Board Sujangarh regarding the steps taken on this end This question was discussed in all its bearings in a meeting of the Rajasthan Underground Water Board held at Bikaner on the 30th July 1964 It is indeed a matter of great regret that no constructive action has been taken in this behalf during the last 17 years The Chief Engineer Health Rajasthan has been advised to tackle this promblem earlier The Scheme now drawn up is that the supply of water to Sujangarh should be arranged from Sandwa It is no doubt a big scheme in view on failure of other alternatives to effectively deal with the situation The Chief Engineer Health has asked the Executive Engineer Waterworks Bikaner even a couple of days ago to investigate and prepare a scheme to give effect to it as early as possible

They have drilled apart from two open wells at Sandwa a Tube Well in order to augment the supply at source for the execution of the scheme Evidently laying of pipe lines from Sandwa to Sujangarh will take considerable time but in my opinion we should now press hard for its speedy execution on humanitarian grounds Obviously there appears no other prospect to meet our problem we are taking all possible steps for expeditious implementation of the scheme and you may kindly also urge its importance as you have been doing so far so that united efforts as contemplated by you in the circular may bring the desired results earlier

With kind regards

Yours sincerely
Prem Singh

DR. KARNI SINGH
Member Parliament

MOONLIGHT WHISPERS
10 Prithviraj Road
New Delhi 110011
Dated December 19 1972

My dear Dr Rao,

I am sending you herewith rather an interesting representation received from Shri Kanhaiyalalji Sethia of Ratan Niwas Sujangarh Churu District (Rajasthan) wherein he has mentioned the Government of India s plan to utilise the flood water of the Ganges by diverting it towards dry belt of Rajasthan If you can kindly glance through the second para of his representation you will find that his suggestions are useful and more economical because of the reasons mentioned in his representation

You will recall that I had mentioned to you and also raised during one of my speeches in Parliament that the Churu District of Rajasthan should be surveyed for irrigation either through the Rajasthan Canal Project (Lift Channel Scheme) or by diverting the flood Water of Ganges to Churu District or alternatively some other scheme You were kind enough to suggest that the area would be surveyed and I hope that this survey has since then taken place and I am very happy to hear from you about the same in your reply I am sure that a man of your great vision would be able to solve this problem possibly and quickly

Hoping to hear from you and with kindest regards

Yours sincerely
Dr Karni Singh

encl as above

Hon ble Dr K I Rao
Minister of Irrigation and Power
Government of India New Delhi

c c Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas Sujangarh
Churu District Rajasthan

गजाधर सोमानी
मासद उद्योगपति
सासद

१८ सुजानगर
मथुरा राड
नई दिल्ली

११ ६ ६४

आपका ता १२।८ का गस्ती पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जाधपुर बीकानेर क्षेत्र म जहा जहा जल का अभाव है तथा इसकी प्राप्ति हा जाय इस सम्बन्ध म याजना बनाने का विचार किया जा रहा है। जल जीवन की आधारभूत प्राथमिक आवश्यकता है अत इस की प्राप्ति के लिये हर प्रयास का सब लोग स्वागत करग। मरा समझ म पहिले कुछ स्थाना का Survey कराया जाना चाहिये तथा Survey के आधार पर प्राप्त रिपाट पर काय किया जाना चाहिये। ताकि जिस जगह जल उपलब्धि के लक्षण हा वहाँ पहिले काम आरम्भ किया जा सके तथा वहाँ की जनता का इसका लाभ मिल सके। इस सम्बन्ध म राज्य सरकार स सम्पर्क स्थापित किया जाना चाहिये तथा उनसे मालूम किया जाना चाहिये कि इस क्षेत्र म क्या इस सम्बन्ध म Survey का काय हुआ है और हुआ है तो उसका Report माग कर जानकारी प्राप्त की जानी चाहिये। सुजानगढ जसवन्तगढ तथा आसपास के स्थाना म वहाँ मीठे जल की विकट समस्या है। उसके लिय स्थानीय जनता के सहयाग स काय किये जाने चाहिये तथा इसी तरह अन्य स्थाना म भी। राजस्थान सरकार से भी यथा सम्भव सहयाग प्राप्त करने की चेष्टा की जानी चाहिये।

जयपुर राजस्थान की राजधानी है तथा वहाँ समय २ पर विशेष समाराह हाते रहते है। अत किसी खास समाराह के समय इस सम्बन्ध म रुचि रखने वाले महानुभवा की मीटिंग का आयाजन रखा जाय ता अनायास ही बहुत लोगा को आपस म मिलकर विचार विमर्श का अवसर मिल जायगा तथा ठीक योजना भी बन सकेगी।

आपके इस शुभ प्रयास के लिये मरी हार्दिक शुभ कामनाए है।

विशेष शुभ

भवदीय
गजाधर सामानी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सुजानगढ़

गजाधर सोमानी
उद्योगपति

१०१, सुदरनगर
नई दिल्ली ३
दिनाक २१ दिसम्बर १९७२

प्रिय भाई कन्हैयालालजी,

आपका पत्र मिला। मैं कलकत्ता म बसे करीब १५ दिन था अगर आपकी ओर से कोई फोन आ जाना तो मैं आपसे मिलने आ जाता तथा वातचीत हाजाता। आशा है अब आपका स्वास्थ्य ठीक चल रहा हागा।

आपने जिस लम्बी विस्तन योजना के सम्बन्ध मे माननीय प्रधान मन्त्रीजी को जा पत्र लिखा है वह काफी महत्वपूण है। लेकिन राजस्थान नहर जैसी महान योजना जिस धीमी गति से कार्यान्वित हो रही है उसका देखते हुए नई योजनायें किस गति से चलेंगी यह विचारणीय है। अत छोटी छोटी नहरें तालाब, अथवा कुए खुदवाने तथा उनके विद्युतिकरण पर जोर दिया जाय तो श्रेयस्कर रहेगा। इनसे वतमान मे सूखे के सकट का तत्कालिक सामना किया जा सके तथा ऐसी योजनायें पूण होने से भविष्य म लाभ रहेगा तथा उन क्षेत्रा का विकास भी होगा।

इस सम्बन्ध म कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन के समय पधारे हुए मन्त्रिया ससद सदस्या एव विधायका तथा उद्योगपतिया एव अन्य कायकर्त्ताओ से विचार विमश करने का आप जो प्रयास कर रहे हैं उसकी सफलता की मैं कामना करता हू।

हमारे प्रतिनिधि श्री चादरतनजी मोहता आज कलकत्ता पहुच रहे हैं तथा आपसे इस सम्बन्ध म मिलेंगे।

विशेष शुभ।

आपका
गजाधर सोमानी

नाथूराम मिरधा
कृषि एवं सिंचाई मन्त्री

जयपुर राजस्थान
दिनांक ७ सितम्बर १९६४

प्रिय श्री सठियाजी

राजस्थान के अधिकांश भूभाग में मीठे जल की समस्या के बारे में आपका पत्र दिनांक १५ अगस्त का मिला जिसके लिये धन्यवाद। सरकार ने इस सम्बन्ध में श्री हरिश्चन्द्रजी माथुर की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई थी और उसकी एक रिपोर्ट भी छप चुकी है आपकी इस में क्या नई विचारधारा है? इसका एक नोट तैयार करके सब को भेजें फिर इस बारे में विचार किया जा सकता है।

आपका
नाथूराम मिरधा

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सुजानगढ़

नाथूराम मिर्धा

अध्यक्ष

राष्ट्रीय कृषि आयोग

विज्ञान भवन अनेक्सी

नई दिल्ली ११

अ० स० स० मी एन०सी०ए० (२)/७२जी० दिनाक १२ दिसम्बर १६७२

प्रिय कन्हैयालालजी,

आपका पत्र प्रधान मन्त्रीजी का भेजे गये पत्र की प्रति सहित प्राप्त हुआ। इस याजना का सर्वे का काम हरियाणा व राजस्थान सरकार कर रही है। मुझे इस बारे म पूरी दिलचस्पी है और वक्त पर जो कारवाई मुझे करनी है उस बारे म पूरी जागरुकता है।

हर समझदार राजस्थान क नागरिक की दिलचस्पी होना भी स्वाभाविक है और आप भी उनम स एक है।

आपका स्वास्थ्य अब अच्छा हागा। मेरे याग्य सेवा स अवगत कराते रहें।

आपका

नाथूराम मिर्धा

नोट गगा के अतिरिक्त जल का राजस्थान क मरुभाग म प्रवाहित करने के लिए प्रधान मन्त्री का भेजी गयी याजना के सदभ म प्राप्त पत्र।

रामेश्वर टाटिया
सांसद सदस्य

३५ मीनाबाग
नई दिल्ली
दिनांक १६ ८ १९६४

भाई श्री कन्हैयालालजी

आपका एक पत्र बहुत दिनों से आया हुआ पड़ा था। मैं विदेश चला गया था अत उत्तर देने में विलम्ब हुआ। कृपा पूर्वक क्षमा कीजियेगा। राजस्थान के मरुस्थल के विषय में आपने जो लिखा वह ठीक है। कुछ न कुछ इस विषय में होना ही चाहिए। इतने बड़े भूभाग के होते हुए भी देश में अन्न का अभाव इस प्रकार रहे यह खेद की बात है। इसराइल की स्थिति भी हमसे मिलती जुलती थी किन्तु उन्होंने रेगिस्तान को हरा भरा कर दिया। संसार के हर भाग में जाँच के सतरे भेजे जाते हैं। आप साहित्य सृजन के अतिरिक्त दूसरे जनहित के कार्यों में भी रुचि लेते रहते हैं यह प्रान्त के लिये गौरव की बात है।

मुझे जहाँ भी आप सूचना देंगे वहाँ नियत तिथि पर उपस्थित हो जाऊंगा।

पूज्य छगनमलजी को मेरे प्रणाम कहियेगा।

आपका
रामेश्वर टाटिया

PRIME MINISTER'S SECRETARIAT

No 17(737)/72 PMS

New Delhi 11
Dated November 21 1972

Dear Sir,

This is to acknowledge your letter dated November 15 1972 to the Prime Minister regarding your suggestion for a scheme to irrigate the desert areas of Rajasthan

Yours faithfully
V Ramachandran
Joint Secretary to the
Prime Minister

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh (Churu Distt)
Rajasthan

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक उद्योगपति

कलकत्ता
दिनाक १८ १२ ७२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका १३ तारीख का पत्र तथा इन्दिराजी को आप दिये गये इस पत्र की प्रतिलिपि मिली।

पानी के लिये आपका सुझाव याने आपने जो Route बनाया है उससे मैं सर्वथा सहमत हू। जयपुर मे कृषि मन्त्री अथवा मुख्य मन्त्री से मिलना होगा तब मैं इस बारे मे चर्चा करूगा।

५वी कक्षा तक के विद्यार्थियो के लिये पाठ्यक्रम मे रखी जाने वाली पुस्तको को राजस्थानी मे लिखाई जाने के बारे मे आपके साथ चर्चा हुई थी। उस बारे मे मैने लक्ष्मी निवासजी बिडला के सामने चर्चा चलाई उनका कहना है कि राजस्थानी साहित्यिको को मिल कर भाषा का एक रूप निर्धारित करना चाहिये। उसके बाद ही राजस्थानी मे पाठ्य पुस्तके लिखी जाने की बात आगे बढाई जा सकती है।

आशा है आपका स्वास्थ्य काम चलाऊ ठीक ठाक होगा।

आपका
भागीरथ कानोडिया

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक, उद्योगपति

दिनांक २८ २ १९७४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका पत्र २५ तारीख का मिला।

मैं यहा मथुरा वृन्दावन जाने वाला था लेकिन वहा नहीं जाकर ५ को यहा से रवाना होकर दिल्ली होते हुए ७ को कलकत्ते पहुचूगा।

मुख्य मत्रीजी से राजस्थान भवन के बारे म बात हुई वह आपको मैं अपने पूर्व पत्र म लिख चुका हू।

जल रोड के बारे म बात हुई थी। इस बार म कल चन्दनमलजी से भी मिला था। चीफ इजीनियर भी उपस्थित था। भोगीलालजी पाड्या जो कि इस काम के बीच म है, एक बार मुख्य मत्रीजी से फिर मिलेंगे। लेकिन जो बातचीत हुई उससे ऐसा नहीं लगता कि काम पार पडेगा। फिर घिसकर उनको सारा सरकारी तत्र के माफत ही काम करने का है ऐसा मुझे लगा। रुपया तो उनके पास काफी पडा है, खच भी करेंगे ही, लेकिन सरकार का अपना ढर्रा है उसके अनुसार ही काम करते लगते है।

राजस्थान की सेवा के बारे म आपने लिखा सो सारा काम, सारी सूझ-बूझ सारा परिश्रम बद्रीनारायणजी का है। मैं तो इसमे निमित्त मात्र ही हू। लोगो के स्नेह के कारण सुयश का यश मुझको भी मिल जाता है।

वाल सिंचाई वाले कूओं म पानी का अपव्यय होगा ऐसा बात नहीं है। जहा जहा जन प्रदाय योजना बनकर टूटी लगी है वहा तो दुरुपयोग अवश्य हुआ है।

आपने युवक लोगो और अफसरों को मिलने वाली सहायता की कठिनाई के बारे म लिखा सो बिल्कुल सही है। पिछले साल अकाल के दिनो म भी मैंने यह काम शुरू किया था। करीब एक सौ लोगो को प्रमाण दिया भी पाया था

किन्तु बाद में जैसाकि आपने लिखा है पटवारी और तहसीलदारो द्वारा डाली हुई अडचनो के कारण निराश होकर मैंने यह काम छोड दिया था। अब झुझनू और सीकर दो जगहों के कलक्टरो से तो अच्छी तरह बात कर ली है। वे न केवल अडचन ही नही डालेंगे बल्कि सहयोग भी देंगे। उदयपुर के कलेक्टर से और बात कर रहा हू। कार्यकर्ता तो लगाने ही पडेंगे। जिन लोगो को सहायता मिलने वाली है उन्हें दौड धूप बिल्कुल नही करनी पडेगी। सारा काम पीपुल्स वेलफेयर सोसाइटी (जन कल्याण समिति) ही करेगी।

आपने ५० फार्म सुजानगढ भेजने के लिए लिखा सो भेज दूगा।

हिन्दी टाइपिंग स्कीम के बारे में मैंने केन्द्रीय सरकार को एक पत्र लिखा था लेकिन उनका उत्तर नही आया। मेरा विचार उनसे दिल्ली में मिलने का भी था लेकिन सोचता हू कि कलकत्ते में मामला थोडा सा आगे बढे तो मिलू।

राजस्थान में ठड पहले से बहुत कम हो गई थी लेकिन अब तीन दिन से फिर पडने लगी है। आशा है आगामी एक दो दिन में बिल्कुल चली जायेगी।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका,
भागीरथ कानोडिया

RANGNATH BANGUR
Industrialist

Kettlewell Bulen & Co Ltd
21 Strand Road
Calcutta
Dated December 27 1972

Shri Kanhaiyalal Sethia
Messrs Sethia Trading Co
3 Mangoe Lane
Calcutta

Dear Kanhaiyalalji

I am in receipt of your letter dated 22nd December enclosing therewith a copy of your letter to the Prime Minister regarding Yamuna Canal

Your efforts in this direction are appreciated Any increase in water resources in the desert of Rajasthan will be very useful

Thanking you

Yours sincerely
R. N Bangur

रगनाथ बागड
उद्योगपति

कैटलवैल बुलियन क० लि०
२१, स्ट्राड रोड कलकत्ता
दिनाक ४ ५ १९७४

श्री कन्हैयालालजी सठिया
सेठिया ट्रेडिंग क
३ मैंगो लेन
कलकत्ता १

आपका पत्र दिनाक १६ ४ ७४ का मिला आपके विचार बहुत सुन्दर है आपने पानी के लिए लिखा सो मुझे आशा है कि नागौर व चुरू जिला म पानी के लिए आपका प्रयास सफल होगा व जनता को राहत मिलेगी।

भवदीय
रगनाथ बागड

राजबहादुर
सासद

१६, अक्बर रोड
नई दिल्ली
दिनाक दिसम्बर ३१, १६७२

प्रिय श्री सेठिया,

नमस्कार।

आपका कृपा पत्र दिनाक २८ दिसम्बर प्राप्त हुआ। आपने गगा यमुना के जल से राजस्थान के कष्टो को दूर करने का जो प्रस्ताव रखा है, उसकी ओर मैं अपने सहयोगियो का ध्यान आकर्षित करूगा और जो भी मुझसे बन पडेगा करने की चेष्टा करूगा। शेष शुभ। आपकी स्नेहयुक्त भावनाओ के लिये धन्यवाद।

आपका,
राजबहादुर

राजबहादुर

टेलीफोन ६५१५७७
ए ३३ पंचशील पार्क
नई दिल्ली ११००१७
दिनांक २५ २ १९८३

प्रिय श्री कन्हैयालाल मठियाजा

नमस्कार।

आपका पत्र और उसके साथ आप द्वारा लिखा गया प्रधान मंत्री महोदया के नाम पत्र की प्रतिलिपि मिली। एतदर्थ अनेकानेक धन्यवाद।

रावी-व्यास और गंगा यमुना के पानी के संबंध में जो भी प्रयत्न मुमकिन हो सकता है मैं करता रहा हूं और भविष्य में भी करता रहूंगा। आपकी सदभावनायें और शुभ कामनायें आवश्यक हैं।

शेष कुशल।

आपका
राजबहादुर

D O No 7(4)/73 DW II

MINISTER FOR IRRIGATION & POWER

New Delhi
Dated May 29th 1973

Dear Dr Karni Singhji

Kindly refer to your letter dated the 19th/22nd December 1972 forwarding a representation from Shri Kanhaiyalalji Sethia about the diversion of surplus Ganga waters for irrigating areas of Rajasthan

The engineers of Rajasthan State had prepared outline proposal envisaging diversion of 40 000 cusecs of Ganga waters to serve Rajasthan areas The Haryana engineers had also prepared a similar scheme to divert 10 000 cusecs from Hardwar for use in their State

The schemes proposed by engineers of Rajasthan and Haryana for the diversion of Ganga waters were brought to the notice of the U P engineers who have stated that they are contemplating a Madhya Ganga Canal Pariyojna under which extension of irrigation in several pockets of the State had been proposed They have stated that all the flows in the Ganga at Hardwar and Narora would be needed by their State in the existing and proposed canal systems and in storages already under construction and those proposed to be taken up

However the possibilities of such inter basin transfer of waters without affecting the irrigation requirements of any

मूलचन्द पारीक
समाज सेवक

पारीक चौक नयाशहर
बीकानेर (राजस्थान)
दिनांक १० २ ८३

आदरणीय श्री सेठियाजी,

सादर प्रणाम। आशा है आप स्वस्थ्य व प्रसन्न होंगे। आपके ३० १ ८३ व ६/२/८३ के पत्र मिले। आपके सुझावानुसार मैं श्री डा० करणी सिंहजी से मिलकर उनसे भी वक्तव्य देने का अनुरोध करूंगा। ६/२/८३ को दिल्ली में प्रधान मंत्री से बीकानेर डिविजन के विधायक व जिला कांग्रेस कमेटियों के अध्यक्ष गंगानगर व रावी व्यास के पानी का प्रश्न दुबारा न खड़ा करने के बारे में मिलने पहुंचे हैं। उसकी रिपोर्ट अब मिलेगी। अकादमी के बारे में आपने जो कदम उठाया है उसकी जानकारी मिली। अकादमी की अनौपचारिक बैठक जयपुर में श्रीपूनमचन्दजी बिश्नोई के यहां आजकल में होने वाली है। सर्दी का जोर इन दिनों इधर काफी है।

स्वर्गीय श्रीरामरतनजी कोचर की स्मृति में यहां उनकी संगमरमर की प्रतिमा लगाने का निर्णय हुआ है और नगर विकास न्यास ने बीकानेर गंगाशहर व जोधपुर मार्ग के संगमस्थल पर जैन कालेज के पास स्थान दे दिया है। इसके लिए श्रीरावतमलजी कोचर की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई है जिसका मैं मंत्री हूं। इस समिति द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजना समिति का निर्माण श्री रतनलालजी जोशी भूतपूर्व संपादक दैनिक हिन्दुस्तान एवं श्री अक्षयकुमारजी जैन भूतपूर्व संपादक दैनिक नवभारत टाइम्स की अध्यक्षता में बनाई गई है जिसका मंत्री का कार्य भी मेरे जिम्मे आया है। आयोजना समिति में केन्द्र व राजस्थान के कई मंत्री व सांसद तथा कलकत्ता बम्बई पंजाब व दिल्ली के प्रमुख समाज सेवी हैं, उक्त समिति में आपका नाम भी है जिसके बारे में कलकत्ता में पहले मैंने आपसे चर्चा की थी। इस समिति के संबंध में मार्च या अप्रेल में एकबार कलकत्ता आने का कार्यक्रम है। बीकानेर में बनी समिति के माध्यम से संग्रहीत राशि में से प्रतिमा व ग्रंथ व आयोजन पर लगा व्यय बाद देकर जो राशि बचेगी वह वल्लभ सदन के लिए दे दी जायगी। फोल्डर-अपील छप रहे हैं, छपने पर भिजवाऊंगा।

पत्राचार चलता रहेगा। आपके प्रेरक व्यक्तित्व व भावनापूर्ण कथन व विचारों से बड़ी प्रेरणा मिलती है। मेरे योग्य सेवा लिखेंगे।

भवदीय
मूलचन्द पारीक

राजस्थान सरकार
मुख्यमत्री कार्यालय

क्रमाक ५४७। जयपुर
दिनाक १६ फरवरी, १९८३

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन, कलकत्ता १

प्रिय महोदय,

मुख्यमत्री महादय को आपका पत्र दिनाक ५ २ ८३ प्राप्त हुआ। आप द्वारा रावी व्याम पानी के सबध म राजस्थान के पक्ष को सुदृढ करने हेतु प्रधान मत्री भारत का भेजे गये पत्र के लिये मुख्यमत्री महोदय अनुग्रहित हैं। उन्हें इस बात की खुशी है कि आप इतनी दूर रहकर भी राजस्थान के हिता क बारे म सजग हैं।

सादर

भवदीय,
रतन सिंह सिंघी
उप-सचिव, मुख्य मत्रा

शिवचरण माथुर
मुख्यमंत्री, राजस्थान

जयपुर

अ शा पत्र क्र २७८८/

दिनांक ७ ७ १९८३

प्रिय श्री सठियाजी

मुझे आपका पत्र दिनांक २६ जून ८३ व उसके साथ प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एवम् तत्कालीन सांसद डा० करणी सिंह को गंगा का पानी राजस्थान के सूखाग्रस्त इलाकों में दिये जाने के लिये लिखे, पत्रों की प्रति सहित मिल गया है। प्रस्तावित योजना के सम्बन्ध में समुचित कार्यवाही किये जाने के लिये मैं सम्बन्धित विभाग को निर्देश दे रहा हूँ।

सद्भावी,
शिवचरण माथुर

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

शिवचरण माथुर
मुख्यमंत्री, राजस्थान

जयपुर

अ० शा० पत्र स० प४(३)(१)
मुमसरा/४/८४

दिनांक १४ अगस्त १९८४

प्रिय श्री सेठियाजी,

मुझे आपका वह पत्र प्राप्त हो गया है जिसमे आपने गोपाल गौशाला, सुजानगढ मे एक शक्तिशाली बोरिंग मशीन भिजवाने के लिये निवेदन किया है। मैं इस सम्बन्ध मे समुचित कार्यवाही किये जाने के लिये संबंधित विभाग को निर्देश दे रहा हूं।

सादर

सदभावी,
शिवचरण माथुर

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

शिवचरण माथुर
मुख्यमंत्री राजस्थान

जयपुर

अ शा पत्र क्र-२७८८/

दिनांक ७ ७ १९८३

प्रिय श्री सेठियाजी,

मुझे आपका पत्र दिनांक २६ जून ८३ व उसके साथ प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एवम् तत्कालीन सांसद डा० करणी सिंह को गंगा का पानी राजस्थान के सूखाग्रस्त इलाकों में दिये जाने के लिये लिखे पत्रों की प्रति सहित मिल गया है। प्रस्तावित योजना के सम्बन्ध में समुचित कार्यवाही किये जाने के लिये मैं सम्बन्धित विभाग को निर्देश दे रहा हूँ।

सद्भावी,
शिवचरण माथुर

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

रामनिवास मिर्धा
सिंचाई मंत्री भारत

नई दिल्ली

अ० स० पत्र स० १०(६६)/७४-ज०वि०

दिनांक १७ अगस्त १९८३

प्रिय श्री सठियाजी

कृपया दिनांक २०.७.१९८३ के अपने पत्र का अवलोकन करें जिसके साथ आपके द्वारा नवम्बर १९७२ में प्रधानमंत्री को सबोधित पत्र तथा उसी पत्र के संदर्भ में सिंचाई मंत्री द्वारा डा० कर्णी सिंह संसद सदस्य को मई १९७३ में भेजे गए उत्तर की एक प्रति भेजी गई है।

मानसून मौसम के दौरान गंगा में प्रवाहित होने वाले अधिशेष बाढ़-जल को राजस्थान के क्षेत्रों में सिंचाई करने के लिए व्यपवर्तित करने की सम्भावना के बारे में पिछले कुछ समय से इस मंत्रालय में विचार किया जाता रहा है और सिंचाई मंत्रालय द्वारा १२ मई १९८३ को अध्यक्ष गंगा बाढ़ नियंत्रण आयोग की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति गठित की गई है जिसमें राजस्थान हरियाणा और उत्तर प्रदेश राज्यों के प्रतिनिधि सदस्य के रूप में सम्मिलित हैं, जो इस बात की जांच करेगी कि क्या गंगा के अधिशेष बाढ़-जल को यमुना में व्यपवर्तित किया जा सकता है और जो अधिशेष बाढ़-जल को हरियाणा राजस्थान और दिल्ली में उपयोग में लाने की गुंजाइश की भी जांच करेगी।

सादर,

आपका,
राम निवास मिर्धा

श्री कन्हैयालाल सठिया
कलकत्ता

शिवचरण माथुर
मुख्य मंत्री

राजस्थान
जयपुर

अ शा पत्र संख्या
मुम ४/प ४७(४)वन/८६ ६५२८

दिनांक २६ अक्टूबर ८६

प्रिय श्री सठियाजी

राज्य म युकलिप्टिस क अधिक पड लगाने के सम्बन्ध म आपका दिनांक २७ सितम्बर ८६ का पत्र मुझे प्राप्त हो गया है। मैं इस सम्बन्ध म शीघ्र आवश्यक कार्यवाही करने के लिये वन एवं पर्यावरण मंत्रीजी को आवश्यक निर्देश के साथ भिजवा रहा हू।

सादर।

भवनिष्ठ
शिवचरण माथुर

श्री कन्हैयालाल सठिया
सठिया टडिंग कम्पनी
३ मगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

(श्री गगानगर और कोटा क्षेत्र म वाटर लागिंग की समस्या के समाधान हेतु युकलिप्टिस के वन लगाये जाने के सुझाव के प्रत्युत्तर म प्राप्त पत्र)

हरिदेव जोशी
मुख्य मत्री, राजस्थान

जयपुर

क्रमाक प६२/निस/मु म/८५

दिनाक २४ अगस्त, १६८५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

आपके पत्र दिनाक २६ ७ ८५ प्राप्त हुए।

पजाब समस्या के समाधान हेतु आपके द्वारा किये गये प्रयास एव राजस्थान के हितो के प्रति जागरूकता के लिए हार्दिक धन्यवाद।

शुभकामनाओ सहित,

सद्भावी,
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

हरिदेव जोशी
मुख्य मन्त्री

राजस्थान
जयपुर

अ शा पत्रांक नि स/मु म/८५।११६१ दिनांक २० अगस्त, १६८५

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका पत्र दिनांक ३० ७ १६८५ स्टेटसमन' के सम्पादकीय की कतरन के साथ प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध म आप द्वारा पूव म भेजे गये पत्र भी मुझे मिल गये थे।

आपने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे अवगत हुआ। आशा है आप स्वस्थ एव प्रसन्न होंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

नोट राबी व्यास जल विवाद के सदभ म दिये गये पत्र का प्रत्युत्तर।

हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री, राजस्थान

जयपुर

क्रमांक ५६२/निस/मु म /८५ दिनांक २४ अगस्त १९८५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

आपके पत्र दिनांक २६ ७ ८५ प्राप्त हुए।

पंजाब समस्या के समाधान हेतु आपके द्वारा किये गये प्रयास एवं राजस्थान के हितों के प्रति जागरूकता के लिए हार्दिक धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित

सद्‌भावी,
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री, राजस्थान

जयपुर

अ शा पत्र क्रमांक मु म १/प १०१२/स व्या/८६/७१६ दिनांक १५ २ ८६

प्रिय श्री सेठियाजी

रावी-व्यास के पानी के सबध म राजस्थान के हिता को ध्यान म रखने के सबध म आपके द्वारा लिखा अर्द्धशासकीय पत्र दिनांक ३० १ ८६ मुझे प्राप्त हो गया है। इस सबध म राजस्थान सरकार पूर्ण रूप से सजग है और आवश्यक कार्यवाही कर रही है।

सादर।

सदभावी
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

हरिदेव जोशी
मुख्य मन्त्री, राजस्थान

जयपुर

अ शा पत्र क्रमांक मुम-४/प ४३ (४) इगानप/८७/१६६८

दिनांक ३ अप्रैल १६८७

प्रिय श्री सेठियाजी,

मुझे आपका पत्र दिनांक १७ ३ ८७ प्राप्त हो गया है। चूरू साहवा लिफ्ट स्कीम के अन्तर्गत सुजानगढ़ लाडनूं क्षेत्र को सम्मिलित किये जाने के बारे में एवं कलकत्ता में राजस्थान सूचना केन्द्र को अपग्रेड करने से सम्बन्धित प्रकरणों को मैं दिखवा रहा हूँ।

सादर।

सद्भावी
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

हरिदेव जोशी
मुख्य मन्त्री, राजस्थान

जयपुर

अ शा पत्र क्रमांक मु म १/प १०/१ सिंचाई/८/२५५२

दिनांक २० ५ ८७

प्रिय श्री सेठियाजी

गंगा के बाढ के अतिरिक्त जल का राजस्थान एवं हरियाणा को दिये जाने पंजाब के साथ नदी जल के बंटवारे तथा मरु क्षेत्र की उपेक्षा करने से सम्बन्धित आपका अर्द्धशासकीय पत्र दिनांक २८ अप्रैल १९८७ मुझे प्राप्त हो गया है। उपरोक्त मुद्दों पर आपने मेरा ध्यान आकर्षित किया इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

सादर।

सदभावी
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

मूलचंद डागा

संसद सदस्य
सभापति
अधीनस्थ विधान संबंधी समिति
लोक सभा

१० मीना बाग
नई दिल्ली ११० ०११
दिनांक २० ८ १९८६

आदरणीय कन्हैयालालजी सेठिया

सादर अभिवादन।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसे उत्तम विचारों के व्यक्ति का पत्र मिला। आपने जो पंजाब समझौते रावी-व्यास के पानी के बंटवारे के संबंध में लिखा है उसके लिए सभी संसद सदस्य राजाजी के पास गये थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि राजस्थान के हितों की बराबर रक्षा की जायेगी और इस समझौते के कारण राजस्थान के हित को जरा भी आंच नहीं पहुंचेगी। यह बात उन्होंने आम जनता में भी अपने भाषण में की है और कहा है। सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि राजस्थान के प्रशासन और जनप्रतिनिधियों में जो तालमेल होना चाहिये, वह नहीं है। उसके कारण ही हम कुछ कर नहीं पाते हैं।

जब आप दिल्ली पधारें तो ध्यान दें।

आदर सहित।

आपका
मूलचंद डागा

मूलचद डागा
संसद सदस्य
सभापति
अधीनस्थ विधान सबधी समिति
लोक सभा

१०, मीना बाग,
नई दिल्ली ११० ००१
दिनाक १४ १० १९८५

आदरणीय सेठियाजी

आपका कपा पत्र मिला। जो आपने मुझे राय दी है उसके आधार पर म सिंचाई विभाग के अधिकारियो स बात करूगा और केन्द्रीय मत्रीजी से भी बात करुगा और जो भी कायवाही होगी उससे आपको अवगत करा दूगा।

सादर।

आपका
मूलचद डागा

नोट राजस्थान के जालौर क्षेत्र म नमदा परियोजना को क्रियान्वित कराने के सदम म दिये गये पत्र का प्रत्युत्तर। यह योजना स्वीकृत कर ली गई है।

मूलचद डागा

ससद सदस्य
सभापति
अधीनस्थ विधान सबधी समिति
लोक सभा

८, डा० बिशम्बर दास
माग
नई दिल्ली ११० ००१
दिनाक ५ ३-१९८६

आदरणीय कन्हैयालालजी सेठिया,

आपका पत्र मिला। इस विषय पर चर्चा निकट भविष्य म आयेगी। मैंने अपना सशोधन भी दे दिया है। राजस्थान को पूरा पानी मिलेगा और इसके लिए मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूगा। राजस्थान सरकार भी पूरी तरह से जागरूक हो चुकी है। रावी ब्यास विवाद पर चर्चा होगी। एक बिल भी सदन म इस सम्बध म रखा गया है।

स्मरण कराने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

आपका,
मूलचद डागा

बी डी कल्ला
सा० नि० व शिक्षा मत्री

जयपुर, राजस्थान

अ शा प सख्या ३४६/श म/८६

दिनाक २३ १ ८६

परम आदरणाय श्री कन्हैयालालजी सठिया साहब

आपका दिनाक १६ दिसम्बर १६८८ का लिखा प्राप्त हुआ। सुजानगढ नगर के विभिन्न क्षेत्रा म पानी की सुचारु वितरण हेतु सम्बधित अधिकारिया को आवश्यक निर्देश भिजवाये जा रहे है।

आशा है शीघ्र ही कठिनाई का निराकरण हा सकेगा।

सादर

सदभावी
बी० डा० कल्ला

प्रो बी डो कल्ला
सावजनिक निर्माण मत्री

जयपुर
राजस्थान

अ ग पत्र मखा 3727/म्राति
जयपुर, दिनाक 2/9/89

परम सम्मानाय श्रा कन्हैयालाल जा सठियासाहब

आपरा पत्र न्निाक २२ जून ८६ का प्राप्त हुआ था।

साहवा–ग धेली–लिफ्ट नहर तथा सुजानगढ लाडनु तक पानी पहुचाने क बारे म आपके स न्भ सहित एक अ य पत्र श्री भवरलाल कोठारी बीकानेर से भी प्राप्त हुआ था। इस पत्र के माध्यम से विनमता पूवक आपका आश्वस्त करना चाहता हू कि इगानय के द्वारा सुजानगढ लाडनू क्षेत्र को लाभान्वित करने की न्शा मै समस्त सम्भव प्रयास किया जावेगा। इस प्यासी धरती को वांछित मात्रा मैं पानी मिल सके यह हमारे लिए प्रस न्नता की बात हागी।

सुजानगढ मे वाड न २३ की पेयजल पाईप लाइन का सुधारने हेतु जन स्वा अभि विभाग को पूव म एक पत्र लिखा गया था। उनकी और स पत्र प्राप्ति स्वीकृति भी मिला था। आपके उपरोक्त पत्र मे जानकारी मिला कि अभी तक वाद्दित कायवाही नही हुइ अत पुन विभाग को अपनी टिप्पणी भिजवा रहा हू। आशा है आप पूणत स्वस्थ एव प्रसन्न हागें। मैं जनदाय विभाग के मत्री जी श्री अशोक जी गहलात से स्वय मिन कर इस समस्या के समाधान हेतु उन्हें प्रभावी कायवाही करने हेतु कहूँगा।

इस वप साहवा (चूरू) लिफ्ट सिंचाई याजना के 10 K M तक नहर बनाने की स्वाकृत दे दी गई है।

आपने झूझनू एव छापर की शिक्षण सस्थाओ के बारे म जा बात लिखी है इस सम्बध म मा शिक्षा मत्रीजी से कह कर उन पर प्रभावी कायवाही करने हेतु कहूगा। आशा है आप सपरिवार सानन्द होगे।

सादर,
बुलाकी दास कल्ला

श्री कन्हयालाल सेठिया
सठिया ट्रेडिंग कम्पनी,
२ मैंगा लेन,
कलकत्ता

श्री सेठिया द्वारा प्रेषित कतिपय महत्वपूर्ण पत्र

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh
Dated 9th September, 1959

Respected Shri Jawaharlalji

It is a matter of utmost pleasure for the people of Rajasthan that you will be paying a visit to Nagaur (Rajasthan) on 2nd October 1959 with a view to inaugurate the long cherished scheme of decentralisation in the administrative set up in Rajasthan We the people of Rajasthan shall be able to feel the true significance of the new order having you in our midst on the unprecedent occassion

While fully realising your preoccupation in national and international affairs at the present moment no citizen of India would like to embrass the beloved leader of the nation for trivial matters but I take this opportunity of drawing your attention to a very serious matter which is directly connected with the life and death of the millions of people The districts of Churu and Nagaur (particularly Sujangarh and its adjacent areas) in Rajasthan are proverbially dificient in the matter of drinking water and the day to day difficulties of the people for want of this first necessity of life can better be imagined than described No govt has been able to evolve a successful solution of this problem so far The two five year plans of the the govt of India have almost been executed but no permanent solution of the problem was proposed in them

The lacs of persons of Churu and Nagaur districts who will be gathering at Nagaur to have your darshan will really take breath of relief if you kindly declare on that auspicious occasion that you will take a personal interest in the solution of their drinking water problem It will prove a boon to them on the occasion of the Democratic Decentralisation It will still be a timely consideration if proper provision is made for the solution of this problem in the Third Five Year Plan Construction of a drinking water channel from the Sirhind Feeder or any other

place in the Punjab which may be considered appropriate from technical point of view seems to be the surest source of drinking water and a scheme of this size can only be executed through the assistance of the Central Government

I am submitting herewith a copy of the proposals put before a committee formed by the Govt of Rajasthan for the solution of drinking water problem and I shall be very much grateful to you if you kindly spare a little time to consider over them

Thanking you

Yours faithfully

Kanhaiyalal Sethia

Copy forwarded to Smt Indira Gandhi President Indian National Congress for her kind persual and necessary action

(इस पत्र का उत्तर २३ सितम्बर १९६० को मिला)

From

Kanhaiyalal Sethia
Secretary Sujangarh Water Supply Scheme Committee
Sujangarh (Rajasthan)

To

The Director
Geological Survey of India
Calcutta

Re **Exploratory groundwater in Rajasthan**

Dear Sir

I have been informed by the River Valley Development Advisor of United States of America attached to the American Embassy New Delhi that the Geological Survey of India with their technical assistance made a detailed study concerning the occurrence of groundwater in Rajasthan Sujangarh an important town in Bikaner Division of Rajasthan is suffering from scarcity of drinking water In the year 1955 efforts were made to find drinking water in Sujangarh and its adjacent area with the help of a French Drilling Company Though the Drilling Company was equipped with powerful drilling equipments but it could not bore below the depth of 135 feet since it could not break the layer of hard granite stone It is believed that drinking water in abundant quantity may be available if boring is made upto the depth of 250 feet or deeper As such it was decided to secure powerful drilling machinery supplied by America under their Indo American Agreement for Technical assistance but prior to the commencement of drilling operation it is advisable to have some hints about the occurrence of ground water in and about Sujangarh from your Department Hope that you will be kind enough in supplying us the necessary geological data in this respect

Thanking you

Yours faithfully
Kanhaiyalal Sethia

Sujangarh (Churu Distt)
Dated 5 1 1961

Kanhaiyalal Sethia
Secretary,
Water Supply Scheme Committee

Ratan Niwas
P O Sujangarh (Rajasthan)
Dated 30th January 1961

Shri Hamzah Ali
Superintending Geologist
Geological Survey of India
5 Middleton Street Calcutta 16

Dear Sir

Thanks for your letter No 134/47 555(1)/61 dated the 25th January 1961 in connection with the exploratory data available with you As Ratangarh is just in the vicinity of Sujangarh the data of the borehole at Ratangarh is likely to be very useful to us and may considerably help us in drilling at Sujangarh I there fore request you kindly to send me the data of Ratangarh at your earliest convenience

Once again I thank you for your prompt guidance

Yours faithfully

Kanhaiyalal Sethia
Secretary

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
P O Sujangarh (Raj)
Dated 22nd Sept 1963

Hon ble Shri Mathuradasji Mathur,
Home Minister Rajasthan
Jaipur

Dear Sir

I have received a copy of the letter of the Executive Engineer Waterworks Bikaner addressed to the Chief Engineer, Health Rajasthan Jaipur which indicates that the combined scheme for Sujangarh Ladnun and Jaswantgarh is under preparation with Assistant Engineer Waterworks Churu I regret to note that the scheme for Sujangarh has not been received as yet without which it is not possible to pursue the matter with the private donors including Shri Surajmal Kanoi

The scheme for Ladnun and Jaswantgarh has been received and agreement finalised and boring work is also to start very soon If the results of the said boring come out to be successful and confirm the availability of water in ample capacity further progress in regard to Sujangarh scheme will be hampered if the required scheme is not finalised before hand I, therefore request you to look into the matter personally and arrange to send me a copy of the scheme for Sujangarh as early as possible

With kindest regards

Yours respectfully
Kanhaiyalal Sethia
Secretary
Combined Water Scheme for Sujangarh
Ladnun and Jaswantgarh

Copy submitted to

1 The Chief Engineer Health, Rajasthan Jaipur
2. The Executive Engineer Waterworks Bikaner
3 The Asstt. Engineer Waterworks Churu
4 The Chairman Municipal Board Sujangarh

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh (Rajasthan)
Dated 19th Nov 1963

My dear Shri Bhargava Sahib

Very many thanks for your D O No H/GI(177) 631 37952 dated 12th Nov 1963 As the said letter was self explanatory the scheme as contained therein was very well understood by me

In this connection I beg to draw your attention to the cabinet proposals regarding the combined Water Supply Scheme for Sujangarh Jaswantgarh and Ladnun Probably the scheme referred to in your letter whose source of water is Sandwa wells might be related to the said combined scheme

The results of borings at Ladnun have come out to be very successful and the scheme for Ladnun and Jaswantgarh has already been taken in hand by your Deptt The boring work for supply of water to Ladnun town will begin very soon and it is very likely that the sources of water there might be sufficiently ample to meet the needs of Sujangarh also If this probability comes out to be true the materialisation of the scheme as far it is concerned with Sujangarh will be far more economical than that referred to in your letter In that case the donors may be approached more easily as the proportionate share of expenses will be reduced to a large extent At this stage I request you to give me a picture of the estimated cost of the scheme taking the source of water at Ladnun and the share thereto to be contributed by the private donors for supply of water to Sujangarh This will help me in managing the affairs as soon as the results of the proposed three more borings for Ladnun town are available

It would not be out of place to mention that Shri Kanoi and other philanthropists of this place are at present visiting their home town and your estimated cost will guide us all in planning

about the proposed scheme For your ready reference I may add that Ladnun is approximately 7 miles from Sujangarh whereas Sandawa is 20 miles away from here

It is therefore requested that you will kindly take this matter in hand seriously and let me have the desired information as early as possible

With regards

Yours sincerely

Kanhaiyalal Sethia

Kanhaiyalal Sethia

Ratan Niwas
Sujangarh (Churu Dist)
Dated Nov 15 1972

Srimati Indira Gandhi
Prime Minister
Government of India
New Delhi

Honourable Madam

I have the honour to submit the following scheme for irrigating the desert area of Rajasthan and also for providing drinking water to its people for your kind consideration

It has been heard that the Government of India is considering a plan to utilise the flood water of the Ganges by diverting it towards dry belt of Rajasthan According to this scheme this water will flow into the Narora Dam over Yamuna near Aligarh wherefrom it will pass through the districts of BHARATPUR ALWAR JHUNJHUNU SIKAR CHURU and NAGORE in Rajasthan I beg to submit the route of the proposed canal which will prove more useful as well as more economical From SIKAR if it is directed towards Salasar Sujangarh Chhapar Bidasar Sandawa (all in Churu District) and from there to Nagore District some where near Nokha Mandi it will be beneficial in the following various ways

1 The whole area between Sikar and Sendawa (distance being about 60 miles) is of brackish water and getting ample drinking water in this region has always been a great challenge This problem is more serious in the villages where the people and the cattle wealth largely depend upon the mercy of rains

2 The land of this region is without sand dunes which are abundantly present in other parts of this desert area As a result of this the project will be comparatively more economical

3 The virgin land of this area will prove to be a good granary since the soil is sufficiently fertile

4 There are number of progressive towns and mandies along this route But in the absence of direct rail connection from Sikar to Nokha which is a dire need for the development of Rajasthan and sufficient supply of water the progress is hampered In the next five years Chhapar Salt Lake alone will be producing salt worth a crore of rupees With the supply of water it will make progress in different avenues

5 It is primarily a wool producing region Its wool is exported to various parts of the country It can develop into a flourishing industry and may become a good source of employment

6 The density of population in this region is about 100 persons per Sq mile whereas it is only 50 in the remaining part of desert area Thus larger number of people can be benefitted by it

In the light of the above facts I earnestly request your kind honour to order for the survey of the proposed route before finalising the whole scheme

Yours Respectfully,
Kanhaiyalal Sethia

Copy to

1 Hon ble K. L Rao
Minister of Irrigation and Power
Govt of India
New Delhi

कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास सुजानगढ

सठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन कलकत्ता १
दूरभाप २३ ६३२४
२३ ११३०
दिनाक ८ २ १६८३

आदरणाय इन्दिराजी,

रावी व्यास के पानी म स राजस्थान तथा हरियाणा का हिस्सा कम करने की अकालिया की माग से उभय राज्या की जनता अत्यधिक चिन्तित है। राष्ट्रीय जल स्रोता क सदभ म किसी दल विशेष का माग या दावे का दबाव क कारण स्वीकृत किया जायेगा ता समस्त देश क जल स्रोता के सम्बन्ध म अन्तहीन विवाद उठ खडे होगे।

पजाब की सभी प्रमुख नदिया हिमाचल प्रदेश या जम्मू-कश्मीर क क्षेत्र स प्रवाहित हो कर आता है अत इन प्रदेशा की राज्यसरकारें भा इन क जल का अपने हित म नियन्त्रित करने का माग करेंगी तथा हिमाचल प्रदेश म पजाब के लिये बने बिजली उत्पादक केन्द्रा पर भी वहा की सरकार अपना नियन्त्रण रखना चाहेगी।

आशा है कि केन्द्र सरकार अकालिया की माग पर पुनर्विचार करने स पहले सम्बन्धित राज्या की सरकारा एव विरोधीदल क नेताओ का अपना पक्ष एव दृष्टिकोण रखने क लिये पूरा अवसर देगी।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

विनात
कन्हैयालाल सठिया

श्रीमती इंदिरा गाधी
प्रधान मत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष-४७०५२८
सठिया ट्रेडिंग क०
३, मगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक ३० ६ ८४

प्रिय श्री शिवचरणजी साहब

सादर अभिवादन। हलदीघाटी स्थल के योजनाबद्ध निमाण तथा बीकानेर कोटा और अजमर म विश्व विद्यालया की स्थापना क सन्दभ म दिये गये मेरे सभी पत्र आप को यथा समय मिल होगे। श्री प्रवीणचन्दजी छाबडा के साथ भेजी गई हल्दीघाटी की पावन माटी की मजूषा भी आप को प्राप्त हो गई होगी। पत्रो तथा मजूषा की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

वतमान परिस्थिति को देखते हुये पजाब की समस्या का समाधान निकट भविष्य म होना कठिन है। ऐसी स्थिति म दूर गामी दृष्टि स राजस्थान जल तथा बिजली की दृष्टि स आत्म निभर वन सके ऐसा प्रबल प्रयास राज्य सरकार की ओर स किया जाना उचित है।

सन १९७२ म मैंने प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को गगा के बाढ के अतिरिक्त जल को यमुना म प्रवाहित कर उसे नरोरा क पास स लिफ्ट सिस्टम द्वारा राजस्थान के भरतपुर अलवर झूझनू सीकर तथा चूरू एव नागौर जिलो म सिचाई तथा पेय जल के लिये लिये जाने के बारे म एक विस्तृत ज्ञापन दिया था। जिसके सन्दभ म केन्द्रिय सिचाई मत्री श्री रामनिवासजी मिर्धा ने अपने पत्र द्वारा मुझे सूचित किया है कि उपरोक्त योजना के सन्दभ म केन्द्रिय सरकार ने १२ मई १९८३ को एक आयोग गठित कर दिया है अत राज्य सरकार को उक्त योजना को क्रियान्वित कराने के लिये पूरी कोशिश करना चाहिये।

राजस्थान के भूगभ मे अथाह मीठे पानी के भडार हैं विशेषकर बीकानेर सीकर झूझनू जैसलमर म भूगभ म अगाध जल मिलने की सभावना है। उन भडारो का Intensive खोज आधुनिक मशीनो से की जानी चाहिये।

बिजली की दृष्टि स भी राजस्थान को पूणत आत्म निभर बनाने के लिये सनिक स्तर पर कायवाही की जानी चाहिए।

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५२५
सेठिया टेडिंग क०
३ मगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक ३० १ ८६

प्रिय श्री जोशीजी

मैथ्यू आयाग की विवादास्पद रिपाट एव हाल हा म पजाब म घटित हाने वाला घटनाआ के कारण रावी-व्यास के पानी के राजस्थान के न्यायोचित हिस्से के बारे म राजस्थाना जनता के जनमानस म पुन सशय उठा खडा हुआ है।

राजस्थान का दावा १९५५ म भारत एव पाकिस्तान के बीच हुई Indus Water Treaty पर आधारित है और यह अतरराष्ट्रीय समझौत है अत इसका अतिक्रमण नही किया जा सकता।

जनवरी १९५५ म भारत सरकार की अतर राज्य कान्फ्रेन्स म विश्व बक के प्रस्ताव के आधार पर रावी व्यास सतलज के कुल 16 MAF प्रवाहित जल म स राजस्थान का हिस्सा 8 MAF निणित किया गया था।

उपरोक्त सन्दभ म राजस्थान क पाना के हिस्से के बारे मे जो राजनतिक विवाद खडा किया गया है वह चितनीय है।

इस प्रश्न पर आप का सरकार का अपना मतव्य स्पष्ट रूप स व्यक्त करना चाहिये और अगर केन्द्र राजनतिक दवाब म आकर उपराक्त निणय म कुछ हेर फेर जो राजस्थान के हित मे नहा हा करना चाहे तो आप की सरकार का इस्तीफा दने के लिये कटिवद्ध रहना चाहिये। अन्यथा आज पजाब और आसाम म काग्रेस की जा चितनीय स्थिति हुई है वहा राजस्थान म होगी।

राजस्थान म जा विराधा दल है उन्ह इस मुद्दे पर विश्वास म लिये जाने चाहियें और अतराष्ट्राय ख्याति क विधि वेत्ताआ स परामशकर राजस्थान का दावा पूरा तय्यारी क साथ आयाग के समक्ष रखा जाना चाहिये।

मैंने उपरोक्त सम्बन्ध मे दिनाक १६/१०/८५ का आप का जा urgent तार दिया था वह निम्न रूप म था वह आप को मिला होगा। तार के सन्दभ मे आपको पत्र भी दिया था पर मुझे खेद है कि तार तथा पत्र का प्रत्युत्तर मुझे नही मिला।

Reference Tohra s Jodhpur Statement Regarding water Share Stop uneasyness prevails in Rajasthan Request Seek Constitutional Experts advice and put Rajasthan s Case accordingly Letter follows

Kanhaiyalal Sethia

इस पत्र के साथ Statesman की ३०/१/८ की कतरन भी भेज रहा हू। मुझे विश्वास है कि आप उपरोक्त सन्दभ म अविलम्ब आवश्यक कदम उठायेंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना दें।

आपका,
कन्हैयालाल सेठिया

श्री हरिदेवजा जाशी
मुख्य मत्री, राजस्थान
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०८२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक १६ ६ ८६

प्रिय श्रीजोशीजी

मेरा १६/६/८६ का पंजाब समस्या के सन्दर्भ में लिखा गया पत्र तथा इस से पहले १६/५/८६ का राजस्थानी भाषा की मान्यता के सम्बन्ध में दिया गया पत्र आपको यथासमय मिले होंगे।

इस पत्र के साथ Statesman 19 July 86 की कतरन आपकी जानकारी के लिये भेज रहा हूं। Satellite Technology for Drought Prone State के अंतर्गत National Remote sensing Agency हैदराबाद द्वारा किया जा रहा सर्वेक्षण का काम राजस्थान के मरुभाग में भूगर्भ में छिपे मीठे पानी के भंडारों का पता लगाने की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आशा है आप की सरकार NRSA को पत्र लिख कर राजस्थान के मरुस्थल में Survey करने के काम को प्राथमिकता देने के लिये लिखेंगे क्यों कि पश्चिमी राजस्थान में पेय जल का संकट बहुत बड़ी समस्या है।

आशा है आप स्वस्थ होंगे। मेरे योग्य सेवा। पत्र के प्रत्युत्तर की अपेक्षा है।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

माननीय श्री हरिदेवजी जोशी
मुख्य मंत्री, राजस्थान
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक ५-२ ८६

प्रिय श्री मूलचदजी साहब,

आपका १४-१०-८५ का पत्र मुझे यथा समय मिल गया था आपने नमदा परियोजना तथा गगा के अतिरिक्त जल को यमुना म प्रवाहित कर राजस्थान को दिये जाने के सम्बन्ध म भारत सरकार द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति क सम्बन्ध म सिंचाई विभाग के अधिकारियो एव केन्द्रिय मत्रीजी से सम्पक किया होगा। वस्तु स्थिति से अवगत कराने की कृपा करें।

मैं इस पत्र के साथ स्टेटसमैन के ५/२ के अक की एक कतरन आप का जानकारी के लिये भेज रहा हू।

मैथ्यू आयोग की विवादास्पद भूमिका तथा पजाब के घटनाक्रम क कारण मैं राजस्थान के भविष्य के प्रति चितित हू।

राजस्थान सरकार स भी मैं उपराक्त सन्दभ म बराबर सम्पक म हू पर मुझ लगता है कि राज्य सरकार का इस सम्बन्ध म पूरी तरह स सक्रिय हाना चाहिये और विरोधी दल को विश्वास म लिया जाना चाहिये।

आप स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

आप के पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री मूलचदजी डागा, एम पी
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक ४ ७ १९८९

प्रिय राजेशजी

राजस्थानी पत्रिका माणक के जून ८६ के अंक में आप द्वारा दिया गया साक्षात्कार पढा।

मरुभूमि की पेय जल की कठिनाईपूर्ण समस्या के समाधान के लिये आप जागरूक हैं यह जान कर बहुत प्रसन्नता हुई।

वास्तव में पातालतोड़ योजना ही इस कठिन समस्या का हल कर सकती है। आप शक्तिभाग रिग्ज यथाशीघ्र राजस्थान सरकार को उपलब्ध करायें जिससे कि पेय जल की दृष्टि से सब से अधिक समस्याग्रस्त चूरू नागौर सीकर अलवर भरतपुर आदि में पातालतोड कूपों का निर्माण हो सके।

सन १९६२ में राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री स्व मोहनलालजी सुखाडिया जब आस्ट्रेलिया गये थे तो मैंने उनसे कहा था कि वहां से आप पातालतोड कुओं के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर आयें। उन्होंने इस दिशा में कुछ प्रयास भी किये पर सरकारी तंत्र की निष्क्रियता के कारण काम आगे नहीं बढा।

आप प्यासे राजस्थान की पीडा को समझते है। अतः मुझे आशा है कि आप व्यक्तिगत रूप से इस काम को अपेक्षित प्रेरणा देते रहेंगें।

पत्र की प्राप्ति की सूचना दे।

आपका,
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजेशजी पायलट
राज्य मंत्री नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क
३, मंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक २७ ६ ८६

प्रिय श्री शिवचरणजी,

इस पत्र के साथ Telegraph' म प्रकाशित Encalyptus Good for the soil' शीर्षक कतरन भेज रहा हू।

राजस्थान म काटा क्षेत्र गगानगर क्षेत्र जहा Water logging का समस्या है वहा युकलिप्टस के वक्ष लगाये जाने के बारे म मैं राजस्थान सरकार को जबतब लिखता रहा हू। आप का भी मैंने इस सम्बन्ध म पत्र दिये थे जिनके प्रत्युत्तर म आपने लिखा था कि Ecologists की राय म यह पेड लगाया जाना कम ठीक है। पर अब Forest Institute of India ने इस विवादास्पद वक्ष के बारे म जाच करली है और इसे पूर्ण रूप से निर्दोष एव उपयुक्त माना है।

राजस्थान के मरुभाग म भी जहा पानी खारा है यह वक्ष खूब अच्छी तरह पनप सकता है। यह बजर भूमि को सुधार देगा एव इस से किसाना का आर्थिक लाभ भी होगा।

आशा है आप वन विभाग के अधिकारियों का आवश्यक निर्देश देंगे।

आप स्वस्थ होगें। योग्य सेवा। पत्र दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

प्रतिलिपि
मंत्री वन विभाग
राजस्थान राज्य
जयपुर

अकाल खड

अकाल की विभीषिका से त्रस्त राजस्थान की पीडा भी सेठिया के हृदय की पीडा है। इस ज्वलन्त समस्या के सन्दर्भ मे दिये गये पत्रों के प्रत्युत्तर।

गजाधर सोमानी
उद्योगपति

श्रीनिवास हाउस
हजारीमल सोमानी मार्ग
वाडबी रोड फोर्ट, बम्बई

दिनांक दिसम्बर ३०, १९७२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी,

मादर वन्दे।

आपका २८ दिसम्बर का पत्र मिला। श्री चान्दरतनजी मोहता से आपकी बातचीत हुई सो ठीक है। राजस्थान में वर्तमान दुर्भिक्ष की स्थिति में कुछ कार्य अवश्य होना चाहिये। बम्बई में इस संबंध में कुछ करने की बात सोची जा रही है। यहां राजस्थान रिलीफ सोसाइटी का संगठन ३ ४ वर्ष पहले जो राजस्थान में अकाल पड़ा, उस समय किया गया था। इस सोसाइटी की ओर से भी कार्य सम्भव हुआ तो कुछ सेवा कार्य का विचार है। कलकत्ता और बम्बई की संस्थाओं का राजस्थान सरकार के साथ सहयोग होकर अकाल के क्षेत्र में कुछ स्थाई लाभ की योजना हाथ में लेने की व्यवस्था हो जाय तो उत्तम रहेगी। आपको मुख्यमंत्री की फिर कुछ निश्चित सम्मति मिली होगी तथा आप कलकत्ता में कितना कार्य करना चाहते हैं सो लिखने की कृपा करें।

पत्रोत्तर दें। विशेष शुभ।

आपका,
गजाधर सोमानी

गजाधर सोमानी
उद्योगपति

श्रीनिवास हाउस
वाडबा रोड फोर्ट बम्बई

दिनांक जनवरी ७ १९७३

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका ४ जनवरी का पत्र मिला। हमें ऐसी आशा थी कि राजस्थान के मुख्यमंत्री तथा अन्य वरिष्ठ मंत्री कलकत्ता में है सो उन लोगों से बातचीत होकर अकाल राहत का ठोस कार्यक्रम निश्चित हो सकेगा लेकिन आपके पत्र से यह जानकर निराशा हुई कि सरकार अपने ही ढग से कार्य करना चाहती है। सरकार की ओर से अन्य सम्भावी संस्थाओं और व्यक्तियों में इस भयंकर अकाल की स्थिति में सहयोग लेने का कोई योजना नहीं बन रहा है। पहले जब भीषण अकाल पड़ा था तो मुख्यमंत्री श्री मोहनलालजी सुखाडिया ने कलकत्ता तथा बम्बई का दौरा करके इस सम्बन्ध में राहत सेवा कार्य करने वाले लोगों और संस्थाओं को प्रेरणा दी थी। लेकिन जैसा भी हो आप अपना प्रयत्न जारी रखें। यहां राजस्थान रिलीफ सोसाइटी की ओर से कुछ सेवा कार्य करने का विचार किया जा रहा है सो ता० ११ जनवरी को मिटिंग रखी है। निश्चित होने पर कुछ सेवा कार्य आरम्भ किया जायगा ऐसी आशा है। आप वहां मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के अध्यक्ष श्री हिमतसिंहकाजी से एवं अन्य कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करके यह पता लगाने की कृपा करें कि कलकत्ता की ओर से क्या कार्य किया जायगा ताकि कलकत्ता व बम्बई के कार्यक्रमों में पारस्परिक सहयोग हो सके। मैं इस सम्बन्ध में श्री कानोडियाजी को भी लिख रहा हूं।

आप हृदय रोग से पीड़ित होते हुये भी सेवा कार्य कर रहे हैं सो आपकी सेवा भावना प्रशंसनीय है। वैसे मुझे भी हृदय रोग का समय समय पर शिकार होना पड़ा है। फिर भी सेवा कार्य करना व्यक्ति का कर्तव्य है तथा संकट के समय यथा संभव कार्य करना भी चाहिये।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। पत्रोत्तर दें। विशेष शुभ।

आपका
गजाधर सोमानी

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक

दिनाक ७ १-१९७३

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका ४ तारीख का पत्र मिला। ११ तारीख को गो-सेवा सघ की मीटिंग जयपुर मे है उसमे मै भी जाऊगा। गायो के लिए राहत का काम तो गो-सेवा सघ द्वारा हो सकेगा ऐसा लगता है। राजस्थान सरकार भी उन्हें यथेष्ठ सहायता कर देगी लेकिन अन्न की समस्या विकट है। सब चीजो के दाम दिन-ब दिन ऊचे होते जा रहे है। धना प्रवासी व्यापारी वर्ग की ओर से इस बार कहा भी कुछ काम नही हो रहा है जो कि ऐसे दुष्काल मे सदा ही हुआ करते थे।

स्थायी लाभ की योजना के सम्बन्ध मे हो सका तो मैं मुख्य मत्री से बात करके देखूगा, अगर कोई काम योजना बन सकता हो और सरकार मदद कर सके तो अच्छा ही है। मैं आपको २४ दिन मे फिर पत्र लिखूगा।

मेरा विचार यह महीना शेष होने के पहले पहले कलकत्ते पहुचने का है कभी भी पहुँच सकता हू।

अधिक सर्दी के लिए आपने सावधानी दिलाई सो मुझे सर्दी से क्या भय है सावधानी तो आपको रखने की आवश्यकता है।

आपका,
भागीरथ कानोडिया

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक

कलकत्ता
दिनांक १४ ६ ७४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका ६ तारीख का पत्र मुझे कल मिला।

जयपुर में जोशीजी से आपकी जो बातचीत हुई उनके समाचार पढ़े।

अकाल के काम के बारे में आपने लिखा सो ठीक। प्राय सारे ही राजस्थान में अकाल है खासकर जैसलमेर जालोर बाढमेर आदि कई जिलों में तो बहुत ही भयंकर स्थिति है।

पहली बात तो यह उठती है कि कोई भी प्राईवेट संस्था इतने बड़े क्षेत्र में काम कर सके यह सम्भव नहीं है। दूसरी बात यह कि मेरा जहाँ तक ख्याल है बद्री नारायणजी सोढानी जिस संस्था में प्रमुख रूप से काम करने वाले रहेंगे उसके साथ सहयोग करना या उसे मदद करना सरकार पसन्द नहीं करेगी। इसलिये जोशीजी से पहिले बात तो स्पष्ट रूप से करने की यह है कि बद्री नारायणजी सोढानी के मंत्रित्व में Famine Board के गठन को पसन्द करेंगे क्या? ऐसे संगठन को वे unreserve सहयोग और सहायता देंगे क्या?

दूसरी बात उनसे यह करने की है कि बोर्ड से वे किस किस जिले में काम कराने की अपेक्षा रखेंगे। अपने लिए बीकानेर, चूरू उदयपुर झुंझनू सीकर नागौर ज्यादा अनुकूल पड़ते हैं।

तीसरी बात यह कि Board या नाम जो भी बने उसकी आर्थिक जिम्मेदारी कितनी के होगी सरकार का आर्थिक सहयोग किस रूप में कितना क्या होगा। वे लोग दिन प्रति दिन काम में किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं करेंगे न आदि सारी बातें स्पष्ट और खुलासा हो तो जिम्मेदारी लेने की बात सोच सकता हूं।

सरकार अपनी तरफ से कुछ भी लिखित प्रस्ताव मेरे पास भेजने को

अपने सक्रेटरी या रिलीफ मिनिस्टर का कलकत्ते या मुबई भेजने का तय्यार है क्या जो यहा और मुबई म कुछ लागो स मिले उन्हें राजस्थान की हालत बताये, लोगा को राहत काय करने के लिये प्रेरित करे प्रस्तावित बाड की भी बात कहे आदि।

राजस्थान भवन के बारे म बात यह है कि जब तक कोई जमीन का तय नही हो जाय तब तक लछमी निवास से किस आधार पर बात की जाए ? जमीन खरीदने म पाँच लाख रुपया की आवश्यकता पडेगी।

यह आपको जचे तो भलेही आप एक पत्र डाल कर लछमी निवास से पूछ कर देखलें। मरा उन्हें पूछना ठीक नही है।

आप कलकत्ता कब तक आर रहे है लिखें ?

आपका,
भागीरथ कानाडिया

भागीरथ कानोडिया
ममाज सेवक

दिनाक २७ ५ १९७५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका पत्र १३ तारीख का मिला।

आप जयपुर हो आये होगे। अकाल राहत के बारे म सरकार से और कुछ बात हुई क्या ?

आप लोग सुजानगढ तहसील म लोगो को गेहू के बदले घाट द रहे है सो मुझे ऐसा लगता है कि आप लोग घाट नहा देकर साबत जौ पिसवा कर उसका आटा छानकर दें तो लोगो को सस्ता भी पडेगा तथा पोषक भी अधिक रहेगा। इसम खटपट जरूर अधिक करनी पडेगी लेकिन यह बात सोचने लायक और पार पड सके तो करने लायक है ऐसा मेरी राय है।

बद्रीनारायणजी का पत्र आया था। वे २२ तारीख को यहा आने वाले है। नहर पर जो मजदूर काम करते हैं उनकी हालत बहुत बुरी लिखी है। मजदूरी बहुत कम आता है अत पेट भर खाने को भी नही मिलता। नाना तरह के रोग भी वहा फल रहे हैं। मैंने रिलीफ कमिश्नर से इस मामले म लिखा-पढी की थी लेकिन उसने मजदूरी बढाने के मामले म अपनी असमर्थता प्रकट की है। बद्रीनारायणजी का लिखना है कि इस हालात म इस मजदूरी की दर म मजदूरो का वहा टिकना मुश्किल है। मैं वहा जा कुछ देखकर आया था और उसके बाद के जो समाचार हैं उससे तो ऐसा लगता है कि वहा पर मजदूर टिकने मुश्किल हैं और टिकने भी क्या चाहिये ? क्योंकि इस झुलसती हुई आधी म बिना घरबार के एक सरकी म रहना और फिर डेढ दो रुपया शाम तक कडी मेहनत करके प्राप्त करना मजदूरी का मखौल है। लेकिन सरकार तो आज मनुष्य की तरह नही केवल मशीन की तरह काम करती है किंतु उपाय क्या ?

इस बार कलकत्ते में या बम्बई म अकाल के प्रति कुछ भी सहानुभूति या राहत कार्य करने की भावना नही है। केवल आप अकेले आदमी हैं जिन्होने अपने जिले के लिए कुछ किया है या कर रहे है।

राजगढ के बारे में आपने लिखा सो ठीक। मैं कानचदजी सुराणा से आज रात को या कल दिन में किसी वक्त बात करके आपको पत्र लिखूंगा कि वे कुछ खटपट करना चाहते है क्या ?

मेरा राजस्थान आने का विचार कम से कम दो महीने नहीं है क्योंकि कोई काम तो सामने है नही एव व्यर्थ ही इस झुलसती हुई गर्मी मे आकर क्या हैरान होऊ ?

आपका
भागीरथ कानोडिया

भागीरथ कानोडिया
समाज सेवक

कलकत्ता
दिनांक २० ८ १९७८

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

वालचन्दजी सुराणा से मेरी बात हुई थी। उनके घर में विवाह था इसलिए वे सूरजमलजी मोहता से बात नहीं कर सके। दो-तीन दिन में वे बात करेंगे और जो बात होगी उसके अनुसार वे आपको समाचार देंगे।

आप वहां पर जो घाट देते हैं वह लोगों को पसन्द तो है क्या? मेरे पास बीकानेर का पत्र आया है उसमें लिखा है कि नहर पर काम करने वाले मजदूर घाट पसन्द नहीं करते। अतः वे तो वापस गेहूं चालू कर रहे हैं।

आपने मरु भारती का अप्रेल अंक देखा होगा। आपकी कविताओं के बारे में मैंने जो तुलसीदासजी का और सूरदासजी का उदाहरण दिया था ठीक वही उदाहरण आपकी लीलटांस की समीक्षा में दिया है। इसे कहते हैं सौ सयाने एक मत।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका
भागीरथ कानोडिया

भागीरथ कानोडिया दिनाक २ ६ १९७५
समाज सेवक

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

मरू भारती की एक प्रति आपको आज डाक स अलग भेज रहा हू।

मैंने आपको घाट पिसाकर देने की बात नही लिखी थी बल्कि साबुत जौ पिसवाकर, छनवाकर देने के लिए लिखा था। वह घाट स सस्ता भी पडता है तथा पौष्टिक भी अधिक है। लेकिन अब फिर स गेहू शुरु करते हैं तो कुछ करने का नही है।

हिदी साहित्य अकादमी के लिए आपने अनेक नाम बताये सा म डा हजारीप्रसादजी का एक पत्र लिख रहा हू। देखे वे कुछ कर सकें ता।

नहर पर काम करने वाले मजदूरा के लिए मैंने काफी लिखा पढी की है लेकिन सरकारी अधिकारी यह जानते हुए और स्वीकार करते हुये भी कि वहा मजदूरा की हालत बहुत ही दयनीय है कुछ करने म असमर्थता प्रकट करते है। एक महीना या ज्यादा से ज्यादा डेढ महीना अभी सकट का है और काफी सकट का है लेकिन इतने कम समय के लिए लोगो को राहत कार्यों म सहायता करना खास अपील नही करता। भगवान भरोसे ही ये दिन निकलेंगे।

राधेश्यामजी सराफ बीमार होते हुए भी तथा बार-बार उन्हें हृदय का दौरा आ रहा है उसके बावजूद भी उन्हें अकाल के काम की चिन्ता है यह शुभ है। मेरी और स उन्हें साधुवाद पहुचाना तथा साथ ही उनके शीघ्र आरोग्य के लिए शुभकामना भी।

श्री बालचन्दजी सुराणा से बात करने की मैंने दो तीन बार कोशिश की लेकिन बात हुई पार पडी नही। सूरजमलजी मोहता से मैंने जानबूझकर बात नही की है क्याकि मुझे इस बात का पता है कि उनका मानस अभी कुछ पैसा लगाने का है नही क्याकि पिछले दिना वे राजगढ म एक कालेज भवन बनाने म काफी रुपया खच कर चुके है।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका,
भागीरथ कानोडिया

भागीरथ कानोडिया
समाज मवन

दिनाक ६-१० १९७५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका ३ तारीख का पत्र मिला।

गमावतार पोद्दार के १००० रुपये ट्रस्ट से पास हो गये थे। ट्रस्टवाला ने रुपये उन्हे भेज दिये होंगे नहा तो आप गणेशमलजा या हनुमानलाल को तकाजा कर दीजिये रुपये तुरन्त चले जायेंगे।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है चिंता करने की काई बात नहीं है। सीतारामजी का तो चिंता करने का स्वभाव है इसलिए वे हुइ अनहुई चिंता करते रहते हैं।

राजस्थान म मलेरिया का प्रकोप था यह बात ठीक है किन्तु अब कम हो रहा है। आशा है कुछ दिना मे शमन हो जायेगा। मेरे गाव के आसपास के लिए तो मैं कुनन की व्यवस्था करके आया हू। आपका पत्र आने के बाद बद्रीनारायणजी को भी लिख दिया है कि वे यथासम्भव व्यवस्था करें।

मैं अभी करीब एक सप्ताह यहा रहने वाला हू। मौसम यहा बहुत अच्छा है न सर्दी है न गर्मी। फसल कुल मिलाकर बहुत अच्छी पार पड जायेगी। बाजरा अतिवृष्टि के कारण काला अवश्य पड गया है किन्तु भावा मे काफी गिरावट आई है इसलिए पेट भर लगे।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक चल रहा होगा।

आपका
भागीरथ कानोडिया

तार सेवासमाज

टेलीफान ३३ ३७२४ (तीन लाइन)
अस्पताल ३३ २७४५

मारवाडी रिलिफ सोसाइटी

२२७ रवीन्द्र सरणा
कलकत्ता
दिनाक २ फरवरा १९७३

पत्र सख्या ७२ ७३/४९४०

श्री कन्हैयालाल सठिया
सठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन
कलकत्ता १

प्रिय महाशय

आपका दिनाक २१ जनवरी १९७३ का राजस्थान प्रान्त के सूखाग्रस्त अचल म राहत काय करने सम्बन्धी पत्र प्राप्त हुआ। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी वहा राहत काय करने जा रही है। सोसाइटी क प्रतिनिधि इस सम्बन्ध म जयपुर जा रहे है। काय प्रारम्भ होने पर आपको सूचित करगे एव इस सम्बन्ध म सम्पक भी स्थापित करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,
हरिराम शाह
अव० प्रधान मन्त्री

डा० लक्ष्मीमल सिंघवी
एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट

३० लोदी एस्टेट
नई दिल्ली
दिनांक ५.८.१९७४

प्रियवर श्रीमान् सेठिया साहेब

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद।

राजस्थान में अकाल की सम्भावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं और इस विभीषिका के परिणाम भयंकर हो सकते हैं। मैंने इस विषय में केन्द्रीय और राज्य-स्तर पर बातचीत की है–मेरा अपना मानना है कि केन्द्रीय सरकार से कर की हम शत प्रतिशत छूट प्राप्त होना चाहिए और फिर अखिल भारतीय स्तर पर पर्याप्त धनराशि एकत्र करने का प्रयत्न करना चाहिए। सेवाकार्य के संगठन के लिए रिलीफ सोसायटी, रामकृष्ण मिशन इत्यादि से प्रेरणा और सहायता लेकर राजस्थान में एक ऐसा कर्मठ और समर्पित दस्ता तैयार करने की अपेक्षा है कि जो एकत्रित साधनों का समुचित उपयोग करने में समर्थ हो।

श्री जांगीजी का पूरा सहयोग हमें इस कार्य में प्राप्त होगा।

बम्बई और दक्षिण प्रदेश से भी कई मित्रों ने अखिल भारतीय संगठन के लिए अपनी सम्मति दी है और सक्रिय सेवाएं देने का संकल्प प्रकट किया है।

सप्रेम अभिवादन सहित

आपका
लक्ष्मीमल सिंघवी

पुनश्च मैं आज राजस्थान जा रहा हूं और दो दिन में लौटूंगा।

नन्दकुमार सोमानी
भू पू सासद

श्री निवास हाऊस
हजारीमल सामानी माग
वम्बई-४०० ००१
टेलिफोन २६ ८२४१

प्रिय श्री सेठियाजी,

आपका ५/१० का पत्र मिला। मैं भी इन दिनों सावजनिक कार्यों वश ३ बार राजस्थान के विभिन्न स्थानों म दौरा कर आया हू अत अकाल की स्थिति स पूणतया परिचित हू। जोशीजी को इस सदभ म पत्र लिखा है एव रा० रिलिफ सोसाइटी के मधु काबरा को दौरे व अधिकारियों स सम्पक करने १५/२० दिनों से भेजा हुआ है। हम ने राज० सरकार स कुछ क्षेत्रों के लिये सस्ता अनाज मांगा है ताकि उसे no profit no loss या कुछ loss पर बेच दें। सरकार का Response अपेक्षित है। उचित व्यवस्था होने हो हम इलाके वाद काम शुरू कर सकते है पहले भी।

हम मौलासर व आसपास के क्षेत्रों म उचित व्यवस्था करवा ही रह हैं। आप कुशल।

आपका
नन्दकुमार

PEOPLES WELFARE SOCIETY

Sikar (Rajasthan)

दिनांक ११-१-७४ ई

प्रिय श्री सेठियाजी

सादर नमस्कार।

आपका १-१-७४ का पत्र मिला। अकाल के बारे में आपने समाचार लिखे सो मैं और पूज्य श्री भागीरथजी मुख्य मन्त्रीजी से ३ तारीख को मिले थे लेकिन काम की कोई रूपरेखा बनी नहीं। ऐसा लगता है कि शासन गैर सरकारी एजेंसियों से मदद लेने के बारे में बहुत उत्सुक नहीं है। इसलिये आपकी योजना पर भी कोई अमल होने वाला ऐसा लगता नहीं है। फिर भी यह करने जैसा काम है सो अगर सजवाज बैठ सके तो अवश्य बैठावें।

टी बी अस्पताल में अभी साठ याग लगे हैं जो होने पर आपको सूचित कर सकता हूं।

पूज्य भागीरथजी ४ तारीख को कलकत्ता पहुंच गये हैं और अब वहां रहेंगे।

आप सुजानगढ़ कब तक रहेंगे। मैं २०-२१ को उधर आने की सोच रहा हूं, अतः आप उस समय तक रहें तो मिलना हो जावेगा। इसके पहले तो शायद ही आना हो।

आपका

बद्री नारायण सोढाणी

हरिदेव जोशी
मुख्य मत्रा, राजस्थान

जयपुर

दिनाक १६ माच, १६७५

प्रिय श्री सेठियाजी,

आपका पत्र दिनाक ८ माच १६७५ प्राप्त हुआ। आगामी ग्रीष्म काल म अकाल ग्रस्त क्षेत्र की जनता एव पशुआ के लिए चारे व अन्न की समुचित व्यवस्था की ओर हम सब प्रयत्नशील हैं। समाज सेवी सस्थाआ से भी इन कार्यों के लिए सक्रिय सहयोग की अपेक्षा की जाती है कानोडियाजी भी प्रयत्नशील हैं।

चि निमल कुमार के विवाह के अवसर पर आने का प्रयास करूगा।

धन्यवाद सहित।

आपका
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

अध्यन्गा पत्र क मु म/३/प ३८/(२) अरा/८७/४३८६

हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री

जयपुर
दिनांक २५ अगस्त १९८७

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका पत्र दिनांक ११ ८ ८७ एव उसके साथ प्रधानमंत्रीजी को लिखे गये पत्र की प्रतिलिपि प्राप्त हुई। मुझे खुशी है कि आप राजस्थान मे गम्भीर अकाल की विभीषिका के प्रति जागरूक हैं। राज्य सरकार अपने स्तर पर अकाल की इस चुनौती का मुकाबला करने हेतु हर सम्भव प्रयास कर रही है। एव आपके सहयोग की अपेक्षा रखती है।

धन्यवाद

सदभावी
हरिदेव जोशी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

लक्ष्मी निवास बिरला
उद्योगपति

दिनांक ३० अप्रैल, १९७५

प्रिय सेठियाजी,

आपकी पुस्तक अनाम के कुछ पन्ने देखे। आपकी पुस्तकों में आध्यात्म और भाव तो रहते ही है और इस पुस्तक मे भी हैं।

खुशी है कि आप चूरू जिले मे राहत का काम शुरू करने जा रहे हैं। अभी तो करीब छ महीने और कष्ट के हैं फिर ईश की कृपा होनी ही चाहिये।

भवदीय,
लक्ष्मीनिवास बिरला

रामेश्वर टांटिया
भू. पू. सांसद

फोन कार्यालय ३१३०४१
आवास ३६१६००
भगवती भवन,
३१ बी कारमाईकल रोड
बम्बई ४०० ०२६
दिनांक १४.६.७५

भाई श्री सठियाजी

पत्र मिला। सरदार शहर के लिए ने भाई सत्यनारायण को बता दिया था। मैं फिर इधर चला गया। वहाँ के लोगों ने कुछ शुरू किया होगा तो हम लोग भी अवश्य सहयोग देंगे बस यहां से कुछ करना ऐसा नहीं जंचता। आप लिखने पढ़ने में व्यस्त रहते हुए भी गरीबों के प्रति इतना कर रहे हैं इसका कारण है कि आप में एक लेखक के सिवाय दूसरा व्यक्ति भी उतना ही शक्तिशाली है। परमात्मा आप को स्वस्थ रखे जिससे कि आप जो पुण्य कार्य कर रहे रहे हैं वह बराबर चालू रहे।

आपका सस्नेह
रामेश्वर टांटिया

रामकुमार भुवालका
भू पू सासद

हरिद्वार
१४ ८ ७५

प्रिय श्री सेठियाजी,

सादर नमस्कार।

आपका प्रिय पत्र सुजानगढ से कलक्ते मे मेरी आफिस द्वारा आज यहा आया मैं कल यहा पहुचा। आप की बडी कृपा है मेरे पर जो आपने पत्र सुजानगढ से लिखा।

आप जब मेरी आफिस मे आये थे पीछे श्री मोहनलालजी जालान भी आफिस मे रतनगढ चरिटी सोसाईटी की मीटिंग थी उस मे काफी रतनगढ के गणमान्य लोग उपस्थित हुये थे। सबा के सामने मने आपका नाम लेकर सारीबात राजस्थान अकाल सम्बन्धी रखी तो श्री मोहनलालजी ने कहा हमारे पास आदमी नही है इस लिये सेके हुये चने तो २५ किलो राज विना शुल्क के दिये जाते हैं। उसम उनका तथा धानुका का और भुवालका जनकल्याण टस्ट की ओर से यह प्रबन्ध हुआ है। मने पीछे आप को दो तीन बार फोन करने की चेष्टा की पर सजोगवश बात नहा हो सकी। अब अगर आप को उचित जचै तो आप श्री मोहनलालजी को सुजानगढ स पत्र लिखें। आप के पास जवाब जरूर जाना चाहिये। कुछ न कुछ तो होना चाहिये। यह भी सच है कि सेवा भाव वाले आदमी कम होते जा रहे है। केवल अपने कामो म ही अपना समय विताने म समय लगा पाते है। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। अभी गर्मी कम हो रही है सारी जगहा ईश्वर सब अच्छा करेगा। मैं यहा २५।२६ तक रह कर कलकत्ता जाने का विचार है।

आपका विनीत
रामकुमार भुवालका

रामकुमार भुवालका
भू पू सासद

बनारस

दिनांक ४१ :

प्रिय श्री सेठियाजी

सादर रामराम

आपका पत्र ६ ५ का लिखा हुआ मेरा बनारस आफिस मे ६ ५ पहुँच वह पत्र मेरे से था हरिद्वार म १८ ५ को मिला मैंने उसी समय आप को उसका जवाब दिया। आपने भी मेरे पत्र मिलने पर श्री मोहनलालजी जा को पत्र दिया आपके पत्र मिलने पर श्री मोहनलालजी जालान ने अपने आ नयमल भाजिर का रतनगढ पत्र लिया उसका जवाब भी आया आज उनसे हुई। सारा काम न किया है। वहा का पोच काम को Area म जो विचार करेंगे। उन्होंने समाचार अपने आदमियों को लिख दिया है। २ दिनों द देंग। जो वे बाजार स मकान्दर या बाहर म मकान रा बन्दोबस्त करेंगे। कम दामो म मिलने की बात है स्वतः अनायास मैंन उन्हें कहा है यहा रतन और और भी अच्छे अच्छ भाई हैं उन्हे आप बुला कर वहा की हालात क स वे भी शायद मदद करेंगे। न मी दन इच्छा हो तो अपना फरज तो करन चाहिये। उनको बुलाने का हो मेरी है।

सबसे स पहले तो म आप का बहुत बहुत धन्यवाद देता हू। आपने य का तथा सेवा का काम हाथ म लकर लोगो स करवाने का प्रोत्साहन दिया ईश्वर कर यह भावना हम लोगो मे भी बराबर बनी रहे। यह समाचार आपको इस लिये लिखा है जो आप का पता लगता रहे।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। सबसे पहले स्वास्थ्य का ख्याल रखेंगे अगर यह ठीक है तो सेवा के बहुत से काम हो सकेंगे।

आपका प्रिय,
रामकुमार भुवालका

रामकुमार भुवालका
भू पू सासद

टोम हाउस
P ५२/३३ इडिया ए प्लस
कलकत्ता–१

२४ ६ ७५

प्रिय श्री सेठियाजी,

आपका पत्र १७ ५ का मिला आपने ३० ६ तक यहा आने का लिखा । वडी खुशी है आप आने से और भी कोई अच्छी बात सोचेंगे । श्री मोहनलालजी की तरफ से डेढ किलो वडो को ७५०, ग्राम बच्चा को देना शुरू किया है। १) रुपये किलो ग्राम म उनको करीब २४-२५ पसे का नुकसान रहेगा । ऐसा वह बता रहे थे। मैंने और भी कोसिस की पर अभी वह त नही हुआ है । यह काम तुरन्त उत्साह से हो जाता है तो ठीक है दर से वह मन नही रहता। आपका उत्साह लगन सेवा का भाव तथा सब का तयार कर सारी जगह काम शुरू करवाने का सारा श्रेय आपका है। ईश्वर आप को तथा सारे समाज के भाइयो को ऐसा ही मन रखना चाहिये । मौके पर काम करने की प्रेरणा मिले। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा । देश म गरमी काफी रहती है । रतनगढ का पत्र आज ही आया है। कुछ थोडी सा वर्षा हुई है।

आपके यहा आने पर काम करेंगे।

आपका प्रिय,
रामकुमार भुवालका

मोहनलाल जालान
उद्योगपति

३६ चौरंगी रोड
कलकत्ता-१६

दिनांक २३ ५ ७५

श्री कन्हैयालाल सेठिया

आपका दि० १८ ५ ७५ का पत्र प्राप्त हुआ।

चूरू जिले में अकाल की विभीषिका के सम्बन्ध में लिखा तथा चार मास तक सस्ते अन्न वितरण की व्यवस्था के लिये आप प्रयास कर रहे हैं लिखा सो ठीक है। वितरण व्यवस्था किस आधार पर होगी तथा क्या सरकार भी इसमें सहयोग देगी, जरूरतमन्द लोगों को किस आधार पर अन्न दिया जायेगा आदि के बारे में आपने कुछ प्रकाश नहीं डाला है। मेरा भी विचार रतनगढ में कुछ राहत कार्य करने का है अतः आप रतनगढ स्थित हमारे प्रतिनिधि श्री नथमल भोजक से आवश्यक विचार विमर्श के लिये सम्पर्क स्थापित कर लेवें तो उत्तम हो। मैंने श्री भोजक को इस विषय में लिख दिया है।

भवदीय
मोहनलाल जालान

मोहनलाल जालान
उद्योगपति

३६ चौरंगी रोड
कलकत्ता-१६

दिनांक ५-६-७५

श्री कन्हैयालाल सेठिया

आपका पत्र दि० ३१-५-७५ का मिला तथा श्री एम एल बेगवाना से भी आपकी जो बातचीत हुयी उस पर उन्होंने यहां प्रकाश डाला था।

अकाल पीड़िता के राहत काय के बारे में मैंने सारी बातें अपने रतनगढ के प्रतिनिधि श्री नथमल भोजक को लिख दी हैं तथा उसने राहत कार्य कराना प्रारम्भ कर दिया होगा। आपने उनको पत्र दिया है सो वह आपसे अवश्य ही मिल लिया होगा।

आपने लिखा कि राज्य सरकार की ओर से केवल किसी जिले में अन्न लाने की सुविधा रहेगी तथा और कोई सहयोग नहीं मिलेगा सो निगह किया।

मेरा स्वास्थ्य प्रसन्न है।

आप प्रसन्न होंगे।

आपका,
मोहनलाल जालान

मोहनलाल जालान
उद्योगपति

३६, चौरंगी रोड
कलकत्ता–१६

दिनांक ४ ७ ७५

श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका पत्र दि० १७ ६ ७५ का प्राप्त हुआ। रतनगढ़ में अकाल राहत कार्य १६ जून १९७५ से प्रारम्भ हो गया है। मैंने सुना है कि उधर अपनी तरफ ३० जून तथा १ जुलाई को बहुत अच्छी बरसात हुयी है। इससे आम जनता को कुछ राहत मिली होगी ? राहत कार्य के बारे में आपकी मुख्य मन्त्री से चरचा हुयी लिखी सो निगह किया।

मेरा स्वास्थ्य प्रसन्न है।

आप प्रसन्न होंगे।

आपका,
मोहनलाल जालान

स० २८/१/७५ डी० आर०-४

भारत सरकार

कृपि और सिंचाई मत्रालय

(खाद्य विभाग)

नई दिल्ली

दिनाक ६ जून १९७५

सेवा म

श्री क हैयालाल सठिया
रतन निवास
सुजानगढ (राजस्थान)

श्रामानजी

मुझे केन्द्रीय कृपि तथा सिंचाई मत्री का सम्बोधित आपके १५ मई १९७५ के पत्र जाकि पजाब से राजस्थान म गेंहू ले जाने के बार म था क सदभ म यह कहने का निर्देश हुआ है कि चालू रवी विपणन मौसम क दौरान अधिक स अधिक अधिप्राप्ति करने क लिए प्रत्येक राज्य का अलग राज्य क्षेत्र बनाया गया है और केन्द्रीय खाते म गेंहू के सचलन को छाड कर एक राज्य स दूसर राज्य म गेहू भेजने की इजाजत नहा दी जाती है। अत खेद है कि पजाब स राजस्थान म गेहू ले जाने के लिए आपका अनुराध स्वाकार करना सम्भव नहा होगा।

भवदीय

ए० क ० जो० देसाई

उप सचिव भारत सरकार

नाट सन १९७५ म राजस्थान म पडे दुर्भिक्ष क सदभ म पजाब मे गेंहू राजस्थान म आयात करने के सबध म दिये गये पत्र का प्रत्युत्तर

नाथूराम मिर्धा
सदस्य
राज० विधानसभा
प्रदेशाध्यक्ष (लोकदल)

१८, सिविल लाइन्स,
जयपुर-३०२ ००६

दिनांक २५ ८ ८७

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

२० ८ ८७ का पत्र मिला। आपने राजीव गांधीजी को अकाल के संदर्भ में जो पत्र लिखा उसकी नकल व आपकी एक कविता 'निरथक कूके राजस्थान' भी पढने को मिली। मैंने भी श्री राजीवजी को देश में इस बड़े पैमाने पर दुर्भिक्ष के प्रश्न को लेकर कैसे गरीब लोगों की व पशुओं की जान बचाई जाये पत्र लिखा। उनकी तरफ से कोई उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। राजीवजी दो दिन अकाल के सिलसिले में राजस्थान का दौरा भी कर रहे है। देखें इस दौरे के बाद वो राजस्थान के लिए जो तीसरे चौथे साल अकाल पड़ा है क्या व्यवस्था करते है? उसका इन्तजार करेंगे। ३० ८ ८७ को जयपुर में लोकदल की तरफ से एक बहुत बड़ा किसान सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जिसमें लाखों किसान एकत्रित होंगे। सम्मेलन में अकाल व अन्य कई मुख्य मुद्दों पर विचार किया जायेगा और कुछ निर्णय लेंगे। मजबूरी में संघर्ष का रास्ता ही अपना कर चलना होगा। आपके परिवार वालों को मित्रों को मेरा नमस्कार कहें।

आपका
नाथूराम मिर्धा

कृष्ण कुमार बिरला

७ तीस जनवरी मार्ग
नई दिल्ली–११

दिनांक २७ अगस्त १९८७

प्रिय सेठियाजी,

आपका २० अगस्त का पत्र मिला। प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के नाम आपने जो पत्र भेजा है उसे मैंने रुचिपूर्वक पढा। आपका पत्र अच्छा है और जहां तक मुझे ज्ञात है सूखे अकाल और बाढ से ग्रसित राज्यों की ओर प्रधान मंत्री ध्यान दे रहे हैं।

आपने राजस्थानी में जो कविता भेजी है वह भी मैंने पढी और मुझे बहुत अच्छी लगी।

आपका
कृष्ण कुमार बिरला

शिवचरण माथुर
सदस्य
राजस्थान विधान सभा

ए ८७ श्याम नगर
अजमेर रोड, जयपुर

क्रमांक २६४६/एम सि एम/८७ दिनांक २७ ८ ८७

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका २० ८ ८७ का पत्र यथा समय प्राप्त हुआ। राजस्थान के भयंकर अकाल तथा पीने के पानी की समस्या के संबंध मे आप द्वारा प्रधानमंत्रीजी को लिखे गये पत्र में जो विचार आपने अभिव्यक्त किये है हम सब उसके प्रति आपके आभारी है। प्रदेश में इस वर्ष वर्षा के अभाव से जो स्थिति बन रही है उसका मुकाबिला करने के लिये युद्ध-स्तर पर सभी को प्रयत्न करने होंगे। कलकत्ता में रहने वाले राजस्थान के प्रवासी भाईयो के सहयोग की महती आवश्यकता होगी। यहा हम लोग विचार करते हैं कि इस बार मे आप लोगों से चर्चा करने हम कलकत्ता आवे और बड़े पैमाने पर जनसहयोगी संस्थाओं के माध्यम से राजस्थान के मूल्यवान पशुधन को बचाने के लिये सहयोग करने तथा अन्य अकाल राहत कार्यों में लोगों की रुचि बढ़ाने के लिये सब लोगों से मिलने का हमारा कार्यक्रम है।

कृपया लिखिये इस विचार के बारे में आपकी क्या राय है? पत्र की प्रतीक्षा में।

आपका
शिवचरण माथुर

अशोक गहलोत
अध्यक्ष

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी
इंदिरा गांधी भवन
रेलवे स्टेशन रोड, जयपुर
दूरभाष ६५६३२ ७६१६४

दिनांक २५ सितम्बर १९८७

प्रिय श्री सठियाजी

आपका पत्र दिनांक ११ अगस्त १९८७ संलग्न पत्र सहित मिला। श्रद्धेय पंडित श्री कमलापति त्रिपाठी अध्यक्ष राष्ट्रीय सूखा राहत समिति (अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी) नई दिल्ली के नाम प्रेषित पत्र में आपने जो सुझाव अकाल के स्थायी हल हेतु प्रस्तुत किए हैं, वे निस्सन्देह गम्भीर विचारणीय और क्रियान्विति के योग्य प्रतीत होते हैं।

आपकी सूचना हेतु मैं आपको यह जानकारी दे रहा हूं कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने स्वयं को प्रदेश सूखा राहत समिति में परिवर्तित कर लिया है और इसी क्रम में समस्त अधीनस्थ कांग्रेस कमेटियां भी सूखा राहत समिति में परिवर्तित कर दी गई हैं। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के स्तर पर प्रेषित परिपत्रों प्रस्तावों तथा निर्धारित कार्यक्रम की सग्रहित सामग्री आपकी तात्कालिक जानकारी हेतु प्रेषित कर रहा हूँ।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

आदर सहित।

आपका
अशोक गहलोत

(श्री सठिया ने दिनांक २०-१-८५ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, नई दिल्ली के तत्कालीन महामंत्री श्री नवल किशोर शर्मा को दिये गये पत्र में अकाल के प्रति जिला कांग्रेस कमेटियों की उदासीनता के बारे में लिखा था।)

ड़ॉ मेजर रामप्रसाद पोद्दार
उद्योगपति

मेर्चुरी भवन
डा एनी बेजण्ट रोड
बम्बई ४०० ०२५

दिनांक २४ मार्च, १९८८

आदरणीय श्री सेठियाजी

सादर प्रणाम।

आपके द्वारा प्रेषित दो पुस्तके अधारी काल तथा सतवाणी यथासमय मिल गई थी। पढने म कुछ विलम्ब हुआ तथा दुबारा पढने की इच्छा हुई सो फिर उस कारण भी विलम्ब हुआ इसलिए पत्र आज लिख रहा हू।

राजस्थान म आये बरस अकाल पडता रहता है परन्तु इस बार जो अकाल पडा उसने वास्तव म छप्पनिये काल को भी भला कहलादिया। इस स्थिति ने देश म कितना हाहाकार मचाया और कितनी व्यथा एव वेदना उत्पन्न की उसे आपने अपनी रचना 'अधारी काल म मार्मिक शब्दो म व्यक्त किया है। सरकार की अवहेलना स निरन्तर पशुधन की हानि होती जा रही है परन्तु कोई सुनवाई नहा है।

'सतवाणी को मने बारम्बार पढा है और म मानता हूँ कि इस प्रकार के उदबोधन की हमारी भाषा म शायद यह पहली पुस्तक हो—राजिया के सोरठे इत्यादि कितनी ही रचनाए उपलब्ध है परन्तु इस पुस्तक म जो सतवाणी है सत वाणी है एव सत्य वाणी है वह अन्यत्र दुर्लभ है। बहुत ही सरल भाषा म कितना उपदेश और ज्ञान भडार इसम भरा पडा है वह तो केवल पढने वाले को ही अनुभव हो सकता है। मुझे तो यह रचना सबस अच्छी और सुन्दर लगी है। मेरी ओर से हार्दिक अभिनन्दन स्वीकार करें।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। यहा सब प्रसन्न है।

विनीत
रामप्रसाद पोद्दार

डॉ मेजर रामप्रसाद पोद्दार
उद्योगपति

'सचुरी भवन'
डॉ एनी बेजण्ट राड
बम्बई ४०० ०२५

दिनाक २४ मार्च, १६८८

आदरणाय श्रा सठियाजी

सादर प्रणाम।

आपके द्वारा प्रेषित दो पुस्तक अधारा काल तथा सत्‌वाणी' यथासमय मिल गइ थी। पढने म कुछ विलम्ब हुआ तथा दुबारा पढने की इच्छा हुइ सो फिर उस कारण भी विलम्ब हुआ इसलिए पत्र आज लिख रहा हू।

राजस्थान म आये बरस अकाल पडता रहता है परन्तु इस बार जो अकाल पडा उसने वास्तव म छप्पनिये काल को भी भला कहलादिया। इस स्थिति ने देश म कितना हाहाकार मचाया और कितनी व्यथा एव वेदना उत्पन्न की उसे आपने अपनी रचना अधारा काल म मार्मिक शब्दो म व्यक्त किया है। सरकार की अवहेलना से निरन्तर पशुधन की हानि होती जा रही है परन्तु कोई सुनवाई नही है।

सतवाणी को मने बारम्बार पढा है और म मानता हूँ कि इस प्रकार के उद्‌बोधन की हमारी भाषा म शायद यह पहली पुस्तक हो—राजिया के सोरठे इत्यादि कितनी ही रचनाए उपलब्ध है परन्तु इस पुस्तक म जो सत्‌वाणी है, सन्त वाणी है एव सत्य वाणी है वह अन्यत्र दुलभ है। बहुत ही सरल भाषा म कितना उपदेश और ज्ञान भडार इसम भरा पडा है वह तो केवल पढने वाले को ही अनुभव हो सकता है। मुझे तो यह रचना सबसे अच्छी और सुन्दर लगी है। मेरी ओर स हार्दिक अभिनन्दन स्वीकार करें।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। यहा सब प्रसन्न हैं।

विनीत
रामप्रसाद पोद्दार

कन्हैयालाल सेठिया
स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी

दूरभाष ४७०५२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १०-८-८७

श्रद्धेय त्रिपाठीजी,

प्रणाम। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कांग्रेस कार्यकारिणी ने आप की अध्यक्षता में 'सूखा राहत कमेटी' गठित की है।

इस वर्ष देश में समग्र रूप से अकाल की स्थिति है, विशेष कर राजस्थान में जहां पिछले चार वर्षों से निरन्तर अकाल पड रहा है इस वर्ष अकाल की अभूतपूर्व विभीषिका अपने उग्रतम रूप में है। इन निरन्तर पडने वाले अकालों से जूझते जूझते राजस्थान की जीवनी शक्ति अब निःशेष हो चुकी है। राहत के तहत जनकल्याण के काम तो अविलम्ब बडे पैमाने पर शुरू करने ही चाहिये पर इनके अतिरिक्त भविष्य में राजस्थान ऐसे भयानक अकालों से आक्रान्त नहीं हो इसके लिये केन्द्र सरकार को निम्न निर्णय तुरन्त लेने चाहिये

१ इन्दिरा गांधी-नहर के विस्तार के लिये राज्य सरकार ने केन्द्र को जिन निर्दिष्ट योजनाओं के सुझाव दिये हैं उन्हें बिना काट छांट किये मूल रूप में स्वीकार किया जाना चाहिये और इसके लिये आवश्यक आर्थिक अनुदान देकर काम को गति से पूरा करवाया जाना चाहिये।

२ गंगा के बाढ के अतिरिक्त जल को जो निरर्थक बह कर जाता है उसे राजस्थान की तृषित धरती को दिये जाने के सुझाव को स्वीकार कर क्रियान्वित किया जाना चाहिये।

३ नर्मदा परियोजना का काम पूर्णरूप से चालू किया जाना चाहिये।

स्वतन्त्रता के चालीस वर्षों के बाद भी राजस्थान के हजारों ग्राम पेय जल के लिये तरस रहे हैं यह अतीव चिन्तनीय है।

आशा है आप अपने प्रभावी व्यक्तित्व से इन करणीय कामों को क्रियान्वित करने की प्रेरणा देंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना देने की कृपा करें।

कमलापतिजी त्रिपाठी
नई दिल्ली

विनीत,
कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैयालाल सेठिया
स्वतत्रता सग्राम सनानी

दूरभाष ४७०८२४
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक २० ८-८७

प्रिय श्री राजीवजी

जन्म दिन की बधाई।

देश म पडे व्यापक अकाल के सन्दभ म दिये गये मेरे २० जुलाई ८७ के पत्र क प्रत्युत्तर मे आपके कार्यालय से १० अगस्त ८७ का पत्र मुझे मिला।

इस शताब्दी के सबस बडे अकाल की विभीषिका क प्रति आप पूर्ण रूप स जागरूक है यह सतोष की बात है।

राष्ट्रीय जल ग्रिड ही इन दैवी विपदाओ से भविष्य म बचाने का एकमात्र समाधान है। भारत की नदियो के निरथक बह कर जाने वाले अमूल्य जल का और बाढो की विकट समस्या स इस योजना द्वारा बचाया जा सकता है। स्वर्गीया श्रीमती इदिरा गाधी के चिंतन म यह योजना १९७२ स ही थी और इसक सम्बन्ध म उस समय एक प्रारूप भी तयार किया गया था। अब इस योजना को क्रियान्वित करने के लिये गभीरता स विचार कर निणय लिये जाने का समय आ गया है।

अस्थाई पाईप लाईन डाल कर सूखे की भयकर चपेट मे आये राजस्थान क मरुस्थलीय सभाग को इन्दिरा गाधी नहर स अविलम्ब पेय जल पहुँचाने की व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है। पीने के पानी की व्यवस्था किये बिना इस क्षेत्र का पशुधन तो प्राय काल कवलित हो ही जायेगा पर शायद मानव भी अकाल मृत्यु के ग्रास बन जायेंगे।

आशा है आप मेरे इन महत्वपूर्ण सुझावो पर चिंतन कर आवश्यक निर्देश देंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा म
श्री राजीवजी गाधी
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मेंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक २२ ६ ८६

प्रिय अशोक भाई !

राजस्थान मत्रीमडल मे आप की नियुक्ति के समाचार से प्रसन्नता हुई।

इन दिनो राजस्थान म साम्प्रदायिक तत्व विशेष रूप से सक्रिय है। अत आपके विभाग को पूर्ण रूप से सतर्क रहना आवश्यक है। मकराणा डिगोद तथा हाल ही म टोंक म हुये दगो को गम्भीरता से लिया जाना चाहिये। इस सम्बन्ध म मैं मुख्य मत्रीजी को भी लिखा है।

यह जान कर प्रसन्नता हुई कि इन्दिरा गाधी नहर परियोजना की मानिटरिंग प्रधान मत्री सचिवालय से की जायेगी।

जोधपुर लिफ्ट कनाल के सम्बन्ध मे आप की चिन्ता स्वाभाविक है पर आप को तो राजस्थान के समग्र मरु क्षेत्र का जहा पानी का भयानक अभाव है ध्यान म रखना चाहिये। मैं आप को अखिल राजस्थान स्तर का जन सेवक मानता हू।

गघेली साहवा लिफ्ट योजना का काम प्राय नही के बराबर चालू है। चूरू-नागौर क्षेत्र खारे पानी की पट्टी है और पानी के बिना जीवन त्रस्त है। गघेली साहवा लिफ्ट योजना स सुजानगढ लाडनू तक सिंचाई और पीने के पानी को पहुचाने की बात थी पर अभी तक इस सम्बन्ध म कोई गतिविधि नही है। मैंने April 88 मे मुख्य मत्री श्री शिवचरणजी माथुर स इस सम्बन्ध म बीकानेर म निवेदन किया तो उन्होने मेरी बात सुन कर अपनी डायरी म नोट भी किया था। पर अभी तक कोई सतोषजनक बात सामने नहीं आई है। आप का इस सम्बन्ध म विशेष दायित्व है आशा है आप पश्चिमी राजस्थान के मरुभाग म जहा पानी का अपार कष्ट है उसका यथा शीघ्र समाधान करने के लिये पूर्ण रूप स सचेष्ट होगें।

राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता मिले इसके लिये राजस्थान के जनमन में पूरा आकुलता है। मैं इस सम्बन्ध में केन्द्र और प्रान्त के राजनैतिक नेतृत्व से बराबर सम्पर्क साधे हुये हू पर अभी तक राज्य सरकार ने केन्द्र को आवश्यक अनुशंसा पत्र नही भेजा है। भाषा के बिना राजस्थान अपना मौलिक व्यक्तित्व व्यक्त नहीं कर सकेगा। मेरा अनुरोध है कि इस गम्भीरता से लिया जाना चाहिये।

आप स्वस्थ और प्रसन्न होगे। योग्य सेवा। पत्र दें।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

प्रतिलिपि
श्री बुलाकीदास कल्ला
इन्दिरा गाधी नहर परियोजना मंत्री
राजस्थान राज्य
जयपुर

शिक्षा के क्षेत्र मे प्राथमिक पाठशालाओ से महाविद्यालयो तक के लिए
ज्य शिक्षाधिकारियों से तथा लोकहितैषियों से किया गया पत्राचार एव प्रेषित
या की प्रतिलिपिया—

आनन्द सिंह
सचिव, महाराजा कुमार

लालगढ़ पैलेस
बीकानेर
दिनांक ६ ११ १९४९

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सठिया

हाल ही में जब आप बीकानेर में श्री महाराज कुमार साहब से मिले थे उस समय आपने उनको कृषि अनुसंधानशाला का संरक्षकत्व स्वीकार करने के लिए जो प्रार्थना की थी उसके लिए वे आपको कोटिशः धन्यवाद देते हैं। श्री महाराज कुमार साहब का विचार है कि इस समय यही उचित होगा कि वे कुछ समय के लिए किसी भी प्रकार के कार्यों में राजनैतिक व समाज सुधार सम्बन्धी भाग न लें। इसके बारे में जब कभी मैं आपसे फिर मिलूंगा तो विस्तार-पूर्ण बात चीत करूंगा।

मुझे दुःख है कि किसी खास कार्यवश मुझे श्री कानायतजी जाना पड़ा और आपसे नहीं मिल सका। भविष्य में जब कभी आप बीकानेर आवें मुझसे मिलने की जरूर कृपा करें।

आपका भवदीय
आनन्द सिंह

DIVISIONAL EDUCATIONAL INSPECTORATE
BIKANER

No BE E 16 D Dated

The Director of Education
Rajasthan Bikaner

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
DEPARTMENT OF EDUCATION

OFFICE OF THE INSPECTOR OF SCHOOLS
CHURU DISTRICT CHURU

No IS/CUR/GA/63/3224 Dated 13/3/63

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh (Churu)

Sub **Regarding Middle School, at Nayabas**

Your personal attention is invited to the letter No EDB/PL/(iii)/21505/62 63 dated 13 12 62 from the Director of Primary & Secondary Education Rajasthan Bikaner You are requested to send detailed report in this connection at your earliest convenience

This letter may be given top priority

Inspector of Schools
Churu District Churu

Copy of letter No EDB/Aca/A/14051/172/62 63 dated 13 5 64 from the Director of Primary & Secondary Education Rajasthan Bikaner to this office

Sub **Recognition for Higher Secondary School July, 1964**

Ref **Your letter No IS/CUR/G/64-65/1748 dated 8 5-64**

Permission is accorded for the upgradation of Oswal Middle School Sujangarh to Junior Higher Secondary School on the condition that no aid will be claimed by the Institution for this The Head of the Institution may please be asked to submit the prescribed application for the recognition by the Board through you

Sd/

Director
Primary & Secondary Education
Rajasthan Bikaner

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalal Sethia for Information

GAHLOT/25 5 64

Inspector of Schools
Chru District Churu

राजस्थान सरकार

शिक्षा विभाग

कार्यालय निरीक्षक शिक्षणालय, चूरू जिला, चूरू

प्रमाक आई अस/सोयआर/एए/एआइडा/एट/आरएकम/५०/५६/६६ ६७

दिनांक

अध्यक्ष

नगरपालिका

सुजानगढ

विषय अध्यापकों का यू० पा० एम० ५० एव आर० पी० एम० ५६ का फिक्सेशन

प्रसग आपका पत्राक १२३०/एमईएम/६६ दिनाक ८ २ ६६ तथा इस कार्यालय का पत्र क्रमाक ७४८ दिनाक ४ ५ ६६ एव आपका पत्राक १८८/ एमबाएम/ ६६ दिनाक १४ ५-६६

आपके अध्यापको के फिक्सेशन स्टेटमेंट आपके कार्यालय के दिनांक ८ २ ६६ के पत्र के साथ प्राप्त हुए लेकिन वित्तीय वर्ष की समाप्ति होने के कारण इस कार्याधिकता के कारण आपके स्टेटमेंट नहीं देखे जा सके। इसके बाद इस कार्यालय के दिनाक ४-५-६६ के पत्र द्वारा आपको मई मास के दूसरे सप्ताह में सम्बन्धित कर्मचारी को इस कार्य के लिए इस कार्यालय में भेजने हेतु लिखा गया था लेकिन इसके प्रत्युत्तर में आपने किसी कर्मचारी को मई मास में भेजने में असमर्थता प्रकट की थी क्योंकि मई ६६ के अन्तिम सप्ताह में आपके नगरपालिका के चुनाव होने थे। अब आपसे निवेदन है कि आप सम्बन्धित कर्मचारी को कर्मचारियों के वेतन चुकारा रजिस्टर तथा प्रमाणित फिक्सेशन स्टेटमेंट सहित इस कार्यालय में दिनाक २१-६ ६६ को उपस्थित होने के लिए आदेश देवें।

आपने अध्यापकों के केवल Difference Statement ही भेजे हैं लेकिन प्रमाणित फिक्सेशन स्टेटमेंट साथ में न भेजने के कारण यह ज्ञात करना असंभव है कि अध्यापकों का वेतन दिनांक १-९-५० तथा १-९-५६ को किस स्टेज पर फिक्स किया गया था। और ... का निर्धारण ... हुआ है तो आप सब प्रथम उन लोगों के फिक्सेशन स्टेटमेंट तैयार करके

सभी कर्मचारियों के लिए तैयार करके भिजवावें ताकि उनका फिक्सेशन करवाया जा सके और उसके बाद उनका एरियर भी उठाया जा सके। कृपया इस कार्य को शीघ्रातिशीघ्र करवाने का कष्ट करें। अगर किसी प्रकार की अड़चन हो तो सबधित कर्मचारी को इस कार्यालय में भेज कर स्पष्टीकरण करवा लेवें।

निरीक्षक शिक्षणालय
चूरू जिला चूरू

पत्रांक आइवस/सीयूआर/एए/एआन्डा/फिक्से/५०/५६/६६/६७/१६४५ दिनांक ४ ६

१ प्रतिलिपि सेवा में उपाध्यक्ष शिक्षा विभाग जोधपुर को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रस्तुत है।

२ Copy to Shri Kanhaiyalal Sethia Ratan Niwas Rajasthan Sujangarh

कार्यालय निरीक्षक शिक्षणालय चूरू

क्रमाक १६७७५ दिनाक २७ ७ ६७
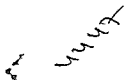
श्री कन्हैयालाल सेठिया
सुजानगढ

विषय अनिवाय शिक्षा स्कूलो के अध्यापको का वेतन

प्रसग आपके पत्र स दिनाक १३-७ ६० उस विषय म निम्नाकित बातो पर आपका ध्यान आकर्षित किया जा रहा है —

(१) अप्रेल व मई ६० के ऐड बिल नगरपालिका को पास करके भेजे गये थे। उन्होने बिना चुकारा लिये वापिस लौटा दिये।

(२) इन स्कूलो के लिए २०४०६ रू साल के शिक्षा विभाग स स्वीकृत है अत १७०० रुपये महिने के हिसाब से हमने बिल पास कर दिये।

(३) नगरपालिका इन स्कूलो के लिऐ साल मे जितना खर्च करती है उसकी ७५% शिक्षा विभाग देता है।

(४) इन स्कूलो के लिऐ जो भी पत्र व्यवहार किया जाता है किसी समय भी समय पर नगरपालिका द्वारा प्रत्युत्तर नही दिया जाता है।

(५) प्रत्येक साल ऐड के लिऐ प्रार्थना पत्र इन्हें भरना पडता है लेकिन बार बार लिखने पर भी समय पर कार्यवाही नही करते।

(६) पिछले वर्ष भी ऐसे ही था इससे पहले भी ऐसे ही और इस वर्ष भी यही हालत है।

(७) जून जौलाई ६० के ऐड बिल अभी हमारे यहाँ न० पा० से नही आये है।

(८) वे जितने रुपयो का बिल भेजते है उतनी रकम पास करनी सभव नही है।

(९) *अप्रेल मई ६० के बिल फिर उन्हें भेजे जा रहे हैं।*

इन्स्पैक्टर आफ स्कूलस्
डिस्ट्रिक्ट, चूरू
चूरू (राजस्थान)

चन्दनमल वैद

जयपुर राजस्थान

दिनाक २९ जून १९५४

प्रिय बधु

आपका २८ जून का तार मिला। मुझे मालूम हुआ है कि गाधा बालिका विद्यालय को सरकारी सहायता दन क प्रश्न पर शिक्षा विभाग म सहानुभूति पूवक विचार हो रहा है। आशा है इस बारे म जल्दी ही निणय होगा।

आप प्रसन्न होंगे।

जयहिद।

आपका अपना
चदनमल वद

(गाधा बालिका विद्यालय के लिये राजकीय अनुदान स्वीकृत हुआ)

चन्दनमल वैद

जयपुर राजस्थान
दिनाक २४ सितम्बर १६५४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहिब,

सादर जयहिन्द। सर्वोदय सम्मेलन पर सुजानगढ आने की बडी इच्छा रही पर कुछ अनिवार्य कारणा स मुझे उदयपुर तथा भीलवाडा जाना पडा और सुजानगढ न आ सका।

मुझे मालूम हुवा है कि चूरू जिले मे भी एक Multipurpose स्कूल खोला जायगा और इसके लिये शिक्षा विभाग के सचिव श्री जगन्नाथजी पुरोहित चूरू गये हुये है। ज्यादा अच्छा होता अगर आप किसी समय जयपुर पधार कर उनस मिल लेते और पूरी जानकारी हासिल कर लेते कि ऐसे स्कूल कहा और कैसे खुल सक्ते हैं।

यह जान कर बडी खुशी हुई कि सुजानगढ म वाटर वर्क्स का काम शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है। आपके प्रयत्न से सुजानगढ की एक बहुत बडा कमी दूर होजायगी अब ऐसा विश्वास होने लगा है।

आशा है आप स्वस्थ होगे। अपने पूज्य पिताजी को मेरा सादर प्रणाम कहें।

आपका आपना
चन्दनमल वैद

(सुजानगढ मे पी सी बी हायर सेकेन्ड्री स्कूल को मल्टीप्रपज स्कूल बना दिया गया)

चन्दनमल वैद

जयपुर राजस्थान

दिनांक १७ अक्टूबर १९५४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

२६ ९ ५४ का आपका पत्र मिला। श्रीगांधी बालिका विद्यालय के सिलसिले में डाईरेक्टर शिक्षा विभाग से सम्पर्क स्थापित कर रहा हूं और जल्दी ही आपको इस बारे में सूचित करूंगा। प्रसूति गृह के बारे में कार्यवाही हो रही है और आशा है जल्दी ही यह कार्य आपके यहां शुरू हो जायगा।

आशा है आप स्वस्थ होंगे।

जयहिन्द।

आपका अपना
चन्दनमल वैद

(सुजानगढ में प्रसूति गृह की स्थापना हुई)

चदनमल बैद
विस मत्री, राजस्थान

जयपुर
दिनाक सितम्बर १५ १९७२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

आपका पत्र दिनाक १३ सितम्बर १९७२ का आज मिला। आशा है मेरा सम्बन्धित का पत्र भी आपको मिल गया होगा। सुजानगढ राजकीय कालेज भवन निर्माण के बारे मे मैं जानकारी प्राप्त कर रहा हू।

श्रीमती मानादेवी सेठिया महिला कालेज को ग्राट इन एड देने के बारे मे भी विचार किया जा रहा है। आप स्वस्थ व प्रसन्न होगे।

सादर सस्नेह

आपका अपना
चदनमल बैद

(सानादेवी महिला महाविद्यालय के लिये राजकीय अनुदान स्वीकृत हुआ)

चन्दनमल वैद
वित्त मत्री गजस्थान

जयपुर
अगस्त ६-१२ १६७४

प्रिय श्री क हैयानालजी साहब

आपका पत्र दिनाक ५ अगस्त १६७४ तथा ४ अगस्त का तार जाजोन्यिा उच्च माध्यमिक विद्यालय सुजानगढ म कामस मे ११ वा कक्षा खालने के सम्ब ध म प्राप्त हुआ। आपका तार मैं उचित कायवाही के लिए मा० शिक्षा मत्रीजी श्री खेतसिह्जी को भेज रहा हू।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक हागा। अगस्त माह के अन्तिम न्नि म मै चुरु जिल म रहूगा और सम्भव है कि मैं आपस सुजानगढ म मिलू।

अभिवादन।

आपका अपना
च दनमल वद

(जाजोन्यिा उच्च माध्यमिक विद्यालय सुजानगढ म वाणिज्य की कक्षाए खोल दी गई)

चन्दनमल वैद
वित्त मंत्री, राजस्थान

जयपुर
दिनांक १७ मार्च १९७५

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहब,

आपका कृपा पत्र दिनांक ७ मार्च यथासमय मिल गया था। चन्द्र की सगाई की मिठाई जब आप जयपुर पधारेंगे आपको पेश कर दी जायगी।

मैं इस बात की पूरी कोशिश करूंगा कि १८ मई को जयपुर में रहूं और आपके भतीजे श्री निर्मलकुमारजी के विवाह में सम्मिलित होऊं।

श्री मूलचन्दजी का स्वास्थ्य ठीक है। उनका ब्लड प्रेशर अब काफी ठीक है।

ग्राम जल प्रदाय योजनाओं की स्वीकृति अब जिला आयोजना समिति करती है। आगे से जो भी नई योजनाएं हाथ में ली जावेंगी इन समितियों के सुझाव के अनुसार ली जावेंगी।

इस साल में राजस्थान में १२५ मिडिल स्कूलों को माध्यमिक स्कूलों में क्रमोन्नत किया जावेगा। यह कार्य जून जौलाई के महीने में होगा। उस समय राजकीय कनोई बालिका विद्यालय का भी निश्चित रूप से ध्यान में रखा जावेगा।

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ तथा आनन्द में होंगे। कृपया सबको मेरा सादर नमस्कार कहें।

सस्नेह वन्दे।

आपका अपना,
चन्दनमल वैद

(राजकीय कनोई बालिका विद्यालय को क्रमोन्नत किया गया)

चन्दनमल बैद
निगम मन्त्री

टेलीफोन कार्यालय ६८५१६
निवास ७३७७०
जयपुर, राजस्थान
दिनांक सितम्बर ३ १६८१

प्रिय श्री कन्हैयालालजी साहब

सरदारशहर म बालिका महाविद्यालय की स्थापना के सम्बन्ध क आपका पत्र दिनांक २३ ८ १६८१ मुझे मिल गया है। इस सम्बन्ध म तीन प्रस्ताव मुझे मिले है।

१ श्री नन्दलाल टाटिया

२ मित्तल परिवार

३ बालिका विद्यालय सरदारशहर

इन तीनो प्रस्तावो पर विचार कर उचित निर्णय राज्य सरकार लगी।

आशा है आप स्वस्थ तथा आनन्द म होगे।

अभिवादन।

आपका
चन्दनमल बैद

(सरदारशहर म बालिका महाविद्यालय मित्तल परिवार द्वारा निर्मित कराया गया)

चन्दनमल बैद
वित्त एव शिक्षा मन्त्री

टेलीफोन कार्यालय ६८५१६
निवास ७३७७०
जयपुर राजस्थान
दिनांक २५ जनवरी १९८२

प्रिय श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आपका पत्र ६ जनवरी यथा समय मिल गया था लेकिन अक्सर जयपुर से बाहर रहने के कारण पत्र का जवाब इससे पहले नहीं दे सका जिसके लिए क्षमाप्रार्थी हू। बीकानेर म विश्वविद्यालय चूरू म राजस्थान नहर तथा सुजानगढ के कालेज को पोस्टग्रेज्युयेट कालेज बनाने के बारे म आपके विचारो से म अवगत हो गया हू। आपके विचारो की कद्र करता हुआ इन तीनो विषयो के बारे म मुझसे जो भी चेष्टा हो सकेगी म बराबर करता रहूगा। आशा है आप स्वस्थ तथा आनन्द म होगे।

सादर अभिवादन।

आपका अपना
चन्दनमल बैद

नोट छठवी योजना म राजस्थान सरकार ने बीकानेर मे विश्व विद्यालय स्थापित करने का निर्णय ले लिया है तथा केन्द्रीय सरकार ने चुरू-साहवा लिफ्ट स्कीम से सुजानगढ-लाडनू तक इन्दिरा गाधी नहर से पीने के लिए पानी दिए जाने की राजस्थान सरकार की योजना को स्वीकार कर लिया है।

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

No EDD/BK/GA/BGT/169 Dated 19 8 58

The Headmaster
P C B Multipurpose Higher Secondary School
Sujangarh
(Distt Churu)

During the course of a conversation with Shri Kanhaiyalal Sethia I came to learn that some Seth Sahib was going to get some rooms constructed for your School

I am to request that you will kindly contact Shri Sethia and follow up the matter The details of the proposal may kindly be sent to the Inspector of Schools Churu with a copy to me under a D O letter I am endorsing a copy of this letter to the Inspector of Schools Churu and Shri Sethia

Dy Director of Education
Bikaner Camp Sikar

No EDD/BK/GA/169 Dated 19 8 58

Copy forwarded to

1 The Inspector of Schools Churu
2 Shri Kanhaiyalal Sethia Sujangarh for information

Dy Director of Education
Bikaner

(कमरा का निर्माण करा दिया गया। श्री सेठिया की प्रेरणा से दगडिया परिवार ने छात्रावास का निर्माण भी कर दिया है जिसका शिलान्यास भारत के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्री कालूलाल श्रीमाली ने किया)

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
DEPTT OF EDUCATION

No EDB/BK/GA/21505/76/62 63 Dated 24/10/62

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh (Churu)

Sub **Regarding middle School at Nayabas Sujangarh**

In the above connection Govt has been moved for necessary sanction You will be informed as soon as sanction is received in the matter

Director
Primary & Secondary Education
Rajasthan (Bikaner)

(नया बास सुजानगढ म माध्यमिक विद्यालय स्वीकृत हुआ)

रगलाल वगडिया

उद्योगपति

श्रीरामजी

दिनाक २६ ८ १६५८

श्री कन्हैयालाल सेठिया

आसीस

कागद तुमारो आयो। हाईस्कूल म कमरा की कमी छ सो जाना। तुमा लिखा की कमरा नग ७ और होसी जीमका लागत ३० हजार रुपया छ सो जाना तुमा लिखा की गवरमेन्ट स्यू १० हजार मिल सक छ सो जाना। कोशीश कर जितना वेसी मीलन सक लेवोगा बाकी का आपा नगा कर बनवा देवागा अब अठ सु कोई देर जासा जना काम सुरु करा देस्या तुमा गवरमेन्ट सु जितना ल्न सको उतना लेवोगा अठ सारा जना राजी छ तुमा राजा खुशी रवोगा।

कन्हैयालाल सुरेका

वास्ते रगलाल वगडिया

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

(Directorate of Education)

From

The Addl Director of Education,
Rajasthan Bikaner

To

The Inspector of Schools Churu

No Dated March 1960

Sub **Opening of a additional High School at Sujangarh**

Shri Sagar Mal Jajodiya has offered to construct a new High School building at Sujangarh A copy of his letter is enclosed Will you please examine the possibility of another additional High School in Sujangarh and let me have your report soon through the Deputy Director of Education Bikaner

Sd/
(J S Mehta) IAS
Addl Director of Education
Rajasthan Bikaner

No EDB/PC/II/21105/Prop/143 (6c) Bikaner
Dated 16th March 1960

1 Copy along copy of letter under reference forwarded to the Deputy Director of Education Bikaner for information and necessary action

2 Copy forwarded to Shri Sagarmalji Jajodiya for information with reference to his letter dated 4 3 60

3 Copy to Shri Kanhaiyalal Sethia Ratan Niwas Sujangarh for information with reference to his letter dated 4 3 60

(J S Mehta) IAS
Addl Director of Education
Rajasthan Bikaner

(सुजानगढ म अतिरिक्त उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित कर दिया गया)

अद्ध सरकारी पत्र स० ईडीबी/योजना/२/२११०७/२३/६१६५ दि० ५६६१

जगन्नाथ सिंह मेहता
सचालक

कार्यालय सचालक
प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान बीकानेर
दिनाक ५-६ १९६१

प्रिय श्री सठियाजी,

पत्र आपका मिला, समाचारा स अवगत हुआ। स्कूल भवन क लिये सीमेट दिलाने बाबत कलक्टर साहब चुरू का मैंने पत्र लिख दिया है उसकी प्रतिलिपि सलग्न है। मैं अवकाश पर इन्दौर चला गया था और कल ही वापिस आया हू। इस स्कूल का जुलाई ६१ म चलाने का विभाग प्रयास कर रहा है यदि स्कूल भवन जुलाई के पहिले पहिले बिल्कुल तयार करके विभाग क सुपद कर दें। आप कृपया प्रार्थनापत्र इस विषय म निरीक्षक शिक्षणालय क द्वारा भिजवाने का कष्ट करें।

भवदीय
जगन्नाथ सिंह मेहता

(सन्दर्भ—जाजोदिया हायर सेकेन्डरी स्कूल)

OFFICE OF THE DIRECTOR
PRIMARY / SECONDARY EDUCATION
RAJASTHAN BIKANER

J S Mehta
Director

Dated September 1961

My dear Shri Hooja

Seth Saraimal Jajodia has constructed a good building for Higher Secondary School at Sujangarh District Churu and has spent nearly two lacs of rupees Shri Jajodia is keen that the formal inauguration of the building should be performed by the Chief Minister The Government vide No Fa(32)Educ (I dated 31 8 60 has accepted the donation The dates suggested are 8th 9th or 15th of November whichever may suit the Chief Minister

I shall be grateful if you will kindly convey Chief Minister s approval so that I may intimate the same to Shri Jajodia

Yours sincerely
Sd/
J S Mehta

Shri B Hooja
Secretary to Chief Minister
Government of Rajasthan
Jaipur

Bikaner
No EDB/Govt/P/12684/6/61 Dated 4th Sept 1961

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalalji Sethia of Sujangarh for information with reference to his personal discussion during my last visit to Sujangarh

J S Mehta
Director
Primary & Secondary Education
Rajasthan Bikaner

JAGANNATH SINGH MEHTA Camp Sujangarh
Director of Education Dated 5 5 63

My dear Sh Tej Kumar

Shree Ram Kumar Bharadia is constructing a girls Primary School building in Sujangarh for which there is a dire need He would handover the building to the department I shall therefore be grateful if you would kindly expedite the allotment of the land free as recommended by the M Board Sujangarh so that the building could be ready before the new session starts in July next I understand you have also inspected the proposed site yesterday and have approved of the same

Yours sincerely,
Jagannath Singh Mehta
Director of Education (P & S)
Rajasthan Bikaner

(भराडिया कन्या प्राथमिक विद्यालय सुजानगढ के भवन निर्माण के लिये भूमि दी गई)

OFFICE OF THE DIRECTOR
PRIMARY & SECONDARY EDUCATION
RAJASTHAN, BIKANER

J S MEHTA
Director

Dated July 1963

My dear Shri Gupta

As you know a Government Middle School has been started this year in Sujangarh in the building constructed and donated by Seth Shri Jhanwar In case there is congestion in other Middle Schools or middle sections of Higher Secondary Schools you may start VII and VIII simultaneously by transferring additional section from these schools along with the teachers

Please let me know how the position stands and what action has been taken by you ?

Yours sincerely
J S Mehta

Shri V D Gupta
Inspector of Schools
Churu

No EDB/Govt/A/12143/13/63

Bkaner
Dated 12th July 1963

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalalji Sethia of Sujangarh for information

Director of P&S Education
Rajasthan Bikaner

Copy of the lettr No EDB/Sec/B/21313/214 (65 66) dated 22 11 65 from the Addl Director of Education primary & secondary, Rajasthan Bikaner to this office

Sub **Upgrading of Rajasthan Rishikul Bramcharya Asharam Ratangarh to Secondary School**

Ref **Your letter D EDD/JB/GA/4002/27000 dated, 6 11 65**

The case for upgrading the above school to secondary standard can be considered from next year if the secretary of this school gives an undertaking for not demanding any grant in aid during IVth plan period

No EDD/JB/GA/4002/89 Dated 16 12 65

Copy forwarded to the Inspector of Schools Churu in continuation to this office letter No EDD/JB/GA/4002/85 dated 6 11 65 for information

Sd/
Dy Director of Education
Jodhpur

No EDD/JB/GA/4002/66/97/2940 Dated 31 1 66

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalal Sethia Ratan Niwas Sujangarh with ref to his Letter dated 10 1 66

Dy Director of Education
Jodhpur

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
Department of Education

From

The Director of Education
Rajasthan Bikaner

To

The Inspector of Schools
Churu

No EDB/Bud/C 2/15400(46)/60 Dated July 1960

Sub **Payment of grant in aid**

Intimation has been received from the President Municipal Board Sujangarh that the teachers of Compulsory Education Schools, Sujangarh have not been paid their salary

Kindly pass the bills as a special case However the President is being asked to submit the grant in aid application immediately

Director
Primary & Secondary Education
Rajasthan Bikaner

No EDB/Bud/C 2/15400(46)Sp/60 Dated 8 8 60

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalal Sethia Ratan Niwas Sujangarh—who will please ask the Municipal Board to submit the grant in aid application immediately else they will be held responsible for all non payment

Director
Primary & Secondary Education
Rajasthan Bikaner

R Goswami 28/7/60

मोहनलाल सुखाडिया
मुख्य मन्त्री

जयपुर, राजस्थान
दिनांक २६ अक्टूबर १९६१

प्रिय कन्हैयालालजी,

आपका पत्र दिनांक १६-१०-६१ प्राप्त हुआ व टेलीफोन से भी बात हुई थी। सुजानगढ़ के स्कूल के बारे में अगर दिल्ली जाना आवश्यक नहीं हुआ तो मैं इन दिनों में कार्यक्रम रख सकूंगा। आप कृपया मुझसे नवम्बर के प्रथम सप्ताह में पूछ लें।

शेष कुशल।

आपका
मोहनलाल सुखाडिया

मोहनलाल सुखाडिया
मुख्य मन्त्री

जयपुर राजस्थान
दिनांक ३० दिसम्बर १९६१

प्रिय सेठियाजी,

आपका २३-१२-६१ का पत्र प्राप्त हुआ। खेद है कि खराब मौसम के कारण मैं कलकत्ता नहीं आ सका और इससे आप लोगों को काफी निराशा और असुविधा हुई।

सुजानगढ़ में पोलीटेक्निक के लिए लगभग ७ लाख रुपये का अनुदान सुजानगढ़ की जनता से प्राप्त हो सकता है यह काफी उत्साहजनक है। इस सम्बन्ध में उपयुक्त कार्यवाही करने के लिए मैं शिक्षा सचिव को कह रहा हूं।

आपका,
मोहनलाल सुखाडिया

मोहनलाल सुखाडिया
मुख्य मंत्री

जयपुर राजस्थान
दिनांक २१ मार्च १९६२

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका तारीख १३ मार्च १९६२ का पत्र मिला। मुझे बताया गया है कि सुजानगढ़ में पोलीटेक्निक की स्थापना के लिए भारत सरकार से स्वीकृति नहीं मिल रही है। आपके इस पत्र को आगे उपयुक्त कार्यवाही के लिए मैं शिक्षा मंत्रीजी महोदय के पास भेज रहा हूं।

आपका
मोहनलाल सुखाडिया

मोहनलाल सुखाडिया
राज्यपाल

राज भवन
बंगलोर
२७ नवम्बर १९७५

प्रिय कन्हैयालालजी

आपका पत्र प्राप्त हुआ। अगर कहीं भी नया कालेज नहीं खोलने की सरकारी नीति होगी तब तो मेरा भी कहना लाभप्रद नहीं होगा, वरना अवश्य प्रयत्न करूंगा।

आपकी जानकारी के लिये यह सूचित करना चाहता हूँ कि मैं ता १० दिसम्बर को सुबह ८ १५ बजे कालका मेल से कलकत्ता पहुँच रहा हूँ और ता ११ को रात को ८ ३० बजे कलकत्ता से कालका मेल से रवाना हो जाऊंगा।

आपका,
मोहनलाल सुखाडिया

(रतनगढ़ में महाविद्यालय खोलने के सम्बन्ध में दिये गये पत्र का उत्तर)

MINISTER
SCIENTIFIC RESEARCH AND CULTURAL AFFAIRS
INDIA, NEW DELHI

Dated May 29 1962

Dear Shri Sethia

I received your letter of 26th May at Jaipur I am sorry to hear that you have not been well but hope that you are now recovering quickly

I discussed the question of the Polytechnic with the Rajasthan Government You will appreciate that it is primarily the responsibility of the State Government and we come into the picture only to help I understood from the Education Secretary of Rajasthan that he has made two alternative suggestions

(1) You may start almost immediately a Junior Technical School which may perhaps be developed into a Poly technic in the Fourth Plan

(2) Alternatively you may decide to start a Polytechnic and make for the purpose a donation of about Rs 8 lakhs The Institution could start in the last year of the Plan and you would have to meet the recurring expenses also for the first year of the Polytechnic From the beginning of the Fourth Plan the State would help it according to the agreed formula

I suggest you discuss this with the Government of Rajasthan and ask the Rajasthan Government to forward proposals to us

With kind regards

Yours sincerely
Humayun Kabir

HARI BHAU UPADHAYA
Education Minister

Jaipur
Rajathan
July 25/28 1962

D O No F 2(16) Misc/Edu/Gec /I/62

My dear Shri Karni Singhji

In continuation of my letter No F 2 (16) Misc /C I/61 dated the 6th June 1962 I write to say that the scheme for the establishment of a degree college at Ratangarh has been examined in detail In Churu District there are already two Government Colleges at Churu and Sardarshahr respectively with adequate hostel facilities Both the Colleges are running under strength The students of the nearby towns can easily go to these places for pursuing higher education Till the seats available in these two colleges are fully utilised it will not be proper for us to consider any proposal for starting any more degree college in the district Our object in the Third Plan is to set up at least one degree college in each of our revenue districts or to give more than one college in the bigger district There is no degree college yet in any of the districts of Jalore Barmer and Jaisalmer Obviously they will get priority over others and so the bigger districts to have more than one Government degree college The claim of Churu District to have a third college is not likely to come up for consideration in the near future under the circumstances explained above I hope you will appreciate the position

With best wishes

Yours sincerely
Sd/ S B Upadhyaya

Maharja Sri Karni Sighji
Bahadur M P
10 Prithviraj Road New Delhi

Copy forwarded to Shri Kanhaiyalal Sethia Sujangarh

हरिभाऊ उपाध्याय
शिक्षा मत्री

जयपुर, राजस्थान
दिनाक ८ मई, १९६४

प्रियवर मेठियाजी,

सुजानगढ म डिग्री कोलेज खोले जाने के सम्बन्ध मे आपका पत्र दिनाक २४,४ ६४ मिला। म विभाग म जानकारी ले रहा हू। मिलने पर आपको सूचित कर सकूगा।

मूग पपटी के बारे म आपने जानकारी दी जिसकेलिए धन्यवाद। पहले आप थोडी मात्रा म ही भेजें तो अच्छा होगा। लाभ होने पर और मगवा लूगा।

आप प्रसन्न व स्वस्थ होगे।

हरिभाऊ उपाध्याय

(सुजानगढ म वाणिज्य एव कला महाविद्यालय की स्थापना हुई)

PUBLIC RELATIONS OFFICER
To H H The Maharaja of Bikaner

Lallgarh Palace
Bikaner
Dated May 28 1963

Shri Kanhaiyalalji Sethia
Sujangarh

Dear Sir

I write to inform you that in regard to the establishment of a Degree College at Sujangarh I am enclosing copy of a letter received from Shri H B Upadhyaya Education Minister Rajasthan in reply to our letter to set up a Degree College in Ratangarh which speaks for itself

The circumstances since then have not radically changed to warrant a proposal for the establishment of a Degree College at another place Still if you persist, I am prepared to address a letter on the subject to the authorities concerned but you may kindly furnish me the necessary data to make out a case

Yours faithfully
Public Relations Officer
to H H the Maharaja of Bikaner

V V JOHN
Director of College Education

Rajasthan, Jaipur
Dated 17 7 1963

D O No F 5(65)Aca/DCE/62

Dear Shri Sethia

With reference to your letter dated July 3 1963 I have the honour to write to you as follows

Owing to the existing commitments of the Government in Higher Education it has been decided not to start any more Government Colleges in the State while the financial stringency lasts It may however, be possible to start colleges if donors come forward to construct buildings and meet the initial expenditure of running the college for some time While the requirements in this regard were moderate until recently the model of a college building approved by the State Government for the remaining years of the Third Five Year Plan would require a donation of Rs 4 5 lacs from a private donor The total investment including Government grants would be nearly Rs 8 lacs After hearing from you I shall be able to send you the blue print that has been prepared for a college building at Nathdwara which is at present being treated as the model

Yours sincerely
V V John

SOHANLALL SETHIA
Industrialist

West India House
96 Leadenhall Street
London E C 3
Dated 3rd February 1966

My dear Sampat

I have received a letter from Sri Kanhaiyalal in which he writes that the following documents are immediately required to enable him to persue our application for College

(1) Five copies of the Constitution of Moolchand Sethia s Trust duly signed by one member of the Trust
(2) Five copies of the list of the members of the Trust duly signed by one Trustee or better three Trustees
(3) Five copies of Registration certificate of the Trust duly attested
(4) Five copies of the Balance Sheet of Trust duly signed
(5) Five copies of the Resolution of the Trust making a Sub committee for College duly signed by a Trusteee
(6) One Draft of Rs 600/ in favour of the Registrar University of Rajasthan Jaipur
(7) Trust Letter Pad

I request you to send a draft for Rs 5000/ to Sujangarh so that you are not hackled every other day

I also request you to send a full Letter Pad so that the matter can be attended Sri Tiji is there and he will do the needful

With my assist

Yours affectionately
Sohanlall Sethia

SOHANLALL SETHIA
Industrialist

West India House
96 Leadenhall Street
London E C 3

Dated 3rd February 1966

My dear Kanji

Thanks you for your letter of the 29th January received just now

While thanking you for all that you are doing in pursuit of our purpose I am writing a letter to Sampat copy of which I enclose

This matter has got to be followed by you and I am sure you will do your best

With kindest regards to your Mother and assist to you

Yours sincerely
S L Sethia

(सोनादेवी महिला महाविद्यालय, सुजानगढ की स्थापना हुई)

राधेश्याम सराफ
उद्योगपति

कलकत्ता

दिनांक २३ १० १९६८

श्री कन्हैयालालजी सेठिया

आदरणीय भाई साहब

सश्रद्ध प्रणाम।

सुजानगढ़ गया तो आशा थी कि कुछ समय आपके पास बैठने का मौका मिल सकेगा। वह सौभाग्य तो प्राप्त नहीं हो सका। किंतु आप बद्री केदार हो आये यह जानकर प्रसन्नता हुई। अवश्य ही इस यात्रा से आपने नया अनुभव एवं प्रेरणा प्राप्त की होगी जो आपके भावों के साथ किसी न किसी रूप में हम भी देख पायेंगे। द्रष्टा विशेष की आंखें ही दृश्य में से नवीनता का ग्रहण कर सकती हैं सब का नहीं।

छात्रावास का निर्माण प्रायः पूर्ण हो चला है। छात्रों के लिये आदर्श रूप में इसका प्रयोग हो सके एवं उनके शारीरिक एवं चारित्रिक गठन के साथसाथ अनुशासन सीखने का उपयुक्त वातावरण एवं सुविधायें मिल सकें। इस विषय पर आप चिन्तन करें एवं एक दिनचर्या ठीक कर उसके लिये आवश्यक व्यवस्था निर्देश दें ऐसी आवश्यकता है। मेरा विचार है कि कुछ खर्च का भार अपने ऊपर रख कर भी ऐसा करना ठीक होगा।

सुजानगढ़ आने का मेरा विचार ही नहीं आवश्यक भी है। कुछ अवकाश मिलते ही आऊँगा। कृपा के लिये आभारी हूं।

मेरा स्वास्थ्य इन दिनों ठीक ही चल रहा है।

विशेष शुभ।

विनीत,
राधेश्याम सराफ

(श्री सेठिया की प्रेरणा से विवेकानन्द छात्रावास सुजानगढ़ का निर्माण हुआ)

गिन्नी देवी

प्रधान अध्यापिका, कनाई बालिका विद्यालय

सुजानगढ

सुजानगढ

दिनाक २५ ६ ७५

श्रीमान

सेठियाजा साहब,

सादर नमस्कार!

कनोई बालिका विद्यालय को क्रमोन्नत करवाने के सहयोग के लिए आपको बधाई है। आगे भविष्य म भी मैं यही आशा रखती हू कि आपका सहयोग हमेशा के लिए बना रहे।

अब दूसरी बात यह है कि विद्यालय के पास वाल रामदुआर की जमीन वाबाजा बेच रहें हैं। लगभग उन्नीस सौ गज है। अदर कमरे बरामदे आदि भी हैं। फिलहाल प्राइमरी सेक्शन अलग करने पर पास हो काम चल सकता है। यदि आप कनाई परिवार को सुझाव देकर उसे खरीदने के लिए प्रेरित करेंगे तो विद्यालय हित म उत्तम रहेगा।

कीमत भी मेरे सुने गये आधार से कोई ज्यादा नहीं है लगभग १४ या १५ हजार हो सुने हैं। आगे इसकी पूरी जानकारी कर आपको तथा कनाई परिवार को पत्र पुन दूगी। कमरे ऊपर बाद म भी बन सकते हैं चूकि भवन गिफ्ट डीड करवा देने के बाद सरकार भी हर वर्ष कुछ न कुछ भवन के लिए बजट देती है।

प्र अ भी आई नही है। आप यदि श्रीमती लवगलताजी की सिफारिश कर दें तो उनका यहाँ आना शाला और बच्चियो के हित म उत्तम है। शुभकामना सहित।

गिन्नी देवी प्र अ

श्रीकनोई बा मा वि

चम्पालाल उपाध्याय
एम ए एन एल बी

रतनगढ (राजस्थान)

दिनाक ६ ११ ७५

आदरणीय श्री मठियाजा

सादर नमस्ते।

आपका कृपा पत्र दिनाक २ ११ ७५ का मिला। दीपावली की शुभकामनाओ के लिए अत्यत आभारी हूँ। कृपया मेरी तरफ से भी मगल कामनाएँ स्वीकार कीजिए।

सुजानगढ तथा अन्य स्थानो की तरह रतनगढ के शैक्षणिक विकास मे भी आप सक्रिय रुचि रखते है। इसके लिए हम सब कृतज्ञ है। कालेज के सम्बन्ध मे रतनगढ के विभिन्न प्रवासी महानुभावो को आप प्रेरणा देते रहते है। श्रीमान मोहनलाल जी जालान से भी आपने बात की है। उनसे इस सम्बन्ध मे पत्र व्यवहार चल रहा है। नक्शा भिजवा दूगा। आपको भी सूचित कर दूगा। वैसे कालेज भवन की कवड एरिया तथा अन्य मुख्य सूचनाए उन्हें प्रेषित की जा चुकी है। वे भी गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहे हैं। आपकी प्रेरणा से कार्य मे बहुत बल मिलेगा।

मेरे प्रति आपके स्नेह एव विश्वास के लिए पुन आभार सहित।

विनीत
चम्पालाल उपाध्याय

(मोहनलालजी जालान की ओर से रतनगढ मे महाविद्यालय के निर्माण की स्वीकृति हुई)

मोहनलाल जालान
उद्योगपति

कलकत्ता

दिनांक १० ३ ७६

प्रिय कन्हैयालालजी सठिया

आपके दो पत्र एक दि० २६-२ ७६ का तथा दूसरा ७ ३ ७६ मिले। मैं कलकत्ता स बाहर कुछ दिनो के लिये दवघर चला गया था औरवहा स ५ तारीख का वापस आया हू।

आपका पिछले सप्ताह दिल का दौरा पड गया था यह पढ कर विचार हुआ। पूर्ण विश्राम करने स कुछ अवश्य लाभ हुआ हागा। आज आपके आफिस म टेलीफान किया था जिसस पता चला कि आप अभी आफिस म नही आ रहे है। अब स्वास्थ्य म अवश्य ही आशातीत लाभ हुआ हागा।

कालेज का नक्शा श्री चम्पालालजी उपाध्याय ने भेजा है वह मिल गया है। किन्तु पूरा समझ म नही आया। आपके स्वस्थ हा जाने के बाद इस विषय म आपस बात करूगा।

आपका
माहनलाल जालान

प्रो० बुलाकीदास कल्ला जयपुर
उप मन्त्री
शिक्षा एवं आयोजना

क्रमांक १३६८ दिनांक ३० ६ ८२

श्रद्धेय श्री सेठियाजी

सादर नमस्कार !

आपका पत्र मिला समाचार जाने। आपने पत्र में माननीय मुख्य मन्त्रीजी एवं माननीय शिक्षा मन्त्रीजी से बीकानेर में विश्वविद्यालय खोलने के बारे में चर्चा के सम्बन्ध में अवगत कराया। मैं भी समय समय पर बीकानेर का जन प्रतिनिधि होने के नाते इस सम्बन्ध में चर्चा करता रहा हूँ।

यह सही है कि बीकानेर विद्या नगरी है और हर दृष्टि से आप द्वारा पत्र में वर्णित बातें सत्य है। परन्तु इसके लिये आप जैसे साहित्यकारों सजनधर्मी एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं को समय समय पर सम्बन्धित लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहिये ताकि इस सभाग की आवश्यकता की पूर्ति हो सके। मैं सुजानगढ़ तथा कलकत्ता जब भी आऊंगा उस समय इस विषय पर आप से विस्तृत चर्चा करूंगा। आशा है आप सपरिवार सानन्द होंगे।

सधन्यवाद।

सद्भावी
बी० डी० कल्ला

नोट राज्य सरकार ने बीकानेर में कृ... की स्थापना के सुझाव ... का ... करने का निर्णय ...

प्रो० बी० डी० कल्ला
शिक्षा सार्वजनिक निर्माण एव
जन सम्पर्क मत्री

जयपुर राजस्थान

दिनाक २७ १२ ८८

अ० शा० पत्राक ६८९९/शि० म०/८८

परम सम्माननीय श्री कन्हैयालालजी सठिया साहब

आपके पत्र दिनाक १५ दिसम्बर १९८८ के साथ सोनादेवी सठिया कन्या महाविद्यालय, सुजानगढ की प्राचार्या का मूल पत्र प्राप्त हुआ जिसमे उन्होने विद्यालय को दिये जाने वाले अनुदान को बढाने के बारे मे लिखा है। इस प्रकरण पर यथोचित परीक्षण तथा समुचित कार्यवाही हेतु शिक्षा विभाग के सम्बन्धित अधिकारी को प्रभावी निर्देश दे दिये है। आशा है आप स्वस्थ एव प्रसन्न होगे।

सादर

सदभावी
बी० डी० कल्ला

प्रो० बी० डी० कल्ला
शिक्षा सार्वजनिक निर्माण एव
जन सम्पर्क मंत्री

जयपुर राजस्थान

दिनाक २७ १२ ८८

अ० शा० पत्राक ६६१४ शि० म०/८८

परम सम्माननीय श्री कन्हैयालालजी सेठिया साहब

आपके पत्र १५ अक्टूबर १९८८ के साथ प्रधानाध्यापक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय छापर का मूल पत्र प्राप्त हुआ जिसमे विद्यालय भवन के मरम्मत के बारे मे लिखा गया था। इस प्रकरण पर आवश्यक कार्यवाही के लिये लोक निर्माण विभाग के सम्बन्धित अभियन्ता को प्रभावी निर्देश प्रेषित कर दिये गये हैं।

सादर।

भवनिष्ठ
बी० डी कल्ला

प्रो० बी० डी० कल्ला
शिक्षा एव सावजनिक निर्माण मत्री

अ० शा० पत्राक ६३६

जयपुर, राजस्थान

दिनाक १५ २ ८६

आदरजाग श्री कन्हैयालालजी सेठिया साहब

आपरो १ फरवरी ८६ को कागद मिल्या जिणरे साथे झूझणू रै जै० बी० शाह कन्या महा विद्यालय सू सम्बधित कागज मिल्या। इण महाविद्यालय (कालेज) के वास्ते अनुदान देवण वास्ते म्हारे विभाग रै सम्बधित अफसर ने आवश्यक प्रस्ताव तयार कर जल्दी कारवाही करण सारू निर्देश दे रयो हू।

आप रै आशीरवाद सू म्हारा स्वास्थ्य ठीक है। म्हारे सारू सवा लिखेंगे।

घणे मानस्यू

आपरो,
बी० डी० कल्ला

बुलाकीदास कल्ला
शिक्षा मंत्री

अ०शा०फा०स० ६९८/शि० म/८९

जयपुर
राजस्थान

दिनांक २० फरवरी १९८९

परम सम्मानीय श्री कन्हैयालालजी सेठिया साहब

आपका १६ जनवरी १९८९ का पत्र प्राप्त हुआ। कलकत्ता प्रवास के समय आपका दर्शनाभिलाषी था लेकिन पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में मेरे व्यस्त रहने के कारण आपसे सम्पर्क न हो सका।

राजस्थान में प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु सरकार द्वारा विस्तृत योजना बनाई जा रही है तथा आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं का शीघ्र निराकरण किया जा सकेगा। इंदिरा गांधी नहर के पानी से चूरू तथा नागौर जिलों को समुचित लाभ मिले इसके लिए सम्बन्धित मंत्री महोदय से वार्ता करूंगा।

प्रत्येक प्राथमिक शाला में एक अतिरिक्त अध्यापक छोटा सा पुस्तकालय बनाने के उपकरण खेल का सामान संगीत का सामान एवं सुविधाएं उपलब्ध करा रहा हूं।

१७ फरवरी १९८९ को सुजानगढ़ गया था वहां के निवासियों की मांग थी कि कन्या महाविद्यालय को स्नातकोत्तर स्तर का कर दिया जावे आपने भी पूर्व में पत्र लिखा था सो मैंने वहां घोषणा कर दी एवं इस सम्बन्ध में आवश्यक आदेश जारी कर इसे P G College बना रहा हूँ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे।

सादर

सदभावी,
बुलाकीदास कल्ला

Tel 3217 Office
3423 Residence
B J S RAMPURIA JAIN COLLEGE, BIKANER
(Arts, Com, Law & MBA)

Ravi Tikku
Principal

Ref **RC/Guard/** Dated 10 11 85

Respected Shri Sethia Sahib

Inspite of best attempts from me because of unforseen development I just could not manage to come to your place before returning to Bikaner Traffic jam and nonavailability of railway ticket just forced me postpone my visit of your place

It seems that your letter had a magical influence over Mrs Rampuria and they promised to help me—I mean our institution to best of the capacity We have sent an application to them as desired by them

Well meeting a person like you was a matter of treat for me I heard a lot about you but the exposition of your attitude towards Hindi at Shri Maanmalji s place was atreat for me

I met so many Hindi supporters who infact by championing the case of Hindi are creating more antogonists than supporters If *like you others also start treating Hindi as a SAMPARK ki* Bhasha the opposition of this Language will die its own death

I on the behalf of our college faculty invite you to visit our instiution to address our Students

I ll communicate to Shri Sethia Saab for what sincere efforts you have made for the institution who was never visited by you but only on request of Sethia Saab you are taking so much of pain

I wish you will continue to support the proposal submitted by Shri Kamal Singhji

With deep regards and Dipawali greetings

Yours very sincerely
Ravi Tikku

Tel 3217 Office
3423 Residence

B J S RAMPURIA JAIN COLLEGE, BIKANER
(Arts, Com, Law & MBA)

Ravi Tikku
Principal

Ref No RC Bld 1313 Dated 2 2 1986

Respected Sethia Saab

Your letter in of January 27th in hand Thanking you very much for such a prompt acknowledgement

I received a letter from Maa Saab just a week back intimating me that about Rs one half lacs have been sent to us as their second instalment of donation but so far we have not received the amount I think it must be on the way Because of disturbed conditions in Punjab and Haryana there is a lot of disturbance in the mail

It was so nice of you to contact Shri Kamal Singhji on phone and I am surprised to note that inspite of nearly half a dozen letters for what reasons they were ignored by him

Any way I think your persuation may further galvanise him into further action I shall be writing you again to Shri Sethia and Shri Kankaria

The construction work is not going on due to lack of funds I wish the donation of Surendra babu is received by us at the earliest As already mentioned you in the previous letter I desire to get the block formally completed by the month of March

About another application to Shri Duggar Trust It shall be sent to you with in a few days of course a copy of it shall be sent to you for the further pursuation at your end

I do hope you are well

With respectful regards

Yours sincerely
Ravi Tikku

जुगराज सेठिया
समाज सेवक

बीकानेर
१८-११ ८५

आदरणीय श्री कन्हैयालालजी,

प्रिन्सिपल साहब कलकत्ता से लौट आये हैं। आपके सहयोग की बहुत सराहना करते थे। आपने महाविद्यालय के लिये जो कुछ भी किया, उसके लिये महाविद्यालय आपका उदार दृष्टिकोण, विद्यानुराग और अपनापन सदैव स्मरण रखेगा। आप सपरिवार सानन्द व स्वस्थ्य होंगे। मेरा स्वस्थ्य ठीक है।

राजस्थान-पत्रिका में छपे हुवे समाचार का कटिंग आपके अवलोकनार्थ गौरवान्वित हो कर भेज रहा हूँ।

मेरी तरफ से आपको शुभाशीष व मंगल कामना।

आपका अपना,
जुगराज सेठिया

(श्री सेठिया की प्रेरणा से रामपुरिया जैन कालेज बीकानेर का भवन निर्माण हुआ)

दामोदरदास आचार्य
शिक्षा राज्य मंत्री

जयपुर, राजस्थान

दिनांक २० जनवरी, १९८७

अ०शा०प०सं०/३८/SME/PS/87

प्रिय श्री सेठिया साहब

आपका पत्र दिनांक ६ जनवरी ८७ का चूरू बालिका महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित होने का प्राप्त हुआ, उसके लिये धन्यवाद।

मैं चूरू इस कार्यक्रम में अवश्य ही सम्मिलित होता लेकिन भारत सरकार के शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा शाही ६ व ७ फरवरी ८७ को जयपुर पधार रही हैं अतः इन दिनों मेरा जयपुर में रहना अत्यावश्यक हो गया है इसलिए उक्त कार्यक्रम में मैं सम्मिलित होने में असमर्थ हूँ।

इस कार्यक्रम की सफलता की कामना के साथ।

सर्वनिष्ठ
दामोदरदास आचार्य

सोनादेवी सेठिया कन्या महाविद्यालय

सुजानगढ-३३१५०७

जिला चूरू (राजस्थान)

क्रमांक　　　　　　　　　　　　　　　　दिनांक २३-२-१९८९

आदरणीय श्री सेठिया साहब,

सादर नमस्कार। आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे, यहाँ सब ठीक हैं।

गत १९ फरवरी को महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव हुआ इस अवसर पर श्री बी डी कल्ला, शिक्षा मन्त्री, मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम बहुत सुन्दर रहा। कालेज का हॉल खचाखच भरा था। छात्राओं का प्रस्तुतीकरण अत्यन्त सराहनीय था। आरम्भ मे मैंने अपनी ओर से जो बातें रखी उसमें इस महाविद्यालय के निर्माण व प्रगति में आपके योगदान का जिक्र किया तथा इसमें एम ए कक्षा खोलने व सरकारी अनुदान बढाने की बात रखी। कल्लाजी ने अपने वक्तव्य में आपके नाम का सन्दर्भ देते हुए कहा कि आपने भी इस महाविद्यालय के लिये मुझसे बात की थी। उसी के साथ उन्होंने कहा कि मैं इस कालेज की प्रगति से बहुत प्रभावित हूँ और घोषित किया कि जुलाई ८९ से यहा एम ए कक्षा चालू करने की स्वीकृति दे दी जायेगी तथा अनुदान बढाने के विषय में भी पूरा ध्यान रखा जायेगा। समाचार पत्रों मे इस कार्यक्रम की बहुत अच्छी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। आप ठीक समझें तो कल्लाजी को धन्यवाद प्रेषित कर दें। इस प्रकार आप इस कालेज की प्रगति में जिन बिन्दुओं की ओर बराबर लिखा करते हैं उनकी आंशिक पूर्ति शायद शीघ्र हो जावे।

चि जयप्रकाश, विनय व पौत्र-पौत्री को मेरी ओर से आशीष। यहाँ के लायक कार्य लिखें।

आपका

खेमाराम शर्मा

शिक्षण सस्थाओं के सम्बन्ध में
सेठियाजी द्वारा प्रेषित
कतिपय महत्वपूर्ण पत्र

To

The Director of Education
Rajasthan, Bikaner

Sub Shifting of Basic S T C Training School, Churu to Sujangarh

Ref My letter no 257 dated 20 8.57

Sir

Being given to understand that the Basic S T C Training School at present situated at Churu is likely to be shifted to some other place where facilities of suitable accommodation etc may be available I beg to propose that the same be shifted to Sujangarh in view of the following facts

1 That Sujangarh is one of the biggest towns of Churu District with a population of nearly 40000 It provides all amenities of life in abundance namely specious buildings uptodate means of communication and electricity etc

2 That it is a good centre of education catering to the needs of the children from pre primary stage to Higher Secondary stage At present there are 2 pre primary schools 10 primary schools 1 Middle School and 1 Higher Secondary School in addition to 3 schools for girls These schools can very well serve as the Practising schools for the proposed Training School

3 That a building to accommodate the proposed institution suitably may be procured here In this connection the following suggestions are humbly laid down for your consideration -

That a Govt building which was formerly used as the Customs Check Post by Jodhpur State prior to the integration of Rajasthan is lying quite unoccupied and can, therefore be procured for this purpose without much difficulty It is a

large building situated on the outskirts of this town with sufficient open space and agricultural fields on all sides consequently no difficulty for the play grounds and the agricultural field which is also an urgent necessity for a Basic Training School With certain additions and alterations having been made according to the needs of the institution it can prove a suitable building at a very good site

In case this building is not considered fit for this purpose another suitable building for the institution as well as for the Boarding House can be arranged on reasonable rent

Keeping these facts of suitability in view I hope you will kindly agree to our humble suggestion and issue orders for the shifting of the said institution from Churu to Sujangarh

An early reply is requested

Yours faithfully
Kanhaiyalal Sethia

Sujangarh (Churu)
Dated 8th May 1958

The Director,
Primary and Secondary Education,
Rajasthan, Bikaner

(Through Inspector of Schools Churu Dist Churu)

Sub Starting of a new Higher Secondary School (Science) at Sujangarh

Ref Govt sanction vide Secretary's (Education) Order No F 9(32) Edu/C/60 dated the 23rd August, 1960

Sir

I have the honour to bring to your kind notice that the building for the proposed Shri Raghunathrai Govt Higher Secondary School Sujangarh for which the sanction of the Govt has already been obtained is in progress according to the plan approved by the Education Department It is hoped that the ground floor of the said building will be completed before the schools reopen after the current summer vacation All construction work will be ready by July 1961 except cement plastering which depends upon the cement supply to be made through the Collector, Churu

It will therefore be not untimely to request you kindly to make all preliminary arrangements to start the school from 1st July 1961 so that the students willing to offer Science Course in class IX may be able to avail of this opportunity from the new session It was reliably learnt that science apparatus worth Rs 10 000/- was purchased for this school during the past budgetary year through the Inspector of Schools Churu The same may now kindly be transferred to this place in order to

make the start convenient Leaving all these technical formalities upon your goodself sir I request you to issue orders for the starting of the said school from July 1961

Hope to be favoured with a copy of the orders issued in this connection Thanking you

Sujangarh
Dated 30th May 1961

Yours faithfully
Kanhaiyalal Sethia

Copy forwarded to

1 The Director
Primary and Secondary Education
Rajasthan Bikaner

KANHAIYALAL SETHIA

Ratan Niwas
Sujangarh
Gandhi Jayanti (1962)

Respected Sukhadiajee Saheb

With due regards I recall of your kind visit here during November 1961 for inaugurating the Jajodia Higher Secondary School and further wish to remind about your expressing a desire to have a Girl s Hostel in this town

The local Gandhi Balika Vidyalaya an efficiently managed girl s high school catering an useful service in the cause of education to girls and women with manifold activities in this direction has undertaken plans to put up a girl s hostel and have applied for contributory grant under the Centeral Scheme of Financial Assistance to Voluntary Organisations in the field of Education to Girls and Women through the Education Secretary Government of Rajasthan I wish you would kindly accord your blessings for the project by helping the institution in availing this grant

With kindest regards I remain

Yours Sincerely

Kanhaiyalal Sethia

सस्कृति खण्ड

देश की सास्कृति गतिविधियो के राष्ट्रीय मूल्य स्थापित करने वाली प्रेरणा पक्तियों की परिणति एव सम्बन्धित विषयो पर प्राप्त कतिपय पत्र तथा पत्राचार।

विशाल राजस्थान

श्री सत्यदेव विद्यालकार
प्रधान सम्पादक

४०ए हनुमान रोड
नई दिल्ली

दिनाक १३ ७-१९४८

प्रिय श्री सेठियाजी,

सस्नेह वन्दे। आपका कृपापूर्ण पत्र मिला। कृतज्ञ हू। मेरे लिये पत्र म 'श्रद्धेय' 'सादर' तथा 'अभिनन्दन' आदि शब्दो का प्रयोग न करें। मैं आप का का एक साथी ही हू। आपका लेख आपका पत्र मिलने से पहिले ही मैंने बीकानेर के 'लोकमत' म पढ लिया था। यहा 'अमर भारत' कार्यालय म वह अभी प्राप्त नहा हुआ। म सिफ तीन घटे के लिये ही कार्यालय म जाता हू। 'लोकमत' ढूढा तो वह भी मिला नही। लेख की एक प्रति भिजवा देने की कृपा करेंगे।

आपने कितनी पुरानी स्मृति को नया किया—इसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हू। अमर भारत के लेखो को आपने सराहा, इसके लिये मे आपका आभारी हू। कुछ लेखो की कतरनें जयपुर से बिडलाजी को और बिडलाजी (जुगलकिशोरजी) से गोस्वामी गणेशदासजी महाराज को भेजी गई हैं। पत्रकारिता भी एक धधा बन गया है। इसी लिये मेरा तो दिल ही उधर से उखड गया है। पर, फिर भी कुछ तो करना ही है।

'विशाल राजस्थान' के निर्माण के स्वप्न का मूर्त रूप भूगोल म तो मिल गया, किन्तु साहित्य मे भी उसकी आकृति खीची जानी चाहिये। इसी विचार से एक योजना हाथ मैं ली है। इसे जरा ध्यान से देख कर अपनी सम्मति से अवगत करने की कृपा करें। इसी कार्य के लिये मुझे तीन मास राजस्थान मे फिरना हैं। तब आपके दर्शन आप के नगर मे रतन निवास मे होगे और तब आशा है कुछ रतन भी हाथ लगेंगे।

बस कृपा और स्नेह का आकाक्षी।

[illegible]

No 24/6/60 Pub II

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

From

Shri A D Samant IAS
Under Secretary to the Govt of India

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
Sujangarh

New Delhi
Dated 17th August *1960*
26 Sravana 1882

Sub **National Anthem—Recomposition of—Suggestion regarding**

Sir

I am directed to acknowledge the receipt of your letter dated the 18th July 1960 on the subject mentioned above

Yours faithfully
A D Samant
Under Secretary to the Govt of India

सीताराम सेकसरिया
समाज सेवक

फा ४४-५०२१
१६, लाड सिंहा रोड,
कलकत्ता १६

प्रिय भाई कन्हैयालालजी,

बीतायुग नई याद की दो प्रतियां और हिंदी भवन याजना का प्रारूप की दो प्रतियाँ भेज रहा हूँ। स्मृति कण अभी मेरे पास नहा है। प्राप्त करके फिर भेजूगा।

श्री राधाकृष्णजी का पता मुझे मालूम नहीं है दो हजार रुपये उनको आज ही भेजने की व्यवस्था कर रहा हूँ। पता आप लिख दीजियेगा। उनका पत्र भी आप दे दीजियेगा। एक हजार रुपये भाई भागीरथजी से लिए हैं पाँच सौ श्री शाति स्वरूप गुप्त से लेने की बात की है और पाच मौ मेरे है। इस प्रकार दो हजार रुपये की व्यवस्था की है।

हिंदी भवन याजना का प्रारूप सात वर्ष पहले की कल्पना पर तयार किया था इसमें परिवर्तन ता चाहे जैसा किया जा सकता है। हमारे शुद्ध खादी भण्डार के व्यवस्थापक श्री शिव भगवान बोहरा आपसे मिल रहे हैं। उनसे बातचीत करके आपको खुशी होगी। आप किसी समय मुझे बुलालें तो मैं आ जाऊगा। आप बाहर जाए तब मुझसे मिल तो पत्र द्वारा व्यवस्था करलें क्योंकि आप आवें और म न मिलू तो दुख होता है।

आपका,
सीताराम सेकसरिया

(हिंदीभवन योजना के सदर्भ मे—जिसका मूर्त रूप है भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता)

Dr V D ACHARYA
Dept of History

बागला स्कूल, चूरू
दिनांक २२ ६ ७२

परम् श्रद्धेय श्रीमान् सेठिया साहब !

क्या कहकर सम्बोधन करूँ सत मुनि चितक विचारक सहिष्णुता समरसताका मूर्ति, कविप्रेरक ?

कुछ क्षणा क सम्पक ने जब स्वामीजी महाराज श्री शिवानदजी के हृदय को स्पश मात्र से अपना बना लिया साधारण लौकिक व्यक्ति का आपके व्यक्तित्व से प्रभावित हाना कोई आश्चय की बात नही है। आपका पत्र उन्हें पढाया, आपक सुदर स्वास्थ्य के लिए श्रीस्वामी महाराज ने मगल-कामना की है। आपके उदार दष्टिकाण से वे अत्यत प्रभावित हुए है।

गौ सवधन समारोह उल्लास स मनाया हागा। स्वास्थ्य का पूण ध्यान रखें। भाई श्रीजयप्रकाशजी स भी मेर नमस्ते कहें। अत्यत हा विनम्र एव श्रवण की सी पित भक्ति वाले पुत्र को पाकर आप गौरवान्वित हागे और साथ ही आप जसा पिता मिलना श्री जयप्रकाशजा के लिए सौभाग्य की बात है। आपक शालीन परिवार को मेरा शुभ प्रणाम।

श्रीमान् सेठिया साहब वडा सकोच आता है आप जस महान पुरुषा को कुछ भा लिखने समय। यह पत्रभा न जाने कितनी अशुद्धिया का लिए हागा ? परन्तु व्यक्तिगत सम्पक के कारण ही लिखने का साहस कर पाया हू। यह आपकी प्रेरणा है दखता हू इस निभाने म म कहा तक समथ रहता हूँ।

भाई श्रीगाविन्दजा अग्रवाल और मैं मुनिश्री स मिले थे। इस सबध की जानकारी वो ही देंगे। इस समय श्री विद्याधरजी शास्त्री और चूरू के एक सज्जन श्री पारखजीमी उसी प्रयास हेतु यहाँ आए हुए है।

फिर कब दशन लाभ हागा ? कृपा कर लिखें।
सभी तरह की मगल कामना करता हुआ।

भवनिष्ठ
विष्णुदत्त आचाय

(आचाय श्री तुलसीजी कृत अग्नि परीक्षा' के कारण बने अशात वातावरण म शाति प्रयास के सन्दभ म)

गोविन्द अग्रवाल चूरू
साहित्यकार दिनाक २२ ८-१६७२

आदरणीय बधु,

सादर वन्दे। पत्र आपका मिला। उत्तर म विलम्ब सकारण हुआ है। श्री भागीरथ प्रसाद मरदा को आपका पत्र पढा दिया था। आपका पत्र मैंने आचाय विष्णुदत्तजी को भी पढा दिया था। फिर वे आपके पत्र को स्वामी श्रा शिवानन्दजी को पढ ने के लिए दादू भवन ले गये थे—महाराज ने पत्र पढकर वहुत हप व सताप प्रकट किया ऐसा वे कह रहे थे। वही प्रदीपजी आदि महानुभाव भी थे।

पत्र इससे पूव मने दिया थे। सो आपका मिला हागा? आशा है आप पूणतया स्वस्थ ह। दो दिन से श्री विद्याधरजी शास्त्री बीकानेर स आये है। जन मानस म समरसता पैदा करने के दृष्टिकाण से श्री गवतमलजी पारख दिसावर स आये हुए हैं। उन्ही के प्रयत्न स श्री विद्याधरजी भी चूरू आये है। वे अपनी और स प्रयत्न कर रहे है, ईश्वर सफलता प्रदान करे ऐसी कामना है।

श्री सुबोधजी सभवत मगलवार का बम्बई से कलकत्ता चले गये है और १५ २० दिन वहा रुकेंगे। आपतो सभवत अभी ठहर कर कलकत्ता जाएगे। श्री जयप्रकाश एव श्री धनराजजी सिंघवी से नमस्कार कहें। श्री इन्द्र कुमार कठौतिया सुजानगढ ही हैं या बाहर गये हुए हैं?

निकट भविष्य म चूरू आने का काई कायक्रम हा तो सूचित करें।

आपका
गोबिन्द अग्रवाल

(आचाय तुलसीजी रचित 'अग्नि परीक्षा के बारे म उठे विवाद के सम्बन्ध म श्री सेठिया द्वारा किये गये शाति प्रयास के सन्दभ म प्राप्त पत्र)

गोविन्द अग्रवाल
साहित्यकार

लोक संस्कृति शोध संस्थान
नगर श्री, चूरू
चूरू (राजस्थान)

पत्रांक ३६८५/७२

दिनांक १८ १० ७२

आदरणीय बन्धु,

सादर वन्दे। पत्र १ आपका कल तथा P C एक आज मिला। आशा है आप पूर्णतया स्वस्थ्य व सानंद हैं। आपने चि प्रेम प्रकाश के लिए बम्बई लिखा है सो जानकर प्रसन्नता हुई, ईश्वर ने चाहा तो प्रयत्न सफल होंगे।

श्री तहसीलदार साहब सुजानगढ़ के नाम प्रार्थनापत्र दे दिया है जिसकी प्रतिलिपि इस पत्र के साथ आपको भिजवा रहा हूं। सामग्री जितनी जल्दी उपलब्ध हो सके उतना ही श्रेयस्कर है। नथमलजी के मुकद्मे के फैसले की Certificate Copy प्राप्त हो सके तो अतीव सुन्दर है क्योंकि इस संदर्भ में कुछ विवाद उठा दिया गया है। श्री बनवारीलाल वर्दी वाली घटना का पता मुझे यहां श्री भागीरथजी मंडवा से लग गया था। किन्तु इस विषय में हम सभी असमर्थ हैं।

आप द्वारा प्रेषित रिपोर्ट व भाषण की प्रतिलिपियां प्राप्त हो गई। आप अन्य सामग्री भी भिजवा रहे हैं सो ठीक है। संगीतज्ञों एवं कलाकारों की सूची आप भेज रहे हैं सो ज्ञात हुआ। श्री जीवणराम शर्मा के पास मैंने चि राजू को जिलाधीश कार्यालय भेजा था। लेकिन वे आज छुट्टी पर हैं सो मिले नहीं हैं। कल फिर भेजूंगा और उन्हें ताकीद करवा दूंगा।

कल श्री भागीरथप्रसादजी कानोडिया व श्री नन्दलाल भुवालका चूरू आये थे। भागीरथजी ने मुझे बुलाया था और कल लगभग सारा दिन उन्हीं के पास बीता। रात को श्री भागीरथप्रसादजी मन्डा के साथ मैं उनसे मिलने फिर गया था। वे भी उसी मकान में ठहरे थे जिसमें आप ठहरा करते हैं। कल दिन

और रात के विचार विमर्श के बाद आज सुबह नगरश्री मे एक मीटिंग रखी गई थी। मीटिंग मे श्री कानोडियाजी व भुवालकाजी के अतिरिक्त दोनो तरफ के काफी लोग थे और सब सम्मति से यह तय हुआ कि सदभावना पूर्ण वातावरण बनाने की दिशा मे झटपट प्रयत्न होना चाहिए। दोनो तरफ के लोगो मे किसी प्रकार का भेदभाव नही दिखलाई दिया। आपने सूत्र रूप मे जिस कार्य का श्रीगणेश किया था वह सफल हुआ और इस दिशा मे निरन्तर प्रगति हो यही कामना है। मीटिंग मे श्री विजय सिंह सुराना प्रताप सिंह बद मानसिंह बैद सोहनलाल हिरावत अन्य कई लोग उपस्थित थे। उधर से भी भागीरथजी मडदा, सागरमलजी वद्य सूरजमनजी जोशी, प्रदीपजी ममूरजी आचार्यजी व अन्य कई खास खास आदमी थे। बाजार के प्रतिष्ठित व्यापार भाई भी थे। नवरतनजी भी थे। बहुत अच्छा वातावरण रहा। सस्था के कार्य एव सग्रहालय आदि को देखकर श्री कानोडियाजी व भुवालकाजी ने बडी प्रसन्नता प्रकट की।

भाई जयप्रकाशजी से यथा योग्य श्री अभय सिंह सुराना का उनका ओरिजनल पत्र दिखला दिया था और उन्हें याद आ गया कि वस्तुत १० ही किताबें ली गई थी खैर। अब इस प्रसग का यही समाप्त करता हू।

पत्रोत्तर दिरावें। स्नेह बनाये रहें।

आपका,
गोविन्द अग्रवाल

(चूरू जिले के स्वतत्रता सग्राम सेनानियो के तथा कलाविदो के सम्मान के सदर्भ मे)

(आचार्य तुलसी जी की कृति 'अग्नि-परीक्षा' के सम्बन्ध मे उठे विवाद की दिशा मे सफल शान्ति प्रयास के सन्दर्भ मे)

उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी
अध्यक्ष

दूरभाष २३८४३
बलरामपुर क्वाटर्स
नाका हिंडोला
लखनऊ ४
रवीन्द्रपुरी, वाराणसी

पत्राक

दिनाक १६ १ १९७४

प्रिय सेठियाजी

आपका २८ दिसम्बर का कृपा पत्र मिला। श्री बिडलाजी निश्चय ही देश की विशिष्ट विभूतियो मे से हैं उनके सम्मान करना उचित ही है। यद्यपि मुझे सन्देह है कि वे स्वय इस प्रकार के किसी सम्मान के लिए राजी होगे या नही ? लेकिन हम लोगो को अपना कर्तव्य अवश्य करना चाहिए। इस दिनो मैं साहित्य अकादमी से किसी प्रकार सम्बद्ध नही हू लेकिन मैं आपके इस पत्र को श्री प्रभाकर माचवे जो साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी है उनके पास भेज रहा हू। वे इस पर विचार करेंगे।

आशा है कि स्वस्थ एव सानन्द हैं।

आपका,
हजारी प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास

मुकुन्द द्विवेदी
साहित्यकार

सी २-बी/५३ ए, जनकपुरी
नयी दिल्ली-११००५८
दिनांक २२-१२-१९८३

परम आदरणीय सेठियाजी

प्रणाम। आपके दानों पत्र यथा समय प्राप्त हुये। श्री जयलिया जी का भी पत्र मिला है। आपके स्नेहपूर्ण पत्र से उत्साह वर्धन हुआ। आदरणीय डा० सिंघवी जयपुर एक सप्ताह के लिये गये हैं २४ तक वापस आ जायेंगें। डा० विद्यानिवास मिश्रजी से मैंने व्याख्यान देने के लिये अनुरोध किया है— अभी तक उनकी स्वीकृति नहीं आई है। किसी ने कल मुझे सूचित किया कि सम्भवत वे आगरा में नहीं हैं। यदि एक दो दिना के भीतर उनका कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता तो डा० सिंघवी से परामर्श करके किसी अन्य वक्ता से अनुरोध करूंगा। इस कार्यक्रम मे दो प्रमुख वक्ता होगें।

आपसे निवेदन है कि आप प्रथम वक्ता के रुप में अपनी स्वीकृति प्रदान कर हमे गौरवान्वित करें। दूसरे वक्ता के सम्बन्ध में डा० सिंघवी से परामर्श करके मैं शीघ्र ही सूचित करूंगा।

श्री जयलियाजी को भी अलग से पत्र लिख रहा हूँ। "साहित्य का सत्य" विषय ठीक रहेगा। यदि लिखित रूप में मिल जाये तो आगे भी इसका उपयोग किया जा सकता है।

न्यास के अतिरिक्त एक दो संस्थाओं के सम्मिलित सहयोग से ही यह आयोजन ठीक रहेगा। श्री जैयलियाजी ने कुमार सभा पुस्तकालय एवं हनुमान मन्दिर ट्रस्ट के सहयोग से करने का लिखा है। यह ठीक रहेगा।

आशा है आपकी स्वीकृति हमे शीघ्र प्राप्त होगी।

सादर।

विनीत,
मुकुन्द द्विवेदी

बनारसी दास चतुर्वेदी
पत्रकार

दिनांक २५ १-१९७४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

वन्दे।
कृपा पत्र के लिये बहुत बहुत कृतज्ञ हूं।

श्रीमान घनश्याम दासजी बिड़ला ने अपने अनेक महत्वपूर्ण कार्यो द्वारा भारत के इतिहास म अपना शुभनाम अमर कर दिया है। साहित्य अकादमी द्वारा यदि उनका सम्मान किया भी जाय तो उसका कोई महत्व नही।

मैं साहित्य अकादमी की प्रबन्ध समिति का सदस्य ५ वर्ष रह चुका है। सरकार द्वारा २ nominated members उस पर थे—एक तो प्रो हुमायू कबीर दूसरा मैं–ओर म उस सस्था को निकट स जानता हू। निस्सन्देह उसने बहुत उपयोगी काय किया है। फिर भी सिलाना की सस्था के मुकाबले की चीज वह अभी तक नहा बन पाई।

श्री शुकदेव पाण्डे का आत्मचरित आपने पढ़ा होगा। मेरा भूमिका है।

श्रद्धेय बिढलाजी का सर्वोत्तम सम्मान यहा हो सकता है कि बगाल म मारवाडिया तथा हिन्दी भाषा भाषिया ने जो सेवा काय किये है उनका इतिहास तय्यार कराके उसे उन्हें अर्पित कर दिया जाय।

कलकत्ते म हिन्दीभवन का निर्माण भी मेरा पुराना स्वप्न है। उसमे भी श्रद्धेय बिडला जी स सहयाग लिया जा सकता है। शान्तिनिकेतन क हिन्दी भवन का निर्माण तो श्री सेक्सरिया जी तथा श्री कानोडियाजी ने करा दिया था।

यदि श्री बिडलाजी तथा कानोडियाजी दोनो का एक ही ग्रन्थ भेंट किया जाय तो कैसा हो?

आपकी नवीन कृतियों की प्रतीक्षा करुगा।

विनीत
बनारसीदास चतुर्वेदी

बनारसी दास चतुर्वेदी
पत्रकार

ज्ञानपुर जिला बनारस

सेवा मे–

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग क०
३, मैंगो लेन
कलकत्ता १

प्रिय श्री सेठियाजी

वन्दे।

आपका २८ १२ ७३ का कृपा पत्र कल ११ जनवरी को मिला। कृपया मेरा नया पता Gyanpur Dist Benaras नोट कर लीजिये।

मैं आपके प्रस्ताव से पूर्णतया सहमत हूँ। वस्तुत मैं इन दोनो सज्जनो का ऋणी हूँ। अभी हाल म मैंने बन्धुवर उदित मिश्रजी के बारे से एक लेख आज (बनारस) को भेजा है उसम श्रद्धेय बिड़लाजी की उदारता का उल्लेख भी किया है। आप एक पत्र श्री उदित मिश्र कुडी Dist Benaras को भी भेजें जो बिड़ला बन्धुओ के यहा वर्षो तक रह है।

एक काड भी गौरीशकर गुप्त गायघाट, बनारस को भेजकर श्री उदित मिश्र जी से बातचीत वाला लेख भी मगा लें।

मेरा एक सुझाव है कि इन दोनो महानुभावो (श्री घनश्यामदासजी तथा श्री भगीरथ भाई) के अभिनन्दन म राजस्थान अभिनन्दन ग्रन्थ ही निकाल दिया जाय।

मारवाडी समाज के अबतक के लोकोपकारी कार्यो का लेखा जोखा उसम दिया जा सकता है। उसम अग्रेजी खण्ड भी होना चाहिये। उस ग्रन्थ से वे गलतफहमिया दूर हो सकती है जो मारवाडी समाज के बारें मे फैली हुई हैं।

इस ग्रन्थ म दसवा हिस्सा १/१० भाग इस दोनो महानुभावो को अर्पित किया जा सकता है। साहित्य अकादमी के सम्मान का कोई विशेष महत्व नही। श्री सुनीति बाबू उसके प्रधान हैं जो हम लोगो के प्रति सदभावना नही रखते।

प्रभाकर माचवे
मंत्री

NATIONAL ACADEMY OF LETTERS

सा० अ० २५।१३२६४ — दिनांक फरवरी, १९७४

प्रिय सठियाजी,

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की मार्फत आपका २८ दिसम्बर १९७३ का कृपापत्र हमें हाल ही में प्राप्त हुआ जिसमें आपने यह इच्छा व्यक्त की है कि साहित्य अकादेमी द्वारा श्री बिड़ला के जन्म दिवस पर कोई विशेष आयोजन किया जाय।

इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि साहित्य अकादेमी ने अभी तक किसी भी व्यक्ति के जन्मदिन पर ऐसा कोई आयोजन नहीं किया है—और इस सम्बन्ध में अपवाद करना सम्भव प्रतीत नहीं होता। साहित्य अकादमी साहित्यकारों का दो ही प्रकार से सम्मान कर पाती है (१) उनकी किसी विशिष्ट कृति पर उन्हें पुरस्कार अर्पित करके और (२) उन्हें अपना महत्तर सदस्य निर्वाचित करके। यदि आप चाहते हैं कि श्री बिड़ला को साहित्य अकादमी का महत्तर सदस्य निर्वाचित किया जाय तो कृपया एक औपचारिक प्रस्ताव भेजें ताकि मैं उसे अपने कार्यकारी मण्डल के समक्ष रख सकूँ।

आशा है इस सम्बन्ध में आप हमारी असमर्थता पहचानने की कृपा करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ

आशा है अब आप पूर्ण स्वस्थ सानन्द हैं।

भवदीय
डा० प्रभाकर माचवे
मन्त्री

सत विनोवा भावे की ओर से

ब्रह्म विद्या मदिर
पवनार (वर्धा)
दिनाक २७-२ ७४

श्री कन्हैयालालजा

आपका बापू पुण्यतिथि के दिन लिखा पत्र विनोबाजी को देखने के लिये दिया था। विनाबाजी ने पढा। विनाबाजी ने कहा 'युधीपठीर युधीपृठीर थे, बाबा बाबा है। -इस वाक्य के अलावा अुन्हाने कुछ भी कहा नही।

बालकोबा का प्रणाम

(श्रा सेठिया के बाबा के सूक्ष्म म प्रवेश की सूचना पाकर किये गये प्रश्न- "युधिष्ठिर तो कुत्ते को साथ लिये बिना स्वग जाने को तैय्यार नही हुआ पर आप ने जनता को पीछे छोड कर सूक्ष्म म प्रवेश किया, क्या यह स्वाय नही है' का प्रत्युत्तर)

ईशावास्य इद सर्वम्

'मैत्री'
ब्रह्मविद्या मदिर
पवनार वर्धा
(महाराष्ट्र)

दिनाक २८ ५

सादर प्रणाम

आपका पत्र तथा प्रधानमत्री को भेजे गये आपके पत्र की प्रतिलिपि यथा समय प्राप्त हुई। पहुच दने म मैं देर कर रही हू। पूज्य बाबा को आपका पत्र तथा प्रतिलिपि दिखा दी है। उन्होने बडे गौर से पूरा का पूरा पढा।

मैं तो रामायण मले की कल्पना से बहुत ही प्रभावित हो गयी हू। जिन जिन देशो में रामायण पढी जाती है उसका सूची जब आपके पत्र म पढने को मिली तब बडा ही ताज्जुब हुआ। सत एक देश तक सीमित नही रहते उनके प्रभाव का क्षेत्र सीमातीत होता है यह बात कितनी सच है इस मले म यही दर्शन होगा।

आपका स्वास्थ्य शीघ्र पूर्ववत हो जाये यही भगवान के पास प्रार्थना। सितम्बर म आप यहा पधारेंगे, ऐसा मानती हू।

श्री बिडलाजी को आपके द्वारा जो पत्र भेजा गया था उनका प्रतिलिपि मैंने आपका सूचना के अनुसार श्रीमन्नजी के पास तभी भेज दी थी। वे दो चार दिन म यहा आनेवाले हैं तब उनसे पूछ लूगी।

सादर
कालिन्दी

ईशावास्य इद सर्वम्

'मैत्री'
ब्रह्मविद्या मदिर
पवनार, (जिला-वर्धा)
(महाराष्ट्र) फान २५१८

दिनाक १८ अप्रेल, १९७७

सादर प्रणाम

आपका तारीख १३/४ का पत्र कल मिला।–मेरे तथा कुसुम के लेख के लिये आपकी जो आशीर्वादवाचक भावना व्यक्त हुई वह हमारे लिए बलप्रद साबित होगी, इसम शक नही। कृतज्ञ हू।– वास्तव म हिंदी न मेरी मातृभाषा है, न स्कूल म उसकी पढाई हुई है। हिंदी प्रात म जन्मी इसलिए उस भाषा से सपर्क हुआ इतना ही। आप जसा के आशीर्वाद से ही बाबा के सौंप हुए इस काम को निभा सकती हू।

बहुत दिना म आपका पत्र मिला बीच म मैंने दो बार आपको पत्र भेजे थे, वह शायद ही आपको मिले होगे क्योकि उन दिना हमारी डाक बहुत बार ठीक तरह से पहुचती नही थी। पिछले साल, इस साल के रामजन्म दिन के लिए एक विशाल आतराष्ट्रीय मेले का आयोजन आप ने करने का विचार किया था, शायद देश की परिस्थिति के कारण वह बन नही पाया होगा। अगले साल कोई आयोजन होगा ?

हम सब खूब मजे मे हैं। पूज्य बाबा का स्वास्थ्य भी अच्छा है। आशा है आप स्वस्थ सानद होगे।

सादर
कालिन्दी

(प्रस्तावित विश्व रामायण मेला चित्रकूट के सन्दर्भ म प्राप्त पत्र)

सत विनोबा भावे की ओर से

ईशावास्य इद सवम्

"मैत्री '
ब्रह्मविद्या मन्दिर
पवनार जिला-वर्धा
(महाराष्ट्र)
दिनांक १७/४

सादर प्रणाम,

आपका पत्र तथा उसके साथ बिरलाजी का भेजे गये पत्र का प्रतिलिपि मिली। पहले तो स्वय मुझे ही पत्र पढ कर खूब जिज्ञासा उत्पन्न हुई की मेले का कायक्रम कितना सुदर हो सकता है। मैंने पूज्य बाबा को भी आपका पत्र दिखाया। उन्होंने बहुत गौर से वह पढा। बाद म इतना ही कहा कि लिखो कि बाबा को बहुत पसद है।' —बाबा तो ऐसे कायक्रमो का बहुत मानने वाले हैं आप जानते ही हैं। स्वय बिरलाजी का आर से सम्पर्क होगा तब बाबा अधिक भी कुछ कह सकते हैं। या, मैं तो यह सुझाऊगी कि अगर आपका स्वास्थ्य इजाजत देता हो तो कभी आप स्वय यात्रा से इस विषय पर बातें करने आ जाईयेगा। प्रत्यक्ष आने से बाबा निश्चित ही बातें करेंगे। धूपकाल तो अनुकूल नही है। यहा गरमी बहुत होती है और आश्रम म पन वगरह की खास सुविधा भी नही है। गरमी का मौसम खतम होने के बाद अगर आप एक बार पधारेंगे तो मेरा ख्याल है लाभदायी होगा।

आशा है अब स्वास्थ्य अच्छा होगा। आपको जो तकलीफ है उसके लिए तो अधिक श्रम अनुकूल नहीं होगा। मेले के कायक्रम का आयोजन का जिम्मा बहुत बडा है। ऐसे कामो म भगवान की मदद तो रहती ही है।

कालिन्दी के प्रणाम

(प्रस्तावित विश्व रामायण मेला चित्रकूट के सन्दभ म)

नजी सचिव
डा करणी सिंह

त ६४८

लालगढ
बीकानेर

दिनाक १३ ३ १९७४

श्रीमानजी

आपका पत्र दिनाक ५ ३ १९७५ का महाराजा श्री डा० करणी सिंहजी का प्राप्त हुआ।

स्वर्गीय श्री जयनारायनजी व्यास के व्यक्तित्व से कौन परिचित नहीं है ? निश्चय ही वे एक देशभक्त निष्ठावान नेता थे। उन की प्रतिमा दिल्ली म स्थापित करने के सबध म यदि राजस्थान के समस्त संस्था की सहायता का आवश्यकता है तो महाराजा साहब का पूरा सहयोग रहेगा। आप का प्रयत्न सराहनीय है।

महाराजा साहब आशा करते है कि आप पूर्ण स्वस्थ और आनन्दपूर्वक हैं।

भवदीय
Private Sec to
Dr Karni Singh

श्रीमान कन्हैयालालजी सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन कलकत्ता १

DR KARNI SINGH

Lallgarh Palace
Bikaner 334001
Dated 26 9 1984

My dear Shri Kanhaiyalalji Sethia

I was deeply touched by your gesture in sending me the little packet containing the soil of Haldigahti I have placed it in my drawing room and wish to thank you for your kind thoughts It is a lovely sentiment

With kindest regards

Yours sincerely
Dr Karni Singh
Bikaner

DR KARNI SINGH

No 9817

Lallgarh Palace
Bikaner 334 001
(Rajasthan)
Dated August 31 1987

My dear Sri Kanhaiyalal

Thank you very much for your letter dated 17th June which has come before me today on my return from England where I had gone on vacation

The idea of setting up a Committee to celebrate the 500th Anniversary of Bikaner State is indeed notable As suggested you may set up a Committee yourself with some suitable person as Chairman (other than myself as I do not take such responsibility now) and I am sure the Committee will achieve a lo

The Anup Sanskrit Library is open to public research and presently housed at Maharaja Ganga Singh Trust Lallgarh Palace Bikaner

Thank you for writing and with best wishes

Yours sincerely
Dr Karni Singh
of Bikaner

मोहनलाल सुखाडिया
राज्यपाल

राजभवन बेंगलोर

दिनांक २३ मार्च, १९७४

प्रिय कन्हैयालालजी,

आप का पत्र प्राप्त हुआ। आप ने जो कुछ लिखा है, उस भावना से मैं पूर्णतया सहमत हूँ। मेरा विश्वास है कि भाई हरिदेवजी भी इस दृष्टिकोण से सहमत होंगे। राजस्थान भवन के निर्माण के बारे में राजस्थान की आर्थिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये वे कितना कर पायेंगे, यह तो मेरे लिये कहना मुश्किल है लेकिन आप उन से अवश्य मिल लें और मैं भी उन को इस सम्बन्ध में पत्र लिख रहा हूँ।

आपका
मोहनलाल सुखाडिया

कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

मोहनलाल सुखाडिया
रा-यपाल

राजभवन बगलौर
दिनाक १७ अप्रैल, १९७४

प्रिय कन्हैयालालजी

आपका पत्र प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध म अभी जब मैं दिल्ली गया था तब व्यक्तिगत तौर स श्री हरिदेवजी से मेरी बात हुई और उन्होंने मुझे स कहा कि वे कुछ करने का प्रयत्न करेंगे। जहाँ तक मेरा सवाल है मेरी तरफ से इस बारे म पूरा सहयोग है।

आपका
मोहनलाल सुखाडिया

(प्रस्तावित राजस्थान भवन कलकत्ता के सन्दर्भ म)

हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री

राजस्थान जयपुर
दिनाक १३ जून १९७४

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका पत्र दिनाक ३० ५ ७४ बाबत कलकत्ता म राजस्थान भवन निर्माण के लिए अनुदान का प्राप्त हुआ। यह तो आप जानते ही है कि राजस्थान सरकार वित्तिय सकट से गुजर रहा है और ऐसी हालत मे अभी राजस्थान सरकार द्वारा कुछ कर सकना मुझे सम्भव नही लगता।

सधन्यवाद।

आपका
हरिदेव जोशी

हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री,

राजस्थान जयपुर

दिनांक जून, १९७६

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

मुझे आपका पत्र दिनांक १२ ६ ७६ प्राप्त हुआ आपने जो सदभावनाएँ व्याक्त की हैं उनके लिये मैं आभारी हूँ।

हल्दीघाटी हमार राष्ट्रीय सम्मान एव गौरव का प्रतीक है और राज्य सरकार इसके समुचित विकास के लिये अत्यन्त प्रयत्नशील रहेगी।

आशा है हल्दीघाटी चतुशदि समारोह के अवसर पर आप भी पधारेंगें और मिलना हो सकेगा।

धन्यवाद सहित,

आपका,
हरिदेव जोशी

कन्हैयालाल सेठिया
कलकत्ता

MEMBER OF PARLIAMENT
(RAJYA SABHA)

L. K. CHUNDAWAT

228 North Avenue
New Delhi 1
Phone 385913

Dated 10th March

Dear Sethiaji

I am thankful to you for your letter regarding installing a statue of Shri Jai Narain Vyas in Delhi and issuing a special stamp of Prithviraj Rathore

Both the suggestions are very good and I will certainly look into it at appropriate time

With regards

Yours sincerely
L K Chundawat

MARUTI LTD

Regd Office Palam Gurgaon Road Gurgaon (Haryana)

S M REGE
Secretary to Sanjaya Gandhi

Phone Delhi 392626 29
(4 Lines)
Gurgaon 846
(2 Lines)

Dated February 28 1976

Dear Shri Sethia

This is to acknowledge with thanks your letter of 20th February 1976 to Mr Gandhi He very much appreciates the suggestions made by you and has taken note of the same

With regards

Yours sincerely
S M Rege
Secretary

(प्रस्तावित विश्व रामायण मेला चित्रकूट के सन्दर्भ में श्री संजय गांधी को लिखे गये पत्र का प्रत्युत्तर)

प्रो० बाबूलाल गर्ग
(महामंत्री)

अखिल भारतीय रामायण
मेला कार्यालय
चित्रकूटधाम

दिनांक १५ ३ १९८६

आदरणीय श्री सेठियाजी

सादर नमस्कार। रामायण मेला में यद्यपि आप किसी भी वर्ष उपस्थित नहीं हो सके फिर भी कलकत्ता रह कर भी आपने जो योगदान दिया वह सराहनीय है।

एक महत्वपूर्ण बात। अपनी परिमित शक्ति एवं सीमित साधनों से हम लोग राष्ट्रीय स्तर पर रामायण मेले का जैसा आयोजन कर सके वह सब के सामने है। वैसे हमें सन्तोष है कि देश की प्रबुद्ध मनीषा ने इसकी प्रशंसा की है और रामकथा पर आधारित देश के समारोहों में इसे प्रमुखता दी है।

पर सकल्प विश्व रामायण मेला का है। एक बार यदि चित्रकूट में यह परिकल्पना भी साकार हो जाती तो देश एवं समाज के हित में महान् कार्य सम्पादित हो जाता। पर यह काम हमारे बूते का नहीं। इस पर तो आप जैसे समर्थ मनीषी ही कुछ कर सकते हैं। यदि देश की प्रधान मंत्री का आशीर्वाद मिल जाय तथा बिरलाजी जैसे सम्पन्न व्यक्तियों का हाथ लग जाय तो यह काम सहज रूप से सम्पन्न हो सकता है।

कृपया इस दिशा में आप सोचें और कुछ करें। शेष कुशल। आशा है स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपका अपना
बाबूलाल गर्ग

(रामायण मेला दर्शन चित्रकूटधाम की स्मारिका १९७७ में प्रकाशित पत्र व्यवहार)

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता
बाबूलाल गर्ग
प्राध्यापक एव पत्रकार

भारती भवन
करवी (चित्रकूटधाम) उ० प्र०
दिनाक ६-५ १६७६

श्रद्धेय श्री सेठियाजी

सादर नमस्कार। आपक दोना पत्र यथासमय मिले। श्री बिडलाजी को प्रेषित पत्र की प्रतिलिपि दखी। विश्वास दढ हो जाता है कि आप चित्रकूट म अवश्य एक दिन विश्व रामायण मला सम्पन्न करा देंगे। बिरला जैसे श्रीमत यदि थाडा भी रुचि ल ले इस दिशा म ता उक्त समारोह का हा जाना कौन कठिन है? आपकी सूझ तथा पहल सवथा सराहनीय एव अभिनन्दनीय है। प्रधानमत्री का यदि सकेत भी हा जाय ता सब काम सहज म ही हल हो जाय। बिरला जी को प्रेषित अपने पत्र म आपने जा सुझाव एव रूप रेखा प्रस्तुत की है उससे आप के मौलिक चिन्तन एव व्यावहारिक दशन का साफ पता लग जाता है। विश्व रामायण मेला की रूप रेखा यही होनी चाहिए जसा आपने खीची है। इसी के आधार पर मैं भी इधर अपनी काय पद्धति को स्थिर कर रहा हूँ। विश्व रामायण मले के लिए यदि १ लाख रुपये की भी धन राशि प्राप्त हो जाय तो काम चल जायगा। हम लोग प्रति वष लगभग ३० हजार रुपये व्यय करते है और इस स्तर तक पहुँच पाये हैं। एक लाख रुपये सग्रहीत कर लेना कठिन नही है। मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश सरकारा स ही पर्याप्त सहायता मिल सकती है यदि प्रधानमत्री का सकेत विश्व रामायण मेला के लिए हा जाय। केन्द्रीय सरकार भी अनुदान दे सकती है। कुछ रुपये देश के धनीमानी व्यक्ति भी दे सकते हैं जब आप जसे समथ तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति इस याजना म आगे आ जायेंगे। मेरा अपना अनुभव है कि सभी काय अथ (धन) पर ही आधारित है यदि अपनी 'अथ' की स्थिति ठीक है तो उस से भी काम हाथ म लिया जा सकता है और उसे सफलता पूवक पूरा किया जा सकता है। मेरा तो यह भी मत है कि सरकार स यदि कोई सहायता न भी मिले ता भी काम बन सकता है यदि ४ ६ ऐसे व्यक्ति आगे आ जाये जा इस काय मे रुचि रखते हा। भोजन मागव्यय विद्वाना का सास्कृतिक कायक्रम प्रकाशन आदि कुछ बडे व्यय होते हैं। हम नही चाहते कि लोग हमे चन्दा दें हम चाहते हैं एक एक व्यय की मद

लाग अपने हाथ म ल आर अपने आदमी भेजकर स्वय सम्पन्न कर दें। काम बन जाय। देश म ऐसे ४ ५ अथ पतिया का मिलना कठिन नही है यदि उन्हें हमारे कामा तथा इरादे की पवित्रता पर विश्वास हो जाय। आपने बडा अच्छी शुरुआत की है। भगवान इस म सफलता दे यही कामना है। पत्र दे कर आश्वस्त करते रहें। धमयुग का प्रति भजता हू जिसम मल था वत्त छपा है। पथक रजिस्ट्री द्वारा।

विनीत
बाबूलाल गग

रावूलाल गर्ग
राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता
प्राध्यापक एव पत्रकार

भारती भवन
करवी (चित्रकूटधाम) उ० प्र०
दिनाक १४ ८ ७६

श्रद्धेय श्री सेठियाजी

सादर नमस्कार। २ ८ ७६ का कृपा पत्र मिला साथ म माननीया प्रधानमत्रीजी का प्रेषित पत्र की प्रतिलिपि भी। अनेकानेक धन्यवाद।

विश्व रामायण मेला हेतु आप निस्सदेह एक ऐतिहासिक भूमिका अदा कर रहे हैं। बधाई, साधुवाद। आप प्रभावशाली अतएव समथ व्यक्ति ह विश्वास है कि आपका प्रयास एक दिन अवश्य प्रतिफलित होगा यदि प्रधानमत्रीजी का सकेत तथा श्री बिरलाजी की सहमति हो जाय तो फिर विश्व मेला होने म कोई सन्देह नही। भगवान श्रीराम आपके प्रयासो को शक्ति दें।

१७ मई वाला पत्र भी मुझे यथासमय मिल गया था। पत्रोत्तर अवश्य गया होगा क्योकि पत्रो के उत्तर भेजने म म बहुत ही सतक रहता हूँ फिर आपके पत्र तो इतने महत्वपूण होते है कि उनक प्रति किसी प्रकार की उपेक्षा सह्य नही। फिर भी किसी कारण से यदि पत्र न पहुचा हो तो अन्यथा न लगे। क्षमा करेंगे।

१ अगस्त १९७६ के धमयुग के पृष्ठ २४ पर सास्कृतिक समाचार क अतगत हल्दीघाटी के चार सौवी जयन्ती के सन्दभ म एक चित्र प्रकाशित हुआ है। उसम आपका नामोल्लेख है तथा आपकी राजस्थानी कविता 'पातल और पीथल' के आधार पर जब याद करू हल्दीघाटी के भावाभिनय के मचन की चर्चा है। पढ कर प्रसन्नता हुई। गव का भी अनुभव हुआ। इसके लिए भी कृपया मेरी बधाइया स्वीकार करें।

प्रधानमत्रीजी तथा बिरलाजी क साथ हुए आपक पत्राचार का प्रकाशन करने की सोच रहा हूँ। विगत वष क मेले की स्मारिका छपाने की तयारी कर रहा हूँ। सम्भव हुआ तो उसम भी दूगा।

शेष कृपाभाव। समय निकाल कर दीपावली पर चित्रकूट पधारने की कृपा अवश्य की जाय। आपके दशन हो जायेंगे।

सस्नेह आपका
बाबूलाल गग

बाबूलाल गर्ग
एम० ए०
राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त प्राध्यापक एवं पत्रकार

भारती भवन
कर्वी २१०२०५ (चित्रकूट धाम) उत्तर प्रदेश

दिनांक २४ मई १६७८

श्रद्धेय श्री मठियाजी

सादर नमस्कार। इस बार बहुत दिनों बाद आपको लिख रहा हूँ। लोहियाजी के तथा कथित चेलों की घुसपैठ तथा अगुआई में इस वर्ष मेला जिस वातावरण तथा जिस माहौल में सम्पन्न हुआ उसका आभास आपको पत्र पत्रिकाओं से चल गया होगा। मैं सोचता था कि सरकार में लोहियावादी आ गये हैं इनके कारण अब मेला उस ऊंचाई तक पहुंच जायगा जिसकी कल्पना उस महापुरुष ने की थी। इसलिए मैंने सहयोग के लिए सम्पर्क किया। किन्तु मुझे यह पता न था कि ये लोग इतने असांस्कृतिक उच्छृंखल तथा स्वार्थलिप्सु होंगे कि राम रामायण तथा स्वयं लोहियाजी की अन्तश्चेतना के साथ ही वंचना करेंगे। श्री राजनारायणजी तो केवल दो घण्टा के लिए ही प्रधान मंत्री के साथ चित्रकूट आये किन्तु अध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष के रूप में मेले के लिए जिनको मनोनयन कर उन्होंने भेजा उनका आचरण व्यवहार तथा कुरुचि देख कर सभी क्षुब्ध हुए। मेले की सांस्कृतिक चेतना से उनका कोई सम्बन्ध नहीं मंच के माध्यम से अपनी राजनीति और वह भी चुनावी राजनीति चमकाना ही मेले में घुसने का उनकी एकमात्र चाल है। चूंकि विगत आम चुनाव में वह जनता पार्टी के रूप में करवी निर्वाचन क्षेत्र से विधानसभा का चुनाव हार चुका है इसलिए वे चाहता है कि रामायण मेला की बढ़ी हुई लोकप्रियता का लाभ उठाया जाय और इस मंच के माध्यम से जनपदीय जनता तक अपनी धाक पहुंचाई जाय। स्वयं को मेले का एक मात्र स्वामी सिद्ध करने की दुरभिसंधि से पुराने कार्यकर्ताओं को तो पहले ही काट दिया पर कागजों से तो मैं नहीं कट पाया किन्तु उसका बराबर यही प्रयास तथा कुचेष्टा रही कि व्यवहार रूप में मेरा कोई अस्तित्व न रहे। इस अपनी कुयोजना को सफल बनाने के लिए उसने चुपके से अर्थ व्यवस्था हथिया ली और चुपके चुपके अपने आदमियों को घुसेड़ना शुरू किया। प्रेस रेडियो तथा अन्य प्रचारतंत्रों से पैसे के बल पर उन आदमियों को बुलाया जो मेरी जानकारी में न थे। देश के कोने कोने से लगभग ५०० युवा

जनता के उच्छृंखल तथा दायित्वहीन छोकडे-छोकरियों को बुला कर व्यवस्था में घुसेड दिया। ऐसे ही कुछ स्वार्थी जनपदीयों को भी साथ लिया जो हमारे विरोधी नही तो शुभ चिन्तक न थे। उसे यह पता न था कि रामायण मेला राजनीतिक मंच नही एक विशुद्ध सांस्कृतिक मञ्च है जिसके लिए बहुत ही गम्भीरता शालीनता तथा विनम्रता की आवश्यकता है। राम को ठगा नही जा सकता। तुलसी की वाणी को झुठलाया नही जा सकता राम ने स्पष्ट कहा है—निर्मल मन जन सो मोहि पावा मोहि कपट छल छिद्र न भावा। तुलसी ने कहा था—

> तुलसी निज कीरति चहैं पर कीरत को खोय
> तिनके मुह मसि लागि है मरे मिटहिं धोय।

विद्वानों पत्रकारों आदि का उसकी उग्र तथा गर्हित वृत्ति से अपमान हुआ उसकी गूंज तो सारे देश में फैली उससे उसके मुख में मसि अवश्य लगी—इसमें सन्देह नही। हां हरहाई के साथ कपिला का भी विनाश—इस कहावत के अनुसार मेला की विगत उपलब्धियों को भी बडा धक्का लगा-यह मैं बडे ही दुख के साथ अनुभव करता हूं।

अब उसकी योजना यह है कि चूंकि सत्ता प्रभुता तथा दलीय जनशक्ति उसके साथ है इस लिए सम्प्रति उसे पैसे की कभी नही हो सकता इसलिए चित्रकूट में रामायण मेला भवन बनवा कर उसी के धन से रामायण मेला के नाम से भारत का दौरा कर अपना राजनैतिक प्रभाव बढाया जाय तथा उसी में प्रच्छन्न रूप से उसके घटक के उसके निजी आदमियों का जमावडा रहे जो उसकी जनपदीय चुनावी राजनीति को सुदृढ करें। इसी उद्देश्य से वह एक स्मारिका भी निकालने जा रहा है। जिसके सम्पादक के रूप में अपने एक रिश्तेदार को रख दिया है। मुझे प्रधान सम्पादक बना कर पड आदि छपा लिये गये हैं। जब मुझे यह मालूम हुआ तो मैंने भी राजनारायणजी को लिख कर स्मारिका से पृथक रहने की घोषणा कर दी है। समाचार पत्रों में भी यह समाचार छप रहा है।

अब आगे स्थिति यह है कि बान्दा जनपद का भी अधिक जनता उसके कारनामों से नाराज हैं। सभी स्थानीय पत्रकार क्षुब्ध हैं। देश के कोने कोने में विद्वानों के भी पत्र मिल रहे हैं कि मेला को इन अवसरवादी राजनीतिज्ञों से मुक्त कर पुन मेले का सांस्कृतिक स्वरूप प्रतिष्ठित किया जाय। अब मेरे

सामने दो हा गस्ते है। या तो मैं मले से हट कर चुपचाप अपने घर बैठ जाऊ या फिर खुलकर इनसे सधष कर मला का पुन पूवरूप म चित्रकूट म सम्पन्न कराने का प्रयास करू। पहला विकल्प तो आसान है। पर दूसरा थाडा कठिन है। यह विद्वाना पत्रकारा तथा आप जसे समय शुभचितका आत्मीया एव रामसस्कृति के पक्षधर मनीषिया क सहयाग एव सम्बल की अपक्षा रखता है। स्थिति क्या माड लेती है? समय समय पर आपको सूचित करता रहूगा। इस सन्दभ म क्या किया जाय आपका माग दशन भी चाहता हूँ। देश के विद्वान पत्रकार कलाकार ता निश्चय मले की सास्कृतिक चतना का बनाए रखने के पक्ष म है अतएव उनका हर प्रकार का सहयोग मिलगा। प्रयास यदि किया जाय ता किसी घटक के राजनीतिज्ञा का भी सहयाग मिल सकता है। यदि आथिक स्रोतो पर भी सफलता मिल जाय ता अगले वष नवम्बर म ही पुन इन तथाकथित लोहियावादियो घुसपठिया का अलग कर एक बार पुन चित्रकूट मे सफलता के साथ मला किया जा सकता है? इसके लिए यदि कलकत्ता जसी सुदूर नगरिया की भी हम यात्रा करना पडे ता उस पर भी विचार किया जा सकता है। मैं शीघ्र श्री राजनारायणजी को चित्रकूट म घटी घटनाओ का विवरण भेजने वाला हू। आशा ता कम ही है कि नेताजी हमारी बात सुनेंगे क्योकि ऐसा पता चला है कि हमारी चिट्ठिया बीच म ही उडा ली जाती है। फिर भी वह पत्र मैं अखबारा म छपा दूगा। लोग ता पढ लगे। शेष फिर कभी। आप का स्वास्थ्य कसा है? पत्रोत्तर की प्रतीक्षा है। सादर आपका—

बाबूलाल गग
सयाजक रामायण मला

कमलापति त्रिपाठी
रेल मन्त्री, भारत

नई दिल्ली
दिनांक अप्रल २५ १९७६

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका १६ अप्रल, १९७६ का पत्र आर सलग्न श्री घनश्यामदासजी का सम्बोधित 'रामायण मेले' सबधी पत्र की प्रतिलिपि मिली। धन्यवाद।

आपका
कमलापति त्रिपाठी

घनश्यामदास बिरला
उद्योगपति

दिनांक ८ मई १९७६

प्रिय सेठियाजी,

आपका पत्र मिला। आपकी योजना तो अच्छी है। किन्तु इसकी सफलता सब लोगों के सहयोग से ही सम्भव है। जब मिलेंगे तब चर्चा करेंगे।

आपके पत्र के लिए धन्यवाद।

आपका
घनश्यामदास बिरला

नोट प्रस्तावित विश्व रामायण मेले के सबध म

घनश्यामदास बिरला
उद्योगपति

दिनाक १४ जून, १९७६

प्रिय सेठियाजी,

आपका पत्र मिला। बाबा से मिलने की मेरी कोई सम्भावना नहीं है। आप युवकों को लेकर आगे काम करिये। मेरी शुभकामनायें।

आशा है आप अच्छे होंगे।

आपका
घनश्यामदास बिरला

(प्रस्तावित विश्व रामायण मेले के सन्दर्भ में बिनोबाजी से मिलने के लिये दिये गये सुझाव का प्रत्युत्तर)

घनश्यामदास बिरला
उद्योगपति

दिनाक ५ अगस्त १९७६

प्रिय सेठियाजी,

आपका पत्र मिला। काम आगे चले इसकी सूचना दिजायेगा। आशा है आप अच्छे होंगे।

आपका
घनश्यामदास बिरला

(प्रस्तावित विश्व रामायण मेले के सन्दर्भ में–)

राजस्थान सरकार

सामान्य प्रशासन (१) विभाग

सख्या प ८(१३)मा प्रा/१/७३ जयपुर

दिनाक ३ जून, १६७६

श्री कन्हैयालालजी सेठिया,
सुजानगढ जिला चूरू

महोदय,

मुझे आपको यह लिखने का निर्देश हुआ है कि हल्दीघाटी युद्ध का ४०० वा वर्ष २१ जून, १६७६ से पूरे वर्षभर मनाने का राज्य सरकार ने निर्णय लिया है। २१ जून, १६७६ को समारोह हल्दीघाटी स्थल पर मनाया जाएगा जिसमे माननीया प्रधानमंत्री महोदया के आगमन की भी पूरी सम्भावना है। सुविख्यात ऐतिहासिक हल्दीघाटी स्थल से आपका बहुत लगाव रहा है अत राज्य सरकार २१ जून १६७६ को हल्दीघाटी स्थल पर आपको सम्मान के साथ विशेष रूप से आमंत्रित करती है। कृपया इस समारोह मे हल्दीघाटी स्थल पर अवश्य पधारने का कष्ट करें।

भवदीय,
ईश्वरचन्द्र श्रीवास्तव
उप शासन सचिव

रामेश्वरलाल टाटिया
भू पू सासद उद्योगपति

८ सीताराम मिल नि
डिलायल रोड
बम्बई ११

दिनाक ४ ६ १९७६

भाईजी सठियाजी

कल G D Birlaji स बात हुई उन्हें आपकी योजना पसन्द आयी। आपके बारे की सारी जानकारी मैंने दे दी थी।

B K Birla तथा सरनाजी स भी मरा बात हुई है। मरा बात G D स हुई शायद वे कलकत्ता आकर आपसे बात करेंगे।

Prime Minister का मजूरी मिल जायतो सारा काम सुचारु रूप स पार पड सकता है। P M आज कल इस प्रकार क आयोजना म जाती भी है।

आप दिल्ली के अपने सम्बधो क मारफत P M स approach करके काम को आगे बढावें। मैं १० १५ दिन यहा हू। बिडलाजी भी यहा है।

आपका,

रामेश्वरलाल टाटिया

(विश्व रामायण मेले के सन्दर्भ मे)

प० स० ७(२६) व्य० एव प०/५/७६

राजस्थान सरकार

व्यवस्था एव पद्धति विभाग

(ग्रुप ५)

आना

जयपुर,

दिनाक ७ जून १९७६

विषय हल्दीघाटी युद्ध १५७७ के ४०० वें वप मे होने वाले समारोहा के लिये कायक्रम निर्धारित करने एव उसके क्रियान्वयन की देखरेख हेतु राज्य स्तरीय समिति।

सन्दभ इस विभाग की आना सख्या सम दिनाक ६-५ १९७६

उपयुक्त ममिति मे निम्नलिखित व्यक्तिया को सदस्या के रूप मे मनोनीत करने की राज्यपाल स्वीकृति प्रदान करते हैं —

(१) श्री क हैयालाल सेठिया
(२) श्री वशीर अहमद मयूख
(३) डा० सत्य प्रकाग

आना से,

हर प्रसाद अग्रवाल

उप सचिव

प्रतिलिपि सूचना एव आवश्यक कायवाही हेतु निम्न को प्रेपित है —

(१) मामान्य प्रगामन विभाग (ग्रुप-१) को उनकी टीप मख्या एक ८(१३) जीए/२/७३ दिनाक ५-६ ७६ के सन्दभ मे आना की ६७ प्रतिया सहित (मदस्या के लिए)।
(२) व्यवस्था एव पद्धति (ग्रुप ७) विभाग का २ अतिरिक्त प्रतिया सहित।
(३) रक्षित पत्रावली।

एच० एन० दास

अनुभागाधिकारी

मीरवाणा ५ ६

भारत सरकार

शिक्षा विभाग — नई दिल्ली

स० ए ३५०१०/३५/७२ सी २(४) — दिनांक जुलाई १९७६

सेवा में
श्री कन्हैयालाल सेठिया
३ मैंगो लेन कलकत्ता १

विषय चित्रकूट धाम में रामायण मेला

महोदय

प्रधान मंत्री को लिखे गए आपके १७ मई १९७६ के पत्र का सन्दर्भ देने का मुझे निर्देश हुआ है जो कि विक्रम संवत् २०३४ में चित्रकूट धाम में अंतर्राष्ट्रीय रामायण मेला आयोजित करने के बारे में है।

२ इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि १९७१ में इंडोनेशिया में हुए प्रथम अंतर्राष्ट्रीय रामायण समारोह के क्रम में भारत में द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय रामायण समारोह आयोजित करने के प्रस्ताव पर भारत सरकार ने विस्तृत रूप से विचार किया तथापि विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के बाद अंत में तदनुसार केवल एक अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप की संगोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया था। एशिया में रामायण परम्परा पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी नई दिल्ली में ८ से १२ दिसम्बर, १९७५ तक आयोजित की गई थी जिसमें भारत के अलावा इन देशों के रामायण के अध्येताओं विशेषज्ञों ने भाग लिया आस्ट्रेलिया कम्बोडिया, मलेशिया बर्मा इंडोनेशिया श्रीलंका थाईलैंड, जापान सिंगापुर, अमेरीका ईरान मंगोलिया लाओस तथा नेदरलैण्ड्स।

३ यदि आप इस संगोष्ठी के विषय में कुछ और जानना चाहते हैं तो आप कृपया साहित्य अकादमी रवीन्द्रभवन नई दिल्ली के सचिव से पत्र व्यवहार कर सकते हैं जिन्होंने भारत सरकार की ओर से उसे आयोजित किया था।

४ उपरोक्त पैरा २ को देखते हुए आप इस बात से सहमत होंगे कि ऐसी स्थिति में भारत सरकार के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय रामायण समारोह आयोजित करना संभव नहीं है।

भवदीय,
एन० सिकदर
सहायक शिक्षा सलाहकार

प्रधान मंत्री सचिवालय

नई दिल्ली ११० ०११
दिनांक १ मार्च, १९७७

प्रिय महोदय,

प्रधान मंत्रीजी को आपका १८ फरवरी १९७७ का पत्र अनुलग्नक सहित प्राप्त हुआ धन्यवाद। इस सम्बन्ध मे मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि चूंकि पत्र लिखित विषय शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली से सम्बन्धित है अत यदि आप चाहें तो स्वयं इस मंत्रालय से पत्रव्योहार करने का कष्ट करें।

भवदीय
राज कृष्ण गायल
प्रधान मंत्रीजी के निजी सचिव

श्री कन्हैयालाल सेठिया,
सेठिया ट्रेडिंग क०,
३ मैंगा लेन
कलकत्ता-१

नोट चित्रकूट में विश्व रामायण मेला आयोजित करने के लिये दिये गये सुझाव के प्रत्युत्तर में प्राप्त पत्र।

JAIN VISHVA BHARATI Ladnun Rajasthan

दिनाक १५ ७ १९७७

श्री कन्हैयालाल सठिया
सठिया ट्रेडिंग कपनी
३ मैंगो लेन कलकत्ता १

प्रिय महोदय

सादर जयजिनेंद्र। यहा परम पूज्य आचाय प्रवर एव सव चारित्रात्माओ के परम सुखसाता है। वहा विराजित मुनिश्री राकेशकुमारजी ठाणा ४ स हमारी सभक्ति वदना मालूम कर साता पुछावें।

आपका दिनाक ६/७/७७ का पत्र मिला। आपका पत्र एव वदना भगवन को मालूम कर दी है।

'श्रमण सगीति' की आपकी योजना गुरुदव को अच्छा लगी। आप इस सबध मे बौद्ध देशा स भी सपक साध रहे हैं सो जाना। आशा है आपको सफलता मिलेगी।

इस सगीति का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कलकत्ता म करने का ध्यान है लिखा। गुरुदेव ने तो आशा है आपको जानकारी मिल ही गई होगी चातुर्मास क बाद यहा स पजाब म पधारने का फरमा दिया है। अत उनका आगामी चतुमास कलकत्ता म होने का कोई सभावना नहा है। चातुर्मास के लिये गगाशहर वासियो की अज भी लम्बे अर्से से जारी है।

सगीति का आयोजन यदि चडीगढ म करें तो सभव है आचाय दव माध्यम बन सक। आप इस पर चिंतन करावें। भारत सरकार व अय अन्तर्राष्ट्रीय सस्थाना का आवश्यक सहयोग तो चडीगढ म आयोजन रखने पर भी उपलब्ध होना चाहिये।

'सगीति' की पूरी योजना आप भिजवाए।

आशा है आप सानन्द होगे। इधर प्राय प्रति दिन वर्षा होने से मौसम सुहावनी है। गुरुदेव का चित्त प्रसन्न हैं। मौका निकालकर दशनाथ अवश्य पधारें। शेष शुभ।

भवदीय,
गोपीचद चोपडा
प्रशासक

आचार्य रजनीश

चितक   दिनाक १८।७।७७

प्रिय कन्हैयालालजी,

प्रेम।

आपका प्रीतिपूर्ण पत्र मिला।

और 'निग्रन्थ' की एक प्रति भी मिली थी। धन्यवाद। इसकी प्राप्ति सूचना आपको हमने भेजी थी। सभवत डाक की गडबडी से न मिल सकी हो।

आश्रम के स्थानान्तरण के सबध मे जब भी कोई निश्चय होगा तो उसकी सूचना भेज दी जायेगी।

शेष शुभ

प्रभु श्री के आशीष

आचार्य रजनीश

चरण सिंह
गृह मंत्री, भारत

नई दिल्ली ११० ००१
दिनांक अगस्त ५ १९७७

प्रिय श्री सेठिया

मा० प्रधान मंत्रीजी को सम्बोधित आपके तारीख २२ जुलाई १९७७ के पत्र की प्रतिलिपि मुझे प्राप्त हुई जिसमें आपने चित्रकूट में अंतर्राष्ट्रीय रामायण मंच का प्रस्ताव करते हुए एक संक्षिप्त रूप रेखा भी भेजी है। धन्यवाद।

सप्रेम।

आपका
चरण सिंह

श्री कन्हैयालाल सेठिया
३ इण्डिया लेन
कलकत्ता १

रामनन्दन मिश्र
यू पू सासद

वगाली टाला
लहेरिया सराय
जि० दरभगा बिहार ८४६००१
दिनाक २०-१ ८१

प्रिय कन्हैयालालजी,

जिसके लिये एक हजार वर्षो म ऋषि लाग तपस्या कर रहे थे श्री अरविन्द ने supramental के नाम से जिसकी चर्चा की थी और पिछले तीस वर्षो म मैं जिसके लिये आराधना कर रहा था—वह समय आ गया। विश्व नियता प्रभु जग त्राता के रुप म धरती पर अवतरित हो गये। अभी उनके प्रकाश के फलने म कुछ महीना की दरी है।

राम और कृष्ण के समय म भी इस बार कठिन समय है। सभी धामिक सप्रदाया का मिटा कर एक नया मानव-धम विश्व का देना है। सभी राजनैतिक सत्ताआ को तोड कर विश्व-राज्य की स्थापना करनी है, मानव हृदय का परिवतन करना है इसलिये इसबार तीन नयी बातें हो रही हैं –

(१) गुरु शक्ति का जगदगुरु के रुप म अवतरण हा गया है।
(२) अतिमानस supramental केन्द्र की स्थापना हा गयी है।
(३) ऋषिया ने सभी तरह की वज्ञानिक शक्तिया को आयत्त कर लिया है जैसे एटम, टेलीविजन, रेडिया इत्यादि।

इस सम्बध मे– अनासक्त गाहस्थ्य धम और नव विश्व निर्माण यन्त्र' नाम स मेरी एक पुस्तिका छपी है। उसकी एक प्रति रजि बुक पाष्ट से आपके पास भेजी जा रही है। इसका परिवधित नवीन हिदी सस्करण और अग्रेजी सस्करण १५ फरवरी तक तयार हो जायगा। कीमत १० रुपये हागे। आप जितनी प्रति चाहें, १५ फरवरी के बाद, मैं रजिस्टड पासल से भेज दूगा।

आपस एकमात्र निवेदन है कि आपकी कविशक्ति उसकी आगमनी के लिये झकृत और प्रस्फुटित हो।

इसी सम्बध म पू विनोबाजी के लेख के कुछ वाक्य चयन कर इसके साथ भेज रहा हू।

भगवान आपका मगल करें।

ANAND PRASAD
Director

Department of Tourism
Rajasthan Jaipur
Dated 16 7 1981

D O No F 26/Dev/Udaipur/DT/81/10121

My dear Shri J P Singh
Collector Udaipur

I'm enclosing herewith a copy of letter dated 6 6 81 from Shri Kanhaiyalal Sethia Ratan Niwas Sujangarh addressed to the Hon ble Chief Minister Rajasthan in connection with the encroachments and unauthorised constructions in the area of Rakta Talai near Haldighati

You would kindly appreciate that Rakta Talai and the complete area of Haldighati is to be preserved and protected for the posterity The Govt of India have already accepted the request of the State Dept of Tourism and have been working on the preparation of the Master Plan for the development of Mewer Complex Haldighati and Rakta Talai are the important ingredients of the Mewer Complex which may require an investment of more than Rs 100 lacs If the land around these historical places is allowed to be usurped and if unauthorised constructions are not checked not only that the implementation of the Master Plan of Mewer Complex would become difficult but that the monuments themselves will get ruined and this in turn, would be a great disincentive in the field of tourism promotion

I would therefore request you to kindly have the matter examined through a senior officer and take effective steps to undo such unauthorised constructions and encroachments

I am sure that you would kindly take immediate necessary steps in the matter and also keep us informed about the progress

With regards

Yours sincerely
Anand Prasad

Encl

Sri Kanhaiyalal Sethia
Ratan Niwas
Sujangarh

MAHARANA MEWAR FOUNDATION
City Palace Udaipur

दिनांक २७ दिसम्बर १९८३

आदरणीय सेठिया साहब,

आपकी सूचनार्थ यह पत्र सहर्ष प्रेषित है कि आप द्वारा भारतीय संस्कृति साहित्य व इतिहास के क्षेत्रों में जन चेतनार्थ सम्पादित सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन का कुम्भा पुरस्कार ८३-८४ (पांच हजार एक रुपये नगद, रजत प्रशस्तिका व उत्तरीय) समर्पित करने का निर्णय हुआ है। स्वीकृति हेतु पत्र प्रस्तुत है।

शुभकामनाओं के साथ।

भवदीय
महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन
राजमहल उदयपुर

पुनश्च

पुरस्कार समर्पण समारोह फरवरी ८४ में सम्पन्न होगा। तिथि निश्चित होने पर आपको निमन्त्रण प्रेषित किया जायेगा। पूर्व समारोहों की विवरण पुस्तिकायें व इस वर्ष के पुरस्कार प्राप्त कर्त्ताओं की सूची भी प्रस्तुत की जा रही है। स्वीकृति के साथ कृपया अपना कृतित्व-व्यक्तित्व व पासपोर्ट फोटो भी भिजवायें।

सेक्रेटरी
महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन
राजमहल उदयपुर

लक्ष्मीनिवास झुंझुनवाला
उद्योगपति

भीलवाड़ा भवन
४० ४१ कम्यूनिटी सेंटर
न्यू फ्रेंड्स कालोनी
नई दिल्ली ११० ०६५
दिनांक ११ अप्रैल १९८४

प्रिय श्री कन्हैयालालजी

सस्नेह स्मरण। आपके ३ अप्रैल के पत्र के लिए बहुत धन्यवाद। हल्दीघाटी की पावन माटी की मंजूषा प्राप्त हुई अनेक धन्यवाद।

राजस्थानी भाषा व उसकी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए आपका प्रयास प्रशंसनीय है। जब जब अवसर मिलता है तो मैं उसमें धरती धोरां री के कार्यक्रम की चर्चा करता हूँ। शायद आपकी किसी व्यक्ति से बातचीत हुई थी और वे उसका कोई टेप भेजने वाले थे। पता नहीं इसमें प्रगति क्या नहीं होती है?

आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

सस्नेह,
लक्ष्मीनिवास झुंझुनवाला

प्रो० बी० डी० कल्ला,
राज्य मन्त्री पर्यटन
कला एव सस्कृति व शिक्षा

जयपुर राजस्थान

दिनाक २१ ५ १९८४

क्रमाक ६६३/एम एम टि/८४

परम आदरणीय श्री कन्हैयालालजी सेठिया साहब

सादर नमस्कार।

आपका दिनाक ५ मई १९८४ का आशीर्वाद पत्र प्राप्त हुआ। आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे। पत्र के साथ माननीय मुख्य मन्त्रीजी को प्रेषित पत्र की प्रति भी प्राप्त हुई।

हल्दीघाटी की पावन माटी की मन्जूषा जो आपने श्री छाबडा जी के साथ भेजी है वह अभी तक प्राप्त नहीं हुई है। आपने अपने पत्र में नीचे जो समाचार दिये हैं इस सन्दर्भ में आप माननीय मुख्य मन्त्रीजी एव माननीय श्री चन्दनमलजी आदि सभी मिलने वालों को समय-समय पर पत्र भेजते रहियेगा। इस सन्दर्भ में मेरे विचार आपको पूर्व में अवगत करा चुका हूँ।

हल्दीघाटी योजनाबद्ध विकास के बारे में मेरे अपने विचार आपको जयपुर प्रवास में बताये थे। इस सन्दर्भ में मैं भी प्रयासरत हूँ। कलकत्ता में सभी मिलनेवालों को यथायोग्य कहियेगा। आपका स्वास्थ्य अब पूर्णत ठीक होगा।

शेष शुभ।

सदभावी
बी० डी० कल्ला

(श्री सेठिया के सतत प्रयास से केन्द्रीय सरकार ने ऐतिहासिक स्थलों की गरिमा बनाये रखने के लिए राजस्थान सरकार को आवश्यक अनुदान देना स्वीकृत किया है)

प्रो० बी० डी० कल्ला,
राज्य मंत्री
पर्यटन कला एवं संस्कृति
पुरातत्व व उच्च शिक्षा
अ० शा० प० संख्या १३८६ समप

दिनांक १७ १० १९८४

आदरणीय श्री सेठियाजी साहब

सादर नमस्कार !

आपरा ११ १० ८४ रा लिख्योड़ा पत्र मिल्या। राजस्थानी भाषा री नवी पोथी भेज्योड़ी पूगी। इणसारू आपनै धन्यवाद। हल्दीघाटी री पावन माटी की मजूषा हाल तक मिली नहीं। मायड रा हेला पोथी सरावण जोग लागी। मायड भोम व देश प्रेम रे प्रति भगति रा उच्छाव घणा चोखा लाग्या। आपरी कलम सू निरायोड़ा एक एक आखर देश प्रेम न बढ़ावण खातर घणा असरदार मालूम पड्या। आपरी कवितावां हिरदे ने दूर ताई छू सके है।

इण साथ हा राजस्थानी भाषा अर साहित्य म आपरो देण रूण भारा रो है कि इणस्यू आपणी माटी अर खुद री कला सस्कृति के प्रति हरेक साहित्य प्रेमी पाठक ने अणूता ताकत मिले।

हल्दीघाटी स्थल उपर मवाड़ काम्पलेक्स र निर्माण बाबत नुवा योजना केन्द्रीय सरकार ने भेज्योडी है।

सुजानगढ म राजकीय महाविद्यालय म स्नातकोत्तर शिक्षा खोलण सारू आप समाचार लिया। इण सम्बन्ध म म्हारो सुझाव है इण सालरा शैक्षणिक सत्र शुरू हुया न लगभग ३ ४ महीना हो चुक्या है। अगले सत्र म महाविद्यालय म स्नातकोत्तर शिक्षा खातिर सभी प्रकार री जरूरता पूरा कर दी जावे तो बी माथै सरकार सहानुभूति पूर्वक विचार कर सके।

आशा है आपरो स्वास्थ्य निरोगा हुआ। म्हारे लायक सेवा व काम काज लिखाजो। कलकत्ता म सभी मिलने वाला ने घणे मान सू यथा योग्य कहीजो।

सादर

दीपावली है अवसर पर म्हारी अनेक शुभ कामनावा स्वीकार करीजो।

घणमानस्यू।

सदभावी
बी० डी० कल्ला

बुलाकी दास कल्ला
गिक्षा मा० नि० एव जनसम्पक मत्री
अ० गा० पत्र क्रमाक १०१५

जयपुर राजस्थान
दिनाक १३ ३ १९८१

धरमा मानाता आदरजाग श्री कन्हैयालालजी साहब

आपरा २७ फरवरी '८१ को लिख्योडा कागद मिल्या। आपर आगद रा पडतर राजस्थानी भाषा म दवणा आपरा आर आपणा मायड भाषा रा मम्मान हैं।

मवाड काम्पम्क्स री याजना ने केन्द्रीय सरकार सू मजूरी मिलण म आपरी गुभकामनावा रा पूरा योगदान है।

आपर कागद मु जाणकारी मिली कि राजस्थान परिषद कलकत्ता र मावजनिक स्थान पर महाराणा प्रताप री प्रतिमा थिरपण की याजना वणाय रहा है। वास्तव म आ एक पवित्र सकल्प है तथा महाराणा प्रताप राजस्थानी शौय रा प्रतीक भी है। आप आनन्द कुमार अग्रवाल की निष्ठा म प्रभावित हा तथा प्रतिमा थिरपण के काम म अग्रवालजा रा सहयाग वास्ते उणार सेवा काल म बधारी वास्ते भी लिख्या है। आप अग्रवालजी ने कह र अर्जी लिखवा दोज्या जिण पर म्हे उणार सवा काल म बढानरी वास्ते सामान्य प्रशासन विभाग ने म्हारी तरफ स सिफारिश कर विभाग क अफसर ने निरदेश द सकू। इण सबध म आप मुख्य मुख्यमत्राजी ने भी पत्र द दीज्या कारण वे ही अन्तिम निणय करसी।

म्हारा स्वास्थ्य अवार आपरे आसीरवाद सु बिल्कुल ठीक हैं। काम रा थाडा तान बाच ता रेव ही है पण म्हारी तरफ सू पूरा जापता राखू। म्हार लाग सेवा जरूर लिखी जा।

सादर,

आपरा स्नेही
बुलाकी दास कल्ला

प्रवीणचन्द्र छाबड़ा
पत्रकार

जयपुर, राजस्थान
दिनांक २४ अप्रैल १९८४

परम-आत्मीय

ईष्ट स्मरण, सादर अभिनन्दन!

आपके पत्र यथा समय मिले कृतार्थ हुआ।

हल्दीघाटी के बारे में कब क्या हो सकेगा अभी कुछ नहीं कह सकता। आपके भाव बने हैं तो अवश्य ही यह होगा कौन निमित्त बनेगा, यह तो उसके पुण्य पर है। मैं विश्वस्त हूं कि भावनाएं सम्पूर्ति होगी। आप तो निष्पक्ष हो हैं प्रेरणा तो देनी ही होती है। यह तो तीर्थंकर भी देते रहे हैं। जहां तक आसक्ति का प्रश्न है मन का ऊपर उठना ही तो जीवन है। यह है जब तक क्रिया है। कामना और भावना का होना और उसका सर्वहितकारी होना मंगलमय है।

समग्र जैन को एक मंच पर लाने के संबंध में आपके सुझाव सार गर्भित हैं। इस वृहद कार्य के लिये मैं प्रभावी हो सकता हूं यह आपकी कृपा भाव में ही साधना है। जैन समाज वणिक समाज है जहां हर पहल वैभव के साथ जुड़ी हुई है। इस कार्य की सम्पन्नता के लिये साधना से सम्पन्न होना भी आवश्यक है। मेरी स्थिति अत्यन्त ही स्पष्ट है।

यह सम्मेलन हो यह चाहना अपनी जगह सही है। इसके लिये संयोजन भी वे ही कर सकते हैं जो प्रभावी हैं। सर्वोच्च प्राथमिकता का काम तो यही है कि लोगों तक इस विचार को पहुंचाया जावे।

जयपुर में श्री दीपचंदजी नाहटा से मिलना हुआ। उनके यहां चार मई को मांगलिक काम है। उनका कृपापूर्व आग्रह रहा कि इस अवसर पर कलकत्ता आना ही है। उन्होंने सब प्रकार की व्यवस्था कर देने का भी सहज रूप में संकेत किया जो उनके स्नेह और सौजन्यता के अनुकूल ही था। इस अवसर पर कलकत्ता में बड़े लोग आवेंगे ही उनसे भी परामर्श करें। मैंने आपका पत्र श्री फूलचन्दजी जैन को भी बता दिया है। वे तो इससे सहमत हैं ही।

जनेन्द्रजी के विचारा का लेकर लिखा गया विचार इतिवारी पत्रिका म छपा था, लगता है कि आप का पत्रिका नही मिला। राजस्थान पत्रिका म महावीर-जयन्ती सम्बंधी लेख का प्रकाशन हुआ है। तीर्थकर म लेख का लेकर टिप्पणी दी है।

आप स्वस्थ हाग यही कामना और भावना है प्राथना है। अकादमी के प्रकाशन का पढा। एक नया दाहा पढने का मिला जिसने अभिभूत कर दिया–

कतो वार वोवो दिया, मा कदै राखे याद,
गिणती म पड भूलग्या भन अणगिण रो स्वाद। इन पक्तिया ने धन्य कर दिया। इस पर अपना विवेचन इतिवारी पत्रिका के लिये भेजा ता है। सेष कुशल।

आदर की अनुपालना हागी मैंता समर्पित हू अपना क्षमता के साथ–

आपका,
प्रवीणचन्द्र छाबडा

MINISTER IN CHARGE
PUBLIC WORKS AND
HOUSING DEPARTMENTS
GOVERNMENT OF WEST BENGAL
WRITERS BUILDINGS

JATIN CHAKRAVORTY | | Calcutta

D O No 842 MPW | | Dated 29th May 1984

Dear Shri Sethia

This is with reference to your letter of the 25th instant It was so kind of you to send me a small casket containing the sacred dust of Haldighati

I had the good fortune of passing through Haldighati last year when I was in Rajasthan I fully share your views that it is really a place of pilgrimage for every lover of freedom

It is very gratifying that Rajasthan Parishad had distributed 500 caskets containing this sacred dust amongst the distinguished guests on the occasion of the Rajasthan Day on March 30 last at the Great Eastern Hotel The couplets inscribed on this casket was not intelligible to me as it was in Rajasthani and I am grateful to you as an English version of that couplet has been given

With kind regards

Yours sincerely

Jatin Chakravorty

PRIVATE SECRETARY TO
MINISTER IN CHARGE
DEPARTMENTS OF
COMMERCE AND INDUSTRIES
PUBLIC UNDERTAKINGS AND
INDUSTRIAL RECONSTRUCTION
GOVT OF WEST BENGAL

S N PAL

Tel No 22-0231 22 1681
(Ext 255/302)

No 770/PS (CIM)

Dated 1st June 1984

Sir

Sri Nirmal Bose Minister in Charge Deptts of Commerce & Industries Public Undertakings and Industrial Reconstruction Govt of West Bengal has directed me to acknowledge receipt of the Casket Containing the Sacred Dust of Haldighati by him

Yours faithfully

S N Pal
P S to Minister

MINISTER IN-CHARGE
HOME (TRANSPORT) DEPARTMENT
GOVERNMENT OF WEST BENGAL

RABIN MUKHERJEE — Calcutta

D O No 1242/MT — Dated 11th June 1984

Dear Shri Sethia

I am delighted to receive a casket containing the sacred dust of Haldighati a famous place in Indian History This reminds the glorious service and valour of the Rajput patriots for the cause of the mother land

Yours sincerely,
Rabin Mukherjee

ADDITIONAL PRIVATE SECRETARY
TO THE CHIEF MINISTER
WEST BENGAL

सत्यमेव जयते

No 7187 P S C M

Calcutta
Dated 12th June 1984

To Shri Kanhaiyalal Sethia
3 Mangoe Lane
Calcutta 700 001

Sir

I am directed to acknowledge receipt of your letter dated 25 5 84 to Chief Minister West Bengal along with a casket containing sacred dust of Haldighati

Yours faithfully

Addl Private Secretary

एडिसनल डाईरेक्टर
टूरिज्म राजस्थान सरकार

जयपुर, राजस्थान
दिनांक १२ दिसम्बर ८८

आदरणीय सेठियाजी

सितम्बर १९८४ को कलकत्ता में आपसे मुलाकात हुई थी तब आप द्वारा हल्दीघाटी के विकास के संदर्भ में वार्ता हुई थी। इस संदर्भ में मैंने हमारे युवा व उत्साही निर्देशक श्री कन्हैयालालजी मीणा व तत्कालीन सचिव श्री एच० एम० रमणा महोदय को निवेदन कर दिया था। इस संदर्भ में मेवाड़ काम्पलेक्स नामक योजना राज्य सरकार के विचाराधीन है। चूँकि राजस्थान के सभी ऐसे अच्छे स्थल पर्यटन के दृष्टिकोण से विकसित हो उक्त योजना के संदर्भ में भी यथाशक्ति प्रयास करते हुए आगामी प्रगति से आपको सूचित करूँगा।

आपने हल्दीघाटी की पीली मिट्टी की मंजूषा जो भेंट की वह अनुपम व अतुलनीय रही

मेरे योग्य कार्य सेवा हो तो कृपया सूचित करें।

रविप्रकाश नाग

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
TOURISM DLPARTMENT

J P GUPTA Jaipur Rajasthan

No F 5 (79) GA/I/81 Dated 22nd January 1985

To

Shri Kanhaiyalal Sethia
3 Mangoe Lane
Calcutta 700 001

Sub **Development of Rakta Talai in Haldighati**

Sir

I am directed to refer your letter No Nil dated 17 3 1984 addressed to the Hon ble Chief Minister Rajasthan Jaipur on the above subject and to say that the Collector Udaipur has informed in this connection that no trespass has occured in this area

Yours faithfully

J P Gupta
Asst Secretary to Govt

Copy forwarded to the Deputy Secretary to Chief Minister Rajasthan Jaipur with ref to his U O Note No F 5 (1) Gr V/84 Dated 6 4 1984 for information

Asst Secretary to Government

राजस्थान सरकार
पर्यटन विभाग, जयपुर

क्रमांक ५०३४ दिनांक २३ ६ ८९

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

महोदय

पर्यटन मंत्री राजस्थान को लिखा एवं इस विभाग को अग्रेषित पत्र प्राप्त हुवा। धन्यवाद।

विभाग आपके द्वारा भेजे गये सुझावों पर आवश्यक ध्यान देकर समयानुसार कार्यवाही करेगा।

भवदीय
निर्देशक
पर्यटन विभाग, राजस्थान
जयपुर

THE RAJASTHAN FOUNDATION

RAGHU MODY
Industrialist

Phone 23 2365
Telex Khaitan CA 7045
Cable KHAITANCO
KHAITAN & CO
Advocates & Notaries
9 Old Post Office Street
Calcutta 700 001
Dated May 10 1985

My dear Kanhaiyalalji

The Rajasthan Foundation is now on the verge of being registered next week There is no power that can stop it

The letter heads have arrived today—they are very impressive I feel these are only temporary letterheads —the final design I have asked the Statesman to make for me which will come out beautifully I will show it to you before final printing Enclosed are 25 blank letterheads for your use

I hope to get the signature of the seventh Trustee today

The Rajasthan Foundation has only been forced due to your dedication and follow up I have only tried to assist you in your objective

I am happy that our dreams have now fructified and I am positive with GOD S BLESSINGS we will succeed in the achievement of the purpose for which we are setting up this Foundation and I hope that one day posterity will remember both of us for the time that we both devoted for this great noble cause

Best wishes
Raghu Mody

(प्रस्तावित भवन के लिये उपयुक्त भूमि प्राप्त करने का प्रयास चल रहा है)

G P BIRLA
Industrialist

Birla Building
9/1 R N Mukherjee Road

Dated 4th February 1986

Dear Shri Sethia

I am in receipt of your letter requesting me to set up a complex consisting of a garden and a museum with a statue of Maharana Pratap at Haldighati

I have had the matter examined and I feel that a project of this type should be taken up only by the Government You have stated in your letter that previously you had a meeting with the late Prime Minister Smt Indira Gandhi and had discussed this project with her and she had shown considerable interest in the matter If this is so I would suggest that you should now meet Shri Rajiv Gandhi and explain the project to him giving the background of your talks with the late Prime Minister

With best wishes

Yours sincerely

G P Birla

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF CULTURE)

No F 14 4/85 CH 6

New Delhi
dated 21st February 1986

To
Shri Kanhaiyalal Sethia
Sethia Trading Co
3 Mangoe Lane
Calcutta 700 001

Dear Sir

I am directed to acknowledge the receipt of your letter No nil dated the 1st February 1986 addressed to the Prime Minister

Yours faithfully
M K Sherwani
Assistant Educational Adviser

(श्री सेठियाजी के दिनांक १८ ४ १९८५ के पत्र में दिये गये सुझाव के अनुसार पश्चिमी सांस्कृतिक परिषद के गठन के लिये दिये गये बधाई पत्र का प्रत्युत्तर)

ओंकारमल बोहरा
भूतपूर्व सांसद

प्रेम निकेतन
२६ शास्त्री मार्ग उदयपुर

दिनांक ३० ४ १९८६

भाई श्री सेठियाजी,

आपके द्वारा प्रेषित 'हल्दीघाटी स्मारक प्रेरक समिति' स्मारिका प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। सचमुच आप कलकत्ते में इन दिनों राजस्थान के जीवन्त एवं सक्रिय प्रतिनिधि के रूप में राजस्थान के यश गौरव को उजागर कर रहे हैं।

भामाशाह प्रताप मीरा चित्तौड़ हल्दीघाटी मेवाड़ नाम लेते ही हम सबके मस्तक गौरव से ऊँचे उठ जाते हैं। कितना अच्छा होता यदि हम सब राजस्थानी मिलकर पुराने गौरव को पुनः अपने आचरण में प्रतिष्ठित कर पाते? हम मात्र कथा वाचक रह गये हैं कथा निर्माता नहीं रहे। अतीत की पूजा कब तक राम आयगी यही हमारे राष्ट्र की शोचनीय स्थिति एवं पीड़ा है। केवल साहित्यकार विद्वान कलाकार चिंतक ही अपनी ईमानदार निर्भीक लेखनी और वाणी से इस बड़े बीमार देश को संजीवनी देकर कायाकल्प कर सकते हैं। अन्यथा अभी तो चारों ओर आपाधापी प्रचार पिपासा पूजा का भोण्डा प्रदर्शन ही दिखाई दे रहा है। जैसे हम सब मूक बधित जानवर हो गये हैं। कोई हमें हाँके जा रहा है। कितनी असह्य अनुभूति है। सब कुछ बिक्री और नीलामी पर चढ़ गये हैं। कहाँ है प्रताप जो घास फूस की रोटी खाकर भी चुनौती दे सकें।

सप्रेम आपका
ओंकारलाल बोहरा

ओॅ मेजर रामप्रसाद पोद्दार बा ए
उद्यागपति

सेन्चुरी भवन
डा एनी बेजण्टे राड
बम्बई ४०० ०२५

दिना १६ मई ८६

आन्दरणीय श्री सेठियाजी

सादर प्रणाम।

आपके द्वारा प्रेषित हल्दीघाटी स्मारक प्रग्य समिति की प्रति यथा समय मिल गइ थी।

हल्दीघाटी पर कतिपय लखा के अतिरिक्त आपकी सुन्दर कविताएँ भी इसम सम्मिलित है जिसम इसका आकषण बढ़ गया है।

पहल आपने एक मुद्दा उठाया था 'मायड भाषा' का तथा अब उठाया है हल्दीघाटी स्मारक का। दोनो ही मुद्द सामयिक हैं तथा बडा अहमियत रखते हैं। आपहा इन्हें आगे बढा सकते है जैसाकि आपके पत्र-व्यवहार स स्मारक क सम्बन्ध म जानकारी मिली है।

आशा है आपके प्रयास स दोना म आगे कायवाही होगी इसी विश्वास क साथ।

आपका
रामप्रसाद पोद्दार

प्रधान मन्त्री कार्यालय

नई दिल्ली ११० ०११

न

दिनांक जूलाई, १९८६

स० ११।१६।८६ पी० एम० पी

प्रिय महोदय

मुझे निर्देश हुआ है कि प्रधान मन्त्रीजी को सम्बोधित आपके पत्र दिनांक २३ ६ ८६ की प्राप्ति सूचना आपको दूं।

भवदीय
एस० एस० अहलावत
अनुभाग अधिकारी

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

(पर्वतीय विकास कार्यक्रम के अंतरगत अरावली पर्वत माला को सम्मिलित किया उसके लिये दिये गये बधाई पत्र का प्रत्युत्तर)

SHRIYANS PRASAD
उद्योगपति

Nirmal 3rd Floor
Nariman Point
Bombay-400 021

दिनाक १७ जूलाई १९८६

प्रिय श्रीसेठियाजी,

आपका दिनाक १० जुलाई का पत्र प्राप्त हुआ तया साथ मे पश्चिमी बगाल के सास्कृतिक राज्य मन्त्री स हुए साक्षात्कार का विवरण पत्र भी भेजा हुआ देखा।

उपरोक्त विवरण के देखने से यह मालूम हुआ कि सास्कृतिक राज्यमन्त्री ने जो सुझाव प्रतिनिधि मण्डल को दिये है उन्ही के अनुरूप यदि श्री जैन सभा कलकत्ता आगे काय को बढाये तो मूतियो के सरक्षण की योजना को क्रियान्वित किया जा सकेगा।

मुझे आशा है, आप सभी के प्रयास से यह योजना सफल बन सकगी।

आपका
श्रेयास प्रसाद

(पश्चिम बगाल के पुरुलिया जिले के अतगत पाकबीडा क्षेत्र मे यत्र-तत्र बिखरी हुई अरक्षित अमूल्य जन मूतियो को सरक्षित करने के सदभ म दिय गये पत्र का प्रत्युत्तर)

गोपीकृष्ण राठी मधुकर
साहित्यकार

डीडवाना (राज)
दिनाक सितम्बर १, १६८६

माननीय अग्रज सठिया साहब

सादर अभिवादन !

स्वतत्रता दिवस पर भिजवाई गई स्नेह प्रसादी प्राप्त कर उपकृत हुआ। माननीय प्रधानमत्रीजी को 'राजस्थानी भाषा' की सवधानिक मायता के सदभ म लिखा गया आपका पत्र प्रदेश की सस्कृति, लोक कला एव वचारिक अभिव्यक्ति की दृष्टि स बडा महत्वपूर्ण एव प्रेरणादायी है। मायड भाषा के उन्नयन हेतु आपका विवेकपूर्ण प्रयास अभिनदनीय है।

आपके निर्देशानुसार स्थानीय प्रबुद्धजनो को आपकी भावनाओं स अवगत करवा दिया गया है। कुछ वचारिक मतभेदो के होते हुए भी लोग प्रधानमत्रीजी को पत्र लिखने हेतु तत्पर हुए हैं। यह शुभ सकेत है।

हल्दीघाटी की माटी के महत्व को उजागर करने वाली स्मारिका यथा समय प्राप्त हो गई थी और उसकी पहुच तत्काल भिजवाई थी। हल्दीघाटी महाराणा प्रताप की याद दिलाती है और महाराणा प्रताप स्वाधीनता के महत्व एव आदर्श को हमारे समक्ष रखते हैं। यह न केवल हमारे प्रदेश के लिए प्रत्युत समूचे देश के लिए गौरव का विषय है कि स्वतत्रता सग्राम की प्रेरणास्थली हल्दीघाटी रहा है। इस तीर्थ स्थल की मिट्टी को आपने देश के शीर्षस्थ राजनेताओ साहित्यकारो व सतो के ध्यानार्थ भिजवाकर स्तुत्य प्रयास किया है। इसस इस उपेक्षित स्थल की ओर अब सबका ध्यान अवश्य जायेगा और शीघ्र ही योजनाबद्ध तरीके से इसका विकास हो सकेगा।

आप सुजानगढ घर कब आ रहे हैं ? जब भी इधर आपका पधारना हो कृपया 'डीडवाना' अवश्य पधारने का कार्यक्रम बनाए।

आप स्वस्थ प्रसन्न रहें ताकि साहित्य, समाज व सस्कृति की सेवा होती रहे। योग्य सेवा स अवगत करायें।

आदर एव श्रद्धा के साथ।

स्नेहाभिलाषी
गोपीकृष्ण राठी 'मधुकर'

PEOPLE'S WELFARE SOCIETY

Udaipur Road Sikar 332001 (Rajasthan)

PWS/5415/86 — 1986

आदरणीय श्रीयुत मठियाजी

सादर नमस्कार। आपका २७ ८ ८६ का कृपा पत्र मिला। आपने सीकर म सुजानगढ़ तक खेतो म वृक्षारोपण का सुझाव दिया जो बहुत ही सुन्दर है और यदि हम यह कर सकते तो एक बहुत ही उपयोगी काम हो सकता पर दिक्कत यह है कि इतने विशाल पैमाने के काम को करने के लिये न हमारे पास साधन हैं और न कार्यकर्ता। आपकी जानकारी के लिये यह अवश्य निवेदन करना चाहूंगा कि वृक्षारोपण कार्यक्रम इस समिति के मुख्य कार्यक्रमो म से है। जिन जिन काश्तकारो के लिये हम कुए बनवाते हैं उनके साथ वृक्षारोपण की हमारी मुख्य शर्त रहती है तथा वे इसका पालन करते है। इसके अलावा जहा जहा हमने समग्र ग्राम विकास के काम हाथ म लिये हैं वहा हम इस कार्यक्रम को पूरा प्रोत्साहन देते हैं। जहा जहा हम स्कूल भवन, औषधालय, डिस्पेंसरी आदि भवन बनवाते हैं ऐसे भवनो के अहाते म हम यह कार्यक्रम अवश्य चालू करते हैं।

आशा है आप सानन्द है। सादर।

आपका

मगनी राम मादी

सत्यनारायण सिंह
निर्देशक एवं उप शासन सचिव
सूचना एवं जन सम्पर्क

दूरभाष कार्यालय ६७६५७
६०२११
निवास ७४००६
राजस्थान, जयपुर

अ०शा०पत्र स०/DIPR/५६२

दिनांक १४ १९८७

प्रिय श्री सेठियाजी

बहुत वर्षों पूर्व गाडं भवन जयपुर में श्री रामरतन जी कोचर के साथ आपके दर्शन लाभ का अवसर मिला था। अबकी बार जब कलकत्ता जाऊंगा तो आपसे अवश्य मिलने का प्रयास करूंगा।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सभी निगमों की सहायता से कलकत्ता सूचना केन्द्र को और अधिक सक्षम एवं उपयोगी बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं और लगभग दो लाख रुपये अतिरिक्त स्वीकृत किये गये है। मैं आभारी होऊंगा यदि आप इस संबंध में मुझे कुछ अपने व्यक्तिगत सुझाव दें कि क्या क्या सामग्री एवं उपकरण उपलब्ध कराये जाय जिससे यह अधिक उपयोगी बन सके। आप जैसे महानुभाव एवं साहित्यकार के सहयोग से इस ओर बहुत कुछ किया जा सकता है।

माननीय मुख्यमंत्रीजी को आपका पत्र दिनांक ३ अप्रैल ८७ प्राप्त हुआ और उन्होंने मुझे इस संबंध में उचित एवं कारगर कार्यवाही करने के आदेश दिये हैं।

सादर।

सद्भावी
सत्यनारायण सिंह

प्रो० कल्याणमल लोढा
भू पू कुलपति जोधपुर विश्वविद्यालय

२ए दशप्रिय पार्क (ईस्ट)
कलकत्ता ७०० ०२९

दिनांक ८ ६ १९८७

मान्यवर सेठियाजी

विचित्र संयोग है। गत वर्ष मैंने आपका 'मायड रो हेलो' पर अपनी प्रतिक्रिया भेजते हुए पत्र लिखा था, वह नहीं मिला। इस बार अप्रैल मास में जयपुर प्रवास के मध्य एक लम्बा व्यक्तिगत पत्र लिखा वह भी डाक विभाग ने छीन लिया। अब यह तीसरा पत्र है, विश्वास है यह तो मिलेगा ही।

उस दिन मैं स्वगत पढ़ रहा था—इसके पूर्व आपकी अनेक रचनाएं पढ़ीं। आपके निकट भी रहा हूँ आपकी अंतरंग निश्छल स्नेह भावना और आत्मीयता ने मुझे प्रभावित और प्रेरित किया है। आपके उदात्त और उदार व्यक्तित्व की छाप मेरे मन पर पड़ी है। जितना तेजस्वी आपका व्यक्तित्व है उतना ही कृतित्व भी। आपने राजस्थान की धरती की उमंग धारा को हल्दीघाटी की जरावरा की उपत्यकाओं ने रक्त रंजित शौर्य और स्वाधीनता के अमर तप पूतों को अपनी वाणी से अमर किया है। आज राजस्थान के खेतों और खलिहानों में, विद्यामंदिरों में, सांस्कृतिक समारोहों में धरती धोरा री गूंजती रहती है। हमारी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक परम्परा के गौरवपूर्ण इतिहास के जाने अनजाने अध्यायों को आपने उजागर किया। आपका काव्य केवल कल्पना की उड़ान या व्यक्तिगत कुंठाओं की निरर्थक अभिव्यक्ति न होकर उन सार्थक अनुभूतियों का आत्मसाक्षात्कार है जो काव्य को आंतरिक ऊष्मा और ऊर्जा देकर जीवन की ऊंचाइयों को छूता है जहाँ व्यष्टि चेतना समष्टि चेतना में परिणत होकर मानवीय बोध और उच्चता की मधुमती भूमिका बनती है। मूल्य, चरित्र और सांस्कृतिक संकट के वर्तमान दौर में, जहां ऐषणाओं ने व्यक्ति और समाज को आक्रान्त कर दिया है, जहाँ विकृत बुद्धि और वैज्ञानिक ऊहापोह ने मानवीय संवेदना को क्षतिग्रस्त कर समूल नष्ट कर दिया है—हमें ऐसे सबल और आश्रय की आवश्यकता है, जो पुनः प्रकृत भाव भूमि पर मनुष्य को अवस्थित कर उसे स्वच्छ मानसिकता और स्वस्थ सामाजिकता से संश्लिष्ट कर के सही रूप में उस अमृत पुत्र बना सके। और यह कवि, चिंतक और दार्शनिक ही कर सकता है। आपके कृतित्व और व्यक्तित्व में इन तीनों का समावेश है। मैं कवि को क्रान्तदर्शी समझता हूँ। कविता केवल शब्दों का संकलन

नहीं होती उसमे मंत्र-शक्ति निहित रहती है--एक विचित्र प्रकार की विद्युत शक्ति, जो मन और प्राण को पूर्णत आप्यायित कर पाठक या श्रोता को मुग्ध कर देती है। सामान्य व्यक्ति की चाक्षुष शक्ति देश और काल में स्थिर है, पर कवि की आँख प्रातिभ शक्ति से समन्वित होकर देश और काल से परे– उनकी असीमता को छूती हुई रूप अरूप, ज्ञात अज्ञात प्रत्यक्ष-परोक्ष भाव भूमि को प्रतिफलित कर दिव्यता प्राप्त करती है। काव्य की वाणी की यही पहचान है और यही कवि का तृतीय नेत्र भी या मनुष्य मात्र का शिवत्व। इसी से जब मैं जोधपुर विश्वविद्यालय का कुलपति था मैंने एक शोध स्नातक से आपके व्यक्तित्व और कृतित्व पर कार्य करने की सलाह दी थी। ऋग्वेद (१० ५३ ६) कहता है–हे मनुष्य! तू कर्म करता हुआ प्रकाश का अनुसरण कर। बुद्धि से परिष्कृत होकर प्रकाश की रक्षा कर–निरन्तर ज्ञान एवं कर्म मार्ग पर चलता हुआ उलझन से रहित कर्म का विस्तार कर (पुरुपायक) अर्थात् उत्तम मनुष्य बन। मेरे लिए मनुष्य की उत्तमता की यही पहचान है–परख।

पत्र लम्बा हो गया। मन अब भी भर रही है–पर इस अतृप्ति में ही तृप्ति है। आपकी ये पंक्तियाँ अनेक अवसरों पर मैंने दोहरायी है। आज अपनी आंतरिक श्रद्धा के साथ पुन आपको ही समर्पित करता हूँ।

'मुझे ज्ञात है तेरे उर में सहज स्नेह की धारा
उसकी ही अभिव्यक्ति मात्र है, यह उपहार तुम्हारा!

आपने अपने अक्षर कणों से सबका मन और प्राण भरा है और यही प्रार्थना है कि सदैव इसी प्रकार भरते रहे।

आपका
कल्याणमल लोढा

शिवचरण माथुर
मुख्य मंत्री

राजस्थान
जयपुर

अ० शा० पत्रांक 830/89

दिनांक फरवरी १५ १९८८

प्रिय श्री सेठियाजी

आपका दिनांक ३० १ ८८ का पत्र प्राप्त हुआ। मैं श्री बी डी कल्ला सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी को बीकानेर की पांचवीं शताब्दी समारोह की योजना की रूपरेखा तैयार करने हेतु अनुरोध कर रहा हू। उनके सुझाव आने पर आपको पुन सूचित करूंगा।

सादर।

भवनिष्ठ,
शिवचरण माथुर

हर किशन लाल भगत
समदीय काय एव
मूचना और प्रसारण मत्री

भारत
नई न्ल्लिा ११० ००१

न्निाक ३ माच १९८९

प्रिय श्रीसठिया

महात्मा बुद्ध के जीवन पर वत्तचित्र बनाये जाने तथा उस दूरदशन पर प्रसारित किये जाने क सबध म आपका दिनाक १९ २ ८९ का पत्र प्राप्त हुआ धयवाद।

। मामल का न्खिवा रहा हू।

आदर महित।

आपका
हर किशन लाल भगत

राम निवास लाखोटिया
एम काम, एल एल बी
एडवोकेट एव कर सलाहकार

'लखोटिया निवास
एस-२२८ ग्रेटर कलाश ११
नई दिल्ली ११००४८

दिनांक २० ७ १९८९

आदरणीय श्री सेठियाजी,

सादर प्रणाम।

आपरो कागद २७ ६ ८९ रो मिल्यो। घणी प्रेरणा मिली। आपने जाण र खुशी हुसी 'क जगां जगां सू अडा रा विज्ञापन विरोधी कागद म्हार पास आया है अर श्री कृष्ण कुमारजी बिडला श्री जगप्रवेशजी (दिल्लीरा मुख्य कार्यकारी पार्षद), श्री विजय चोपरा (पजाब केसरी हिन्दसमाचारग्रुप रा सपादक) भी सरकार ने अर मिनिस्टरा ने लिख्यो है। बठाऊँ आश्वासन मिल्यो है कि शीघ्र ही कारवाई होसी। भगवान इण काम म आपारी मदद पूरी करसी। आप पूर्ण स्वस्थ होसी। आशा सुभाष अर टाबर था न प्रणाम लिखाया है।

आपरो
राम निवास लाखोटिया

श्री कन्हैयालालजी सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कपनी
३ मगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

(दूरदर्शन पर अडा के बारे म दिये जाने वाले विज्ञापन के सन्दर्भ म)

श्री सेठिया द्वारा दिये गये

कतिपय महत्वपूर्ण पत्र

कन्हैयालाल सेठिया सुजानगढ

दिनाक

सेवामे
आदरणीय राष्ट्रपति महोदय
भारतीय गणराज्य
नई दिल्ली

महामहिम

विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर रचित गीत– जन गन मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता– भारत का राष्ट्रगीत है यह हमारा परम सौभाग्य है। राष्ट्रगीत की प्रारभिक पक्तिया म भारत के कतिपय भू–भागा का गौरवपूर्ण नामाकन हुआ है। यथा–'पजाव सिधु गुजरात मराठा द्राविड उत्कल बगा विंध्य हिमाचल यमुना गगा उच्छल जलधि तरगा''

स्यात कविगुरु ने इस गीत की रचना करते समय यह कल्पना भी न की होगी कि यही गीत एक दिन स्वतत्र भारत के राष्ट्र गीत के रूप म अगीकार किया जायेगा। अत अब जब कि इस गीत का भारतीय गणराज्य के राष्ट्रगीत के रूप म मान्यता दी जा चुकी है तो क्या यह उचित नही होगा कि इस गीत म नवीन भारत के नवीन मान चित्र का समुचित प्रतिनिधित्व हो? इस सबध म मेरा विनम्र सुझाव है कि राष्ट्र गीत की प्रारभिक पक्तिया को निम्न रूप स सयोजित किया जाय –

'जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता,
असम आध्र मसूर मराठा
मरुधर गुजर बगा,
केरल उत्तर खड पचनद
मागध, मद्र, कलिगा,
मध्य देश कश्मीर ब्रह्म नद
हिम मडित गिरि शृगा,
विंध्य, अरावलि यमुना गगा
उच्छल जलधि तरगा।

गादावरि, कृष्णा कावेरी
भारत भूमि अभगा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय गाथा
जन गण मगलदायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे।

मरे इस विनम्र निवेदन म रविगुरु के प्रति किसी प्रकार की अश्रद्धा की भावना नही है। म ता मातृभमि के सौम्य स्वरूप का उसकी समग्र सम्पूर्णता म राष्ट्र गीत म अधिक उभार और सौष्ठव के साथ देखने की लालसा से ही प्रेरित हो कर यह सुझाव दने को उत्सुक रहा हू।

आशा है मेरा यह सुझाव श्रीमान का ध्यान आकर्षित करेगा।

विनयावनत
कन्हैयालाल सेठिया

प्रतिलिपि

१ अध्यक्ष, भारतीय लाक सभा नई दिल्ली
२ अध्यक्षगण भारत प्रातीय विधान सभा
३ अध्यक्ष, अखिल भारतीय काग्रेस कमटी नई दिल्ली,
४ श्री अशाक महता, अध्यक्ष प्रजा समाजवादी पार्टी नई दिल्ली
५ महा मत्री भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी नई दिल्ली
६ श्री राजगोपालचाय सस्थापक, स्वतत्र पार्टी बबई
७ अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिंदु महा सभा बबई,
८ माननीय प जवाहरलाल नहरू प्रधान मत्री भारत गणराष्ट नई दिल्ली,
९ मुख्य मत्री गण समस्त प्रात।

कन्हैयालाल सेठिया

कलकत्ता
दिनांक २८ ४ १९७३

प्रिय भाई गगजी

हिन्दी प्रचारक पत्रिका म रामायण मेला एक परिचय देखा। भारतीय सस्कृति के प्रखर चितक स्व० राममनोहरजी लोहिया की परिकल्पना का मूत रूप दिया जा रहा है यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

रामायण मेला के अन्तगत 'रामकथा शोध-सस्थान स्थापित करने का निणय अत्यन्त महत्वपूण है। इसके चार अगो के बारे म तो सोचा ही गया है इसके अतिरिक्त एक अग रामायण सम्बन्धित कला चित्रो दुर्लभ प्रतिमाओ का भी रखिए। विश्व के प्राय समस्त देशो म यह दुर्लभ सामग्री बिखरी हुई है। पिछले दिनो रूस म कुछ ऐसे मिट्टी के सुन्दर पात्र प्राप्त हुए है जिन पर रामकथा के अनेक दृश्य अकित हैं। इस सम्बन्ध म नवनीत म एक सचित्र लेख भी आया था वह आपकी दृष्टि म आया होगा ?

आप उचित समझें तो इस सम्बन्ध म दिल्ली स्थित रूस की Chancery म लिखा पढ़ी करें। रूस की चासरी का पता निम्न है
7 J Bagh New Delhi 3

इसके अतिरिक्त विश्व की जिन जिन भाषाओ म रामायण का अनुवाद हुआ है, वे सब अनुवाद भी मगायें।

आशा है आप स्वस्थ होगे। पत्र दें।

विश्व भाषाओ म अनूदित पुस्तकें उन देशो के दूतावासो स पत्र-व्यवहार कर नि शुल्क मगाई जा सकती है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

श्री बाबूलालजी गग
सयोजक
रामायण मेला योजना समिति
चित्रकूटधाम

कन्हैयालाल सेठिया कलकत्ता

दिनांक १८.५.१९७३

प्रिय श्री गगजी

आपका १६.५ का पत्र तथा रामायण मेला एक अपील मिला। प्रसन्नता हुई। आप इस सम्बन्ध में राजदूतावासों से सम्पर्क कर रहे हैं जान कर प्रसन्नता हुई। भारत के विशाल सांस्कृतिक साम्राज्य को पुनः जोड़ने का यह रामायण मेला महान अवसर है। इस सम्बन्ध में मेरे निम्न सुझाव और भेज रहा हूं

१ दक्षिण पूर्वी एशिया के समस्त देशों के प्रधानों तथा वहां की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थाओं को मेले में सम्मिलित होने तथा रामायण से सम्बन्धित सामग्री भिजवाने के लिए लिखें। विशेष कर इन्डोनेशिया मलयेशिया हिन्द चीन कम्बोडिया लाओस स्याम (थाईलैण्ड) बर्मा और सिंगापुर में रामायण मेले के सम्बन्ध में एक प्रतिनिधि मंडल भेजिए। यह प्रतिनिधि मंडल वहाँ के सर्वोच्च राजपुरुषों और सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्पर्क कर वहाँ उपलब्ध बहुमूल्य सामग्री प्राप्त करे और इन देशों के अध्यक्षों अथवा सम्राटों को मेले में उपस्थित होने के लिए विशेष रूप से निमंत्रित करे। अच्छा हो यदि रहे कि भारत सरकार रामायण मेले के लिए राष्ट्रपति श्री गिरि की अध्यक्षता में एक कमेटी का निर्माण करे और राज्य स्तर पर ही उपरोक्त उल्लेखित देशों के राजपुरुषों से सम्बन्ध स्थापित करें। रामायण मेले के आयोजकों का एक प्रतिनिधि मंडल राष्ट्रपति श्री गिरि और प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी से मिल कर इस सम्बन्ध में विचार विमर्श करे।

२ नेपाल अफगानिस्तान तथा श्रीलंका को जो हमारे पड़ोसी देश हैं तथा सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से भारत के मित्र हैं रामायण मेले की सूचना भेजिए तथा वहां के सम्राटों और प्रधान मंत्रियों को आमन्त्रित कीजिए।

३ रांची के फादर कामिल बुल्के को मेला कमेटी में लीजिए और उनके माध्यम से रामायण मेले के बारे में योरप के देशों से सम्पर्क कीजिए।

४ रूस की रामायण के महान ग्रन्थ में बहुत दिलचस्पी है। रूस के ही एक भाग तुर्किस्तान में खोतानी भाषा की रामायण की रचना हुई है। रूस के दूतावास के माध्यम से इस बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

५ उपरोक्त सब देशा के 'रामायण प्रेमियों' के 'रामायण मेले' के अवसर पर सन्देश मगाइए।

६ मेले की हिन्दी अंग्रेजी तथा भारत के विधान मे स्वीकृत सब भाषाओं म स्मारिका निकालिये। विशेषकर तमिल मे अवश्य निकालिए और तमिल के रामायण प्रेमी विद्वानो को अधिक से अधिक सख्या म आमन्त्रित कीजिए। जिससे कि इन वर्षो मे राजनैतिक स्वार्थ की दष्टि से रामायण के सम्बन्ध म जो असत्य प्रचार वहा हुआ है, उसका निराकरण हो सके।

७ बौद्ध और जैना का अधिक स अधिक सख्या मे मेला कमेटी म सदस्य के रूप मे ले।

बौद्धो की ओर से भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा जैनो की ओर स साहू शान्तिप्रसादजी जैन और श्री जैनेन्द्र कुमार जैन (हिन्दी के महान विचारक) आदि के नाम मेरे ध्यान मे है। सिखो को भी कमेटी म लें।

मैं कलकत्ते म अपने मित्रो के बीच रामायण मेले की चर्चा बराबर कर रहा हूँ। इस आयोजन के प्रति जन साधारण मे बहुत उत्साह है।

योग्य सेवा--

विनम्र
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा म,
सयोजक जी
'रामायण मेला' योजना समिति
चित्रकूटधाम

कन्हैयालाल सेठिया

सठिया ट्रेडिंग क०
फान २३६३२४
२३११३०

दिनाक १६ ८ १९७६

प्रिय भाइ गगजी

इस पत्र के साथ विश्व रामायण मले के सम्ब ध म इसी रामनवमी का श्री घनश्यामदासजी बिरला का लिये पत्र की प्रतिलिपि आप का जानकारी के लिये भेज रहा हू।

इस पत्र की प्रतिलिपि मने पूज्य जिनाजा भावजी का एव माननीय कमलापतिजी त्रिपाठी का भी भेजी है।

मरा ७/४ का काड आप का यथा समय मिल गया हागा ? पत्र की पहुँच तथा अपने विचार स अवगत करें।

विनीत
कन्हैयालाल सठिया

श्री बाबूलालजी गग
भारती भवन
P O KARWI
Distt Banda U P

कन्हैयालाल सेठिया

मठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन कलकत्ता १
दूरभाष २३ ६३२४
२३ ११३०

दिनांक २४ ५ १९७६

प्रिय भाई गगजी,

आप का ६/५/७६ का पत्र यथासमय मिला प्रसन्नता हुई।

श्रीमती इन्दिरा गाधी का दिये गये पत्र की प्रतिलिपि इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ। पूज्य विनोबाजी एव श्री घनश्यामदासजी बिडला के जो प्रत्युत्तर आये हैं उनका उल्लेख श्रीमती इन्दिरा गाधी के पत्र म न कर दिया है आप प्रतिलिपि म पढेंगे ही।

आप स्वस्थ और सानन्द होंगे ?

पत्र की पहुँच दें।

विनीत,
कन्हैयालाल सठिया

सेवा म
श्री बाबूलालजी गग
भारती भवन
करवी (चित्रकूटधाम)
बादा

कन्हैयालाल सेठिया

सेठिया ट्रेडिंग क०
३, मैंगा लेन, कलकत्ता १
दूरभाष २३ ६३२४
२३-११३०

दिनांक २ ९ ७६

प्रिय भाई गगजी

प्रधानमन्त्री जी का विश्व रामायण मेले के सन्दभ म दिये गये मेरे १७ मई १९७६ के पत्र की प्रतिलिपि आप को यथासमय मिल गई होगी। पहुँच का समाचार नही मिला।

उपरोक्त सन्दभ म भारत सरकार क सस्कृति विभाग की ओर स प्रधानमन्त्री जी को दिये गये मेरे पत्र का उत्तर कल मिला है। उक्त पत्र के सन्दभ म मैंने पुन प्रधानमन्त्री जी को जो पत्र दिया है उसकी प्रतिलिपि इस पत्र क साथ सलग्न कर आप की जानकारी के लिये भेज रहा हू।

पत्र की प्राप्ति की सूचना दें।

आप स्वस्थ होगे।

विनीत,
कन्हैयालाल सेठिया

श्री बाबूलाराजा गग
भारती भवन
पो० कर्वी
जिला—बादा (उ० प्र०)

कन्हैयालाल सेठिया

सठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन कलकत्ता १
दूरभाष २३ ६३२४
२३-११३०

दिनाक १७-४ १९७४

वन्धुवर जोशीजी,

एक महत्वपूर्ण सुझाव को क्रियान्वित करने के लिए यह व्यक्तिगत अनुरोध पत्र लिख रहा हूँ।

१५ अगस्त १९४७ को (राजस्थान म हुई जनक्राति का अभिलेख तथा शापस्थ लोकनेताओ के चित्र ताम्र पत्रो पर अकित करा कर) कालपात्र म चित्तौड के दुग मे गाडे जाने चाहिए/स्व० जयनारायण व्यास माणिक्यलाल वर्मा अजुनलाल सेठी, मोतीलाल तेजावत जमनालाल बजाज आदि के चित्र कालपात्र मे रखे जाय।

मैं चाहता हूँ कि यह स्मरणीय योजना आप के शासन म ही क्रियान्वित हो और भारत के प्रधान मत्री के हाथो से काल पात्र रखवाया जाय।

कलकत्ते के प्रस्तावित राजस्थान भवन के लिए राजस्थान राज्य की ओर स अपेक्षित पाच लाख के अनुदान के स्वीकृति पत्र की प्रतीक्षा है।

आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होगें।

योग्य सेवा-पत्रोत्तर दें।

विनीत,
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा म —
माननीय हरिदेवजी जोशी,
मुख्य मत्री, राजस्थान

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३, मगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक १६ . १९९५

प्रिय श्री जोशीजी,

सादर अभिवादन। मेरा बधाई का पत्र आप को यथासमय प्राप्त हुआ होगा।

राजस्थान के समग्र विकास के लिए निम्न महत्वपूर्ण विषयों की ओर मैं आप का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहता हूँ --

१ गंगा के अतिरिक्त जल को यमुना में प्रवाहित कर उस नरोरा के पास से लिफ्ट सिस्टम द्वारा राजस्थान के भरतपुर अलवर झुंझनूं सीकर चूरू एवं नागौर क्षेत्र को सिंचाई एवं पेय जल के लिये दिये जाने के बारे में स्व० इंदिराजी को मैंने १९७२ में एक विस्तृत ज्ञापन दिया था एवं इस सम्बन्ध में मैं भारत सरकार से बराबर पत्र व्यवहार करता रहा था उक्त सन्दर्भ में भूतपूर्व सिंचाई राज्य मंत्री श्री रामनिवासजी मिर्धा ने अपने पत्र द्वारा मुझे सूचित किया था कि इस सुझाव की पूरी जांच पड़ताल करने के लिये भारत सरकार ने १२ मई १९८३ को एक विशेषज्ञ समिति गठित कर दी है। मैं आप की जानकारी के लिये श्री मिर्धा के पत्र की एक प्रति लिपि भी इस पत्र के साथ संलग्न कर भेज रहा हूँ। आशा है आप इस सम्बन्ध में विशेषज्ञ समिति के समक्ष राजस्थान का पक्ष प्रबलता से रखने का निर्देश सम्बन्धित विभाग को देंगे।

२ नर्मदा परियोजना को क्रियान्वित करने के सम्बन्ध में मैंने पिछले दिनों केन्द्रीय कृषि एवं सिंचाई मंत्री श्री बूटा सिंह को एक पत्र दिया था प्रत्युत्तर में उन्होंने मुझे लिखा है कि वे इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करेंगे। उनके पत्र की प्रति लिपि भी मैं आपकी जानकारी के लिये इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

३ दन्गिा गाधा नहर के काम म और भी तेजी लाई जाय और राजस्थान के समस्त मरु अचल म जनता एव पशुधन को पय जल उपलब्ध कराने की याजना को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाय।

४ राजस्थान के भूगर्भ म विशेष कर बीकानेर सीकर, झूनझूनू तथा जयसलमेर म मीठे पानी के अथाह जल भडार मिलने की सम्भावना है अत इन छिपे भडारो की पूरी जाच पडताल आधुनिक (Drilling Machines से की जानी अपेक्षित है।

५ राजस्थान म पिछले वर्षो म वन सम्पदा का भारी विनाश हुआ है। वृक्षो की अधाधुध कटाई के कारण वर्षा का औसत कम हो गया है, धरती की उवरा शक्ति की क्षति पहुँची है तथा इकालोजिकल सन्तुलन बिगड गया है। अत राज्य सरकार को याजनाबद्ध तरीके से सघन वन लगाने और वनो के सवधन के काम को प्राथमिकता देनी चाहिये। पिछले वर्षो म मैं बराबर भूतपूव मुख्य मत्री श्री भरोसिहजी तथा श्री शिवचरणजी माथुर को इस सम्बन्ध म लिखता रहा हूँ।

राजस्थान के कोटा क्षेत्र म मने अनेक चन्दन के वृक्ष देखे है और वहा की भूमि म चन्दन के पेड सहज रूप से पनपते है। उस क्षेत्र म तथा जयपुर के क्षेत्र म व्यवसायिक कृषि से चदन के वन लगाये जाय तो राजस्थान सरकार के लिये आय का एक बडा स्रोत खुल जायेगा। मध्य प्रदेश सरकार ने मसूर राज्य म चदन की पौध एव बीज लाकर विस्तृत चन्दन वन लगाये थे और पहली ही कटाई म करोडो रुपये अर्जित किये थे। मने इस सम्बन्ध म एक समाचार का कतरन भी श्री शिवचरण माथुर को भेजा थी।

पिछले वर्ष जब मैं हृदय आघात के कारण जयपुर म था तो श्री जगन्नाथजी जाटू जयपुर की एक नर्सरी के अधिकारी को लेकर मेरे पास अस्पताल म आये थे। नर्सरी के उक्त अधिकारी ने मुझे बताया कि नर्सरी म आठ आठ फुट के चदन के पन्द्रह हजार पौधे हैं और सब स्वस्थ है। उन्होने मुझे नर्सरी चलने का आग्रह किया पर मैं उस समय कही आने जाने की स्थिति म नहा था। आप भी उस समय जब मेरी सभाल लेने के लिये अस्पताल पधारे थे तो मैंने भी आप से चदन के वन एव युकलिपटिस के

वन लगाने के बार म चचा की थी। आप भी वना व विनाश स चिन्तित थे और आपने मुझे यह भी बताया था कि युकलिपटिस के पेडो क लगाये जाने स भूमि क अनउवर हा जाने की जा शका था उस अब विशेषज्ञ समिति ने निराधार बताया है। आध्रप्रदश कनाटक एव हमारे पडोसी राज्य हरियाणा म विस्तृत भू भाग म युकलिपटिस क वक्ष लगाये गये है और इन पडो की छाल, लकडी तथा तेल स इन राज्या को भारी आथिक उपलब्धि हुई है। आशा है आप की सरकार वन सम्पदा के सवधन के लिये अपेक्षित कदम उठायेगा।

६ राजस्थान म भविष्य म पचास वर्षों तक बिजली का अभाव नही हो इस दृष्टि से ताप चालित विद्युत उत्पादक सयत्र राजस्थान के पाँचा सभागा म उपयुक्त स्थाना पर लगाये जाने चाहिये। राजस्थान मे नागौर जोधपुर बीकानेर आदि म लिग्नाईट के विशाल भडारा का पता चला है और इनके उपयोग स लम्बे समय तक बिजली समस्या का समाधान हा सकेगा। राजस्थान बिजली की दृष्टि स परमुखापेक्षी नही रहे तो यह एक बडी उपलब्धि होगा।

राजस्थान सौर ऊर्जा का प्रदेश है अत सौर ऊर्जा का विद्युत म परिवर्तित करने क लिय एक विशषज्ञा की समिति गठित कर इस सुझाव पर विचार किया जाना चाहिये।

७ स्वतत्रता क बाद राजस्थान म रेलमार्गों का विकास नही क बराबर हुआ है। राजस्थान सीमा प्रदेश है। इस दृष्टि स राजस्थान के महत्वपूर्ण नगरो का बडी रेल लाइन स जोडा जाना आवश्यक है। राजस्थान के औद्योगिक विकास क लिये भी यह अत्यन्त जरूरी है कि राजस्थान के मुख्य नगरो को देश क अय भागा स बडी रेल लाईन से जोडा जाय। इस सम्बध म मन रेल मत्री श्री बशीलालजी को जो पत्र दिया था उसक उत्तर म श्री बूटा सिहजी क माध्यम स मुझे रेल मत्रालय का पत्र मिला है जिसम उन्होने सन्दभित विकास क बारे म पूरी जानकारी चाही है। म रेल मत्रालय क पत्र के उत्तर म जो पत्र तयार कर रहा हूँ उसकी प्रतिलिपि यथासमय आप को भेजूगा। राज्य सरकार के द्वारा भी इस सम्बध म रेल मत्रालय का ध्यान आकर्षित करने क लिये आवश्यक सूचना दी जानी अपेक्षित है।

८ राजस्थानी भाषा को संविधान में मान्यता दिलाने के लिये राजस्थान विधान सभा द्वारा अनुशंसा प्रस्ताव स्वीकृत कर केन्द्र को भिजवाया जाना चाहिये। राजस्थानी भाषा को मान्यता दिये जाने से ही राजस्थान के व्यक्तित्व को भारतीय स्तर पर स्वीकार किया जायेगा। राजस्थान की सभी आंचलिक भाषाओं से समिश्रित जो भाषा है वह राजस्थानी भाषा है। राजस्थानी किसी अंचल विशेष की भाषा नहीं है। राजस्थान की बहुसंख्यक जनता तथा राजस्थान से बाहर बसे तीन करोड़ प्रवासी एवं हरियाणा एवं मालवे में इन्दौर तक बोली और लिखी जाने वाली भाषा राजस्थानी भाषा है। आधुनिक राजस्थानी का साहित्य किसी भी अन्य भाषा के साहित्य की तुलना में कम नहीं है। राजस्थानी भाषा के स्वरूप के बारे में उठाये गये सभी प्रश्नों का उत्तर मेरी राजस्थानी भाषा की कृति 'मायड रो हेलो' में है। मायड रो हेलो की प्रति आप को भी भिजवाई थी जिसकी प्राप्ति सूचना आपने मुझे यथासमय दी थी। आशा है आप राजस्थानी भाषा को मान्यता देकर प्रान्त को उसका सांस्कृतिक व्यक्तित्व प्रदान करेंगे।

९ राजस्थानी साहित्य संस्कृति अकादमी के नाम में से संस्कृति शब्द हटा दिया जाना चाहिये। साहित्य स्वयं ही इतनी विराट विधा है कि उसे संस्कृति की बैशाखी की आवश्यकता नहीं है। संस्कृति शब्द लगाये जाने के कारण अकादमी का मूल उद्देश्य साहित्य गौण हो गया है और संस्कृति के नाम पर लोक गीत लोक नृत्य मुख्य हो गये हैं। किसी भी साहित्य की अकादमी के साथ संस्कृति शब्द नहीं लगाया है तब राजस्थानी साहित्य अकादमी के साथ संस्कृति को जोड़ने का कोई औचित्य नहीं है। संगीत अकादमी नाटक अकादमी सभी अकादमियां अपने मुख्य उद्देश्य से सम्बन्धित है फिर राजस्थानी साहित्य अकादमी के साथ संस्कृति का पुछल्ला क्या? राज्य सरकार चाहे तो संस्कृति की अलग अकादमी गठित कर दे या संस्कृति को पर्यटन विभाग से सम्बन्धित कर दे। इस सम्बन्ध में श्री पूनमचन्दजी बिश्नोई जब गत अक्तूबर में कलकत्ता आये थे तो उनसे मेरी बात हुई थी और वे मेरे विचार से सहमत थे। उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं जयपुर जाते ही संशोधन का प्रस्ताव रख दूंगा और राजस्थानी साहित्य अकादमी के नाम के आगे से संस्कृति शब्द हटा दिया जायेगा। आशा है आप इस महत्वपूर्ण सुझाव पर विचार कर आवश्यक संशोधन के लिये निर्देश देंगे।

१० बीकानेर कोटा अजमेर म विश्व विद्यालयो की स्थापना की जानी चाहिये। इस सम्बन्ध म वहाँ की जनता की माग पूणत न्यायोचित है। बीकानेर विद्या की नगरी है और उस सभाग म अनेक महाविद्यालय है इसी तरह कोटा राजस्थान का औद्योगिक राजधानी है एव अजमेर का अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है। मध्य प्रात आबादी की दष्टि म राजस्थान स छोटा है पर वहा तेरह विश्वविद्यालय ह। आशा है आप अब तक विलम्बित इस न्याय की उक्त क्षत्रो की जनता को यथाशीघ्र प्रदान करेंगे।

११ भारत के महान पुण्य स्थल हल्दी घाटी के ऐतिहासिक स्थल पर उपयुक्त स्मारक एव योजनाबद्ध निर्माण के बारे म मेरी स्व० इन्दिराजी स १६ अक्टूबर १६८४ को विस्तत रूप म बात हुई थी। मैंने उस पुण्य स्थल की भावनाओं उपेक्षा म जब उन्हें अवगत कराया तो वे दुखी हुई और उन्होंने कहा था कि मैं दखगी। भूतपूर्व मुख्य मत्री श्री जगन्नाथजी पहाडिया शिवचरणजी माथुर तथा भूतपूर्व पयटन राज्य मत्री श्री बुलाकीरामजी वर्मा स भी इस सम्बन्ध म मेरी मौखिक बात कई बार हुई तथा निरन्तर पत्र व्यवहार भी हुआ। भूतपूर्व राज्य मत्री श्री वर्मा ने मुझे बताया था कि हल्दीघाटी स्थल की निर्माणबद्ध योजना के लिए करीब दस करोड रुपये का प्रोजक्ट केन्द्र को भेजा जाने को है। जब स्व० इन्दिराजी स मैंने बात कही तो उन्होंने कहा कि ऐसा कोई प्रस्ताव मेरे ध्यान म नहीं आया। स्व० इन्दिराजी की मत्यु के बाद उपरोक्त सन्दभ म भूतपूर्व मुख्य मत्री श्री शिवचरणजी माथुर को लिये गये मेरे पत्र की प्रतिलिपि भी आपकी जानकारी के लिये इस पत्र के साथ सलग्न कर भज रहा हूँ। आशा है आप हल्दीघाटी के पुण्य स्थल के उपयुक्त निर्माण के लिये आवश्यक प्रावधान करेंगे।

आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।

मेरे योग्य सेवा-पत्र की प्राप्ति की सूचना दें।

विनीत

कन्हैयालाल सेठिया

श्री हरिदेवजी जोशी
मुख्य मत्री राजस्थान राज्य जयपुर

सलग्न प्रतिलिपियाँ –
१ श्री रामनिवासजी मिर्धा के पत्र की प्रतिलिपि
२ श्री बूटा सिंहजी के पत्र की प्रतिलिपि
३ श्री शिवचरण माथुर को दिये गये पत्र की प्रतिलिपि

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष–८७०५२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १६ ६-१६८७

प्रिय श्री जोशीजी

नाथद्वारा के श्री नाथजी मंदिर में हरिजनों को प्रविष्ट नहीं होने देने तथा सीकर जिले में हुये सती कांड के सन्दर्भ में सरकार के शासनतंत्र ने अपने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं किया इसकी व्यापक प्रतिक्रिया देश में एवं समाचार पत्रों में हुई है।

भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं हो इसके लिये आपकी सरकार को शासनतंत्र को कड़ी ताकीद एवं आवश्यक निर्देश देने चाहिये। भविष्य में जहां भी ऐसी घटना घटित हो उसके लिये वहां के शासन तंत्र को जिम्मेवार ठहराया जाना चाहिये।

यह पत्र मैं कर्त्तव्य भावना से प्रेरित होकर आपको लिख रहा हूं आशा है आप गंभीरता से विचार करेंगे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री हरिदेव जोशी
मुख्य मंत्री राजस्थान
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया
रतन निवास, सुजानगढ

सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन, कलकत्ता १
फोन २३-६३२४
२३ ११३०
रामनवमी २०३३

आदरणीय घनश्यामदासजी

प्रणाम। आपके मंगलमय जन्म दिवस पर यह पत्र लिखने की मुझे विशेष प्रेरणा हुई है।

पिछले तीन चार वर्षों से चित्रकूटधाम में रामायण मेले का आयोजन हो रहा है और उसमें मेरा यत्किंचित योगदान बराबर रहता है। इस बार विश्व रामायण मेले की कल्पना मन में आया है और उसके साथ आपकी स्मृति भी।

विश्व के ६८ देशों में रामकथा के सूत्र बिखरे हुए हैं उन्हें विश्व रामायण मेले के माध्यम से पुन भारतीय संस्कृति के विराट संदर्भ में संयोजित किया जाय। प्रस्तावित विश्व रामायण मेले की संक्षिप्त रूप रेखा निम्न है –

१ विश्व रामायण मेला चित्रकूटधाम में २०३४ (वि० सं०) की रामनवमी पर आयोजित किया जाय।

२ राष्ट्रीय स्तर पर मेले की समिति का गठन किया जाय जिसकी अध्यक्ष प्रधान मंत्री बनें।

३ समिति में हिन्दु बौद्ध मुसलमान जैन सिक्ख तथा ईसाई समाज के मूर्धन्य मनीषियों को लिया जाय।

४ इंडोनेशिया मलेशिया आदि मुस्लिम राष्ट्रों में थाईलैण्ड लाओस कम्बोडिया वियतनाम बरमा श्रीलंका आदि बौद्ध राष्ट्रों में तथा नेपाल में रामकथा तथा रामलीलाएं अत्यन्त लोकप्रिय हैं अतः धर्मनिरपेक्षता की दृष्टि से भी यह आयोजन पूर्णतः सांस्कृतिक है। इस प्रस्तावित आयोजन में ऊपर उल्लेखित राष्ट्रों एवं उन सभी देशों के (जहाँ रामकथा लोकजीवन का अंग है) राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया जाय। इन राष्ट्रों के सांस्कृतिक मंत्रालय अपने

यहा क रामकथा मनीपिया का प्रतिनिधि मण्डल एव रामलीला मडलिया का मले म भेजें।

५ मले के प्रमुख आयोजन म विभिन्न देशा के रामकथा मनीपी रामायण पर निबन्ध-वाचन करें। इन निबन्धा की एक स्मारिका हिन्दी अंग्रेजी के अतिरिक्त उन सब देशा की भाषा म भी छप जो इस आयोजन म सम्मिलित हा।

६ मले म विभिन्न देशा की रामलीला मडलिया अपने अपने देश के परिवेश म रामलीला तथा उससे सम्बन्धित झाकिया का प्रदर्शन करें।

७ मले म विभिन्न देशा से प्राप्त रामकथा सम्बधी पुस्तका तथा विभिन्न भाषाआ म अनुदित रामायण के अनुवाद प्रदर्शित एव सुलभ किये जाय।

यह विशाल सास्कृतिक आयोजन तभी सम्भव है जबकि सत विनोबा भावे जी का आशीर्वाद और हमारी प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधीजी की सहमति हो। श्रीमती गाधी हमारे राष्ट्र की प्राण शक्ति हैं और उनका व्यक्तित्व ही भारत के विराट अतीत को वतमान म उपस्थित कर सकता है।

राष्ट्रपिता बापू ने रामनाम का मम समझा था और यही कारण है कि वे देश की अन्तश्चेतना म सदा के लिए अमर हो गए। पूज्य विनोबाजी का यही राम हरि नाम परम मत्र है।

आप देश के मूधन्य व्यक्तिया म स हैं और यह कल्पना आप ही के माध्यम स पूज्य बाबा एव श्रीमती इन्दिरा गाधी तक पहुँच सकती है ऐसा मरा मानना है। प० रमापति त्रिपाठी का चित्रकूट म आयोजित होनेवाले रामायण मेले म बराबर योगदान रहता है अत मुझे विश्वास है कि उनका सभी सभावित सहयोग इस कल्पना की सम्पूर्ति म आपको प्राप्त हो सकेगा।

अपने विचार स अवगत करने की कृपा करें।

विनीत,
कन्हैयालाल मठिया

श्री घनश्यामदास बिड़ला
बम्बई

कन्हैयालाल सेठिया

सेठिया ट्रेडिंग कं०
३, मैंगो लेन, कलकत्ता १
दूरभाष २२ ६३२८
२२ ११३०
दिनांक १७ ५ १९७६

आदरणीया इन्दिराजी

प्रणाम । पिछले तीन चार वर्षों से चित्रकूटधाम में रामायण मेले का आयोजन हो रहा है, उसमें मेरा घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। इस बार विश्व रामायण मेले की कल्पना मन में आई और साथ ही श्रीराम के मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप के सन्दर्भ में आपका अनुशासन प्रिय व्यक्तित्व भी।

विश्व के ६८ देशों में (जिनमें मुस्लिम और बौद्ध देश मुख्य रूप से हैं) रामकथा के सूत्र बिखरे हुए हैं उन्हें विश्व रामायण मेले के माध्यम से पुनः भारतीय संस्कृति के विराट सन्दर्भ में संयोजित करने की क्षमता आप में ही है। आप भारत की प्राणशक्ति हैं आप का वर्चस्व भारत के आदर्श अतीत को वर्तमान में उपस्थित कर सकने में समर्थ है। आप को महान संत पूज्य विनोबा भावेजी का सहज स्नेह और भारतीय जनता का अपार विश्वास प्राप्त है। विश्व रामायण मेले की मेरी प्रस्तावित योजना के प्रत्युत्तर में पूज्य विनोबा भावेजी की ओर से जो पत्र मिला है वह बहुत उत्साहपूर्ण है। पत्रलेखिका चि० शान्ति ने लिखा है कि 'बाबा ने कहा कि लिखो कि बाबा को बहुत पसन्द है।

प्रस्तावित आयोजन सम्पूर्ण सांस्कृतिक है अतः भारत की धर्म निरपेक्ष नीति के पूर्णतः अनुकूल है। वैसे भी भारत के राष्ट्रपति प्रतिवर्ष दशहरे पर आयोजित उत्सव में दिल्ली के रामलीला मैदान में पधारते ही हैं।

विश्व रामायण मेले की संक्षिप्त रूप रेखा निम्न है –

१ विश्व रामायण मेला चित्रकूटधाम में वि० सं० २०३४ में रामनवमी पर आयोजित किया जाय।

२ राष्ट्रीय स्तर पर मेले की समिति का गठन किया जाय जिसकी अध्यक्षा प्रधानमंत्री बनें।

३ समिति में हिन्दु बौद्ध मुसलमान जैन सिक्ख पारसी तथा ईसाई समाज के मूर्धन्य मनीषियों को सदस्य रूप में लिया जाय।

४ इडानेशिया, मलशिया आदि मुस्लिम राष्ट्रा म थाईलैड लाआस कम्बाडिया वियतनाम, बरमा, श्रीलका आदि बौद्ध राष्ट्रा म तथा नेपाल म रामकथा तथा रामलीलाए अत्यत लाकप्रिय है। उल्लेखित राष्ट्रा एव उन सभी दशा क (जहा रामकथा लाक जीवन का अग है) राष्ट्राध्यक्षा का आमत्रित किया जाय इन राष्ट्रा के सास्कृतिक मत्रालय अपने यहा के रामकथा मनीषिया का प्रतिनिधि मडल एव रामलीला मडलिया का मेले म भेज।

५ मले के प्रमुख आयाजन म विभिन्न दशा क रामकथा मनीषी रामकथा पर निबध वाचन करें। इन निबधा की एक स्मारिका हिदी अग्रेजी क अतिरिक्त उन सब दशा की भाषा म भी छपे जा इस आयाजन म सम्मिलित हा।

६ मले म विभिन्न दशा की रामलीला मडलिया अपने अपने दश क परिवेश म रामलीला तथा उसम सम्बधित झाकिया का प्रदशन कर।

७ मले म विभिन्न दशा म प्राप्त रामकथा सम्बधी पुस्तके तथा विभिन्न भाषाआ म अनुदित रामायण के अनुवाद प्रदर्शित एव सुलभ किय जाए। मरी सूचना क अनुसार विश्व की ४८ भाषाआ म रामायण क अनुवाद सुलभ हैं।

इस विशाल समाराह का क्रियान्वयन भारत के सास्कृतिक इतिहास का एक अविस्मरणीय पृष्ठ हागा।

राष्ट्रपिता बापू ने रामनाम का मम समझा था और यही कारण है कि वे इस दश का अन्तश्चतना म सदा क लिये अमर हा गये। पूज्य विनाबाजी का यही राम हरि नाम परम मत्र है।

प्रस्तावित याजना के सम्बध म श्री घनश्यामदासजी बिरला एव माननीय श्री प० कमलापति त्रिपाठी के प्रत्युत्तर पत्र भी मुझे प्राप्त हुय है। श्री बिरलाजी का याजना अच्छी लगी है।

आप अपने विचार स अवगत करने की कृपा करें।

विनीत
कन्हैयालाल सठिया

प्रतिलिपि सूचनाथ —

१ पूज्य विनाबा भावजी पवनार
२ श्री घनश्यामदास जी बिडला बम्बई
३ माननीय श्री प० कमलापतिजी त्रिपाठी, नई दिल्ली
४ मत्री जी रामायण मेला कमेटी चित्रकूट, बादा।

कन्हैयालाल सेठिया

मठिया हॉस्टिंग व०
३ मैंगा लेन कलकत्ता-१
दूरभाष २३ ६२२४
२३-११३०

दिनांक २ ८ १९७६

आदरणीया इन्दिराजी

भारत म विश्व रामायण मेला आयोजित करने के मेरे सुझाव के सम्बन्ध आपको १७ मई १९७६ को लिखे गये मेरे पत्र का उत्तर कल भारत सरकार के सस्कृति विभाग की ओर स मिला।

भारत को एक प्राणवान और जीवन्त राष्ट्र बनाने के सन्दर्भ म आपकी जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका है उसे अधिक रचनात्मक और प्रभावोत्पादक बनाने की दृष्टि से ही विश्व रामायण मेले का मेरा सुझाव है।

सस्कृति विभाग ने मुझे दिये गये पत्र म रामायण परम्परा पर दिसम्बर १९७५ म साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा आयोजित अतर राष्ट्रीय सगोष्ठी की ओर इगित किया है पर इस सगोष्ठी की उपलब्धि मात्र बुद्धिजीवीयो तक ही सीमित रही--जबकि भारत की करोडो-करोड जनता तक श्रीराम के जन-शासनप्रिय जीवन का सन्देश पहुचाया जाना चाहिये और यह प्रस्तावित विश्व रामायण मेले के माध्यम स ही सभव है।

आप भारतीय जीवन म रची पची है अत मुझे यह बताने की आवश्यकता नही है कि जन सस्कृति का हृदय भारत के लाखो-लाख ग्राम है जबकि दिल्ली तो शासनिक गतिविधियो का एक केन्द्र मात्र है। इस तथ्य को ध्यान म रखते हुए ही मेले को चित्रकूट म आयोजित करने का सुझाव दिया गया है।

आशा है आपका सुविचारित चिन्तन भारत सरकार के सस्कृति विभाग को पुन इस प्रश्न पर समग्र दृष्टि स सोचने के लिये प्रेरित करेगा।

पत्र की पहुँच दगी तो आभारी हूगा।

विनीत,
कन्हैयालाल सेठिया
सदस्य साहित्य अकादमी परामर्श मडल
(राजस्थानी भाषा)

प्रतिलिपि
१ माननीय प० कमलापति जी त्रिपाठी नई दिल्ली
२ आचार्य विनोबा भावेजी पवनार
३ श्री घनश्यामदासजी बिड़ला बम्बई
४ सस्कृति विभाग भारत सरकार नई दिल्ली
५ श्री बाबूलालजी गर्ग चित्रकूट।

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १६ ४ १९८५

प्रिय श्री नरेन्द्र सिंहजी,

आप इन्दिरा गांधी नहर एवं पर्यटन मंत्री नियुक्त हुए यह जानकर प्रसन्नता हुई।

आपके कर्मठ नेतृत्व मे राजस्थान के समग्र मरु भागीय अंचल म इन्दिरा गांधी नहर का पानी यथा शीघ्र पहुंचेगा ऐसी आशा है।

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान का बहुत विकास सम्भव है। पुराने पर्यटन स्थलों के साथ ही साथ नये पर्यटन स्थलो का समुचित विकास और संरक्षण किया जाय तो पर्यटकों की संख्या म आशातीत वृद्धि हो सकती है। प्रकृति अपने समग्र रूप म राजस्थान म व्यक्त हुई है। कहीं सैकडों मीलो तक सुनहरे धोरे हैं तो कहीं सघन वन पहाड और नदी नाले हैं।

विशाल दुर्गो, स्थापत्य कला के प्रतीक मन्दिरों तथा कलात्मक हवेलियों स राजस्थान पटा पडा है। निम्न सुझावों की ओर मैं आपका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहता हू –

१ आबू का क्षेत्र आज स सौ वर्ष पहल तक सिंहो का प्राकृतिक वास-स्थल Natural Habitat रहा है। अन्तिम सिंह सन् १८८० म एक अंग्रेज अफसर द्वारा मारा गया था। राजस्थान म सिंहो का अभयारण्य नहीं है। आबू के क्षेत्र मे गिर के जंगलो से सिंहो के जोडे लाकर सिंहो को पुनर्वासित किया जा सकता है। आबू के प्राकृतिक दृष्टि से सुन्दर क्षेत्र म सिंहो का अभयारण्य पर्यटकों के लिये एक विशेष आकर्षण हो सकता है। पिछले वर्षो म अरावली के सघन जंगलों की अंधा धुंध कटाई के कारण पहाड नंगे हो गये है पानरवा का सघन जंगल विनष्ट प्राय है अत वनो का पुन संवर्धन होने से इकोलोजीकल सन्तुलन भी स्वत ही हो जायेगा।

२ कोटा के समीप दर्रा का अभयारण्य अयन्त शोचनीय स्थिति म है। आज से बीस वर्ष पहले तक इस Sanctuary म दसों शेर और चीते थे पर अब वहा शायद शेर नहीं रह है। इस अभयारण्य को पुनर्वासित किया जाना चाहिये यह शेरों के लिए उपयुक्त वास भूमि है।

३ छापर का ताल (जिला चुरू) दुर्लभ कृष्णमृग का आवास स्थल है। भारत भर म छापर के कृष्णमृग वन जसे मृगवन एक दो ही है। इस मृगवन म हिरणो की समुचित सुरक्षा का अभाव है। जब तब काले हिरणो की शिकार की भी बात सुनी जाती हैं। पिछली बार जून म इस क्षेत्र म गया था तो मुझे बताया गया कि चोरी छिपे मारे गये काले हिरणो का मास अस्सी रुपया किलो म बिकता है। छापर के मृग वन म जुडी हुई गोपालपुर की डूगर की श्रेणिया हैं। यहा सफेद मोर का Introduce किया जा सकता है। मैंने छापर के विशाल ताल मे सारस पक्षी भी देखे थे। अत उस मृगवन के क्षेत्र म सफेद मोर और सारस पक्षियो का सरक्षण किया जाय तो पर्यटको के लिये यह अतिरिक्त आकर्षण हो सकता है।

४ हल्दीघाटी के पावन स्थल की जो शोचनीय स्थिति है उसम मैंने स्व० इन्दिराजी गाधी को १६ अक्तूबर ८४ को पूरी तरह स अवगत कराया था। उन्होने चिन्ता व्यक्त की और कहा कि म देखूगी। इस सम्बन्ध म मैं बराबर राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मत्रियो श्री पहाडियाजी एव श्री शिवचरणजी माथुर को लिखता रहा हूँ और मौखिक रूप स भी कई बार बात हुई। भूतपूर्व पर्यटन राज्य मत्री श्री बुलाकीदास कल्ला ने मुझे यह भी कहा था कि राज्य सरकार शीघ्र ही हल्दीघाटी के ऐतिहासिक स्थल पर उपयुक्त स्मारक बनायेगा पर खेद है कि अभी तक इस दिशा म राज्य सरकार ने कोई भी कदम नहीं उठाया है। अभी मैंने पिछले दिनो राजस्थान के मुख्यमत्री श्री हरदेवजी जोशी को भी विस्तारपूर्वक लिखा।

मेरा सुझाव है कि हल्दीघाटी के मुख्य स्थल रक्त तलाई पर लाल गुलाबो का विशाल बाग लगाया जाय और एक सुन्दर म्यूजियम भवन बनाया जाय जिसम हल्दीघाटी के युद्ध के Panels Murals एव महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री रखी जाय।

चेतक की समाधि भी पूरी तरह स उपेक्षित है। चेतक की प्रतिमा के चारो ओर लगाई रेलिंग टूट गई है और बाग उजडा हुआ पडा है। हल्दीघाटी

और चेतक का ममाधि को देखने के लिये जा भा पयटक आते है उन्हें बडी निराशा होती है।

५ चितौड के विश्व प्रसिद्ध दुग का पयटन स्थल की दृष्टि से ममुचित विकाम किया जाय और उसे पयटन के मानचित्र म महत्वपूण स्थान दिया जाय।

६ कोटा के आसपास व अचल म तीन चार हजार वप पुराने स्थापत्य कला से विभूषित अनुपम मन्दिर सरक्षण के अभाव मे खडहर बनते जा रहे है और वहा की कला कतियो का चुराये जाने की भा बात मुनने म आती हैं। इन्हे सरक्षित किया जाय तो ये सब दशनीय स्थल बन सकते है।

७ जमलमर तथा शेखावाटी क्षेत्र मे अनुपम कलात्मक हवेलिया है। अभी फ्रास के कलाविदा ने शेखावाटी अचल की हवेलिया क भित्ति चित्रा का अति सुदर अलबम प्रकाशित किया है। पयटन विभाग पयटका का इनके बारे म भी अपेक्षित जानकारी दे जिसस इन क्षेत्रा म भी पयटका को आकर्षित किया जा मके।

आशा है आप इन मुझावा पर विचार करेंगे आर अपने विचार मे मुझ अवगत करेंगे।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

प्रतिलिपि
श्री अशाक गहलात
राज्य मत्री पयटन
नई दिल्ली
श्री के० एल० मीना
निर्देशक, राजस्थान पयटन विभाग
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाप ४७०५२५
मठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन,
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक १८ ४ १९८५

प्रिय राजावजी

क्षत्रिय मास्कृतिक परिपदा के गठन का आप की याजना वहुत महत्वपूर्ण है। आज मवस वडा सकट सास्कृतिक मकट है। मस्कृति ही मानवाय सवेदना का सूखने स वचा सकती है।

भारत के पश्चिमी क्षेत्र की सास्कृतिक परिपद राजस्थान म स्थापित की जाना चाहिये। महाराष्ट्र, गुजरात राजस्थान हरियाणा एव मध्य भारत सास्कृतिक दृष्टि स एक इकाई है। मराठी गुजराती सौरठी मालवी एव हरियाणवी भापाए राजस्थानी भापा क ममुदाय का है।

आशा है आप मर सुझाव पर विचार करगे। पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

विनीत
कन्हैयालाल मठिया

श्री राजीव गाधी
प्रधान मत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति, साहित्य मनीषा

दूरभाष ४७०५२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक २२-७ ८५

प्रिय श्री राजीवजी

आप के निर्देशानुसार आप को दिये गये मेरे पत्र के प्रत्युत्तर में भारत सरकार के संस्कृति विभाग का दिनांक ४ जुलाई ८५ का पत्र मुझे प्राप्त हुआ।

उत्तरी क्षेत्र के क्षेत्रिय सांस्कृतिक केन्द्र के साथ राजस्थान और हरियाणा को शामिल किया गया है यह निर्णय संगत नहीं हुआ है।

क्षेत्रिय सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना बहुत महत्वपूर्ण है अतः इन केन्द्रों की जो इकाई गठित की जाय उसका आधार सांस्कृतिक और भाषायी समानता होना चाहिये।

इस दृष्टि से राजस्थान और हरियाणा को महाराष्ट्र, गुजरात एवं मध्यप्रदेश की इकाई के साथ संयुक्त किया जाना उचित है।

आशा है आप मेरे सुझाव पर पुनर्विचार करेंगे और क्षेत्रिय सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना करते समय सांस्कृतिक और भाषायी समानता वाले प्रदेशों की ही सांस्कृतिक इकाई बनाने का सम्बन्धित विभाग को आवश्यक निर्देश देंगे।

पत्र की प्राप्ति सूचना अपेक्षित है।

विनीत,
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा में
श्री राजीव गांधी
प्रधान मंत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७०५१५
सठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनाक ४ १ १९८६

प्रिय राजीवजी

आपने अपने अवकाश का समय रणथम्भौर के अभयारण्य म बिताया तथा इस उपेक्षित अभयारण्य क समुचित विकास क लिये आवश्यक निर्देश दिये यह समाचार पत्रो म पढ कर प्रसन्नता हुई।

मैं इस पत्र द्वारा आप का ध्यान भारत के महान ऐतिहासिक स्थल हल्दीघाटी की शोचनीय उपेक्षा एव दुरावस्था की ओर आकर्षित करना चाहता हू।

जब मैं १६ अक्टूबर १९८४ को भारत की भूतपूर्व प्रधानमत्री श्रीमती इदिराजी गाधी म मिला था तब मैंने अपनी बातचात म उन्हें 'हल्दीघाटी' के पुण्य स्थल की शोचनीय दुरावस्था स भी पूरी तरह अवगत कराया था। उन्होंने ध्यानपूवक मरी सब बात सुनी और मुझे आश्वासन दिया था कि वे इस बार म देखेंगी।

आप देश के महान ऐतिहासिक मूल्यो के महत्व म तथा उनकी सुरक्षा म गहरी रुचि रखते है अत आपसे मरा अनुरोध है कि आप हल्दीघाटी के ऐतिहासिक पुण्य स्थल के समुचित योजनाबद्ध विकास क लिये राजस्थान सरकार को आवश्यक निर्देश दें।

पत्र की प्राप्ति सूचना अपेक्षित है।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा म
श्री राजाव गाधी
प्रधानमत्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया
माहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७०४१५
मठिया ट्रेडिंग क०
२ मैंगा रन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक १२ १९८६

प्रिय गजावजी,

आप का लिये गये मेरे १८/८/८४ एव २७/७/८५ क पत्रा म निखित विचारा के अनुमार माम्कृतिक केन्द्रा की इकाइया के बार म मरकारी तत्र द्वारा लिये गये असगत निणया पर पुनविचार कर गुजरात महाराष्ट्र एव राजस्थान का एक इकाई म गठित कर पश्चिमी माम्कृतिक केन्द्र का उदयपुर म स्थापना का निश्चय किया इमक लिये आपका हार्दिक बधाई।

हरियाणा का भी भाषा एव सम्कृति की दृष्टि म पश्चिमी माम्कृतिक केन्द्र के माथ जाडना उचित हागा।

इन्हा मास्कृतिक इकाईया का भविष्य म प्रशासनिक इकाईया बना दिया जाय ता इन इकाईया का मर्वांगीण विकाम द्रुतगति म हागा एेमा मरा विश्वास है।

याग्य मवा पत्रोत्तर का अपक्षा रहगी।

विनीत
कन्हैयालाल मठिया

श्री राजीव गाधी
प्रधानमत्री भारत
नई दिल्ली

नोट श्री सेठियाजी के सुझाव क अनुमार श्री राजीव गाधी ने पश्चिमी माम्कृतिक परिषद का पुनगठन किया उसके लिए दिये गये बधाई पत्र की प्रतिलिपि।

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७०५१५
सठिया ट्रेडिंग क०
३ अगा लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनाक १७ २ १९८६

प्रिय श्री राजीवजी

भारत के पुण्यस्थल हल्दीघाटा की शोचनीय स्थिति के सम्बन्ध म लिखा गया मेरा ४ जनवरी १९८६ का पत्र आपको यथासमय मिल गया होगा।

समाचार पत्रो के माध्यम स आपकी प्रस्तावित उदयपुर की यात्रा के बारे म जानकारी हुई।

मेरा अनुरोध है कि आप इस अवसर पर उपस्थित हल्दीघाटा के पुण्यस्थल पर भी जायें और उस अपेक्षित गरिमा प्रदान कर। हल्दीघाटी के समुचित विकास के लिये भी राज्य सरकार को आवश्यक निर्देश देने की कृपा करें।

योग्य सेवा।

विनीत
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा म
श्री राजीव गाधी
प्रधान मन्त्री भारत
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष-४७०५२५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक २३ ६ १९८६

प्रिय राजीवजी,

आपकी सरकार ने पर्वतीय विकास कार्यक्रम के अतर्गत राजस्थान की अरावली पर्वतमाला को सम्मिलित किया एवं मेवाड़ कम्पलैक्स के अंतर्गत हल्दीघाटी एवं अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों के विकास के लिये आर्थिक प्रावधान रखा इसके लिये हार्दिक बधाई।

राजस्थान में पेय जल की समस्या अत्यन्त विकट है। National Remote Sensing Agency सैटेलाईट टैक्नोलोजी द्वारा मरुभूमि के गर्भ में छिपे मीठे पानी के स्रोतों को Locate कर इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

आशा है आप उक्त संस्थान को राजस्थान में यथा शीघ्र सर्वेक्षण करने का आवश्यक निर्देश देंगें।

पत्र की प्राप्ति की सूचना दें।

विनीत,
कन्हैयालाल सेठिया

श्री राजीव गांधी
प्रधान मंत्री भारत
नई दिल्ली

नोट श्री सेठियाजी के सतत प्रयास से केन्द्रीय सरकार ने पर्वतीय विकास कार्यक्रम के अंतर्गत अरावली पर्वतमाला को सम्मिलित किया जिसके लिए उपरोक्त बधाई पत्र की प्राप्ति की सूचना प्रधान मंत्री के कार्यालय से दिनांक ११ ६ १९८६ के पत्र द्वारा प्राप्त हुई।

कन्हैयालाल सेठिया
साहित्य वाचस्पति

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१

दिनांक २३ १ १९८६

प्रिय भजनलालजी,

यह तो आप के ध्यान में ही है कि भारत सरकार ने भारत के पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण में सांस्कृतिक परिषदें स्थापित करने का निर्णय लिया है।

राजस्थान एवं हरियाणा को पंजाब जम्मू कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश के साथ उत्तरी सांस्कृतिक परिषद में सम्बन्धित किया था एवं पटियाला को उस परिषद का मुख्यालय बनाया गया था।

मैंने इस सन्दर्भ में भारत के प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी को लिखा था कि राजस्थान एवं हरियाणा की संस्कृति को एवं भाषा को उत्तरी क्षेत्र के प्रदेशों में मेल नहीं है अतः राजस्थान हरियाणा गुजरात महाराष्ट्र एवं मध्यभारत को जो सांस्कृतिक दृष्टि से एक इकाई है तथा भाषा की दृष्टि से गुजराती हरियाणवी बागड़ी मालवी सभी मारवाड़ी भाषा से निसृत हैं एवं मराठी तथा कोंकणी भाषाएं भी इन भाषाओं के अधिक समीप हैं अतः इन प्रदेशों की पश्चिमी सांस्कृतिक परिषद बनाई जाय।

मेरे इस सम्बन्ध में किये गये पत्र व्यवहार से भारत सरकार ने राजस्थान गुजरात एवं महाराष्ट्र को एक सांस्कृतिक इकाई मानकर पश्चिमी सांस्कृतिक परिषद का गठन कर लिया है और इसका मुख्यालय उदयपुर में रखा गया है ऐसा समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ है।

हरियाणा को उपरोक्त इकाई के साथ नहीं लगाया गया है अतः सांस्कृतिक एवं भाषायी आधार पर हरियाणा को भी पश्चिमी सांस्कृतिक परिषद से सम्बन्धित किया जाना उचित है।

आशा है आप इस दिशा में आवश्यक कदम उठायेंगे।

सभव है कि कालान्तर मे ये सास्कृतिक इकाईया ही प्रशासनिक इकाईया (Administrative Units) बन जाय अत हरियाणा के भविष्य का ध्यान मे रखते हुये यह श्रेयस्कर होगा कि वह पश्चिमी सास्कृतिक इकाई स सम्बद्ध हो।

आप स्वस्थ और प्रसन्न हागे।

पत्र की प्राप्ति की सूचना अपक्षित है।

आपका
कन्हैयालाल सेठिया

सेवा मे
श्री भजनलालजी
मुख्य मत्री, हरियाणा राज्य
चडीगढ

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १० ७ १९८६

प्रिय अशोकजी

इस पत्र के साथ पश्चिमी बंगाल के पुरुलिया क्षेत्र के ग्राम पाकबीड़ा म यत्र तत्र बिखरी हुई अरक्षित बहुमूल्य जन प्रतिमाओं के सन्दर्भ म पश्चिमी बंगाल के सांस्कृतिक राज्य मंत्री श्री प्रभास फाडीकर से हुये साक्षात्कार का विवरण पत्र आप की जानकारी के लिये भेज रहा हू।

स्वर्गीय साहू शांति प्रसादजी ने श्री बाबूलाल जमादार के साथ स्वय इस क्षेत्र का भ्रमण किया था और श्री बाबूलाल जमादार स विस्तृत सर्वेक्षण भी कराया था। यहा के बिखेर अमूल्य शिल्प को सरक्षित करने म उन की गहरी अभिरुचि थी।

पाकबीड़ा म एक हजार फुट का कक्ष बना दिया जाय तो उसम मूर्तिया को सरक्षित किया जा सकता है। इस निर्माण के काय म दो लाख रुपये की लागत मात्र है।

आप जैन समाज के मूर्धन्य व्यक्तियो म स है अत यह काम आप सम्पन्न कराकर समस्त जन समाज की भावना को समादृत करेंगे ऐसा मुझे विश्वास है।

आप स्वस्थ होंगे। श्रीमती इन्दुजी स्वस्थ होंगी।

योग्य सेवा पत्र की प्राप्ति की सूचना अपेक्षित है।

आपका,
कन्हैयालाल सेठिया

श्री अशोकजी जन
नई दिल्ली

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३ मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक १० ६ १९८८

प्रिय श्री शिवचरणजी साहब,

गत १८ अप्रेल को आप से बीकानेर म मिल कर प्रसन्नता हुई।

आप से हल्दीघाटी की रक्त तलाई पर उपयुक्त स्मारक बनाने के सम्बन्ध मे चर्चा हुई थी। आप ने प्रस्तावित स्मारक के सम्बन्ध म मरे द्वारा बताये गये कुछ सुझाव भी अपनी डायरी म नोट किये थे तथा आप ने मुझे आश्वासन दिया था कि प्रताप जयन्ती के अवसर पर इस प्रस्तावित निर्माण की घोषणा कर दी जायेगी।

अब १७ जून को वह पुनीत दिवस आने को है। आप से अनुरोध है कि आप उस दिन हल्दीघाटी पधारें और इस राष्ट्रीय त्यौहार को राजकीय गरिमा प्रदान करें।

आप स्वस्थ होगे। मेरे योग्य सेवा।

पत्र की प्राप्ति की सूचना दें।

सादर आपका
कन्हैयालाल सेठिया

श्री शिवचरणजी माथुर
मुख्य मत्री, राजस्थान
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष ४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३, मैंगो लेन
कलकत्ता ७०० ००१
दिनांक ३० ७ १९८८

प्रिय श्री शिवचरणजी

हल्दीघाटी के रक्त तलाई स्थल पर प्रस्तावित स्मारक के सम्बन्ध में दिया हुआ मेरा रजिस्टर्ड पत्र आप को प्राप्त हुआ होगा। प्रताप जयन्ती पर इस सम्बन्ध में आप की घोषणा की प्रतीक्षा रही।

पंचायती चुनावों में कांग्रेस को नया वर्चस्व प्राप्त हुआ है। इस से आप की राजनैतिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है।

इसी तरह नगरपालिकाओं के चुनाव कराईये। इस से कांग्रेस की लोकतान्त्रिक छबि उजागर होगी।

सयोग से राज्य में सर्वत्र अच्छी वर्षा भी हो गई है। बुवाई के समाचार आशाजनक हैं। अकाल में आप की सरकार ने बहुत व्यापक रूप से सहायता का काम किया इसे सभी स्वीकार करते हैं।

राजस्थान में वृक्ष लगाने का कार्यक्रम पूरे जोर से करवाईये। जिलाधीशों तथा जिला प्रमुखों को विशेष निर्देश भिजवाने से वन संवर्धन का काम सघनता से होगा।

आप स्वस्थ होंगे। मेरे योग्य सेवा। पत्र दें।

आपका सादर,
कन्हैयालाल सेठिया

श्री शिवचरणजी माथुर
मुख्य मन्त्री राजस्थान
जयपुर

कन्हैयालाल सेठिया

दूरभाष-४७०५१५
सेठिया ट्रेडिंग क०
३, मैंगो लेन
कलकत्ता-७०० ००१
दिनांक १६-२ १९८६

प्रिय भगतजी,

दूरदर्शन पर प्रदर्शित रामायण और महाभारत के कथानक ने भारत के जनसाधारण का हृदय छू लिया है।

हमारी महान संस्कृति की जड़ें इस देश की मिट्टी में कितनी गहराई तक गई हुई हैं यह इस का प्रमाण है।

मेरा विनम्र निवेदन है कि तथागत बुद्ध के जीवनवृत्त को भी दूरदर्शन तैयार करवायें। भगवान बुद्ध की दिव्य वाणी ने भारत के सांस्कृतिक साम्राज्य का जो अभूतपूर्व विस्तार किया उसे दूरदर्शन पर प्रदर्शित किये जाने से स्वर्णिम अतीत के साथ वर्तमान की एक और कड़ी जुड़ जायेगी।

आज हिंसाग्रस्त विश्व के लिये बुद्ध की वाणी का विशेष महत्व है।

आशा है आप मेरे सुझाव पर गंभीरता से विचार करेंगे और अपनी भावना से मुझे अवगत करेंगे।

सादर
कन्हैयालाल सेठिया

श्री एच के एल भगत
Minister for Broadcasting
Govt of India
New Delhi

संस्मरण

महाप्राण इंदिराजी

—कन्हैयालाल सेठिया

१६ अक्टूबर १६८४ रो दिन अेक महताऊ दिन हो। बी दिन दिनुगै साढी आठ बज्या मैं इण जुग रै महान व्यक्तित्व अर भारत री प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी स्यूं मुलाकात करी। राजस्थानी भाषा नै संविधान में मानता देवण साम्हैं हलदीघाटी रै अतिहासिक स्थल पर ढंग रो स्मारक बणावण खातर अर केन्द्रीय मंत्रिमंडल में राजस्थान स्यूं केबिनेट स्तर रो मंत्री लेवण बाबत म्हारी सगली बातां उणां पूरै मनोयोग स्यूं सुणी अर वां पर विचार करण रो आश्वासन दियो। उणां बतायो कै राजस्थानी भाषा नै साहित्यिक मानता केन्द्रीय साहित्य अकादमी कानी सूं बारी प्रेरणा स्यूं इंदिराजी है। म्हैं इण सारू बारो आभार मान्यो।

हळदीघाटी रै पुण्य स्थल पर ढंग रो स्मारक निरमाण करावण रै म्हारै सुझाव नै उणां पूरै ध्यान सूं सुण्यो। अर कयो कै बारी निजर में राज्य सरकार कानी सूं इस्यो कोई प्रस्ताव नहीं आयो है। फेर भी मैं दख स्यूं।

इण मौकै जद म्हैं म्हारी पांच भाषावां में अनुदित पोथ्यां रो सेट जिणमें सैं स्यूं ऊपर म्हारी नवानतम राजस्थानी कृति मायड रो हेलो ही अर प्लास्टिक री कलात्मक मंजूषा में हलदीघाटी री पवित्र माटी भेंट करी तो बै घणा राजी हुया। बी मौकै उतारयोडो फोटो अब म्हारै ताइं अेक अमोलक यादगार बणगी है। राजस्थान स्यूं केबिनेट स्तर रो मंत्री लेवण बाबत उणां कयो 'कै अबै तो चुणाव नैडा आयग्या है इण वास्तै आगै देखी जासी। जिण अपणायत अर धीरप सागै उणां म्हारी बात सुणी वा देख र मैं घणो प्रभावित हुयो।

फेरूं २५ अक्टूबर १६८४ र दिन १, सफदरजंग वाली कोठी में राष्ट्रीय अेकता रै संदर्भ में अेक सावजनिक समारोह आयोजित हुयो, बी में मनै स्वागताध्यक्ष बणण रो अवसर मिल्यो अर उणां इण समारोह रो विधिवत उद्घाटण करयो। उणां इण मौकै राष्ट्रीय अेकता रो संदेश देवतां कयो 'कै राष्ट्र नैं हिंसा स्यूं ऊपर उठावण ताइं आपां नैं सगलां नैं भगवान महावीर री शिक्षावां पर अमल करणो चाइजै। धरम जात-पात अर सम्प्रदाय रा नकली

बाडा स्यू ऊपर उठ'र देस री अखडता नै सर्वोपरि मानणी चाइज। इण मौक मुनि नगराजजी अर मूधन्य चिंतक श्री जैनेंद्रजी ई आपरा महताऊ विचार परगट कर्‌या। पण आज ब मगली बाता सुपन र उनमान लखाव। गाधीजी री मौत पछै दूजी वार यू लागै जाण दस री आत्मा मरगी।

स्व इदिराजी सू म्हारा मै स्यू पैलडा मुलाकात १९५६ म जयपर म हुई ही। वी वखत बै युवक काग्रेस री अध्यक्षा ही। मच पर म्ह वारै लारै ई वठया हौ। बै जिण सहज भाव स्यू सगलै कायकर्तावा सू मिली उणस्यू म्हन लखायो, क वा मे उत्कृष्ट जन नेता रा सगला गुण मौजूद है जिका वानै आप र परिवार री परपरा स्यू विरासत म मिल्या है।

अतीत के झरोखे से

विश्वमित्र ३१/८/१९५५

वीकानेर म युवती सती हो गयी

बीकानेर ३० अगस्त। यहा पहुँचने वाली एक खबर के आधार पर ज्ञात हुआ है कि वीकानेर डिवीजन के वामण्या गाव म अपने पति की चिता म कूद कर एक युवती सती हो गयी। इस काय के लिए प्रोत्साहन देने के कारण पुलिस ने ११ व्यक्तियो को गिरफ्तार किया है। भीमसर थाना के दरोगा को मुअत्तल कर दिया गया है और उसके कार्यों की जाच की जा रही है। प्रेट

सन् १९५५ म सामती जुग रा टूटता मूल्या न पुनस्थापित करणै खातर सती प्रथा जिसी क्रूर प्रथा न पुनर्जीवित करण सारू राजस्थान रा की छत्रा म नाजोगा प्रयास हुया हा। म्हार छेत्र म दो च्यार महीना म ई तान महिलावा न धरमाध भीड भेली हू र पुलिस री मौजूदगी मैं जावती बाल नाखी। वामण्या र चारचा मे हुय इण काड सू म्हारी आत्मा कापगी अर म्ह इदिराजी न जिका बी वखत काग्रेस रा अध्यक्षा हा अेक कागद लिख्या अर इण सारू तुरत कारवाई करणै रो निवेदन कर्‌यो। व कती जागरूक र मवेदणसील हा इण बात रो पत्तो म्हनै तद लाग्यो जद म्ह म्हार जिल चूरू रा तत्कालान जिलाधाश श्री जगनाथसिह महता सू मिलणै वास्त गयो। श्री मेहता म्हारा हेताळू मित्र है अर अबार माध्यमिक

शिक्षा बोड राजस्थान रा अध्यक्ष है। उणा म्हन इदिराजी नै दियोड कागद बावत पूछ्यो अर कह्यो 'क आप म्हनै कैवता तो म्ह तुरत कायवाही कर दवतो। मै कह्या क वी काड सू मै अतो दुखी हा क सीधौ वान ई लिख दियो। जिलाधीश सू मिल र मै जिलै रा पुलिस अधीक्षक श्री मदनलाल कश्यप स्यू मिल्यो जका बा वखत ई विलायत सू आयोडा हा अर म्हारै स्यू अपरिचित हा। मै खुद री ओलखाण दीही ता व अेकदम गरम हू र बोल्या इदिरा गाधी नै कागद लिख्यौ, ब थै ई हो काइ ? म्ह अबार थान जेल म वद कर सकू। म्हारै मे ई बी वखत जवानी रौ जोश हा सो अेस पी सा व री धमकी सहन हुई कोनी। म कह्यौ— आप तो म्हन जेल मे वद करता करता करस्यौ अर म आपनै जेल म वद करवाय सकू हू। म्हारौ ओ पडूत्तर सुण'र ब ठडा पडग्या अर जिण थाणदार अर १३ सिपाया री मौजूदगी मे आ काड हुयौ हौ वान निलबित करणै रौ हुकम काढ दियौ। स्व इदिराजी सही रूप म अेक महामानव हा। बारो कोमल मन कोई अयाव होवतौ दख र वज्र रै उनमान कठोर हुय जावतो।

सन १९६२ मैं जद चीन भारत पर आक्रमण करयो तो बी वखत प्रकाशित म्हारी दो कवता चीन को ललकार अर रक्त दो रा कई सौ प्रत्या उणा खुद म्हन लिख र मगाई। वे अेक आदश दसभक्त अर भारतीय गरिमा री प्रति मूरत हा।

सन १९७२ मे १५ नवम्बर र दिन म्ह बान अेक विस्तत ज्ञापन भेज्यौ। बी म म्ह गगा र बाढ रै पाणो न जमना म नाख र लिफ्ट सिस्टम सू राजस्थान रै भरतपुर अलवर झूझणू सीकर चुरू अर नागौर जिला म पुगावण री अरज करी ही। म्है इण बाबत निरतर लिखापढी करतौ रह्यौ। म्हन हरख है 'क म्हारै सुझावा पर ध्यान देय र तत्कालीन सिचाई राज्य मत्री श्री रामनिवासजी मिर्धा म्हनै लिख्यौ क इण बाबत जाच पडताल करणै साम्ह १२ मई १९८३ न अेक विशषज्ञ समिति गठित करीजी है।

राजस्थान म पाणी री कती कमी है इण बात रो स्व इदिराजा न पूरौ अेहसास हौ इण कारण राजस्थान नहर रै निरमाण म उणा निजू रूप स्यू रुचि लेय र इण बाबत काम करवायो। वारा यादगार सरुप अब राजस्थान नहर रौ नाव इदिरा गाधी नहर' राख र राज-सरकार अर जनता वारै प्रति सही श्रद्धाजलि अरपण करी है।

१९७७ म जद स्व इदिराजी चुणाव हारगी ता मैं बा
ही 'क अबै बा नै गाधीजी रै ज्यू राजनीति स्यू दूर रैय'र ग।
सुपनै न साकार करणौ चाइजै। पडूत्तर म ब म्हनै कागद दय
म्हारी भावनावा री आदर कर। पूर्वाग्रह स्य मुगत हूण र या
मगल कामना खातर उणान जको ई सुझाव दिरीजतौ, उण पर व
करता।

१९८० म १९ नवबर नै बा र जलम दिन र मौक पर मैं अेक
बा नै निवेदन करयो क ब इण शुभ दिन पर आमिष भोजन रौ त्याग
सकलप लेव अर महान सम्राट अशोक री दाई ससार मे भारतीय सा
मूल्या रौ अेक उदारण पेश कर। बा र पारिवारिक जीवण सू जुड्या
व्यक्ति म्हन बतायौ 'क सजय री मौत हुया पछ इदिराजी आमिष भोजन
कर दियौ हो। इण सू ठा पड क बा न राष्ट्र री परपरा अर आदर्श सू पूरा
लगाव हा। १९८३ म रावी व्यास नदया स्यू राजस्थान नहर म निराजण वा
पाणी म कमी करण सारू का लोगा माग करी ता म ५ फरवरी १९८३ न
स्व इदिराजी नै कागद लिख र राजस्थान री तिरसी धरती र पाणी म कमी
नही करण री अरज करी।

स्व इन्दिराजी सही अरथा म महाप्राण हो। वार बिना भारत री कल्पना
करणी ई दोरी है! अब ता वे इदु सू सिंधु बणगी है ता मैं वा न विनम्र
श्रद्धाजलि अरपण करू।

नामानुक्रमणिका

१६७७ म जद स्व इंदिराजी चुणाव हारगी ता मैं वा न कागद दय नै लिखी हो 'क अब वा न गांधीजी रै ज्यू राजनीति स्यू दूर रय र 'ग्राम-स्वराज' र सुपन न साकार करणो चाइजै। पडूत्तर म व म्हनै कागद दय र लिख्यो हो 'क वै म्हारी भावनावा रो आदर करै। पूर्वाग्रह स्य मुगत हूण रै कारण दस री मगल कामना खातर उणान जका ई सुझाव दिरीजतो उण पर व विचार करता।

१६८० म १६ नवबर न वा र जलम दिन र मौक पर मैं अेक कागद लिख र वा न निवेदन करयो 'क वै इण शुभ दिन पर आमिष भोजन रो त्याग करण रो सकलप लेवै अर महान सम्राट अशोक री दाई ससार म भारतीय सास्कृतिक मूल्या रो अेक उदाहरण पेश कर। वा रै पारिवारिक जीवण सू जुड्या अेक विशेष व्यक्ति म्हन बतायो 'क सजय री मौत हुया पछै इंदिराजी आमिष भोजन रो त्याग कर दियो हो। इण सू ठा पडै क' वा न राष्ट्र री परपरा अर आदर्श सू पूरो लगाव हो। १६८३ म रावी व्यास नद्या स्यू राजस्थान नहर म दिरीजण वाल पाणी म कमी करण सारू की लागा माग करी ता मैं ५ फरवरी १६८३ नै स्व इन्दिराजी नै कागद लिख र राजस्थान री तिरसी धरती र पाणी म कमी नही करण री अरज करी।

स्व इंदिराजी सही अरथा म महाप्राण हो। वार बिना भारत री कल्पना करणो ई दोरो है। अबै ता वै इदु सू सिंधु बणगा है ता मैं वा न विनम्र श्रद्धाजलि अरपण करू।

नामानुक्रमणिका